آزادی کے بعد

اردو طنز و مزاح

مرتب

ابوالکلام قاسمی

قومی کونسل برائے فروغِ اردو زبان

آزادی کے بعد اردو طنز و مزاح

आज़ादी के बाद उर्दू तन्ज़ो मज़ाह

مرتب
ابوالکلام قاسمی

मुरत्तिब
अबुल कलाम क़ासमी

قومی کونسل برائے فروغ اردو زبان
وزارت ترقی انسانی وسائل (حکومت ہند)
ویسٹ بلاک۔1 آر۔کے۔پورم، نئی دہلی۔110066

© قومی کونسل برائے فروغ اردو زبان، نئی دہلی

پہلی اشاعت : اپریل 2008
تعداد : 550
قیمت : =/457
سلسلہ مطبوعات : 1293

Azadi ke Baad Urdu Tanz Wa Mazah

Compiled by **Prof. Abul Kalam Qasmi**

ISBN:81-7587-227-6

ناشر: ڈائرکٹر، قومی کونسل برائے فروغ اردو زبان، ویسٹ بلاک۔1، آر. کے. پورم، نئی دہلی۔110066
فون نمبر: 26179657,26103381,26103938 فیکس: 26108159
ای میل urduduniyancpul@yahoo.co.in ویب سائٹ: www.urducouncil.nic.in
طابع: میکاف پرنٹرس 2847 بلبلی خانہ، ترکمان گیٹ، نئی دہلی۔110020

آزادی کے بعد اردو طنز و مزاح

आज़ादी के बाद उर्दू तन्ज़ो मज़ाह

پیش لفظ

قومی کونسل برائے فروغ اردو زبان کا بنیادی مقصد اچھی کتابیں کم سے کم قیمت پر مہیا کرنا ہے تاکہ اردو کا دائرہ زیادہ سے زیادہ وسیع ہو، اور سارے ملک میں سمجھی، بولی اور پڑھی جانے والی اس زبان کی ضرورتیں جہاں تک ممکن ہو سکے پوری کی جائیں اور نصابی و غیر نصابی کتابیں آسانی سے مناسب قیمت پر سب تک پہنچیں۔ زبان صرف ادب نہیں، سماجی اور طبعی علوم کی اپنی اہمیت ہے۔ ادب زندگی کا آئینہ ہے اور زبان کی ہمہ جہت ترقی کے لیے اُسے سماجی علوم، سائنس اور ٹکنالوجی سے جوڑنا بھی ضروری ہے اور علوم انسانیہ سے بھی۔

اب تک قومی اردو کونسل نے مختلف علوم و فنون اور ادبیات کی سینکڑوں کتابیں شائع کیں ہیں۔ ایک منصوبہ بند پروگرام کے تحت بنیادی، درسی اور ادبی اہمیت کی کتابیں چھاپنے کا سلسلہ شروع کیا گیا ہے۔ زیر نظر کتاب 'بھارت بھارتی سیریز' کی تیسری کتاب ہے۔ اس سیریز کے تحت آزادی کے بعد کے اردو ادب کے انتخاب کو اردو اور دیوناگری دونوں رسم الخط میں چھاپا جائے گا تاکہ اس ملک کا ایک بڑا طبقہ جو اردو رسم الخط نہیں جانتا وہ بھی اردو ادب سے لطف اندوز ہو سکے۔ آزادی کے بعد اردو طنز و مزاح کی انتھالوجی کا یہ کام پروفیسر ابوالکلام قاسمی نے مکمل کیا ہے۔ دائیں ہاتھ پر اردو متن دیا گیا ہے اور اس کے سامنے ہندی۔ مشکل لفظوں کے مختصر معنی نیچے درج کر دیے گئے ہیں تاکہ پڑھنے والوں کو آسانی ہو۔ 'بھارت بھارتی سیریز' کے تحت پانچ کتابیں شائع کی جائیں گی۔ جن میں آزادی کے بعد اردو ادب کی مختلف اصناف کا جامع انتخاب پیش کیا جائے گا۔ امید ہے ان کتابوں کا خیر مقدم کیا جائے گا اور یہ اپنے مقصد میں کامیاب ہوں گی۔

ڈاکٹر علی جاوید
ڈائرکٹر

पेश लफ़्ज़

कौमी काउन्सिल बराए फ़रोग़–ए–उर्दू ज़बान का बुनियादी मक़सद अच्छी किताबें, कम से कम क़ीमत पर मुहैया करना है ताकि उर्दू का दाइर–ए–कार ज़्यादा से ज़्यादा वसी हो, और सारे मुल्क में समझी, बोली और पढ़ी जाने वाली इस ज़बान की ज़रूरतें जहाँ तक मुम्किन हो सके पूरी की जायें, और निसाबी व ग़ैर–निसाबी किताबें आसानी से मुनासिब क़ीमत पर सब तक पहुँचें। ज़बान सिर्फ़ अदब नहीं, समाजी और तबई उलूम की अपनी अहमियत है। अदब ज़िन्दगी का आईना है और ज़बान की हमा–जेहत तरक़्क़ी के लिए उसे समाजी उलूम, साईंस और टक्नालोजी से जोड़ना भी ज़रूरी है और उलूमे इन्सानिया से भी।

अब तक क़ौमी उर्दू काउन्सिल ने मुख़्तलिफ़ उलूम व फ़नून और अदबियात की सैंकड़ों किताबें शाए की हैं। एक मन्सूबाबन्द प्रोग्राम के तेहत बुनियादी, दर्सी और अदबी अहमियत की किताबें छापने का सिलसिला शुरू किया गया है। ज़ेरे–नज़र किताब 'भारत भारती सिरीज़' की तीसरी किताब है। इस सिरीज़ के तेहत आज़ादी के बाद के उर्दू अदब के इंतिख़ाब को उर्दू और देवनागरी दोनों रस्मुल–ख़त में छापा जाएगा ताकि इस मुल्क का एक बड़ा तब्क़ा जो उर्दू रस्मुल–खत नहीं जानता वह भी उर्दू अदब से लुत्फ़–अंदोज़ हो सके। आज़ादी के बाद उर्दू तन्ज़–व–मिज़ाह की ऐन्थालॉजी का ये काम प्रोफ़ेसर अबुल कलाम क़ासमी ने मुकम्मल किया है। दायें हाथ पर उर्दू मत्न दिया गया है और इस के सामने हिन्दी, मुश्किल लफ़्ज़ों के मुख़्तसर मानी नीचे दर्ज कर दिए गए हैं ताकि पढ़ने वालों को आसानी हो। 'भारत भारती सिरीज़' के तहत पाँच किताबें शाए की जायेंगी जिनमें आज़ादी के बाद उर्दू अदब की मुख़्तलिफ़ अस्नाफ़ का जामे इंतिख़ाब पेश किया जाएगा। उम्मीद है इन किताबों का ख़ैर मक़दम किया जाएगा और ये अपने मक़सद में कामयाब होंगी।

डा. अली जावेद
डायरेक्टर

फ़ेहरिस्त فہرست

	عرض مرتب	ابوالکلام قاسمی	X
	अर्ज़े मुरत्तिब	अबुल कलाम क़ासमी	XI
	مقدمہ	ابوالکلام قاسمی	XIV
	मुकद्दमा	अबुल कलाम क़ासमी	XV
1	انٹرویو	انجم مانپوری	2
	इन्टरव्यू	अन्जुम मानपुरी	3
2	معدے کا مریض	سید عابد حسین	38
	मेदे का मरीज़	सैयद आबिद हुसैन	39
3	مطالعہ	ملا رموزی	56
	मोतालेआ	मुल्ला रुमूज़ी	57
4	غالب اینڈ گوئٹے	حاجی لق لق	76
	ग़ालिब एन्ड गोयटे	हाजी लक़ लक़	77
5	دھوبی	رشید احمد صدیقی	90
	धोबी	रशीद अहमद सिद्दीक़ी	91
6	کتے	پطرس بخاری	110
	कुत्ते	पितरस बुख़ारी	111
7	جنس ہنر بیچتا ہوں	شوکت تھانوی	120
	जिन्से–हुनर बेचता हूँ	शौकत थानवी	121
8	غالب جدید شعرا کی ایک مجلس میں	کنھیا لال کپور	138
	ग़ालिब जदीद शोअरा की एक मजलिस में	कन्हैया लाल कपूर	139
9	میرا من پسند صفحہ	کرشن چندر	166
	मेरा मनपसंद सफ़ह	कृष्ण चन्द्र	167
10	جشن جمہوریت کی ایک دوپہر	فرقت کاکوروی	178
	जश्ने–जम्हूरीयत की एक दोपहर	फ़ुरक़त काकोरवी	179

11	ذرا دیکھنا یہ کس کی تصویریں ہیں	ملا ابن العرب مکی	204
	ज़रा देखना यह किसकी तस्वीरें हैं	मुल्ला इब्नुलअरब मक्की	205
12	مونچھیں	آوارہ	232
	मूंछें	आवारा	233
13	سوانح حیات	وجاہت علی سندیلوی	244
	सवानेह हयात	वजाहत अली संदीलवी	245
14	تعزیت	عبدالمجیب سہالوی	266
	ताज़ियत	अब्दुल मुजीब सहाल्वी	267
15	دل کی ڈائریاں (ایک جیب کترے کی ڈائری)	فکر تونسوی	278
	दिल की डायरियाँ(एक जेबकतरे की डायरी)	फ़िक्र तौंसवी	279
16	انگلش میڈیم	برق آشیانوی	322
	इंग्लिश मीडियम	बर्क़ आशियानवी	323
17	پاندان والی خالہ	تخلص بھوپالی	336
	पानदान वाली ख़ाला	तख़ल्लुस भोपाली	337
18	پوشیدہ خط وکتابت	شین مظفر پوری	354
	पोशीदा ख़तो–किताबत	शीन मुज़फ़्फ़र पुरी	355
19	چکر	حسنین عظیم آبادی	380
	चक्कर	हसनैन अज़ीमाबादी	381
20	ضرورت ہے—ایک صدر کی	بھارت چند کھنہ	396
	ज़रुरत है – एक सद्र की	भारत चन्द खन्ना	397
21	دماغ چاٹنے والے	ابراہیم جلیس	414
	दिमाग़ चाटने वाले	इब्राहीम जलीस	415
22	شعروادب میں جانوروں کا حصہ	یوسف ناظم	434
	शेरो–अदब में जानवरों का हिस्सा	यूसुफ़ नाज़िम	435
23	ادب میں مارشل لا	احمد جمال پاشا	448
	अदब में मार्शल लॉ	अहमद जमाल पाशा	449
24	کوڈاں	نریندر لوتھر	472
	कोडाँ	नरेन्द्र लूथर	473

25 دانشور	ناوک حمزہ پوری	496
दानिशवर	नावक हम्ज़ापुरी	497
26 مرزا غالب کی پریس کانفرنس	مجتبیٰ حسین	510
मिर्ज़ा ग़ालिब की प्रेस कान्फ्रेंस	मुजतबा हुसैन	511
27 خالی جگہ کو پُر کرو	دلیپ سنگھ	536
ख़ाली जगह को पुर करो	दिलीप सिंह	537
28 یہ لکھنؤ ہے	اظہر مسعود	546
यह लखनऊ है	अज़हर मसऊद	547
29 مہمان بلائے جان	پرویز یداللہ مہدی	556
मेहमान बलाए–जान	परवेज़ यदुल्लाह मेहदी	557
30 کُل ہند مچھر کانفرنس	رؤف خوشتر	576
कुल हिन्द मच्छर कान्फ्रेंस	रऊफ़ ख़ुश्तर	577
31 انجمن برائے رسم اجرا	معین اعجاز	588
अन्जुमन बराए–रस्मे इजरा	मुईन एजाज़	589
32 آر۔ایم۔پی	ارشد علی خاں	598
आर. एम. पी.	अरशद अली ख़ाँ	599
33 ہدایت نامہ برائے ریسرچ اسکالر	شفیقہ فرحت	618
हिदायतनामा बराए रिसर्च स्कालर्स	शफ़ीक़ा फ़रहत	619
34 آتی ہے اردو زباں......	اعجاز علی ارشد	630
आती है उर्दू ज़बां..........	एजाज़ अली अरशद	631
35 لائبریری کی سیر	عابد معز	644
लाइब्रेरी की सैर	आबिद मुइज़्ज़	645

☆☆☆

عرض مرتب

طنزیہ اور مزاحیہ مضامین کا یہ انتخاب آزادی کے بعد لکھے جانے والے مزاحیہ ادبی سرمایے کی ایک ایسی تصویر پیش کرتا ہے جس کے حوالے سے اس کے ارتقائی منازل کا بہ آسانی اندازہ لگایا جاسکتا ہے۔ اس ضمن میں مرتب کے لیے سب سے بڑا مسئلہ یہ درپیش تھا کہ تقسیمِ ہند کے بعد سرحد پار چلے جانے والے مزاح نگاروں کی نمائندگی کیوں کر ممکن ہو؟ جب کہ صورت حال یہ ہے کہ آزادی یا تقسیم تک کے مزاحیہ اور طنزیہ ادبی سرمایے کی تشکیل میں انھوں نے بھی یکساں طور پر خدمات انجام دیں ہیں۔ اس مسئلے کا حل یہ نکالا گیا کہ آزادی کے بعد کی تحریروں کو مناسب ترین سیاق وسباق کے ساتھ انتخاب کے عمل سے گزارا جائے۔ چنانچہ ان چند نمائندہ مزاح نگاروں کی بعض تحریریں اس انتخاب میں شامل کر لی گئیں جنھوں نے ہندوستانی ادب کے معمار کا کردار ادا کیا تھا اور جن کی تحریروں کو تقسیم کے بعد بھی ہندوستان میں اس حد تک مقبولیت حاصل رہی کہ نصابی کتب اور تنقیدی تاریخ میں انہیں یکساں طور پر نمائندگی ملی۔ اس سلسلے میں پطرس بخاری اور ابراہیم جلیس کی مثالیں نمایاں ترین قرار دی جاسکتی ہیں۔

اس انتخاب میں اس بات کی کوشش کی گئی ہے کہ مزاحیہ ادب کے ذیل میں آنے والی ان تمام اقسام کو پیش نظر رکھا جائے جن کو کبھی طنز، کبھی ظرافت، کبھی ہجا اور کبھی استہزا کے نام سے یاد کیا جاتا ہے۔ چونکہ تفنن طبع، شگفتگی اور طباعی کی نمائندگی کرنے والی یہ تمام اقسام یوں تو مزاحیہ ادب کے دائرہ کار کا تعین کرتی ہیں مگر اپنی اپنی نوعیت کے اعتبار سے ان کی حدیں انشائیہ نگاری اور خاکہ نگاری تک پھیلی ہوئی ہیں۔ اس لئے ایک جامع انتخاب کے لئے یہ بات لازمی تھی کہ وہ ہر رنگ اور ہر پرتو کی خواہ ایک ہی جھلک سہی، ضرور پیش کرے۔

آزادی سے قدرے قبل کے تسلسل کے ساتھ آزادی کے بعد کی نصف صدی

अर्ज़े मुरत्तिब

तन्ज़िया और मज़ाहिया मज़ामीन का यह इंतिख़ाब आज़ादी के बाद के लिखे जाने वाले मज़ाहिया अदबी सरमाये की एक ऐसी तस्वीर पेश करता है जिस के हवाले से इर्तिक़ाई[1] मनाज़िल का भी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। इस ज़िम्न में मुरत्तिब के लिए सब से बड़ा मसअला यह दरपेश था कि तक़्सीमे—हिन्द के बाद सरहद पार चले जाने वाले मज़ाह—निगारों की नुमाइन्दगी क्यों कर मुमकिन हो? जबकि सूरते—हाल यह है कि आज़ादी या तक़्सीम तक के मज़ाहिया अदबी सरमाये की तश्कील में उन्होंने भी यक्साँ तौर पर ख़िदमात अन्जाम दी हैं। इस मसअले का हल यह निकाला गया कि आज़ादी के बाद की तहरीरों को मुनासिब तरीन सियाक़ो—सबाक़[2] के साथ इंतिख़ाब के अमल से गुज़ारा जाये। चुनान्चे उन चंद नुमाइन्दा मज़ाह—निगारों की बाज़ तहरीरें इस इंतिखाब में शामिल कर ली गईं जिन्होंने हिन्दुस्तानी अदब के मेमार[3] का किरदार अदा किया था और जिन की तहरीरों को तक़्सीम के बाद भी हिन्दुस्तान में इस हद तक मक़्बूलियत हासिल रही कि निसाबी कुतुब और तनक़ीदी तारीख़ में उन्हें यक्साँ तौर पर नुमाइन्दगी मिली। इस सिलसिले में पितरस बुख़ारी और इब्राहीम जलीस की मिसालें नुमायाँ—तरीन क़रार दी जा सकती हैं।

इस इंतिख़ाब में इस बात की कोशिश की गई है कि मज़ाहिया अदब के ज़ैल में आने वाली उन तमाम अक़्साम को पेशे—नज़र रखा जाये जिन को कभी तन्ज़, कभी ज़राफ़त, कभी हिजा और कभी इस्तहज़ा के नाम से याद किया जाता है। चूँकि तफ़न्नुने—तबा, शगुफ़्तगी और तब्बाई की नुमाइन्दगी करने वाली ये तमाम अक़्साम यूँ तो मज़ाहिया अदब के दायरए—कार का तअय्युन करती हैं मगर अपनी—अपनी नौइयत के एतबार से उनकी हद में इन्शाइया—निगारी और ख़ाका—निगारी तक फैली हुई हैं। इसलिए एक जामेअ इंतिख़ाब के लिए यह बात लाज़मी थी कि वह हर रंग और हर परत की ख्वाह एक ही झलक सही, ज़रुर पेश करे।

आज़ादी से क़द्रे क़ब्ल के तसल्सुल के साथ आज़ादी के बाद की निस्फ़ सदी में तन्ज़िया और मज़ाहिया अदब का इर्तिक़ा जिन ख़ुतूत पर हुआ

---

1. विकास 2. संदर्भ 3. रचनाकार

میں طنزیہ اور مزاحیہ ادب کا ارتقا جن خطوط پر ہوا ہے، ان کو واضح کرنے کے لیے مضامین کی ترتیب مصنفین کی تاریخ پیدائش (بلکہ زیادہ مناسب یہ ہوگا کہ اسے زمانہ پیدائش کہا جائے) کے لحاظ سے رکھی گئی ہے۔ اس زمانی ترتیب میں تاریخی سیاق وسباق بھی مضمر ہے اور حروف تہجی کی ترتیب کا اصول اپنانے کے سبب ممکنہ فرق مراتب کے فقدان سے احتراز بھی ملحوظ خاطر رکھا گیا ہے۔ تیسری صورت مراتب اور درجہ بندی کے لحاظ سے مصنفین کی تقدیم وتاخیر کی ترتیب قائم کی جاسکتی تھی، مگر اس صورت میں بھی ناقدانہ فیصلے کا تاثر ملتا ہے جس سے دانستہ اجتناب کرنے کی کوشش کی گئی ہے۔

کسی بھی موضوع سے متعلق مضامین کا انتخاب بہ ظاہر بہت آسان معلوم ہوتا ہے، مگر ترتیب کا معاملہ آسان تو ہوسکتا ہے، انتخاب کا نہیں۔ مصنفین کے نمائندہ مجموعوں سے رجوع اور ان میں سے نمائندہ ترین تحریر کا انتخاب قوت فیصلہ کی بھی آزمائش ہے اور ادبی مذاق کا امتحان بھی۔ اس سلسلے میں اگر مجھے خالد حیدر کا تعاون حاصل نہ ہوتا تو اس انتشار میں یک جہتی قائم کرنا میرے لیے آسان نہ ہوتا۔

خالد حیدر چونکہ خود ایک کہنہ مشق اسلوب شناس ہیں اور غیر افسانوی نثر میں ان کا تخصص امتیازی نوعیت کا ہے، اس لیے ان کی عملی شرکت اور مراجع کی فراہمی، میرے لیے نصف سے زیادہ شرکت سے کم ثابت نہیں ہوئی۔ اس لیے اس نمائندہ انتخاب میں، خالد حیدر کو شریک غالب قرار دیا جاسکتا ہے۔ میں اس علمی تعاون کے لیے ان کا شکر گزار ہوں۔

انتخاب کردہ مضامین سے قبل ایک جامع مقدمہ میں طنزیہ و مزاحیہ ادب کی ماہیت اور دائرہ کار کے علاوہ اس نوع کے ادب کی سماجی اور ادبی معنویت کو خصوصیت کے ساتھ نشان زد کیا گیا ہے۔ مجھے یقین ہے کہ یہ انتخاب آزادی کے بعد اردو نثر میں طنز، مزاح اور ظرافت کی صورت حال کی بھرپور نمائندگی کرے گا۔

ابوالکلام قاسمی

है, उन को वाज़ेह करने के लिए मज़ामीन की तरतीब मुसन्नेफ़ीन की तारीख़े–पैदाइश (बल्कि ज़्यादा मुनासिब यह होगा कि उसे ज़मानाए–पैदाइश कहा जाये) के लिहाज़ से रखी गई है। इस ज़मानी तरतीब में तारीख़ी सियाक़ो–सबाक़ भी मुज़मर[1] है और हुरुफ़े[2]–तहज्जी की तरतीब का उसूल अपनाने के सबब मुमकिना फ़र्क़ से एहतराज भी मलहूज़े–ख़ातिर रखा गया है। तीसरी सूरत मरातिब और दर्जाबन्दी के लिहाज़ से मुसन्नेफ़ीन की तक़्दीमो–ताख़ीर[3] की तरतीब कायम की जा सकती थी, मगर इस सूरत में भी नाक़िदाना फ़ैसले का तास्सुर मिलता है जिस से दानिस्ता इजतनाब करने की कोशिश की गई है।

किसी भी मौज़ूअ से मुतअल्लिक़ मज़ामीन का इंतिख़ाब बज़ाहिर बहुत आसान मालूम होता है, मगर तरतीब का मामला आसान तो हो सकता है, इंतिख़ाब का नहीं। मुसन्नेफ़ीन के नुमाइन्दा मजमूओं से रुजूअ और उन में से नुमाइन्दा– तरीन तहरीर का इंतिख़ाब कूव्वते–फ़ैसला की भी आज़माइश है और अदबी मज़ाक़ का इम्तेहान भी। इस सिलसिले में अगर मुझे ख़ालिद हैदर का तआवुन हासिल न होता तो इस इन्तेशार[4] में इकजेहती क़ायम करना मेरे लिए आसान न होता।

ख़ालिद हैदर चूँकि ख़ुद एक कुहनामश्क़ उस्लूब–शनास हैं और ग़ैर–अफ़सानवी नस्र में उनका तख़स्सुस इम्तियाज़ी नौईयत का है, इसलिए उनकी अमली शिरकत और मराजेअ[5] की फ़राहमी, मेरे लिए निस्फ़ से ज़्यादा शिरकत से कम साबित नहीं हुई। इसलिए इस नुमाइन्दा इंतिख़ाब में, ख़ालिद हैदर को शरीके–ग़ालिब क़रार दिया जा सकता है। मैं इस इल्मी तआवुन के लिए उनका शुक्रगुज़ार हूँ।

इंतिख़ाबकर्दा मज़ामीन से क़ब्ल एक जामेअ मुक़द्दमे में तन्ज़िया व मज़ाहिया अदब की माहियत और दायरए–कार के अलावा इस नौअ के अदब की समाजी और अदबी मानवीयत को ख़ुसूसियत के साथ निशानज़द किया गया है। मुझे यक़ीन है कि यह इंतिख़ाब आज़ादी के बाद उर्दू नस्र में तन्ज़, मज़ाह और ज़राफ़त की भरपूर नुमाइन्दगी करेगा।

अबुल कलाम क़ासमी

---

1. छिपा हुआ 2. वर्णमाला 3. आगे–पीछे करना 4. बिखराव 5. श्रोत

ابوالکلام قاسمی

مقدمہ

دنیا کی کوئی بھی زبان بنیادی طور پر سماجی رابطے کا وسیلہ ہوتی ہے۔ زبان دو انسانوں کے درمیان رابطہ کی کڑی بھی ہوتی ہے اور ایک دوسرے کی ضرورت، مافی الضمیر اور خیالات سے واقفیت کا ذریعہ بھی۔ چونکہ صرف روزمرہ کی ضروریات اور کاروباری تعلق کی بنیاد پر انسانی زندگی نہیں گزرتی بلکہ انسان اپنے احساسات اور جذبات میں بھی دوسرے کو شریک کرنا چاہتا ہے۔ چنانچہ اس طرح کی شرکت کے لئے آدمی زبان کا سہارا لیتا ہے، اپنی بات کہتا ہے، دوسرے کی بات سنتا ہے اور زبان کے استعمال سے ہی ایک دوسرے کا ہمدم و دمساز بن جاتا ہے۔ ایک دوسرے کے دکھ درد اور خوشی اور مسرت میں شریک ہوتا ہے۔ جذبات واحساسات کی اس طرح کی شرکت اس بات کا بھی تقاضہ کرتی ہے کہ انسان اپنی خوشی یا اپنی اداسی کو پوری شدت کے ساتھ بیان کرنے کی کوشش کرے۔ مگر زبان کا روزمرہ استعمال جب جذبات کو زیادہ شدت سے بیان نہیں کر پاتا تو ایسی صورت میں انسان اسی زبان کو زیادہ ہنرمندی اور فن کاری کے ساتھ استعمال کرنے کی کوشش کرتا ہے۔ کبھی وزن اور موسیقی کا سہارا لے کر شاعری کی صورت میں زبان کی شکل کو بدل دیتا ہے۔ کبھی اپنے جذبات واحساسات کو کہانی اور قصہ کا روپ دے کر پیش کرنا چاہتا ہے اور کبھی براہ راست بات کہنے کے بجائے ڈھکے چھپے الفاظ یا فنی تدبیر کاری کے ساتھ اپنے خیالات کو پیش کرتا ہے۔ بات کہنے اور جذبات واحساسات کا اظہار کرنے کے یہ سب طریقے ادبی

अबुल कलाम क़ासमी

मुक़द्दमा

दुनिया की कोई भी जबान बुनियादी तौर पर समाजी राब्ते का वसीला होती है। जबान दो इन्सानों के दरमियान राब्ते की कड़ी होती है और एक दूसरे की जरुरत, माफिज्जमीर[1] और खयालात से वाक़फियत का ज़रिया भी है। चूँकि सिर्फ़ रोजमर्रा की ज़रुरियात और कारोबारी ताल्लुक़ की बुनियाद पर इन्सानी ज़िन्दगी नहीं गुजरती बल्कि इन्सान अपने एहसासात और जज़्बात में भी दूसरे को शरीक करना चाहता है, चुनान्चे इस तरह की शिरकत के लिए आदमी ज़बान का सहारा लेता है, अपनी बात कहता है, दूसरे की बात सुनता है और जबान के इस्तेमाल से ही एक दूसरे का हमदमो–दमसाज[2] बन जाता है। एक दूसरे के दुख–दर्द और खुशी और मुसर्रत में शरीक होता है। जज़्बात व एहसासात की इस तरह की शिरकत इस बात का भी तकाज़ा करती है कि इन्सान अपनी खुशी या अपनी उदासी को पूरी शिद्दत के साथ बयान करने की कोशिश करे। मगर ज़बान का रोजमर्रा[3] इस्तेमाल जब जज़्बात को ज़्यादा शिद्दत से बयान नहीं कर पाता तो ऐसी सूरत में इन्सान इसी ज़बान को ज़्यादा हुनरमन्दी और फ़नकारी के साथ इस्तेमाल करने की कोशिश करता है। कभी वज़्न और मौसीक़ी का सहारा लेकर शायरी की सूरत में जबान की शक्ल को बदल देता है। कभी जज्बात व एहसासात को कहानी और क़िस्से का रुप देकर पेश करना चाहता है और कभी बराहे–रास्त[4] बात कहने के बजाए ढके–छुपे अल्फ़ाज़ या फ़न्नी तदबीरकारी[5] के साथ अपने ख़यालात को पेश करता है। बात कहने और जज़्बात व एहसासात का इज़हार करने के ये सब तरीक़े अदबी

1. दिल की बात, मतलब 2. दोस्त, राजदार 3. बोलचाल
4. सीधे 5. कलात्मक तरीके

اور تخلیقی اظہارات کے دائرۂ کار کی تکمیل کرتے ہیں۔ عام طور پر ادب کو تخلیقی اور غیر تخلیقی کے خانوں میں تقسیم کرلیا جاتا ہے اور شاعری کی بیش تر اصناف کو اور کبھی کبھی نثر میں فکشن اور انشائیہ کو تخلیقی اصناف ادب کا حصہ تصور کیا جاتا ہے۔ ان اصناف کے برخلاف سوانح، خودنوشت سوانح، خطوط، خاکہ نگاری، طنزیہ اور مزاحیہ مضامین جیسی اہم صنفوں کو اس حد تک ادب اور تخلیق کے دائرے سے باہر قرار دیا جاتا ہے، گویا یہ اصناف محض یہ نہیں کہ ادب نہ ہوں بلکہ صحافت سے جاملی ہوں۔ اس رویے کا جواب کسی سخت گیر اصول کی تشکیل دینے کے بجائے اگر ادب اور ادبی تحریروں کی لچکدار تقسیم کے حوالے سے دینے کی کوشش کی جائے تو یہ عقدہ آسانی سے حل ہوسکتا ہے۔ اس میں کوئی شک نہیں کہ بعض اصناف ادب خالص ادب کے خانے میں آتی ہیں اور ان میں بالعموم بالواسطہ طرز اظہار کو اولیت حاصل ہوتی ہے۔ مگر اس کا مطلب یہ نہیں کہ ان کے علاوہ دوسری اصناف میں بالواسطہ بات نہیں کی جاتی۔ خود جن اصناف میں بالواسطہ طرزِ اظہار کی زیادہ گنجائش ہوتی ہے ان میں بھی براہ راست بیان کے ذریعہ ایک نئی طرح کی ادبیت اور تخلیقیت کی فضا پیدا کی جاسکتی ہے۔ مثلاً بغیر استعارہ، علامت اور اشاریے کنائے کے غزل کا شعر کہا جاسکتا ہے۔ ہزاروں نظمیں براہ راست انداز میں کہی گئی ہیں۔ بہت سے افسانے صرف بیانیہ اور راست پلاٹ پر مبنی ہوتے ہیں اور ان میں پلاٹ یا وقت کی فطری ساخت میں کوئی تجربہ نہیں کیا جاتا — اس سے ثابت ہوتا ہے کہ ادبی اور تخلیقی تحریروں کا بنیادی امتیاز زبان کے خوبصورت، ترقی یافتہ اور تہہ دار استعمال کا ہے۔

اس قدرے تفصیلی پس منظر میں اگر ہم طنز و مزاح اور ظرافت پر مبنی نثری تحریروں کا جائزہ لینے کی کوشش کریں تو اندازہ ہوگا کہ طنز و ظرافت کا مزاج بنیادی طور پر تہہ دار اسلوب کے ساتھ ہی پھلتا پھولتا ہے۔ جس طرح علامت اور استعارہ کی بنیاد دو چیزوں کے مماثل رشتوں پر ہوتی ہے اسی طرح یا پھر اس کے برعکس طنز نگار مشترک قدروں کے بجائے غیر مشترک اور غیر مماثل چیزوں کی مدد سے طنز اور ظرافت کی فضا پیدا کرنے کی کوشش کرتا ہے۔ مزید برآں یہ کہ طنز اور ظرافت کے عناصر، لسانی اظہار کے کسی اسلوب یا کسی بھی صنف میں پائے جاسکتے ہیں۔ طنز پر محض شاعری یا محض نثر کی اجارہ داری نہیں ہے۔ اس

और तख़लीक़ी इज़हारात के दायरए–कार की तकमील करते हैं। आम तौर पर अदब को तख़्लीक़ी और ग़ैर–तख़्लीक़ी[1] के ख़ानों में तक़्सीम कर लिया जाता है और शायरी की बेशतर अस्नाफ़[2] को और कभी–कभी नस्र[3] में फ़िक्शन और इन्शाइया को तख़्लीक़ी अस्नाफ़े–अदब का हिस्सा तस्सवुर किया जाता है। इन अस्नाफ़ के बरख़िलाफ़ सवानेह, ख़ुद–नविश्त[4], ख़ुतूत, ख़ाका निगारी, तन्ज़िया और मज़ाहिया मज़ामीन जैसी अहम सिन्फ़ों को इस हद तक अदब और तख़्लीक़ के दायरे से बाहर क़रार दिया जाता है, गोया ये अस्नाफ़ महज़ यह नहीं कि अदब न हों बल्कि सहाफ़त से जा मिली हों। इस रवय्ये का जवाब किसी सख़्तगीर उसूल की तश्कील[5] देने के बजाए अगर अदब और अदबी तहरीरों की लचकदार तक़्सीम के हवाले से देने की कोशिश की जाये तो ये ओक़्दा आसानी से हल हो सकता है। इस में कोई शक नहीं कि बाज़ अस्नाफ़े–अदब ख़ालिस अदब के ख़ाने में आती हैं और उन में बिल–उमूम बिलवास्ता[6] तर्ज़े–इज़्हार को अव्वलियत हासिल होती है। मगर इसका मतलब ये नहीं कि इनके अलावा दूसरी अस्नाफ़ में बिलवास्ता बात नहीं की जाती। ख़ुद जिन अस्नाफ़ में बिलवास्ता तर्ज़े–इज़हार की ज़्यादा गुन्जाइश होती है उन में भी बराहे–रास्त बयान के ज़रिये एक नई तरह की अदबियत और तख़्लीक़ की फ़िज़ा पैदा की जा सकती है। मसलन बग़ैर इस्तेआरा, अलामत और इशारे–कनाये के ग़ज़ल का शेर कहा जा सकता है। हज़ारों नज़्में बराहे[7]–रास्त अन्दाज़ में कही गई हैं। बहुत से अफ़साने सिर्फ़ बयानिया और रास्त–प्लाट पर मब्नी होते हैं और उनके प्लाट या वक़्त की फ़ितरी साख़्त[8] में क़ोई तजर्बा नहीं किया जाता – इससे साबित होता है कि अदबी और तख़्लीक़ी तहरीरों का बुनियादी इम्तयाज़ ख़ूबसूरत, तरक़्क़ी याफ़्ता और तहदार इस्तेमाल का है।

इस क़दरे–तफ़्सीली पसमंज़र में अगर हम तन्ज़ो–मज़ाह और ज़राफ़त[9] पर मब्नी नसरी तहरीरों का जायज़ा लेने की कोशिश करें तो अन्दाज़ा होगा कि तन्ज़ो–मज़ाह बुनियादी तौर पर तहदार उसलूब[10] के साथ ही फलता फूलता है। जिस तरह अलामत और इस्तेआरे की बुनियाद दो चीज़ों के मोमासिल रिश्तों पर होती है इसी तरह या फिर इसके बरअक्स तन्ज़निगार मुश्तरक क़दरों के बजाए ग़ैर–मुश्तरक और ग़ैर–ममासिल चीज़ों की मदद से तन्ज़ो–ज़राफ़त की फ़िज़ा पैदा करने की कोशिश करता है। मज़ीदबरआँ[11] यह कि तन्ज़ और ज़राफ़त के अनासिर–लिसानी[12] इज़हार[13] के किसी उसलूब या किसी भी सिन्फ़ में पाए जा सकते हैं। तन्ज़ पर महज़ शायरी या महज़ नस्र की इजारादारी नहीं है। इस

---

1. रचनात्मक 2. विधाएं 3. गद्य 4. जीवनी 5. बनावट
6. ज़रिये से, सहारे से 7. हंसी–ठिठोली 8. प्रत्यक्ष 9. बनावट
10. शैली 11. इसके अलावा 12. भाषा की बनावट 13. अभिव्यक्ति

سے یہ بھی اندازہ ہوتا ہے کہ طنز یا مزاح کسی صنف کا لازمہ نہیں بلکہ یہ اسلوب کی صفت ہے۔ اس اعتبار سے اس کا صفت ہونا اور بھی زیادہ یقینی معلوم ہوتا ہے کہ طنز اور مزاح کا موضوع سے بہت زیادہ لینا دینا نہیں ہوتا۔ یہی وجہ ہے کہ جس موضوع کو نہایت سنجیدگی سے غور وفکر کا محور تصور کیا جاتا ہے بالکل اسی موضوع کے بیان میں طرح طرح کے طنزیہ اور مزاحیہ پہلو پیدا کئے جاسکتے ہیں۔ اردو کی مختلف اصناف نثر اور اصناف شاعری میں طنزیہ طریق اظہار کا سہارا لیا جاسکتا ہے۔ مثلاً شاعری میں ہزاروں قطعے، ان گنت نظمیں اور لاتعداد غزلیں کہی جاچکی ہیں، جب کہ نثر میں خطوط نگاری ہو، سفرنامے ہوں، خاکے ہوں یا انشائیے، ہر جگہ طنز و مزاح کے عناصر اپنی شمولیت کے ساتھ اس صنف کو صنفی خصوصیات کے ساتھ باقی رکھنے کے باوجود طنزیہ پہلو کا اضافہ کردیتے ہیں — تاہم اس حقیقت سے انکار نہیں کیا جاسکتا کہ انشائیہ کی صنف میں طنزیہ اور مزاحیہ اسلوب کے ابھرنے اور نکھرنے کے امکانات قدرے زیادہ ہوتے ہیں۔ اس لئے عام طور پر انشائیہ نگار کو طنز و مزاح نگار کا مترادف بھی تصور کرلیا جاتا ہے۔ رشید احمد صدیقی ہوں، مشتاق احمد یوسفی ہوں، کرنل محمد خاں ہوں، شفیق الرحمٰن ہوں یا مجتبیٰ حسین، ان سب کے یہاں انشائیہ اور خاکے میں طنزیہ اسلوب کو بھرپور طریقے پر استعمال کرنے کی عمدہ کوشش ملتی ہیں۔ اگر انشائیہ نگاری کی تاریخ میں مزید پیچھے کی طرف جایا جائے تو اندازہ ہوتا ہے کہ خواجہ حسن نظامی، فرحت اللہ بیگ، پطرس بخاری، عظیم بیگ چغتائی جیسے تمام طنز نگاروں کے یہاں انشائیہ کی صنف کو وسیلہ بنانے کا رجحان عام رہا ہے۔

اردو میں طنز کا لفظ انگریزی کے Satire کے مترادف کے طور پر استعمال ہوتا ہے، جب کہ Irony کے لئے بھی بسا اوقات طنز یا طنز ملیح کی اصطلاح استعمال کی جاتی ہے۔ اس کا مطلب یہ ہوا کہ 'طنز' کی اصطلاح میں سیدھے سادے طنزیہ انداز کے ساتھ تہہ دار اور متضاد کیفیت رکھنے والی IRONY کا مفہوم بھی شامل ہو جاتا ہے — طنز کے برخلاف انگریزی لفظ Humour کے مترادف کی حیثیت سے بھی مزاح یا ظرافت کے الفاظ استعمال کئے جاتے ہیں۔ سید احتشام حسین کا کہنا ہے کہ ظرافت کا مقصد تفریح ہوا کرتا ہے اور طنز کا مقصد انسانی زندگی کی افراط و تفریط کی نشاندہی اور اصلاح — اس پس منظر میں

से यह भी अन्दाज़ा होता है कि तन्ज़ या मज़ाह किसी का लाज़ेमा नहीं बल्कि यह उस्लूब की सिफ़त है। इस एतबार से इसका सिफ़त होना और भी ज़्यादा यक़ीनी मालूम होता है कि तन्ज़ और मज़ाह का मौज़ूअ से बहुत ज़्यादा लेना देना नहीं होता। यही वजह है कि जिस मौज़ूअ को निहायत संजीदगी से ग़ौरो–फ़िक्र का महवर तस्सवुर किया जाता है बिल्कुल उसी मौज़ूअ के बयान में तरह–तरह के तन्ज़िया और मज़ाहिया पहलू पैदा किए जा सकते हैं। उर्दू की मुख़्तलिफ़ अस्नाफ़े–नस्र और अस्नाफ़े–शायरी में तन्ज़िया तरीक़ए–इज़हार का सहारा लिया जा सकता है। मसलन शायरी में हज़ारों क़तए, अनगिनत नज़्में और लातादाद ग़ज़लें कही जा चुकी है, जबकि नस्र में ख़ुतूत–निगारी हो, सफ़र–नामे[1] हों, ख़ाके हों या इन्शाइये, हर जगह तन्ज़ो–मिज़ाह के अनासिर अपनी शमूलियत के साथ उस सिन्फ़ को सिन्फ़ी ख़ुसूसियात के साथ बाक़ी रखने के बावजूद तन्ज़िया पहलू का इज़ाफ़ा कर देते हैं – ताहम इस हक़ीक़त से इन्कार नहीं किया जा सकता कि इन्शाइये की सिन्फ़ में तन्ज़िया और मज़ाहिया उसलूब के उभरने और निखरने के इमकानात क़दरे ज़्यादा होते हैं। इस लिए आमतौर पर इन्शाइया–निगार को तन्ज़ो–मिज़ाह–निगार का मुतरादिफ़[2] भी तस्सवुर कर लिया जाता है। रशीद अहमद सिद्दीक़ी हों, मुश्ताक़ अहमद यूसुफ़ी हों, कर्नल मुहम्मद ख़ाँ हों, शफ़ीक़ुर्रहमान हों या मुजतबा हुसेन, इन सब के यहाँ इन्शाइया और ख़ाके में तन्ज़िया उस्लूब को भरपूर तरीक़े पर इस्तेमाल करने की उम्दा कोशिश मिलती हैं। अगर इन्शाइया–निगारी की तारीख़ में मज़ीद पीछे की तरफ़ जाया जाए तो अन्दाज़ा होता है कि ख़्वाजा हसन निज़ामी, फ़रहतुल्लाह बेग, पितरस बुख़ारी, अज़ीम बेग चुग़ताई जैसे तमाम तन्ज़–निगारों के यहाँ इन्शाइये की सिन्फ़ को वसीला बनाने का रुजहान आम रहा है।

उर्दू में तन्ज़ का लफ़्ज़ अंग्रेज़ी के Satire के मुतरादिफ़ के तौर पर इस्तेमाल होता है, जबकि Irony के लिए भी बसा–औक़ात तन्ज़ या तन्ज़े–मलीह की इस्तेलाह[3] इस्तेमाल की जाती है। इस का मतलब यह हुआ कि 'तन्ज़' की इस्तेलाह में सीधे–सादे तन्ज़िया अन्दाज़ के साथ तहदार और मुतज़ाद कैफ़ियत रखने वाली IRONY का मफ़हूम भी शामिल हो जाता है – तन्ज़ के बरख़िलाफ़ अंग्रेज़ी लफ़्ज Humour के मुतरादिफ़ की हैसियत से मज़ाह या ज़राफ़त के अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किये जाते हैं। सैय्यद एहतशाम हुसैन का कहना है कि ज़राफ़त का मक़सद तफ़रीह हुआ करता है और तन्ज़ का मक़सद इन्सानी ज़िन्दगी की इफ़रातो–तफ़रीत[4] की निशानदेही और इस्लाह – इस पस–मंज़र में

---

1. यात्रा–वृतांत 2. ऐसे शब्द जिनका अर्थ एक हो 3. परिभाषिक शब्द
4. असंतुलित

اکبر کی شاعری کو طنزیہ اور دلاور فگار کی شاعری کو مزاحیہ قرار دینا ہی موزوں ہے۔ نذیر احمد کے ابن الوقت میں طنز کی کارفرمائی ملتی ہے جب کہ توبتہ النصوح میں ظاہر دار بیگ وغیرہ کے کرداروں میں مزاح کی جھلک ملتی ہے۔ اسی طرح پطرس کے یہاں خالص مزاح ملتا ہے، طنز خال خال ہی ملتا ہے۔

اسٹیفن لی کاک نے مزاحیہ تحریروں کی فنی شناخت کرتے ہوئے لکھا ہے کہ ''مزاح'' زندگی کی ناہمواریوں کے اس ہمدردانہ شعور کا نام ہے جس کا اظہار فن کارانہ طور پر ہوا ہو۔'' اس کا مطلب یہ ہوا کہ مزاح کی تخلیق بالعموم زندگی کی ناہمواریوں کے شعور سے ہوتی ہے، جب کہ اس کے برخلاف طنزیہ لہجہ اپنے ماحول اور معاشرے سے بے اطمینانی کا زائیدہ ہوتا ہے۔ اس لئے مزاح کے لئے طنز کی شمولیت ناگزیر نہیں ہوتی جب اس کے برخلاف طنز کے لئے مزاحیہ پیرایے کی ضرورت ہمیشہ محسوس کی جاتی ہے۔ اور یہ بات قرین قیاس بھی معلوم ہوتی ہے اور نفسیاتی طور پر وثوق انگیز بھی۔ اس لئے کہ اگر طنز میں مزاح کی شمولیت نہ ہو تو کبھی کبھی طنز بے رحمی اور شقاوت کی حدوں کو بھی چھو لیتا ہے۔ مزاح کی آمیزش طنز کی تلخی کو کم کرتی ہے، اسے گوارہ بناتی ہے اور طنز میں دلچسپی کے عنصر کا اضافہ کردیتی ہے۔ اگر ہم اردو کی روایت کے حوالے سے طنز اور مزاح کے تاریخی تصور کو سمجھنا چاہیں تو یہ کہہ سکتے ہیں کہ ابتدائی طور پر طنز کی عمدہ نمائندگی ہجوگوئی نے کی تھی اور رفتہ رفتہ ہجو میں شامل ذاتی پسند و ناپسند کے عناصر نے مزاح کے عنصر کی آمیزش کے ساتھ اسے ایک تلخ مگر گوارہ ادبی اظہار کی حیثیت حاصل کرلی۔ طنز ایک طرف تو طنزیہ تحریر لکھنے والے کے تاثر یا ذاتی ردعمل کی حیثیت رکھتا ہے جب کہ مزاح ردعمل کے بجائے اپنے آپ میں کمزور سی تحریک ہوتی ہے جو مزاح نگار کے تفنن طبع کی ایک صورت ہے۔ تاہم طنز اور مزاح میں گہرا تعلق ہوتا ہے۔ جب دونوں ایک دوسرے سے ہم رشتہ ہوجاتے ہیں تو طنز سے جہاں جراحت پہنچنے کا امکان ہوتا ہے وہیں مزاح سے اصلاح کا مقصد پورا کیا جاسکتا ہے۔ مزاح بالعلوم انسانی زندگی کے تضادات یا قول و فعل کے فرق کو نمایاں کرتا ہے مگر کائنات میں بوالعجب صورت حال اور عجوبہ شخصیتوں کی بھی کوئی کمی نہیں۔ مزاح نگار شخصیت یا صورت حال کی بوالعجبی پر تمسخرانہ نگاہ ڈال کے آگے بڑھ جاتا ہے، زیادہ دیر تک اس فضا میں اپنے آپ کو مصروف

अकबर की शायरी कों तन्ज़िया और दिलावर फ़िगार की शायरी को मज़ाहिया करार देना ही मौजूँ है। नज़ीर अहमद के इब्नुल–वक़्त में तन्ज़ की कारफ़रमाई मिलती है जबकि तौबतुन्नसूह में जाहिरदार बेग वग़ैरह के किरदारों में मज़ाह की झलक मिलती है। इसी तरह पितरस के यहाँ ख़ालिस मज़ाह मिलता है, तन्ज़ ख़ाल–ख़ाल ही मिलता है।

स्टीफ़न–ली–काक ने मज़ाहिया तहरीरों की फ़न्नी शिनाख़्त करते हुए लिखा है कि "मिज़ाह" ज़िन्दगी की नाहमवारियों के इस हमदर्दाना शऊर का नाम है जिसका इज़हार फ़नकाराना तौर पर हुआ हो। इसका मतलब यह हुआ कि मज़ाह की तख़लीक़ बिलउमूम ज़िन्दगी की नाहमवारीयों के शऊर से होती है, जबकि इसके बरख़िलाफ़ तन्ज़िया लहजा अपने माहौल और मुआशरे से बेइत्मिनानी का ज़ायेदा[1] होता है। इसलिए मज़ाह के लिए तन्ज़ की शमूलियत नागुज़ीर[2] नहीं होती जब कि इसके बरख़िलाफ़ तन्ज़ के लिए मज़ाहिया पैराए की ज़रुरत हमेशा महसूस की जाती है। और यह बात क़रीने–क़यास भी मालूम होती है और नफ़्सियाती तौर पर वसूक़अंगेज[3] भी। इसलिए कि अगर तन्ज़ में मिज़ाह की शमूलियत न हो तो कभी–कभी तन्ज़ बे–रहमी और शक़ावत[4] की हदों को भी छू लेता है। मज़ाह की आमेज़िश तन्ज़ की तल्ख़ी को कम करती है, उसे गवारा बनाती है और तन्ज़ में दिलचस्पी के उन्सुर का इज़ाफ़ा कर देती है। अगर हम उर्दू की रवायत[5] के हवाले से तन्ज़ और मज़ाह के तारीख़ी तस्सवुर को समझना चाहें तो कह सकते हैं कि इब्तदाई तौर पर तन्ज़ की उम्दा नुमाइन्दगी हज्व–गोई[6] ने की थी और रफ़्ता–रफ़्ता हज्व में शामिल ज़ाती पसंद व ना पसंद के अनासिर ने मज़ाह के उन्सुर की आमेज़िश के साथ उसे एक तल्ख़ मगर गवारा अदबी इज़हार की हैसियत हासिल कर ली। तन्ज़ एक तरफ़ तो तन्ज़िया तहरीर लिखने वाले के तास्सुर या ज़ाती रद्देअमल की हैसियत रखता है जबकि मज़ाह रद्देअमल के बजाए अपने आप में कमज़ोर सी तहरीक होती है जो मज़ाह–निगार के तफ़न्नुने–तबअ[7] की एक सूरत है। ताहम[8] तन्ज़ और मज़ाह में गहरा ताअल्लुक़ होता है। जब दोनों एक दूसरे से हम–रिश्ता हो जाते हैं तो तन्ज़ से जहाँ जराहत पहुँचने का इमकान होता है वहीं मज़ाह से इस्लाह का मक़सद पूरा किया जा सकता है। मज़ाह बिलअमूम इन्सानी ज़िन्दगी के तज़ादात[9] या क़ौलो–फ़ेल के फ़र्क़ को नुमायाँ करता है मगर कायनात में बुलअजब[10] सूरते–हाल और अजूबा शख़्सीयतों की भी कोई कमी नहीं। मज़ाह–निगार शख़्सीयत या सूरते–हाल की बुलअजबी पर तमस्ख़ुराना[11] निगाह डाल कर आगे बढ़ जाता है, ज़्यादा देर तक इस फ़िज़ा में अपने आप को मसरुफ़

1.पैदा किया हुआ 2. अनिवार्य 3. भरोसे के लायक 4. संगदिली
5. परम्परा 6. किसी की बुराई में शेर लिखना 7. हंसी, दिल लगी
8. फिर भी 9. टकराव 10. अनोखी 11. खिल्ली उड़ाना

نہیں رکھتا۔ اس لئے کہ عجیب سے عجیب صورت حال اور متضاد رویے کا مضحک پہلو بھی زیادہ توجہ دینے سے بعض سنجیدہ سیاق وسباق کی گنجائش پیدا کر لیتا ہے۔

ارسطو نے ہنسی اور مزاح کی صورت حال پر رائے دیتے ہوئے لکھا ہے کہ ہنسی کسی ایسی بدصورتی کو دیکھنے سے وجود میں آتی ہے جو درد انگیز نہ ہو۔ درد انگیزی کے عنصر کا ذکر کر کے ارسطو نے درحقیقت المیاتی صورت حال اور قابل رحم مناظر کو طنز و مزاح یا تمسخر کی فضا سے ماورا ثابت کرنے کی کوشش کی ہے۔ اس کا مطلب یہ بھی ہے کہ ترحم، ہمدردی اور انسانی حمیت کے جذبے کو جن موقعوں پر بہ روئے عمل آنا چاہئے ان موقعوں یا صورت حال کو تمسخر کی آمیزش سے ملوث نہیں کیا جانا چاہیے، ورنہ انسانیت کی اعلیٰ اقدار کے بے معنی ہونے کا اندیشہ پیدا ہوتا رہے گا۔ کانٹ نے ایک جگہ لکھا ہے کہ ہنسی اور مزاح کی فضا وہاں پیدا ہوتی ہے جب کوئی چیز ہوتے ہوتے رہ جاتی ہے اور ہماری توقعات بلبلے کی طرح پھٹ جاتی ہیں۔ کبھی کبھی کامیابی کی ساری لذّت انجام کار سے پہلے تلخی میں تبدیل ہو جاتی ہے یا ہونے یا نہ ہونے کی درمیانی کیفیت انسان کو تذبذب کی فضا میں تمسخرانہ ماحول سے دوچار کر دیتی ہے۔ شوپنہار نے کہا تھا کہ ہنسی، تخیل اور حقیقت کے مابین ناہموار سائے کے وجود کو اچانک محسوس کر لینے سے جنم لیتی ہے۔ یہ ناہمواری ایک ایسی ناہمواری یا نامناسبت ہوتی ہے جو زندگی کے مختلف مرحلوں میں ہمارے سامنے آتی ہے۔ شاید اسی باعث کہا جاتا ہے کہ زندگی میں اتنی ہی ناہمواریاں اور بوالعجباں ہیں کہ ان کا شمار نہیں کیا جا سکتا، اس لئے جس آدمی میں جس قدر زیادہ حسِ مزاح ہوتا ہے وہ اسی خوبصورتی کے ساتھ زندگی کی ناہمواریوں اور تلخیوں کو برداشت کر لینے کی اہلیت کا ثبوت دے پاتا ہے۔ ادبی صنف کے اعتبار سے اگر طنز و مزاح میں تفریق کرنے کی کوشش کی جائے تو کہا جا سکتا ہے کہ مزاح نگار زندگی کی ناہمواریوں سے محظوظ ہوتا ہے جب کہ طنز نگار ان ناہمواریوں سے نفرت کرتا ہے اور اس نوع کی ناپسندیدہ چیزوں کو استہزاء میں اڑا دینے کی طرف مائل رہتا ہے۔

طنز اور مزاح کے عناصر یوں تو ادب میں ایک ساتھ ادبی اظہار کا وسیلہ بنتے ہیں، مگر نفسیاتی اعتبار سے ان دونوں عناصر کے مجتمع ہونے کا جواز یہ ہے کہ دونوں ایک دوسرے کے سہارے کام کرتے ہیں۔ اگر طنز ہی طنز ہو اور مزاح کی چاشنی نہ ہو تو طنزیہ ادب

नहीं रखता। इस लिए कि अजीब से अजीब सूरते—हाल और मुतज़ाद रव्वइये का मुज़हिक[1] पहलू भी ज़्यादा तव्वजो देने से बाज़ संजीदा सियाक़ो—सबाक़[2] की गुंजाइश पैदा कर लेता है।

अरस्तू ने हंसी और मज़ाह की सूरते—हाल पर राय देते हुए लिखा है कि हंसी किसी ऐसी बदसूरती को देखने से वजूद में आती है जो दर्दअंगेज़ न हो। दर्दअंगेज़ी के उन्सुर का ज़िक्र करके अरस्तू ने दर—हक़ीक़त अलमियाती[3] सूरते—हाल और क़ाबिले—रह्म् मनाज़िर को तन्ज़ो—मज़ाह या तमस्खुर की फ़िज़ा से मावरा साबित करने की कोशिश की है। इसका मतलब यह भी है कि तरह्हुम, महदर्दी और इन्सानी हमीय्यत के जज़्बे को जिन मौक़ों पर बरुए—अमल आना चाहिए उन मौक़ों या सूरते—हाल को तमस्खुर की आमेज़िश से मुलव्विस किया जाना चाहिए, वरना इन्सानियत की आला अक़्दार[4] के बेमानी होने का अन्देशा पैदा होता रहेगा। कान्ट ने एक जगह लिखा है कि हंसी और मज़ाह की फ़िज़ा वहाँ पैदा होती है जब कोई चीज़ होते—होते रह जाती है और हमारी तवक्क़ोआत बुलबुले की तरह फट जाती है। कभी—कभी कामयाबी की सारी लज़्ज़त अन्जामे—कार से पहले तल्ख़ी में तब्दील हो जाती है या होने या न होने की दरमियानी कैफ़ियत इन्सान को तज़बज़ुब[5] की फ़िज़ा में तमसखुराना माहौल से दो—चार कर देती है। शोपन्हार ने कहा था कि हंसी, तख़य्युल और हक़ीक़त के माबैन नाहमवार साये के वजूद को अचानक महसूस कर लेने से जन्म लेती है। ये नाहमवारी एक ऐसी नाहमवारी या नामुनासिबत होती है जो जिन्दगी के मुख़्तफ़ि मरहलों में हमारे सामने आती है। शायद इसी बायस कहा जाता है कि ज़िन्दगी में इतनी ही नाहमवारियाँ और बुलअजबियाँ हैं कि उनका शुमार नहीं किया जा सकता, इस लिए जिस आदमी में जिस क़द्र ज़्यादा हिस्से—मज़ाह होता है वह उसी ख़ूबसूरती के साथ ज़िन्दगी की नामहवारियों और तल्ख़ियों को बर्दाश्त कर लेने की अहलियत का सबूत दे पाता है। अदबी सिन्फ़ के एतबार से अगर तन्ज़ो—मज़ाह में तफ़रीक़ करने की कोशिश की जाए तो कहा जा सकता है कि मज़ाह—निगार जिन्दगी की नाहमवारियों से महज़ूज़[6] होता है जब कि तन्ज़—निगार इन नाहमवारियों से नफ़रत करता है और इस नौअ[7] की नापसन्दीदा चीज़ों को इस्तहज़ा[8] में उड़ा देने की तरफ़ माएल रहता है।

तन्ज़ और मज़ाह के अनासिर यूँ तो अदब में एक साथ अदबी इज़हार का वसीला बनते हैं, मगर नफ़्सियाती एतबार से इनं दोनों अनासिर के मुजतमा होने का जवाज़[9] यह है कि दोनों एक दूसरे के सहारे काम करते हैं। अगर तन्ज़ हो और मज़ाह की चाशनी न हो तो तन्ज़िया अदब

---

1. हंसाने वाला 2. संदर्भ 3. शोकजनक 4. मूल्य 5. बेचैनी
6. आनंद 7. प्रकार 8. व्यंग 9. इजाज़त (दलील)

ناگوار ہونے کی حد تک ناپسندیدہ ہوسکتا ہے۔ اسی لئے طنز کے سہارے کے لئے مزاح کی ضرورت بہر حال ہر زمانے میں محسوس کی جاتی رہی ہے۔ اس طرح مزاح اگر صرف اپنے سہارے آگے بڑھنے کی کوشش کرے تو مزاح نگار ایک ہنسوڑ اور بے مقصد ٹھٹھول کرنے والے لوگوں میں شمار کیا جائے گا۔ جب کہ مزاح کے ساتھ طنزیہ اسلوب کی آمیزش کسی بھی تحریر کو بامعنی، بامقصد اور زندگی کے لئے کارآمد ثابت کرسکتی ہے۔ طنز نگار جس چیز پر ہنستا ہے اسے تبدیل کرنے کا عندیہ بھی اس کے اندر ضرور موجود رہتا ہے۔ جب کہ طنز کے برخلاف مزاح نگار زندگی اور ماحول سے اپنی مفاہمت اور اس میں دلچسپی لینے کے رویے کو ظاہر کرتا ہے۔ یعنی ایک مزاح نگار جس چیز پر بظاہر ہنستا ہے، درحقیقت وہ اس چیز سے داخلی طور پر محبت بھی کرتا ہے۔ طنز کے بارے میں کہا جاتا ہے کہ طنز میں کسی نہ کسی شکل میں جذبۂ افتخار ضرور موجود ہوتا ہے جب کہ مزاح میں مزاح نگار کا غالب رویہ ایک ہمدرد اور مونس و خیر خواہ کا ہوتا ہے۔

مشرق و مغرب میں طنز و مزاح کی کوئی نہ کوئی صورت ابتدائی زمانے کے ادبی اسالیب میں ضرور موجود رہی ہے۔ مغرب میں تو طنزیہ تحریروں کی ایک طویل روایت ہے۔ عربی اور فارسی میں تضحیک یا تمسخر کے جو عناصر شاعری میں سامنے آیا کرتے تھے وہ دراصل طنز و مزاح کی حیثیت رکھتے تھے۔ یوں بھی عربی میں ایک مقولہ شروع سے ہی مشہور ہے کہ "المُلح فی الکلام کا الملح فی الطعام" یعنی "گفتگو میں تھوڑے بہت مزاح کی حیثیت ایسی ہی ہوتی ہے جیسی کھانے میں نمک کی حیثیت ہوتی ہے" کہ اس کی وجہ سے کھانے کے ذائقے میں اضافہ ہوجاتا ہے۔ صلاح الدین احمد نے یہ بات غلط نہیں کہی ہے کہ "کسی بھی قوم کی ذہنی پختگی کا اندازہ اس کے حس مزاح اور ظرافت سے، سب سے بہتر طریقے پر لگایا جاسکتا ہے۔" جس معاشرے میں طنز و مزاح کا دور دورہ ہوتا ہے اس معاشرے کے بارے میں آسانی سے اس بات کا اندازہ لگایا جاسکتا ہے کہ اس معاشرے میں اپنے رویوں پر نظر ثانی کرنے کی صلاحیت موجود ہے، اور جس قوم یا معاشرے میں اپنے رویوں پر نظر ثانی کرنے کی صلاحیت موجود ہوتی ہے وہ قوم اپنے آپ کو ہر زمانے اور ہر صورت حال میں بامعنی بنائے رکھ سکتی ہے۔ اس نقطۂ نظر سے اس بات کا اندازہ بھی لگایا

नागवार होने की हद तक नापसंदीदा हो सकता है। इसी लिए तन्ज़ के सहारे के लिए मज़ाह की ज़रुरत बहर हाल हर ज़माने में महसूस की जाती रही है। इसी तरह मज़ाह अगर सिर्फ़ अपने सहारे आगे बढ़ने की कोशिश करे तो मज़ाह–निगार एक हंसोड़ और बेमक़सद ठिठोल करने वाले लोगों में शुमार किया जाएगा। जबकि मज़ाह के साथ तन्ज़िया उस्लूब की आमेज़िश किसी भी तहरीर को बामानी[1], बामक़सद और ज़िन्दगी के लिए कारआमद साबित कर सकती है। तन्ज़–निगार जिस चीज़ पर हंसता है उसे तब्दील करने का इन्दिया भी उसके अन्दर ज़रुर मौजूद रहता है। जबकि तन्ज़ के बरख़िलाफ़ मज़ाह–निगार की ज़िन्दगी और माहौल से अपनी मफ़ाहमत और उस में दिलचस्पी लेने के रवय्ये को ज़ाहिर करता है। यानी एक मज़ाह–निगार जिस चीज़ पर बज़ाहिर हंसता है, दरहक़ीक़त वह उस चीज़ से दाख़िली तौर पर मोहब्बत भी करता है। तन्ज़ के बारे में कहा जाता है कि तन्ज़ में किसी न किसी शक्ल में जज़्बए–इफ़्तख़ार[2] ज़रुर मौजूद होता है जबकि मज़ाह–निगार का ग़ालिब रवय्या एक हमदर्द और मूनिस व ख़ैर–ख़्वाह का होता है।

मशरिक़ो–मग़रिब[3] में तन्ज़ो–मज़ाह की कोई न कोई सूरत इब्तदाई ज़माने के अदबी असालीब में ज़रुर मौजूद रही है। मग़रिब में तो तन्ज़िया तहरीरों की एक तवील रवायत है। अरबी और फ़ारसी में तज़हीक या तमसख़ुर के जो अनासिर शायरी में सामने आया करते थे वह दरअसल तन्ज़ व मज़ाह की हैसियत रखते थे। यूँ भी अरबी में एक मक़ूला शुरु से ही मशहूर है कि "अलमलह फ़ीलकलाम मलमहे फ़ीत्तआम" यानी "गुफ़तगू में थोड़ी बहुत मज़ाह की हैसियत ऐसी ही होती है जैसी खाने में नमक की हैसियत होती है" कि इसकी वजह से खाने के ज़ाएक़े में इज़ाफ़ा हो जाता है। सलाहुद्दीन अहमद ने यह बात ग़लत नहीं कही है कि " किसी भी क़ौम की ज़ेहनी पुख़्तगी का अन्दाज़ा उसके हिस्से–मज़ाह और ज़राफ़त से, सब से बेहतर तरीक़े पर लगाया जा सकता है।" जिस मोआशरे में तन्ज़ो–मज़ाह का दौर दौरा होता है उस मोआशरे के बारे में आसानी से इस बात का अन्दाज़ा लगाया

---

1. अर्थमय 2. गर्व 3. पूरब और पश्चिम

جا سکتا ہے کہ ادیب اپنے ماحول اور سماج کی بے اعتدالیوں اور افراد کی افراط و تفریط پر طنز و مزاح کے وسیلے سے کس طرح احتساب کی نگارہ رکھتا ہے اور اپنی تحریر کو بے اعتدالیوں کا پیمانہ بنا دیتا ہے۔

ان باتوں سے اندازہ لگایا جا سکتا ہے کہ سنجیدہ زندگی کی حد سے بڑھی ہوئی یبوسیت اور عدم توازن کو اعتدال سے ہم آہنگ رکھنے کے لئے حسِ مزاح کی کس حد تک ضرورت ہوتی ہے۔ لیکن جب ادبی اظہار کے طور پر مزاح کی صلاحیت کو روبہ عمل لایا جاتا ہے تو اس کے ادبی وسائل کیا ہو سکتے ہیں؟ اس سوال کے جواب میں اگر مزاح نگاروں کے ادبی طریق کار کا ایک سرسری جائزہ بھی لیا کائے تو اندازہ ہوتا ہے کہ زبان کا مخصوص استعمال اکثر خود اپنے آپ میں مزاح کے عنصر کو نمایاں کرنے کا وسیلہ ثابت ہوتا ہے۔ اس بات کو بعض نقادوں نے زبان کی بازی گری کا نام بھی دیا ہے۔ یعنی اس کا ایک مطلب یہ بھی ہوا کہ زبان کی ساخت کو بدل کر، یا اس کے مروجہ محاورے میں انحراف کر کے بھی مزاح پیدا کیا جا سکتا ہے۔ مزید برآں یہ کہ موازنے اور مقابلے کی فضا پیدا کر کے بھی مزاح کے عنصر کو نمایاں کیا جا سکتا ہے۔ مگر زبان کا بازی گرانہ استعمال، اور موازنہ، اظہار کی سطح پر کسی بھی موضوع میں مزاحیہ کیفیت کو شامل کرنے کا وسیلہ تو ضرور ثابت ہوتا ہے، مگر مواد اور موضوع کی سطح پر مزاحیہ صورتِ واقعہ یا مزاحیہ کرداروں سے جب بھی مزاحیہ ماحول پیدا کرنے کی کوشش کی جائے گی تو ہم اسے براہ راست مزاح کی تخلیق سے زیادہ مزاحیہ پس منظر کا نام دے سکتے ہیں۔ اکثر اس ضمن میں یہ سوال بھی اٹھایا جاتا ہے کہ مزاحیہ ادب کس حد تک سنجیدہ ادبی اکتساب کا متبادل ثابت ہو سکتا ہے؟ تو اس سلسلے میں سب سے پہلے تو اس بات کو مدنظر رکھنا ضروری ہے کہ مزاحیہ ادبی اظہار کو کبھی بھی الگ سے ایک اکائی کی حیثیت سے دیکھنا مناسب نہیں ہوتا۔ زندگی میں مزاح کی اہمیت اور تفنن طبع کی انسانی فطرت کے حوالے سے جب بھی مزاحیہ ادب کی قدر و قیمت کا تعین کرنے کی کوشش کی جائے گی، تو اسے کسی بھی طرح دوسرے درجے کے ادب یا ادبی اظہار کے بنیادی دھارے سے الگ کسی ادبی اسلوب کا نام نہیں دیا جا سکتا۔ اردو میں ہی نہیں بلکہ دوسری بڑی زبانوں کے شعری ادب میں تضمین یا پیروڈی کو بڑی اہمیت حاصل رہی ہے۔ اسی لئے اس ضمن میں پیروڈی یا تضمین

जा सकता है कि उस मोआशरे में अपने रवय्यों पर नज़रे–सानी करने की सलाहियत मौजूद है और जिस कौम या मोआशरे में अपने रवय्यों पर नज़रे–सानी करने की सलाहियत मौजूद होती है वह कौम अपने आप को हर ज़माने और हर सूरते–हाल में बा–मानी बनाए रख सकती है। इस नुक़्तए–नज़र से इस बात का अन्दाज़ा भी लगाया जा सकता है कि अदीब अपने माहौल और समाज की बेएतदालियों और अफ़राद की अफ़रातो–तफ़रीत पर तन्ज़ो–मज़ाह के वसीले से किस तरह एहतसाब[1] की निगाह रखता है और अपनी तहरीर को बेएतदालियों का पैमाना बना देता है।

इन बातों से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि संजीदा ज़िन्दगी की हद से बढ़ी हुई यबूसत[2] और अदम तवाज़ुन[3] को एतदाल से हमआहंग रखने के लिए हिस्से–मज़ाह की किस हद तक ज़रुरत होती है। लेकिन जब अदबी इज़हार के तौर पर मज़ाह की सलाहियत को रुबअमल लाया जाता है तो उसके अदबी वसायल क्या हो सकते है? इस सवाल के जवाब में अगर मज़ाह–निगारों के अदबी तरीक़ए–कार का एक सरसरी जायज़ा भी लिया जाए तो अन्दाज़ा होता है कि ज़बान का मख़्सूस इस्तेमाल अक्सर ख़ुद अपने आप में मज़ाह के उन्सुर को नुमायाँ करने का वसीला साबित होता है। इस बात को बाज़ नक़्क़ादों ने ज़बान की बाज़ीगरी का नाम भी दिया है। यानी इसका एक मतलब यह भी हुआ कि ज़बान की साख़्त को बदल कर, या उसके मुरव्वजा मुहावरे में इन्हेराफ़[4] करके भी मज़ाह पैदा किया जा सकता है। मज़ीदबरआँ यह कि मवाज़ने और मुक़ाबले की फ़िज़ा पैदा करके भी मज़ाह के उन्सुर को नुमायाँ किया जा सकता है। मगर ज़बान के बाज़ीगराना इस्तेमाल, और मवाज़ना, इज़हार की सतह पर किसी भी मौज़ूअ में मज़ाहिया कैफ़ियत को शामिल करने का वसीला तो ज़रुर साबित होता है, मगर मवाद और मौज़ूअ की सतह पर मज़ाहिया सूरते–वाक़या या मज़हिया किरदारों से जब भी मज़ाहिया माहौल पैदा करने की कोशिश की जाएगी तो हम उसे बराहे–रास्त मज़ाह की तख़्लीक़ से ज़्यादा मज़ाहिया पसमन्ज़र का नाम दे सकते हैं। अक्सर इस ज़िम्न में यह सवाल भी उठाया जाता है कि मज़ाहिया अदब किस हद तक संजीदा अदबी इक्तसाब का मुतबादिल साबित हो सकता है? तो इस सिलसिले में सबसे पहले तो इस बात को मद्देनज़र रखना ज़रुरी है कि मज़ाहिया अदबी इज़हार को कभी भी अलग से एक इकाई की हैसियत से देखना मुनासिब नहीं होता। ज़िन्दगी में मज़ाह की अहमियत और तफ़न्नुने–तब्अ की इन्सानी फ़ितरत के हवाले से जब भी मज़ाहिया अदब की क़द्रो–क़ीमत का तअय्युन करने की कोशिश की जाए, तो उसे किसी भी तरह दूसरे दर्जे के अदब या अदबी इज़हार के बुनियादी धारे से अलग किसी अदबी उसलूब का नाम नहीं दिया जा सकता। उर्दू में ही नहीं बलिक दूसरी बड़ी ज़बानों के शेरी अदब में तज़मीन या पैरोडी को बड़ी अहमियत हासिल रही है। इसी लिए इस ज़िम्न में पैरोडी या तज़मीन[5]

---

1. हिसाब 2. रुखापन 3. असंतुलन 4. इन्कार
5. दूरसे के शेर पर मिस्रा लगाना

میں استعمال ہونے والے طریق کار کو بھی اہمیت کے ساتھ دیکھنے کی ضرورت ہے۔ پھر یہ کہ پیروڈی وغیرہ میں زبان کے قالب کو تبدیل کرنے اور تخلیقی طور پر زبان کے طے شدہ ڈھانچے میں بعض تبدیلیوں کو شامل کرنے کے باعث جو مزاحیہ پہلو پیدا ہوتے ہیں، ان کی بنیاد، شاعر کے اصل کلام پر ہوتی ہے اور اس کلام کو بنیاد بنا کر سیاق وسباق میں تبدیلی پیدا کرنے کی اہمیت بہت زیادہ بڑھ جاتی ہے۔ اس موقع پر شاید یہ کہنے کی ضرورت نہیں کہ تضمین اور پیروڈی میں سنجیدگی اور حد سے بڑھی ہوئی فلسفیانہ بردباری سے تمسخر کی فضا کی تخلیق کے عمل میں کس حد تک ادبی اسلوب تبدیلی کے عمل سے دوچار ہوتا ہے اور بنیادی مصرعوں کے مصداق میں کن نئے گوشوں کا اضافہ ہو جاتا ہے۔

مزاح کے شانہ بہ شانہ طنزیہ اسلوب کو ہم آمیز کرنے کی جس معنویت کا ذکر گذشتہ صفحات میں کیا گیا ہے۔ اس سے بہ آسانی اندازہ لگایا جا سکتا ہے کہ طنز کے ساتھ مزاحیہ عنصر کی شمولیت کیوں کرنا گزیر ہے۔ اگر طنز کو مزاح یا مزاحیہ لب ولہجہ سے الگ کر کے استعمال کیا جائے تو ہمیشہ اس بات کا اندیشہ لاحق رہتا ہے کہ طنز میں رونما ہونے والی تلخی نا قابل برداشت ہو سکتی ہے۔ اسی سبب کہا جاتا ہے کہ عیب کی پردہ دری میں پیرایۂ بیان کا لطف لازمی ہوتا ہے۔ اس کے ساتھ یہ بھی ضروری ہے کہ فرد کے عیوب کی پردہ دری کو محض انفرادی سیاق وسباق کے ساتھ مقصد نہ بنایا جائے، اس کے برخلاف اگر انفرادی پردہ دری کو زندگی اور سماج کی عام بلکہ اس سے آگے بڑھ کر عالم گیر ناہمواریوں کی پردہ دری کا پس منظر بنا لیا جائے تو طنز کے اثرات بھی دیرپا ہو سکتے ہیں اور اس کے مقصد کی ہمہ گیری بھی اپنی معنویت کے ساتھ جلوہ گر ہو سکتی ہے۔ اگر طنز کے استعمال میں لطف وانبساط کا پہلو شامل نہ کیا جائے یا طنزیہ موضوع کے سیاق وسباق میں وسعت نہ پیدا کی جائے تو اس بات کا اندیشہ لاحق رہتا ہے کہ طنز طنز نہ رہ کر صرف پھبتی، استہزا، یا ہجو کی صورت اختیار کر لے۔ اردو شاعری میں ہجویہ نظموں کی روایت میں سیاق وسباق سے یہی محرومی اسے شخصی یا واقعاتی طنز کی سطح سے آگے نہیں بڑھنے دیتی۔ ہجویہ نظموں کے برخلاف شہر آشوب میں جس طرح طنز ملتا ہے، چونکہ اس کے ڈانڈے مدنی زندگی اور سماجی صورت حال سے جا ملتے ہیں اس لئے اس میں استہزاء یا تمسخر کی کیفیت برائے نام ہی پیدا ہو پاتی ہے۔

में इस्तेमाल होने वाले तरीक़ए–कार को भी अहमियत के साथ देखने की ज़रुरत है। फिर यह कि पैरोडी वग़ैरह में ज़बान के क़ालिब[1] को तब्दील करने और तख़लीक़ी तौर पर ज़बान के तय शुदा ढाँचे में बाज़ तब्दीलियों को शामिल करने के बायस जो मज़ाहिया पहलू पैदा होते हैं, उनकी बुनियाद शायर के अस्ल कलाम पर होती है और इस कलाम को बुनियाद बनाकर सियाक़ो–सबाक़ में तब्दीली पैदा करने की अहमियत बहुत ज़्यादा बढ़ जाती है। इस मौक़े पर शायद यह कहने की ज़रुरत नहीं कि तज़मीन और पैरोडी में संजीदगी से ग़ैरसंजीदगी और हद से बढ़ी हुई फ़ल्सफ़ियाना बुर्दबारी से तमस्ख़ुर की फ़िज़ा की तख़लीक़ के अमल में किस हद तक अदबी उसलूब तब्दीली के अमल से दो चार होता है और बुनियादी मिसरों के मिस्दाक़[2] में किन नये गोशों का इज़ाफ़ा हो जाता है।

मज़ाह के शाना–ब–शाना[3] तन्ज़िया उस्लूब को हम आमेज़ करने की जिस मानवियत का ज़िक्र गुज़िश्ता सफ़हात में किया गया है। इससे बआसानी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि तन्ज़ को मज़ाह या मज़ाहिया लबो–लहजे से अलग करके इस्तेमाल किया जाए तो हमेशा इस बात का अन्देशा लाहक़ रहता है कि तन्ज़ में रुनुमा होने वाली तल्ख़ी नाक़ाबिले–बर्दाश्त हो सकती है। इसी सबब कहा जाता है कि ऐब की पर्दादरी में पैरायए–बयान का लुत्फ़ लाज़मी होता है। इस के साथ यह भी ज़रुरी है कि फ़र्द[4] के अयूब की पर्दादरी को महज़ इन्फ़रादी[5] सियाक़ो–सबाक़ के साथ मक़सद न बनाया जाए, इसके बरख़िलाफ़ अगर इन्फ़रादी पर्दादरी को ज़िन्दगी और समाज की आम बल्कि उससे आगे बढ़कर आलमगीर नाहमवारियों की पर्दादरी का पसमंज़र बना लिया जाए तो तन्ज़ के असरात भी देरपा हो सकते हैं और इसके मक़सद की हमागीरी भी अपनी मानवियत के साथ जलवागर हो सकती है। अगर तन्ज़ के इस्तेमाल में लुत्फ़ो–इन्बसात का पहलू शामिल न किया जाए या तन्ज़िया मौज़ूअ के सियाक़ो–सबाक़ में उस्अत न पैदा की जाए तो इस बात का अन्देशा लाहक़ रहता है कि तन्ज़, तन्ज़ न रह कर सिर्फ़ फब्ती, इस्तहज़ा या हज्व की सूरत अख़्तियार करले। उर्दू शायरी में हज्विया नज़्मों की रवायत में सियाक़ो–सबाक़ से यही महरुमी उसे सख़्ती या वाक़ेयाती तन्ज़ की सतह से आगे नहीं बढ़ने देती। हज्विया नज़्मों के बरख़िलाफ़ शहर–आशोब[6] में जिस तरह तन्ज़ मिलता है, चूँकि इसके डांडे मदनी[7] ज़िन्दगी और समाजी सूरते–हाल से जा मिलते हैं इस लिए इस में इस्तहज़ा या तमस्ख़ुर की कैफ़ियत बराये नाम ही पैदा हो पाती है।

---

1. साँचा 2. सुबूत 3. साथ–साथ 4. आदमी 5. व्यक्तित्व
6. ऐसी नज़म जिसमें किसी शहर की बरबादी का बयान हो 7. शहरी

مزاح کی طرح طنز میں بھی کبھی موازنے سے کام لیا جاتا ہے اور کبھی مبالغہ آمیزی سے اس کی لے کو تیز کرنے کی کوشش کی جاتی ہے۔ مزید یہ کہ الفاظ کا ہنرمندانہ استعمال بھی اکثر طنز کے لطف کو دوبالا کر دیتا ہے۔ زبان کی ہنرمندی کے ساتھ اگر تحریف کو بھی طنز نگاری میں شامل کر لیا جائے تو اس میں بعض نئے پہلوؤں کا اضافہ کیا جا سکتا ہے۔ طنزیہ لب و لہجے میں بعض مقامات ایسے بھی آتے ہیں جہاں طنز، طنز سے آگے بڑھ کر ہجو ملیح (Irony) کی حدوں میں داخل ہو جاتا ہے۔ طنز ملیح یا ہجو ملیح یوں تو اپنی اصل کے اعتبار سے تحریف پیدا کرنے کا کامیاب حربہ ہے، مگر اس میں مبالغہ سے کہیں زیادہ تحت البیان کی کیفیت پیدا کرنی ضروری ہوتی ہے۔ تحت البیان یا (Understatement)، کا استعمال ایک تو تحریر میں رمزیت یا اشاریت کا اضافہ کر دیتا ہے، دوسرے یہ کہ اس کا طریق کار علامتوں کی تخلیق سے جا ملتا ہے۔ طنز ملیح کے برعکس علامت، مماثلتوں کی بنیاد پر تخلیق کی جاتی ہے جب کہ طنز ملیح کی بنیاد ہمیشہ تضاد کو نمایاں کرنے سے عبارت ہوتی ہے۔ جب کبھی طنز ملیح، تحت البیان کے ساتھ ہم آہنگ ہوتا ہے تو اس کے طریق کار میں مخالف کے دلائل اور طریق استدلال کو بہ ظاہر تسلیم کرتے ہوئے اس کے کمزور پہلوؤں کو بے نقاب کرنا بھی شامل ہوتا ہے — طنز اور مزاح کے مترادف کے طور پر 'ہجا' کی اصطلاح کا استعمال عام ہے۔ مگر ہجا کا درجہ طنز اور مزاح کے مقابلے میں کمتر ہے۔ اس لئے کہ اس میں کسی شخص یا صورت حال کے صرف مضحک پہلوؤں کو پیش کیا جاتا ہے۔ اس بات سے غرض نہیں رکھی جاتی کہ 'ہجا' کے استعمال کرنے والے کا نقطۂ نظر صحیح ہے یا غلط، جائز ہے یا ناجائز۔ ہجا کے دائرۂ کار میں طنز و تعریض، ہنسی، ٹھٹھول، فحاشی اور پھکو پن جیسی تمام چیزیں شامل ہو جاتی ہیں — انگریزی میں Satire (سٹائر) کا لفظ جن معنوں میں استعمال ہوتا ہے اس میں طنز، مزاح، ظرافت اور ان جیسے کئی اور مفاہیم شامل ہیں۔ چونکہ اردو میں ظریفانہ ادب کی تنقید زیادہ نہیں لکھی گئی اس لئے انگریزی میں مستعمل اس نوع کے بعض الفاظ کی معنوی وسعت پر بحث بھی نہیں ملتی — عربی اور فارسی میں اس طرح کے مفاہیم کی نمائندگی کے لئے متعدد الفاظ مثلاً ہجو، ہجا، ہجو ملیح، تعریض، تنقیص، لعن طعن، استہزاء، مضحکات اور شطحیات کو الگ الگ موقعوں پر استعمال کیا جاتا ہے لیکن عام معنوں

मज़ाह की तरह तन्ज़ में भी कभी मवाज़ने[1] से काम लिया जाता है और कभी मुबालिग़ा–आमेज़ी[2] से इसकी लै को तेज़ करने की कोशिश की जाती है। मज़ीद यह कि अल्फ़ाज़ का हुनरमन्दाना इस्तेमाल भी अक्सर तन्ज़ के लुत्फ़ को दोबाला कर देता है। ज़बान को हुनरमन्दी के साथ अगर तहरीफ़[3] को भी तन्ज़–निगारी में शामिल कर लिया जाए तो इसमें बाज़ नये पहलुओं का इज़ाफ़ा किया जा सकता है। तन्ज़िया लबो–लहजे में बाज़ मुक़ामात ऐसे भी आते है जहाँ तन्ज़, तन्ज़ से आगे बढ़कर हज्वे–मलीह (Irony) की हदों में दाख़िल हो जाता है। तन्ज़े–मलीह या हज्वे–मलीह यूँ तो अपनी अस्ल के एतबार से तहरीफ़ पैदा करने में कामयाब हरबा है, मगर इसमें मुबालग़े से कहीं ज़्यादा तहेतुल–बयान की कैफ़ियत पैदा करनी ज़रुरी होती है। तहेतुल–बयान या (Understatement), का इस्तेमाल एक तो तहरीर में रमज़ियत या इशारियत का इज़ाफ़ा कर देता है, दूसरे यह कि इस का तरीक़ए–कार अलामतों की तख़्लीक़ से जा मिलता है। तन्ज़े–मलीह के बरअक्स अलामत, मुमासिलतों की बुनियाद पर तख़्लीक़ की जाती है जबकि तन्ज़े–मलीह की बुनियाद हमेशा तज़ाद[4] को नुमायाँ करने से इबारत होती है। जब कभी तन्ज़े–मलीह, तहेतुल–बयान के साथ हमआहंग होता है तो इसके तरीक़ए–कार में मुख़ालिफ़ के दलायल और तरीक़ए–इस्तदाल को बज़ाहिर तस्लीम करते हुए इसके कमज़ोर पहलुओं को बेनक़ाब करना भी शामिल होता है – तन्ज़ और मज़ाह के मुतरादिफ़ के तौर पर 'हेजा' की इस्तलाह का इस्तेमाल आम है। मगर हेजा का दर्जा तन्ज़ और मज़ाह के मुक़ाबले में कमतर है। इसलिए कि इसमें किसी शख़्स या सूरते–हाल के सिर्फ़ मुज़हिक पहलुओं को पेश किया जाता है। इस बात से ग़रज़ नहीं रखी जाती कि हेजा, के इस्तेमाल करने वाले का नुक़्तए–नज़र सही है या ग़लत, जायज़ है या नाजायज़। हेजा के दायरए–कार में तन्ज़ो–तारीज़, हंसी–ठिठोल, फ़ुहाशी और फक्कड़पन जैसी तमाम चीज़ें शामिल हो जाती हैं – अंग्रेज़ी में Satire (सटायर) का लफ्ज़ जिन मानों में इस्तेमाल होता है उसमें तन्ज़, मज़ाह, ज़राफ़त और इन जैसे कई और मफ़ाहीम शामिल हैं। चूँकि उर्दू में ज़रीफ़ाना अदब की तनक़ीद ज़्यादा नहीं लिखी गई इस लिए अंग्रेज़ी में मुस्तअमल इस नौअ के बाज़ अल्फ़ाज़ की मानवी उसअत पर बहस भी नहीं मिलती– अरबी और फ़ारसी में इस तरह के मफ़ाहीम की नुमाइन्दगी के लिए मुतअद्दिद अल्फ़ाज़ मसलन हज्व, हेजा, हज्वे–मलीह, तारीज़, तनक़ीस, तान–तान, इस्तहज़ा, मुज़हकात और शतहयात[5] को अलग–अलग मौक़ों पर इस्तेमाल किया जाता है लेकिन आम मानों

---

1. बराबरी 2. अतिश्योक्ति 3. किसी रचना के शब्दों में परिवर्तन करना
4. विपरीत अर्थ 5. धर्म के विरुद्ध बातें

میں اکثر ان الفاظ کو مترادفات ہی کے خانے میں رکھا جاتا ہے۔

اردو کی ادبی روایت میں چونکہ شاعری کو اولیت حاصل رہی ہے اس لئے طنز ومزاح کے مفاہیم کا مناسب ترین اطلاق شعری نمونوں پر ہی کیا جا سکتا ہے۔ اس لئے اس بات کو تسلیم کرنے کے باوجود کہ اردو کا طنزیہ ومزاحیہ نثری ادب اب اپنی واضح شکل اختیار کر چکا ہے تاہم چونکہ اس روایت کا آغاز شاعری کی اصناف سے ہوا تھا، اس لیئے شاعری میں اس کیفیت کی نشاندہی کے ذریعہ ہی طنزیہ اور مزاحیہ روایت کے آغاز اور ارتقاء کا نقشہ مرتب کرنا مناسب معلوم ہوتا ہے۔ اردو شاعری میں مزاح اور طنز کے عناصر کو اگر بعض شعری کاوشوں کے حوالے سے نشان زد کیا جائے تو اندازہ ہوتا ہے کہ اردو کا باقاعدہ اور بھرپور طنزیہ اور مزاحیہ شاعر جعفر زٹلی تھا۔ جعفر زٹلی نے تقریباً تین صدی قبل پکھوا نامہ، بھوت نامہ، بڑھوا نامہ جیسی دلچسپ اور یادگار نظمیں لکھیں۔ یہ الگ بات ہے کہ زٹلی کو اردو کے اشرافیہ پسند حلقوں میں عرصے تک کوئی خاص اہمیت حاصل نہیں ہو سکی۔ لیکن گذشتہ نصف صدی میں جب سے شہر آشوب اور سماجی طنز کے وسیلے سے تہذیبی تاریخ کو سمجھنے کا رویہ اپنایا جانے لگا ہے، جعفر زٹلی کی اہمیت کو روز افزوں مقبولیت حاصل ہو رہی ہے۔ جعفر زٹلی کے بعد کے زمانے میں کچھ تو ریختی کے وسیلے سے اردو شاعری میں تفنن اور تمسخر کے پہلو داخل ہوئے اور کچھ شہر آشوب کے ذریعہ اجتماعی صورت حال پر استہزاء کا انداز اختیار کیا گیا، لیکن جیسا کہ پہلے عرض کیا گیا کی طنز ومزاح کا نشانہ جب بھی فرد کے بجائے سماجی صورت حال یا عمومی انسانی رویے کو بنایا جاتا ہے اس میں تعمیم کی کیفیت پیدا ہو جاتی ہے اور اس کا دائرہ کار وسیع ہو جاتا ہے۔ یہی حال شہر آشوب کی شعری صنف کے ساتھ ہوا اور اسی باعث یہ صنف ایک بڑے پس منظر کی نمائندہ بن گئی۔ یہ زمانہ دراصل سودا، میر اور قائم کا زمانہ ہے۔ سودا نے جس طرح ہجویہ نظمیں لکھیں اور جن نظموں میں مدنی زندگی کا مرثیہ بیان کرنے کی کوشش کی، ان کو اس ضمن میں خاصی اہمیت حاصل ہوئی۔ ان کے معاصرین میں مکین اور ضاحک حتی کہ میر تقی میر نے اپنی ہجویہ نظموں میں طنز وتمسخر کا انداز اختیار کیا۔ اس طرح اردو زبان جو اس وقت خالصتاً اشرافیہ طبقہ کی نمائندگی کرتی تھی اس کو زندگی کے دوسرے ذائقوں سے بھی آشنا کیا اور شاعری کی اصناف میں قدرے غیر سنجیدہ موضوعات کے اظہار کے اسالیب عام کئے۔

में अक्सर इन अल्फ़ाज़ को मुतरादिफ़ात ही के ख़ाने में रखा जाता है।

उर्दू की अदबी रवायत में चूँकि शायरी को अव्वलियत हासिल रही है इसलिए तन्ज़ो–मज़ाह के मफ़ाहीम का मुनासिब तरीन इतलाक़ शेरी नमूनों पर ही किया जा सकता है। इसलिए इस बात को तस्लीम करने के बावजूद कि उर्दू का तन्ज़िया व मज़ाहिया नसरी अदब अब अपनी वाज़ेह शक्ल अख़्तियार कर चुका है ताहम चूँकि इस रवायत का आग़ाज़ शायरी की अस्नाफ़ से हुआ था, इसलिए शायरी में इस कैफ़ियत की निशानदेही के ज़रिये ही तन्ज़िया और मज़ाहिया रवायत के आग़ाज़ और इरतक़ा का नक़्शा मुरत्तब करना मुनासिब मालूम होता है। उर्दू शायरी में मज़ाह और तन्ज़ के अनासिर को अगर बाज़ शेरी काविशों के हवाले से निशानज़द किया जाये तो अन्दाज़ा होता है कि उर्दू का बाक़ायदा और भरपूर तन्ज़िया और मज़ाहिया शायर जाफ़र ज़टल्ली था। जाफ़र ज़टल्ली ने तक़रीबन तीन सदी क़ब्ल कछुआनामा, भूतनामा, बुढ़वानामा जैसी दिलचस्प और यादगार नज़्में लिखीं। ये अलग बात है कि ज़टल्ली को उर्दू के अशराफ़िया हलक़ों में अर्से तक कोई ख़ास अहमियत हासिल नहीं हो सकी। लेकिन गुज़िश्ता निस्फ़ सदी में जब से शहरे–आशोब और समाजी तन्ज़ के वसीले से तहज़ीबी तारीख़ को समझने का रवय्या अपनाया जाने लगा, जाफ़र ज़टल्ली की अहमियत को रोज़अफ़ज़ूँ मक़बूलियत हासिल हो रही है। जाफ़र ज़टल्ली के बाद के ज़माने में कुछ तो रेख़्ती[1] के वसीले से उर्दू शायरी में तफ़न्नुन और तमस्ख़ुर के पहलू दाख़िल हुए और कुछ शहरे–आशोब के ज़रिये इजतमाई सूरते–हाल पर इस्तहज़ा का अन्दाज़ अख़्तियार किया गया, लेकिन जैसा कि पहले अर्ज़ किया गया कि तन्ज़ो–मज़ाह का निशाना जब भी फ़र्द के बजाए समाजी सूरते–हाल या उमूमी इन्सानी रव्यये को बनाया जाता है इस में तामीम[2] की कैफ़ियत पैदा हो जाती है और उसका दायरए–कार वसीअ हो जाता है। यही हाल शहर–आशोब की शेरी सिन्फ़ के साथ हुआ और इसी बाएस ये सिन्फ़ एक बड़े पसमंज़र की नुमाइन्दा बन गई। ये ज़माना दरअसल सौदा, मीर और क़ायम का ज़माना है। सौदा ने जिस तरह हज्विया नज़्में लिखीं और जिन नज़्मों में मदनी ज़िन्दगी का मर्तबा बयान करने की कोशिश की, उन को उस ज़िम्न में ख़ासी अहमियत हासिल हुई। उनके मुआसरीन[3] में मकीन और ज़ाहिक हत्ताकि मीर तक़ी मीर ने अपनी हज्विया नज़्मों में तन्ज़ो–तमस्ख़ुर का अन्दाज़ अख़्तियार किया। इस तरह उर्दू ज़बान जो उस वक़्त ख़ालिसतन अशराफ़िया तबक़े की नुमाइन्दगी करती थी उसको ज़िन्दगी के दूसरे ज़ायक़ों से भी आशना किया और शायरी की अस्नाफ़ में क़दरे ग़ैर–संजीदा मौज़ूआत के इज़हार के असालीब आम किए।

1. औरतों की बोली में कही जाने वाली नज़्म 2. सामान्य अनुमान 3. समकालीन

جہاں تک نظیر اکبرآبادی کی نظموں کا سوال ہے تو جیسا کہ سب جانتے ہیں کہ نظیر کو نواب مصطفیٰ خاں شیفتہ نے اپنے تذکرۂ شعرا ''گلشن بے خار'' میں جو سوقی شاعر کہا تھا اس کی اصل وجہ ان کی پھکڑ پن اور طنز و استہزاء پر مبنی نظمیں ہی تھیں۔ ان کی نظموں میں چونکہ موضوعات کا بے پناہ تنوع ملتا ہے اس لئے ہجو، طنز اور مزاح کے عناصر کا ان نظموں میں پایا جانا خاصا قرین قیاس معلوم ہوتا ہے۔ حقیقت یہ ہے کہ یہی تنوع نظیر کی شاعری کا امتیاز بھی ہے۔ شمالی ہند میں دہلی اور اکبرآباد کے علاوہ لکھنؤ کو بھی ایک بہت بڑے شعری اور ادبی مرکز کی اہمیت عرصے تک حاصل رہی۔ لکھنؤ میں انشا اللہ خاں انشاؔ کی غزل میں جس نوع کی بے تکلفی اور ہلکے پھلکے رنگ کو شامل کرنے کا انداز ملتا ہے اس پر مزاح اور دل لگی کے علاوہ کسی چیز کا اطلاق نہیں ہوتا۔ انشاؔ کے علاوہ جرأت کی شوخی بھی مزاحیہ اسلوب کی نمائندگی کرتی ہے اور جرأت کی شاعری میں جگہ جگہ طنزیہ لب و لہجے کی نشاندہی بھی آسانی سے کی جا سکتی ہے۔ شمالی ہند کے ان شاعروں کے علاوہ مرزا غالبؔ کے یہاں جس نوع کے تفنن سے کام لیا گیا ہے وہ اپنی مثال آپ ہے۔ اس میں کوئی شک نہیں غالب کی غزلیہ شاعری میں مزاح کے عناصر تو نہیں ملتے مگر اس میں طنز کا استعمال کثرت سے ملتا ہے۔ یہ طنز کہیں الفاظ میں ہے، کہیں لہجے میں، کہیں اپنی خود احتسابی کے رویے میں اور کہیں دنیا کے مناظر کے سامنے سے ایک طنزیہ نگاہ غلط انداز ڈال کر گزرنے کے انداز میں طنزیہ طریق کار کو محسوس کیا جا سکتا ہے۔ مگر مرزا غالبؔ کے خطوط میں ان کی طبعی شادابی اور طنز و مزاح کی صلاحیت کا بھرپور اظہار ملتا ہے۔ حقیقت یہ ہے کہ اردو کی ادبی روایت میں غالبؔ کے مکاتیب سے اردو نثر میں طنز و مزاح کی شمولیت کے آثار ملنا شروع ہوتے ہیں۔

اردو نثر میں طنز و مزاح کی آمیزش مرزا غالبؔ کے خطوط میں جس طرح نثر کی سنجیدگی کو طباعی سے بدلتی ہے اور مکتوبات غالب میں جس دلچسپی کے عنصر کا اضافہ کرتی ہے وہ یقیناً اردو نثر میں مزاحیہ اسلوب کا آغاز ہے۔ لیکن صحیح معنوں میں طنز نگاری اور مزاح نگاری کا باقاعدہ آغاز ''اودھ پنچ'' سے ہوتا ہے۔ یہ اخبار چونکہ اپنے مزاج کے اعتبار سے طنز اور مزاح پر مبنی تحریروں سے ہی عبارت تھا اس لئے زندگی کا ہر رنگ اور طباعی اور زندہ دلی کا ہر اسلوب ہمیں اس اخبار میں مل جاتا ہے۔ اتفاق سے 'اودھ پنچ' اور 'اودھ اخبار' کی ساری

जहाँ तक नज़ीर अकबरआबादी की नज़्मों का सवाल है तो जैसा कि सब जानते हैं कि नज़ीर को नवाब मुस्तफ़ा ख़ाँ शेफ़्ता ने अपने तज़्करए–शोअरा "गुलशने–बेख़ार" में जो सूफ़ी शायर कहा था उसकी अस्ल् वजह उनके फक्कड़पन और तन्ज़ो–इस्तहज़ा पर मब्नी[1] नज़्में ही थीं। उनकी नज़्मों में चूँकि मौज़ूआत का बे पनाह तनव्वो[2] मिलता है इसलिए हज्व, तन्ज़ और मज़ाह के अनासिर का उन नज़्मों में पाया जाना ख़ासा क़रीने–क़यास मालूम होता है। हक़ीक़त यह है कि यही तनव्वो नज़ीर की शायरी का इम्तियाज़ भी है। शुमाली हिन्द में देहली और अकबरआबाद के अलावा लखनऊ को भी एक बहुत बड़े शेरी और अदबी मरकज़ की अहमियत अर्से तक हासिल रही। लखनऊ में इन्शा अल्लाह ख़ाँ इन्शा की ग़ज़ल में जिस नौअ की बेतकल्लुफ़ी और हल्के–फुल्के रंग को शामिल करने का अन्दाज़ मिलता है उस पर मज़ाह और दिललगी के अलावा किसी चीज़ का इतलाक़ नहीं होता। इन्शा के अलावा जुरअत की शोख़ी भी मज़ाहिया उस्लूब की नुमाइन्दगी करती है और जुरअत की शायरी में जगह–जगह तन्ज़िया लबो–लहजे की निशानदेही भी आसानी से की जा सकती है। शुमाली हिन्द के उन शायरों के अलावा मिर्ज़ा ग़ालिब के यहाँ जिस नौअ के तफ़न्नुन से काम लिया गया है वह अपनी मिसाल आप है। इसमें कोई शक नही कि ग़ालिब की ग़ज़लिया शायरी में मज़ाह के अनासिर तो नहीं मिलते मगर उसमें तन्ज़ का इस्तेमाल कसरत से मिलता है। यह तन्ज़ कहीं अल्फ़ाज़ में है, कहीं लहजे में, कहीं अपनी खुद एहतसाबी के रवय्ये में और कहीं दुनिया के मनाज़िर के सामने से एक तन्ज़िया निगाहे–ग़लत अन्दाज़ डालकर गुज़रने के अन्दाज़ में तन्ज़िया तरीक़े–कार को महसूस किया जा सकता है। मगर मिर्ज़ा ग़ालिब के ख़ुतूत में इन की तबई[3] शादाबी और तन्ज़ो–मज़ाह की सलाहियत का भरपूर इज़हार मिलता है। हक़ीक़त यह है कि उर्दू की अदबी रवायत में ग़ालिब के मकातीब[4] से उर्दू नस्र में तन्ज़ो–मज़ाह की शमूलियत के आसार मिलना शुरु होते है।

उर्दू नस्र में तन्ज़ो–मज़ाह की आमेज़िश मिर्ज़ा ग़ालिब के ख़ुतूत में जिस तरह नस्र की संजीदगी को तब्बाई[5] से बदलती है और मक्तूबाते–ग़ालिब में दिलचस्पी के उन्सुर का इज़ाफ़ा करती है वह यक़ीनन उर्दू नस्र में मज़ाहिया उस्लूब का आग़ाज़ है। लेकिन सही मानों में तन्ज़ निगारी और मज़ाह निगारी का बाक़ायदा आग़ाज़ "अवध पंच" से होता है। यह अख़बार चूँकि अपने मिज़ाज के एतबार से तन्ज़ो–मिज़ाह पर मब्नी तहरीरों से ही इबारत था इसलिए ज़िन्दगी का हर रंग और तब्बाई और ज़िन्दादिली का हर उस्लूब हमें अख़बार में मिल जाता है। इत्तेफ़ाक़ से "अवध पंच" और "अवध अख़बार" की सारी

---

1. आधारित 2. रंगा–रंग 3. स्वाभाविक 4. पत्रों 5. बुद्धि की तीव्रता

ذمہ داری نولکشور پریس کے مالکان کے سر تھی، اس لئے اردو زبان میں ایسی رنگا رنگی پیدا کرنے کے لئے ان کو قدر و منزلت کی نگاہ سے دیکھا جانا چاہیئے۔ اودھ پنچ میں تربھون ناتھ ہجر، مرزا مچھو بیگ ستم ظریف، جوالا پرشاد برق، احمد علی شوق، منشی علی احمد کسمنڈوی اور نواب سید محمد آزاد کی کاوشیں عرصے تک منظر عام پر آتی اور قارئین کے حلقوں میں مقبولیت کا باعث بنتی رہیں۔ ان کی تحریروں پر مزاح برائے مزاح کا الزام تو ضرور عائد کیا گیا مگر اس میں کوئی شک نہیں کہ اس اخبار میں اکثر اعلیٰ درجے کا طنزیہ اور مزاحیہ ادب بھی شائع ہوتا رہا۔ چونکہ 'اودھ پنچ' کی اشاعت کا عرصہ خاصا طویل رہا اور انیسویں صدی کے اواخر سے بیسویں صدی کی دو دہائی سے زیادہ تک اس کے حلقے میں برابر اضافہ ہوتا رہا، اس لئے سماجی طنز کے اظہار کے نقطۂ نظر سے 'اودھ پنچ' کی تاریخی اہمیت معتبر اور مسلم ہے۔ جیسا کہ ابھی عرض کیا گیا کہ مزاح برائے مزاح کے رجحان کے سبب 'اودھ پنچ' کے بیشتر لکھنے والوں کی تحریروں میں طفلانہ رنگ بھی ہے اور بالواسطہ انداز بیان کا فقدان بھی ملتا ہے، مگر یہ بات کبھی فراموش نہیں کرنی چاہیئے کہ تہذیبوں کے زوال اور معاشرے کے انحطاط کا احساس جب بہت شدید ہو جاتا ہے تو ایسے عالم میں احتیاط اور رکھ رکھاؤ کے اسالیب کچھ دنوں کے لئے ترک سے ہو جاتے ہیں۔ ۱۸۵۷ء کے بعد سے ہی ہندوستان میں جس طرح کی ہزیمت اور اجتماعی مایوسی کا احساس عام تھا، اس صورت حال میں تہہ دار لب و لہجے اور محتاط انداز مزاح کی توقع ادیبوں سے نہیں کی جا سکتی تھی۔ اسی باعث اس وقت کے طنز و مزاح نگار ادیبوں کے یہاں حد درجہ بلند آہنگی بھی ملتی ہے اور طنز و تشنیع میں دھار بھی بہت شدید ہے۔ تاہم 'اودھ پنچ' کو اس ضمن میں ایک ایسے سنگ میل کی حیثیت حاصل ہے جس کے تسلسل اور انحراف کی مختلف صورتیں ہمیں آج تک کے طنزیہ ادب میں مل جاتی ہیں۔ نولکشور پریس کا 'اودھ اخبار' بھی طنز و مزاح کے فروغ میں ایک اہم کردار ادا کرتا نظر آتا ہے۔ اس لئے کہ یوں بھی اس میں اس طرح کے کالم ملتے ہیں جن میں طنز اور تمسخر کا انداز اختیار کیا جاتا تھا مگر اس اخبار میں قسط وار شائع ہونے والا رتن ناتھ سرشار کا ناول 'فسانہ آزاد' طنز و ظرافت اور طباعی کے نمونے پیش کرنے کا بہترین وسیلہ بنا۔ فسانہ آزاد میں لکھنؤ کے زوال آمادہ کلچر کو جس طرح ہنستے کھیلتے نمایاں کرنے کی کوشش کی گئی ہے وہ اپنی مثال آپ ہے۔ جس طرح

ज़िम्मेदारी नवलकिशोर प्रेस के मालिकान के सिर थी, इसलिए उर्दू ज़बान में ऐसी रंगारंगी पैदा करने के लिए इनको क़द्रो-मंज़िलत की निगाह से देखा जाना चाहिए। अवध पंच में त्रिभुवन नाथ हिज्र, मिर्ज़ा मच्छू बेग सितम ज़रीफ़, ज्वाला प्रशाद बर्क़, अहमद अली शौक़, मुन्शी अली अहमद कसमण्डवी और नवाब सैयद मोहम्मद आज़ाद की काविशें अर्से तक मंज़रे-आम पर आतीं रहीं और क़ारईन के हल्क़ों में मक़बूलियत का बायस बनती रहीं। इन की तहरीरों पर मज़ाह बराए मज़ाह का इल्ज़ाम तो ज़रुर आयद हो किया गया मगर इसमें कोई शक नहीं कि इस अख़बार में अक्सर आला दर्जे का तन्ज़िया और मज़ाहिया अदब भी शाया होता रहा। चूँकि "अवध पंच" की इशाअत का अर्सा ख़ासा तवील रहा और उन्नीसवीं सदी के अवाख़िर से बीसवीं सदी की दो दहाई से ज़्यादा तक इसके हलक़े में बराबर इज़ाफ़ा होता रहा, इसलिए समाजी तन्ज़ के इज़हार के नुक़्तए-नज़र से "अवध पंच" की तारीख़ी अहमियत मोतबर और मुसल्लम है। जैसा कि अभी अर्ज़ किया गया कि मज़ाह बराए मज़ाह के रुजहान के सबब "अवध पंच" के बेशतर लिखने वालों की तहरीरों में तिफ़लाना[1] रंग भी है और बिलवास्ता अन्दाज़े-बयान का फ़ुक़दान[2] भी मिलता है, मगर यह बात कभी फ़रामोश नहीं करनी चाहिए कि तहज़ीबों के ज़वाल और मआशरे के इनहतात का एहसास जब बहुत शदीद हो जाता है तो ऐसे आलम में एहतयात और रख-रखाव के असालीब कुछ दिनों के लिए तर्क से हो जाते हैं। 1857ई॰ के बाद से ही हिन्दुस्तान में जिस तरह की हज़ीमत[3] और इजतमाई मायूसी का एहसास आम था, उस सूरते-हाल में तहदार लबो-लहजे और मोहतात अन्दाज़े-मज़ाह की तवक़्क़ो अदीबों से नहीं की जा सकती थी। इसी बायस उस वक़्त के तन्ज़ो-मज़ाह निगार अदीबों के यहाँ हद-दर्जा बुलन्द आहंगी भी मिलती है और तन्ज़ो-तश्नीअ में धार भी बहुत शदीद है। ताहम "अवध पंच" को इस ज़िम्न में एक ऐसे संगे-मील की हैसियत हासिल है जिस के तसलसुल और इन्हेराफ़ की मुख़्तलिफ़ सूरतें हमें आज तक के तन्ज़िया अदब में मिल जाती हैं। नवल किशोर प्रेस का "अवध अख़बार" भी तन्ज़ो-मज़ाह के फ़रोग़ में अहम् किरदार अदा करता नज़र आता है। इस लिए कि यूँ भी इस में इस तरह के कालम मिलते है जिन में तन्ज़ और तमस्ख़ुर का अन्दाज़ अख़्तियार किया जाता है मगर इस अख़बार में क़िस्तवार शाया होने वाला रतन नाथ सरशार का नाविल "फ़सानए-आज़ाद' तन्ज़ो-ज़राफ़त और तब्बाई के नमूने पेश करने का बेहतरीन वसीला बना। "फ़सानए-आज़ाद" में लखनऊ के ज़वाल आमादा कल्चर को जिस तरह हंसते-खेलते नुमायाँ करने की कोशिश की गई है वह अपनी मिसाल आप है। जिस तरह

---

1. बचकाना 2. कमी 3. हार

میاں آزاد کی آزادہ روی اور 'خوجی' کی پر لطف اور ظریفانہ طبیعت کو طنز و مزاح کی آمیزش کے ساتھ رتن ناتھ سرشار نے پیش کیا ہے اس کے باعث مزاحیہ کرداروں کے وسیلے سے سماجی اور معاشرتی زندگی کی ساری بے اعتدالیاں طشت از بام ہوتی نظر آتی ہیں۔

'اودھ پنچ' اور 'اودھ اخبار' کے ادبی اظہار میں بلند آہنگی اور ناپختگی کے جو عناصر بھی رہے ہوں مگر اس بات سے انکار مشکل ہے کہ اردو نثر میں طنز و ظرافت کی منظم روایت کا آغاز ان ہی اخبارات سے ہوتا ہے۔ عبوری دور کے طنزیہ اور مزاحیہ تخلیقات کے لکھنے والوں نے دراصل 'اودھ اخبار' اور 'اودھ پنچ' کی روایت کو ہی آگے بڑھایا۔ 'اودھ پنچ' کے دور عروج میں طنز و مزاح کے لئے ایک ایسا ماحول بن گیا تھا جس میں اس طرح کی شاعری بھی خوب پھولی پھلی۔ اگر اس دور میں لکھنؤ کی ادبی فضا سے الگ مہدی افادی، میر محفوظ علی بدایونی، خواجہ حسن نظامی، سلطان حیدر جوش، سجاد حیدر یلدرم، سجاد انصاری اور ملا رموزی، ادب لطیف کے طاقت ور ادبی رجحان کو طنز و ظرافت سے اکثر ہم آہنگ کرتے نظر آتے ہیں تو اسی دور میں طنز و ظرافت پر مبنی شاعری کی سب سے عمدہ نمائندگی اکبر الہ آبادی کرتے ہوئے نظر آتے ہیں۔ یہ بات حیرت انگیز ہے کہ شاعری میں اکبر کے علاوہ یوں تو علامہ اقبال نے بھی ظریفانہ رنگ اختیار کیا اور طنزیہ اسلوب میں بعض قطعات اور متفرق اشعار کہے مگر ان کے بعد طنزیہ شاعری کو زیادہ فروغ حاصل نہیں ہو سکا۔ تاہم اکبر الہ آبادی نے اپنی شاعری کو جس طرح نوآبادیاتی ردعمل کا وسیلہ بنایا اور جس بلند سطح سے انہوں نے تہذیبی اور اجتماعی حوالوں کی بنیاد پر طنز و ظرافت کا معیار بلند کیا، اس پایے کی ہمہ گیر اور دوررس تہذیبی مفاہیم کی نمائندگی کرنے والی شاعری بعد کے زمانے میں دیکھنے کو نہیں ملتی۔ جہاں تک ادب لطیف سے وابستہ ادیبوں کے طنزیہ اسلوب کا سوال ہے تو چونکہ اس رجحان کی بنیاد ہی سرسید تحریک کی خشک پیغامی نوعیت کی نثر اور شاعری کے ردعمل پر قائم تھی، اس لئے ادب لطیف کے نمائندہ ادیب آزادی اور بے باکی کے اظہار کے طنزیہ اسلوب کو بھی اپنے زمانے کی ایک اہم ضرورت تصور کرتے تھے۔ ادب لطیف کے ان متذکرہ نثر نگاروں کو ان معنوں میں تو یقیناً طنز نگار نہیں کہا جا سکتا جن معنوں میں 'اودھ پنچ' کے ادیبوں کو کہا جاتا ہے مگر ان کی تحریروں میں ایک بدلا ہوا طنزیہ

मियाँ आज़ाद की आज़ादा रवी और 'ख़ोजी' की पुरलुत्फ़ और ज़रीफ़ाना तबीअत को तन्ज़ो–मज़ाह की आमेज़िश के साथ रतन नाथ सरशार ने पेश किया है इसके बाएस मज़ाहिया किरदारों के वसीले से समाजी और मआशरती जिन्दगी की सारी बे–एतदालियाँ तश्त अज़बाम[1] होती नज़र आती हैं।

"अवध पंच" और "अवध अख़बार" के अदबी इज़हार में बुलन्द आहंगी और ना–पुख़्तगी के जो अनासिर भी रहे हों मगर इस बात से इन्कार मुश्किल है कि उर्दू नस्र में तन्ज़ो–ज़राफ़त की मुनज़्ज़म रवायत का आग़ाज़ इन्ही अख़बारात से होता है। उबूरी[2] दौर के तन्ज़िया और मज़ाहिया तख़्लीक़ात के लिखने वालों ने दरअसल "अवध अख़बार" और "अवध पंच" की रवायत को ही आगे बढ़ाया। "अवध पंच" के दौरे–उरुज में तन्ज़ो–मज़ाह के लिए एक ऐसा माहौल बन गया था जिसमें इस तरह की शायरी भी ख़ूब फूली फली। अगर इस दौर में लखनऊ की अदबी फ़िज़ा से अलग मेहदी अफ़ादी, मीर महफ़ूज़ अली बदायूनी, ख़्वाजा हसन निज़ामी, सुल्तान हैदर जोश, सज्जाद हैदर यल्दरम, सज्जाद अन्सारी और मुल्ला रमूज़ी, अदबे–लतीफ़ के ताक़तवर अदबी रुजहान को तन्ज़ो–ज़राफ़त से अकसर हम–आहंग करते नज़र आते तो उसी दौर में तन्ज़ो–ज़राफ़त पर मब्नी शायरी की सब से उम्दा नुमाइन्दगी अकबर इलाहाबादी करते हुए नज़र आते है। यह बात हैरत–अंगेज़ है कि शायरी में अकबर के अलावा यूँ तो अल्लामा इक़बाल ने भी ज़रीफ़ाना रंग अख़्तियार किया और तन्ज़िया उसलूब में बाज़ क़तआत और मुतफ़र्रिक़[3] अशआर कहे मगर उन के बाद तन्ज़िया शायरी को ज़्यादा फ़रोग़ हासिल नहीं हो सका। ताहम अकबर इलाहाबादी ने अपनी शायरी को जिस तरह नौ–आबादियाती[4] रद्दे–अमल का वसीला बनाया और जिस बुलन्द सतह से उन्होंने तहज़ीबी और इजतमाई हवालों की बुनियाद पर तन्ज़ो–ज़राफ़त का मेयार बुलन्द किया, उस पाये की हमागीर और दूररस तहज़ीबी मफ़ाहीम की नुमाइन्दगी करने वाली शायरी बाद के ज़माने में देखने को नहीं मिलती। जहाँ तक अदबे–लतीफ़ से वाबस्ता अदीबों के तन्ज़िया उसलूब का सवाल है तो चूँकि इस रुजहान की बुनियाद ही सर सय्यद तहरीक की ख़ुश्क पैग़ामी नौइयत की नस्र और शायरी के रद्दे–अमल पर क़ायम थी, इस लिए अदबे–लतीफ़ के नुमाइन्दा अदीब आज़ादी और बेबाकी के इज़हार के तन्ज़िया उसलूब को भी अपने ज़माने की एक अहम ज़रुरत तसव्वुर करते थे। अदबे–लतीफ के इन मुतज़्ज़करा[5] नस्र–निगारों को इन मानों में तो यक़ीनन तन्ज़–निगार नहीं कहा जा सकता जिन मानों में "अवध पंच" के अदीबों को कहा जाता है मगर उनकी तहरीरों में एक बदला हुआ तन्ज़िया

1. ज़ाहिर, नुमायाँ   2. हंगामी   3. अलग–अगल
4. उप–निवेश   5. अल्लवित

اور مزاحیہ لہجہ یقیناً ملتا ہے۔

ادبِ لطیف کے نثر نگاروں کے بعد کی نسل میں فرحت اللہ بیگ، فلک پیما اور رشید احمد صدیقی کے انشائیوں اور مضامین میں طنز و مزاح کی لطیف چاشنی ملتی ہے۔ اسی زمانے میں عمل مذاق کو طنزیہ ادبی اظہار کی حیثیت حاصل ہوئی۔ اس نقطۂ نظر سے مرزا عظیم بیگ چغتائی اپنے دور کے ایک نمائندہ مزاح نگار قرار دیئے جاسکتے ہیں۔ عظیم بیگ چغتائی کا اسلوب اس اعتبار سے انفرادیت رکھتا ہے کہ وہ صورت حال کو مزاح اور طنز کے پس منظر کے طور پر استعمال کرتے ہیں۔ ان کے معاصرین میں شوکت تھانوی اور شفیق الرحمٰن کی تحریریں بھی عمدہ طنز نگاری کی مثال پیش کرتی ہیں۔ شوکت تھانوی نے فکشن میں طنز و مزاح کے عناصر کو جس طرح استعمال کیا ہے اس کی مثال اردو میں بہت کم تلاش کی جاسکتی ہے — شفیق الرحمٰن اور شوکت تھانوی کی تحریروں میں مزاح کا عنصر زیادہ نمایاں ہے جب کہ کنہیا لال کپور اور کرشن چندر کی تحریروں میں طنز کی کاٹ زیادہ ملتی ہے۔ بیسویں صدی کے نصف آخر تک طنز اور مزاحیہ نثر کو جن لوگوں نے فروغ دیا ان میں متعدد ادیبوں کی خدمات اہم ہیں لیکن رشید احمد صدیقی ان تمام ادیبوں میں سب سے نمایاں اور ممتاز نظر آتے ہیں۔ انہوں نے اپنے اظہار کے لئے انشائیہ، خودنوشت یا خاکہ اور ظریفانہ مضامین جیسی اصناف نثر میں نت نئے اسالیب پیدا کر کے طنز اور مزاح پیدا کرنے کی کوشش کی ہے۔ رشید احمد صدیقی کا مزاح انسانی اور اخلاقی اقدار اور تہذیب و تمدن کو مرکزی اہمیت کے ساتھ استعمال کرتا ہے۔ اس لئے ان کو ایک ممتاز تہذیبی طنز و مزاح نگار کا نام بھی دیا جاسکتا ہے جس کا نشانہ کبھی فرد نہیں ہوتا بلکہ اعلیٰ انسانی اقدار ان کے مزاح کی محرک ہوتی ہیں۔

•••••••••

और मज़ाहिया लहजा यक़ीनन मिलता है।

अदबे–लतीफ़ के नस्र–निगारों के बाद की नस्ल में फ़रहतुल्लाह बेग, फ़लक पैमा और रशीद अहमद सिद्दीक़ी के इन्शाइयों और मज़ामीन में तन्ज़ो–मज़ाह की लतीफ़ चाश्नी मिलती है। इसी ज़माने में अमले–मज़ाक को तन्ज़िया अदबी इज़हार की हैसियत हासिल हुई। इस नुक़्तए–नज़र से मिर्ज़ा अज़ीम बेग चुग़ताई अपने दौर के एक नुमइन्दा मज़ाह–निगार क़रार दिये जा सकते हैं। अज़ीम बेग चुग़ताई का उसलूब इस एतबार से इनफ़रादियत रखता है कि वह सूरते–हाल को मज़ाह और तन्ज़ के पसमंज़र के तौर पर इस्तेमाल करते हैं। उनके मोआसरीन में शौकत थानवी और शफ़ीक़ुर्रहमान की तहरीरें भी उम्दा तन्ज़–निगारी की मिसाल पेश करती हैं। शौकत थानवी ने फ़िक्शन में तन्ज़ो–मज़ाह के अनासिर को जिस तरह इस्तेमाल किया है उसकी मिसाल उर्दू में बहुत कम तलाश की जा सकती है – शफ़ीक़ुर्रहमान और शौकत थानवी की तहरीरों में मज़ाह का उन्सुर ज़्यादा नुमायाँ है जबकि कन्हैया लाल कपूर और कृष्ण चन्द्र की तहरीरों में तन्ज़ की काट ज़्यादा मिलती है। बीसवीं सदी के निस्फ़ आख़िर तक तन्ज़ और मजाहिया नस्र को जिन लोगों ने फ़रोग़ दिया उनमें मुतअद्दिद अदीबों की ख़िदमात अहम हैं लेकिन रशीद अहमद सिद्दीक़ी उन तमाम अदीबों में सब से नुमायाँ और मुमताज़ नज़र आते हैं। उन्होंने अपने इज़हार के लिए इन्शाइया, ख़ुदनविश्त या ख़ाका और ज़रीफ़ाना मज़ामीन जैसी अस्नाफ़े–नस्र में नित नये असालीब पैदा करके तन्ज़ो–मज़ाह पैदा करने की कोशिश की है। रशीद अहमद सिद्दीक़ी का मज़ाह इन्सानी और अख़लाक़ी–अक़दार और तहज़ीबो–तमद्दुन को मर्कज़ी अहमियत के साथ इस्तेमाल करता है। इस लिए उनको एक मुमताज़ तहज़ीबी तन्ज़ो–मज़ाह निगार का नाम दिया जा सकता है जिस का निशाना कभी फ़र्द नहीं होता बल्कि आला इन्सानी अक़दार उनके मज़ाह की मोहर्रिक[1] होती हैं।

1. प्रेरक

انجم مانپوری

اِنٹرویو

انٹرویو کے قسموں میں ایک انٹرویو تو وہ ہوتا ہے جو پریس کے نمائندوں اور لیڈروں کے درمیان واقع ہوتا ہے۔ اب اگر لیڈر، مہاتما یا مولانا قسم کا ہے تو اخباری نمائندے اس کے گھر جا جا کر انٹرویو کے لیے خوشامدیں کرتے ہیں۔ اور لیڈر ان کی صبح و شام کی حاضری سے پریشان رہتا ہے۔ اور اگر اپر گریڈ کا نہیں بلکہ لور کلاس اور پروبیشنر قسم کا لیڈر ہے تو بجائے اس کے کہ پریس کے نمائندے اس کے پاس پہونچیں یہ غریب خود ہی ان کے گھر پہونچ کر اپنے ہاتھ کے لکھے ہوئے انٹرویو قسم کے سوال و جواب حوالہ کر کے منتیں کرتا ہے کہ ع

بہر خدا ہمیں بھی کہیں چھاپ دیجیے

ان دونوں قسموں کے انٹرویو کو اخباری انٹرویو کہتے ہیں۔ اس اخباری انٹرویو کے علاوہ ایک سرکاری انٹرویو ہوتا ہے جو سرکاری ملازمت کے سلسلہ میں ''اپوائنٹمنٹ افیسرس'' اور اُمیدواروں کے درمیان ہوتا ہے۔ ان اخباری اور سرکاری انٹرویو میں منجملہ اور بہت سی باتوں کے سب سے بڑا فرق یہ ہے کہ اوّل الذکر کی غرض ملک میں سیاسی بیداری پیدا کر کے جاہل اور نااہلوں کو سیاسیات سمجھنے کا اہل بنا کر انھیں ملکی کام کے لائق بنانا

इन्टरव्यू

इन्टरव्यू की क़िस्मों में एक इन्टरव्यू तो वह होता है जो प्रेस के नुमाइन्दे और लीडरों के दरमियान होता है। अब अगर लीडर, महात्मा या मौलाना क़िस्म का है तो अख़बारी नुमाइन्दे उसके घर जा जा कर इन्टरव्यू के लिये खुशामदें करते हैं। और लीडर उन की सुबहो–शाम की हाज़िरी से परेशान रहता है। और अगर अपर ग्रेड का नहीं बल्कि लोवर क्लास और प्रोबेश्नर क़िस्म का लीडर है तो बजाए इसके कि प्रेस के नुमाइन्दे उसके पास पहुँचें, यह ग़रीब खुद ही उनके घर पहुँच कर अपने हाथ के लिखे हुये इन्टरव्यू क़िस्म के सवालो–जवाब हवाला करके मिन्नतें करता है कि –

बहरे–खुदा हमें भी कहीं छाप दिजिये

इन दोनों क़िस्मों के इन्टरव्यू को अख़बारी इन्टरव्यू कहते हैं। इस अख़बारी इन्टरव्यू के अलावा एक सरकारी इन्टरव्यू होता है जो सरकारी मुलाज़मत के सिलसिले में "एप्वाइंटमेन्ट आफिसर्स" और उम्मीदवार के दरमियान होता है। इन अख़बारी और सरकारी इन्टरव्यू में मिनजुम्ला[1] और बहुत सी बातों के सब से बड़ा फर्क़ यह है कि अव्वलुज़्ज़िक्र[2] की ग़रज मुल्क में सियासी बेदारी पैदा करके जाहिल और ना अहलों को सियासियात समझने का अहल बना कर उन्हें मुल्की काम के लाएक बनाना

1. तमाम, कुल मिलाकर 2. प्रथम उल्लेखित

ہے۔ اور دوم الذکر انٹرویو کا مقصد تعلیم یافتہ نوجوانوں کو "ڈس کوالیفائیڈ" اور نااہل ثابت کر کے انھیں نکما، بیکار اور پست ہمت بنانا ہے۔

بعض انٹرویو زدہ کنڈیڈیٹ بے سمجھے بوجھے یہ اعتراض کر دیتے ہیں کہ امیدواروں کی درخواستوں کے ساتھ ان کی تعلیمی ڈگریاں اور دوسرے کوالیفیکیشن کی سارٹیفکٹس تو منسلک رہتی ہیں پھر کون سی ضروری اور نئی بات معلوم کرنے کے لیے خواہ مخواہ انٹرویو کی بیخ لگادی گئی ہے۔ اب انھیں انٹرویو کی مصلحتوں کو کون سمجھائے۔ ان ناواقفوں کو یہ تو معلوم ہی نہیں کہ سرکاری ملازمتوں کی جگہیں صرف گنتی کی چند ہی ہوتی ہیں۔ اور امیدواروں کی تعداد کی کوئی خاص حد ہی نہیں۔ اس پر سرکار کے اقبال سے سینکڑوں ان میں ایک سے ایک بڑھ کر قابل اور صاحب صلاحیت، اب ان میں سے ضرورت کے مطابق چند معہود فی الذہن مخصوص امیدواروں کو نامزد کرنے کی غرض سے "بقیہ کوالیفائڈ کنڈیڈیٹ" کو ڈس کوالیفائڈ بنانے کے لئے انٹرویو سے بڑھ کر اور کون سی خوبصورت ترکیب سوچی جاسکتی ہے۔ یونیورسٹی کی ڈگری تو قرق کی نہیں جاسکتی۔ "اعلیٰ کوالیفیکیشن" اور علمی حیثیت کی سارٹیفکیٹ نیلام والی سارٹیفکیٹ تو ہے نہیں جو کم حیثیت قرار دے کر مسترد کر دی جائے۔ اب مخصوص امیدواروں یا دعویداروں کو ان سرکاری جگہوں پر قبضہ دلانے کے لیے بقیہ درخواست دینے والوں کو کس طرح غیر مستحق ثابت کیا جائے۔ انھیں دقتوں کو رفع کرنے کے لیے ایک مستقل انٹرویو کمیٹی ایجاد ہوئی، جس کے ذمّے کہنے کو تو برائے نام "انکوائری" ہے مگر درحقیقت سمری ٹرائل (Summary trial) کا فل پاور (Full Power) دے کر امیدواروں کی قسمت کے "فائنل" فیصلہ کا بھی اختیار دیا گیا۔ اور یہ سرسری ساعت اور اس پر فیصلہ کے لیے کسی خاص اصول یا ضابطہ کی پابندی کی ضرورت نہیں، صرف اختیار تمیزی کا ایسا بے پناہ حربہ اس کے سپرد کر دیا گیا ہے کہ جس کے ضرب کی کوئی داد و فریاد نہیں۔

چونکہ ازابتدائے ڈپٹی مجسٹریٹی بعنایت ٹمپریری کلرکی بحیثیت "کنڈیڈیٹ" کے مجھے انٹرویو کے بیسوں مواقع ملے ہیں، اس لیے ایک سینیر کنڈیڈیٹ کی حیثیت سے اپنے انٹرویو کے دل چسپ تجربات پیش کرتا ہوں تاکہ عام دلچسپی کے علاوہ ممکن ہے کہ

है। और दोयमुज़्जिक्र[1] इन्टरव्यू का मक़सद तालीम–याफ़्ता नौजवानों को "डिसक्वालिफाइड" और ना अहल साबित कर के उन्हें निकम्मा, बेकार और पस्त हिम्मत बनाना है।

बाज़ इन्टरव्यूज़दा कन्डीडेट बे समझे बूझे यह एतराज़ कर देते हैं कि उम्मीदवारों की दरख़्वास्तों के साथ उनकी तालीमी डिग्रीयाँ और दूसरे क्वालीफ़िकेशन की सार्टिफीकेट्स तो मुन्सलिक[2] रहती हैं तो फिर कौन सी ज़रुरी और नई बात मालूम करने के लिये ख़्वाहमुख़्वाह इन्टरव्यू की पख़ लगा दी गयी है। अब उन्हें इन्टरव्यू की मस्लेहतों[3] को कौन समझाये। इन नावाक़िफों को यह तो मालूम ही नहीं कि सरकारी मुलाज़मतों की जगहें सिर्फ गिनती की ही होती हैं और उम्मीदवारों की तादाद की कोई ख़ास हद ही नहीं। इस पर सरकार के इक़बाल[4] से सैकड़ों इनमें से एक से बढ़ कर क़ाबिल और साहबे–सलाहियत, अब इन में से ज़रुरत के मुताबिक़ चन्द मख़सूस उम्मीदवारों को नामज़द करने की गरज़ से बाकी "क्वालीफ़ाइड कन्डीडेट" को डिसक्वालीफाइड बनाने के लिये इन्टरव्यू से बढ़ कर और कौन सी ख़ूबसूरत तरकीब सोची जा सकती है। युनिवर्सिटी की डिग्री तो कुर्क़[5] की नहीं जा सकती। "आला क्वालीफीकेशन" और इल्मी हैसियत की सार्टिफीकेट, नीलाम वाली सार्टिफीकेट तो है नहीं जो कम हैसियत क़रार देकर मुसतरद कर दी जाये। अब मख़सूस उम्मीदवारों या दावेदारों को उन सरकारी जगहों पर क़ब्ज़ा दिलाने के लिये बक़िया दरख़्वास्त देने वालों को किस तरह गैर–मुसतहक़[6] साबित किया जाये। इन्हीं दिक़्क़तों को रफ़ा करने के लिये एक मुसतक़िल इन्टरव्यू कमेटी ईजाद हुई, जिसके ज़िम्मे कहने को तो बराये नाम "इन्क्वाइरी" है मगर दर हक़ीक़त समरी ट्रायल (Summary Trial) का फुल पावर (Full Power) देकर उम्मीदवारों की किसमत के "फ़ाइनल" फैसले का भी अख़्तियार दिया गया। और ये सरसरी समाअत[7] और इस पर फ़ैसले के लिये किसी ख़ास उसूल या ज़ाब्ते की पाबन्दी की ज़रुरत नहीं, सिर्फ अख़्तियारे–तमीज़ी[8] का ऐसा बे पनाह हरबा[9] इस के सुपुर्द कर दिया गया है कि जिस की ज़र्ब[10] की कोई दाद व फरयाद नहीं।

चूंकि अज़–इब्तदाय[11] डिप्टी मजिस्ट्रेटी बग़ायत[12] टम्परेरी क्लर्की बहैसियत "कन्डीडेट" के मुझे इन्टरव्यू के बीसियों मौक़े मिले हैं, इसलिये एक सीनीयर कन्डीडेट की हैसियत से अपने इन्टरव्यू के दिलचस्प तजरबात पेश करता हूँ ताकि आम दिलचस्पी के अलावा मुमकिन है कि

1. द्वितीय उल्लेखित 2. सम्मिलित 3. औचित्य 4. प्रताप
5. आसंजित 6. अयोग्य 7. सुनवाई 8. विवेकाधिकार 9. अस्त्र शस्त्र 10. चोट
11. आरंभतः 12. अंत

امیدواروں کو انٹرویو کے امتحان کے موقع پر "کی" (Key) کا کام دیں۔

بی۔اے پاس کرنے کے بعد لاء کالج میں نام لکھوائے تقریباً ڈیڑھ سال ہوئے تھے کہ ڈپٹی مجسٹریٹی کی تقرری کا اعلان گزٹ میں دیکھ کر میں نے سوچا کہ بحیثیت وکیل ڈپٹیوں کو حضور "یوراونر" کہنے کی بجائے خود ہی "یوراونر" بننے کی کیوں نہ کوشش کروں۔ چنانچہ میں نے بھی ایک درخواست مع تعلیمی سرٹیفکیٹ بذریعہ بک پوسٹ روانہ کردی۔ ایک ہفتہ کے بعد طلبی کا سمن جسے ایسے موقعوں پر انٹرویو کارڈ کہتے ہیں۔ کورٹ کے چپراسی کی بجائے جب ڈاکیہ نے مجھ پر تعمیل کیا تو انٹرویو میں ڈپٹی مجسٹریٹی کی صلاحیت جانچنے کے لیے جتنے سوالات کیے جاسکتے ہیں سب کے جوابات ذہن نشیں کر کے مقررہ تاریخ پر ہاف پینٹ اور ہاف شرٹ زیب تن کیے بہ ہم ڈپٹیائی کی شان سے انٹرویو آفس کے باہر پہونچا۔ ساتویں کنڈیڈیٹ کے بعد جب میرا نمبر آیا۔ دل میں یہ مصرعہ ع

اب قلم تھام کے بیٹھو مری باری آئی

پڑھتا ہوا افسرانِ انٹرویو کے سامنے حاضر ہونے کے بعد جیسے ہی کرسی پر سامنے جا کر بیٹھا تھا کہ پہلا سوال مجھ سے یہ کیا گیا۔

سوال:۔ آپ کا خاندانی پیشہ کیا ہے؟

یہ بے جوڑ سوال سُن کر میں سوچنے لگا کہ آخر ڈپٹی مجسٹریٹی سے اس سوال کو لگاؤ کیا ہے، مگر ذہانت بھی عجیب خداداد چیز ہے فوراً کڑی ملانے کے لیے میں نے جواب دیا۔

جواب:۔ جناب عالی! اصلی پیشہ تو ہے زمینداری مگر اس سلسلہ میں مقدمہ بازی کو بھی ایک طرح سے ہم لوگوں کا سکنڈ پیشہ سمجھ لیجیے، جس کی وجہ سے "سول" (Civil) اور کریمنل (Criminal) مقدمات کے اکثر دفعات سے واقفیت ہو جاتی ہے۔ اس لیے قانون دانی گویا ہم لوگوں کی گھٹی میں ہے۔

سوال:۔ کالج سے نکلنے کے بعد اب تک آپ کا کیا شغل رہا؟

جواب:۔ وہی مقدمات کی پیروی، مسل کی ورق گردانی، حسب خواہ شہادتیں فراہم کرنا، گواہوں کو تعلیم دینا، اس کی وجہ سے مجھے ایسی مہارت پیدا ہوگئی ہے کہ ڈپٹی

उम्मीदवारों को इन्टरव्यू के इम्तेहान के मौके पर "की" (Key) का काम दे।

बी.ए. पास करने के बाद लॉ कॉलेज में नाम लिखवाये तक़रीबन डेढ़ साल हुये थे कि डिप्टी मजिस्ट्रेटी का ऐलान गज़ट में देख कर मैं ने सोचा कि बहैसियत वकील डिप्टियों को हुज़ूर, "योर ऑनर" कहने के बजाय खुद ही "योर ऑनर बनने की क्यों न कोशिश करुँ। चुनानचे मैं ने भी एक दरख़्वास्त मय तालीमी सर्टीफीकेट बज़रिये बुक पोस्ट रवाना करदी। एक हफ़्ते के बाद तलबी का समन जिसे ऐसे मौक़ों पर इन्टरव्यू कार्ड कहते हैं, कोर्ट के चपरासी की बजाए जब डाकये ने मुझ पर तामील किया तो इन्टरव्यू में डिप्टी मजिस्ट्रेटी की सलाहीयत जाँचने के लिये जितने सवालात किये जा सकते हैं सब के जवाबात ज़ेहन-नशीं कर के मुक़र्ररा तारीख़ पर हॉफ़ पैंट और हॉफ़ शर्ट ज़ेब तन किये डिप्टयायती की शान से इन्टरव्यू ऑफिस के बाहर पहुँचा। सातवें कन्डीडेट के बाद जब मेरा नम्बर आया, दिल में ये मिस्रा[1] –

अब क़लम थाम के बैठो मेरी बारी आई

पढ़ता हुआ अफ़सराने-इन्टरव्यू के सामने हाज़िर होने के बाद जैसे ही कुर्सी पर सामने जाकर बैठा था कि पहला सवाल मुझसे यह किया गया –

सवाल – आपका ख़ान्दानी पेशा क्या है?

ये बेजोड़ सवाल सुन कर मैं सोचने लगा कि आख़िर डिप्टी मजिस्ट्रेटी से इस सवाल को क्या लगाव है, मगर ज़िहानत भी अजीब ख़ुदादाद चीज़ है फ़ौरन कड़ी मिलाने के लिये मैं ने जवाब दिया –

जवाब – जनाबे-आली! अस्ली पेशा तो ज़मींदारी, मगर इस सिलसिले में मुक़दमेबाज़ी को भी एक तरह से हम लोगों का सेकेण्ड पेशा समझ लीजिये, जिसकी वजह से "सिविल" (Civil) और "क्रिमिनल" (Criminal) मुक़द्मात के अक्सर दफ़आत से वाक़फीयत हो जाती है। इसलिये क़ानूनदानी गोया हम लोगों की घुट्टी में है।

सवाल – कॉलेज से निकलने के बाद अब तक आप का क्या शग़ल रहा?

जवाब – वही मुक़द्मात की पैरवी, मिस्ल की वरक़ गरदानी, हस्बख़्वाह शहादतें फ़राहम[2] करना, गवाहों को तालीम देना, इसकी वजह से मुझे ऐसी महारत पैदा हो गई है कि डिप्टी

---

1. पद 2. इच्छानुसार प्रमाण अर्जित करना

مجسٹریٹ ہو جانے کے بعد صرف صورت دیکھ کر پہچان لوں گا کہ کون گواہ سچا ہے اور کون جھوٹا، اس تجربہ کی بناء پر فیصلہ لکھنے میں مجھے کوئی دقت نہ ہوگی۔

سوال:۔ زمینداری کی حکومت چھوڑ کر ملازمت کی اس غلامانہ زندگی کو آپ نے کیوں پسند کیا؟

جواب:۔ جناب ڈپٹی مجسٹریٹی کی شان اور حکومت کے سامنے زمینداری کی بھی کوئی حقیقت ہے۔ بڑے بڑے زمیندار، ایک معمولی تھرڈ کلاس ڈپٹی کی بیگار میں کام کرنا اپنی عزت سمجھتے ہیں۔

سوال:۔ (مسکرا کر) زمینداری کی بدولت کافی سرمایہ رہتے ہوئے بزنس چھوڑ کر ڈیڑھ دوسو روپے ماہانہ کی ڈپٹی مجسٹریٹی پر کیوں جان دیتے ہیں؟

جواب:۔ اگر آدمی ٹیکٹ فل (Tact Full) ہو تو ڈپٹیائی کی بزنس بھی کم نفع بخش نہیں۔

سوال:۔ (اپنے ساتھیوں کو آنکھوں پر لگی ہوئی عینک کے باہر مسکرا کر دیکھتے ہوئے) آب و ہوا کے اعتبار سے آپ کے خیال میں ہندوستان کا کون کون سا خطہ انسانی صحت کے لیے مفید اور کون کون مضر ہے؟

جواب:۔ حضور! جب ڈپٹی مجسٹریٹی کرنی ہو تو آب و ہوا کے مضر یا صحت بخش ہونے کی آدمی کہاں تک پروا کرے۔ آپ جہاں ڈپٹی بنا کر بھیج دیجیے، اگر ذرا بھی غدر کروں تو فوراً ڈسمس کر دیجیے۔

یکے بعد دیگرے مسلسل سوالوں کے دندان شکن بلکہ جبڑا اور کلّہ شکن جواب دے کر ایسا منہ بند کر دیا کہ پھر اور مزید سوالوں کی ہمت نہ پڑی۔ آخر ''اچھا آپ اب جا سکتے ہیں'' کہہ کر مجھ سے پیچھا چھڑایا۔ میں بھی خوش خوش دِل میں یہ سوچتا ہوا اپنے گھر واپس آیا کہ یہ حضرت بھی سمجھ گئے ہوں گے کہ کس کنڈیڈیٹ سے پالا پڑا ہے۔ لیکن چند ہی روز کے بعد میرے ان دندان شکن جوابوں کا ایسا ہمت شکن اور دل شکن نتیجہ معلوم ہوا کہ مجھ ہی جیسا تحمل مزاج آدمی تھا کہ غصہ کے مارے اراکین انٹرویو کو صرف دل ہی دل میں بُرا بھلا کہنے پر اکتفا کیا ورنہ دوسرا کوئی اور کنڈیڈیٹ ہوتا تو خودکشی کر کے حکم دہندوں میں ان ممبروں کا نام لکھوا کر ایسا پھنسا دیتا کہ پھر انٹرویو میں لوگوں کو دق کرنا ہی بھول جاتے۔

मजिस्ट्रेट हो जाने के बाद सिर्फ सूरत देखकर पहचान लूंगा कि कौन गवाह सच्चा है और कौन झूटा, इस तजरबे की बिना[1] पर फैसला लिखने में मुझे कोई दिक्कत न होगी।

सवाल – ज़मीनदारी की हुकूमत छोड़ कर मुलाज़मत की इस गुलामाना ज़िन्दगी को आप ने क्यों पसन्द किया?

जवाब – जनाब, डिप्टी मजिस्ट्रेटी की शान और हुकूमत के सामने ज़मीनदारी की भी कोई हकीकत है। बड़े–बड़े ज़मीनदार, एक

मामूली थर्ड क्लास डिप्टी की बेगार में काम करना अपनी इज़्ज़त समझते हैं।

सवाल – (मुस्करा कर) ज़मीनदारी की बदौलत काफ़ी सरमाया[2] रहते हुये बिज़नेस छोड़ कर डेढ़ दो सौ रुपये माहाना की डिप्टी मजिस्ट्रेटी पर क्यों जान देते है?

जवाब – अगर आदमी टैक्टफुल (Tact Full) हो तो डिप्टीयाती की बिज़नेस भी कम नफ़ा–बख़्श नहीं है।

सवाल – (अपने साथियों को आँखों पर लगी हुई ऐनक के बाहर मुस्कुरा कर देखते हुये) आबो–हवा के ऐतबार से आप के ख़याल में हिन्दुस्तान का कौन सा ख़ित्ता इन्सानी सेहत के लिये मुफ़ीद और कौन मुज़िर[3] है?

जवाब – हुज़ूर! जब डिप्टी मजिस्ट्रेटी करनी हो तो आबो–हवा के मुज़िर या सेहत–बख़्श होने की आदमी कहाँ तक परवाह करे। आप जहाँ डिप्टी बनाकर भेज दीजिये, अगर ज़रा भी उज़्र[4] करूँ तो फ़ौरन डिसमिस कर दीजिये।

यके बाद दीगरे[5] मुसलसल सवालों के दन्दान–शिकन[6] बल्कि जबड़ा और कल्ला–शिकन जवाब देकर ऐसा मुँह बन्द कर दिया कि फिर और मज़ीद सवालों की हिम्मत न पड़ी। आख़िर "अच्छा आप अब जा सकते हैं" कह कर मुझसे पीछा छुड़ाया। मैं भी ख़ुश ख़ुश दिल में यह सोचता हुआ अपने घर वापस आया कि ये हज़रत भी समझ गये होंगे कि किस कन्डीडेट से पाला पड़ा है। लेकिन चन्द ही रोज़ के बाद मेरे इन दन्दान–शिकन जवाबों का ऐसा हिम्मत–शिकन और दिल–शिकन नतीजा मालूम हुआ कि मुझ ही जैसा तहम्मुल–मिज़ाज आदमी था कि गुस्से के मारे अराकीने–इन्टरव्यू[7] को सिर्फ़ दिल ही दिल में बुरा भला कहने पर इक्तफ़ा किया वरना कोई दूसरा कन्डीडेट होता तो ख़ुदकुशी कर के हुक्म–दहिन्दों में उन मेम्बरों का नाम लिखवा कर ऐसा फंसा देता कि फिर इन्टरव्यू में लोगों को दिक़ करना ही भूल जाते।

---

1. आधार 2. पूंजी 3. हानिकारक 4. आपत्ति 5. एक के बाद एक 6. मुँहतोड़ 7. सदस्यगण

میرے سلکٹ (Select) نہ کرنے کی وجہ جب میرے ایک ہمدرد نے ایک ممبر سے پوچھی تو ارشاد ہوا کہ صرف ''جنرل نولج'' کا اندازہ لگانے کے لیے بہت ہی غیر متعلق اِدھر اُدھر کے سوالات کیے گئے تھے۔ مگر ہر غیر متعلق سوال کی کڑی ہیر پھیر کو انھوں نے ڈپٹی مجسٹریٹی کے پوسٹ سے ملا دی جس کی وجہ سے ہم لوگ اس نتیجہ پر پہونچے کہ جنرل نولج تو کیا آپ کے کنڈیڈیٹ میں ''کومن سنس'' (Common Sense) تک نہیں۔

اب آپ ہی حقاً ایماناً خدا کو حاضر و ناظر سمجھ کر کہیے کہ بلایا گیا تھا میں ڈپٹی مجسٹریٹ کے کنڈیڈیٹ کی حیثیت سے اور پوچھا جاتا ہے صحت بخش آب و ہوا کے متعلق۔ ڈپٹی مجسٹریٹی کے امیدوار کو ہیلتھ اوفیسری کا کنڈیڈیٹ سمجھنا یہ خود کہاں تک کومن سنس کے مطابق ہے۔

خیر پہلے انٹرویو کے اس تجربے نے یہ بتلا دیا کہ انٹرویو کا سسٹم قابلیت واہلیت اور صلاحیت ولاحیت جانچنے کے لیے نہیں جاری کیا گیا ہے، بلکہ صرف کومن سنس اور جنرل نولج کا اندازہ لگانے کے لیے۔ لیکن سوال یہ رہ جاتا ہے کہ جنرل نولج کسی خاص علم وفن کے جاننے کا تو نام نہیں بلکہ دنیا بھر کے معلومات کو جنرل نولج کہتے ہیں۔ اب آپ ڈپٹی مجسٹریٹی کنڈیڈیٹ کی حیثیت سے انٹرویو میں بلائے گئے ہیں اور پوچھا جاتا ہے آپ سے ڈاکٹری کے متعلق کہ پلیگ اور طاعون میں کیا فرق ہے۔ یا آپ منصفی کے کنڈیڈیٹ ہیں اور آپ سے دریافت کی جاتی ہیں انجنیری کی باتیں کہ ڈیڑھ اینٹ کی مسجد کس طرح سے بن سکتی ہے یا رجسٹراری کے انٹرویو میں بلائے گئے ہیں اور آپ کا امتحان لیا جاتا ہے علم نباتات کے متعلق کہ آپ گھاس کاٹ سکتے ہیں یا نہیں غرض کہ معلومات کی حیثیت سے آپ چوں چوں کا مربہ ہیں یا نہیں۔ ایسی حالت میں انسائیکلو پیڈیا حفظ کیے بغیر انٹرویو میں جانا خود اپنے پاؤں میں کلہاڑی یا سر پر ہتھوڑا مارنے کے برابر ہے کہ نہیں؟

اس لیے میں نے سوچا کہ انسائیکلو پیڈیا اگر نہیں تو جنرل نولج کے لیے کم سے کم بک آف نولج کا حافظ ہو جانا ازبس ضروری ہے۔

چنانچہ آئندہ سال کنڈیڈیٹ ہونے کے لیے انٹرویو کے امتحان کی تیاری کی غرض

मेरे सेलेक्ट (Select) न करने की वजह जब मेरे एक हमदर्द ने एक मेम्बर से पूछा तो इरशाद हुआ कि सिर्फ़ "जेनरल–नॉलेज" का अन्दाज़ा लगाने के लिये बहुत ही ग़ैर मुतअल्लिक़ इधर उधर के सवालात किये गये थे। मगर हर ग़ैर मुतअल्लिक़ सवाल की कड़ी हेर फेर कर उन्हों ने डिप्टी मजिस्ट्रेटी की पोस्ट से मिला दी जिसकी वजह से हम लोग इस नतीजे पर पहुँचे कि जेनरल नॉलेज तो क्या आप के कन्डीडेट में "कॉमन सेन्स" (Common Sense) तक नहीं।

अब आप ही हक़्क़न–ईमानन[1] ख़ुदा को हाज़िरो–नाज़िर समझ कर कहिये कि बुलाया गया था मैं डिप्टी मजिस्ट्रेट के कन्डीडेट की हैसियत से और पूछा जाता है सेहत बख़्श आबो–हवा के मुतआल्लिक़। डिप्टी मजिस्ट्रेटी के उम्मीदवार को हेल्थ आफ़ीसरी का कन्डीडेट समझना ये ख़ुद कहाँ तक कॉमन सेन्स के मुताबिक़ है।

ख़ैर पहले इन्टरव्यू के इस तजर्बे ने यह बतला दिया कि इन्टरव्यू का सिस्टम क़ाब्लियतो–अहलियत और सलाहियत–वलाहियत जाँचने के लिये नहीं जारी किया गया है, बल्कि सिर्फ़ कॉमन सेन्स और जेनरल नालेज का अन्दाज़ा लगाने के लिये। लेकिन सवाल यह रह जाता है कि जेनरल नॉलेज किसी ख़ास इल्मो–फ़न के तो जानने का नाम नहीं बल्कि दुनिया भर की मालूमात को जेनरल नॉलेज कहते हैं। अब आप डिप्टी मजिस्ट्रेटी कन्डीडेट की हैसियत से इन्टरव्यू में बुलाये गये हैं और पूछा जाता है आप से डाक्टरी के मुतअल्लिक़ कि प्लेग और तॉऊन में क्या फ़र्क़ है, या आप मुन्सफी के कन्डीडेट हैं और आप से दरयाफ़्त की जाती है इन्जीनियरी की बातें कि डेढ़ इंट की मस्जिद किस तरह से बन सकती है या रजिस्ट्रारी के इन्टरव्यू में बुलाये गये हैं और आप का इम्तेहान लिया जाता है इल्मे–नबातात[2] के मुतआल्लिक कि आप घास काट सकते हैं या नही, ग़रज़ कि मालूमात की हैसियत से आप चूँ–चूँ का मुरब्बा हैं या नहीं। ऐसी हालत में इन्साइक्लोपीडिया हिफ्ज़ किये बग़ैर इन्टरव्यू में जाना ख़ुद अपने पाँव में कुल्हाड़ी या सर पर हथौड़ा मारने के बराबर है कि नहीं?

इस लिये मैं ने सोचा कि इन्साइक्लोपीडिया अगर नहीं तो जेनरल नॉलेज के लिये कम से कम बुक ऑफ नॉलेज का हाफिज़ हो जाना अज़ बस ज़रुरी है।

चुनान्चे आइन्दा साल कन्डीडेट होने के लिये इन्टरव्यू के इम्तिहान की तैयारी की ग़रज से बुक ऑफ नॉलेज की स्टडी शुरु कर दी।

---

1. सच सच ईमान से 2. बनस्पति शास्त्र

سے بک آف نولج کی اسٹڈی شروع کردی۔ اتفاق سے اس کے چھ سات ہی ماہ بعد منصفی کی تقرری کا اعلان گزٹ میں دیکھ کر میں نے سوچا کہ ڈپٹی مجسٹریٹی کی اُمید میں ایک سال تک اپنے ہاتھ پر ہاتھ یا کسی کے پاؤں پر پاؤں دھرے بیٹھے رہنا مناسب نہیں بلکہ دوسری سروس کے لیے بھی گھونسے لات کی شکل چھوڑ کر اور ہر طرح سے ہاتھ پاؤں مارنا چاہیے۔ اس خیال کو مدِ نظر رکھ کر منصفی کی درخواست بغیر اسٹامپ چسپاں کیے۔ وکالتاً نہیں بلکہ اصالتاً داخل کردی۔ حسب دستور تاریخ مقررہ پر انٹرویو میں جو حاضر ہوا تو سوالات کی ابتدا اس طرح سے شروع ہوئی۔

سوال:۔ آپ نے اس سے پہلے بھی کسی سروس کے لیے اپلائی (Apply) کیا تھا؟

جواب:۔ جی ہاں ڈپٹی مجسٹریٹی کے لیے۔

سوال:۔ آپ کو معلوم ہے آپ کا نام کیوں نہیں بھیجا گیا؟

جواب:۔ مؤثر ذرائع نہیں رہنے کی وجہ سے۔

سوال:۔ یہاں ذرائع کا کیا کام، صلاحیت اور قابلیت کی کمپیٹیشن میں جو کمپیٹنٹ کنڈیڈیٹ ہوتا ہے اس کا انتخاب ہوتا ہے۔ چوں کہ اس کمپیٹیشن میں آپ پورے نہیں اُترے ہوں گے اس لیے آپ کا نام نہیں بھیجا گیا۔

جواب:۔ حضور، اس کو میں بھی عرض کر رہا ہوں کہ کوالیفیکیشن میں تو خدا کے فضل سے نہیں البتہ ریکومینڈیشن کے کمپیٹیشن میں کافی نمبر نہیں لا سکا۔

سوال:۔ ڈپٹی مجسٹریٹی اور منصفی ان دونوں سرکاری سروسوں میں آپ کس کو زیادہ پسند کرتے ہیں؟

جواب:۔ حضور بات یہ ہے کہ ڈپٹیوں کو صرف مار پیٹ، چوری ڈکیتی، نقب زنی، خون ریزی وغیرہ کے مقدمات کی سماعت کی وجہ سے روزانہ ڈاکوؤں، بدمعاشوں، چوروں، اٹھائی گیروں سے واسطہ رہتا ہے "اور صحبتِ صالح ترا صالح کند" کا مقولہ غلط نہیں ہے۔ یہ جو ڈپٹیوں میں شانِ غرور، ڈینگ، ہیکڑی اور "ہم چومن دیگرے نیست" قسم والا انداز دیکھتے ہیں یہ انھیں صحبتوں کا اثر ہے برخلاف اس کے منصفوں کو انھیں اپنے اجلاس پر زیادہ تر بڑے بڑے دولتمندوں، سرمایہ

इत्तेफ़ाक़ से इस के छः–सात ही माह बाद मुन्सफ़ी की तक़र्रुरी का एलान गज़ट में देख कर मैं ने सोचा कि डिप्टी मजिस्ट्रेटी की उम्मीद में एक साल तक अपने हाथ पर हाथ या किसी के पाँव पर पाँव धरे बैठे रहना मुनासिब नहीं है बल्कि दूसरी सर्विस के लिये भी घूंसे लात की शक्ल छोड़ कर और हर तरह से हाथ पाँव मारना चाहिये। इस ख़याल को मद्देनज़र रखकर मुन्सिफ़ी की दरख़्वास्त बग़ैर स्टाम्प चस्पाँ वकालतन नहीं बल्कि असालतन दाख़िल कर दी। हस्बे–दस्तूर तारीख़े–मुक़र्ररा पर इन्टरव्यू में जो हाज़िर हुआ तो सवालात की इब्तदा इस तरह से शुरु हुई।

सवाल – आपने इस से पहले भी किसी सर्विस के लिये एप्लाई (Apply) किया था?

जवाब – जी हाँ डिप्टी मजिस्ट्रेटी के लिये।

सवाल – आपको मालूम है आपका नाम क्यों नही भेजा गया?

जवाब – मुअस्सर–ज़राए[1] नहीं रहने की वजह से।

सवाल – यहाँ ज़राए का क्या काम, सलाहियत और क़ाबिलियत की काम्पेटीशन में जो काम्पीटेन्ट कन्डीडेट होता है उसका इन्तख़ाब होता है। चूँकि इस काम्पेटीशन में आप पूरे नहीं उतरे होंगे इसलिये आप का नाम नहीं भेजा गया।

जवाब – हुज़ूर, इसको मैं भी अर्ज़ कर रहा हूँ कि क्वालीफीकेशन में तो ख़ुदा के फ़ज़्ल से नहीं अलबत्ता रेकोमेन्डेशन के कम्पेटीशन में काफी नम्बर नहीं ला सका।

सवाल – डिप्टी मजिस्ट्रेटी और मुन्सफी इन दोनों सरकारी सर्विसों में आप किसको ज्यादा पसन्द करते है?

जवाब – हजूर बात यह है कि डिप्टियों को सिर्फ मार पीट, चोरी डकैती, नक़बज़नी, ख़ूँरेज़ी वग़ैरह के मुक़द्मात की समाअत की वजह से रोज़ाना डाकुओं, बदमाशों, चोरों, उठाईगीरों से वास्ता रहता है और "सोहबते–सालेह तुरा सालेह कुनद"[2] का मक़ूला[3] ग़लत नहीं है। ये जो डिप्टीयों में शाने–गुरुर, डींग, हेकड़ी और "हम चू मन दीगरे नीस्त"[4] क़िस्म वाला अन्दाज़ देखते हैं यह उन्ही सोहबतों का असर है। बरख़िलाफ़ इसके मुन्सिफ़ों को उन्हें अपने इजलास पर ज़ियादातर बड़े–बड़े दौलतमन्दों, सरमायादारों की डिग्री

1. प्रभावकारी साधनों 2. सदाचारी की संगति सुचरित्र बनाती है
3. कथन 4. हम जो है कोई और नहीं

داروں کی ڈگری دلانے کی وجہ سے متکبر مزاج مہاجنوں اور ساہوکاروں سے تعلقات رہتے ہیں۔ اور یہ منصفوں میں جو گربہ مسکین قسم کی انکساری وغیرہ دیکھتے ہیں، یہ انھیں ساہوکار بینوں کی فیض صحبت کا اثر ہے۔ اس لیے فرسٹ کلاس ڈپٹی مجسٹریٹی کے عوض فرسٹ، سکنڈ منصف کیا تھرڈ کلاس منصف ہونا میں کہیں بہتر سمجھتا ہوں۔ چنانچہ اس منصفی کے بارے میں شاعروں نے بھی کہا ہے۔

منصفی ہو تو غضب نا منصفی ہو تو ستم
تمہیں منصفی سے کہہ دو تمہیں اعتبار ہوتا

سوال:۔ آپ نے وکالت بھی پاس کی ہے یا نہیں؟ اور اگر کی ہے تو پاس کیے کتنے دن ہوئے؟

جواب:۔ حضور، ''سول'' اور ''کریمنل'' دونوں سبجکٹ میں پاس کیا ہے اور پاس کیے ابھی دو ماہ بھی نہیں ہوئے۔ آپ اسی سے سمجھ لیجیے کہ ابھی ڈگری تک بھی نہیں ملی ہے، گون تک نہیں بنوایا ہے، ایک دم ''تازہ فرش'' وکیل ہوں۔

سوال:۔ آپ کو معلوم ہے کہ منصفی میں اپلائی (Apply) کرنے کے لئے کم سے کم چھ ماہ کی پریکٹس لازمی ہے؟

جواب:۔ حضور، منصفی میں تو وکالت اور قانون دانی کی چنداں ضرورت ہی نہیں ''شہر سکھائے کوتوالی'' کی مثل کے مطابق جب ایک معمولی ڈپٹی وکیل کی بحث سنتے سنتے قانون داں ہو جاتا ہے تو بیچارے منصف ایسے بھدّے دماغ کے تھوڑے ہی ہوتے ہیں کہ بحث کے وقت سمجھانے پر بھی دماغ میں نہ آئے۔ قانون پڑھنے اور دفعات سمجھانے کا پیشہ تو وکلاء کا ہے۔ بیچارے حاکموں کا کام تو اجلاس پر صرف اظہار جرح لکھنا، بحث سننا اور فریقین کے وکلاء میں سے جس نے زبردستی جو قانون دماغ میں ٹھوس دیا، اسی کے مطابق فیصلہ دینا یہ چھ ماہ کی پریکٹس کی قید تو بلا قصور منصفوں پر ٹھوک دی گئی ہے اور اگر اس پر بھی یہ قید حضور لازمی سمجھتے ہیں تو پروبیشن (Probation) کے زمانہ میں چھ ماہ کیا سال بھر

दिलाने की वजह से मुनकसिर[1] मिज़ाज महाजनों और साहूकारों से तअल्लुक़ात रहते हैं। और ये मुन्सिफों में जो ग़ुरबा[2], मसकीन क़िस्म की इन्कसारी3 वग़ैरह देखते हैं, यह उन्हीं साहूकार बनियों की फ़ैज़े–सोहबत का असर है। इसलिये फर्स्ट क्लास डिप्टी मजिस्ट्रेटी के ऐवज़ फर्स्ट, सेकेन्ड मुन्सिफ़ क्या थर्ड क्लास मुन्सिफ़ होना मैं कहीं बेहतर समझता हूँ। चुनानचे इस मुन्सिफ़ी के बारे में शायरों ने भी कहा है –

मुन्सिफ़ी हो तो ग़ज़ब ना मुन्सिफ़ी हो तो सितम
तुम्हीं मुन्सिफ़ी से कह दो तुम्हें एतबार होता

सवाल –आपने वकालत भी पास की है या नहीं? और अगर की है तो पास किये कितने दिन हुए?

जवाब – हुज़ूर, "सिविल" और "क्रिमिनल" दोनों सब्जेक्ट में पास किया है और पास किये अभी दो माह भी नहीं हुए। आप इसी से समझ लीजिये कि अभी डिग्री तक भी नहीं मिली है, गाउन तक नहीं बनवाया है, एक दम "ताज़ा फ्रेश" वकील हूँ।

सवाल – आपको मालूम है कि मुन्सिफ़ी में अप्लाई (Apply) करने के लिये कम से कम छः माह की प्रेक्टिस लाज़मी है?

जवाब – हुज़ूर, मुन्सिफ़ी में तो वकालत और क़ानूनदानी की चन्दाँ ज़रुरत ही नहीं "शहर सिखाये कोतवाली" की मसल[4] के मुताबिक़ जब एक मामूली डिप्टी, वकील की बहस सुनते–सुनते क़ानूनदाँ हो जाता है तो बेचारे मुन्सिफ़ ऐसे भद्दे दिमाग़ के थोड़े ही होते हैं कि बहस के वक़्त समझाने पर भी दिमाग़ में न अटे। क़ानून पढ़ने और दफ़आत समझाने का पेशा तो वकीलों का है। बेचारे हाकिमों का काम तो इजलास पर सिर्फ इज़हारे जिरह लिखना, बहस सुनना और फरीक़ैन के वकीलों में से जिसने ज़बरदस्ती जो क़ानून दिमाग़ में ठूंस दिया, उसी के मुताबिक़ फैसला देना, यह छः माह की प्रैक्टिस की क़ैद तो बिला क़ुसूर मुन्सिफों पर थोप दी गयी है और अगर इस पर भी ये क़ैद हुज़ूर लाज़मी समझते हैं तो प्रोबेशन (Probation) के ज़माने में छः माह क्या साल भर

---

1. विनयशील 2. भीगी बिल्ली. 3. नम्रता 4. कहावत

تک اس کمی کو پورا کرنے کا موقع ہے۔

یہ مدلل بحث سن کر وہ سب کچھ اس طرح سے مسکرائے کہ مجھے یقین ہو گیا کہ انٹرویو کے امتحان میں اوّل نمبر لانے کی وجہ سے منصف اول ہو جانا اب لازمی ہے۔ مگر کئی روز کے بعد اس انٹرویو کا غیر منصفانہ نتیجہ سن کر یقین ہو گیا کہ منصفی کا پوسٹ تو قائم ہے مگر حقیقی معنوں میں دنیا سے منصفی ایک دم اُٹھ گئی۔ اور میری طرح تعجب، حیرت، غصہ، افسوس کی قسم سے کئی طرح کی جذباتی کیفیتیں بیک وقت آپ پر بھی طاری ہونے لگیں گی۔ میرے متعلق یہ رائے قائم کی گئی کہ مجھ میں کومن سنس کافی مقدار میں نہیں پایا جاتا۔ اب انھیں کون سمجھائے کہ ہر شخص کی سمجھ اور سنس جُدا ہے۔ ''کومن ویلتھ'' (Common Wealth) کی طرح کومن سنس کا خود ساختہ اصول بنا کر کسی کی قابلیت اور صلاحیت کا معیار قرار دینا نون سنس قسم کی باتیں ہیں۔

اب ناکامی کے بعد آپ نے سمجھا ہوگا کہ بددل ہو کر میں نے نئے سروس کی کوشش چھوڑ دی ہوگی۔ لاحول ولاقوۃ، وہ کوئی دوسرے بزدل اور پست ہمت کنڈیڈیٹ ہوں گے جو ایک ہی دوبار کی شکست کے بعد میدان چھوڑ کر بھاگ جاتے ہیں۔ میں مہاتمائی دل و دماغ کا آدمی ہوں۔ بیسیوں بار فیلیور (Failure) ہونے پر بھی اپنی حرکتوں سے باز آنے والا نہیں۔ یہ سروس کمیٹی کیا ہے، بادشاہ تک کے انٹرویو میں فیل ہو جانے کے بعد بھی صرف خود ہی نہیں بلکہ ساتھیوں کو بھی میں یہی مشورہ دیتا رہوں گا کہ ع

کیے جاؤ کوشش مرے دوستو

چنانچہ دوسرے سال جب سب رجسٹراری کی خبر ملی تو فوراً بذریعہ رجسٹری درخواست بھیج دی۔ اب حسب دستور جب انٹرویو کے لیے بلایا گیا تو اب کے زبانی امتحان کے بجائے تحریری امتحان شروع ہو گیا۔ اور وہ اس طرح کہ اُردو کے صاف خوشخط اور بدخط وثائق کا ایک بنڈل علی الترتیب جو میز پر پہلے ہی سے رکھا گیا تھا۔ اس میں سے ایک ایسا بدخط حروف کا وثیقہ جو بدقسمت کنڈیڈیٹ کے خطِ تقدیر سے بھی زیادہ شکستہ تھا۔ جسے میں کیا ممتحن صاحبان بلکہ خود لکھنے والا بھی نہیں پڑھ سکتا تھا۔ نکال کر مجھے پڑھنے کے

तक इस कमी को पूरा करने का मौक़ा है।

यह मुदल्लल बहस सुनकर वह सब कुछ इस तरह से मुस्कुराये कि मुझे यक़ीन हो गया कि इन्टरव्यू के इम्तेहान में अव्वल नम्बर लाने की वजह से मुन्सिफ़े-अव्वल हो जाना अब लाज़मी है। मगर कई रोज़ के बाद इस इन्टरव्यू का ग़ैर मुन्सिफ़ाना नतीजा सुनकर यक़ीन हो गया कि मुन्सिफ़ी का पोस्ट तो क़ायम है मगर हक़ीक़ी मआनों में दुनिया से मुन्सिफ़ी एकदम उठ गई। और मेरी तरह तअज्जुब, हैरत, गुस्सा, अफ़सोस की क़िस्म से कई तरह की जज़्बाती कैफ़ीयतें बयक वक़्त आप पर भी तारी होने लगेंगी। मेरे मतल्लिक़ यह राय क़ायम की गई कि मुझ में कॉमन सेन्स काफ़ी मिक़दार में नहीं पाया जाता। अब उन्हें कौन समझाये कि हर शख़्स की समझ और सेन्स जुदा है। कॉमन वेल्थ (Common Wealth) की तरह कॉमन सेन्स का ख़ुद-साख़्ता[1] उसूल बनाकर किसी की क़ाबिलियत और सलाहियत का मेयार[2] क़रार देना नॉन सेन्स क़िस्म की बातें हैं।

अब नाकामी के बाद आपने समझा होगा कि बद् दिल होकर मैंने नई सर्विस की कोशिश छोड़ दी होगी। लॉहौलवलाक़ुव्वत, वह कोई दूसरे बुज़दिल और पस्त हिम्मत कैन्डीडेट होंगें जो एक ही दो बार की शिकस्त के बाद मैदान छोड़कर भाग जाते हैं। मैं महात्माई दिलो-दिमाग का आदमी हूँ। बीसियों बार फ़ेल्योर (Failure) होने पर भी अपनी हरकतों से बाज़ आने वाला नहीं। ये सर्विस कमेटी क्या है, बादशाह तक के इन्टरव्यू में फ़ेल हो जाने के बाद भी सिर्फ़ ख़ुद ही नहीं बल्कि साथियों को भी यही मशवरा देता रहूँगा कि –

किये जाओ कोशिश मेरे दोस्तो

चुनान्चे दूसरे साल जब सबरजिस्ट्रारी की ख़बर मिली तो फ़ौरन बज़रीये रजिस्ट्री दरख़ास्त भेज दी। अब हस्बे-दस्तूर जब इन्टरव्यू के लिये बुलाया गया तो अब के ज़बानी इम्तिहान के बजाए तहरीरी इम्तिहान शुरु हो गया। और वह इस तरह के उर्दू कि साफ़ ख़ुशख़त और बदख़त वसाएक़ का एक बंडल अलर्त्तीब जो मेज़ पर पहले ही से रखा गया था, इसमें से एक ऐसा बदख़त[3] हुरुफ़ का वसीक़ा जो बदक़िस्मत कन्डीडेट के ख़ते-तक़दीर[4] से भी ज़्यादा शिकस्ता[5] था, जिसे मैं क्या मुम्तहिन[6] साहिबान बल्कि ख़ुद लिखने वाला भी नहीं पढ़ सकता था, निकाल कर मुझे पढ़ने के

---

1. मनगढ़त सिद्धान्त 2. मापदण्ड 3. भद्दे अक्षरों का
4. भाग्य रेखा 5. टूटा हुआ 6. परिक्षक

لیے دیا گیا۔ وہ تو خیریت تھی کہ ایک انٹرویو زدہ تجربہ کار کنڈیڈیٹ کے کہنے پر وثیقوں کے ڈھرے اور انداز تحریر سے مانوس ہونے کی غرض سے دو روز پہلے ہی ایک دوست کے یہاں سے لاکر چند پرانے وثیقوں کو صرف پڑھا ہی نہیں بلکہ دو کو ازبر بھی کرلیا تھا۔ یہی احتیاطی تدبیر اس وقت کام آگئی۔ فوراً اس جناتی حروف کے وثیقہ کو ہاتھ میں لے کر اپنے منھ کے سامنے کرکے اپنے یاد کیے ہوئے وثیقہ کے مضمون کو شبینہ کی طرح ایک سانس میں اس طرح دہرایا کہ مارے حیرت کے سب میرا منھ تکنے لگے اور یہ ہمت میں نے اس لیے کی کہ کوشش کرنے پر بھی کسی سے وہ حروف آسانی سے پڑھے نہیں جاتے۔ خیر یہ مرحلہ تو خدا کے فضل سے سر کرلیا۔ اب اس کے بعد دوسری مصیبت یہ پیش آئی کہ ایک دوسرا وثیقہ ناگری حروف میں لکھا ہوا پڑھنے کے لیے پیش کیا گیا۔ اس موقعہ پر پہلی ترکیب تو کام دے نہیں سکتی تھی، کیونکہ میں اردو کے وثیقے یاد کیے ہوئے تھا اور اس کی زبان سنسکرت آمیز بھاشا تھی۔ تھوڑی بہت ہندی جاننے کے باوجود میرے دماغ اور نگاہوں نے پوری قوت کے ساتھ زور آزمائی کی مگر گاڑی آگے نہ چل سکی۔ مجبوراً میں نے دبے لفظوں میں کہا کہ حضور عالی، نحیف اور کمزور انسانوں سے دیوناگری یعنی دیو کے حروف پڑھوانا کہاں تک مناسب ہے۔ اس کے علاوہ کوئی سب رجسٹرار یا رجسٹرار رجسٹری کے وقت خود وثیقہ ''بقلم خاص'' پڑھتا نہیں۔ یہ کام تو پیشکار اور کلرک کا ہے، اور میں کلرکی یا پیشکاری کا نہیں بلکہ سب رجسٹراری کا امیدوار ہوں۔ اور یوں ہی مجھ سے پڑھوانے کی ضد ہے تو ایک روز کی مہلت دی جائے۔ یہ ناگری کیا، بنگلہ، اڑیا تک کے وثیقہ پڑھ کر بلکہ زبانی یاد کرکے برزبانی سنا دوں گا۔ اس معقول عذر پر معنی خیز تبسم کے ساتھ مجھ سے کہا گیا کہ اس وقت آپ جائیں۔ آئندہ کسی موقع پر یاد کرکے آیئے گا۔ میں سمجھ گیا کہ بخیر نیت ان لوگوں کی گڑبڑ معلوم ہوتی ہے۔ اگرچہ اس وقت جب کہ جناتی حروف کا وثیقہ نکال کر میرے سامنے پیش کیا گیا تھا، میں اپنے خطِ تقدیر کو پڑھ چکا تھا۔ مگر امید عجیب بلائے بے درماں چیز ہے۔ آنکھ کے دیکھے ہوئے واقعہ اور کان کی سنی ہوئی باتوں کو بھی جھٹلاتی رہتی ہے۔ لیکن خدا بھلا کرے ان ممبران انٹرویو کا کہ اسی وقت میری قسمت کا فیصلہ سنا دیا اور انتظار کی پریشانیوں میں ہفتوں مبتلا نہیں رکھا۔

लिये दिया गया। वह तो खैरियत थी कि एक इन्टरव्यू ज़दा तजर्बेकार कन्डीडेट के कहने पर वसीकों के ढर्रे और अन्दाज़े–तहरीर[1] से मानूस[2] होने की ग़रज़ से दो रोज़ पहले ही एक दोस्त के यहाँ से लाकर चंद पुराने वसीक़ों को सिर्फ पढ़ा ही नहीं बल्कि दो को अज़बर[3] भी कर लिया था। यही एहतियाती तदबीर इस वक़्त काम आ गयी। फ़ौरन इस जिन्नाती हुरुफ़ के वसीक़े को हाथ में लेकर अपने मुहँ के सामने करके अपने याद किये हुये वसीक़े के मज़मून को शबीना की तरह एक सांस में इस तरह दोहराया कि मारे हैरत के सब मेरा मुँह तकने लगे और यह हिम्मत मैंने इसलिये की कि कोशिश करने पर भी किसी से वह हुरुफ़ आसानी से पढ़े नहीं जाते। खै़र यह मरहला तो ख़ुदा के फ़ज़्ल से सर कर लिया। अब इसके बाद दूसरी मुसीबत यह पेश आई कि एक दूसरा वसीक़ा नागरी हुरुफ़ में लिखा हुआ पढ़ने के लिये पेश किया गया। इस मौक़े पर पहली तरकीब तो काम दे नहीं सकती थी, क्योंकि मैं उर्दू के वसीक़े याद किये हुये था और इसकी ज़बान संस्कृत आमेज़ भाषा थी। थोड़ी बहुत हिन्दी जानने के बावजूद मेरे दिमाग़ और निगाहों ने पूरी कूव्वत के साथ ज़ोर आज़माई की मगर गाड़ी आगे न चल सकी। मजबूरन मैं ने दबे लफ़्ज़ों में कहा कि हज़ूरे–आली नहीफ़ और कमज़ोर इन्सानों से देवनागरी यानी देव के हुरुफ़ पढ़वाना कहाँ तक मुनासिब है। इसके अलावा कोई सब–रजिस्ट्रार या रजिस्ट्रार रजिस्ट्री के वक़्त खुद वसीक़ा "बक़लम ख़ास" पढ़ता नहीं। यह काम तो पेशकार और क्लर्क का है, और मैं क्लर्की या पेशकारी का नहीं बल्कि सब–रजिस्ट्रारी का उम्मीदवार हूँ। और यूँ ही मुझसे पढ़वाने की ज़िद है तो एक रोज़ की मोहलत दी जाए। ये नागरी क्या, बंगला, उड़िया तक के वसीक़े पढ़कर बल्कि ज़बानी[4] याद करके बर–ज़बानी सुना दूंगा। इस माकूल उज़्र[5] पर मानीख़ेज़ तबस्सुम के साथ मुझसे कहा गया कि इस वक़्त आप जायें। आइन्दा किसी मौक़े पर याद करके आइयेगा। मैं समझ गया कि फिर नीयत इन लोगों की गड़बड़ मालूम होती है। अगरचे इस वक़्त जबकि जिन्नाती हुरुफ़ का वसीक़ा निकाल कर मेरे सामने पेश किया गया था, मैं अपने ख़ते–तक़्दीर को पढ़ चुका था। मगर उम्मीद अजीब बलायें[6] बे दरमां चीज़ है। आँख के देखे हुये वाक़ए और कान की सुनी हुई बातों को भी झुटलाती रहती है। लेकिन ख़ुदा भला करे उन मेम्बराने–इन्टरव्यू का कि उसी वक़्त मेरी क़िस्मत का फ़ैसला सुना दिया और इन्तज़ार की परेशानियों में हफ़्तों मुब्तला नहीं रखा।

---

1. लिखाई की शैली 2. परिचित 3. कंठस्त 4. मौखिक
5. बहाना 6. न ख़त्म होने वाली मुसीबत

اس تیسرے انٹرویو کی ناکامی کے بعد میں نے سوچا کہ لاکھ بی اے اونرس یا ایم اے کی اعلیٰ سے اعلیٰ سارٹیفکٹ بھی ہو جب بھی یہ اونچے درجے کی سرکاری ملازمت کے انٹرویو میں مجھ جیسے بے یار و مددگار کنڈیڈیٹ کو منتخب کرنا سروس کمیٹی کے ممبروں کے لیے ایک بھاری مصیبت ہے۔ اس لیے کہ یہ بیچارے فرشتہ تو ہیں نہیں، جنھیں نہ کسی رشتہ ناتہ، نہ بھائی بندی نہ دوستانہ راہ و رسم ہو آدمیت بھی نہ ہو جب بھی یہ لوگ آخر پیدائشی آدمی ہیں۔ بیسوں اعزاء و اقربا، سینکڑوں دوست احباب، ہزاروں ملاقاتی کا ہونا لازم، اور ہر پوسٹ کے امیدوار میں کسی نہ کسی عزیز یا دوست یا ملاقاتی کے لگاؤ کا کنڈیڈیٹ نکل ہی آتا ہے۔ اب ایسے موقعوں پر آدمی اپنے چند روزہ پوزیشن کو دیکھے یا ہمیشہ کے نہ منقطع ہونے والے تعلقات کا خیال رکھے۔ اس خیال کو مدنظر رکھ کر میں نے ارادہ کرلیا کہ گزیٹیڈ پوسٹ کا خیال چھوڑ کر اس سے نیچے درجہ کی سرکاری ملازمت کے لیے کوشش کروں۔ مگر شومئ قسمت کا کیا علاج کی ایک خاص قسم کی انسپکٹری کے لیے درخواست دینے پر جب انٹرویو کے لیے بلایا گیا تو آفس میں پہونچ کر معلوم ہوا کہ انٹرویو کے پہلے کامیاب امیدوار نامزد ہوگیا۔ بقیہ ناکام امیدواروں کو ڈس کوالیفائیڈ (Disqualified) بنانے کے لئے رسماً انٹرویو شروع ہوگیا۔ مدعی کے اظہار کے پہلے ہی اس کے حق میں فیصلہ صادر ہو جانے کی وجہ دریافت کی تو محکمہ کے ایک اہلمد سے معلوم ہوا کہ اس ڈیپارٹمنٹ کے کمشنر کے پرسنل اسسٹنٹ کے اس خاص عزیز کے متعلق پہلے ہی سے طے شدہ بات تھی۔ اب پرسنل معاملہ میں دخل دینا صرف ایٹی کیٹ ہی نہیں بلکہ ''پرسنل لا'' کے بھی خلاف ہے۔ اس لیے بہ اطمینان شام اپنے گھر واپس چلا آیا۔ اس کے چھ سات ماہ بعد پولس انسپکٹری کے لیے جب درخواست دی تو۔ ع

بہر جا کہ رسیدیم آسماں پیداست

والا مضمون وہاں بھی تھا۔ یعنی انٹرویو میں سوالات پوچھنے والے اِس۔ پی صاحب کے خود حقیقی خالہ زاد ماموں کے سگے لخت جگر کنڈیڈیٹ کی حیثیت سے موجود۔ ایک تو اِس۔ پی کا عزیز، اس پر دیکھنے میں بدن میں ذرا گٹھیلا اور ''ہلدی'' (Healthy) اس لیے ہر کنڈیڈیٹ سے ورزش اور جسمانی صحت کے متعلق پوچھا جانے لگا۔ مجھ سے بھی جب یہ کہا

इस तीसरे इन्टरव्यू की नाकामी के बाद मैंने सोचा कि लाख बी. ए. ऑनर्स या एम. ए. की आला से आला सर्टीफिकेट भी हों जब भी ये ऊँचे दर्जे की सरकारी मुलाज़मत के इन्टरव्यू में मुझ जैसे बे–यारो–मददगार कन्डीडेट को मुन्तख़ब करना सर्विस कमेटी के मेम्बरों के लिये एक भारी मुसीबत है। इसलिये कि ये बेचारे फरिश्ता तो हैं नहीं, जिन्हें न किसी रिश्ता–नाता, न भाई–बन्दी न दोस्ताना राहो–रस्म हो, आदमीयत भी न हो, जब भी ये लोग आख़िर पैदाइशी आदमी हैं। बीसियों अइज़्ज़ा[1] व अक़रबा[2], सैंकड़ों दोस्त–अहबाब, हज़ारों मुलाक़ाती का होना लाज़िम, और हर पोस्ट के उम्मीदवार में किसी न किसी अज़ीज़ या दोस्त या मुलाक़ाती के लगाव का कन्डीडेट निकल ही आता है। अब ऐसे मौक़ों पर आदमी अपनी चन्दरोज़ा पोजीशन को देखे या हमेशा के न मुनक़ता[3] होने वाले तअल्लुक़ात का ख़्याल रखे। इस ख़्याल को मद्दे–नज़र रख कर मैं ने इरादा कर लिया कि गज़ेटेड पोस्ट का ख़्याल छोड़कर इससे नीचे दर्जे की सरकारी मुलाज़मत के लिये कोशिश करूँ। मगर शूमिये–क़िस्मत[4] का क्या इलाज कि एक ख़ास क़िस्म की इंस्पेक्टरी के लिये दरख़ास्त देने पर जब इन्टरव्यू के लिये बुलाया गया तो ऑफिस में पहुँचकर मालूम हुआ कि इन्टरव्यू के पहले कामयाब उम्मीदवार नामज़द् हो गया। बक़िया नाकाम उम्मीदवारों को डिसक्वालीफ़ाइड (Disqualified) बनाने के लिये रस्मन् इन्टरव्यू शुरु हो गया। मुद्दई के इज़हार के पहले ही उसके हक़ में फ़ैसला सादिर हो जाने की वजह दरयाफ़्त की तो महकमे के एक अहल–मद से मालूम हुआ कि इस डिपार्टमेंट के कमिश्नर के पर्सनल आसिस्टेन्ट के इस ख़ास अज़ीज़ के मुतअल्लिक़ पहले ही से तय शुदा बात थी। अब पर्सनल मामले में दख़्ल देना सिर्फ़ ऐटीकेट ही नहीं बल्कि "पर्सनल लॉ" के भी ख़िलाफ़ है। इसलिये ब–इत्मिनान शाम को अपने घर वापस चला आया। इसके छः सात माह बाद पुलिस इन्सपेक्ट्री के लिये जब दरख़ास्त दी तो –

बहर जा कि रसीदेम आस्माँ पैदास्त[5]

वाला मज़मून वहाँ भी था। यानी इन्टरव्यू में सवालात पूछने वाले एस.पी. साहिब के खुद हक़ीक़ी ख़ाला–ज़ाद मामूं के सगे लख़्ते–जिगर[6] कन्डीडेट की हैसियत से मौजूद। एक तो एस.पी. का अज़ीज़, उस पर देखने में बदन में ज़रा गठीला और "हेल्दी" (Healthy) इसलिये हर कन्डीडेट से वर्ज़िश और जिस्मानी सेहत के मुतअल्लिक़ पूछा जाने लगा। मुझसे भी जब यह कहा

1–2. सम्बन्धियों 3. ना टूटने वाले 4. दुर्भाग्य 5. हर उस जगह पहुँचा जहाँ भी आसमान हो 6. पुत्र

گیا کہ سب انسپکٹری کے لیے آدمی ہلدی (Healthy) ہونا ضروری ہے تمہیں ورزش کا شوق ہے یا نہیں؟ میں نے کہا حضور! ورزش نہ کرنے کے باوجود جس کنڈیڈیٹ سے چاہئے بھڑا دیجیے، پھر دیکھیے اگر پٹک کر ہلدی لگانے کے لائق نہ بنا دوں تو ہلدی نہ ہونے کی بناء پر میرا نام چھانٹ دیجیے۔ مگر وہاں تو ایک مخصوص ہلدی کنڈیڈیٹ کی ضرورت تھی۔ اس سے مایوس ہوکر آفس کی کلرکی کی طرف میری کوشش کا نزلہ رجوع ہوا۔ مگر وہاں تو ہر محکمہ کے کلرکوں کے اعزاء واقرباء جگہ خالی ہونے یا نئے پوسٹ کی ضرورت سے ہی مستقل کنڈیڈیٹ بنے بیٹھے ہیں۔ بلکہ ہر ہونے والی تقرری کہ جگہ پر ناجائز محرر کی حیثیت سے کام بھی کر رہے ہیں۔ اب جس کلرکی کی جگہ کے لیے میں نے درخواست دی ہے، انٹرویو میں پہلا سوال مجھ سے یہی کیا گیا کی آفس میں اس سے پہلے بھی کام کیا ہے؟ کلرکی کا کچھ تجربہ ہے؟ میں نے کہا کی جناب کلرکی کا تو نہیں، البتہ کلرکوں کا مجھے سخت تلخ تجربہ ہے۔ جس آفس میں رہوں گا، ممکن نہیں کہ کوئی بغیر علم میرے کسی سے کچھ لے سکے۔ لیکن وہی جو میں نے عرض کیا تھا کہ ہر آفس کے کلرک اپنے محکمے کے افیسروں پر ایسا چھائے رہتے ہیں اور اپنے یگانوں سے اپنے محکمہ کا راستہ نئے آدمی کے لیے ایسا روکے رہتے ہیں کہ کوئی نیا کنڈیڈیٹ گھسنے بلکہ ادھر جھانکنے کی بھی نیت نہیں کر سکتا۔

مختصر یہ کہ ڈپٹی مجسٹریٹی، منصفی، سب رجسٹراری، سب انسپکٹری مختلف محکموں کی کلرکی کے سلسلہ میں اتنے انٹرویوں سے واسطہ پڑا کہ ہر ایک کی اگر تفصیلی حالات لکھوں تو ایک ضخیم ''انٹرویونامہ'' ہو جائے۔ اس لیے مختصراً اپنے آخری انٹرویو کے کچھ دل چسپ سوال و جواب کے حالات لکھنے پر اکتفا کرتا ہوں۔

مسلسل کئی سال تک انٹرویو کے پھیرے میں رہ کر جب قریب اوور ایج (Over Age) ہو گیا تو مایوس ہوکر گھر بیٹھ رہا۔ اتفاق سے ایک روز ایک دوست نے کہا ''ساٹھ روپے ماہانہ تنخواہ کی ایک ٹمپریری جگہ پولس آفس میں خالی ہے۔ بیکار سے بیگار بھلی۔ تم بھی ایک درخواست پولس آفس میں دے دو۔

گذشتہ انٹرویو کے تجربات نے اس نتیجہ پر پہونچا دیا کہ ''انٹرویو سسٹم'' جب تک رہے گا ایسے کنڈیڈیٹ کو جس کا کوئی سرپرست نہ ہو جگہ ملنی دشوار ہے۔ اس لیے اس امید پر

गया कि सब–इन्सपेक्ट्री के लिये आदमी हेल्दी (Healthy) होना ज़रुरी है तुम्हें वरज़िश का शौक़ है या नही? मैंने कहा हुज़ूर! वरज़िश न करने के बावजूद जिस कन्डीडेट से चाहे भिड़ा दीजिये, फिर देखीए अगर पटक कर हल्दी लगाने के लायक़ न बना दूँ तो हेल्दी न होने की बिना पर मेरा नाम छांट दीजिये। मगर वहाँ तो एक मख़्सूस हेल्दी कन्डीडेट की ज़रुरत थी। इस से मायूस होकर ऑफिस की क्लर्की की तरफ़ मेरी को.शश का नज़ला रुजू हुआ। मगर वहाँ तो हर महकमे के क्लर्कों के आइज्ज़ा व अक़रबा जगह ख़ाली होने या नयी पोस्ट की ज़रुरत से-ही मुस्तक़िल कन्डीडेट बने बैठे हैं। बल्कि हर होने वाली तक़र्रुरी की जगह पर नाजायज़ मोहर्रिर की हैसीयत से काम कर रहे हैं। अब जिस क्लर्की की जगह के लिये मैंने दरख़्वास्त दी है, इन्टरव्यू में पहला सवाल मुझसे यही किया गया कि ऑफ़िस में इससे पहले भी काम किया है? क्लर्की का कुछ तजर्बा है? मैंने कहा कि जनाब क्लर्की का तो नहीं, अलबत्ता क्लर्कों का मुझे सख़्त तल्ख़ तजर्बा है। जिस ऑफ़िस में रहूंगा, मुमकिन नहीं कि कोई मेरे इल्म के बग़ैर किसी से कुछ ले सके। लेकिन वही जो मैंने अर्ज़ किया था कि हर ऑफ़िस के क्लर्क अपने महकमे के ऑफ़ीसरों पर ऐसा छाये रहते हैं और अपने यगानों से अपने मोहकमे का रास्ता नये आदमी के लिये ऐसा रोके रहते हैं कि कोई नया कन्डीडेट घुसने बल्कि उधर झाँकने की भी नीयत नहीं कर सकता।

मुख़्तसर यह कि डिप्टी मजिस्ट्रेटी, सब–रजिसट्रारी, सब–इन्सपेक्ट्री मुख़्तलिफ़ मोहकमों की क्लर्की के सिलसिले में इतने इन्टरव्यू से वास्ता पड़ा कि हर एक के अगर तफ़सीली हालात लिखूँ तो एक ज़ख़ीम "इन्टरव्यू–नामा" हो जाये। इसलिये मुख़्तसरन अपने आख़री इन्टरव्यू के कुछ दिलचस्प सवाल व जवाब लिखने पर इक्तफ़ा करता हूँ।

मुसलसल कई साल तक इन्टरव्यू के फेरे में रहकर जब क़रीब ओवर ऐज (Over Age) हो गया तो मायूस होकर घर बैठ रहा। इत्तफ़ाक़ से एक रोज़ एक दोस्त ने कहा "साठ रुपये माहवार की तन्ख़्वाह की एक टेम्परेरी जगह पुलिस ऑफिस में ख़ाली है। बेकार से बेगार भली। तुम भी एक दरख़्वास्त पुलिस ऑफिस में दे दो।

गुज़िश्ता इन्टरव्यू के तजर्बात ने इस नतीजे पर पहुँचा दिया कि "इन्टरव्यू सिस्टम" जब तक रहेगा ऐसे कन्डीडेट को जिसका कोई सरपरस्त न हो जगह मिलनी दुश्वार है। इसलिये इस उम्मीद पर

نہیں کہ جگہ مل جائے گی بلکہ محض اس خیال سے کہ۔

سروس کی ہے اُمید ہی کس روسیاہ کو
اک گونہ دل لگی ہمیں دن رات چاہیے

ایک آخری انٹرویو کا دل چسپ تماشہ دیکھنے کی غرض سے پولس آفس میں جاکر بدست خاص اِس۔پی کے ہاتھ میں اپنی درخواست دے دی۔ انھوں نے ایک ہفتہ کے بعد انٹرویو کے لیے طلب کیا۔ حسب الحکم مقررہ تاریخ پر پہونچا تو انٹرویو میں جو سوالات و جوابات ہوئے انھیں بھی آپ ملاحظہ فرمائیں۔

ایس۔پی:۔ تم کہاں تک انگریزی جانتا ہے؟

میں:۔ حضور میں بی۔اے پاس ہوں۔

ایس۔پی:۔ ہم اتناہائی ایجوکیشن والا آدمی نہیں مانگتا۔ ہم کو کھالی (خالی) میٹرک انگریزی جاننے والا کا ضرورت ہے۔

میں:۔ حضور مجھے بی۔اے پاس کیے ہوئے دس سال ہو گئے۔ اس لیے سب بھول گیا۔ اس جگہ کے لیے جتنی انگریزی جاننے کی ضرورت ہے بس اس قدر یاد رہ گئی ہے۔

ایس۔پی:۔ تمہارا فیشن ایبل سوٹ بولتا ہے کہ تم پیسہ والا گھر کا لڑکا ہے۔ تیس روپیہ مہینہ تو تمھارا سوٹ بوٹ کالر ٹائی میں خرچ ہو جانے سکتا ہے۔ اس واسطے تمھارا لائک (لائق) یہ جگہ نہیں۔ گریب (غریب) آدمی کا واسطے ہے۔

میں:۔ غریب پرور یہ سوٹ بوٹ خاص میرا اپنا نہیں۔ یہ انٹرویو کے واسطے دوستوں سے مانگ تانگ کر لایا ہوں ورنہ گھر پر تو ع

وہی کُرتہ وہی لنگی جو آگے تھی سو اب بھی ہے

ایس۔پی:۔ تم ٹائپ جانتا ہے؟

میں:۔ آپ کے اقبال سے میں ہر قسم کا اور ہر ٹائپ کا انگریزی صرف لکھ پڑھ سکتا ہوں۔

ایس۔پی:۔ تم شوٹ ہینڈ جانتا ہے؟

नहीं कि जगह मिल जायेगी बल्कि महज़ इस ख़्याल से कि –

सर्विस कि है उम्मीद ही किस रु–सियाह को
इक गूना दिल लगी हमें दिन रात चाहिये

एक आख़री इन्टरव्यू का दिलचस्प तमाशा देखने की ग़रज से पुलिस ऑफिस में जाकर बदस्ते–ख़ास एस. पी. के हाथ में अपनी दरख़ास्त दे दी। उन्होंने एक हफ़्ते के बाद इन्टरव्यू के लिये तलब किया। हस्बुलहुक्म[1] मोक़र्ररा[2] तारीख़ पर पहुँचा तो इन्टरव्यू में जो सवालात व जवाबात हुए उन्हें आप भी मुलाहिज़ा फ़रमायें।

एस. पी. – तुम कहाँ तक अंग्रेज़ी जानता है?

मैं – हुज़ूर मैं बी. ए. पास हूँ।

एस. पी. – हम इतना हाई एजूकेशन वाला आदमी नहीं माँगता। हमको ख़ाली मैट्रिक अंग्रेज़ी जानने वाले का ज़रुरत है।

मैं – हुज़ूर मुझे बी. ए. पास किये हुये दस साल हो गये हैं। इसलिये सब भूल गया। इस जगह के लिये जितनी अंग्रेज़ी जानने की ज़रुरत है

बस इस क़द्र याद रह गई है।

एस. पी. –तुम्हारा फ़ैशनेबिल सूट बोलता है कि तुम पैसा वाला घर का लड़का है। तीस रुपये महीना तो तुम्हारा सूट बूट कॉलर टाई में ख़र्च हो जाने सकता है। इस वास्ते तुम्हारा लायेक ये जगह नहीं। गरीब आदमी का वास्ते है।

मैं – ग़रीब–परवर यह सूट बूट ख़ास मेरा अपना नहीं। यह इन्टरव्यू के वास्ते दोस्तों से माँग–ताँग कर लाया हूँ वरना घर पर तो –

वही कुर्ता वही लुंगी जो आगे थी सो अब भी है

एस. पी. – तुम टाईप जानता है?

मैं – आपके इक़बाल से मैं हर क़िस्म का और हर टाईप का अंग्रेज़ी सिर्फ़ लिख पढ़ सकता हूँ।

एस. पी. – तुम शार्ट हैंड जानता है?

---

1. आज्ञानुसार 2. तय

میں:۔ حضور میرا مائنڈ ایسا زبردست ہے کہ شوٹ ہینڈ کی ضرورت ہی نہیں۔ ایک بار جو بولنا ہو بول دیجیے اور کل باتیں لکھی ہوئی مجھ سے لے لیجیے۔ اس کے علاوہ میں ایسا "سویفٹ رائٹر (Swift Writer) ہوں کہ آپ بولنے کے ساتھ ساتھ کیا بلکہ بعض وقت قلم کی روانی میں منہ سے الفاظ نکلنے ہی کے پہلے لکھا جاتا ہے۔

ایس۔پی:۔ تم تیرنا جانتا ہے؟

میں:۔ اس پوسٹ کے لیے تیراکی جاننے کی شاید اس لیے ضرورت ہے کہ خدا نخواستہ کبھی بڑا اسیلاب آجائے اور دروازہ پر نوایڈمیشن لکھے رہنے کے باوجود پانی زبردستی آفس میں گھس آئے تو آفس کے کاغذات کو تیر کر باہر نکالنے کے لیے تیراکی کا جاننا ضروری ہے تو حضور عالی گردن تک پانی میں تو بغیر کشتی تیر کر کاغذات سمیت باہر نکل آسکتا ہوں۔

ایس۔پی:۔ اچھا تم سامنے والا تالاب میں تیرنے سکتا ہے؟

میں:۔ یہ تالاب کیا ہے حضور کا حکم ہو تو سمندر میں کود کر جان دے سکتا ہوں۔

ایس۔پی:۔ تم گھوڑا چڑھنا جانتا ہے؟

میں:۔ حضور گھوڑا چڑھنا کیا چیز ہے، زینہ لگا کر ہاتھی پر چڑھ سکتا ہوں۔

ایس۔پی:۔ پولس ڈیپارٹمنٹ میں تمہارا اپنا آدمی بھی کوئی ہے؟

میں:۔ یوں تو پولس میں بیسوں میرے اپنے عزیز اور رشتہ دار ہیں جن کو بالفعل میں نہیں جانتا۔ تاہم دو تین شخصوں کے متعلق تو کہہ سکتا ہوں جو اس محکمہ سے تعلق رکھتے ہیں۔ ایک میرے ماموں جان کے قریبی رشتہ کے خالہ زاد بھائی جو داروغہ اور انسپکٹر نہیں نہیں بلکہ ایک یورپین اِس۔پی کے خاص اردلی میں ہیں۔ دوسرے سُسرالی رشتہ میں ایک طرح کے قریبی سالے ہوتے ہیں۔ وہ سپاہی سے ترقی کر کے ہیڈ کانسٹبل کے درجہ پر پہونچ گئے۔ تیسرے خود افسران پولیس کا یہ کفش بردار خاکسار سروس کا امیدوار آپ کے سامنے موجود ہے ہی۔

मैं – हुज़ूर मेरा माइंड ऐसा ज़बरदस्त है कि शार्ट हैंड की ज़रुरत ही नहीं। एक बार जो बोलना हो बोले दीजिये और कुल बातें लिखी हुई मुझसे ले लीजिये। इसके अलावा मैं ऐसा स्वीफ्ट राईटर (Swift Writer) हूँ कि आप बोलने के साथ–साथ क्या बल्कि बाज़ वक़्त कलम की रवानी में मुँह से अलफ़ाज़ निकलने ही के पहले लिख जाता है।

एस. पी. – तुम तैरना जानता है?

मैं – इस पोस्ट के लिये तैराकी जानने की शायद इसलिये ज़रुरत है कि खुदा न ख़्वास्ता कभी बड़ा सैलाब आ जाये और दरवाज़े पर नो ऐडमीशन लिखे रहने के बावजूद पानी ज़बरदस्ती ऑफ़िस में घुस आये तो ऑफिस के कागज़ात को तैर कर बाहर निकालने के लिये तैराकी का जानना ज़रुरी है तो हुज़ूरे–आली गर्दन तक पानी में तो बग़ैर कश्ती तैर कर कागज़ात समेत बाहर निकल आ सकता हूँ।

एस. पी. – अच्छा तुम सामने वाला तालाब में तैरने सकता है?

मैं – ये तालाब क्या हुज़ूर का हुक्म हो तो समन्दर में कूदकर जान दे सकता हूँ।

एस. पी. – तुम घोड़ा चढ़ना जानता है?

मैं – हुज़ूर घोड़ा क्या चीज़ है, ज़ीना लगाकर हाथी पर चढ़ सकता हूँ।

एस. पी. – पुलिस डिपार्टमेंट में तुम्हारा अपना आदमी भी कोई है?

मैं – यूँ तो पुलिस में बीसों मेरे अपने अज़ीज़ और रिश्तेदार हैं जिनको बिलफ़ेल मैं नहीं जानता। ताहम दो तीन शख़्सों के मुतअल्लिक़ तो कह सकता हूँ जो इस मोहकमे से ताअल्लुक़ रखते हैं। एक मेरे मामू–जान के क़रीबी रिश्तेदार के ख़ाला–ज़ाद भाई जो दारोग़ा और इन्सपेक्टर, नहीं नहीं बल्कि एक यूरोपीयन एस. पी. के ख़ास अरदली में हैं। दूसरे ससुराली रिश्ते में एक तरह के क़रीबी साले होते हैं। वह सिपाही से तरक़्क़ी करके हेड–कांस्टेबल के दर्जे पर पहुँच गये। तीसरे खुद अफ़सराने–पुलिस का यह कफ़्श–बरदार ख़ाकसार सर्विस का उम्मीदवार आपके सामने मौजूद है ही।

ایس۔پی:۔ اچھا اب تم جا سکتا ہے۔

میں:۔ تو پھر اپوائمنٹ لیٹر کب تک میرے نام ایشو ہوگا؟

ایس۔پی:۔ آج کا انٹرویو کا بعد اچھا کنڈیڈیٹس کا کل یا پرسوں پھر انٹرویو ہونے مانگتا ہے۔

میں:۔ تو میرے نام دوبارہ انٹرویو کو بھی آج ہی ختم کر دیجئے۔

ایس۔پی:۔ پھاجل (فاضل) بات مت بولو۔ آج دوسرا انٹرویو ہونے نہیں سکتا۔

میں:۔ حضور عالی، اصل بات یہ ہے کہ آج بارہ بجے شب کے بعد میں ''اوراتج'' ہو جاؤں گا۔ آج ٹھیک شب کے گیارہ بج کر ۵۹ منٹ یا زیادہ سے ۶۰ منٹ تک انڈراتج ہوں۔ اس کے ایک دو منٹ کے بعد اوراتج ہونے کی وجہ سے پولس کے کام کے لائق نہیں رہوں گا۔ اس لیے وہ انٹریو بھی آج ہی ختم کر دیجیے۔

ایس۔پی:۔ تمہارا عمر کیا ہے؟ کس عمر میں بی۔اے پاس کیا ہے؟

میں:۔ ۱۶ سال کی عمر میں بی۔اے پاس کیا اور پاس کیۓ دس سال ہو گئے۔

ایس۔پی:۔ ایسا بات ہے تو ۲۶ برس کا تمہارا عمر ہونے مانگتا ہے۔ تم دو برس سے ''اوراتج'' ہے۔

میں:۔ سر، اسکول اور کالج کی عمر کا کوئی اعتبار نہیں۔ دوسری بار کے ''افیڈیوٹ'' (Affidavit) کی رو سے آج بارہ بجے شب تک انڈراتج ہوں۔

ایس۔پی:۔ ہمارا پاس پھاجل وکت (فاضل وقت) نہیں۔ (کلرک کو مخاطب کر کے) انٹرویو کے واسطے کتنا کنڈیڈیٹ اور ہے؟

کلرک:۔ حضور، تقریباً اور ایک سو کنڈیڈیٹ انٹرویو کے انتظار میں کھڑے ہیں۔

ایس۔پی:۔ او مائی گاڈ، اتنا آدمی کا انٹرویو کا واسطے ہمارا پاس وکت (وقت) نہیں۔ باہر جا کر بول دو انٹرویو کھتم (ختم) ہو گیا۔

کلرک:۔ جب انٹرویو کارڈ ایشو ہو چکا ہے تو بغیر ملاقات واپس چلے جانے پر اخباروں میں بڑا اہلا ہوگا۔ یہ انٹرویو تو صرف امیدواروں کے تسلی کے لیے ہوتا ہے

एस. पी. – अच्छा अब तुम जा सकता है।

मैं – तो फिर एप्वाइंटमेंट लैटर कब तक मेरे नाम इश्यू होगा?

एस. पी. – आज का इन्टरव्यू का बाद अच्छा कन्डीडेट्स का कल या परसों फिर इन्टरव्यू होने को माँगता है।

मैं – तो मेरे नाम दोबारा इन्टरव्यू को भी आज ही ख़त्म कर दीजिये।

एस. पी. – फ़ाज़िल बात मत बोलो। आज दूसरा इन्टरव्यू होने नहीं सकता।

मैं – हुज़ूरे–आली, अस्ल बात ये है कि आज बारह बजे शब के बाद मैं "ओवर–ऐज" हो जाउँगा। आज ठीक शब के ग्यारह बजकर 59 मिनट या ज़्यादा से 60 मिनट तक अन्डर–ऐज हूँ। इस के एक दो मिनट के बाद ओवर–ऐज होने की वजह से पुलिस के काम के लायक़ नहीं रहूँगा। इसलिये वह इन्टरव्यू भी आज ही ख़त्म कर दीजिये।

एस. पी. – तुम्हारी उम्र क्या है? किस उम्र में बी. ए. पास किया है?

मैं – 16 साल की उम्र में बी. ए. पास किया और पास किये दस साल हो गये।

एस. पी. – ऐसा बात है तो 26 बरस का तुम्हारा उम्र होने को माँगता है। तुम दो बरस से "ओवर–ऐज" है।

मैं – सर, स्कूल और कॉलेज की उम्र का कोई ऐतबार नहीं। दूसरी बार के ऐफीडेविट (Affidavit) की रू से आज बारह बजे शब तक अन्डर–ऐज हूँ।

एस. पी. –हमारा पास फाजिल वक्त नहीं। (क्लर्क को मुख़ातिब करके) इन्टरव्यू के वास्ते कितना कन्डीडेट और है?

क्लर्क – हुज़ूर, लगभग और एक सौ कन्डीडेट इन्टरव्यू के इन्तज़ार में खड़े हैं।

एस. पी. – ओ माई गॉड, इतना आदमी का इन्टरव्यू के वास्ते हमारा पास वक़्त नहीं। बाहर जाकर बोल दो इन्टरव्यू ख़त्म हो गया।

क्लर्क – जब इन्टरव्यू कार्ड इश्यू हो चुका है तो बग़ैर मुलाक़ात वापस चले जाने पर अख़बारों में बड़ा हल्ला होगा। ये इन्टरव्यू तो सिर्फ़ उम्मीदवारों की तसल्ली के लिये होता है

ورنہ اپوائمنٹ افسروں کی جس پر مہربانی کی نظر ہوتی ہے اسی کو جگہ ملتی ہے۔ باقی رہا جب حضور کے پاس فاضل وقت نہیں اور اس جھنجھٹ کو آج ہی ختم کر دینا چاہتے ہیں تو بجائے ایک ایک کے پانچ پانچ کنڈیڈیٹ اکٹھے بلا کر ایک دو بات پوچھ مات کر رخصت کر دیجیے۔

ایس۔پی:۔ وِل بابو، تم ٹھیک بولتا ہے۔ اَول رائٹ۔ پانچ پانچ کنڈیڈیٹ کا بیچ (Batch) انٹرویو کا واسطے آنے کو بولو۔

صاحب کے حکم کا مطابق پانچ امیدواروں کو پہلا جتھا پریڈ کے قاعدہ سے "کوئیک مارچ" کرتا ہو صاحب کے سامنے حاضر ہو کر فوجی سلام کرنے کے بعد جب صف بستہ کھڑا ہو گیا تو کلرک کا اشارہ پاتے ہی میں باہر چلا آیا اور دروازہ کے پاس پردہ سے لگ کر اس دل چسپ انٹرویو کا تماشہ دیکھنے لگا۔

صاحب:۔ (پانچوں رنگروٹ سے مخاطب ہو کر) تم سب نے انگریزی کتنا پڑھا ہے؟

پہلا:۔ آئی اے پاس ہوں۔

دوسرا:۔ بی اے کی ڈگری میرے پاس ہے۔

تیسرا:۔ حضور میں بی اے اونر ہوں۔

چوتھا:۔ جناب میں گولڈ میڈلسٹ ہوں۔

پانچواں:۔ میں فرسٹ ڈویژن.......... (یہ جملہ پورا بھی نہ ہونے پایا تھا کہ صاحب نے بگڑ کر کہا) ہمارا پاس پھاجل وکت نہیں۔ تم سب الگ الگ جواب دینے مانگے گا تو ہم کچھ کرنے نہیں سکتا۔ سب کا طرف سے ایک آدمی جواب دینا مانگو۔

سب کی طرف سے ایک نے کہا۔ حضور ہم سب میٹرک پاس ہیں۔

صاحب:۔ تم سب کا عمر کیا ہے؟

ایک:۔ ۲۱ سال

دوسرا:۔ ۲۰ سال

تیسرا:۔ ۲۲ سال

چوتھا:۔ ۲۳ سال

वरना एप्वाइन्टमेंट अफ़सरों की जिस पर मेहरबानी की नज़र होती है उसी को जगह मिलती है। बाक़ी रहा जब हज़ूर के पास फ़ाज़िल वक़्त नहीं और इस झंझट को आज ही ख़त्म कर देना चाहते हैं तो बजाए एक–एक के पाँच–पाँच कन्डीडेट इकट्ठे बुलाकर एक दो बात पूछ मात कर रुख़सत कर दीजिये।

एस. पी. – वेल बाबू , तुम ठीक बोलता है। ऑलराईट। पाँच–पाँच कन्डीडेट का बैच (Batch) इन्टरव्यू के वास्ते आने को बोलो। साहब के हुक्म के मुताबिक़ पाँच उम्मीदवारों का पहला जत्था परेड के क़ायदे से "क्वीक मार्च" करता हुआ साहब के सामने हाज़िर होकर फ़ौजी सलाम करने के बाद जब सफ़–बस्ता[1] खड़ा हो गया तो क्लर्क का इशारा पाते ही मैं बाहर चला आया और दरवाज़े के पास पर्दे से लगकर इस दिलचस्प इन्टरव्यू का तमाशा देखने लगा।

साहब – (पाँचों रंगरुट से मोख़ातिब होकर) तुम सब ने अंग्रेजी कितना पढ़ा है?

पहला – आई. ए. पास हूँ।

दूसरा – बी. ए. की डिग्री मेरे पास है।

तीसरा – हुज़ूर मैं बी. ए. ऑनर हूँ।

चौथा – जनाब मैं गोल्ड मेडलिस्ट हूँ।

पाँचवाँ – मैं फ़र्स्ट डिविज़न .... (ये जुम्ला पूरा भी न होने पाया था कि साहब ने बिगड़ कर कहा) हमारा पास फाजिल वक़्त नहीं। तुम सब अलग–अलग जवाब देने माँगे गा तो हम कुछ करने नहीं सकता। सब का तरफ से एक आदमी जवाब देना माँगो।

साहब – तुम सब का उम्र क्या है?

एक – 21 साल

दूसरा – 20 साल

तीसरा – 22 साल

चौथा – 23 साल

---

1. पंक्तिबद्ध

پانچواں کچھ کہنا چاہتا تھا کہ صاحب نے ڈپٹ کر کہا

صاحب:۔ ہم بول چکا کہ سب کا طرف سے ایک آدمی بولو۔

پانچواں:۔ حضور ہم سب کی عمر "انڈر ایج" ہے۔

صاحب:۔ میٹرک کا آگے تم لوگ اور "اسپیشل کوالیفکشن" رکھتا ہے؟

پہلا:۔ حضور ہم ٹائپ جانتے ہیں۔

دوسرا:۔ ہم شورٹ ہینڈ جانتے ہیں۔

تیسرا:۔ ہم سائیکل ریس میں فرسٹ ہوئے۔

چوتھا:۔ ہم پولس آفس میں عوض میں کام کر چکے ہیں۔

صاحب:۔ (غصہ میں) تم سب ہمارا اوفس کو "فش مارکیٹ" بنا دیا۔ پھر تم سب لوگ الگ الگ بولنے لگا۔ "اسپوکس مین" (Spokes Man) فقط ایک آدمی مانگتا ہے۔

پانچواں:۔ (سب کی طرف سے) اس پوسٹ کے لیے جس کوالیفکشن کی ضرورت ہے اس سے فاضل کوالیفائڈ ہم لوگ ہیں۔

صاحب:۔ اچھا، ہمارا پاس پھاجل وکت (فاضل وقت) نہیں۔ اب تم لوگ جانے سکتا ہے۔

صاحب:۔ (کلرک سے مخاطب ہو کر) ایسا ماقف پانچ پانچ آدمی ہمارا بھیجا کھانے مانگے گا تو ہم پاگل ہو جائے گا۔ تم باہر والا کنڈیڈیٹ سب کو بول دو اب انٹرویو کا جرورت (ضرورت) نہیں ہے۔ سب لوگ اپنا گھر چلا جائے۔

کلرک:۔ حضور فدوی کی اگر رائے مانی جائے تو چند منٹ کے واسطے باہر تشریف لے چل کر کل کنڈیڈیٹ سے اکٹھے صرف دو دو ایک ایک بات پوچھ کر انٹرویو کا کام ختم کر دیا جائے۔ پھر امیدواروں کو شکایت کا موقع نہیں ملے گا کہ بغیر انٹرویو واپس چلا دیا گیا۔

صاحب:۔ "اول رائٹ" باہر سب کو ایک جگہ کھڑا ہونے بولو۔

صاحب کے آرڈر کے مطابق آفس کے باہر سائبان کے نیچے پریڈ کے

पाँचवाँ कुछ कहना चाहता था कि साहब ने डपट कर कहा।

साहब – हम बोल चुका कि सबका तरफ से एक आदमी बोलो।

पाँचवाँ –हुज़ूर हम सब "अन्डर–ऐज" हैं।

साहब – मैट्रिक का आगे तुम लोग और "स्पेशल क्वालीफिकेशन" रखता है?

पहला – हज़ूर हम टाइप जानते हैं।

दूसरा – हम शार्ट–हैन्ड जानते हैं।

तीसरा –हम साइकिल रेस में फ़र्स्ट हुये।

चौथा – हम पुलिस ऑफिस में एवज़ में काम कर चुके हैं।

साहब – (ग़ुस्से में) तुम सब हमारा ऑफ़िस को "फ़िश मार्केट" बना दिया। फिर तुम सब लोग अलग–अलग बोलने लगा। "स्पोक्स मैन" (Spokes Man) फ़क़त एक आदमी माँगता है।

पाँचवाँ –(सब की तरफ से) इस पोस्ट के लिये जिस क्वालीफिकेशन की ज़रुरत है उस से फ़ाज़िल क्वालीफाइड हम लोग हैं।

साहब – अच्छा, हमारा पास फाजिल वक़्त नहीं। अब तुम लोग जाने को सकता है।

साहब – (क्लर्क से मुख़ातिब होकर) ऐसा माफ़िक पाँच–पाँच आदमी हमारा भेजा खाने मांगे गा तो हम पागल हो जायेगा। तुम बाहर वाला कन्डीडेट सबको बोल दो अब इन्टरव्यू का जरुरत नहीं है। सब लोग अपना घर चला जाये।

क्लर्क – हजूर फ़िदवी की अगर राय मानी जाये तो चन्द मिनट के वास्ते बाहर तशरीफ़ ले चलकर कुल कन्डीडेट से इकट्ठे सिर्फ दो–दो एक–एक बात पूछकर इन्टरव्यू का काम ख़त्म कर दिया जाये। फिर उम्मीदवारों को शिकायत का मौक़ा नहीं मिलेगा कि बग़ैर इन्टरव्यू वापस चला दिया गया।

साहब – "ऑलराईट" बाहर सबको एक जगह खड़ा होने बोलो।

साहब के ऑर्डर के मुताबिक़ ऑफ़िस के बाहर साएबान के नीचे परेड के

قاعدے سے سب کے صف بستہ کھڑے ہو جانے کے بعد صاحب آفس سے باہر تشریف لائے۔ سب نے سینہ تان کر فوجی سلام کیا۔ صاحب نے ہر ایک سے نام پوچھا اور کہا تم لوگ اب اپنا اپنا گھر جانے سکتا ہے۔ ایک ویک (Week) کے بعد بحالی کا حکم دے گا۔

صاحب اس زیارتی انٹرویو کو دو منٹ میں ختم کر کے جب پھر آفس میں تشریف لائے تو میں بھی دوبارہ کلرک اور صاحب کی گفتگو سننے کو پھر پردے سے لگ کر کھڑا ہو گیا تا کہ اس دل چسپ انٹرویو کے نتیجہ کا کچھ اندازہ لگ سکے۔ آفس کے اندر پہونچ کر صاحب نے کلرک سے کہا۔

صاحب:۔ وِل بابو، کمشنر صاحب جس کا واسطے ریکومنڈیشن لکھا ہے اور کلکٹر صاحب جس کنڈیڈیٹ کا واسطے سِلپ دیا ہے اور ڈی ایس پی کل جس کا واسطے ہم سے وعدہ لیا ہے، ان سب کا درکھاس (درخواست) ہمارے آفس بکس میں رکھ دو۔ باقی درکھاس (درخواست) کو فائل کرنے سکتا ہے۔

کلرک:۔ مگر ہر درخواست پر اس کے نامنظور یا فائل کرنے کی وجہ کچھ نہ کچھ لکھ دینا مناسب ہے۔ میں درخواست حضور کے سامنے پیش کرتا جاتا ہوں۔ ہر ایک پر جو نوٹ لکھوانا چاہیں فرماتے جائیں، میں لکھ کر فائل کرتا جاؤں۔

صاحب:۔ (گھبرائے ہوئے لہجہ میں) ہمارا پاس وقت نہیں۔ تم اپنا گھر سے نوٹ لکھ کر لائے گا۔ ہم اس پر دستخط کر دے گا۔

کلرک:۔ کچھ تو ہنٹ (Hint) دے دیا جائے کہ پورا کوالیفائیڈ ہونے کا باوجود نامنظور یا فائل کر دینے کے لیے کس قسم کا نوٹ اس پر لکھا جائے۔

صاحب:۔ او، تم اتنا پرانا کلرک اتنا بات بھی نہیں جانتا۔ ہم دو چار بات بتا دیتا ہے۔ اسی مافک لکھنا مانگو۔

(۱) سوال کا جواب میں دیر کرتا ہے۔ ''انٹلی جنٹ'' نہیں ہے
(۲) یہ ہلدی (Healthy) نہیں ہے۔
(۳) بات کرتا ہے تو بیوقوف معلوم ہوتا ہے۔
(۴) رعب داب والا نہیں ہے۔

कायदे से सब के सफ़–बस्ता खड़े हो जाने के बाद साहब ऑफ़िस से बाहर तशरीफ़ लाये। सब ने सीना तानकर फ़ौजी सलाम किया। साहब ने एक से नाम पूछा और कहा तुम लोग अब अपना–अपना घर जाने सकता है। एक वीक (Week) के बाद बहाली का हुक्म देगा।

साहब इस ज़ियारती इन्टरव्यू को दो मिनट में ख़त्म करके जब फिर ऑफिस में तशरीफ़ लाये तो मैं भी दोबारा क्लर्क और साहब की गुफ़तगू सुनने को फिर से परदे से लगकर खड़ा हो गया ताकि इस दिलचस्प इन्टरव्यू के नतीजे का कुछ अन्दाज़ा लग सके। ऑफ़िस के अन्दर पहुँचकर साहब ने क्लर्क से कहा।

साहब – वेल बाबू, कमिश्नर साहब जिसका वास्ते रेकोमेन्डेशन लिखा है और कलेक्टर साहब जिस कन्डीडेट का वास्मे स्लिप दिया है और डी. एस. पी. कल जिसका वास्ते हम से वायदा लिया है, उन सबका दरखास (दरख़्वास्त) हमारे ऑफिस बाक्स में रख दो। बाकी दरखास (दरख़्वास्त) को फाइल करने सकता है।

क्लर्क – मगर हर दरख़ास्त पर इसके नामंज़ूर या फ़ाइल न करने की वजह कुछ न कुछ लिख देना मुनासिब है। मैं दरख़्वास्त हुज़ूर के सामने पेश करता जाता हूँ। हर एक पर जो नोट लिखवाना चाहें फ़रमाते जायें, मैं लिखकर फ़ाइल करता जाऊँ।

साहब – (घबराये हुये लहजे में) हमारा पास वक्त नहीं। तुम अपना घर से नोट लिखकर लायेगा। हम उसपर दस्तख़त कर देगा।

क्लर्क – कुछ तो हिन्ट (Hint) दे दिया जाये कि पूरा क्वालीफाइड होने के बावजूद ना–मंज़ूर कर देने के लिये किस क़िस्म का नोट उस पर लिखा जाये।

साहब – वो, तुम इतना पुराना क्लर्क इतना बात भी नहीं जानता। हम दो–चार बात बता देता है। उसी माफिक लिखना माँगो।

(1) सवाल का जवाब में देर करता है। इन्टेलीजेन्ट नहीं।

(2) ये हेल्दी (Healthy) नहीं है।

(3) बात करता है तो बेवकूफ मालूम होता है।

(4) रोब–दाब वाला नहीं है।

یہ سب کر اپنی درخواست کا جو حشر ہونے والا تھا اس سے مطمئن ہو کر گھر واپس چلا آیا۔ افسوس ''اوراتیج'' ہو جانے کی وجہ سے انٹرویو کے پھر دل چسپ تجربات کا اب موقعہ نہیں، ورنہ عمر بھر اس پُر لطف تماشہ سے لطف اندوز ہوتا رہتا۔

راقم۔

بہر سروس کوشش پیہم سے جی ہارا ہوا
ایک کنڈیڈیٹ انٹرویو کا مارا ہوا

ये सब कर अपनी दरख़्वास्त का जो हश्र होने वाला था उस से मुत्मइन होकर घर वापस चला आया। अफ़सोस "ओवर–ऐज" हो जाने की वजह से इन्टरव्यू के फिर दिलचस्प तजर्बात का अब मौक़ा नहीं, वरना उम्र भर इस पुरलुत्फ़ तमाशे से लुत्फ़–अन्दोज़ होता रहता।

राक़िम[1] –

बहरे–सर्विस–कोशिशे पैहम से जी हारा हुआ
एक कन्डीडेट इन्टरव्यू का मारा हुआ

---

1. लेखक (लिखने वाला)

سید عابد حسین

معدے کا مریض

پہلا منظر

(حکیم صاحب کا مطب، فرش بچھا ہے، مسند رکھا ہے، صدر خالی ہے۔
حکیم صاحب کا شاگرد مسند کا کونا دبائے بیٹھا قلم بنا رہا ہے ایک مریض داخل ہوتا ہے)

مریض:۔ آداب عرض ہے حکیم صاحب۔

شاگرد:۔ آیئے آیئے حکیم محلسرا میں ہیں، ابھی تشریف لاتے ہیں۔

مریض:۔ آپ بھی مریض ہیں، میں سمجھا حکیم صاحب ہیں۔

شاگرد:۔ آپ کی پہلی تشخیص بھی غلط اور دوسری بھی۔ میں طب کا طالب علم ہوں ابھی تکمیل نہیں کی ہے۔ حکیم صاحب کے مطب میں بیٹھتا ہوں۔

مریض:۔ تو یہ کہیے آپ نیم حکیم ہیں۔

شاگرد:۔ آپ کا کام تمام کرنے کے لیے کافی ہوں۔ کہیے کیا شکایت ہے؟

مریض:۔ ایک شکایت ہو تو کہوں میں تو سراپا شکایت ہوں۔

پر ہوں شکوے سے میں یوں راگ سے جیسے باجا
اک ذرا چھیڑیے پھر دیکھیے کیا ہوتا ہے

मेदे का मरीज़

पहला मंज़र

(हकीम साहब का मतब, फ़र्श बिछा है, मसनद रखा है, सदर ख़ाली है। हकीम साहब का शागिर्द मसनद का कोना दबाये बैठा क़लम बना रहा है एक मरीज़ दाख़िल होता है)

मरीज़ : आदाब अर्ज़ है हकीम साहब।

शागिर्द : आइये आइये हकीम महलसरा में हैं, अभी तश्रीफ़ लाते हैं।

मरीज़ : आप भी मरीज़ हैं, मैं समझा हकीम साहब हैं।

शागिर्द : आपकी पहली तश्ख़ीस1 भी ग़लत और दूसरी भी। मैं तिब का तालिब–इल्म हूँ अभी तकमील नहीं की है। हकीम साहब के मतब में बैठता हूँ।

मरीज़ : तो यह कहिये आप नीम हकीम हैं।

शागिर्द : आपका काम तमाम करने के लिए काफ़ी हूँ। कहिये क्या शिकायत है?

मरीज़ : एक शिकायत हो तो कहूँ मैं तो सरापा शिकायत हूँ –

पुर हूँ शिकवे से मैं यूँ राग से जैसे बाजा
इक ज़रा छेड़िए फिर देखिए क्या होता है

---

1. बीमारी की पहचान

شاگرد:۔ تو حضرت معاف کیجیے، حکیم صاحب خود ہی چھیڑیں گے، آپ کا مضراب انھیں کے پاس ہے۔

مریض:۔ (گھبرا کر) مضراب کیسی؟ یہ تو ضَرَبَ یَضْرِبُ کا صیغہ معلوم ہوتا ہے۔ مارا اس نے مارتا ہے اور مارے گا۔

شاگرد:۔ جی بس ان کی انگلیاں مضراب ہیں۔ جہاں انھوں نے نبض کے تاروں کو چھیڑا آپ کا باجا خود بہ خود بجنے لگے گا۔ لیجے حکیم صاحب آگئے۔

حکیم صاحب:۔ اجی تشریف لائیے۔ میں آپ کی نبض دیکھتا ہوں۔ آپ کا حال؟

مریض:۔ کیا عرض کروں حکیم صاحب۔ عجب دردیست در معدہ۔

حکیم صاحب:۔ نثر میں ارشاد ہو۔

مریض:۔ ارشاد کیا خاک ہو۔ آپ نے تو ہتّے پر روک دیا۔

حکیم صاحب:۔ تفصیلِ طول کو ترک کیجیے، مختصر فرمائیے۔

مریض:۔ قبلہ ابھی میں نے کون سی مطوّل بیان کیا ہے جو آپ مختصر کی فرمائش کرتے ہیں۔ غضب خدا کا برسوں کی بیماری اور آپ چاہتے ہیں کہ چند لمحوں میں اس کا حال بیان کر دوں۔ اچھا اب آپ ہی پر چھوڑتا ہوں۔ جو کہیے وہ کہہ دوں۔

حکیم صاحب:۔ معدہ کا حال۔ آنتوں کا فعل۔ اشتہا، اجابت۔

مریض:۔ اللہ رے اختصار! بہت خوب! سنیے معدہ کا حال ناگفتہ بہ، آنتوں کا قول و فعل دونوں ناقابلِ اعتبار۔ اشتہا کا بھوکا ہوں۔ اجابت کی دعا کرتا ہوں۔

حکیم صاحب:۔ فمِ معدہ میں کچھ درد کی خلش بھی ہے؟

مریض:۔ فمِ معدہ میں درد کی خلش، حضور فمِ معدہ میں قلبِ معدہ میں روحِ معدہ میں درد کی خلش نہیں بلکہ درد کا سیلاب ہے۔ درد کا طوفان ہے۔

درد ہے یہ یا کوئی طوفان ہے
ہم تو اس معدے کے ہاتھوں مر چلے

حکیم صاحب:۔ (شاگرد سے مخاطب ہو کر) لکھو (نسخہ لکھواتے ہیں جس کے الفاظ سننے

शागिर्द : तो हज़रत माफ़ कीजिये, हकीम साहब खुद ही छेड़ेंगे, आप का मिज़राब[1] उन्हीं के पास है।

मरीज़ : (घबरा कर) मिज़राब कैसी? यह तो ज़रब यज़रब का सेगा[2] मालूम होता है। मारा उसने, मारता है और मारेगा।

शागिर्द : जी बस उनकी उंगलिया मिज़राब हैं। जहाँ उन्होंने नब्ज़ के तारों को छेड़ा आपका बाजा खुदबखुद बजने लगेगा। लीजिये हकीम साहब आ गये।

हकीम साहब: अजी तशरीफ़ लाइये। मैं आपकी नब्ज़ देखता हूँ। आपका हाल?

मरीज़ : क्या अर्ज़ करूँ हकीम साहब। अजब दर्देस्त दर मेदा[3]।

हकीम साहब : नस्र[4] में इरशाद हो।

मरीज़ : इरशाद क्या ख़ाक हो। आपने तो हत्त[5] पर रोक दिया।

हकीम साहब : तफ़सीले तूल को तर्क कीजिए, मुख़्तसर फ़रमाइये।

मरीज़ : किब्ला अभी मैं ने कौन सी मोतव्वल[6] बयान किया है जो आप मुख़्तसर की फ़रमाइश करते हैं। ग़ज़ब खुदा का बरसों की बीमारी और आप चाहते हैं कि चंद लम्हों में इसका हाल बयान कर दूँ। अच्छा अब आप ही पर छोड़ता हूँ। जो कहिए वह कह दूँ।

हकीम साहब : मेदे का हाल, आँतों का फ़ेल, इश्तहा, इजाबत।

मरीज़ : अल्लह रे इख़्तसार! बहुत ख़ूब! सुनिये मेदे का हाल नागुफ़्ता बेह[7], आँतों का क़ौल व फ़ेल दोनों नाक़ाबिले एतबार। इश्तहा का भूका हूँ। इजाबत की दुआ करता हूँ।

हकीम साहब : फ़मे-मेदा[8] में कुछ दर्द की ख़लिश भी है?

मरीज़ : फ़मे मेदा में दर्द की ख़लिश, हुज़ूर फ़मे-मेदा में, क़ल्बे-मेदा में, रुहे-मेदा में दर्द की ख़लिश नहीं बल्कि दर्द का सैलाब है। दर्द का तूफ़ान है –

दर्द है यह या कोई तूफ़ान है
हम तो इस मेदे के हाथों मर चले

हकीम साहब : (शागिर्द से मुख़ातिब होकर) लिखो (नुस्ख़ा लिखवाते हैं जिसके अल्फ़ाज़ सुनने वालों की समझ में नहीं आते। शागिर्द लिखता है)

---

1. सितार बजाने वाला आला 2. व्याकरणीय रुप 3. मेदे में अजीब दर्द है
4. गद्य 5. आरम्भ 6. विस्तार 7. जो बयान के क़ाबिल न हो
8. बड़ आँत का मुँह

والوں کی سمجھ میں نہیں آتے۔ شاگرد لکھتا ہے)

مریض:۔ لیجیے اب وظیفہ ہونے لگا۔ خدا جانے نسخہ کی نوبت کب آئے گی۔

شاگرد:۔ (مریض سے) یہ نسخہ لیجیے رات کو بھگو دیا کیجیے اور صبح کو نتھار کے پی لیا کیجیے۔

مریض:۔ (نسخہ دیکھ کر) افوہ کوئی تیس چالیس دوائیں ہوں گی۔ دوسرے سے اختصار کی تاکید اور اپنی طرف سے یہ طول! کیوں جناب اس نسخہ کی کیا قیمت ہوگی؟۔

شاگرد:۔ جو دواخانہ نکڑ پر ہے وہاں چار آنہ میں بندھ جائے گا۔ اور جگہ زیادہ دام لیں گے۔

مریض:۔ تو لگے ہاتھوں یہ بھی بتا دیجیے کہ فائدہ کتنے دنوں میں ہوگا؟

شاگرد:۔ یہی کوئی تین چار برس میں۔

مریض:۔ بجا ہے۔ ذرا مجھے قلم دوات کاغذ عنایت ہو۔

حکیم صاحب:۔ کیوں خیریت ہے۔

شاگرد:۔ شاید کوئی ناگفتہ بہ حال لکھنا ہوگا۔

مریض:۔ (حساب لگاتا ہے) چار آنہ روز، سال تین سو ساٹھ دن کا، مان لیجیے چار دن کا ایک روپیہ ہوگا، تین سو ساٹھ کو چار سے تقسیم کیا، نہیں یہ کیوں کروں، پھر چار سے ضرب دینا ہوگا، تین سو ساٹھ روپے ہو گئے (حکیم صاحب سے) حضرت! بقراطِ زماں! میری جاں بخشی کیجیے میں ایسے علاج سے باز آیا۔ تین سو ساٹھ کس کے گھر سے لاؤں گا۔

حکیم صاحب:۔ لاحول ولا قوۃ انہوں نے مزاحاً چار برس کہہ دیئے۔ آپ نے باور کر لیا۔ آپ چندے اس نسخے کو استعمال کیجیے۔

مریض:۔ جی ایسے چندے میں نے بہت دیکھے ہیں۔ میری ساری عمر آپ ہی حضرات کے علاج میں گذری ہے (اٹھ کر) بس اب اجازت ہو (چلا جاتا ہے)

شاگرد:۔ خس کم جہاں پاک (پردہ گرتا ہے)

मरीज : लीजिये अब वज़ीफ़ा होने लगा। ख़ुदा जाने नुस्ख़े की नौबत कब आयेगी।

शागिर्द : (मरीज़ से) यह नुस्ख़ा लीजिये रात को भिगो दिया कीजिये और सुबह को तड़के पी लिया कीजिये।

मरीज़ : (नुस्ख़ा देखकर) उफ़्फ़ोह, कोई तीस चालीस दवायें होंगी। दूसरे से इख़्तसार की ताकीद और अपनी तरफ़ से तूल! क्यों जनाब इस नुस्ख़े की क्या क़ीमत होगी?

शागिर्द : जो दवाख़ाना नुक्कड़ पर है वहाँ चार आने में बंध जायेगा। और जगह ज्यादा दाम लेंगे।

मरीज़ : तो लगे हाथों यह भी बता दीजिये कि फ़ायदा कितने दिनों में होगा?

शागिर्द : यही कोई तीन चार बरस में।

मरीज़ : बजा है। ज़रा मुझे क़लम, दवात, काग़ज़ इनायत हो।

हकीम साहब : क्यों ख़ैरियत है।

शागिर्द : शायद कोई नागुफ़्ता बेह हाल लिखना होगा।

मरीज़ : (हिसाब लगाता है) चार आने रोज़, साल तीन सौ साठ दिन का, मान लीजिये चार दिन का एक रुपया होगा, तीन सौ साठ को चार से तक़्सीम[1] किया, नहीं यह क्यों करूँ, फिर चार से ज़रब[2] देना होगा, तीन सौ साठ रुपये हो गये (हकीम साहब से) हज़रत! बोक़राते-ज़माँ! मेरी जाँ बख़्शी कीजिये, मैं ऐसे इलाज से बाज़ आया। तीन सौ साठ किस के घर से लाऊँगा।

हकीम साहब : लाहौल-वेला-कूव्वत। इन्होंने मिज़ाहन चार बरस कह दिये। आपने बावर कर लिया। आप चन्दे इस नुस्ख़े को इस्तेमाल कीजिये।

मरीज़ : जी ऐसे चन्दे मैंने बहुत देखे हैं। मेरी सारी उम्र आप ही हज़रात के इलाज में गुज़री है (उठ कर) बस अब इजाज़त हो (चला जाता है)

शागिर्द : ख़स कम जहाँ पाक (पर्दा गिरता है)

---

1. भाग 2. गुणा

دوسرا منظر

(بنگالی ڈاکٹر کا مطب میز کرسی لگی ہے۔ صدر میں ڈاکٹر صاحب بیٹھے ہیں اوران کے قریب ہمارے مریض)۔

ڈاکٹر:۔ ویل مائی ڈیر سر، واٹ کین آئی ڈو فار یو ؟

مریض:۔ آپ تو نسخہ بتانے لگے، پہلے حال تو سن لیجیے۔

ڈاکٹر:۔ اوہو! آپ انگلش نہیں جانتا۔ آپ کو کیا ہو گیا؟

مریض:۔ مجھے کچھ نہیں ہوا۔ آپ اپنے دماغ کا علاج کیجیے۔

ڈاکٹر:۔ آپ کو کیا مرج؟

مریض:۔ پہلے یہ بتائیے کہ آپ بھی حکیم صاحب کی طرح اختصار پسند طول نویس ہیں؟

ڈاکٹر:۔ کیا کہا۔ ہم نہیں سمجھا؟

مریض:۔ پورا حال کہوں یا تار کی زبان میں گفتگو کروں۔

ڈاکٹر:۔ بہوت بات نہیں کام کا بات۔

مریض:۔ بہت اچھا کام کی بات سنیے۔ معدہ خراب، سینے میں جلن، پیٹ میں ریاح قبض۔

ڈاکٹر:۔ درد ہوتی ہے؟

مریض:۔ ہوتی نہیں ہوتا ہے (پیٹ پر ہاتھ رکھ کر)

؎ اک ہوک یہاں پر اٹھتی ہے اک درد یہاں پر ہوتا ہے
ہم رات کو اٹھ کر روتے ہیں جب سارا علم سوتا ہے

ڈاکٹر:۔ آپ روئے نہیں اچھا ہو جائے گا۔ آپ اسٹول اگزامن کرالیا۔

مریض:۔ کیا کہا؟ اسٹول کیا

ڈاکٹر:۔ فجلہ ! فجلہ!

مریض:۔ ہاں فضلہ پھر؟

ڈاکٹر:۔ موائینہ کرایا؟

مریض:۔ فضلہ کا بھی معائنہ ہوتا ہے؟ یہ آج ہی سنا اس چودھویں صدی جو کچھ نہ ہو کم

दूसरा मंज़र

(बंगाली डाक्टर का मतब मेज़ कुर्सी लगी है। सदर में डाक्टर साहब बैठे हैं और उनके क़रीब हमारे मरीज़)।

डाक्टर : वेल माई डियर सर, व्हाट कैन आई डू फ़ॉर यू?

मरीज़ : आप तो नुस्ख़ा बताने लगे, पहले हाल तो सुन लीजिये।

डाक्टर : ओहो! आप इंगलिश नहीं जानता। आपको क्या हो गया है?

मरीज़ : मुझे कुछ नहीं हुआ। आप अपने दिमाग़ का इलाज कीजिये।

डाक्टर : आपको क्या मर्ज़ है?

मरीज़ : पहले यह बताइये कि आप भी हकीम साहब की तरह इख़्तसार[1] पसंद, तूल[2] नवीस हैं?

डाक्टर : क्या कहा। हम नहीं समझा?

मरीज़ : पूरा हाल कहूँ या तार की ज़बान में गुफ़्तगू करूँ।

डाक्टर : बहुत बात नहीं, काम का बात।

मरीज़ : बहुत अच्छा काम की बात सुनिये। मेदा ख़राब है, सीने में जलन, पेट में रियाह, क़ब्ज़।

डाक्टर : दर्द होती है?

मरीज़ : होती नहीं होता है (पेट पर हाथ रखकर)

इक हूक यहाँ पर उठती है इक दर्द यहाँ पर होता है
हम रात को उठकर रोते हैं जब सारा आलम सोता है

डाक्टर : आप रोयें नहीं, अच्छा हो जायेगा। आप स्टूल इगज़ामिन करा लिया।

मरीज़ : क्या कहा? स्टूल क्या

डाक्टर : फ़ुज़ला! फ़ुज़ला

मरीज़ : हाँ फ़ुज़ला फिर?

डाक्टर : मुआइना कराया?

मरीज़ : फ़ुज़ले का भी मुआइना होता है? यह आज ही सुना। इस चौदहवीं सदी में जो कुछ न हो कम

---

1. संक्षेप 2. विस्तार

ہے۔ جی نہیں میں نے معائنہ نہیں کرایا اور کراؤں کیسے مجھے تو ہمیشہ قبض رہتا ہے۔

ڈاکٹر:۔ ہم آپ کا پیٹ دیکھے گا۔ آپ چل کر میج پر لیٹ جائے گا۔

مریض:۔ پہلے یہ بتا دیجیے کی نسخے کی کیا قیمت ہوگی۔

ڈاکٹر:۔ پہلے ہم دیکھ لیں پھر بتا سکتا۔

مریض:۔ جی نہیں پہلے آپ بتا دیجیے پھر ہم دکھا شکتا۔

ڈاکٹر:۔ آپ کیا آدمی ہے؟ کھیر آپ کا کھوشی۔ دوائی کا اسٹیمٹ دو روپیہ روج۔

مریض:۔ فائدہ کتنے دنوں میں ہوگا۔

ڈاکٹر:۔ او! معدے کے مرج کو فائدہ بہت دنوں میں ہوتا ہے

مریض:۔ آخر ؟

ڈکٹر:۔ کم سے کم چھ مہینا۔

مریض:۔ چھ کا صفر ہی صفر چھ تئے اٹھارہ، ایک سو اسی، اٹھارہ دونی چھتیس صفر، تین سو ساٹھ لیجیے، وہی تین سو ساٹھ ہو گئے۔

ڈاکٹر:۔ او! آپ کو دورہ ہوا، ہم دوائی دیتا۔

مریض:۔ جی مجھے دورہ وورہ کچھ نہیں ہوا، ہاں قلب پر ضرور صدمہ پہنچا ہے۔ کیوں حضرت اس سے مہنگا علاج کوئی اور نہیں ہے۔ یہ تو آپ نے بہت سستا نسخہ بتا دیا۔

ڈاکٹر:۔ اور آپ مہنگا علاج چاہتا ہے۔ آپ جرمنی چلا جائے واٹرنگ پیلس۔

مریض:۔ کیسی پیلس؟

ڈاکٹر:۔ چشمے کا جگہ۔ گندھک کے چشمے کا۔

مریض:۔ تو اپنے گھر کے کنوئیں کا پانی کیوں نہ پئیں۔ رنگ بالکل گندھک کا ہے۔ بُو اور مزہ اس سے بھی بڑھ کر، کیوں صاحب اس گندھک کے علاج میں کتنا خرچ ہوگا۔

ڈاکٹر:۔ ہم کو ٹھیک مالُم نہیں، دس ہجار، بیس ہجار۔

है। जी नहीं, मैं ने मुआइना नहीं कराया और कराऊँ कैसे मुझे तो हमेशा क़ब्ज़ रहता है।

डाक्टर : हम आपका पेट देखेगा। आप चलकर मेज पर लेट जायेगा।

मरीज़ : पहले यह बता दीजिये कि नुस्ख़े की क्या क़ीमत होगी।

डाक्टर : पहले हम देख लें फिर बटा सकटा है।

मरीज़ : जी नहीं पहले आप बता दीजिये फिर हम दिखा सकटा।

डाक्टर : आप क्या आदमी है? खैर आपका खोशी। दवाई का स्टीमेट दो रुपये रोज।

मरीज़ : फ़ायदा कितने दिनों में होगा।

डाक्टर : ओ! मेदे के मर्ज को फ़ायदा बहुत दिनों में होता है।

मरीज़ : आख़िर?

डाक्टर : कम से कम छः महीना।

मरीज़ : छः का सिफ़र ही सिफ़र, छः तई अट्ठारह, एक सौ अस्सी, अट्ठारह दूनी छत्तीस सिफ़र, तीन सौ साठ लीजिये, वही तीन सौ साठ हो गये।

डाक्टर : ओ! आपको दौरा हुआ, हम दवाई देता है।

मरीज़ : जी मुझे दौरा वौरा कुछ नहीं हुआ, हाँ क़ल्ब पर ज़रुर सदमा पहुँचा है। क्यों हज़रत इस से महंगा इलाज कोई और नहीं है। यह तो आप ने बहुत सस्ता नुस्ख़ा बता दिया।

डाक्टर : और आप महंगा इलाज चाहता है। आप जर्मनी चला जाये, वाटरिंग प्लेस।

मरीज़ : कैसी प्लेस?

डाक्टर : चश्मे का जगह। गंधक के चश्मे का।

मरीज़ : तो अपने घर के कुएँ का पानी क्यों न पियें। रंग बिल्कुल गंधक का है। बू और मज़ा उससे भी बढ़कर, क्यों साहब इस गंधक के इलाज में कितना ख़र्च होगा।

डाक्टर : हम को टीक मालुम नहीं, दस हजार, बीस हजार।

مریض:۔ دس ہزار، بیس ہزار، چالیس ہزار، آپ کا کیا جاتا ہے۔ پہاڑا پڑھتے چلے جایئے۔ حضرت میں نے توبہ کی، اب علاج کا نام نہیں لوں گا۔ فیس تو آپ کی نذر کر ہی چکا۔ اب تک ہضم بھی ہوگئی ہوگی اب رخصت چاہتا ہوں۔

ڈاکٹر:۔ آپ کھپا ہوگیا ہمارا کون کشور!

مریض:۔ جی نہیں آپ کا کوئی قصور نہیں، میری تقدیر کا قصور ہے، نہ یہ کمبخت مرض ہوتا، نہ یہ پہاڑے سننے پڑتے۔ بہت اچھا۔ آداب عرض ہو۔

ڈاکٹر:۔ آدابرج (I did not know he was stark mad)

تیسرا منظر

(مریض اپنے دوست بابو جی کے گھر جاتا ہے)

مریض:۔ آداب عرض ہے بابو جی۔

بابوصاحب:۔ آیئے آیئے ! مدت کے بعد زیارت نصیب ہوئی، آپ تو عید کا چاند ہو گئے۔

مریض:۔ جی عید کا چاند نہیں، چاند ماری کا نشانہ بن گیا ہوں۔ جو حکیم ہے جو ڈاکٹر ہے مجھی پر فیر کرتا ہے اور کوئی فیر تین سو ساٹھ سے کم کا نہیں ہوتا۔

بابوصاحب:۔ اچھا تو وہ آپ کے ہاضمہ کی شکایت اب تک چلی جا رہی ہے۔

مریض:۔ اب تک چلی جا رہی ہے۔ یہ نہیں کہتے دن دونی رات چوگنی ہوتی جاتی ہے۔

مریضِ معدہ پر لعنت خدا کی
مرض بڑھتا گیا جوں جوں دوا کی

بابوصاحب:۔ حضرت جب تک آپ حکیموں، ڈاکٹروں کے پھیر میں پڑے رہیں گے یہ سلسلہ بڑھتا ہی چلا جائے گا۔ میں بھی مدتوں یہ پاپڑ بیل چکا ہوں، آپ میرے کہنے پر چلیں تو مہینہ بھر میں اچھے ہو جائیں۔

मरीज़ : दस हज़ार, बीस हज़ार, चालीस हज़ार, आपका क्या जाता है। पहाड़ा पढ़ते चले जाइये। हज़रत मैंने तौबा की, अब इलाज का नाम नहीं लूँगा। फीस तो आपकी नज़्र कर ही चुका। अब तक हज़्म भी हो गई होगी अब रुख़्सत चाहता हूँ।

डाक्टर : आप खपा हो गया हमारा कौन कशूर!

मरीज़ : जी नहीं आपका कोई कुसूर नहीं, मेरी तक़्दीर का कुसूर है, न यह कमबख़्त मर्ज़ होता, न यह पहाड़े सुनने पड़ते। बहुत अच्छा। आदाब अर्ज़ हो।

डाक्टर : आदाबर्ज (I did not know he was stark mad)

तीसरा मंज़र

(मरीज़ अपने दोस्त बाबूजी के घर जाता है)

मरीज़ : आदाब अर्ज़ है बाबूजी।

बाबू साहब : आइये आइये! मुद्दत के बाद ज़ियारत नसीब हुई, आप तो ईद का चाँद हो गये।

मरीज़ : जी ईद का चाँद नहीं, चाँदमारी का निशाना बन गया हूँ। जो हकीम है, जो डाक्टर है मुझी पर फ़ायर करता है और कोई फ़ायर तीन सौ साठ से कम का नहीं होता।

बाबू साहब : अच्छा तो वह आपके हाज़मे की शिकायत अब तक चली जा रही है।

मरीज़ : अब तक चली जा रही है। यह नहीं कहते दिन दूनी रात चौगुनी होती जाती है –

मरीज़े–मेदे पर लॉनत ख़ुदा की
मर्ज़ बढ़ता गया जूँ जूँ दवा की

बाबू साहब : हज़रत जब तक आप हकीमों, डाक्टरों के फेर में पड़े रहेंगे यह सिलसिला बढ़ता ही चला जायेगा। मैं भी मुद्दतों यह पापड़ बेल चुका हूँ, आप मेरे कहने पर चलें तो महीने भर में अच्छे हो जायेंगे।

مریض:۔ کیا کوئی عطائی نسخہ ہاتھ لگ گیا ہے؟ بتائیے خدا کے لیے جلدی بتائیے مگر یہ بھی وہی تین سو ساٹھ کا نسخہ !

بابو صاحب:۔ عطائی نسخہ ! توبہ کیجیے! کیا آپ نے مجھے ایسا جاہل سمجھا ہے اور یہ تین سو ساٹھ کی آپ نے کیا رٹ لگائی ہے۔

مریض:۔ اجی جو بتاتا ہے ایسا ہی علاج بتاتا ہے جس میں تین سو ساٹھ روپئے خرچ ہوں اور وہ بنگالی ڈاکٹر تو دس ہزار کا پہاڑہ پڑھ رہا تھا۔

بابو صاحب:۔ جی نہیں جو تدبیر میں آپ کو بتاؤں گا اس میں سیکڑوں ہزاروں کا کیا ذکر ہے، ڈھیلے کا بھی خرچ نہیں بلکہ آپ کو کچھ بچت ہو جائے گی۔

مریض:۔ ارے بھائی تو کوئی تعویذ ہے، گنڈا ہے، کیا ہے؟ تم تو پہیلیاں بجھواتے ہو۔

بابو صاحب:۔ تعویذ گنڈے کو میرا دور سے سلام ہے۔ میں آپ کو خالص سائنٹیفک علاج بتاتا ہوں۔

مریض:۔ یہ سائن ٹفی کون بزرگ ہیں، کہاں رہتے ہیں؟

بابو صاحب:۔ سائنٹیفک یعنی سائنس کے مطابق عملی۔

مریض:۔ اور حکیم ڈاکٹر علم سے نہیں تو کیا جہل سے علاج کرتے ہیں؟ آخر وہ آپ کا علمی، اخلاقی، معاشرتی نسخہ ہے کیا ؟ کچھ کہیے تو سہی۔

بابو صاحب:۔ آپ کوئی ورزش کرتے ہیں؟

مریض:۔ ورزش ! بہت خوب! اب معلوم ہوا آپ کا علمی علاج۔ یہاں اٹھنا بیٹھنا دوبھر ہے اور آپ ورزش لیے پھرتے ہیں۔

بابو صاحب:۔ اٹھنا بیٹھنا اسی لیے دوبھر ہے کہ آپ نے اپنے جسم کو کاہل بنا رکھا ہے۔ زہریلا مادہ آپ کی رگوں میں پھیل گیا ہے اور اسی نے بدن کو بوجھل کر دیا ہے۔

مریض:۔ آپ خود زہر اگل رہے ہیں، غضب خدا کا میں کاہل ہوں دن بھر دفتر میں چکی پیستا ہوں۔ صبح، شام بچوں کو پڑھاتا ہوں، رات کو گھر کا حساب لکھتا ہوں اسی کو کاہلی کہتے ہیں۔

मरीज़ : क्या कोई अताई नुस्ख़ा हाथ लग गया है? बताइये खुदा के लिए जल्दी बताइये मगर यह भी वही तीन सौ साठ का नुस्ख़ा!

बाबू साहब : अताई नुस्ख़ा! तौबा कीजिये! क्या आप ने मुझे ऐसा जाहिल समझा है और यह तीन सौ साठ की आपने क्या रट लगाई है।

मरीज : अजी जो बताता है ऐसा ही इलाज बताता है जिस में तीन सौ साठ रुपये ख़र्च हों और वह बंगाली डाक्टर तो दस हज़ार का पहाड़ा पढ़ रहा था।

बाबू साहब : जी नहीं जो तदबीर मैं आपको बताऊँगा उसमें सैंकड़ों हज़ारों का क्या ज़िक्र, धेले का भी ख़र्च नहीं बल्कि आपको कुछ बचत हो जायेगी।

मरीज़ : अरे भाई तो कोई तावीज़ है, गण्डा है, क्या है? तुम तो पहेलियाँ बुझवाते हो।

बाबू साहब : तावीज़ गण्डे को मेरा दूर से सलाम है। मैं आपको ख़ालिस साइंटिफ़िक इलाज बताता हूँ।

मरीज़ : यह साइंटिफ़ी कौन बुज़ुर्ग हैं, कहाँ रहते हैं?

बाबू साहब : साइंटिफ़िक यानी साइंस के मुताबिक़, अमली।

मरीज़ : और हकीम डाक्टर इल्म से नहीं तो क्या जेह्ल से इलाज करते हैं? आख़िर वह आपका इल्मी, अख़लाक़ी, मोआशरती नुस्ख़ा है क्या? कुछ कहिये तो सही।

बाबू साहब : आप कोई वर्ज़िश करते हैं?

मरीज़ : वर्ज़िश! बहुत ख़ूब! अब मालूम हुआ आपका इल्मी इलाज। यहाँ उठना बैठना दूभर है और आप वर्ज़िश लिये फिरते हैं।

बाबू साहब : उठना बैठना इसीलिये दूभर है कि आपने अपने जिस्म को काहिल बना रखा है। ज़हरीला माद्दा[1] आपकी रगों में फैल गया है और उसी ने बदन को बोझल कर दिया है।

मरीज़ : आप ख़ुद ज़हर उगल रहे हैं, ग़ज़ब ख़ुदा का मैं काहिल हूँ दिन भर दफ़्तर में चक्की पीसता हूँ। सुबह शाम बच्चों को पढ़ाता हूँ, रात को घर का हिसाब लिखता हूँ इसी को काहिली कहते हैं।

---

1. पदार्थ

بابو صاحب:۔ بھائی صاحب آپ بہت کام کرتے ہیں مگر یہ سب دماغی کام ہے۔ جسم آپ کا معطل رہتا ہے۔ پھر ہاضمہ ٹھیک ہو تو کیسے ہو؟ اور کچھ نہیں تو صبح و شام دو چار میل ٹہلا کیجیے۔

مریض:۔ اور لیجیے، اب آپ ٹہلانے لگے۔ یہاں مرنے کی بھی فرصت نہیں ٹہلنے کا وقت کہاں سے آئے۔

بابو صاحب:۔ دوڑا کیجیے اس میں کم وقت لگے گا۔

مریض:۔ اے سبحان اللہ، میں چالیس برس کا بوڑھا، چھ بچوں کا باپ، ہرن کی طرح چوکڑیاں بھرتا پھروں، کوئی دیکھے تو سمجھے پاگل ہو گیا ہے۔

بابو صاحب:۔ بندۂ خدا تم گھر پر ہی ورزش کر لیا کرو۔ مُلر کی اکسر سائز صرف پندرہ منٹ کا کام ہے۔

مریض:۔ کس کی کیا؟ یہ تم کیا بک رہے ہو۔

بابو صاحب:۔ مُلر ایک شخص کا نام ہے۔ اس نے ورزش کا سائنٹیفک طریقہ ایجاد کیا ہے۔ میں آپ کو ابھی سکھا دوں گا۔

مریض:۔ پھر وہی سائن ٹفی، آخر اس مولر کی ورزش میں کون سا سرخاب کا پر لگا ہے، جوانی میں ہم دس دس ڈنڑ بیس بیس بیٹھکیں روز لگاتے تھے اس پر بھی چوپٹ ہو گیا۔

بابو صاحب:۔ جوانی کی بیٹھکوں سے بُوھاپے کا کھانا کیسے ہضم ہو سکتا ہے اور ڈنڑ اور بیٹھک کوئی سائنٹیفک ورزش بھی نہیں۔ اچھا خیر ورزش کو اس وقت جانے دیجیے۔

مریض:۔ اس وقت جانے دیجیے، نہیں بلکہ ہمیشہ کے لیے جہنم میں ڈالیے۔ یہ آپ کے سائن ٹفی اور مولر ہی کو مبارک رہے۔

بابو صاحب:۔ اب یہ بتائیے آپ کھاتے کیا ہیں۔

مریض:۔ کھاتا کیا ہوں خاک پتھر۔

بابو صاحب:۔ آ کر کچھ آپ کی غذا بھی ہے؟

مریض:۔ وہی جو بھلے آدمیوں کی ہوتی ہے، دال روٹی گوشت۔

बाबू साहब :	भाई साहब आप बहुत काम करते हैं मगर यह सब दिमाग़ी काम है। जिस्म आपका मुअत्तल[1] रहता है। फिर हाज़मा ठीक हो तो कैसे हो? और कुछ नहीं तो सुबह शाम दो चार मील टहला कीजिये।
मरीज़ :	और लीजिये, अब आप टहलाने लगे। यहाँ मरने की भी फ़ुर्सत नहीं टहलने का वक़्त कहाँ से आये।
बाबू साहब :	दौड़ा कीजिये, उस में कम वक़्त लगेगा।
मरीज़ :	ऐ सुब्हान अल्लाह, मैं चालीस बरस का बूढ़ा, छः बच्चों का बाप, हिरन की तरह चौकड़ियाँ भरता फिरूँ, कोई देखे तो समझे पागल हो गया है।
बाबू साहब :	बन्दए–खुदा तुम घर पर ही वर्ज़िश कर लिया करो। मुलर की एक्सरसाइज़ सिर्फ़ पंदरह मिनट का काम है।
मरीज़ :	किस की क्या? यह तुम क्या बक रहे हो।
बाबू साहब :	मुलर एक शख़्स का नाम है। उसने वर्ज़िश का साइंटिफ़िक तरीक़ा इजाद किया है। मैं आपको अभी सिखा दूँगा।
मरीज़ :	फिर वही साइंटिफ़ि, आख़िर इस मुलर की वर्ज़िश में कौन सा सुरख़ाब का पर लगा है, जवानी में हम दस–दस डण्ड, बीस–बीस बैठकें रोज़ लगाते थे उस पर भी चौपट हो गया।
बाबू साहब :	जवानी में बैठकों से बुढ़ापे का खाना कैसे हज़म हो सकता है और डण्ड और बैठक कोई साइंटिफ़िक वर्ज़िश भी नहीं। अच्छा ख़ैर वर्ज़िश को इस वक़्त जाने दीजिये।
मरीज़ :	इस वक़्त जाने दीजिये, नहीं बल्कि हमेशा के लिए जहन्नुम मे डालिये। यह आपके साइंटिफ़ी और मुलर को ही मुबारक रहे।
बाबू साहब :	अब यह बताइये आप खाते क्या हैं।
मरीज़ :	खाता क्या हूँ ख़ाक पत्थर।
बाबू साहब :	आख़िर आपकी कुछ ग़िज़ा भी है?
मरीज़ :	वही जो भले आदमियों की होती है, दाल रोटी गोश्त।

1. बेकार

بابو صاحب:۔ یہی تو خرابی کی جڑ ہے۔

مریض:۔ پھر کیا مولر کا سر کھاؤں؟

بابو صاحب:۔ آپ کی غذا میں پروٹین کے سوا کچھ نہیں، کاربوہائیڈریٹ اور وٹامن کی کمی ہے۔

مریض:۔ یا الٰہی یہ کس انگریز کی ارواح سے سابقہ پڑا ہے۔ کھانے کا ذکر ہے اور خدا جانے کیا کیا نام لے رہا ہے، جنھیں سن کر جی متلاتا ہے۔ یہ کاربوٹ کیا بلا ہے۔ اور واٹیم کس چڑیا کا نام ہے؟

بابو صاحب:۔ مطلب یہ ہے کہ غذا میں صرف غلّہ اور گوشت کے اجزا ہوں تو جسم کی پوری طرح پرورش نہیں ہوتی۔ اور پھر بدہضمی اور قبض کی مصیبت الگ۔ آپ کو دال گوشت کے علاوہ ساگ ترکاری دودھ دہی کھانا چاہیئے۔

مریض:۔ مجھے کوئی بیل بکری سمجھا ہے یا دودھ پیتا بچہ مقرر کیا ہے۔ فرماتے ہیں کہ گھاس کھایا کرو اور دودھ پیا کرو، دودھ کے تو میں نام سے کانپتا ہوں۔ چھٹی کا دودھ یاد آجاتا ہے اور دہی کی ایک کہی، نزلے کا گھر کھانسی کا اڈّا۔

بابو صاحب:۔ تو جناب آپ کا علاج لقمان کے پاس بھی نہیں ہے۔ آپ کے آگے سائنٹیفک غذا کا ذکر کرنا بھینس کے آگے بین بجانا ہے۔

مریض:۔ اور کچھ نہیں چلی تو گالیوں پر اتر آئے بھینس میں ہوں یا تم اور تمہاری سائنٹفی جو گھاس کھاتا ہے اور دودھ پیتا ہے میں علاج کے پیچھے انسانیت نہیں کھونے کا۔ اس بک بک جھک سے سر میں درد ہونے لگا اور پیٹ میں الگ ہائے رے ہائے رے، کسی کو کیا معلوم کہ مجھ پر کیا گذرتی ہے۔ حکیم ڈاکٹر تین سو ساٹھ کا نسخہ بتاتا ہے دوست احباب منطق چھانٹتے اور ہنسی اڑاتے ہیں۔

افسوس کوئی محرم اپنا نہیں جہاں میں
معلوم کیا کسی کو دردِ نہاں ہمارا

बाबू साहब : यही तो ख़राबी की जड़ है।

मरीज़ : फिर क्या मुलर का सर खाऊँ?

बाबू साहब : आपकी गिज़ा में प्रोटीन के सिवा कुछ नहीं, कार्बोहाइड्रेट और विटामिन की कमी है।

मरीज़ : या इलाही यह किस अंग्रेज की अरवाह[1] से साबक़ा पड़ा है। खाने का ज़िक्र है और ख़ुदा जाने क्या क्या नाम ले रहा है, जिन्हें सुनकर जी मतलाता है। यह कार्बोट क्या बला है। और वाटेम किस चिड़िया का नाम है?

बाबू साहब : मतलब यह है कि गिज़ा में सिर्फ़ गल्ला और गोश्त के अजज़ा हों तो जिस्म की पूरी तरह परवरिश नहीं होती। और फिर बदहज़मी और क़ब्ज़ की मुसीबत अलग। आपको दाल गोश्त के अलावा साग, तरकारी, दूध, दही खाना चाहिये।

मरीज़ : मुझे कोई बैल बकरी समझा है या दूध पीता बच्चा मोक़र्रर किया है। फ़रमाते हैं कि घास खाया करो और दूध पिया करो, दूध के तो मैं नाम से काँपता हूँ। छटी का दूध याद आ जाता है और दही की एक कही, नज़ले का घर, खाँसी का अड्डा।

बाबू साहब : तो जनाब आपका इलाज लुक़मान के पास भी नहीं है। आपके आगे साइंटिफ़िक गिज़ा का ज़िक्र करना भैंस के आगे बीन बजाना है।

मरीज़ : और कुछ नहीं चली तो गालियों पर उतर आये। भैंस मैं हूँ या तुम और तुम्हारी साइंटिफ़ी जो घास खाता है और दूध पीता है, मैं इलाज के पीछे इन्सानियत नहीं खोने का। इस बक-बक, झक-झक से सर में दर्द होने लगा और पेट में अलग हाय रे हाय रे, किसी को क्या मालूम कि मुझ पर क्या गुज़रती है। हकीम डाक्टर तीन सौ साठ का नुस्ख़ा बताता है दोस्त अहबाब मंतिक़[2] छांटते और हंसी उड़ाते हैं –

अफ़सोस कोई महरम अपना नहीं जहाँ में
मालूम क्या किसी को दर्दे–निहाँ हमारा

---

1. रुह का बहुवचन 2. तर्कशास्त्र

مطالعہ

لغت میں مطالعہ کے معنی معلوم نہیں کیا ہوں۔ لیکن اللہ بخشے اپنے بڑے مولوی صاحب کو وہ فرمایا کرتے تھے کہ مطالعہ کے معنی ہوئے دیکھنا اور مطالعہ کے معنی ہوئے قوت حافظہ اور مطالعہ کے معنی ہوئے وسیع المعلومات ہونا اور مطالعہ کے معنی ہوئے واقفیت مثلاً یوں کہہ سکتے ہیں کہ جلاہوں کے متعلق آپ کا مطالعہ بہت وسیع ہے یعنی آپ جلاہوں سے بہت واقف ہیں۔ لیکن ہم یہاں مطالعہ کے معنی کریں گے، دیکھنا۔ اور اسی سے آئندہ بحث ہوگی، خواہ آپ کسی چیز کو دیکھ رہے ہوں یا وہ چیز آپ کو دیکھ رہا ہو یا دیکھ رہی ہو اب مطالعہ کی کئی قسمیں ہیں۔ مثلاً۔

مطالعۂ نظر: یہ اس طرح واقع ہوتا ہے کہ کوئی چیز آپ کو جھانک کر ہٹ جائے۔ اور آپ اُسے ٹھہر ٹھہر کر دیکھا کریں۔ مگر وہ پھر نظر نہ آئے یا قدرتی مناظر کا دیکھنا۔ یا باغ کے سبزہ زاروں اور لالہ زاروں پر آپ کا نظر ڈالنا اور خوش ہونا یا مہاراجہ صاحب محمود آباد کی لکھنوی کوٹھی کو اندر جا کر دیکھنا یا محلہ رائے سینا دہلی کے مکانات قیمت چودہ کروڑ روپیہ کا نقد کا معائنہ کرنا یا علی گڑھ کالج کی مسجد کو دیکھنا جس کالج کے تمام پروفیسروں کو نماز باجماعت کی نہ کوئی حاجت نہ سرکاری تاکید یا

मुल्ला रमूज़ी

मोतालेआ

लोग़त में मोतालेआ के माना मालूम नहीं क्या हों। लेकिन अल्लाह बख़्शे अपने बड़े मोलवी साहब को वह फ़रमाया करते थे कि मोतालेआ के माना हुए देखना और मोतालेआ के माने हुए कुव्वते-हाफ़ज़ा और मोतालेआ के माने हुए वसीउलमालूमात होना और मोतालेआ के माना हुए वाक़िफ़ियत मसलन यूँ कह सकते हैं कि जुलाहों के मुतअल्लिक़ आपका मोतालेआ बहुत वसीअ है यानी आप जुलाहों से बहुत वाक़िफ़ हैं। लेकिन हम यहाँ मोतालेआ के माना करेंगे देखना। और उसी से आइन्दा बहस होगी, ख़्वाह आप किसी चीज़ को देख रहे हों या वह चीज़ आपको देख रहा हो या देख रही हो अब मोतालेआ की कई क़िस्में हैं। मसलन-

मोतालए-नज़र : यह इस तरह वाक़ेअ होता है कि कोई चीज़ आपको झांककर हट जाये। और आप उसे ठहर-ठहर कर देखा करें। मगर वह फिर नज़र न आये या कुदरती मनाज़िर का देखना। या बाग़ के सब्ज़ाजारों पर आपका नज़र डालना और खुश होना या महाराजा साहब महमूदाबाद की लखनवी कोठी को अंदर जाकर देखना या मोहल्ला राय सीना देहली के मकानात क़ीमत चौदह करोड़ रुपया नक़द का मुआइना करना या अलीगढ़ कॉलेज की मस्जिद देखना जिस कॉलेज के तमाम प्रोफ़ेसरों को नमाज़े बाजमाअत की न कोई हाजत न सरकारी ताकीद या

آگرے والی کا مجرا یا کلکتے والی کا رنگا رنگ لباس ملاحظہ فرمانا۔ یہ وہ چیزیں ہیں جن کے مطالعہ سے گو جذبات بھی متاثر ہوتے ہیں۔ لیکن ان کا پہلا نظر سے ہے یعنی اگر کوئی

نجریاں لاگی رے

کی ٹھمری کو اونچے اور صاف لہجہ میں گا رہا ہو۔ لیکن اگر اس کا لباس عمدہ نہیں تو مطالعہ مکمل نہ ہوگا۔

دوسرا مطالعہ جذباتی کہا جاتا ہے۔ اس کے یہ معنی نہیں کہ دیکھنے کا کام بجائے آنکھ کے جذبات کرتے ہیں۔ بلکہ جس چیز کے دیکھنے سے جذبات متاثر ہوں۔ اُسے جذباتی مطالعہ سمجھنا چاہیے۔ اس میں آل انڈیا تنظیم کانفرنس کے سالانہ دنگل، دیوان داغ، طلسم ہوش ربا کی ساتوں جلدوں کا مطالعہ بھی داخل ہے یا پھر جذباتی مطالعہ یہ بھی ہے کہ آپ کسی دوست کے دسترخوان پر کھانا کھانے سے انکار تو کر دیں لیکن کھانے کی طرف چور نظروں سے دیکھتے بھی جائیں یا پھر دوست کے دسترخوان کو دیکھ کر آپ کو بھوک کی دوبارہ خواہش ہو تو سمجھ لیجیے کہ آپ نے کھانے کا مطالعہ نہایت صحیح فرمایا۔ ایک مطالعہ یہ بھی ہے کہ آپ صبح کے وقت کسی ''اشنان گھاٹ'' پر جا کر بیٹھ جائیں۔ یا کھڑے ہو جائیں یا کسی درخت کی اوٹ میں چھپ جائیں اور پھر محلّہ کے کسی دوست سے بھی کہیں۔

''اماں اشنان گھاٹ پر چلا کرو بڑا مزا آتا ہے''

یہ بھی مطالعہ ہے۔ کہ آپ کلاس میں ہیڈ ماسٹر کو بار بار اس لیے دیکھیں کہ وہ اونگھ رہا ہے یا سو چکا۔ اور کیا یہ مطالعہ نہیں کہ کوئی تانگہ آپ کے پاس سے گذرے اور آپ اپنا چلنا بند کر کے اسے دُور تک دیکھتے رہیں۔ یہ بھی مطالعہ ہے کہ آپ کسی چیز کو سڑک پر یوں دیکھتے جائیں کہ بجائے سیدھے چلنے کے آپ ترچھے چلنے لگیں اور سائیکل سوار آپ سے ٹکرا کر سائیکل کو تیزی سے چلا دے پھر آپ اٹھ کر کبھی کپڑے صاف کریں اور کبھی بھاگتے ہوئے سائیکل والے کو غصہ سے دور تک گھورتے رہیں۔ مگر وہ ہاتھ نہ آئے یہ بھی مطالعہ ہے کہ بازار میں کنجڑوں اور جلاہوں کی لپاڈگی اور ہاتا پائی پر آپ کھڑے تماشہ دیکھیں مگر ان کے درمیان صلح اس لیے نہ کرائیں کہ کہیں ایک آدھ ہاتھ ہمارے نہ پڑ جائے۔ اور صرف دور سے آپ یہ کہتے رہیں۔

आगरे वाली का मुजरा या कलकत्ते वाली का रंगारंग लिबास मुलाहज़ा फरमाना। यह वह चीज़ें हैं जिनके मोतालए से गो जज़बात भी मुतास्सिर होते हैं। लेकिन उनका पहला नज़र से है यानी अगर कोई –

नजरियाँ लागी रे

की ठुमरी को ऊँचे और साफ़ लहजे में गा रहा हो। लेकिन अगर उसका लिबास उम्दा नहीं है तो मोतालेआ मुकम्मल न होगा।

दूसरा मोतालेआ जज़्बाती कहा जाता है। इसके यह मानी नहीं कि देखने का काम बजाए आँख के जज़बात करते हैं। बल्कि जिस चीज़ के देखने से जज़्बात मुतास्सिर हों उसे जज़्बाती मोतालेआ समझना चाहिए। इसमें ऑल इण्डिया तन्ज़ीम कान्फ्रेंस के सालाना दंगल, दीवाने–ग़ालिब, तिलस्मे–होशरुबा की सातों जिल्दों का मोतालेआ भी दाख़िल है या फिर जज़्बाती मोतालेआ यह भी है कि आप किसी दोस्त के दस्तरख़्वान पर खाना खाने से इन्कार तो करदें लेकिन खाने की तरफ़ चोर नज़रों से देखते भी जायें या फिर दोस्त के दस्ताख़्वान को देखकर आपको भूक की दोबारा ख़्वाहिश हो तो समझ लीजिये कि आपने खाने का मोतालेआ निहायत सही फ़रमाया। एक मोतालेआ यह भी है कि आप सुबह के वक़्त किसी "स्नान घाट" पर जाकर बैठ जायें। या खड़े हो जायें या किसी दरख़्त की ओट में छुप जायें और फिर मोहल्ले के किसी दोस्त से भी कहें। "अमाँ स्नान घाट पर चला करो बड़ा मज़ा आता है"

यह भी मोतालेआ है कि आप क्लास में हेड मास्टर को बार–बार इसलिए देखें कि वह ऊंघ रहा है या सो चुका है। और क्या यह मोतालेआ नहीं कि कोई तांगा आपके पास से गुज़रे और आप अपना चलना बंद करके उसे दूर तक देखते रहें। यह भी मोतालेआ है कि आप किसी चीज़ को सड़क पर यूँ देखते जायें कि बजाय सीधा चलने के आप तिरछे चलने लगें और साइकिल सवार आप से टकरा कर साइकिल को तेज़ी से चला दे फिर आप उठकर कभी कपड़े साफ़ करें और कभी भागते हुए साइकिल वाले को दूर तक घूरते रहें। मगर वह हाथ न आये। यह भी मोतालेआ है कि बाज़ार में कन्जड़ों और जुलाहों की लप्पा–डुग्गी और हाथा पाई पर आप खड़े तमाशा देखें मगर उनके दरमियान सुलह इसलिए न करायें कि कहीं एक आध हाथ हमारे न पड़ जाए। और सिर्फ़ दूर से आप यह कहते हैं।

اماں بس بس تو اب جانے بھی دو

یہ بھی مطالعہ ہے کہ آپ بندر کا ناچ دیکھتے رہیں لیکن جب وہ مُنہ کھول کر آپ کی طرف بڑھے تو گھبرا کر نالی میں جا گریں یا مداری کے تماشہ میں اس قدر محو ہو جائیں کہ اسکول میں غیر حاضری ہو جائے۔

............XXX............

مطالعہ کی مذکورہ اقسام جذبات سے تعلق رکھتی ہیں۔ اب اس جذباتی مطالعہ کی بھی کئی قسمیں ہیں۔ مثلاً کوئی ایسا مطالعہ جس سے خوف پیدا ہو۔ جیسے رات کو سوتے سوتے آپ چارپائی سے گر پڑیں۔ اور لاحول ولا پڑھتے ہوئے پھر چارپائی پر بیٹھیں یا بحالت خواب آپ چلائیں۔

''ارے ہائے رے مار ڈالا۔ کھا گیا دوڑنا یہ آیا''

اس کے بعد آپ اپنے ننھے میاں کی والدہ سے کہیں۔

اجی کیا بتاؤں خواب میں دیکھا کہ ایک بڑا سا سانپ میرے اوپر حملہ کر رہا ہے۔

یا کسی دوست کی بارات سے آدھی رات کو واپس آتے ہوئے کسی ویران سڑک پر آپ کو پولیس والے نظر آ جائیں۔ اور آپ بے تحاشہ اس لیے بھاگ کھڑے ہوں کہ یہ بھوت ہیں۔ یا کسی سانپ کو دیکھ کر آپ اپنے ساتھیوں سے کہیں۔

''اماں مارتے کیوں نہیں ہو''

اور خود پیچھے ہٹتے جاؤ یا اپنے کسی عزیز کے آپریشن میں شفاخانے اس لیے نہ جائیں کہ......

''خون دیکھ کر کہیں مجھ کو چکر آ گیا تو؟ یا میں خود چکر بن گیا تو؟ یا بیہوش ہو گیا تو؟

یا کسی کو بندوق چلاتے دیکھ کر پہلے سے کانوں میں انگلیاں ٹھوس لینا یا کسی بیمار کی چارپائی سے نزع کے وقت یہ کہہ کر چل دینا کہ......

''ذرا حکیم کریم الدین کو اور لے آؤں''

"अमाँ बस बस तो अब जाने भी दो"

यह भी मोतालेआ है कि आप बंदर का नाच देखते रहें लेकिन जब वह मुँह खोलकर आप की तरफ़ बढ़ें तो घबरा कर नाली में जा गिरें या मदारी के तमाशे में इस क़द्र महव हो जायें कि स्कूल में ग़ैर हाज़री हो जाएं।

•••••••••••

मोतालेआ की मज़कूरा अक़्साम जज़बात से तअल्लुक़ रखती हैं। अब इस जज़्बाती मोतालेआ की भी कई क़िस्में होती हैं। मसलन कोई ऐसा मोतालेआ जिससे ख़ौफ़ पैदा हो। जैसे रात को सोते–सोते आप चारपाई से गिर पड़ें और लाहौलवला पढ़ते हुए फिर चारपाई पर बैठें या बहालते–ख़्वाब आप चिल्लायें।

"अरे हाय रे मार डाला। खा गया, दौड़ना यह आया"

इसके बाद आप अपने नन्हे मियाँ की वालिदा से कहें।

अजी क्या बताऊँ ख़्वाब में देखा कि एक बड़ा साँप मेरे ऊपर हमला कर रहा है।

या किसी दोस्त की बारात से आधी रात को वापिस आते हुए किसी वीरान सड़क पर आपको पुलिस वाले नज़र आ जायें और आप बेतहाशा इसलिए भाग खड़े हों कि यह भूत हैं। या किसी साँप को दखकर आप अपने साथियों से कहें।

"अमाँ मारते क्यों नहीं हो"

और ख़ुद पीछे हटते जाओ या अपने किसी अज़ीज़ के ऑपरेशन में शिफ़ाख़ाने इसलिए न जायें कि........

"ख़ून देखकर कहीं मुझको चक्कर आ गया तो? या मैं ख़ुद चक्कर बन गया तो? या बेहोश हो गया तो?

या किसी को बंदूक़ चलाते देखकर पहले से कानों में उंगलियाँ ठूंस लेना या किसी बीमार की चारपाई से नज़अ के वक़्त यह कहकर चल देना कि........

"ज़रा हकीम करीमुद्दीन को और ले आऊँ"

یا قبر میں مردے کا منہ دیکھتے وقت یہ کہنا کہ......

''اشھد اللہ الہ۔ چلو چلو منہ ڈھانپ دو۔ خدا غریق رحمت فرمائے سبحان اللہ چہرے پر کیسا نور تھا''

............XXX............

جذباتی مطالعہ کی ایک قسم مسرت خیز بھی ہے۔ مثلاً مکہ شریف سے کسی عزیز کو واپس آتا دیکھ کر مارے خوشی کے اس سے جھوم جانا۔ انتہائی بھوک کے وقت دستر خوان پر کسی لذیذ کھانے کو دیکھ لینا یا کوئی نیا سوٹ پہن کر اسکول جانا اور اپنے سایہ کو دیکھ دیکھ کر دل ہی دل میں سوٹ سے خوش ہونا یا کسی عطار کی دکان پر کسی دوا کو بھول آنا اور پھر وقت تلاش دوا کی پڑیا پر نظر پڑ جانا یا اپنے ننھے میاں کا گھر سے غائب ہو جانا اور آپ کا تلاش کرتے کرتے کوتوالی پہنچ جانا اور وہاں سپاہی کی گود میں ننھے میاں کا بیٹھا ہوا نظر آ جانا۔

............XXX............

ان اقسام مطالعہ کے بعد اب علمی مطالعہ شروع ہوتا ہے۔ گو اس میں بہت سی قسمیں ہیں۔ مثلاً کوہ ہمالہ کی چوٹی پر صرف اس لیے چڑھ جانا کہ دیکھیں اگر انسان صاحب کو سطح ارض سے اس قدر بلندی پر رہنے کا موقع مل گیا تو از روئے حفظانِ صحت وہ وہاں مکان بنا کر رہے گا یا درختوں پر لٹک جائے گا اور اس قدر بلند جگہ پتلون کس قسم کی استعمال کی جائے گی؟ علمی مطالعہ اس وقت مفید ہو سکتا ہے جب آدمی کتاب کو کامل شوق اور غور و فکر سے پڑھے اور سمجھے۔ لیکن اصول زندگی یہ ہے کہ ابتدائی عمر ہی سے قاعدۂ بغدادی مطالعہ کے لیے سامنے رکھ دیا جاتا ہے۔ نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ اس مطالعہ میں شوق کی جگہ حافظ جی کا لٹھ کام لیتا ہے۔ اور اسی لیے مطالعہ کرنے والا مطالعہ کے اوقات میں بھاگ جانے، بیمار ہو جانے یا رونے کی کوشش کرتا رہتا ہے۔ مگر ماں باپ اُسے ہر طرح مطالعہ پر آمادہ کر کے چھوڑتے ہیں۔ اور وہ اَلِیف دُو زَبَرْ اَنْ پڑھنے پر مجبور ہو جاتا ہے۔ اس کے بعد اسکول میں داخل

या क़ब्र में मुर्दे का मुँह देखते वक़्त यह कहना कि........
"अशहदो अनला इलाह[1]। चलो मुँह ढाँप दो। खुदा ग़रीके–रहमत फ़रमाये, सुब्हान अल्लाह, चेहरे पर कैसा नूर था"

•••••••••••

जज़बाती मोताले की एक क़िस्म मसर्रतख़ेज़[2] भी है। मसलन मक्के शरीफ़ से किसी अज़ीज़ को वापिस आता देख कर मारे ख़ुशी के उससे झूम जाना। इन्तहाई भूक के वक़्त दस्तरख़्वान पर किसी लज़ीज़ खाने को देख लेना या कोई नया सूट पहनकर स्कूल जाना और अपने साये को देखकर दिल ही दिल में सूट से खुश होना या किसी अत्तार की दुकान पर किसी दवा को भूल आना और फिर वक़्ते–तलाश दवा की पुड़िया पर नज़र पड़ जाना या अपने नन्हे मियाँ का घर से ग़ायब हो जाना और आपका तलाश करते–करते कोतवाली पहुँच जाना और वहाँ सिपाही की गोद में नन्हे मियाँ का बैठा हुआ नज़र आ जाना।

•••••••••••

इन अक्सामे मोतालेआ के बाद इल्मी मोतालेआ शुरु होता है। गो इसमें बहुत सी क़िस्में हैं। मसलन कोहे–हिमाला की चोटी पर सिर्फ़ इसलिए चढ़ जाना कि देखें अगर इन्सान साहब को सतहे–अर्ज़[3] से इस क़द्र बुलन्दी पर रहने का मौक़ा मिल गया तो अज़ रुए हिफ़ज़ाने सेहत[4] वह वहाँ मकान बनाकर रहेगा या दरख़्तों पर लटक जायेगा और इस क़द्र बुलन्द जगह पतलून किस क़िस्म की इस्तेमाल की जायेगी? इल्मी मोतालेआ उस वक़्त मुफ़ीद हो सकता है जब आदमी किताब को कामिल शौक़ और ग़ौरो–फ़िक्र से पढ़े और समझे। लेकिन उसूले–ज़िन्दगी यह है कि इब्तदाई उम्र ही से क़ायदए–बग़दादी मोतालये के लिए सामने रख दिया जाता है। नतीजा यह होता है कि इस मोतालये में शौक़ की जगह हाफ़िज़ जी का लठ काम लेता है। और इसीलिए मोताला करने वाला मोतालये के औक़ात में भाग जाने, बीमार हो जाने या रोने की कोशिश करता रहता है। मगर माँ बाप उसे हर तरह मोतालये पर आमादा कर के छोड़ते हैं। और वह अलिफ़ दो ज़बर अन पढ़ने पर मजबूर हो जाता है। उसके बाद स्कूल में दाख़िल

---

1. मैं गवाही देता हूँ कि ख़ुदा के अलावा कोई ख़ुदा नहीं।
2. ख़ुशी देने वाली 3. ज़मीन की सतह से 4. स्वास्थ की रक्षा के विचार से

ہونے کے بعد مطالعہ ماسٹر کی مار پیٹ کی مقدار کے موافق شروع ہوتا ہے۔ مثلاً جس ماسٹر کی مار پیٹ بحساب ایک درجن بید فی گھنٹہ ہے۔ اس کے سبق کا مطالعہ بھی ایک گھنٹہ پابندی سے کیا جاتا ہے۔ مگر اس مطالعہ کے پابند بھی وہی طلبہ ہوتے ہیں جو بخار یا پانی پینے کے بہانے کلاس سے بھاگ جانے کے عادی نہیں ہوتے۔ ایسے طلبہ کا مطالعہ نہایت کامیاب ہوا کرتا ہے۔

یہ بھی مطالعہ ہے سال بھر ٹینس، ہاکی، فٹ بال، اور کرکٹ کے آل انڈیا ٹورنمنٹ میں مارے پھرے۔ اور امتحان سے ایک مہینہ پہلے کتابیں لے کر کبھی بیٹھے کبھی نہ بیٹھے۔ اور کامیابی کی تمام ذمہ واری اللہ میاں پر ڈال دی۔ ایسے طلبہ صرف عبارت کو یاد کرتے ہیں مطالب کو نہیں سمجھتے اور پاس ہونے کے بعد کہیں کے کلرک ہو جاتے ہیں۔

یہ بھی مطالعہ ہے کہ اپنے کمرے میں لگے ہوئے یا لٹکے ہوئے یا چپکے ہوئے نقشوں، آئینوں اور تصاویر کو کسی کرسی پر بیٹھ کر دیکھتے رہے۔ اور کبھی اٹھ کر ہاتھ کے رومال سے کسی تصویر کے غبار کو صاف کر دیا۔ بوٹ پمپ اور سلیپر کو نہایت خوشنما قطار میں رکھتے رہے۔ میز پر کتابوں کا ایک خوبصورت حلقہ بنا دیا۔ اور کوئی بڑی بھاری کتاب سامنے رکھ کر اُس کے بیچ ایک پنسل رکھ دی۔ تا کہ لوگ سمجھیں کی آج کل آپ اس زبردست کتاب کے مطالعہ میں مصروف رہتے ہیں۔ اور نصف کے قریب ختم بھی کر چکے ہیں۔

اصل مطالعہ یوں شروع ہوتا ہے کہ کتاب لی اور کمرے کے دروازے کو بند کیا یا نیم بند کیا یا کچھ بند کیا یا کچھ کچھ بند کیا یا بند ہی نہ کیا یا بند کیا تو کیا ورنہ چھوڑ دیا یا بند کرنا ہی بھول گئے اور کسی گذرنے والے سے کہا اور انگریزی زبان میں کہا کہ مہربانی فرما کر ذرا اس دروازے کو بند کرتے جائیے یا خود بند کرنے کا ارادہ کیا مگر ہمت نہ بڑھی تو بیٹھے بیٹھے دروازے کو تاکتے رہے پھر کتاب اور پہلے سبق کا مشکل حصہ نکالا اور غور کیا کہ اس حصہ کو یاد بھی کیا جا سکتا ہے یا نہیں؟ پھر اس بات کا اندازہ کیا کہ اس کے مشکل الفاظ کے لیے کسی ڈکشنری کو پاس رکھ کر بیٹھنا ضروری ہے یا نہیں؟ پھر ایک پنسل بھی پاس رکھ لی جو معنی سمجھ میں نہ آئیں گے ان پر نشان لگا کر صبح ماسٹر صاحب سے دریافت کرلیں گے۔ اس اہتمام کے بعد کتاب کو گنگنا کر شروع کیا پھر چلا چلا کر پڑھنے لگے پھر چپ ہو گئے اور پھر چلا پڑے پھر اس شور کو تال اور سُر میں

होने के बाद मोतालेआ मास्टर की मारपीट की मेक़्दार के मवाफ़िक़ शुरु होता है। मसलन जिस मास्टर की मारपीट बहिसाब एक दर्जन बेद फ़ी घंटा है उसके सबक़ का मोतालेआ भी एक घंटा पाबंदी से किया जाता है। मगर इस मोताले के पाबंद भी वही तलबा होते हैं जो बुख़ार या पानी पीने के बहाने क्लास से भाग जाने के आदी नहीं होते। ऐसे तलबा का मोतालेआ निहायत कामयाब हुआ करता है।

यह भी मोतालेआ है साल भर टेनिस, हॉकी, फुटबाल, और क्रिकेट के ऑल इण्डिया टूर्नामेंट में मारे फिरे। और इम्तेहान से एक महीना पहले किताबें लेकर कभी बैठे कभी न बैठे। और कामयाबी की तमाम ज़िम्मेदारी अल्लाह मियाँ पर डाल दी। ऐसे तलबा सिर्फ़ इबारत को याद करते हैं मतालिब को नहीं समझते और पास होने के बाद कहीं के क्लर्क हो जाते हैं।

यह भी मोतालेआ है कि अपने कमरे में लगे हुए या लटके हुए या चिपके हुए नक़्शों, आईनों और तसावीर को किसी कुर्सी पर बैठकर देखते रहें। और कभी उठकर हाथ के रुमाल से किसी तस्वीर के गुब्बार को साफ़ कर दिया। बूट, पम्प और स्लीपर को निहायत ख़ुशनुमा क़तार में रखते रहें। मेज़ पर किताबों का एक ख़ूबसूरत हल्क़ा बना दिया। और कोई बड़ी भारी किताब सामने रखकर उसके बीच एक पेंसिल रख दी। ताकि लोग समझें कि आज कल आप इस ज़बर्दस्त किताब के मोताले में मसरुफ़ रहतें हैं, और निस्फ़[1] के क़रीब ख़त्म भी कर चुके हैं।

असल मोतालेआ यूँ शुरु होता है कि किताब ली कमरे के दरवाज़े को बंद किया या नीम बंद किया या कुछ बंद किया या कुछ कुछ बंद किया या बंद ही न किया या बंद किया तो किया वरना छोड़ दिया या बंद करना ही भूल गये और किसी गुज़रने वाले से कहा और अंग्रेजी ज़बान में कहा कि मेहरबानी फ़रमा कर ज़रा इस दरवाज़े को बंद करते जाइये या खुद बंद करने का इरादा किया मगर हिम्मत न बढ़ी तो बैठे बैठे दरवाज़े को ताकते रहे फिर किताब और पहले सबक़ का मुश्किल हिस्सा निकाला और ग़ौर किया कि इस हिस्से को भी याद किया जा सकता है या नहीं? फिर इस बात का अंदाज़ा किया कि इस के मुश्किल अल्फ़ाज़ के लिए किसी डिक्शनरी को पास रखकर बैठना ज़रुरी है या नहीं? फिर एक पेंसिल भी पास रख ली जो माने समझ में न आयेंगे उन पर निशान लगाकर सुबह मास्टर साहब से दरयाफ़्त कर लेंगे। इस एहतमाम के बाद किताब को गुनगुना कर शुरु किया फिर चिल्ला चिल्ला कर पढ़ने लगे फिरचुप हो गये और फिर चिल्ला पड़े फिर इस शोर को तालऔर सुर में

1. आधी

لائے پھر آہستگی اختیار کی اور پھر گنگنانے لگے اور پھر چلائے کہ دوسرے کمرہ والے سمجھ گئے کہ آپ مطالعہ میں مصروف ہیں۔ اتنے میں عربی لہجہ میں عشاء کی اذان شروع ہوگئی تو سینہ پر کتاب رکھ کر لیٹ گئے اور لیمپ برابر جلتا رہا۔ اُدھر اذان ختم ہوئی کی ادھر اتفاقاً آپ سو گئے اور صبح اُس وقت بیدار ہوئے جب پڑوس کے کسی طالب علم نے آکر آپ کو بیدار کیا۔

اس قسم کا مطالعہ صرف کالجوں سے متعلق ہے۔ لیکن مدارس اسلامیہ عربیہ کا مطالعہ اس سے مختلف ہے۔ ان مدارس میں افغانی ذات کے وہ سن رسیدہ طلبہ ہوا کرتے ہیں۔ جو چوبیس گھنٹے مطالعہ میں مصروف رہتے ہیں۔ یہ حضرات اپنے کمروں میں بیٹھ کر مطالعہ کے عادی نہیں ہوتے۔ بلکہ صحن مکان یا صحن مسجد انہیں پسند ہے۔ چارپائی میز کرسی وغیرہ کا انتظام تو ان کے لیے اس وجہ سے نہیں ہوتا کہ ان کی طرف رُوساو امراء اسلام متوجہ نہیں ہوتے۔ کیوں کہ یہ علم دین کے طلبہ ہوتے ہیں۔ اور اب ترکوں کی طرح ہندوستان کے مسلمان بھی علم دین سے دور ہوتے جارہے ہیں اس لیے یہ غریب طلبہ چند موٹی موٹی کتابوں کو تکیہ بنا کر ان پر سر کو جما دیتے ہیں۔ اور کتاب کو سینہ پر تان کر یوں مصروف مطالعہ ہو جاتے ہیں گویا دنیا میں اب انھیں صرف یہی ایک کام کرنا باقی رہ گیا ہے۔ اصل میں یہی طلبہ ہوتے ہیں جن کا مطالعہ صحیح معنی کا مطالعہ اور نفع بخش مطالعہ ہوتا ہے۔

اس مطالعہ کے بعد ایک مطالعہ دکانوں اور بازاروں میں بھی ہوتا ہے۔ کسی دوکان پر دس بارہ حضرات گول میز بن کر بیٹھ گئے۔ اور ایک قاری صاحب نے بیچ میں بیٹھ کر طلسم ہوشربا کو اس زور سے پڑھنا شروع کیا کہ راہ گیر بھی کھڑے ہو جائیں۔ یہ قاری صاحب کبھی کبھی کتاب کے ساتھ سامعین کے اس بھرے مجمع میں لیٹ بھی جایا کرتے ہیں۔ کتاب اِس بری طرح پڑھی جاتی ہے گویا اسے رگیدا جارہا ہے۔ شور اور تال وسُر کا سلسلہ بہت کم ٹوٹتا ہے۔ سامعین میں کوئی ترتیب نہیں ہوتی بلکہ جس کا دل چاہے اور جب چاہے کتاب کی سماعت کے ساتھ ہی کسی پاس والے کے زانوؤں پر سر رکھ کر یا اس کے کاندھے کا سہارا لے کر سو بھی سکتا ہے اُس پر سامعین اس وقت معترض ہوتے ہیں جب یہ سونے والا خواب میں ڈر کر چلا پڑے یا اُس کی نیند کا خراٹا دوکان سے باہر جانے لگے۔ سامعین

लाये फिर आहिस्तगी अख़्तियार की और फिर गुनगुनाने लगे और फिर चिल्लाये कि दूसरे कमरे वाले समझ गये कि आप मोतालये में मसरुफ़ हैं। इतने में अरबी लहजे में एशा की आज़ान शुरु हो गई तो सीने पर किताब रख कर लेट गये और लैम्प बराबर जलता रहा। उधर अज़ान ख़त्म हुई कि इधर आप इत्तेफ़ाक़न सो गये और सुबह उस वक़्त बेदार हुए जब पड़ोस के किसी तालिबे–इल्म ने आकरआपको बेदार किया।

इस क़िस्म का मोतालेआ सिर्फ़ कॉलेजों से मुतअल्लिक़ है। लेकिन मदारिसे इस्लामिया अरबीया का मोतालेआ इससे मुख़्तलिफ़ है। इन मदारिस में अफ़ग़ानी ज़ात के वह सिन रसीदा तलबा हुआ करते हैं जो चौबीस घंटे मोतालये में मसरुफ़ रहते हैं। यह हज़रात अपने कमरों में बैठकर मोतालये के आदी नहीं होते बल्कि सेहने–मकान या सेहने–मस्जिद उन्हें पसंद है। चारपाई मेज़ कुर्सी वग़ैरह का इन्तज़ाम तो इनके लिए इस वजह से नहीं होता कि उनकी तरफ़ रऊसा व उमराए–इस्लाम मुतवज्जा नहीं होते। क्योंकि यह इल्मे–दीन के तलबा होते हैं। और अब तुर्कों की तरह हिन्दुस्तान के मुसलमान भी इल्मे–दीन से दूर होते जा रहे हैं इसलिए यह ग़रीब तलबा चंद मोटी–मोटी किताबों को तकिया बनाकर उन पर सर को जमा देते हैं। और किताब को सीने पर तानकर यूँ मस्रुफ़े–मोतालेआ हो जाते हैं गोया दुनिया में अब उन्हें सिर्फ़ यही एक काम करना बाक़ी रह गया है। असल में यही तलबा होते हैं जिनका मोतालेआ सही माने का मोतालेआ और नफ़ा बख़्श मोतालेआ होता है।

इस मोताले के बाद एक मोतालेआ दुकानों और बाज़ारों में भी होता है। किसी दुकान पर दस बारह हज़रात गोल मेज़ बनकर बैठ गये। और एक क़ारी साहब ने बीच में बैठकर तिलस्मे–होशरुबा को इस ज़ोर से पढ़ना शुरु किया कि राहगीर भी खड़े हो जायें। यह क़ारी साहब कभी–कभी किताब के साथ सामेईन के इस भरे मजमे में लेट भी जाया करते हैं। किताब इस बुरी तरह से पढ़ी जाती है गोया उसे रगेदा जा रहा है। शोर और सुर व ताल का सिलसिला बहुत कम टूटता है। सामेईन में कोई तरतीब नहीं होती जिसका दिल चाहे और जब चाहे किताब की समाअत के साथ ही किसी पास वाले के ज़ानूओं पर सर रखकर या उसके कांधे का सहारा लेकर सो भी सकता है उस पर सामेईन उस वक़्त मोतरिज़ होते हैं जब यह सोने वाला ख़्वाब में डर कर चिल्ला पड़े या उसकी नींद का ख़र्राटा दूकान से बाहर जाने लगे। सामेईन

کا شور تحسین و آفرین بلند ہوتا ہے کبھی پست مگر اس شور سے قاری پر کوئی اثر نہیں ہوتا وہ بہت دیر میں صرف حقے یا بیڑی کے لیے سانس لیتا ہے۔ اور پھر پچھتر میل فی گھنٹہ کی رفتار سے کتاب شروع کر دیتا ہے۔ سامعین کے حلقہ میں ایک شخص کے ذمے حقہ تازہ رکھنے اور ایک کے پنکھا جھلنے کی خدمت ہوا کرتی ہے۔ بعض سامعین کتاب کی سماعت کے ساتھ ہی کپڑے بھی سیتے جاتے ہیں۔ اکثر سامعین پر غنودگی اور کھانسی کا غلبہ زیادہ ہوا کرتا ہے۔ مگر ان باتوں کا اثر کتاب پڑھنے والے پر نہیں پڑتا۔ نہ اُسے اس کا احساس کہ کتاب پر کافی روشنی بھی ہے یا نہیں؟ یا تازہ ہوا بھی آتی ہے یا نہیں؟ یا کتاب کی جلد بھی بندھی ہوئی ہے یا اوراق پریشان ہیں؟ یہ بھی ضروری نہیں کہ سامعین لکھے پڑھے بھی ہوں۔ اکثر سامعین گھٹنوں کے اندر سر ڈالے ملتے ہیں۔ مگر وہ آنکھ کھل جانے پر یہ ضرور کہتے ہیں سبحان اللہ واہ حضرت اس پر کوئی پاس والا اگر ہوشیار ہوا تو اتنا کہہ دیتا ہے۔

"اماں میر صاحب کتاب سننے آتے ہو یا سونے؟ لو ذرا پنکھا جھلو تو نیند جائے"

یہ بھی مطالعہ ہے کہ تمام کاموں سے فارغ ہو گئے یا شام کو تفریح کے لیے نکلے تو کسی لائبریری یا مفت کے ریڈنگ روم عرف پبلک روم میں جا بیٹھے۔ دس پانچ اخبار الٹے سیدھے کیے اور چلے آئے اور جو یہ ریڈنگ روم کسی دوسری منزل عمارت پر واقع ہوا تو ایک اخبار سامنے رکھ لیا۔ اور سڑک پر سے گذرنے والوں کا تماشہ دیکھتے رہے۔ دوستوں سے آ کر کہہ دیا

"آج تو کوئی خبر ہی نہیں تھی"۔

گویا سوائے خبر کے اخبار میں اور تو کچھ ہوتا ہی نہیں!! !!!

یہ بھی مطالعہ ہے کہ کسی اخبار فروش کی دوکان پر پان کا ڈبہ لے کر جا بیٹھے۔ اخبار فروش کو پان پیش کیا خواہ مخواہ کی دو چار باتیں کیں اور کوئی اخبار آہستہ سے کھینچ کر سامنے رکھ لیا۔ اگر اخبار فروش کسی گاہک سے مصروف ہو گیا تو آہستہ سے عینک نکالی اور اخبار لے کر دیوار کو سہارا دے کر اس طرح پڑھنے لگے گویا یہ اخبار براہ راست انھیں کے پاس آیا ہے۔ چلتے وقت اخبار فروش سے کہہ دیا آج کے زمیندار میں کوئی عمدہ خبر نہیں۔

का शोरे–तहसीनो–आफ़रीन बुलंद होता है कभी पस्त मगर इस शोर से क़ारी पर कोई असर नहीं होता वह बहुत देर में सिर्फ़ हुक़्क़े या बीड़ी के लिए साँस लेता है। और फिर पचहत्तर मील फ़ी घंटा की रफ़्तार से किताब शुरु कर देता है। सामेईन के हल्क़े में एक शख़्स के ज़िम्मे हुक़्क़ा ताज़ा रखने और एक के पंखा झलने की ख़िदमत हुआ करती है। बाज़ सामेईन किताब की समाअत के साथ ही कपड़े भी सीते जाते हैं। अक्सर सामेईन पर ग़ुनूदगी और खाँसी का ग़ल्बा ज़्यादा हुआ करता है। मगर इन बातों का असर किताब पढ़ने वालों पर नहीं पड़ता। न उसे इसका एहसास कि किताब पर काफ़ी रोशनी भी है या नहीं? या किताब की जिल्द भी बंधी हुई है या औराक़ परेशान हैं? यह भी ज़रुरी नहीं कि सामेईन लिखे पढ़े भी हों। अक्सर सामेईन घुटनों के अन्दर सर डाले मिलते हैं। मगर वह आँख खुल जाने पर यह ज़रुर कहते हैं सुब्हान अल्लाह, वाह हज़रत इस पर कोई पास वाला अगर होशियार हुआ तो इतना कह देता है।

"अमाँ मीर साहब किताब सुनने आते हो या सोने? लो ज़रा पंखा झलो तो नींद जाये।"

यह भी मोतालेआ है कि तमाम कामों से फ़ारिग़ हो गये या शाम को तफ़रीह के लिए निकले तो किसी लाइब्रेरी या मुफ़्त के रीडिंग रुम उर्फ़ पब्लिक रुम मे जा बैठे। दस पाँच अख़बार उल्टे सीधे किए और चले आये और जो रीडिंग रुम किसी दूसरी मंज़िल इमारत पर वाक़ेअ हुआ तो एक अख़बार सामने रख लिया। और सड़क पर से गुज़रने वालों का तमाशा देखते रहे। दोस्तों से आकर कह दिया।

"आज तो कोई ख़बर ही नहीं थी"

गोया सिवाय ख़बर के अख़बार में और तो कुछ होता ही नहीं!! !!!

यह भी मोतालेआ है कि किसी अख़बार फ़रोश की दूकान पर पान का डिब्बा लेकर जा बैठे। अख़बार फ़रोश को पान पेश किया ख़्वाह मख़्वाह की दो चार बातें कीं और कोई अख़बार आहिस्ता से खींच कर सामने रख लिया। अगर अख़बार फ़रोश किसी गाहक से मसरुफ़ हो गया तो आहिस्ता से ऐनक निकाली और अख़बार लेकर दीवार को सहारा देकर इस तरह पढ़ने लगे गोया अख़बार बराहे–रास्त उन्हीं के पास आया है। चलते वक़्त अख़बार फ़रोश से कह दिया आज के ज़मीनदार में कोई उम्दा ख़बर नहीं।

آپ تو سیاست منگایا کیجیے۔ ان لوگوں کی صورت سے اخبار فروش بہت بیزار رہا کرتے ہیں۔ ایسے مطالعہ کرنے والے صرف ہندو مسلم فسادات کی خبریں پڑھنے کے شائق ہوا کرتے ہیں۔

ایک مطالعہ یہ بھی ہے کہ اپنے محلے کے کسی ایسے ملا رموزی صاحب سے دوستی بڑھالی جن کے پاس بکثرت اخبارات اور رسالے آتے ہیں۔ ڈاک کے وقت آئے اور بڑے دوستانہ غرور سے حکم دیا۔

''لاؤ یار آج کے اخبارات کہاں ہیں''

مُلا رموزی صاحب نے مروت سے اخبارات سامنے پٹک دیے تو مطالعہ یوں شروع ہو گیا کہ اخبار کی ایک آدھ سطر پڑھی اور ملا رموزی صاحب سے فرمایا۔

'' کیوں مُلا صاحب آخر یہ افغانستان بھی ترکوں کی طرح کافر ہی ہو کر رہے گا؟''

''اور کیوں ملا صاحب یہ اسمبلی کیا بلا ہے؟''

''اچھا اچھا تو یہ دہلی کی اسمبلی میں قوانین بنا کرتے ہیں۔ لاحول ولا میں تو آج تک اس اسمبلی کو کچہری سمجھا کرتا تھا''۔

''اور کیوں مُلا صاحب یہ ویسرائے تو بس بیٹھا سُرخ روشنائی سے دستخط کرتا رہے گا؟''

اس طرح دو گھنٹہ ملا رموزی کا مغز کھا کر ایک لمبی سی جمائی اور ایک زور و شور کی انگڑائی لے کر اٹھے اور فرمایا

''اچھا تو آج صرف یہ پانچ اخبار ہی لے جاتا ہوں کل واپس کر دوں گا''

ایک مطالعہ یہ بھی ہے کہ شام کو دوستوں کے مجمع میں کوئی اخبار منہ کے سامنے تان کر بیٹھ گئے۔ اور لگے چلا چلا کر پڑھنے۔ ان کو پڑھنے کا سلیقہ اتنا ہی ملتا ہے کہ ہر خبر کو لنڈن ۴/ اکتوبر سے شروع کر کے ختم کر دیتے ہیں۔ گویا بغیر لنڈن اور ۴/ اکتوبر کے صرف اصل خبر کو پڑھ ہی نہیں سکتے۔ ایسے اخبار پڑھنے والے اپنے مجمع کے تمام اندھوں میں راجہ ہوا کرتے ہیں۔ جو چاہتے ہیں ٹانگ پر ٹانگ رکھ کر رائے ظاہر فرما دیتے ہیں۔

आप तो सियासत मंगाया कीजिये। इन लोगों की सूरत से अख़बार फ़रोश बहुत बेज़ार रहा करते हैं। ऐसे मोतालेआ करने वाले सिर्फ़ हिन्दू–मुस्लिम फ़सादात की ख़बरें पढ़ने के शायक़ हुआ करते हैं।

एक मोतालेआ यह भी है कि अपने मोहल्ले के किसी ऐसे मुल्ला रुमूज़ी साहब से दोस्ती बढ़ा ली जाय जिनके पास बकसरत अख़बारात और रिसाले आते हैं। डाक के वक़्त आये और बड़े दोस्ताना गुरुर से हुक्म दिया।

"लाओ यार आज के अख़बारात कहाँ हैं"

मुल्ला रुमूज़ी साहब ने मुरव्वत से अख़बारात सामने पटक दिये तो मोतालेआ यूँ शुरु हो गया कि अख़बार की एक आध सतर पढ़ी और मुल्ला रुमूज़ी साहब से फ़रमाया।

"क्यों मुल्ला साहब आख़िर ये अफ़गानिस्तान भी तुर्कों की तरह काफ़िर ही होकर रहेगा?"

"और क्यों मुल्ला साहब यह एसेम्बली क्या बला है?"

"अच्छा–अच्छा तो यह देहली की एसेम्बली में क़वानीन बना करते हैं। लाहौलवला मैं तो आज तक इस एसेम्बली को कचहरी समझा करता था।"

"और क्यों मुल्ला साहब यह वायसराय तो बस बैठा सुर्ख़ रोशनाई से दस्तख़त करता रहेगा?"

इस तरह दो घंटे मुल्ला रुमूज़ी का मग़ज़ खाकर एक लम्बी सी जमाई और एक ज़ोरो–शोर की अंगड़ाई लेकर उठे और फ़रमाया –

"अच्छा तो आज सिर्फ़ यह पाँच अख़बार ही ले जाता हूँ कल वापस कर दूँगा"

एक मोतालेआ यह भी है कि शाम को दोस्तों के मजमे में कोई अख़बार मुँह के सामने तान कर बैठ गये और लगे चिल्ला–चिल्ला कर पढ़ने। उनको पढ़ने का सलीक़ा इतना ही मिलता है कि हर ख़बर को लंडन 4 अक्टूबर से शुरु करके ख़त्म कर देते हैं। गोया बग़ैर लंडन और 4 अक्टूबर के सिर्फ़ असल ख़बर को पढ़ ही नहीं सकते। ऐसे अख़बार पढ़ने वाले अपने मजमे में तमाम अंधों में राजा हुआ करते हैं। जो चाहते हैं टाँग पर टाँग रख कर राय ज़ाहिर फरमा देते हैं।

ایک مطالعہ یہ ہے کہ گھر سے دفتر جاتے وقت دو چار اخبار جیب میں ٹھونس لیے اور تمام راستہ پڑھتے ہوئے چلے جا رہے ہیں۔ کہیں کہیں تانگے، موٹر گاڑی، نالی، دیوار، بجلی کے کھمب اور آدمی سے ٹکرا گئے تو صرف ارے لاحول ولا کہا اور پھر اخبار پڑھتے ہوئے روانہ ہو گئے۔

سب سے آخری مطالعہ یہ ہے۔ کہ ایک منٹ میں چوبیس اخبار رکھولے اور پڑھ کر پھینک دئے۔ مگر تمام اہم امور کو ذہن نشین کرلیا۔ یہ مطالعہ لیڈروں اور ایڈیٹروں کا ہوا کرتا ہے۔

............XXX............

مذکورہ اقسام مطالعہ میں بہت کم ایسی قسمیں ہیں جن سے مطالعہ کا پورا فائدہ ناظر کو ہوسکتا ہے۔ ورنہ تمام قسم کے مطالعے بے کار ہیں۔ یہ تمام قسمیں اُس وقت تک بے کار ہیں جب تک کہ آپ مطالعہ کا کوئی خاص مقصد مقرر کر کے مطالعہ نہ کریں۔

پس آپ ہر ایسی تحریر کا مطالعہ نہ کیجیے جس سے آپ کو کوئی علمی، ادبی، تاریخی، تجارتی، مذہبی یا اخلاقی و سیاسی معلومات حاصل نہ ہوں۔ اور مطالعہ سے ذیل کے فوائد حاصل کرنے کی کوشش کیجیے۔

۱۔ اخبار یا کتاب پڑھتے وقت کامل سکون کی حالت پیدا کیجیے۔

۲۔ ایک پنسل لے کر مطالعہ کیجیے اور تحریر مطالعہ میں جو نئے الفاظ، محاورے اور مصطلحات ایسی ملیں جن کے معنی اور مطلب سے آپ نا آشنا ہوں۔ اُن پر نشان لگا کر کسی سے ان کے معنی دریافت کر لیجیے۔ اس سے آپ کی معلومات میں اضافہ ہوگا۔

۳۔ جس قدر شائستہ اور نئے الفاظ آپ کو ملیں۔ انہیں گفتگو اور اپنی تحریر میں خود بھی استعمال کی کوشش کیجیے۔ اسی سے آپ کی زبان اور تحریر طاقت ور ہوگی

۴۔ اخبار میں جس قدر مقامات آپ کو ملیں اُنھیں نقشہ میں دیکھ کر یاد کر لیجیے اس سے آپ کی جغرافی معلومات میں اضافہ ہوگا۔

एक मोतालेआ यह है कि घर से दफ़्तर जाते वक़्त दो–चार अख़बार जेब में ठूंस लिये और तमाम रास्ते पढ़ते हुए चले जा रहे हैं। कहीं–कहीं तांगे, मोटर गाड़ी, नाली, दीवार, बिजली के ख़म्भे और आदमी से टकरा गये तो सिर्फ़ अरे लाहौलवला कहा और फिर अख़बार पढ़ते हुए रवाना हो गये।

सब से आख़री मोतालेआ यह है कि एक मिनट में चौबीस अख़बार खोले और पढ़कर फेंक दिये। मगर तमाम अहम उमूर को ज़ेहन नशीन कर लिया। यह मोतालेआ लीडरों और एडीटरों का हुआ करता है।

•••••••••••

मज़कूरा अक़्सामे–मोतालेआ में बहुत कम ऐसी क़िस्में हैं जिनसे मोताले का पूरा फ़ायदा नाज़िर को हो सकता है। वरना तमाम क़िस्म के मोताले बेकार हैं। यह तमाम क़िस्में उस वक़्त तक बेकार हैं जब तक कि आप मोताले का कोई ख़ास मक़सद मोक़र्रर करके मोतालेआ न करें।

पस आप ऐसी तहरीर का मोतालेआ न कीजिये जिससे आपको इल्मी, अदबी, तारीख़ी, तिजारती, मज़हबी या अख़लाक़ी व सियासी मालूमात हासिल न हों। और मोतालये से जैल के फ़वायद हासिल करने की कोशिश कीजिये।

1. अख़बार या किताब पढ़ते वक़्त कामिल सुकून के हालत पैदा कीजिये।
2. एक पेन्सिल लेकर मोतालेआ कीजिये और तहरीरे–मोतालेआ में जो नये अल्फ़ाज़, मुहावरे और मुस्तलेहात ऐसी मिलें जिन के माना और मतलब से आप ना आश्ना हों उन पर निशान लगा कर किसी से उनके माना दरियाफ़्त कर लीजिये। इससे आपकी मालूमात में इज़ाफ़ा होगा।
3. जिस क़द्र शाइस्ता और नये अल्फ़ाज़ आपको मिलें उन्हें गुफ़्तगू और अपनी तहरीर में ख़ुद भी इस्तेमाल की कोशिश कीजिये। इसी से आपकी ज़बान और तहरीर ताक़तवर होगी।
4. अख़बार में जिस क़द्र मुक़ामात आपको मिलें उन्हें नक़्शे में देखकर याद कर लीजिये इस से आपकी जुग़राफ़ियाई[1] मालूमात में इज़ाफ़ा होगा।

---

1. भौगोलिक

۵۔ ہر خبر کو اس کے اسباب سے جانچ کر اُس پر رائے قائم کیجیے۔ بغیر اسباب کے سمجھے ہوئے رائے غلط قائم ہوتی ہے۔

۶۔ ہر پسندیدہ خبر یا عبارت پر کوئی خاص نشان لگا دیا کیجیے۔ تاکہ دوسرے موقع پر وہ آسانی سے مل سکے۔

۷۔ سوتے وقت محض نیند بلانے کے لیے کوئی مطالعہ نہ کیجیے۔ یہ مفید ہونے کی جگہ مضر ہوتا ہے۔

۸۔ مطالعہ ہمیشہ اس وقت کیجیے۔ جب مزاج میں اعتدال اور بحالی ہو۔ فرحت کے وقت مطالعہ نہائت مفید ہے۔ ہمیشہ اپنی مادری زبان کی کتابوں رسالوں اور اخبارات کا مطالعہ کیجیے ۔ اس سے آپ کا قومی ، اعتبار اور وقار بڑھے گا۔ فقط۔

5. हर ख़बर को उसके असबाब से जाँच कर उस पर राय क़ायम कीजिये। बग़ैर असबाब के समझे हुए राय ग़लत क़ायम होती है।

6. हर पसंदीदा ख़बर या इबारत पर कोई ख़ास निशान लगा दिया कीजिये ताकि दूसरे मौक़े पर वह आसानी से मिल सके।

7. सोते वक़्त महज़ नींद बुलाने के लिए कोई मोतालेआ न कीजिये। यह मुफ़ीद होने की जगह मुज़िर[2] होता है।

8. मोतालेआ हमेशा उस वक़्त कीजिये जब मिज़ाज में एतदाल और बहाली हो। फ़रहत के वक़्त मोतालेआ निहायत मुफ़ीद है। हमेशा अपनी मादरी ज़बान की किताबों, रिसालों और अख़बारात का मोतालेआ कीजिये। इससे आपका क़ौमी एतबार और वेक़ार बढ़ेगा। फ़क़त।

---

1. हानिकारक

حاجی لق لق

غالب اینڈ گوئٹے

مجھ سے روایت کیا کامریڈ باری علیگ نے اور انھوں نے سُنا اپنے دوست مرزا کاظم سے اور مرزا کاظم نے سنائی آپ بیتی اور اب آپ مجھ سے سنیے "مرزا بیتی" میرے الفاظ میں اور اس کا ثواب پہنچایئے غالب اور گوئٹے کی ارواح کو اور دعا کیجیے میرے حق میں۔ واللہ اعلم بالصواب۔

مرزا کاظم جن دنوں برلن میں تھے ان ایام کا ذکر ہے کہ مرزا صاحب کی ملاقات ایک پنجابی سکھ پریتم سنگھ سے ہوئی اور دونوں تین چار روز تک ایک قہوہ خانے میں ایک دوسرے سے ملتے رہے۔ ایک روز سردار جی نے مرزا صاحب سے کہا کہ بھائی صاحب! بات یہ ہے کہ میں اٹلی جانا چاہتا ہوں اور میرے پاس پیسہ کوئی نہیں۔ اٹلی میں میرا مستقبل بہت شاندار ہو سکتا ہے۔ اس لیے اگر آپ کچھ روپیہ مجھے بطور قرض دے دیں یا کسی دوست سے دلا دیں تو میں اٹلی پہنچ کر تھوڑے ہی عرصے میں قرض چکا دوں گا۔

مرزا کاظم نے ایک لمحہ بھر سوچنے کے بعد کہا "قرض؟ سردار صاحب! یہاں پردیس میں کون ایسا ہندوستانی فارغ البال ہو سکتا ہے جو اپنے اللّے تللّوں کے علاوہ کسی دوست کو قرض دے سکے؟"

سردار جی: مجھے کوئی زیادہ روپیہ نہیں چاہیے صرف............"

ग़ालिब एन्ड गोयटे

मुझ से रिवायत किया कॉमरेड बारी अलीग ने और उन्होंने सुना अपने दोस्त मिर्ज़ा काज़िम से और मिर्ज़ा काज़िम ने सुनाई आपबीती और अब आप मुझ से सुनिये "मिर्ज़ा बीती" मेरे अल्फ़ाज़ में और इसका सवाब पहुँचाइये ग़ालिब और गोयटे की अरवाह को और दुआ कीजिये मेरे हक़ में। वल्लाहो आलम बिस्सवाब[1]।

मिर्ज़ा काज़िम जिन दिनों बर्लिन में थे उन अईयाम का ज़िक्र है कि मिर्ज़ा साहब की मुलाक़ात एक पंजाबी सिख प्रीतम सिंह से हुई और दोनों तीन चार रोज़ तक एक क़हवा ख़ाने में एक दूसरे से मिलते रहे। एक रोज़ सरदार जी ने मिर्ज़ा साहब से कहा कि भाई साहब! बात यह है कि मैं इटली जाना चाहता हूँ और मेरे पास पैसा कोई नहीं। इटली में मेरा मुस्तक़बिल बहुत शानदार हो सकता है। इसलिये अगर आप कुछ रुपया मुझे बतौर क़र्ज़ देदें या किसी दोस्त से दिला दें तो मैं इटली पहुँच कर थोड़े ही अर्से में क़र्ज़ चुका दूँगा।

मिर्ज़ा काज़िम ने एक लम्हा भर सोचने के बाद कहा "क़र्ज़? सरदार साहब! यहाँ परदेस में कौन ऐसा हिन्दुस्तानी फ़ारिग़ुलबाल हो सकता है जो अपने अलल्ले-तलल्लों के अलावा किसी दोस्त को कर्ज़ दे सके?"

सरदार जी : मुझे कोई ज़्यादा रुपया नहीं चाहिये सिर्फ़.......

---

1. भगवान ही बेहतर जानता है

مرزا صاحب: (بات کاٹ کر) ''اجی کم زیادہ کا تو سوال ہی پیدا نہیں ہوتا بات یہ ہے کہ کسی سے ایسی درخواست کرنا ہی بے معنی چیز ہے۔''

سردار جی: (مایوسی کے لہجے میں) ''تو پھر کیا کیا جائے؟''

مرزا صاحب: ''کیا کیا جائے بہت کچھ ہو سکتا ہے۔''

سردار جی: (پُر امید نگاہوں سے دیکھتے ہوئے) ''وہ کیا، وہ کیا؟''

مرزا صاحب: ''وہ یہ کہ ہندوستانیوں کی بجائے جرمنوں سے روپیہ حاصل کیا جائے، جو بہت آسان کام ہے۔''

سردار جی: ''وہ کیسے؟''

مرزا صاحب: ''میں کل بتاؤں گا۔ آپ اسی وقت یہاں تشریف لے آیئے۔''
(سردار جی کی آنکھیں ان الفاظ کو سن کر چمک اٹھیں اور آپ مرزا صاحب کا ''پیشگی'' شکریہ ادا کر کے رخصت ہوئے۔ رات بھر سردار جی کو نیند نہ آئی۔ اور دوسرے دن وقت مقررہ سے آدھ گھنٹہ پہلے ہی قہوہ خانے میں پہنچ گئے اور بے صبری کے ساتھ مرزا کاظم کا انتظار کرنے لگے۔ آخر مرزا آئے اور قہوہ کی پیالی پیتے ہوئے یوں گویا ہوئے):

مرزا صاحب: ''دیکھیے سردار جی! مرزا غالب ہندوستان کے بہت بڑے شاعر تھے آپ جانتے ہوں گے؟''

سردار جی: ''وہی نا جنہیں انڈین شکسپیئر کہتے ہیں؟''

مرزا صاحب: (مسکراتے ہوئے) ''نہیں نہیں۔ انڈین شکسپیئر تو آغا حشر کاشمیری مرحوم تھے جو مشہور ڈرامانویس تھے۔ غالب ان سے بہت پہلے عہدِ مغلیہ میں گزرے ہیں۔ آپ کا نام اسد اللہ خاں تھا اور وطن دہلی۔ آپ فارسی اور اُردو دونوں زبانوں کے بہت بڑے شاعر تھے۔ لیکن عمر تنگ دستی میں گزری، آپ کو شراب نوشی کا بہت شوق تھا۔ اس لیے کبھی فارغ البالی نصیب نہ ہوئی۔''

سردار جی: بالکل میرے چچا ہرنام سنگھ کی طرح، ذیلدار تھا۔ دو سو بیگھہ زمین تھی۔ ضلع بھر میں

मिर्ज़ा साहब : (बात काटकर) "अजी कम ज़्यादा का तो सवाल ही पैदा नहीं होता बात यह है कि किसी से ऐसी दरख़्वास्त करना ही बेमानी चीज़ है।"

सरदार जी : (मायूसी के लहज़े में) "तो फिर क्या किया जाये?"

मिर्ज़ा साहब : "क्या किया जाये बहुत कुछ हो सकता है"

सरदार जी : (पुर उम्मीद निगाहों से देखते हुए) "वह क्या, वह क्या?"

मिर्ज़ा साहब : "वह यह कि हिन्दुस्तानियों की बजाए जर्मनों से रुपया हासिल किया जाए, जो बहुत आसान काम है।"

सरदार जी : "वह कैसे?"

मिर्ज़ा साहब : "मैं कल बताउँगा। आप इसी वक़्त यहाँ तशरीफ़ ले आइये" (सरदार जी की आँखें इन अल्फ़ाज़ को सुनकर चमक उठीं और आप मिर्ज़ा साहब का "पेशगी" शुक्रिया अदा करके रुख़्सत हुए। रात भर सरदार जी को नींद न आई। और दूसरे दिन वक़्ते–मोक़र्ररा से आध घंटा पहले ही क़हवा ख़ाने में पहुँच गये और बे सब्री के साथ मिर्ज़ा काज़िम का इन्तज़ार करने लगे। आख़िर मिर्ज़ा आये और क़हवे की प्याली पीते हुए यूँ गोया हुए):

मिर्ज़ा साहब : देखिये सरदार जी! मिर्ज़ा ग़ालिब हिन्दुस्तान के बहुत बड़े शायर थे आप जानते होंगे?"

सरदार जी : "वही ना जिन्हें इण्डियन शैक्सपियर कहते है?"

मिर्ज़ा साहब : (मुस्कुराते हुए) "नहीं नहीं। इण्डियन शैक्सपियर तो आग़ा हश्र काश्मीरी मरहूम थे जो मशहूर ड्रामा नवीस थे। ग़ालिब उनसे बहुत पहले अहदे–मुग़लिया में गुज़रे हैं। आपका नाम असदुल्लाह ख़ाँ था और वतन देहली। आप फ़ारसी और उर्दू दोनों ज़बानों के बहुत बड़े शायर थे। लेकिन उम्र तंग दस्ती में गुज़री, आपको शराब नोशी का बहुत शौक़ था। इसलिए कभी फ़ारिग़ुलबाली नसीब न हुई।"

सरदार जी : बिल्कुल मेरे चचा हरनाम सिंह की तरह, जैलदार था। दो सौ बीघा ज़मीन थी। ज़िला भर में

عزت تھی۔ لیکن شراب نے بیڑا غرق کردیا ۔ آج اسے کوئی دس روپے اُدھار نہیں دیتا۔"

مرزا صاحب: "ہاں ہاں بس غالب کی بھی یہی حالت تھی۔ لیکن تھا بڑا خوددار مرتا مرگیا لیکن اُمراء کے سامنے نہ جھکا۔ اس کی ایک خوبی یہ تھی کہ........."

سردار سرتو ہلاتے جاتے تھے لیکن دل میں سوچتے تھے کہ بات تو جرمنوں سے روپیہ حاصل کرنے کی تھی۔ یہ مرزا صاحب غالب کا قصہ کیوں چھیڑ بیٹھے؟ آپ کچھ کہنا ہی چاہتے تھے کہ مرزا کاظم نے ان کے دل کی بات کو بھانپ کر ہاتھ سے اشارہ کیا جس کا مطلب یہ تھا کہ خاموشی سے سنتے جایئے۔

مرزا صاحب: "غالب ایک فلاسفر شاعر تھے اور انھوں نے وہی زمانہ پایا جو جرمنی کے فلاسفر شاعر گوئٹے کو نصیب ہوا۔ گوئٹے بھی.........."

مرزا صاحب یہاں تک کہہ پائے تھے کہ سردار جی سے صبر نہ ہو سکا اور انھوں نے بات کاٹ کر اپنی بات شروع کردی۔

سردار جی: "لیکن مرزا صاحب! جہنم میں جائیں غالب اور گوئٹے، آپ نے وعدہ کیا تھا کہ آپ جرمنوں سے روپیہ حاصل کرنے کی ترکیب بتائیں گے۔"

مرزا صاحب: "بالکل درست، اور میں وہی ترکیب تو بتا رہا ہوں ۔ آپ ذرا سنتے جایئے۔ آپ ہندوستان کے بہت بڑے مورخ، شاعر اور ادیب ہیں۔"

سردار جی: "میں اور شاعر؟"

مرزا صاحب: "بس آپ چپ رہیے ، اور میری بات سنیے ، آپ اتوار کے دن "ہومبرگ ہال" میں ایک تقریر کریں گے جس میں آپ غالب اور گوئٹے کی شاعری کا موازنہ فرمائیں گے۔"

سردار جی: "یہ کیا کہہ رہے ہیں آپ ؟ میں تو جرمن زبان کا ایک لفظ بھی نہیں جانتا اور نہ غالب اور گوئٹے کی شاعری سے واقف ہوں۔"

مرزا صاحب: آپ اُردو زبان میں، اور اگر یہ بھی نہ ہو سکے تو پنجابی زبان میں تقریر فرمایئے۔

इज़्ज़त थी। लेकिन शराब ने बेड़ा ग़र्क़ कर दिया। आज उसे कोई दस रुपया उधार नहीं देता।"

मिर्ज़ा साहब : "हाँ हाँ बस ग़ालिब की भी यही हालत थी। लेकिन था बड़ा खुद्दार मरता मर गया लेकिन उमरा[1] के सामने न झुका। उसकी एक ख़ूबी यह थी कि......" सरदार सर तो हिलाते जाते थे लेकिन दिल में सोचते थे कि बात जर्मनों से रुपया हासिल करने की थी। यह मिर्ज़ा साहब ग़ालिब का क़िस्सा क्यों छेड़ बैठे? आप कुछकहना ही चाहते थे कि मिर्ज़ा काज़िम ने उन के दिल की बात को भाँप कर हाथ से इशारा किया जिसका मतलब था कि ख़ामोशी से सुनते जाइये।

मिर्ज़ा साहब : ग़ालिब एक फ़िलास्फ़र शायर थे और उन्होंने वही ज़माना पाया जो जर्मनी के फ़िलास्फ़र शयर गोयटे को नसीब हुआ। गोयटे भी......."मिर्ज़ा साहब यहाँ तक कह पाये थे कि सरदार जी से सब्र न हो सका और उन्होंने बात काट कर अपनी बात शुरु कर दी।

सरदार जी : "लेकिन मिर्ज़ा साहब! जहन्नुम में जायें ग़ालिब और गोयटे, आप ने वादा किया था कि आप जर्मनों से रुपया हासिल करने की तरकीब बतायेंगे।"

मिर्ज़ा साहब : "बिल्कुल दुरुस्त, और मैं वही तरकीब तो बता रहा हूँ। आप ज़रा सुनते जाइये। आप हिन्दुस्तान के बहुत बड़े मुअर्रिख़, शायर और अदीब हैं।"

सरदार जी : "मैं और शायर?"

मिर्ज़ा साहब : "बस आप चुप रहिये, और मेरी बात सुनिये, आप इतवार के दिन "होमबर्ग हॉल" में एक तक़रीर करेंगे जिस में आप ग़ालिब और गोयटे की शायरी का मवाज़ना फ़रमायेंगे।"

सरदार जी : यह क्या कह रहे हैं आप? मैं तो जर्मन ज़बान का एक लफ़्ज़ भी नहीं जानता और न ग़ालिब और गोयटे की शायरी से वाक़िफ़ हूँ।"

मिर्ज़ा साहब : आप उर्दू ज़बान में, और अगर यह भी न हो सके तो पंजाबी ज़बान में तक़रीर फ़रमाइये।

---

1. धनी

بات صرف یہ ہے کہ بولتے جایئے ۔ غالب اور گوئٹے کی شاعری سے آپ واقف نہیں تو ان کا نام تو چنداں مشکل نہیں۔ ذرا کہیے تو۔

سردار جی: ''غالب گوئٹے - غالب گوئٹے۔''

مرزا صاحب: ''بالکل ٹھیک ! آپ پاس ہو گئے ۔ صرف اتنی بات ہے کہ ''غالب انڈ گوئٹے'' کہیے۔ انگریزی زبان میں جسے ہم اینڈ کہتے ہیں۔ جرمن میں اسے انڈ کہا جاتا ہے۔''

سردار جی: ''غالب انڈ گوئٹے......غالب انڈ گوئٹے۔''

مرزا صاحب: ''واہ وا۔ خوب! اب آپ ہندوستان کے بہت بڑے اسکالر ہیں۔ کل برلن کے اخبارات میں اعلان شائع ہوگا کہ ہندوستان کے مشہور اسکالر سردار پرتیم سنگھ اتوار کے دن بوقت شام ہومبرگ ہال میں ''غالب اور گوئٹے'' کے موضوع پر ایک زبردست تقریر کریں گے۔ داخلہ ٹکٹ کے ذریعہ ہوگا وغیرہ۔''

سردار جی: ''لیکن میں تقریر میں کہوں گا کیا۔''

مرزا صاحب: ''جو جی میں آئے کہتے جایئے۔ بس بولتے جایئے اور ہر تین چار جملوں کے بعد ''غالب انڈ گوئٹے'' کہتے رہیے۔''اتوار کی شام آ پہنچی ۔ ہومبرگ ہال جرمن ''اہل ذوق'' سے کھچا کھچ بھر گیا۔ صدارت کی کرسی پر برلن کے ایک مشہور ماہر ادبیات جلوہ افروز تھے ۔ ان کے ایک طرف سردار پرتیم سنگھ اور دوسری طرف مرزا کاظم بیٹھے تھے۔ تقریر کا وقت آ گیا اور سردار صاحب تقریر کرنے کے لیے اٹھے صاحب صدر نے اٹھ کر حاضرین سے پروفیسر پرتیم سنگھ کا تعارف کرایا۔ جس پر ہال خیر مقدم کی تالیوں سے گونج اٹھا۔

سردار صاحب نے اپنی تقریر شروع کی:

'' صاحبان ! مرزا اسداللہ خاں غالب دہلی کے رہنے والے تھے ،

बात सिर्फ यह है कि बोलते जाइये। ग़ालिब और गोयटे की शायरी से आप वाकिफ़ नहीं तो उनका नाम तो चन्दां मुश्किल नहीं। ज़रा कहिये तो।

सरदार जी : "ग़ालिब–गोयटे – ग़ालिब–गोयटे।"

मिर्ज़ा साहब : बिल्कुल ठीक! आप पास हो गये। सिर्फ़ इतनी सी बात है कि "ग़ालिब एन्ड गोयटे कहिये। अंग्रेजी ज़बान में जिसे हम ऐन्ड कहते हैं। जर्मन में उसे एन्ड कहा जाता है।"

सरदार जी : ग़ालिब एन्ड गोयटे........ग़ालिब एन्ड गोयटे।"

मिर्ज़ा साहब : वाह वा। ख़ूब! अब आप हिन्दुस्तान के बहुतबड़े स्कॉलर हैं। कल बर्लिन के अख़बारात में एलान शाया होगा कि हिन्दोस्तान के मशहूर स्कॉलर सरदार प्रीतम सिंह इतवार के दिन बवक़्त शाम होमबर्ग हॉल में "ग़ालिब और गोयटे" के मौज़ू पर एक ज़बरदस्त तक़रीर करेंगे। दाख़िला टिकट के ज़रिये होगा वग़ैरह।"

सरदार जी : "लेकिन मैं तक़रीर में कहूँगा क्या।"

मिर्ज़ा साहब : जो जी में आये कहते जाइये। बस बोलते जाइये और हर तीन चार जुमलों के बाद "ग़ालिब एन्ड गोयटे" कहते रहिये।"

इतवार की शाम आ पहुँची। होमबर्ग हॉल जर्मन "अहले ज़ौक़" से खचाखच भर गया। सदारत की कुर्सी पर बर्लीन के एक मशहूर माहिरे–अदबियात जलवा अफ़रोज़ थे। उनके एक तरफ़ सरदार प्रीतम सिंह और दूसरी तरफ़ मिर्ज़ा काज़िम बैठे थे। तक़रीर का वक़्त आ गया और सरदार साहब तक़रीर करने के लिए उठे। साहबे सद्र ने उठकर हाज़ेरीन से प्रोफ़ेसर प्रीतम सिंह का तआर्रुफ़ कराया। जिस पर हॉल ख़ैर मक़्दम की तालियों से गूंज उठा। सरदार साहब ने अपनी तक़रीर शुरु की:

"साहेबान! मिर्ज़ा असदुल्लाह ख़ाँ ग़ालिब देहली के रहने वाले थे,

اردو فارسی دونوں زبان کے شاعر تھے۔ شراب بہت پیتے تھے اس لیے ان کی عمر تنگ دستی میں گزری۔ دہلی ہندوستان کا دارالسلطنت ہے۔ وہاں ایک گھنٹہ گھر بھی ہے۔ چاندنی چوک میں سودا بیچنے والوں کی صدائیں بہت پیاری ہوتی ہیں ہر طرف سے آوازیں آتی ہیں — غالب اَنڈ گوئٹے۔"

مجمع نے پرزور تالیاں بجا کر آسمان سر پر اٹھالیا اور جب تالیوں کی گونج ختم ہوئی تو سردار صاحب نے تقریر کو جاری رکھتے ہوئے کہا:

"دہلی سے تین سو میل کے فاصلے پر لاہور ہے۔ میں ضلع لاہور کا رہنے والا ہوں۔ ہمارا علاقہ بڑا زرخیز ہے۔ پچھلے سال بارشیں کم ہوئی تھیں۔ اس لیے فصلیں اچھی نہ ہوئیں، اس سال گورو مہاراج کی کرپا ہے۔ نہر میں بھی پانی خوب رہا اور بارشیں بھی اچھی ہوگئیں، امید ہے کہ گیہوں کی فصل اچھی رہے گی۔ لاہور کی بہت سی چیزیں دیکھنے لایق ہیں۔ مثلاً بادشاہی مسجد، مہاراجہ رنجیت سنگھ کی سمادھی، چڑیا گھر عجائب گھر غالب انڈ گوئٹے!"

پھر تالیوں سے فضا گونج اُٹھی اور صاحب صدر کے لبوں پر تبسم رقص کرنے لگا۔ آپ نے میز پر ہاتھ مار مار کر مقرر کی "جادو بیانی" کی داد دی۔ سردار صاحب نے اپنی حوصلہ افزائی ہوتی دیکھی تو ذرا زیادہ بلند آواز سے تقریر کرنے لگے۔ فرمایا۔

"غالب انڈ گوئٹے کی بدقسمتی تھی کہ انھوں نے شری دربار صاحب امرتسر کے درشن نہ کیے۔ حتیٰ کہ وہ ضلع گورداسپور بھی نہ جاسکے، ورنہ وہاں کا گڑ کھا کر انھیں نانی سپنے میں یاد آجاتی۔ ضلع امرت سر میں ایک گاؤں جمیاری ہے۔ وہاں کے خربوزے بہت مشہور ہیں، قصور کی میتھی بہت خوشبودار ہوتی ہے اور پھر غالب انڈ گوئٹے کے کیا ہی کہنے گویا اِنڈیا انڈ جرمنی!"

اس دفعہ سردار نے استاد کے بتائے ہوئے سبق "غالب انڈ گوئٹے" "پرانڈیا اَنڈ جرمنی" کا اضافہ کرکے کمال کردکھایا۔ اور ان الفاظ نے سونے پر سہاگہ کا کام کیا۔ تالیوں سے ہال گونج اُٹھا۔ سردار صاحب نے تقریر جاری رکھی اور دو تین فقرے کہنے کے بعد فرمایا کہ:

उर्दू , फ़ारसी दोनों ज़बान के शायर थे। शराब बहुत पीते थे इसलिए उनकी उम्र तंगदस्ती में गुज़री। देहली हिन्दुस्तान का दारुस्सलतनत है। वहाँ एक घंटा घर भी है। चांदनी चौक में सौदा बेचने वालों की सदायें बहुत प्यारी होती हैं हर तरफ़ से आवाज़ें आती हैं – ग़ालिब एन्ड गोयटे।"

मजमे ने पुरज़ोर तालियाँ बजाकर आसमान सर पर उठा लिया और जब तालियों की गूंज ख़त्म हुई तो सरदार साहब ने तक़रीर को जारी रखते हुए कहा:

"देहली से तीन सौ मील के फ़ासले पर लाहौर है। मैं ज़िला लाहौर का रहने वाला हूँ। हमारा इलाक़ा बड़ा ज़रख़ेज़ है। पिछल साल बारिशें कम हुई थीं। इसलिए फ़सलें अच्छी न हुईं, इस साल गुरु महाराज की कृपा है। नहर में भी पानी ख़ूब रहा और बारिशें भी अच्छी हो गयीं, उम्मीद है कि गेहूँ की फ़सल अच्छी रहेगी। लाहौर की बहुत सी चीज़ें देखने लायक़ हैं। मसलन बादशाही मस्जिद, महाराजा रंजीत सिंह की समाधी, चिड़िया घर अजायब घर – ग़ालिब एन्ड गोयटे!"

फिर तालियों से फ़िज़ा गूंज उठी और साहबे–सदर के लबों पर तबस्सुम रक़्स करने लगा। आप ने मेज़ पर हाथ मारा–मार कर मोक़र्रिर की "जादूबयानी" की दाद दी। सरदार साहब ने अपनी हौसला अफ़ज़ाई होती देखी तो ज़रा ज्यादा बुलन्द आवाज़ में तक़रीर करने लगे। फ़रमाया –

ग़ालिब एन्ड गोयटे की बदक़िस्मती थी कि उन्होंने श्री दरबार साहब अमृतसर के दर्शन न किये। हत्ता कि वह ज़िला गुरदासपुर भी न जा सके वरना वहाँ का गुड़ खाकर उन्हें नानी सपने में याद आ जाती। ज़िला अमृतसर में एक गाँव चमयारी है। वहाँ के ख़रबूज़े भी बहुत मशहूर हैं, क़ुसूर की मेथी बहुत ख़ुश्बूदार होती है और फ़िर ग़ालिब एन्ड गोयटे के क्या कहने गोया इण्डिया एन्ड जर्मनी!"

इस दफ़ा सरदार ने उस्ताद के बताये हुए सबक़ "ग़ालिब एन्ड गोयटे" पर "इण्डिया एन्ड जर्मनी" का इज़ाफ़ा करके कमाल कर दिखाया। और इन अल्फ़ाज़ ने सोने पर सुहागे का काम किया। तालियों से हॉल गूंज उठा। सरदार साहब ने तक़रीर जारी रखी और दो तीन फ़िक़रे कहने के बाद फ़रमाया कि:

''صاحبان! اب غالب کے اشعار بھی سنیے!''

اس مقام پر مرزا کاظم نے اُٹھ کر حاضرین سے جرمن زبان میں کہا کہ پروفیسر پرتیم سنگھ اب غالب کے چند اشعار سنائیں گے۔ سردار صاحب نے اپنے مخصوص انداز میں یہ گانا شروع کر دیا:

اساں رت دے
نی اساں رت دے شرابی رہنانی ہر نام کورے نارے
اودھ وچ کندھ کرلئے

مرزا کاظم کرسی سے اچھل پڑے، جس پر حاضرین نے تالیوں سے فضا میں گونج پیدا کر دی اور ایسا معلوم ہوتا تھا کہ سب نے ان اشعار کو بے حد پسند کیا ہے سردار صاحب پھر بولے!

اسیں مر گئے۔
نی اسیں مر گئے کمایاں کردے نی ہر نام کورے نارے
اجے تیرے بند نہ ہے ہائے نی اسیں مر گئے

اس دفعہ بھی حسب معمول کافی داد ملی۔ لیکن داد کی حد تو اس وقت ہوئی جب سردار صاحب نے غالب کی وہ ''مثلث'' سنائی جس کی ٹیپ کا مصرعہ یہ تھا:

''موڑیں بابا ڈانگ والیا چھئی''

ڈیڑھ گھنٹہ گزر گیا اور سردار پرتیم سنگھ مورخ، شاعر اور ماہر ادبیات کی تقریر ختم ہوئی، اس کے بعد مرزا کاظم اٹھے اور انھوں نے نہایت فصیح جرمن زبان میں بیان کیا کہ پروفیسر نے جس قابلیت کے ساتھ غالب اور گوئٹے کا موازنہ کیا ہے شاید ہی آج تک کسی نے کیا ہو۔ کم از کم برلن میں تو آج تک ایسی تقریر نہ ہوئی ہوگی اور مجھے فخر ہے کہ میرے ملک نے پروفیسر صاحب جیسے آدمی پیدا کیے ہیں۔ میں اس پوری تقریر کا ترجمہ کر کے برلن کے اخبارات میں شایع کراؤں گا اور آپ دیکھیں گے کہ میرے وطن کے مایہ ناز ماہر ادبیات نے علم و فضل کے کیا کیا دریا بہائے ہیں۔ میں آپ کا شکریہ ادا کرتا ہوں کہ آپ نے پروفیسر صاحب کے خیالات سننے کی تکلیف گوارا فرمائی...... اس کے بعد صاحب صدر اُٹھے اور انھوں نے پروفیسر صاحب

"साहिबान! अब ग़ालिब के अशआर भी सुनिये!"

इस मक़ाम पर मिर्ज़ा क़ाज़िम ने उठकर हाज़रीन से जर्मन ज़बान में कहा कि प्रोफ़ेसर प्रीतम सिंह अब ग़ालिब के चन्द अशआर सुनायेंगे। सरदार साहब ने अपने मख़सूस अन्दाज़ में यह गाना शुरु कर दिया:

असां नित दे

नी असां नित दे शराबी रहनानी हरनाम कौरे नारे

अवध विच कन्ध कर लै

मिर्ज़ा क़ाज़िम कुर्सी से उछल पड़े, जिस पर हाज़रीन ने तालियों से फ़िज़ा में गूंज पैदा कर दी और ऐसा मालूम होता था कि सब ने इन अशआर को बेहद पसंद किया है

सरदार साहब फिर बोले!

असीं मर गये

 नी असीं मर गये कमाया करदेनी हरनाम कौरे नारे

अजे तेरे बंद न है – हाय नी असीं मर गये

इस दफ़ा भी हस्बे मामूल काफ़ी दाद मिली। लेकिन दाद की हद तो उस वक़्त हुई जब सरदार साहब ने ग़ालिब की वह "मुसल्लस[1]" सुनाई जिसकी टीप का मिसरा यह था:

"मोड़ें बाबा डॉग वालिया छई"

डेढ़ घंटा गुज़र गया और सरदार प्रीतम सिंह मुअर्रिख़[2], शायर और माहिर अदबियात की तक़रीर ख़त्म हुई, उसके बाद मिर्ज़ा क़ाज़िम उठे और उन्हों ने निहायत फ़सीह जर्मन ज़बान में बयान किया कि प्रोफ़ेसर ने जिस क़ाबिलियत के साथ ग़ालिब और गोयटे का मवाज़ना किया है शायद ही आज तक किसी ने किया हो। कम अज़ कम बर्लिन में तो आज तक ऐसी तक़रीर न हुई होगी और मुझे फ़ख़्र है कि मेरे मुल्क ने प्रोफ़ेसर साहब जैसे आदमी पैदा किये हैं। मैं इस पूरी तक़रीर का तर्जुमा करके बर्लिन के अख़बारात में शाया कराऊँगा और आप देखेंगे कि मेरे वतन के मायए–नाज़ माहिरे–अदबियात ने इल्मो–फ़ज़ल के क्या क्या दरिया बहाये हैं। मैं आप का शुक्रिया अदा करता हूँ कि आपने प्रोफ़ेसर साहब के ख़यालात सुनने की तकलीफ़ गवारा फ़रमाई..... उसके बाद साहबे सद्र उठे और प्रोफ़ेसर साहब

---

1. तीन पंक्तियों वाली कविता 2. इतिहासकार

اور مرزا کاظم کا شکریہ حاضرین کی طرف سے ادا کیا اور جلسے کے اختتام کا اعلان کیا۔ پھر کیا تھا بڑے بڑے ادیب، شاعر، اخبار نویس اور رئیس سردار صاحب سے مصافحہ کرنے کو لپکے اور آپ کو بڑی مشکل سے ہال کے دروازے تک لے جایا گیا اسی رات کو مرزا کاظم پروفیسر پرتیم سنگھ کو ٹرین پر سوار کرانے کے لیے اسٹیشن تک لے گئے اور دونوں کی جیبیں نوٹوں سے پُر تھیں۔

और मिर्ज़ा काज़िम का शुक्रिया हाज़रीन की तरफ़ से अदा किया और जलसे के एख़्ततताम का एलान किया। फिर क्या था बड़े-बड़े अदीब, शायर, अख़्बार नवीस और रईस सरदार साहब से मोसाफ़हा करने को लपके और आपको बड़ी मुश्किल से हॉल के दरवाज़े तक ले जाया गया – उसी रात मिर्ज़ा काज़िम प्रोफ़ेसर प्रीतम सिंह को ट्रेन पर सवार कराने के लिए स्टेशन तक ले गये और दोनों की जेबें नोटों से पुर थीं।

رشید احمد صدیقی

دھوبی

علی گڑھ میں نوکر کو ''آقائے نام دار'' بھی کہتے ہیں اور وہ لوگ کہتے ہیں جو آج کل خود آقا ہیں، یعنی طلباء! اس سے آپ اندازہ لگا سکتے ہیں کہ نوکر کا کیا درجہ ہے، پھر اَیسے آقا کا کیا کہنا جو ''سفید پوش'' ہو۔ سپید پوش کا ایک لطیفہ بھی سُن لیجیے۔ آج سے دُور اور میری آپ کی جان سے بھی دُور ایک زمانے میں پولس کا بڑا ادور دورہ تھا پولس نے ایک شخص کا بدمعاشی میں چالان کر دیا۔ کلکٹر صاحب کے یہاں مقدمہ پیش ہوا ملزم حاضر کیا گیا تو صاحب دنگ رہ گئے، نہایت صاف ستھرے کپڑے پہنے ہوئے صورت شکل سے مردِ معقول، بات چیت نستعلیق۔ کلکٹر صاحب نے تعجب سے پیش کار سے دریافت کیا کہ اس شخص کا بدمعاشی میں کیوں کر چالان کیا گیا؟ دیکھنے میں تو یہ بالکل بدمعاش نہیں معلوم ہوتا۔

پیش کار نے جواب دیا ''حضور سزا دینے میں تامل نہ فرمائیں، یہ سفید پوش بدمعاش ہے۔'' یہاں سفید پوش اس لیے استعمال کیا گیا ہے کہ میں نے آج تک کسی دھوبی کو میلے کپڑے

रशीद अहमद सिद्दीक़ी

धोबी

अलीगढ़ में नौकर को "आक़ाए–नामदार" भी कहते हैं और वह लोग कहते हैं जो आजकल खुद आक़ा हैं, यानी तोलबा[1]! इस से आप अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि नौकर का क्या दर्जा है, फिर ऐसे आक़ा का क्या कहना जो "सफ़ेद पोश" हो। सपेद पोश का एक लतीफ़ा भी सुन लीजिये। आज से दूर और मेरी आपकी जान से भी दूर एक ज़माने में पुलिस का बड़ा दौर दौरा था पुलिस ने एक शख़्स का बदमाशी में चालान कर दिया। कलेक्टर साहब के यहाँ मोक़दमा पेश हुआ मुल्ज़िम हाज़िर किया गया तो साहब दंग रह गये, निहायत साफ़ सुथरे कपड़े पहने हुए सूरत शक्ल से मर्दे–माकूल बात चीत नस्तालीक़। कलेक्टर साहब ने तअज्जुब से पेशकार से दरयाफ़्त किया कि इस शख़्स का बदमाशी में क्यों चालान किया गया? देखने में तो यह बिल्कुल बदमाश नहीं मालूम होता।

पेशकार ने जवाब दिया "हुज़ूर सज़ा देने में तअम्मुल न फ़रमायें, ये सफ़ेद पोश बदमाश है" यहाँ सफ़ेद पोश इसलिए इस्तेमाल किया गया है कि मैं आज तक किसी धोबी को मैले कपड़े

1. विद्यार्थी

پہنے نہ دیکھا۔ نہ اس کو خود اپنے کپڑے پہنے دیکھا بلکہ میرا اپنا کپڑا پہنے ہوئے اکثر پایا ہے۔ بعضوں کو اس پر غصہ بھی آیا ہوگا کہ ان کا کپڑا دھوبی پہنے ہو۔ کچھ کو اس کا غم بھی ہوگا کہ خود ان کو دھوبی کے کپڑے پہننے کا موقع نہ ملا۔ میں اپنے کپڑے دھوبی کو پہنے دیکھ کر بہت متاثر ہوا ہوں کہ دیکھیے زمانہ کیسا آگیا ہے کہ یہ غریب میرے کپڑے پہننے پر اُتر آیا۔ کبھی کبھی اس پر جذبہ افتخار وانتقام بھی محسوس کیا ہے کہ ظالم کو میرا ایسا کرتہ یا قمیص پہننی پڑی جس پر نہ جن نے نہ کبھی اُس کرتہ یا قمیص نے مجھ پر فخر کیا۔ یہی نہیں بلکہ دوسروں نے بھی مجھے اور قمیص دونوں کو در پردہ اچھی نظر سے نہیں دیکھا۔

دھوبیوں سے اقبالؔ بھی کچھ زیادہ مطمئن نہ تھے۔ مجھے اشعار یاد نہیں رہتے اور جو یاد آتے ہیں وہ شعر نہیں رہ جاتے۔ سہل ممتنع بن جاتے ہیں۔ کبھی سہل زیادہ اور ممتنع کم۔ اکثر ممتنع زیادہ سہل بالکل نہیں۔ اقبالؔ نے میرے خیال میں (جس میں اِس وقت دھوبی بسا ہوا ہے) شاید کبھی کہا تھا ع

آہ بے چاروں کے اعصاب پہ دھوبی ہے سوار (۱)

لیکن دھوبیوں کے ساتھ نا انصافی نہ کروں گا۔ بہت سے اَیسے شعراء بھی دیکھنے میں آئے ہیں جن کے کپڑے اس قابل نہیں ہوتے کہ دنیا کا کوئی دھوبی سوائے ہندوستان کے دھوبی کے دھونے کے قبول کرلے۔ اگر ان کپڑوں کو کوئی جگہ مل سکتی ہے تو صرف ان شعراء کے جسم پر۔ میں سمجھتا ہوں کہ لڑائی (۲) کے بعد جب ہر چیز کی درو بست نئے سرے سے کی جائے گی اُس وقت عام لوگوں کا یہ حق بین الاقوامی پولیس مانے اور منوائے گی کہ جس شاعر کے کپڑے کوئی دھوبی دھوتا ہو، بشرطیکہ دھوبی خود شاعر نہ ہو، اس سے کپڑے دُھلوانے والوں کو یہ حق پہنچتا ہے کہ دُھلائی کا نرخ کم کرالیں، یہ شعراء اوران کے بعض قدرداں

---

(۱) اقبالؔ کا مشہور شعر ہے۔

ہند کے شاعر وصورت گرو افسانہ نویس
آہ بے چاروں کے اعصاب پہ عورت ہے سوار

(۲) یہ مضمون دوسری جنگِ عظیم کے زمانے میں لکھا گیا تھا۔

पहने न देखा। न उसको ख़ुद अपने कपड़े पहने देखा बल्कि मेरा अपना कपड़ा पहने हुए अक्सर पाया है। बाज़ों को इस पर भी गुस्सा आया होगा कि उनका कपड़ा धोबी पहने हो। कुछ को इसका ग़म होगा कि ख़ुद उनको धोबी के कपड़े पहनने का मौक़ा न मिला। मैं अपने कपड़े धोबी को पहने देखकर बहुत मुतास्सिर हुआ हूँ कि देखिये कैसा ज़माना आ गया है कि यह ग़रीब मेरे कपड़े पहनने पर उतर आया। कभी कभी उस पर जज़्बए–इफ़्तख़ारो–इन्तक़ाम भी महसूस किया है कि ज़ालिम को मेरा ऐसा कुर्ता या क़मीज़ पहननी पड़ी जिस पर न जिन ने न कभी उस कुर्ते या क़मीज़ ने मुझ पर फ़ख़्र किया। यही नहीं बल्कि दूसरों ने भी मुझे और क़मीज़ दोनों को दरपर्दा अच्छी नज़र से नहीं देखा।

धोबियों से इक़बाल भी कुछ ज़्यादा मुत्मइन न थे। मुझे अशआर याद नहीं रहते और जो याद आते हैं वह शेर नहीं रह जाते। सेहले–मुमतना बन जाते हैं। कभी सेहल ज़्यादा और मुमतना कम। अक्सर मुमतना ज़्यादा सेहल बिल्कुल नहीं। इक़बाल ने मेरे ख़याल में (जिस में इस वक़्त धोबी बसा हुआ है) शायद कभी कहा था –

आह बेचारों के आसाब पे धोबी है सवार[1]

लेकिन धोबियों के साथ नाइन्साफ़ी न करूँगा। बहुत से ऐसे शोअरा भी देखने में आये हैं जिनके कपड़े इस क़ाबिल नहीं होते कि दुनिया का कोई धोबी सिवाए हिन्दुस्तान के धोबी के धोने के क़ुबूल कर ले। अगर उन कपड़ों को कोई जगह मिल सकती है तो सिर्फ़ उन शोअरा के जिस्म पर। मैं समझता हूँ कि लड़ाई[2] के बाद जब हर चीज़ की दरोबस्त नये सिरे से की जायेगी उस वक़्त आम लोगों का यह हक़ बैनलअक़वामी[3] पुलिस माने और मनवायेगी कि जिस शायर के कपड़े कोई धोबी धोता हो, बशर्तेकि धोबी ख़ुद शायर न हो, उसके कपड़े धुलवाने वालों को यह हक़ पहुँचता है कि धुलाई का नरख़ कम करा लें, ये शोअरा और उनके क़द्रदाँ

---

1. इक़बाल का मशहूर शेर है –

हिन्द के शायरो सूरतगरो अफ़साना नवेस
आह बेचारों के आसाब पे औरत है सवार

2. यह मज़मून दूसरी जंगे–अज़ीम के ज़माने में लिखा गया था।
3. अंतर्राष्ट्रीय

بھی دھوبی کے سپرد اپنے کپڑے اس وقت کرتے ہیں جب ان میں اور کپڑے میں کوڑا اور کوڑا اگاڑی کا رشتہ پیدا ہو جاتا ہے۔

دھوبی کپڑے چراتے ہیں، بیچتے ہیں، کرایہ پر چلاتے ہیں، گم کرتے ہیں، اس کی شکل بگاڑ کر دیتے ہیں، پھاڑ ڈالتے ہیں، یہ سب میں مانتا ہوں، آپ بھی مانتے ہوں گے، لیکن اس میں بھی شک نہیں کہ ہمارے آپ کے کپڑے اکثر ایسی حالت میں اترتے ہیں کہ دھوبی کیا کوئی دیوتا بھی دھوئے تو پھر سے ان کو کپڑے کی ہیئت و حیثیت میں واپس نہیں لا سکتا۔ مثلاً دھوبی نے ہمارے آپ کے ان کپڑوں یا کرشموں کو جو پہلے سے میل میں تبدیل ہو چکے تھے پانی میں ڈالا ہو، میل پانی میں مل گیا جیسے خاک کا پتلا خاک میں مل جاتا ہے خاک خاک میں، آگ آگ میں، پانی پانی میں اور ہوا ہوا میں۔ ان کپڑے پہننے والوں کا کمال یہ ہے کہ انہوں نے کپڑے کو تو اپنی شخصیت میں جذب کر لیا اور شخصیت کو کثافت میں منتقل کر دیا مثلاً:

لطافت (۱) بے کثافت جلوہ پیدا کر نہیں سکتی!

اور یہی کثافت ہم دنیا داروں کو پگڑی، قمیص اور شلوار میں نظر آتی ہو۔ یہ بات میں نے یوں ہی نہیں کہہ دی ہے۔ اونچے قسم کے فلسفے میں آیا ہے کہ عرض بغیر جوہر کے قائم رہ سکتا ہے اور نہ بھی آیا ہو تو فلسفیوں کو دیکھتے یہ بات کبھی نہ کبھی ماننی پڑے گی۔

دھوبی کے ساتھ اور بہت سی باتیں ذہن میں آتی ہیں، مثلاً گدھا، رسی، ڈنڈا اُس کا کتا، دھوبن (میری مراد پرندے سے ہے) اِستری (اس سے بھی میری مراد وہ نہیں ہے جو آپ سمجھتے ہیں) مَیلے، ثابت، پھٹے پُرانے کپڑے وغیرہ۔ ممکن ہے آپ کی جیب میں بھولے سے کوئی اَیسا خط رہ گیا ہو جس کو آپ سینے سے لگائے رہتے ہوں، لیکن کسی شریف آدمی کو نہ دکھا سکتے ہوں اور دھوبی نے اُسے دھو پچھاڑ کر آپ کے آنسو خشک کرنے کے لیے بلاٹنگ پیپر بنا دیا ہو، یا کوئی یونانی نسخہ جیب میں رکھ کر بھول گئے ہوں اور دھوبی اسے بالکل ''صاف نمودہ'' کر کے لایا ہو۔

---

(۱) غالب کا شعر ہے:۔ لطافت بے کثافت جلوہ پیدا کر نہیں سکتی
چمن زنگار ہے آئینہ بادِ بہاری کا !!!

भी धोबी के सुपुर्द अपने कपड़े उस वक़्त करते हैं जब उन में और कपड़ों में कूड़ा और कूड़ा गाड़ी का रिश्ता पैदा हो जाता है।

धोबी कपड़े चुराते हैं, बेचते हैं, किराये पर चलाते हैं, गुम करते हैं, उसकी शक्ल बिगाड़ देते हैं, फ़ाड़ डालते हैं, यह सब मैं मानता हूँ , आप भी मानते होंगे, लेकिन इसमे शक नहीं कि हमारे आपके कपड़े अक्सर ऐसी हालत में उतर आते हैं कि धोबी क्या कोई देवता भी धोये तो फिर उनको कपड़े की हैयतो–हैसियत में वापस नहीं ला सकता। मसलन धोबी ने हमारे आपके कपड़ों या करिश्मों को जो पहले से मैल में तब्दील हो चुके थे पानी में डाला हो, मैल पानी में मिल गया जैसे ख़ाक का पुतला ख़ाक में मिल जाता है ख़ाक ख़ाक में, आग आग में, पानी पानी में और हवा हवा में। इन कपड़े पहनने वालों का कमाल यह है कि उन्होंने कपड़े को तो अपनी शख़्सीयत में जज़्ब कर लिया और शख़्सीयत को कसाफ़त[1] में मुन्तकिल कर दिया है मसलन –

लताफ़त[2] बे कसाफ़त जलवा पैदा कर नहीं सकती

और यही कसाफ़त हम दुनियादारों को पगड़ी, क़मीज़ और शलवार में नज़र आती हो। यह बात मैंने यूँ ही नहीं कह दी है। ऊँचे क़िस्म के फ़लसफ़े में आया है कि अर्ज़ बग़ैर जौहर के क़ायम रह सकता है और न भी आया हो तो फ़लसफ़ियों को देखते यह कमी न कभी माननी पड़ेगी।

धोबी के साथ और बहुत सी बातें ज़ेहन में आती हैं, मसलन गधा, रस्सी, डंडा, उसका कुत्ता, धोबन (मेरी मुराद परिन्द से है) स्त्री (इससे भी मेरी मुराद वह नहीं है जो आप समझते हैं) मैले, साबुत, फटे पुराने कपड़े बग़ैरह। मुमकिन है आप की जेब में भूले से ऐसा कोई ख़त रह गया हो जिसको आप सीने से लगाये रहते हों, लेकिन किसी शरीफ़ आदमी को न दिखा सकते हों और धोबी ने उसे धो पछाड़ कर आप के आँसू ख़ुश्क करने के लिए ब्लाटिंग पेपर बना दिया हो, या कोई यूनानी नुस्ख़ा जेब में रख कर भूल गये हों और धोबी उसे बिल्कुल "साफ़ नमूदा" करके लाया हो।

---

1. गंदगी
2. ग़ालिब का शेर है –

लताफ़त बे कसाफ़त जलवा पैदा कर नहीं सकती
चमन ज़ंगार है आईनए बादे बहारी का !!!

لڑائی اور مہنگائی کے زمانے میں یہاں اور بہت سی دشواریاں ہیں وہاں یہ آفت بھی کم نہیں کہ بچے کپڑے پھاڑتے ہیں، عورتیں کپڑے سمیٹتی ہیں، دھوبی کپڑے چراتے ہیں، دکان دار قیمتیں بڑھاتے ہیں اور ہم کو دام ادا کرنے پڑتے ہیں۔ لڑائی کے بعد زندگی کی ازسرنو تنظیم ہو یا نہ ہو، کوئی تدبیر ایسی نکالنی پڑے گی کہ کپڑے اور دھوبی کی مصیبتوں سے نوع انسان کو کلّیۃً نجات نہ ملے تو کچھ سہولت ہی میّسر آجائے۔

کپڑے کا مصرف پھاڑنے کے علاوہ حفاظت، نمائش اور ستر پوشی ہے۔ میرا خیال ہے کہ یہ باتیں اتنی حقیقی نہیں ہیں جتنی ذہنی یا رسمی۔ سردی سے بچنے کی ترکیب یونانی اطبّاء اور ہندوستانی سادھو جانتے ہیں۔ ایک کشتہ کھاتا ہے، دوسرا کچھ اس طرح کی چیز جسم پر مل لیتا ہے۔ نمائش میں ستر پوشی اور ستر نمائی دونوں شامل ہیں۔ اگر ان پر کنٹرول عائد کر دیا جائے تو کپڑا یقیناً کم خرچ ہوگا اور دیکھ بھال میں بھی سہولت ہوگی۔ جنگ کے دوران میں یہ مراحل طے ہو جاتے تو صلح کا زمانہ عافیت سے گذرتا۔ لیکن اگر ایسا نہ ہو سکے تو پھر دنیا کی حکومتوں کو چاہیے کہ وہ تمام سائنس دانوں اور کاری گروں کو جمع کر کے قوم کی اس مصیبت کو ان کے سامنے پیش کریں کہ آئندہ سے لباس کے بجائے ''اینٹی دھوبی ٹینک'' کیوں کر نہائے اور اوڑھے، پہنے جا سکتے ہیں۔ اگر یہ ناممکن ہے اور دھوبیوں کے پیدائشی حقوق پھاڑنے، پچھاڑنے اور چرانے کے مجروح ہونے کا اندیشہ ہو جس کو دنیا کی خدا ترس حکومتیں گوارا نہیں کر سکتیں یا بعض بین الاقوامی پیچیدگیوں کے پیش آنے کا اندیشہ ہو تو پھر رائے عامہ کو ایسی تربیت دی جائے کہ لباس پہننا ہی یک قلم موقوف ہو جائے اور دھوبیوں کو کپڑے دھونے کے بجائے بین الاقوامی معاہدوں اور ہندوستان کی تاریخوں کو دھونے پچھاڑنے اور پھاڑنے پر معمور کر دیا جائے بفرض محال ستر پوشی پر کنٹرول ممکن ہو، یا ترک لباس کی اسکیم پر بزرگان قوم جامہ سے باہر ہو جائیں اور دھوبی ایجی ٹیشن کی نوبت آئے تو پھر ملک کے طول وعرض میں ''بھارت بھبھوت بھنڈار'' کھول دیے جائیں اور ہم سب سر جوڑ کر اور ایک دوسرے کے کان پکڑ کر ایسے بھبھوت ایجاد کرنے کی کوشش کریں جن میں چائے کے خواص ہوں، یعنی گرمی میں ٹھنڈک اور سردی میں گرمی پیدا کریں۔ ستر پوشی سے چشم پوشی کرنا پڑے گی اگر ہم اتنی ترقی نہیں کر سکتے ہیں اور قوم وملک کی نازک اور

लड़ाई और महंगाई के ज़माने में जहाँ और बहुत सी दुश्वारियाँ हैं वहाँ यह आफ़त भी कम नहीं कि बच्चे कपड़े फाड़ते हैं, औरतें कपड़े समेटती हैं, धोबी कपड़े चुराते हैं, दुकानदार कीमतें बढ़ाते हैं और हम को दाम अदा करने पड़ते हैं। लड़ाई के बाद की ज़िन्दगी की अज़ सरे नौ तन्ज़ीम हो या न हो, कोई तदबीर ऐसी निकालनी पड़ेगी कि कपड़े और धोबी की मुसीबतों से नौऐ–इन्सान को कुल्लियतन निजात न मिले तो कुछ सहूलत ही मयस्सर आ जाये।

कपड़े का मसरफ़ फाड़ने के अलावा हिफ़ाज़त, नुमाइश और सत्र पोशी[1] है। मेरा ख़याल है कि यह बातें इतनी हक़ीक़ी नहीं हैं जितनी ज़ेहनी या रस्मी। सर्दी से बचने की तरकीब यूनानी अतिब्बा और हिन्दुस्तानी साधू जानते हैं। एक कुश्ता खाता है, दूसरा इस तरह की चीज़ जिस्म पर मल लेता है। नुमाइश में सत्र पोशी और सत्र नुमाई दोनों शामिल हैं। अगर इन पर कन्ट्रोल आयद कर दिया जाय तो कपड़ा यक़ीनन कम ख़र्च होगा और देख भाल में भी सहूलत होगी। जंग के दौरान यह मराहिल तय हो जाते हैं तो सुलह का ज़माना आफ़ियत से गुज़रता, लेकिन अगर ऐसा न हो सके तो फिर दुनिया की हुकूमतों को चाहिए कि वह तमाम साइंसदानों और कारीगरों को जमा करके क़ौम की इस मुसीबत को उनके सामने पेश करें कि आइन्दा से लिबास के बजाए "एन्टी धोबी टैंक" क्योंकर नहाये और ओढ़े, पहने जा सकते हैं। अगर यह नामुमकिन है और धोबियों के पैदाइशी हुकूक फाड़ने, पछाड़ने और चुराने के मजरुह होने का अन्देशा हो जिसको दुनिया की ख़ुदा तरस हुकूमतें गवारा नहीं कर सकतीं या बाज़ बैनुलअक़वामी पेचीदगियों के पेश आने का अन्देशा हो तो फिर राय आम्मा को ऐसी तरबीयत दी जाय कि लिबास पहनना ही यक क़लम मौकूफ़ हो जाय और धोबियों को कपड़े धोने के बजाय बैनुलअक़वामी मोआहेदों और हिन्दुस्तान की तारीख़ों को धोने पछाड़ने पर मामूर कर दिया जाय बफ़र्ज़े मोहाल सत्र पोशी पर कन्ट्रौल मुमकिन हो, या तर्के–लिबास की स्कीम पर बुज़ुर्गाने–क़ौम जामे से बाहर हो जायें और धोबी एजीटेशन की नौबत आये तो फिर मुल्क के तूलो–अर्ज़ में "भारत भभूत भंडार" खोल दिये जाएँ और हम सब सर जोड़कर और एक दूसरे के कान पकड़ कर ऐसे भभूत ईजाद करने की कोशिश करें जिन में चाय के ख़वास हों, यानी गर्मी में ठंढक और सर्दी में गर्मी पैदा करें। सत्र पोशी से चश्म पोशी करना पड़ेगी अगर हम इतनी तरक़्की नहीं कर सकते हैं और क़ौम व मुल्क की नाज़ुक और

---

1. गुप्तांगों को छिपाना

ناگفتہ بہ حالت دیکھتے ہوئے بھی ستر کو قربان نہیں کر سکتے تو بھارت بھبھوت بھنڈار کے ذریعہ ایسے انجینئر اور آرٹسٹ پیدا کیے جائیں گے جو ستر کو کچھ کا کچھ کر دکھائیں گے۔ جیسے آج کل لڑنے والی حکومتیں دشمن کی نظر کو دھوکا دینے کے لیے ٹٹی قائم کر دیتی ہیں جس کے تصرف سے دیوار و در، در و دیوار نظر آنے لگتے ہیں (۱)۔

تفصیل میں نہیں پڑنا چاہتا صرف اتنا عرض کر دینا کافی ہوگا کہ بھبھوتیائی آرٹ کے ذریعہ ہم کسی حصۂ جسم کو یا ان میں ہر ایک کو اس طرح مسخ یا مزین کر سکیں گے کہ وہ کچھ کا کچھ نظر آئے۔ بقول ایک شاعر، جو اس آرٹ کے رمز سے غالباً واقف تھے۔ یعنی

وحشت میں ہر اک نقشہ اُلٹا نظر آتا ہے
مجنوں نظر آتی ہے لیلیٰ نظر آتا ہے !!

شعراء نے ہمارے آپ کے اعضاء و جوارح کے بارے میں تشبیہ، استعارہ یا جنوں میں جو کچھ کہا ہے بھارت، بھبھوت کے آرٹسٹ اسی قسم کی چیز ہمارے آپ کے جسم پر بنا کر غزل کو نظم معرا کر دکھائیں گے، اُس وقت آرٹ برائے آرٹ و آرٹ برائے زندگی کا تنازعہ بھی ختم ہو جائے گا۔ بہت ممکن ہے بھبھوت بھنڈار میں ایسے سُرمے بھی تیار کیے جاسکیں جن کی ایک سلائی پھیرنے سے چھوٹی چیزیں بڑی اور بڑی چھوٹی نظر آنے لگیں یا دور کی چیز قریب اور قریب کی دور نظر آئے۔ اس طور پر شعراء کو آرٹ اور تصوّف دونوں کی طرف سے اطمینان ہو جائے گا۔ دوسری طرف ستر دوستوں یا ستر دشمنوں کی بھی اشک شوئی ہو جائے گی۔ بالفاظِ دیگر ستر کا منظر اور مقصد دونوں فوت نہیں تو مشتبہ ضرور ہو جائیں گے اُس وقت دھوبیوں کو معلوم ہوگا کہ ڈکٹیٹر کا انجام کیا ہوتا ہے۔

علی گڑھ میں میرے زمانۂ طالب علمی کے ایک دھوبی کا حال سنیے جو اب بہت معمر ہو گیا ہے۔ وہ اپنے گاؤں میں بہت معزز مانا جاتا ہے۔ دو منزلہ وسیع پختہ مکان میں رہتا ہے۔ کاشت کاری کا کام بھی اچھے پیانہ پر پھیلا ہوا ہے۔ گاؤں میں کالج کے

(۱) غالب کا شعر ہے: ؎ وفورِ گریہ نے کا شانے کا کیا یہ رنگ
کہ آتے ہیں مرے دیوار و در، در و دیوار!

नागुफ़्ता बेह हालत देखते हुए भी सत्र को कुर्बान नहीं कर सकते तो भारत भभूत भंडार के ज़रिये ऐसे इन्जीनियर और आर्टिस्ट पैदा किये जायेंगे जो सत्र को कुछ का कुछ कर दिखायेंगे। जैसे आज कल लड़ने वाली हुकूमतें दुश्मन की नज़र को धोका देने के लिए टट्टी क़ायम कर देती हैं जिसके तसर्रुफ़ से दीवारो–दर, दरो–दीवार नज़र आने लगते हैं[1]

तफ़सील में नहीं पड़ना चाहता सिर्फ इतना अर्ज़ कर देना काफ़ी होगा कि भभूतियाई आर्ट के जरिए हम किसी हिस्सा–ए–जिस्म को या उन में हर एक को इस तरह मस्ख या मुज़य्यन कर सकेंगे कि वह कुछ का कुछ नज़र आये। बक़ौल एक शायर, जो इस आर्ट के रम्ज़ से ग़ालेबन वाक़िफ़ थे। यानी –

वहशत में हर एक नक़्शा उल्टा नज़र आता है
मजनूँ नज़र आती है लैला नज़र आता है!!

शोअरा ने हमारे आपके आज़ा व जवारेह के बारे में तश्बीह, इस्तेआरा या जुनूँ में जो कुछ कहा है भारत, भभूत के आर्टिस्ट इसी क़िस्म की चीज़ हमारे आपके जिस्म पर बना कर ग़ज़ल को नज़्मे–मुअर्रा[2] कर दिखायेंगे, उस वक़्त आर्ट बराए आर्ट व आर्ट बराए ज़िन्दगी का जनाज़ा भी ख़त्म हो जायेगा। बहुत मुमकिन है भभूत भण्डार में ऐसे सुरमे भी तैयार किये जा सकें जिनकी एक सलाई फेरने से छोटी चीज़ें बड़ी और बड़ी छोटी नज़र आने लगें या दूर की चीज़ क़रीब और क़रीब की दूर नज़र आये। इस तौर पर शोअरा को आर्ट और तसव्वुफ़ दोनों की तरफ़ से इत्मीनान हो जायेगा। दूसरी तरफ़ सत्र दोस्तों या सत्र दुश्मनों की भी अश्क शोई[3] हो जायेगी। बअलफ़ाज़े–दीगर सत्र का मंज़र और मक़सद दोनों फ़ौत नहीं तो मुश्तबा ज़रुर हो जायेंगे उस वक्त धोबियों को मालूम होगा कि डिक्टेटर क्या होता है।

अलीगढ़ में मेरे ज़मानए–तालिब–इल्मी के एक धोबी का हाल सुनिये जो अब बहुत मोअम्मर हो गया है। वह अपने गाँव में बहुत मोअज़्ज़िज़ माना जाता है। दो मंज़िला वसीअ पुख़्ता मकान में रहता है। काश्तकारी का काम भी अच्छे पैमाने पर फैला हुआ है। गाँव में कॉलेज के

---

1. ग़ालिब का शेर है –

वफ़ूरे–गिरिया ने काशाने का ये रंग किया
कि हो गये मेरे दीवारो–दर, दरो–दीवार

2. बेक़ाफ़िया नज़्म 3. आँसू पोछना

قصے اس طور پر بیان کرتا ہے جیسے پرانے زمانہ میں سورماؤں کی بہادری، فیاضی اور حسن وعشق کے افسانے اور نظمیں بھاٹ سنایا کرتے تھے۔ کہنے لگا:-

''میاں وہ دن بھی کیا تھے۔ کیسے کیسے اشراف کالج میں آیا کرتے تھے قیمتی، خوب صورت، نرم، نازک کپڑے پہنتے، جلد اتارتے اور دیر میں منگاتے تھے۔ ہر مہینے دو چار کپڑے اِدھر اُدھر کردیے وہاں خبر بھی نہ ہوئی یہاں نہال ہوگئے۔ اُن کے اتارے کپڑوں میں بھی میرے بچے اور رشتہ دار ایسے معلوم ہوتے تھے جیسے علی گڑھ کی نمائش۔ آج کل ایسے کپڑے نہ ہوتے گویا بوری اور جھول داری لٹکائے پھر رہے ہیں۔ ایک کپڑا دھونا پچاس ہاتھ مگدر ہلانے کی طاقت لیتا ہے۔ کیسا ہی دھوؤ بناؤ آب نہیں چڑھتا۔ اس پر یہ کہ آج لے جاؤ کل دے جاؤ۔ کوئی کپڑا بھول چوک میں آجائے تو ساری عمر کی آبرو خاک میں ملا دیں۔

میاں اُن رئیسوں کے کپڑے دھونے میں مزا آتا تھا جیسے دودھ ملائی کا کاروبار۔ دھونے میں مزا، استری کرنے میں مزا، دکھانے میں مزا، کنویں کے پاس کپڑے نہیں دھوتے تھے، کوتوالی کرتے تھے لوگ دور سے تماشا دیکھتے۔ پولیس کا سپاہی بھی سلام کر کے گذرتا مجال تھی جو کوئی پاس آجائے۔ برادری میں رشتہ ناتا اونچا لگتا کہ سیّد صاحب کے کالج کا دھوبی ہے۔ پنچائت چکانے دور دور سے بلاوا آتا۔ ایسے ایسے کپڑے پہن کر جاتا کہ گاؤں کے مکھیا اور پٹواری دیکھنے آتے جو بات کہتا سب ہاتھ جوڑ کر مانتے کوئی چیں چپڑ کرتا تو کہہ دیتا کہ بچا ہیکڑی دکھائی تو سیّد صاحب کے ہاں لے چل کر وہ گت بنوائی ہو کہ چھٹی کا دودھ یاد آجائے گا۔ پھر کوئی نہ منکتا!''

شہر میں کہیں شادی بیاہ ہوتا تو سب سے پہلے بلایا جاتا۔ لڑکی والے گڑگڑا کر کہتے، بھیا انکو لڑکی کی شادی ہے، عزت کا معاملہ ہے، برادری کا سامنا ہے مدد کا وقت ہے'' میں کہتا نچنت رہو۔ تماری نہیں میری لڑکی، کالج پھلے پھولے فکر مت کرو، پرماتما کا دیا سب کچھ موجود ہے۔'' میاں یقین مانو کالج آتا، لڑکوں سے کہتا ''حضور لڑکی کی شادی ہے۔ اب کے جمعہ کو کپڑے نہ آئیں گے''۔ وہ کہتے انکو کچھ پروا نہیں ہم کو بھی بلانا، جو چیز چاہو لے جاؤ۔ دب کے کام نہ کرنا'' میاں پھر کیا تھا، گز بھر کی چھاتی ہو جاتی!''

किस्से इस तौर पर बयान करता जैसे पुराने ज़माने में सूरमाओं की बहादुरी, फ़य्याज़ी और हुस्नो–इश्क़ के अफ़साने और नज़्में भाट सुनाया करते थे। कहने लगा –

"मियाँ वह दिन भी क्या थे। कैसे कैसे अशराफ़ कॉलेज में आया करते थे। क़ीमती, ख़ूबसूरत, नरम नाज़ुक कपड़े पहनते, जल्द उतारते और देर में मंगाते थे। हर महिने दो चार कपड़े इधर उधर कर दिए वहाँ ख़बर न हुई यहाँ निहाल हो गये। उनके उतारे कपड़ों में भी मेरे बच्चे और रिश्तेदार ऐसे मालूम होते थे जैसे अलीगढ़ की नुमाइश। आज कल ऐसे कपड़े न होते गोया बोरी और छोलदारी लटकाये फिर रहे हैं। एक कपड़ा धोना पचास हाथ मुगदर हलाने की ताक़त लेता है। कैसा ही धोओ बनाओ आब नहीं चढ़ता। इस पर यह कि आज ले जाओ कल दे जाओ। कोई कपड़ा भूल चूक में आ जाये तो सारी उम्र की आबरु ख़ाक में मिला दें।

मियाँ उन रईसों के कपड़े धोने में मज़ा आता था जैसे दूध मलाई का कारोबार। धोने में मज़ा, स्त्री करने में मजा, दिखाने में मज़ा, कुएँ के पास कपड़े नहीं धोते थे, कोतवाली करते थे लोग दूर से तमाशा देखते। पुलिस का सिपाही भी सलाम करके गुज़रता मज़ाल थी जो कोई पास आ जाये। बिरादरी में रिश्ता नाता ऊँचा लगता कि सैय्यद साहब के कालेज का धोबी है। पंचायत चुकाने दूर दूर से बुलावा आता। ऐसे ऐसे कपड़े पहन कर जाता कि गाँव के मुखिया और पटवारी देखने आते जो बात कहता सब हाथ जोड़कर मानते कोई चीं चुपड़ करता तो कह देता कि बच्चा हेकड़ी दिखाई तो सैय्यद साहब के यहाँ ले चल कर वह गत बनवाई हो कि छटी का दूध याद आ जायेगा। फिर कोई न मुनकता!"

शहर में कहीं शादी ब्याह होता तो सब से पहले बुलाया जाता। लड़की वाले गिड़गिड़ा कर कहते, भैया अंगनू लड़की की शादी है, इज़्ज़त का मामला है, बिरादरी का सामना है, मदद का वक़्त है" मैं कहता निश्चिंत रहो। तुम्हारी नहीं मेरी लड़की, कॉलेज फलेफूले फ़िक्र मत करो, परमात्मा का दिया सब कुछ मौजूद है।" मियाँ यक़ीन मानो कॉलेज आता, लड़कों से कहता, हुज़ूर लड़की की शादी है। अब के जुमे को कपड़े न आयेंगे।" वह कहते अंगनू कुछ परवा नहीं, हम को भी बुलाना, जो चीज़ चाहो ले जाओ। दब के काम न करना, मियाँ फिर क्या था, गज़ भर की छाती हो जाती!"

ایک باری کے کپڑے، دری، فرش، چاندنی، تولیے، دسترخوان سب لڑکی والے کو دے دیتا۔ محفل چماچم ہو جاتی۔ ایسا معلوم ہوتا جیسے کالج کا کوئی جلسہ ہے۔ براتی دنگ رہ جاتے۔ میاں اس ہیرا پھیری اور ہڑگم میں کچھ گم ہو جاتا۔ کچھ دھر لیتا جمعہ کو کالج آتا۔ ہر لڑکا بجائے اس کے کپڑے پر ٹوٹ پڑتا۔ دور ہی سے پکارتا "کیوں انکو جی اکیلے اکیلے لڑکی کی شادی کر ڈالی ہم کو نہیں بلایا" سب کو سلام کرتا۔ کہتا میاں تمہارا لکھنے پڑھنے کا حرج ہوتا۔ کہاں جاتے، تمہارے اقبال سے سب کام ٹھیک ہو گیا۔"

سب کے سب اشراف اور نواب تھے۔ کہتے "انکو، فرصت نہیں۔ میلے کپڑے لے لینا، دھلے کپڑے بکس میں رکھ دینا۔ چابی تکیے کے نیچے ہوگی۔ بکس بند کر کے کنجی دے جانا۔ اُن کو کیا خبر کون سے کپڑے لے گیا اور کیا واپس کر گیا۔ کبھی یاد آ گیا تو پوچھ بیٹھتے۔ انکو فلاں فلاں کپڑے نہیں ملتے۔ میں کہہ دیتا "حضور وہ لڑکی کی شادی نہ تھی" کہتے "ہاں ہاں ٹھیک کہا، یاد نہیں رہا اور ہاں تم نے ہم کو نہیں بلایا" میرا یہ بہانا اور ان کا یہ جواب چلتا رہتا اور پھر ختم ہو جاتا۔

کالج میں کرکٹ کی بڑی دھوم تھی۔ ایک دفعہ کپتان صاحب نے گھاٹ پر سے بلوا بھیجا کہنے لگے "انکو دلی سے کچھ کھیلنے والے آ گئے ہیں۔ ہم لوگوں کو کھیلنے کی فرصت نہیں لیکن اس کو بغیر میچ کھلائے واپس بھی نہیں کیا جا سکتا۔ چناں چہ میچ کالج کے بیرر کھیلیں گے۔ تم ممتاز کے یہاں چلے جاؤ وہ بتائے گا کتنے کوٹ پتلون اور قمیص مفلر وغیرہ درکار ہوں گے۔ بیروں کی پوری ٹیم کو کرکٹ کا یونی فارم مہیا کر دو۔ کل گیارہ بجے دن کو میں سب چیز ٹھیک دیکھوں" میاں کپتان صاحب کا یہ جنڈیلی آرڈر پورا کیا گیا۔ ٹیم کھیلی اور جیت گئی۔ کپتان صاحب نے سب کو دعوت دی اور بھرے مجمع میں کہا "انکو کا شکریہ!"

ایک بات اکثر ذہن میں آئی کہ دھوبی اور لیڈر ایک دوسرے سے کتنے قریب ہیں۔ آیا دھوبی لیڈر کی ترقی یافتہ صورت ہے یا لیڈر دھوبی کی تنزل یافتہ شکل، دونوں دھوتے پچھاڑتے ہیں۔ دھوبی گندے چیکٹ کپڑے علیحدہ لے جا کر دھوتا ہے، صاف و اجل کر کے دوبارہ پہننے کے قابل بنا دیتا ہے۔ لیڈر برسرِعام گندے کپڑے دھوتا ہے اور گندگی اچھالتا ہے۔ لیڈر کا مقصد نجاست دور کرنے کا اتنا نہیں ہوتا جتنا نجاست کا بکھیرنا ہوتا ہے۔

एक बारी के कपड़े, दरी, फर्श, चांदनी, तौलिये, दस्तरख़ान सब लड़की वाले को दे देता। महफ़िल चमाचम हो जाती। ऐसा मालूम होता जैसे कॉलेज का कोई जलसा है। बराती दंग रह जाते। मियाँ इस हेरा फेरी और हड़गम में कुछ गुम हो जाता। कुछ धर लेता जुमे को कॉलेज आता। हर लड़का बजाए उसके कपड़े पर टूट पड़ता दूर ही से पुकारता "क्यों अंगनू जी अकेले अकेले लड़की की शादी कर डाली हम को नहीं बुलाया।" सब को सलाम करता। कहता मियाँ तुम्हारा पढ़ने लिखने का हर्ज होता। कहाँ जाते। तुम्हारे इक़बाल से सब काम ठीक हो गया।"

सब के सब अशराफ़ और नवाब थे। कहते "अंगनू , फुर्सत नहीं। मैले कपड़े ले लेना, धुले कपड़े बॉक्स में रख देना। चाबी तकिये के नीचे होगी। बॉक्स बंद करके कुंजी दे जाना। उनको क्या ख़बर कौन से कपड़े ले गया और क्या वापस कर गया। कभी याद आ गया तो पूछ बैठते। अंगनू फ़लाँ फ़लाँ कपड़े नहीं मिलते। मैं कह देता "हुज़ूर वह लड़की की शादी न थी" कहते "हाँ हाँ ठीक कहा याद नहीं रहा और हाँ तुमने हम को नहीं बुलाया" मेरा यह बहाना और उनका यह जवाब चलता रहता और फिर ख़त्म हो जाता।

कॉलेज में क्रिकेट की बड़ी धूम थी। एक दफ़ा कप्तान साहब ने घाट पर से बुलवा भेजा कहने लगे अंगनू दिल्ली से कुछ खेलने वाले आ गये हैं। हम लोगों को खेलने की फुर्सत नहीं लेकिन बग़ैर मैच खेलाये वापिस भी नहीं किया जा सकता। चुनानचे मैच कॉलेज के बैरर खेलेंगे। तुम मुमताज़ के यहाँ चले जाओ वह बताये गा कितने पतलून और क़मीज़ वग़ैरह दरकार होंगे। बैरों की पूरी टीम को क्रिकेट का यूनीफ़ार्म मुहइया कर दो। कल ग्यारह बजे दिन को मैं सब चीज़ ठीक देखूं।" मियाँ कप्तान साहब का यह जन्डीली ऑर्डर पूरा किया गया। टीम खेली और जीत गई। कप्तान साहब ने सब को दावत दी और भरे मजमे में कहा "अंगनू का शुक्रिया!"

एक बात अक्सर ज़ेहन में आती है कि धोबी और लीडर एक दूसरे के कितने क़रीब हैं। आया धोबी लीडर की तरक़्क़ी याफ़्ता सूरत है या लीडर धोबी की तनज़्ज़ुल याफ़्ता शक्ल, दोनों धोते–पछाड़ते हैं। धोबी गंदे जैकिट अलाहिदा ले जाकर धोता है, साफ़ो–सजल करके दोबारा पहनने के क़ाबिल बना देता है। लीडर बर सरेआम गंदे कपड़े धोता है और गंदगी उछालता है। लीडर का मक़सद निजास्त दूर करने का इतना नहीं होता जितना निजास्त का बिखेरना होता है।

دھوبیوں کے لیے کپڑے دھونے کے گھاٹ مقرر ہیں، لیڈر کے لیے پلیٹ فارم حاضر ہیں۔ دھوبی کپڑے پھاڑتا ہے غائب کر دیتا ہے اور ان کا آب و رنگ بگاڑ دیتا ہے۔ لیڈر کی طرح وہ گندگی کو پائدار یا رنگین نہیں بناتا۔ گدھے البتہ دونوں کے قبضے میں ہوتے ہیں!

ہمارے یہاں کے معلم بھی دھوبی سے کم نہیں۔ وہ بھی شاگرد کو اسی طرح دھوتے پچھاڑتے، اینٹھتے اور اس پر استری کرتے ہیں جیسے دھوبی کرتا ہے۔ آپ نے بعض دھوبیوں کو دیکھا ہوگا اکثر دُھلائی کی زحمت سے بچنے اور مالک کو دھوکا دینے کے لیے سفید کپڑے میں نیل کا ہلکا سا رنگ دیتے ہیں۔ دھوبی کو اس کی مطلق پروا نہیں کہ سر سے گھما گھما کر کپڑے کو پتھر پر پٹکنا اور اینٹھ اینٹھ کر نچوڑنا اور اس کا لحاظ نہ کرنا کہ کپڑا نازک ہے یا مضبوط، رنگ کا کیا حشر ہوگا، بٹن کہاں جائیں گے، لباس کی وضع قطع کیا سے کیا ہو جائے گی، استری ٹھیک گرم ہے یا نہیں، ٹھنڈی استری کرنا چاہیے یا گرم۔ بالکل اسی طرح معلم کو اس کی پروا نہیں کہ طالب علم کس طرح کا ہے، اس پر کیا رنگ چڑھا ہوا ہے اور اس کے دل و دماغ کا کیا عالم ہے۔ وہ اسے دے دے مارتا ہے اور بھرکس نکال دیتا ہے وہ طالب علم کی استعداد، اس کے میلانات اور اُس کی الجھنوں کو سمجھنے کی کوشش نہیں کرتا صرف اپنا رنگ چڑھانے کی کوشش کرتا ہے چنانچہ یہ سارے مراحل طے کرنے کے بعد جب طالب علم دنیا کے بازار یا گاہک کے ہاتھ میں آتا ہے تو اس کے جسم، ذہن و دماغ سب جواب دے چکے ہوتے ہیں۔ اس پر رنگ بھی عجیب ہوتا ہے۔ کلف دے کر اس پر جو بے تکی اور بے تکان استری کی جاتی ہے وہ حوادث کے ایک ہی چھینٹے یا جھونکے سے کچھ کا کچھ ہو جاتی ہے۔ دھوبی کی یہ روایات معلمی میں پورے طور پر سرایت کر چکی ہیں۔

آپ نے ایک مشہور ستم ظریف کا فقرہ سنا ہوگا، جس نے دھوبی کو کپڑے پچھاڑتے دیکھ کر کہا تھا کہ دنیا میں عقیدہ بھی کیا چیز ہے اس شخص کو دیکھیے کپڑے سے پتھر توڑ ڈالنے کے درپے ہے۔ اگر ستم ظریف نے ہندوستانی شعراء یا عشاق کا مطالعہ کیا ہوتا جو صرف سنگِ سجدہ سے محبوب کا سنگِ آستاں گھس کر غائب کر دیتے ہیں تو اس پر معلوم نہیں کیا گذر جاتی۔ یہ تو پرانے شعراء کا وطیرہ تھا، حال کے شعراء کا رنگ کچھ اور ہے انہوں نے سوسائٹی کے میلے گندے کپڑے شارع عام پر دھونے پچھاڑنے کا نیا فن ایجاد کیا ہے۔

धोबियों के लिए कपड़े धोने के घाट मोक़र्रर हैं, लीडर के लिए प्लेट फार्म हाज़िर हैं। धोबी कपड़े फाड़ता है, ग़ायब कर देता है और उनका आबो-रंग बिगाड़ देता है। लीडर की तरह वह गंदगी को पाएदार या रंगीन नहीं बनाता। गधे अलबत्ता दोनों के क़ब्ज़े में होते हैं!

हमारे यहाँ के मोअल्लिम भी धोबी से कम नहीं। वह कभी शागिर्द को उसी तरह धोते पछाड़ते, ऐंठते हैं और उस पर स्त्री करते हैं जैसे धोबी करता है। आपने बाज़ धोबियों को देखा होगा अक्सर धुलाई की ज़हमत से बचने और मालिक को धोका देने के लिए सफ़ेद कपड़े में नील का हल्का सा रंग देते हैं। धोबी को इसकी मुतलक़ परवाह नहीं कि सर से घुमा घुमा कर कपड़े को पत्थर पर पटकना और ऐंठ-ऐंठ कर निचोड़ना और उसका लिहाज़ न करना कि कपड़ा नाजुक है या मज़बूत, रंग का क्या हश्र होगा, बटन कहाँ जायेंगे, लिबास की वज़ा-क़ता क्या से क्या हो जायेगी, स्त्री ठीक गरम है या नहीं, ठंडी स्त्री करना चाहिये या गरम। बिल्कुल उसी तरह मोअल्लिम को इसकी परवाह नहीं कि तालिब इल्म किस तरह का है, उस पर क्या रंग चढ़ा हुआ है और उसके दिलो-दिमाग़ का क्या आलम है। वह उसे दे दे मारता है और भुरकस निकाल देता है वह तालिब इल्म की इस्तअदाद, उसके मैलानात और उसकी उलझनों को समझने की कोशिश नहीं करता सिर्फ अपना रंग चढ़ाने का कोशिश करता है चुनांचे यह सारे मराहिल तय करने के बाद जब तालिब इल्म दुनिया के बाज़ार या गाहक के हाथ आता है तो उसके जिस्म, ज़ेहनो-दिमाग़ सब जवाब दे चुके होते हैं। उस पर रंग भी अजीब होता है। कलफ़ देकर उस पर जो बेतुकी और बेतकान स्त्री की जाती है वह हवादिस के एक ही छींटे या झोंके से कुछ का कुछ हो जाती है। धोबी की यह रवायत मोअल्लिमी में पूरे तौर पर सरायत कर चुकी है।

आपने एक मशहूर सितम ज़रीफ़ का फ़िक़रा सुना होगा, जिसने धोबी को कपड़े पछाड़ते देखकर कहा था कि दुनिया में अक़ीदा भी क्या चीज़ है उस शख़्स को देखिये कपड़े से पत्थर तोड़ डालने के दरपै है। मगर सितम ज़रीफ़ ने हिन्दुस्तानी शोअरा या उश्शाक़ का मोतालेआ किया होता जो सिर्फ़ नंगे-सजदा से मेहबूब का संगे-आस्ताँ घिस कर ग़ायब कर देते हैं तो उस पर मालूम नहीं क्या गुज़रती जाती। ये तो पुराने शोअरा का वतीरा था, हाल के शोअरा का रंग कुछ और है उन्होंने सोसाइटी के मैले कपड़े शारए-आम पर धोने पछाड़ने का नया फ़न ईजाद किया है।

اس قبیل کے شعراء سوسائٹی کی خرابیوں کو دور کرنے کے اتنے قائل اور شاید قابل نہیں رہے ہیں جتنا ان کا شکار بن چکے ہے یا بن جانے کی صلاحیت رکھتے ہیں۔ وہ ان خرابیوں کی نمائش کرنے اور اس کو ایک فن قرار دیے جانے کی فکر میں ہیں! کم زوریوں کو تسلیم کرنا اور ان کو دور کرنے کوشش کرنا بڑا مستحسن فعل ہے لیکن ان کم زوریوں کو آرٹ یا الہام کا درجہ دینا یا سمجھنا صرف نا اہلی، بد توفیقی ہے۔ شاعری میں دھوبی کا کاروبار برا نہیں، لیکن دھوبی اور دھوبی کے گدھے میں تو فرق کرنا ہی پڑے گا۔

میرا ایک دھوبی سے سابقہ رہا ہے جسے بہانے تراشنے میں وہ مہارت حاصل تھی جو اُردو اخبارت ورسائل کے اڈیٹروں کو بھی نصیب نہ ہوئی ہوگی۔ پرچے کے توقف سے یا بالکل شائع نہ ہونے پر یہ اڈیٹر جس جس طرح کے عذر پیش کرتے ہیں عاشقانہ شعر پڑھتے اور فلمی گانے سناتے ہیں وہ ایک مستقل داستان ہے اور فن بھی، لیکن میرا دھوبی اور اس کی بیوی جس قسم کے حیلے تراشتے ہیں وہ انہیں کا حصّہ ہے مثلاً موسم خراب ہے، اس کے یہ معنی ہیں کہ دھوپ نہیں ہوئی کہ کپڑے سوکھتے یا گردوغبار کا یہ عالم تھا کہ دھلے کپڑے بن دُھلے ہوگئے یا دھوپ اتنی سخت تھی کہ دھونے کے لیے کپڑے تر کرنا یا رکھنا محال ہوگیا۔ صحت خراب ہے، یعنی دھوبی یا دھوبن یا اُن کے لڑکے کے بالے یا دور نزدیک کے رشتہ دار ہر طرح کی بیماریوں میں مبتلا رہے قسمت خراب ہے، یعنی ان میں سے ایک ورنہ ہر ایک مر گیا۔ زمانہ خراب ہے، یعنی چوری یا فوج داری ہوگئی، گدھا کانجی ہاؤس بھیج دیا گیا۔ کپڑا خراب ہے یعنی پھٹ گیا، بدرنگ ہوگیا یا گم ہوگیا یا اغوا کرلیا گیا۔ عاقبت خراب ہے، یعنی طرح طرح کی بری خبریں سننے میں آتی ہیں مٹی خراب ہے، یعنی وہ میرے کپڑے دھوتا ہے۔

میرے خلاف اور غالباً آپ میں سے بھی بعض کے خلاف دھوبیوں کو یہ شکایت ہے کہ میں کپڑے اتارنے اور دھوبی کو سپرد کرنے میں زیادہ دیر لگاتا ہوں۔ یہی نہیں بلکہ دھوبی کے حوالے کرنے سے پہلے وہ لوگ جو دھوبی نہیں ہیں یا دھوبی سے بھی گئے گذرے ہیں میرے اُترے ہوئے کپڑوں کا میل دور کرنے کے لیے اپنے طور پر کوشش اور تجربے کرتے ہیں، کوئی جوتا رگڑ کر کوئی پلیٹ اور دیگچی پونچھ کر، کوئی جھاڑو کا کام لے کر،

इस क़बील के शोअरा सोसाइटी की ख़राबियों को दूर करने के इतने क़ायल और शायद क़ाबिल नहीं रहे हैं जितना उनका शिकार बन चुके या बन जाने की सलाहियत रखते हैं। वह उन ख़राबियों की नुमाइश करने और उसको एक फ़न क़रार दिये जाने की फ़िक्र में हैं! कमज़ोरियों को तस्लीम करना और उन को दूर करने की कोशिश करना बड़ा मुस्तहसन फ़ेल है लेकिन इन कमज़ोरियों को आर्ट या इलहाम का दर्जा देना या समझना सिर्फ़ ना अहली, बद तौफ़ीक़ी है। शायरी में धोबी का कारोबार बुरा नहीं, लेकिन धोबी और धोबी के गधे में तो फ़र्क़ करना ही पड़ेगा।

मेरा एक धोबी से साबेक़ा रहा है जिसे बहाने तराशने में वह महारत हासिल थी जो उर्दू अख़्बारात व रसायल के एडीटरों को भी नसीब न हुई होगी। पर्चे के तवक़्क़ुफ़ से या बिल्कुल शाया न होने पर एडीटर जिस जिस तरह के उज्र पेश करते हैं आशिक़ाना शेर पढ़ते और फ़िल्मी गाने सुनाते हैं वह एक मुस्तक़िल दास्ताँ है और फ़न भी, लेकिन मेरा धोबी और उसकी बीवी जिस क़िस्म के हीले तराश्ते हैं वह उन्हीं का हिस्सा है मसलन मौसम ख़राब है, इसके ये मानी हैं कि धूप नहीं हुई कि कपड़े सूखते या गर्दो-ग़ुब्बार का यह आलम था कि धुले कपड़े बिन धुले हो गये या धूप इतनी सख़्त थी कि धोने के लिए कपड़े तर करना या रखना मोहाल हो गया। सेहत ख़राब है, यानी धोबन या उनके लड़के के बाले या दूर नज़दीक के रिश्तेदार हर तरह की बीमारियों में मुब्तला रहे क़िस्मत ख़राब है, यानी उनमें से एक वरना हर एक मर गया। ज़माना ख़राब है, यानी चोरी या फ़ौजदारी हो गई,
गधा कांजी हाउस भेज दिया गया। कपड़ा ख़राब है यानी फ़ट गया, बदरंग हो गया या अग़वा कर लिया गया। आक़ेबत ख़राब है, यानी तरह तरह की बुरी ख़बरें सुनने में आती हैं, मिट्टी ख़राब है, यानी वह मेरे कपड़े धोता है।

मेरे ख़िलाफ़ और ग़ालेबन आप में से बाज़ के ख़िलाफ़ धोबियों को यह शिकायत है कि मैं कपड़े उतारने और धोबी के सुपुर्द करने में ज़्यादा देर लगाता हूँ। यही नहीं बल्कि धोबी के हवाले करने से पहले वह लोग जो धोबी नहीं हैं या धोबी से भी गये गुज़रे हैं मेरे उतरे हुए कपड़ों का मैल दूर करने के लिए अपने तौर पर कोशिश और तजुर्बे करते हैं, कोई जूता रगड़ कर कोई प्लेट और देगची पोंछ कर, कोई झाड़ू का काम ले कर,

کوئی آلو ٹماٹر اور کوئی لنگوٹ باندھ کر اور جب یہ تمام تجربے ہو لیے ہوتے ہیں تو وہ کپڑے دھوبی کے حوالے کیے جاتے ہیں۔

دنیا کو رنگ برنگ کے خطروں سے سابقہ رہا ہے۔ مثلاً لال خطرہ، پیلا خطرہ، سفید خطرہ، کالا خطرہ ان سے کسی نہ کسی طرح اور کسی نہ کسی حد تک گلو خلاصی ہوتی رہی ہے، لیکن یہ دھوبی خطرہ زندگی میں پنج سالہ قسم کی چیز بن کر سماتی ہے کہ نجات کی کوئی صورت نظر نہیں آتی۔ مصیبت اور مایوسی میں انسان تو ہم پرست ہو جاتا ہے اور ٹونے ٹوٹکے اور فال وتعویز پر اُتر آتا ہے۔ میں نے بھی دھوبی کو ذہن میں تول کر غالب سے رجوع کیا تو فال میں یہ مصرع نکلا ع

ترے بے مہر کہنے سے وہ تجھ پر مہرباں کیوں ہو!

مایوس ہوں، لیکن چوں کہ غالب یہ بھی کہہ چکے تھے کہ اگلے زمانہ میں کوئی میر بھی تھا اس لیے میر صاحب کی خدمت میں حاضر ہوا۔ وہاں سے جواب ملا۔

ہم ہوئے تم ہوئے کہ میر ہوئے
اُسی دھوبی کے سب اسیر ہوئے

بہ ایں ہمہ دھوبی جس دن دُھلے کپڑے لاتا ہے اور میلے کپڑے لے جاتا ہے ایسا محسوس ہوتا ہے جیسے گھر میں برکتیں آ گئیں اور بلائیں دور ہوئیں۔ چاندنی، چادریں، غلاف، پردے، دسترخوان، میز پوش سب بدل دیے گئے۔ نہا دھو کر چھوٹے بڑوں نے صاف ستھرے کپڑے پہنے، طبیعت شگفتہ ہو گئی اور کچھ نہیں تو تھوڑی دیر کے لیے یہ محسوس ہونے لگا کہ زندگی بہر حال اتنی پُر محن نہیں ہے جتنی کہ بتائی جاتی ہے اور کبھی کبھی محسوس بھی ہونے لگتی ہے!

कोई आलू टमाटर और लंगोट बांध कर और जब यह तमाम तजुर्बे हो लिए जाते हैं तो वह कपड़े धोबी के हवाले किये जाते हैं।

दुनिया को रंग बरंग ख़तरों से साबक़ा रहा है। मसलन लाल ख़तरा, पीला ख़तरा, सफ़ेद ख़तरा, काला ख़तरा इन से किसी न किसी तरह और किसी न किसी हद तक गुलूख़लासी होती रही है, लेकिन धोबी ख़तरा जिन्दगी में पंज–साला क़िस्म की चीज़ बनकर समाती है कि नजात की कोई सूरत नज़र नहीं आती। मुसीबत और मायूसी में इन्सान तवह्हुमपरस्त हो जाता है और टोने टोटके और फ़ालो–तावीज़ पर उतर आता है। मैंने भी धोबी को ज़ेहन में तौल कर ग़ालिब से रुजूअ किया तो फ़ाल में यह मिसरा निकला –

तेरे बे मेहर कहने से वह तुझ पर मेहरबाँ क्यो हो!

मायूस हूँ , लेकिन चूँकि ग़ालिब यह भी कह चुके थे कि अगले ज़माने में कोई मीर भी था इसलिए मीर साहब की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। वहाँ से जवाब मिला –

हम हुए तुम हुए कि मीर हुए
उसी धोबी के सब असीर हुए

बई हमा धोबी जिस दिन धुले कपड़े लाता और मैले कपड़े ले जाता है ऐसा महसूस होता है जैसे घर में बरकतें आगयीं और बलायें दूर हुयीं। चांदनी, चादरें, ग़िलाफ़, पर्दे, दस्तरख़ान, मेज़पोश सब बदल दिये गये। नहा धोकर बड़ो ने साफ़ सुथरे कपड़े पहने, तबीअत शगुफ़ता हो गई और कुछ नहीं तो थोड़ी देर के लिए यह महसूस होने लगा कि ज़िन्दगी बहर हाल इतनी पुर मेहन नहीं है जितनी कि बताई जाती है और कभी–कभी महसूस भी होने लगती है!

پطرس بخاری

کُتّے

علم الحیوانات کے پروفیسروں سے پوچھا۔ سلوتریوں سے دریافت کیا۔ خودسر کھپاتے رہے لیکن کبھی سمجھ میں نہ آیا۔ کہ آخر کتّوں کا فائدہ کیا ہے؟ گائے کو لیجیے۔ دُودھ دیتی ہے۔ بکری کو لیجیے۔ دُودھ دیتی ہے اور مینگنیاں بھی۔ یہ کُتے کیا کرتے ہیں؟ کہنے لگے کہ کتّا وفادار جانور ہے۔ اب جناب، وفاداری اگر اسی کا نام ہے کہ شام کے سات بجے سے جو بھونکنا شروع کیا۔ تو لگاتار بغیر دم لیے صبح کے چھ بجے تک بھونکتے چلے گئے۔ تو ہم لنڈورے ہی بھلے۔ کل ہی کی بات ہے کہ رات کے کوئی گیارہ بجے ایک کُتے کی طبیعت جو ذرا گدگدائی۔ تو اُنھوں نے باہر سڑک پر آکر طرح کا ایک مصرعہ دے دیا۔ ایک آدھ منٹ کے بعد سامنے کے بنگلے میں سے ایک کتّے نے مطلع عرض کر دیا۔ اب جناب ایک کہنہ مشق اُستاد کو جو غصہ آیا۔ ایک حلوائی کے چولھے میں سے باہر لپکے اور بھنّا کے پوری غزل مقطع تک کہہ گئے۔ اس پر شمال مشرق کی طرف سے ایک قدر شناس کُتے نے زوروں کی داد دی۔ اب تو حضرت وہ مشاعرہ گرم ہوا کہ کچھ نہ پوچھیے کم بخت بعض تو دوغزلے سہ غزلے لکھ کر لائے تھے۔ کئی ایک نے فی البدیہہ قصیدے کے قصیدے پڑھ ڈالے۔ وہ ہنگامہ گرم ہوا کہ ٹھنڈا ہونے میں نہ آتا تھا۔ ہم نے کھڑکی میں سے ہزاروں دفعہ ''آرڈر، آرڈر'' پکارا۔ لیکن ایسے موقعوں پر پردھان کی بھی کوئی نہیں سنتا۔ اب ان سے کوئی پوچھے کہ میاں تمھیں ایسا ہی ضروری مشاعرہ کرنا تھا تو دریا کے کنارے

कुत्ते

इल्मे–हैवानात के प्रोफ़ेसरों से पूछा। सलोत्रियों[1] से दरियाफ़्त किया। खुद सर खपाते रहे लेकिन कभी समझ में न आया कि आख़िर कुत्तों का क्या फ़ायदा? गाय को लीजिये। दूध देती है। बकरी को लीजिये। दूध देती है और मेंगनियाँ भी। ये कुत्ते क्या करते हैं? कहने लगे कि कुत्ता वफ़ादार जानवर है। अब जनाब, वफ़ादारी अगर इसी का नाम है कि शाम के सात बजे से जो भैंकना शुरु किया तो लगातार बग़ैर दम लिये सुबह के छः बजे तक भैंकते चले गये। तो हम लंडूरे ही भले। कल ही की बात है कि रात के कोई ग्यारह बजे एक कुत्ते की तबीअत जो ज़रा गुदगुदाई, तो उन्होंने बाहर सड़क पर आकर तरह का एक मिसरा दे दिया। एक आध मिनट के बाद सामने के बंगले में से एक कुत्ते ने मतला अर्ज़ कर दिया। अब जनाब एक कोहना मश्क़ उस्ताद को जो गुस्सा आया। एक हलवाई के चूल्हे में से बाहर लपके और भिन्ना कर पूरी ग़ज़ल मक़्ते तक कह गये। इस पर शुमाल–मशरिक़ की तरफ़ से एक क़द्र–शनास कुत्ते ने ज़ोरों की दाद दी। अब तो हज़रत वह मुशायरा गर्म हुआ कि कुछ न पूछिये कमबख़्त बाज़ तो दो–ग़ज़ले सेह–ग़ज़ले लिख कर लाये थे। कई एक ने फ़िलबदीह क़सीदे के क़सीदे पढ़ डाले। वह हंगामा गर्म हुआ कि ठंडा होने में न आता था। हम ने खिड़की में से हज़ारों दफ़ा "आर्डर, आर्डर" पुकारा। लेकिन ऐसे मौक़ों पर परधान की भी कोई नहीं सुनता। अब उनसे कोई पूछे कि मियाँ तुम्हें ऐसा ही ज़रुरी मुशायरा करना था तो दरिया के किनारे

1. घोड़े का डाक्टर

کھلی ہوا میں جا کر طبع آزمائی کرتے یہ گھروں کے درمیان آ کر سوتوں کو ستانا کون سی شرافت ہے؟

اور پھر ہم دیسی لوگوں کے کُتے بھی کچھ عجیب بدتمیز واقع ہوئے ہیں۔ اکثر تو ان میں ایسے قوم پرست ہیں کہ پتلون کوٹ کو دیکھ کر بھونکنے لگ جاتے ہیں۔ خیر یہ تو ایک حد تک قابل تعریف بھی ہے۔اس کا ذکر ہی جانے دیجیے۔ اس کے علاوہ ایک اور بات ہے یعنی ہمیں بارہا ڈالیاں لے کر صاحب لوگوں کے بنگلوں پر جانے کا اتفاق ہوا۔ خدا کی قسم ان کتوں میں وہ شائستگی دیکھی ہے کہ عش عش کرتے لوٹ آئے ہیں۔ جوں ہی ہم بنگلے کے دروازے میں داخل ہوئے۔ کتّے نے برآمدے میں کھڑے کھڑے ایک ہلکی سے ''بخ'' کردی۔ اور پھر منہ بند کر کے کھڑا ہو گیا۔ ہم آگے بڑھے تو اس نے بھی چار قدم آگے بڑھ کر ایک نازک اور پاکیزہ آواز میں پھر ''بخ'' کردی۔ چوکیداری کی چوکیداری۔ موسیقی کی موسیقی۔ ہمارے کُتے ہیں کہ نہ راگ نہ سُر۔ نہ سر نہ پیر تان پہ تان لگائے جاتے ہیں۔ بے تانے کہیں کے۔ نہ موقع دیکھتے ہیں نہ وقت پہچانتے ہیں۔ گلے بازی کیے جاتے ہیں۔ گھمنڈ اس بات پر ہے کہ تان سین اسی ملک میں تو پیدا ہوا تھا۔

اس میں شک نہیں کہ ہمارے تعلقات کتّوں سے ذرا کشیدہ ہی رہے ہیں۔ لیکن ہم سے قسم لے لیجیے جو ایسے موقع پر ہم نے کبھی سیتہ گرہ سے منہ موڑا ہو۔ شاید آپ اس کو تعلّی سمجھیں۔ لیکن خدا شاہد ہے کہ آج تک کبھی کسی کتّے پر ہاتھ اُٹھ ہی نہ سکا اکثر دوستوں نے صلاح دی کہ رات کے وقت لاٹھی چھڑی ضرور ہاتھ میں رکھنی چاہیے کہ دافع بلّیات ہے،لیکن ہم کسی سے خواہ مخواہ عداوت پیدا کرنا نہیں چاہتے کتّے کے بھونکتے ہی ہماری طبعی شرافت ہم پر اس درجہ غلبہ پا جاتی ہے۔ کہ آپ ہمیں اگر اس وقت دیکھیں تو یقیناً یہی سمجھیں گے کہ ہم بُزدل ہیں شاید آپ اس وقت یہ بھی اندازہ لگا لیں کہ ہمارا گلا خشک ہوا جاتا ہے۔ یہ البتہ ٹھیک ہے۔ ایسے موقع پر کبھی میں گانے کی کوشش کروں تو کھرج کی سُروں کے سوا اور کچھ نہیں نکلتا۔ اگر آپ نے بھی ہم جیسی طبیعت پائی ہو تو آپ دیکھیں گے کہ ایسے موقعہ پر آیۃ الکرسی آپ کے ذہن سے اُتر جائے گی۔ اس کی جگہ آپ شاید دعائے قنوت پڑھنے لگ جائیں۔

खुली हवा में जाकर तबा–आज़माई करते ये घरों के दरमियान आकर सोतों को सताना कौन सी शराफ़त है?

और फिर हम देसी लोगों के कुत्ते भी कुछ अजीब बदतमीज़ वाके हुए हैं। अक्सर तो उनमें ऐसे क़ौम परस्त हैं कि पतलून कोट को देख कर भौंकने लग जाते हैं। ख़ैर ये तो एक हद तक क़ाबिले–तारीफ़ भी है। इसका ज़िक्र ही जाने दीजिये। इसके अलावा एक और बात है यानी हमें बारहा डालियाँ लेकर साहब लोगों के बंगलों पर जाने का इत्तेफ़ाक़ हुआ। खुदा की कसम इन कुत्तों में वह शाइस्तगी देखी कि अश–अश करते लौट आये हैं। ज्यों ही हम बंगले के दरवाज़े में दाख़िल हुए। कुत्ते ने बरामदे में खड़े–खड़े एक हल्की से "बख़" कर दर और मुँह बंद कर के खड़ा हो गया। हम आगे बढ़े जो उसने भी चार क़दम आगे बढ़कर एक नाज़ुक और पाकीज़ा आवाज़ में फिर "बख़" कर दी। चौकीदारी की चौकीदारी, मौसीक़ी की मौसीक़ी। हमारे कुत्ते हैं कि न राग न सुर। न सर न पैर, तान पे तान लगाये.जाते है। बे ताने कहीं के। न मौक़ा देखते हैं न वक़्त पहचानते हैं। गले बाज़ी किये जाते हैं। घमंड इस बात पर है कि तानसेन इसी मुल्क में तो पैदा हुआ था।

इसमें शक नहीं कि हमारे तअल्लुक़ात कुत्तों से ज़रा कशीदा[1] ही रहे हैं। लेकिन हम से क़सम ले लीजिये जो ऐसे मौक़ों पर हम ने कभी सत्यागरह से मुँह मोड़ा हो। शायद आप इसको तअल्ली समझें। लेकिन खुदा शाहिद है कि आज तक कभी भी किसी कुत्ते पर हाथ उठ ही न सका। अक्सर दोस्तों ने सलाह दी कि रात के वक़्त लाठी छड़ी ज़रुर हाथ में रखनी चाहिए कि दाफ़ए–बलाइयात है, लेकिन हम किसी से ख़्वाहमख़्वाह अदावत पैदा नहीं करना चाहते। कुत्ते के भौंकते ही हमारी तबई शराफ़त हम पर इस दर्जा ग़लबा पा जाती है कि आप हमें अगर उस वक़्त देखें तो यक़ीनन यही समझेंगे कि हम बुज़दिल हैं। शायद आप उस वक्त ये भी अंदाज़ा लगा लें कि हमारा गला खुश्क हुआ जाता है। ये अलबत्ता ठीक है ऐसे मौक़ों पर कभी मैं गाने की कोशिश करुँ तो खरज की सुरों के सिवा कुछ नहीं निकलता। अगर आपने भी हम जैसी तबीअत पाई हो तो आप देखेंगे कि ऐसे मौक़े पर आयतलकुरसी आपके ज़ेहन से उतर जायेगी। इसकी जगह आप शायद दुआएक़ुनूत पढ़ने लग जायें।

1. खिंचे हुए

بعض اوقات ایسا اتفاق بھی ہوا ہے کہ رات کے دو بجے چھڑی گھماتے تھیٹر سے واپس آ رہے ہیں۔ اور ناٹک کے کسی نہ کسی گیت کی طرز ذہن میں بٹھانے کی کوشش کر رہے ہیں چونکہ گیت کے الفاظ یاد نہیں اور نومشقی کا عالم بھی ہے۔ اس لیے سیٹی پر اکتفا کی ہے کہ بے سُرے بھی ہو گئے تو کوئی یہی سمجھے گا۔ انگریزی موسیقی ہے۔ اتنے میں ایک موڑ پر سے جو مڑے تو سامنے ایک بکری بندھی تھی۔ ذرا تصور ملاحظہ ہو۔ آنکھوں نے اُسے بھی کتا دیکھا۔ ایک تو کتا اور پھر بکری کی جسامت کا گویا بہت ہی کتا۔ بس ہاتھ پاؤں پھول گئے۔ چھڑی کی گردش دھیمی ہوتے ہوتے ایک نہایت ہی نامعقول زاویے پر ہوا میں کہیں ٹھہر گئی۔ سیٹی کی موسیقی بھی تھرتھرا کر خاموش ہوگئی۔ لیکن کیا مجال جو ہماری تھوتھنی کی مخروطی شکل میں ذرا بھی فرق آیا ہو۔ گویا ایک بے آواز لے ابھی تک نکل رہی ہے۔ طب کا مسئلہ ہے کہ ایسے موقعوں پر اگر سردی کے موسم میں بھی پسینہ آ جائے تو کوئی مضائقہ نہیں۔ بعد میں پھر سوکھ جاتا ہے۔

چونکہ ہم طبعاً ذرا محتاط ہیں۔ اس لیے آج تک کتے کے کاٹنے کا کبھی اتفاق نہیں ہوا۔ یعنی کسی کتے نے آج تک ہم کو کبھی نہیں کاٹا۔ اگر ایسا سانحہ پیش آیا ہوتا تو اس سرگزشت کی بجائے آج ہمارا مرثیہ چھپ رہا ہوتا۔ تاریخی مصرعہ دعائیہ ہوتا ہے کہ ''اس کُتے کی مٹی سے بھی کُتا گھاس پیدا ہو۔'' لیکن۔

کہوں کس سے میں کہ کیا ہے سگِ رہ بُری بلا ہے
مجھے کیا بُرا تھا مرنا اگر ایک بار ہوتا

جب تک اس دنیا میں کُتے موجود ہیں اور بھونکنے پر مصر ہیں۔ سمجھ لیجیے کہ ہم قبر میں پاؤں لٹکائے بیٹھے ہیں۔ اور پھر ان کُتوں کے بھونکنے کے اصول بھی تو کچھ نرالے ہیں۔ یعنی ایک متعدی مرض ہے اور پھر بچوں، بوڑھوں سبھی کو لاحق ہے اگر کوئی بھاری بھرکم اسفندیار کتا کبھی کبھی اپنے رعب اور دبدبے کو قائم رکھنے کے لیے بھونک لے۔ تو ہم بھی چار و ناچار کہہ دیں کہ بھئی بھونک (اگرچہ ایسے وقت میں اس کو زنجیر سے بندھا ہونا چاہیے) لیکن یہ کم بخت دو روزہ سہ روزہ دو دو تین تین تولے کے پلّے بھی بھونکنے سے باز نہیں آتے۔ باریک آواز ذرا سا پھیپھڑہ اس پر بھی اتنا زور لگا کر بھونکتے ہیں کہ آواز کی

बाज़ औक़ात ऐसा इत्तेफ़ाक़ भी हुआ है कि रात के दो बजे छड़ी घुमाते थियेटर से वापस आ रहे हैं और नाटक के किसी न किसी गीत की तर्ज़ ज़ेहन में बिठाने की कोशिश कर रहे हैं चूंकि गीत के अल्फ़ाज़ याद नहीं और नौमश्क़ी का आलम भी है। इसलिए सीटी पर इक्तफ़ा की है कि बे सुरे भी हो गये तो कोई यही समझेगा अंग्रेजी मौसीक़ी है। इतने में एक मोड़ पर जो मुड़े तो सामने एक बकरी बंधी थी। ज़रा तसव्वुर मुलाहिज़ा हो। आँखों ने उसे भी कुत्ता देखा। एक तो कुत्ता और फिर बकरी की जसामत का गोया बहुत ही कुत्ता। बस हाथ पाँव फूल गये। छड़ी की गर्दिश धीमी होते होते एक निहायत नामाकूल ज़ाविये[1] पर हवा में कहीं ठहर गई। सीटी की मौसीक़ी भी कहीं थर्रा कर ख़ामोश हो गई। लेकिन क्या मजाल जो हमारी थूथनी की मख़रुती शक्ल में ज़रा फ़र्क़ आया हो। गोया एक बेआवाज़ लै अभी तक निकल रही है। तिब का मसला है कि ऐसे मौक़ों पर अगर सर्दी के मौसम में भी पसीना आ जाये तो कोई मुज़ायक़ा नहीं। बाद में फिर सूख जाता है।

चूंकि हम तबअन ज़रा मोहतात हैं इसलिए आज तक कुत्ते के काटने का कभी इत्तेफ़ाक़ नहीं हुआ। यानी किसी कुत्ते ने आज तक हम को कभी नहीं काटा। अगर ऐसा सानेहा पेश आया तो इस सरगुज़श्त की बजाए मेरा मरसिया छप रहा होता। तारीख़ी मिसरा दुआइया होता कि "इस कुत्ते की मिट्टी से भी कुत्ता घास पैदा हो।" लेकिन –

कहूँ किस से मैं कि क्या है सगे-रह[2] बुरी बला है
मुझे क्या बुरा था मरना अगर एक बार होता

जब तक इस दुनिया में कुत्ते मौजूद हैं और भौंकने पर मुसिर हैं समझ लीजिये कि हम क़ब्र में पाँव लटकाये बैठे हैं। और फिर इन कुत्तों के भौंकने के उसूल भी तो कुछ निराले हैं। यानी एक मुतअद्दी मर्ज़ है और फिर बच्चों, बूढ़ों सभी को लाहक़ है अगर कोई भारी भरकम असफ़न्दयार कुत्ता कभी कभी अपने रोब और दबदबे को क़ायम रखने के लिये भौंक ले। तो हम भी चारो ना चार कह दें कि भई भौंक (अगर ऐसे वक़्त में उसको ज़ंजीर से बंधा होना चाहिये) लेकिन ये कमबख़्त दो रोज़ा सह रोज़ा दो-दो, तीन-तीन तोले के पिल्ले भी भौंकने से बाज़ नहीं आते। बारीक आवाज़ ज़रा से फेफड़े उस पर इतना ज़ोर लगा कर भौंकते हैं कि आवाज़ की

1. कोण 2. रास्ते का कुत्ता

لرزش دم تک پہنچتی ہے اور پھر بھونکتے ہیں چلتی موٹر کے سامنے آ کر گویا اسے روک ہی تو لیں گے۔ اب اگر یہ خاکسار موٹر چلا رہا ہو تو قطعاً ہاتھ کام کرنے سے انکار کر دیں۔ لیکن ہر کوئی یوں ان کی جان بخشی تھوڑا ہی کرے گا؟

کتوں کے بھونکنے پر مجھے سب سے بڑا اعتراض یہ ہے کہ ان کی آواز سوچنے کے تمام قویٰ کو معطل کر دیتی ہے خصوصاً جب کسی دوکان کے تختے کے نیچے سے ان کا ایک پورا خفیہ جلسہ باہر سڑک پر آ کر تبلیغ کا کام شروع کر دے۔ تو آپ ہی کہیے ہوش ٹھکانے رہ سکتے ہیں؟ ہر ایک کی طرف باری باری متوجہ ہونا پڑتا ہے۔ کچھ ان کا شور کچھ ہماری صدائے احتجاج (زیرِلب) بے ڈھنگی حرکات وسکنات (حرکات انکی سکنات ہماری) اس ہنگامے میں دماغ بھلا خاک کام کرسکتا ہے؟ اگر چہ یہ مجھے بھی نہیں معلوم کہ اگر ایسے موقع پر دماغ کام کرے بھی تو کیا تیر مارے گا؟ بہرصورت کتوں کی یہ پرلے درجے کی ناانصافی میرے نزدیک ہمیشہ قابلِ نفریں رہی ہے۔ اگر ان کا ایک نمائندہ شرافت کے ساتھ ہم سے آ کر کہہ دے کہ عالی جناب سڑک بند ہے۔ تو خدا کی قسم ہم بغیر چون و چرا کیے لوٹ جائیں اور یہ کوئی نئی بات نہیں۔ ہم نے کتوں کی درخواست پر کئی راتیں سڑکیں ناپنے میں گزار دی ہیں۔ لیکن پوری مجلس کو یوں حقفقہ و متحدہ طور پر سینہ زوری کرنا ایک کمینہ حرکت ہے (قارئین کرام کی خدمت میں عرض ہے کہ اگر ان کا کوئی عزیز و محترم کتا کمرے میں موجود ہو۔ تو یہ مضمون بلند آواز سے نہ پڑھا جائے۔ مجھے کسی کی دل شکنی مطلوب نہیں۔)

خدا نے ہر قوم میں نیک افراد بھی پیدا کیے ہیں۔ کتے اِس کلیئے سے مستثنےٰ نہیں آپ نے خداترس کتا بھی ضرور دیکھا ہوگا۔ عموماً اس کے جسم پر تپسیا کے اثرات ظاہر ہوتے ہیں۔ جب چلتا ہے تو اس مسکینی اور عجز سے گویا بارِ گناہ کا احساس آنکھ نہیں اُٹھانے دیتا۔ دُم اکثر پیٹ کے ساتھ لگی ہوتی ہے۔ سڑک کے بیچوں بیچ غور و فکر کے لیے لیٹ جاتا ہے۔ اور آنکھیں بند کر لیتا ہے۔ شکل بالکل فلاسفروں کی سی اور شجرہ دیوجانس کلبی سے ملتا ہے۔ کسی گاڑی والے نے متواتر بگل بجایا۔ گاڑی کے مختلف حصّوں کو کھٹکھٹایا۔ لوگوں سے کہلوایا۔ خود دس بارہ دفعہ آوازیں دیں۔ تو آپ نے سر کو وہیں زمین پر رکھے سُرخ مخمور آنکھوں کو کھولا۔ صورتِ حالات کو ایک نظر دیکھا اور پھر آنکھیں بند

लर्ज़िश दम तक पहुँचती है और फिर भौंकते हैं, चलती मोटर के सामने आकर गोया उसे रोक ही लेंगे। अब अगर यह ख़ाकसार मोटर चला रहा हो तो क़तअन हाथ काम करने से इन्कार कर दें। लेकिन हर कोई यूँ उनकी जाँ-बख़्शी थोड़े ही करेगा?

कुत्तों के भौंकने पर मुझे सब से बड़ा एतराज़ यह है कि उनकी आवाज़ सोचने के तमाम कुवा को मुअत्तल कर देती है ख़ुसूसन जब किसी दूकान के तख़्ते के नीचे से उनका एक पूरा ख़ुफ़िया जलसा बाहर सड़क पर आकर तबलीग़ का काम शुरु कर दे। तो आप ही कहिये होश ठिकाने रह सकते है? हर एक की तरफ़ बारी-बारी मोतवज्जा होना पड़ता है। कुछ उनका शोर कुछ हमारी सदाये एहतजाज (ज़ेरे-लब) बेढ़ंगी हरकातो-सकनात (हरकात उनकी सकनात हमारी) इस हंगामे में दिमाग भला ख़ाक काम कर सकता है? अगरचे यह मुझे भी नहीं मालूम कि अगर ऐसे मौक़े पर दिमाग़ काम करे भी तो क्या तीर मार लेगा? बहर सूरत कुत्तों की ये परले दर्जे की ना इन्साफ़ी मेरे नज़दीक हमेशा क़ाबिले नफ़रीं रही है। अगर उनका एक नुमाइन्दा शराफ़त के साथ हम से आकर कह दे कि आली जनाब सड़क बन्द है, तो ख़ुदा की क़सम हम बग़ैर चूँ-चरा किये लौट जायें और ये कोई नई बात नहीं। हम ने कुत्तों की दरख़्वास्त पर कई रातें सड़कें नापने में गुज़ार दी हैं। लेकिन पूरी मजलिस को यूँ मुतफ़्फ़िका व मुतहिदा तौर पर सीना ज़ोरी करना एक कमीनी हरकत है (क़ारेईन हजरात की ख़िदमत में अर्ज़ है कि अगर उनका कोई अज़ीज़ो-मोहतरम कुत्ता कमरे में मौजूद हो तो यह मज़मून बुलन्द आवाज़ से न पढ़ा जाए। मुझे किसी की दिल-शिकनी मतलूब नहीं।) ख़ुदा ने हर क़ौम में नेक अफ़राद भी पैदा किये हैं। कुत्ते इस कुल्लिइये से, मुस्तस्ना नहीं। आप ने ख़ुदा तरस कुत्ता भी ज़रुर देखा होगा। उमूमन उसके जिस्म पर तपस्या के असरात ज़ाहिर होते हैं। जब चलता है तो मिसकीनी और इज़्ज़ से गोया बारे-गुनाह का एहसास आँख नहीं उठाने देता। दुम अक्सर पेट के साथ लगी होती है। सड़क के बीचो-बीच ग़ौरो-फ़िक्र के लिये लेट जाता है और आँखें बन्द कर लेता है। शक्ल बिल्कुल फ़िलासफरों की सी और शजरा देव जान्स कल्बी से मिलता है। किसी गाड़ी वाले ने मुतवातिर बिगुल बजाया। गाड़ी के मुख़्तलिफ़ हिस्सों को खटखटाया। लोगों से कहलवाया। ख़ुद दस बारह दफ़ा आवाज़ें दीं तो आप ने सर को वहीं ज़मीन पर रखे सुर्ख़ मख़मूर आँखों को खोला। सूरते-हालात को एक नज़र देखा और फिर आँखें बन्द

کرلیں۔ کسی نے ایک چابک لگادیا۔ تو آپ نہایت اطمینان کے ساتھ وہاں سے اُٹھ کر ایک گز پرے جا لیٹے۔ اور خیالات کے سلسلے کو جہاں سے وہ ٹوٹ گیا تھا وہیں سے پھر شروع کر دیا۔ کسی بائیسکل والے نے گھنٹی بجائی تو لیٹے لیٹے ہی سمجھ گئے کہ بائیسکل ہے۔ ایسی چھچھوری چیزوں کے لیے وہ راستہ چھوڑ دینا فقیری کی شان کے خلاف سمجھتے ہیں۔

رات کے وقت یہی کُتا اپنی خشک پتلی سی دُم کو تا بحدِ امکان سڑک پر پھیلا کر رکھتا ہے۔ اس سے محض خدا کے برگزیدہ بندوں کی آزمائش مقصود ہوتی ہے۔ جہاں آپ نے غلطی سے اس پر پاؤں رکھ دیا۔ انھوں نے غیض وغضب کے لہجہ میں آپ سے پرسش شروع کردی ۔ ''بچا فقیروں کو چھیڑتا ہے۔ نظر نہیں آتا۔ ہم سادھو لوگ یہاں بیٹھے ہیں۔'' بس اس فقیر کی بددعا سے اسی وقت رعشہ شروع ہو جاتا ہے۔ بعد میں کئی راتوں تک یہی خواب نظر آتے رہتے ہیں کہ بے شمار کتے ٹانگوں سے لپٹے ہوئے ہیں۔ اور جانے نہیں دیتے۔ آنکھ کھلتی ہے تو پاؤں چار پائی کی اَدوان میں پھنسے ہوتے ہیں!

اگر خدا مجھے کچھ عرصے کے لیے اعلیٰ قسم کے بھونکنے اور کاٹنے کی طاقت عطا فرمائے۔ تو جنونِ انتقام میرے پاس کافی مقدار میں ہے۔ رفتہ رفتہ سب کتے علاج کے لیے کسولی پہنچ جائیں۔ ایک شعر ہے ۔

عرفی تو میندیش زغوغائے رقیباں
آوازِ سگاں کم نہ کند رزقِ گدارا

یہی وہ خلافِ فطرت شاعری ہے جو ایشیا کے لیے باعثِ ننگ ہے۔ انگریزی میں ایک مثل ہے کہ۔ ''بھونکتے ہوئے کتے کاٹا نہیں کرتے۔'' یہ بجا سہی لیکن کون جانتا ہے کہ بھونکتا ہوا کتا کب بھونکنا بند کر دے؟ اور کاٹنا شروع کر دے!

बंद कर लें। किसी ने एक चाबुक लगा दिया तो आप निहायत इत्मीनान के साथ वहाँ से उठकर एक गज़ परे जा लेटे। और ख़यालात के सिलसिले को जहाँ से वह टूट गया था वहीं से फिर शुरु कर दिया। किसी बाइसिकिल वाले ने घंटी बजाई तो लेटे–लेटे ही समझ गये कि बाइसिकिल है। ऐसी छिछोरी चीज़ों के लिए वह रास्ता छोड़ देना फ़क़ीरी की शान के ख़िलाफ़ समझते हैं।

रात के वक़्त यही कुत्ता अपनी ख़ुश्क पतली दुम को ताबहद्दे–इमकान[1] सड़क पर फैलाकर रखता है। उस से महज़ ख़ुदा के बरगुज़ीदा बन्दों की आज़माइश मक़सूद होती है। जहाँ आप ने ग़लती से उस पर पाँव रख दिया, उन्होंने ग़ैज़ो–ग़ज़ब के लहजे में आपकी पुरसिश शुरु कर दी। "बच्चा फ़क़ीर को छेड़ता है। नज़र नहीं आता। हम साधू लोग यहाँ बैठे हैं।" बस उस फ़क़ीर की बद्दुआ से उसी वक़्त राशा[2] शुरु हो जाता है। बाद में कई रातों तक यही ख़्वाब नज़र आते रहते हैं कि बेशुमार कुत्ते टाँगों से लिपटे हुए हैं। और जाने नहीं देते। आँख खुलती है तो पाँव चारपाई की अदवान में फंसे होते हैं!

अगर ख़ुदा मुझे कुछ अर्से के लिये आला क़िस्म के भौंकने और काटने की ताक़त अता फ़र्माये तो जुनूने–इन्तक़ाम मेरे पास काफ़ी मिक़दार में है। रफ़्ता–रफ़्ता सब कुत्ते इलाज के लिये कसौली पहुँच जायें। एक शेर है –

उर्फ़ी तो मअन्देश ज़े ग़ोग़ाए रक़ीबाँ
आवाज़े सगाँ कम न कुनद रज़्क़े गदारा[3]

यही वह ख़िलाफ़े–फ़ितरत शायरी है जो एशिया के लिए बाएसे नंग है। अंग्रेज़ी में एक मसल है "भौंकते हुए कुत्ते काटा नहीं करते।" ये बजा सही लेकिन कौन जानता है कि भौंकता हुआ कुत्ता कब भौंकना बन्द कर दे? और काटना शुरु कर दे!

---

1. जहाँ तक मुमकिन हो 2. कंपन 3. ऐ उर्फ़ी तू दुश्मनों की फ़िक्र मत कर क्योंकि कुत्तों की आवाज़ें फ़क़ीर के रिज़्क़ को कम नहीं कर सकतीं।

شوکت تھانوی

جنسِ ہنر بیچتا ہوں

عین اس وقت جب بیروزگاری سے تنگ آ کر یہ فیصلہ کر رہے تھے کہ نمائش میں ایک اسٹال لے کر چاٹ کی دوکان کھولیں اور دہی بڑے بیچ کر کسی طرح پیٹ تو پالیں۔ مرزا صاحب نے آ کر ملازمت کا مژدہ سُنایا۔ سوکھے دھانوں پر پانی برسا جی چاہا مرزا کے قدموں پر گر کر مارے شکرگزاری کے جان دے دیں۔ کہاں ملتے ہیں کسی کو ایسے دوست جو سیہ بختی میں بھی ساتھ نہ چھوڑیں اور وقت پر یوں کام آئیں۔ ایک تو ملازمت ڈھونڈھی پھر وہ بھی ایسی ملازمت کیوں ریاست کہیے اُس کو۔ سو روپیہ ماہوار تنخواہ، کھانا نواب صاحب کے ساتھ اُن ہی کے دسترخوان پر، رہنے کو مکان۔ سواری میں موٹر۔ خدمت کے لیے نواب صاحب کے بے شمار خدمت گار موجود اور کام صرف یہ کہ نواب صاحب کے کلام پر اصلاح دے دیا کریں۔ گویا اُستادشہ۔ جس سے غالب کی بھی یہ تاب، یہ مجال اور یہ طاقت نہ تھی کہ پرخاش کا خیال کرتے۔ دیر تک تو یہ یقین ہی نہیں آیا کہ مرزا جو کچھ کہہ رہے ہیں وہ سچ ہے اور جب یقین آیا اور ان کا شکریہ ادا کرنا چاہا تو وہ ہوا کے گھوڑے پر سوار نظر آئے۔

शौकत थानवी

जिन्से-हुनर बेचता हूँ

ऐन उस वक़्त जब बेरोज़गारी से तंग आकर यह फ़ैसला कर रहे थे कि नुमाइश में एक स्टाल लेकर चाट की दूकान खोलें और दही बड़े बेचकर किसी तरह पेट पालें। मिर्ज़ा साहब ने आकर मुलाज़मत का मुज़दा[1] सुनाया। सूखे धानों पर पानी बरसा, जी चाहा मिर्ज़ा के क़दमों में गिरकर मारे शुक्रगुज़ारी के जान देदें। कहाँ मिलते हैं किसी को ऐसे दोस्त जो सियह–बख़्ती[2] में भी साथ न छोड़ें और वक़्त पर यूँ काम आयें। एक तो मुलाजमत ढूंढ़ी फिर वह भी ऐसी मुलाज़मत क्यों रियासत कहिये उसको। सौ रुपया माहवार तनख़्वाह, खाना नवाब साहब के साथ उन्ही के दस्तरख़्वान पर, रहने को मकान। सवारी में मोटर। ख़िदमत के लिए नवाब साहब के बेशुमार ख़िदमतगार मौजूद और काम सिर्फ़ यह कि नवाब साहब के कलाम पर इस्लाह दे दिया करें। गोया उस्तादे–शह। जिस से ग़ालिब की भी यह ताब, यह मजाल और यह ताक़त न थी कि परख़ाश[3] का ख़याल करते। देर तक तो यह यक़ीन ही नहीं आया कि मिर्ज़ा जो कुछ कह रहे हैं वह सच है और जब यक़ीन आया और उनका शुक्रिया अदा करना चाहा तो वह हवा के घोड़े पर सवार नज़र आये।

---

1. ख़ुशख़बरी 2. दुर्भाग्य, बुरे दिन 3. रंजिश

"یعنی عجیب منحوس ہو۔ میں نواب صاحب سے کہہ کر آیا ہوں کہ ابھی لا رہا ہوں تم کو اور تم ہو کہ منہ اٹھائے بیٹھے ہو چغد کی طرح۔ کپڑے پہن کر چلو نا میرے ساتھ پھر ان کے حرم سرا میں جانے کا وقت آجائے گا۔

جلدی جلدی کپڑے بدلے اور ہر چند کہ سو پشت سے آبا کا پیشہ کچھ سپہ گری ہی کی قسم کا تھا مگر آج چوں کہ شاعری ذریعہ عزت بن رہی تھی لہٰذا اپنے کو اپنے نزدیک بڑا استادالسلطان بنا کر مرزا کے ساتھ ہو لیے۔ راستہ بھر مرزا آداب دربار سمجھاتے رہے اور بار بار یہ اصرار کہ ذرا لیے دیے رہنا اپنے کو گراپڑا ثابت نہ کرنا۔ کلام کی فرمائش ہو تو ذرا کوئی ٹھاٹھ دار چیز سُنانا۔ اور پڑھنے کا انداز ایسا ہو کہ جھوم ہی تو جائیں سب۔ ہم ایک ایک بات گرہ میں باندھتے ہوئے آخر نواب صاحب کی کوٹھی کے دروازے پر جا پہنچے۔ یہاں مرزا نے آخری مرتبہ ہم کو سر سے پیر تک دیکھا اور ہر طرح کا اطمینان کرنے کے بعد آخری بات سمجھاتے ہوئے کہا۔ "اگر اتفاق سے نواب صاحب بہادر اپنا کلام سُنانے خود بیٹھ جائیں تو خواہ وہ کتنا ہی مہمل ہو مگر تم داد دینے میں زمین آسمان کے قلابے ملا دینا۔" اور اس آخری ہدایت کے بعد وہ ہم کو لے کر کوٹھی میں داخل ہو گئے۔

کوٹھی کے سبزہ زار پر اس وقت دربار لگا ہوا تھا کرسیوں پر حاضرین بیٹھے ہوئے تھے اور صدر میں ایک تخت پر ابو الہول کی نسل کے ایک بزرگ گاؤ تکیہ کا سہارا لیے اپنے شفاف سر پر خدمت گار سے تیل کی مالش کروا رہے تھے کہ مرزا صاحب نے پہنچ کر فرشی سلام کرتے ہوئے کہا۔ "حضور والا دیکھیے آخر میں لے ہی آیا خنجر صاحب کو، شاگردوں کا ایک جمِ غفیر تھا اور اصلاح دینے کا سلسلہ جاری تھا مگر حضور کا نام لیا تو بیچارے سب کچھ چھوڑ کر چلے آئے۔

ہم نے بھی فرشی سلام کیا۔ نواب صاحب نے بمشکل تمام اپنا بوجھ خود اٹھا کر ذرا سا ابھرتے ہوئے فرمایا۔ تشریف رکھیے۔ آپ کی بڑی تعریف سُنی ہے مرزا صاحب سے، تو آپ کس قسم کے شعر بناتے ہیں؟"

ایک دم چکر سا آگیا یا اللہ، "یہ شعر بنانا" کیا ہوتا ہے۔ مگر شکر ہے کہ مرزا صاحب ہماری طرف سے بول رہے تھے۔ "حضور مانے ہوئے اُستاد ہیں یہ ہر قسم کے شعر

"यानी अजीब मनहूस हो।" मैं नवाब साहब से कहकर आया हूँ कि अभी ला रहा हूँ तुमको और तुम हो कि मुँह उठाये बैठे हो चोग़द की तरह। कपड़े पहनकर चलो ना मेरे साथ फिर उनके हरमसरा[1] में जाने का वक़्त हो जायेगा।

जल्दी-जल्दी कपड़े बदले और हर चंद कि सौ पुश्त से आबा का पेशा कुछ सिपहगरी ही की क़िस्म का था मगर आज चूँकि शायरी के ज़रिये इज़्ज़त बन रही थी लिहाज़ा अपने को अपने नज़दीक बड़ा उस्तादुल-सुल्तान[2] बनाकर मिर्ज़ा के साथ हो लिए। रास्ते भर मिर्ज़ा आदाबे दरबार समझाते रहे और बार-बार यह इसरार कि ज़रा लिये दिये रहना अपने को गिरा पड़ा साबित न करना। कलाम की फ़रमाइश हो तो ज़रा कोई ठाठदार चीज़ सुनाना। और पढ़ने का अन्दाज़ ऐसा हो कि झूम ही तो जायें सब। हम एक एक बात गिरह में बांधते हुए आख़िर नवाब साहब की कोठी के दरवाज़े पर जा पहुँचे। यहाँ मिर्ज़ा ने आख़री मतर्बा हम को सर से पैर तक देखा और हर तरह का इत्मिनान करने के बाद आख़री बात समझाते हुए कहा। "अगर इत्तफ़ाक़ से नवाब साहब बहादुर अपना कलाम सुनाने ख़ुद बैठ जायें तो ख़्वाह वह कितना ही मोहमल[3] हो मगर तुम दाद देने में ज़मीन आसमान के कुलाबे मिला देना।" और इस आख़री हिदायत के बाद वह हमको लेकर कोठी में दाख़िल हो गये।

कोठी के सब्ज़ाज़ार पर उस वक़्त दरबार लगा हुआ था कुर्सियों पर हाज़रीन बैठे हुए थे और सदर में एक तख़्त पर अबुलहौल की नस्ल के एक बुज़ुर्ग गाव तकिये का सहारा लिये अपने शफ़्फ़ाफ़ सर पर ख़िदमतगार से तेल मालिश करवा रहे थे कि मिर्ज़ा साहब ने पहुँच कर फ़र्शी सलाम करते हुए कहा। "हुज़ूर वाला देखिये आख़िर मैं ले ही आया ख़ंजर साहब को, शागिर्दों का एक जम्मे-ग़फ़ीर था और इस्लाह देने का सिलसिला जारी था मगर हुज़ूर का नाम लिया तो बेचारे सब कुछ छोड़कर चले आये।

हमने भी फ़र्शी सलाम किया। नवाब साहब ने बमुश्किल तमाम अपना बोझ ख़ुद उठाकर ज़रा सा उभरते हुए फ़रमाया। तश्रीफ़ रखिये। आपकी बड़ी तारीफ़ सुनी है मिर्ज़ा साहब से, "तो आप किस क़िस्म के शेर बनाते हैं?"

एक दम चक्कर सा आ गया या अल्लाह, " यह शेर बनाना" क्या होता है। मगर शुक्र है कि मिर्ज़ा साहब हमारी तरफ़ से बोल रहे थे। "हुज़ूर माने हुए उस्ताद हैं यह हर क़िस्म के शेर

1. अन्तःपुर 2. बादशाह का उस्ताद 3. अर्थहीन

لاکھوں کی تعداد میں کہہ کہہ کر شاگردوں کو بانٹ چکے ہیں اور خود بھی تو تین چار دیوان اپنے ہی ہیں۔"

نواب صاحب نے یکمشت چھ سات پان اپنے تنور نما منہ میں ٹھونستے ہوئے فرمایا۔ "بھئی خودان کو بھی تو بولنے دو کیا بتایا تھا تم نے لقب آپ کا۔"

مرزا نے کہا۔ "حضور لقب نہیں تخلص۔"

حاضرین دربار میں سے ایک صاحب بولے۔ "وہ بھی ایک قسم کا لقب ہوا نا۔

ہم نے جلدی سے عرض کیا۔ "اس خاکسار کو خنجر کہتے ہیں۔"

نواب صاحب نے اگلدان میں منہ ڈالتے ہوئے فرمایا۔ "خنجر ٹھیک مطلب یہ کہ قتل کرتے ہوں گے آپ اپنی چیزیں سُنا سُنا کر لوگوں کو۔ اچھا تو پھر ہو جائے کوئی پھڑکتی ہوئی چیز۔ کیوں بھائی دلاور خان کیا صلاح ہے۔"

دلاور خان نے کہا۔ "کوئی ھقانی چیز رہے استاد۔"

نواب صاحب نے کہا۔ "اماں تم تو ہو نرے گھامڑ۔ حقانی چیز کا بھلا کون سا موقع ہے نہ جمعہ نہ جمعرات۔ اُستاد آپ تو کوئی عاشقانہ چیز سُنائیں کہ طبیعت لوٹ پوٹ ہو کر رہ جائے۔"

ایک اور صاحب بولے۔ "ہاں یہ بات کہی ہے سرکار نے۔ تو پھر استاد شروع ہو جائیے۔"

ہم ابھی پس و پیش کر ہی رہے تھے کہ مرزا نے قہر آلود نگاہوں سے گھورا اور دانت پیس کر اشارہ کیا کہ سُناؤ اور یہاں عالم ہے کہ کوئی ایسی چیز سمجھ میں نہ آ رہی تھی جو اس محفل میں سُنائی جا سکے آخر مرزا نے خود ہی کہا۔ "خنجر صاحب اپنی وہ غزل سُنائیے جس پر مشاعرے میں تمغہ ملا تھا۔ وہ کیا ہے غزل۔ "گریباں نہ ہوا بیاباں نہ ہوا۔"

تمغہ و مغہ تو خدا نہ کرے کہ ملتا البتہ غزل اس زمین میں ضرور تھی۔ جان پر کھیل کر یہی غزل شروع کر دی۔ اب یہ عالم ہے کہ ہم غزل پڑھ رہے ہیں اور ہر شعر پر نواب صاحب "ہے ہے ہے" کر کے نہایت بدتمیزی سے ہنس رہے ہیں۔ یا کبھی کبھی گھٹنہ پر طبلہ بجانے لگتے ہیں۔ خدا خدا کر کے بمشکل تمام غزل ختم ہوئی نواب

लाखों की तादाद में कह कहकर शागिर्दों को बाँट चुके हैं और खुद भी तो तीन चार दीवान अपने ही हैं।"

नवाब साहब ने एकमुश्त छः सात पान अपने तनूर[1] नुमा मुँह में ठूंसते हुए फ़रमाया। "भई ख़ुद उनको भी तो बोलने दो क्या बताया था तुमने लक़ब आपका।"

मिर्ज़ा ने कहा। "हुज़ूर लक़ब नहीं तख़ल्लुस।"

हाज़ेरीने–दरबार में से एक साहब बोले। "वह भी एक क़िस्म का लक़ब हुआ न।

हमने जल्दी से अर्ज़ किया। "इस ख़ाकसार को ख़ंजर कहते हैं।" नवाब साहब ने उगलदान में मुँह डालते हुए फ़रमाया। "ख़ंजर ठीक मतलब यह कि क़त्ल करते होंगे आप अपनी चीज़ें सुना सुनाकर लोगों को। अच्छा तो फिर हो जाय कोई भड़कती हुई चीज़। क्यों भाई दिलावर ख़ान क्या सलाह है।"

दिलावर ख़ान ने – कहा। "कोई हक़्क़ानी[2] चीज़ रहे उस्ताद।"

नवाब साहब ने कहा। "अमाँ तुम तो हो निरे घामड़। हक़्क़ानी चीज़ का भला कौन सा मौक़ा है, न जुमा न जुमरात। उस्ताद आप तो कोई आशिक़ाना चीज़ सुनायें कि तबीअत लोट–पोट होकर रह जाये।"

एक और साहब बोले। "हाँ यह बात कही है सरकार ने। फिर तो उस्ताद शुरु हो जाइये।"

हम अभी पसो–पेश कर ही रहे थे कि मिर्ज़ा ने क़हर–आलूद निगाहों से घूरा और दाँत पीसकर इशारा किया कि सुनाओ और यहाँ आलम है कि कोई ऐसी चीज़ समझ में न आ रही थी जो उस महफ़िल में सुनाई जा सके आख़िर मिर्ज़ा ने खुद ही कहा। "ख़ंजर साहब अपनी वह ग़ज़ल सुनाइये जिस पर मुशायरे में तमग़ा मिला था। वह क्या है ग़ज़ल। "गरीबाँ न हुआ, बयाबाँ न हुआ।"

तमग़ा–वमग़ा तो ख़ुदा न करे कि मिलता, अलबत्ता ग़ज़ल इस ज़मीन में ज़रुर थी। जान पर खेलकर यही ग़ज़ल शुरु कर दी। अब यह आलम है कि हम ग़ज़ल पढ़ रहे हैं और हर शेर पर नवाब साहब "हे–हे–हे" करके निहायत बदतमीज़ी से हंस रहे हैं। या कभी कभी घुटने पर तबला बजाने लगते हैं। ख़ुदा--ख़ुदा करके तमाम ग़ज़ल ख़त्म हुई नवाब

1. तन्दूर 2. ईश्वरीय

صاحب نے داد دیتے ہوئے فرمایا۔ "یار مزہ آ گیا۔ کیا مزے کی چیز سُنائی ہے۔ اچھا تو اس پر تمغہ ملا تھا؟"

مرزا نے کہا۔ "ایک تمغہ کیا۔ ان کا تو یہ حال ہے کہ جس مشاعرے میں پہنچ گئے بس اپنے سامنے کسی کا چراغ جلنے نہیں دیتے۔"

وہ صاحب جن کا نام دلاور خان تھا جھوم کر بولے۔ "اور آواز بھی اپنی قسم کی بڑی پاٹ دار ہے۔"

نواب صاحب نے کہا۔ "تو بھئی مرزا صاحب تم وہ بات کر لو نا ان سے بس ذرا یہ سمجھا دینا کہ اپنا ہی گھر سمجھ کر رہیں۔ ایمانداری اصل چیز ہے۔ یہ تو تم جانتے ہی ہو کہ اس ڈیوڑھی پر جو ایک دفعہ ملازم ہو گیا ہے پھر مر کر ہی نکلتا ہے۔"

مرزا صاحب نے کہا۔ "ویسے تو میں بات کر چکا ہوں مگر ان کو لے جا کر پھر فیصلہ کیے لیتا ہوں۔"

نواب صاحب نے کہا۔ "ہاں ساری بات صاف ہو جائے اور ہاں یہ طے کر لینا کہ پھر کسی اور کو شاگردی میں نہیں لے سکتے۔"

مرزا صاحب نے ہم کو اٹھنے کا اشارہ کرتے ہوئے کہا۔ "میں ابھی سب کچھ سمجھائے دیتا ہوں۔"

ہم دونوں اٹھ کر کوٹھی کے ایک علاحدہ کمرے میں پہنچ گئے تو ہم نے ادھر ادھر دیکھ کر کہا۔ "مرزا صاحب مجھ کو تو سخت وحشت ہو رہی ہے یہاں کس طرح نباہ کر سکوں گا ان لوگوں سے۔"

مرزا صاحب نے کھا جانے کے انداز سے کہا۔ "کیا مطلب۔ کون سی بات ایسی ہوئی جس سے وحشت ہوئی آپ کو۔"

ہم نے حیرت سے کہا۔ "یعنی کمال کرتے ہیں آپ جہاں تخلص کو لقب کہا جائے۔ جہاں شعر کہنے کو شعر بنانا کہا جائے۔ جہاں ایک شاعر سے حقانی اور عاشقانہ چیز سُننے کی فرمائش ہو۔ جہاں بدتمیزی سے ہنس ہنس کر شعر سُنے جائیں اور سُن سُن کر گھٹنے پر طبلہ بجایا جائے اور جہاں بجائے کلام کے آواز کے پاٹ دار ہونے کی داد دی جائے وہاں

साहब ने दाद देते हुए फ़रमाया। "यार मज़ा आ गया। क्या मज़े की चीज़ सुनाई है। अच्छा तो इस पर तमग़ा मिला था?"

मिर्ज़ा ने कहा। "एक तमग़ा क्या। इनका तो यह हाल है कि जिस मुशायरे मे पहुँच गये बस अपने सामने किसी का चिराग़ जलने नहीं देते।"

वह साहब जिनका नाम दिलावर ख़ान था झूमकर बोले। "और आवाज़ भी अपनी क़िस्म की बड़ी पाटदार है।"

नवाब साहब ने कहा। "तो भई मिर्ज़ा साहब तुम वह बात कर लो ना इन से ज़रा यह समझा देना कि अपना ही घर समझकर रहें। इमानदारी असल चीज़ है। यह तो तुम जानते ही हो कि इस ड्यूटी पर जो एक दफ़ा मुलाज़िम हो गया है फिर मर कर ही निकलता है।"

मिर्ज़ा साहब ने कहा। "वैसे तो मैं बात कर चुका हूँ मगर इनको ले जाकर फिर फ़ैसला किये लेता हूँ।"

नवाब साहब ने कहा, "हाँ सारी बात साफ़ हो जाये और हाँ यह तय कर लेना कि फिर किसी और को शागिर्दी में नहीं ले सकते।"

मिर्ज़ा साहब ने हमको उठने का इशारा करते हुए कहा। "मैं अभी सब कुछ समझाये देता हूँ।"

हम दोनों उठकर कोठी के एक अलाहदा कमरे में पहुँच गये तो हमने इधर–उधर देखकर कहा। "मिर्ज़ा साहब मुझको तो सख़्त वहशत हो रही है यहाँ किस तरह निबाह कर सकूँगा इन लोगों से।"

मिर्ज़ा साहब ने खा जाने के अन्दाज़ में कहा। "क्या मतलब। कौन सी बात ऐसी हुई जिस से वहशत हुई आपको।"

हमने हैरत से कहा। "यानी कमाल करते हैं आप जहाँ तख़ल्लुस को लक़ब कहा जाये। जहाँ शेर कहने को शेर बनाना कहा जाय। जहाँ एक शायर से हक़्क़ानी और आशिक़ाना चीज़ सुनने की फ़रमाईश हो। जहाँ बदतमीज़ी से हंस–हंसकर शेर सुने जायें और सुन–सुनकर घुटने पर तबला बजाया जाय और जहाँ बजाए–कलाम के आवाज़ के पाटदार होने की दाद दी जाय वहाँ

آپ کے نزدیک وحشت بھی نہ ہو کسی کو۔"

مرزا صاحب نے بگڑ کر کہا۔ "بس تو پھر جانے دو، بڑے شاعر بنے پھرتے ہیں، وہی مثل کہ گھر میں نہیں دانے اور اماں چلیں بھنانے، روٹیوں کا سہارا جو نظر آیا تو دماغ میں لگا کیڑا رینگنے، تم تو اسی قابل ہو کہ جوتیاں گھسیٹتے پھرو، مگر کان کھول کر سن لو کہ اب مجھ سے کبھی اپنی بے روزگاری کا رونا رونے نہ بیٹھنا۔"

ہم نے خوشامد سے مرزا کو مناتے ہوئے کہا، بھئی خفا نہ ہو، تم کو کیا پتہ تمہاری اس ہمدردی کا میرے دل پر کتنا اثر ہوا مگر میں تو یہ کہہ رہا تھا کہ آخر ان نواب صاحب کے کہیں آس پاس بھی شاعری ہے یا میں اصلاح ہی دوں گا۔ جو شخص تخلص اور لقب تک کی تمیز نہ رکھتا ہو وہ کیوں کر شاعر بن سکتا ہے۔ جس کو شعر سننا نہ آتا ہو وہ شعر کہہ کیوں کر سکے گا۔"

مرزا نے ڈانٹا۔ "پھر وہی۔ میں پوچھتا ہوں تم کو آم کھانے سے مطلب ہے یا پیڑ گننے آئے ہو۔ تمہاری بلا سے وہ شاعر بنیں یا نہ بنیں۔ کمال تو تمہارا یہی ہے کہ تم ان کو اسی مغالطہ میں رکھو کہ وہ شاعر بن گئے ہیں۔ بھائی تم نوکری کرنے آئے ہو کچھ نہ کچھ تو قیمت دینا ہی پڑتی ہے آخر۔ اب اگر اس نازک مزاجی سے کام لو گے تو کر چکے نوکری تم، میں تو یہ کہتا ہوں کہ عیش کرو گے عیش یہاں اور اگر ذرا عقلمندی سے کام لیا تو یہ سب بیوقوف تمہاری مٹھی میں رہیں گے۔"

طبیعت کسی طرح گوارا نہ کرتی تھی مگر یہ بھی واقعہ تھا کہ روزگار کی اور کوئی صورت بھی نہ تھی۔ ایک طرف اگر یہ صحبتِ ناجنس تھی تو دوسری طرف بے فیل ہم جنس جن میں سے ہر ایک قحط زدہ فاقہ مست۔ آخر ہم نے مرزا سے کہہ دیا کہ "اچھا بھائی مقدر آزمائیں گے یہاں بھی جاؤ کہہ دو نواب صاحب سے کہ ہم راضی ہیں۔"

مرزا نے پیٹھ ٹھونکتے ہوئے کہا۔ "یہ پس و پیش نہایت احمقانہ تھا ظاہر ہے کہ بیوقوف تو ہوتے ہی ہیں یہ لوگ اور خوش نصیب ہے وہ جس کو بنے بنائے چغد مل جائیں۔ تم کو تو چاہیے کہ نواب صاحب کو ایسا اپنے شیشے میں اُتارو کہ پانچوں انگلیاں گھی میں ہوں۔ آؤ بس یہ ٹھیک ہے اور میں نے بھی کچھ سمجھ کر ہی یہ صورت پیدا کی ہے۔"

مرزا صاحب نے اُسی وقت نواب صاحب سے جا کر کہہ دیا کہ

आपके नज़दीक़ वहशत भी न हो किसी को।"

मिर्ज़ा साहब ने बिगड़ कर कहा। "बस तो फिर जाने दो, बड़े शायर बने फिरते हैं, वही मसल कि घर में नहीं दाने और अम्माँ चलीं भुनाने, रोटियों का सहारा जो नज़र आया तो दिमाग़ में लगा कीड़ा रेंगने, तुम तो इसी क़ाबिल हो कि जूतियाँ घसीटते फिरो, मगर कान खोलकर सुन लो कि अब मुझसे कभी बेरोज़गारी का रोना रोने न बैठना।"

हमने खुशामद से मिर्ज़ा को मनाते हुए कहा, भई ख़फ़ा न हो, तुम को क्या पता तुम्हारी इस हमदर्दी का मेरे दिल पर कितना असर हुआ मगर मैं तो यह कह रहा था कि आख़िर इन नवाब साहब के कहीं आस–पास भी शायरी है या मैं इस्लाह ही दूँगा। जो शख़्स तख़ल्लुस और लक़ब तक की तमीज़ न रखता हो वह क्यों कर शायर बन सकता है जिस को शेर सुनना न आता हो वह शेर कह क्यों कर सकेगा।"

मिर्ज़ा ने डांटा। "फिर वही।" मैं पूछता हूँ तुमको आम खाने से मतलब है या पेड़ गिनने आये हो। तुम्हारी बला से वह शायर बनें या न बनें। कमाल तो तुम्हारा यही है कि तुम उनको उसी मोग़ालते में रखो कि वह शायर बन गये हैं। भाई तुम नौकरी करने आये हो, कुछ न कुछ तो क़ीमत देना ही पड़ती है आख़िर। अब अगर इस नाज़ुक मिज़ाजी से काम लोगे तो कर चुके नौकरी तुम, मैं तो यह कहता हूँ कि ऐश करोगे ऐश, यहाँ अगर ज़रा अक़्लमन्दी से काम लिया तो यह सब बेवक़ूफ़ तुम्हारी मुट्ठी में रहेंगे।"

तबीअत किसी तरह गवारा न करती थी मगर यह भी वाक़या था कि रोज़गार की और कोई सूरत भी न थी। एक तरफ़ अगर यह सोहबते–नाजिंस थी तो दूसरी तरफ़ बेफ़ेल हम जीन्स जिन में से हर एक क़हत–ज़दा, फ़ाक़ा मस्त। आख़िर हमने मिर्ज़ा से कह दिया कि "अच्छा भाई मुक़द्दर आज़मायेंगे यहाँ भी जाओ कह दो नवाब साहब से कि हम राज़ी हैं।"

मिर्ज़ा ने पीठ ठोंकते हुए कहा। "यह पसो–पेश निहायत अहमक़ाना था ज़ाहिर है कि बेवकूफ़ तो होते ही हैं यह लोग और खुशनसीब है वह जिसको बने बनाये चोग़द मिल जायें। तुमको तो चाहिये कि नवाब साहब को ऐसा अपने शीशे में उतारो कि पाँचों उगलियाँ घी में हों। आओ बस यह ठीक है और मैं ने भी कुछ समझ कर ही यह सूरत पैदा की है।"

मिर्ज़ा साहब ने उसी वक़्त नवाब साहब से जाकर कह दिया कि

تمام معاملات طے پا گئے۔ اور خنجر صاحب اب اسی وقت سے آپ کے یہاں رہیں گے۔ یہ سنتے ہی نواب صاحب نے خدمت گار کو مٹھائی اور پھول پان لانے کا حکم دیا کہ شاگردی استادی کی رسم ادا ہو جائے اور ہم سے کہا۔

"استاد اب کوئی اچھا سا۔ وہی کیا نام اس کا تلفظ"

مرزا صاحب نے بات کاٹ کر کہا۔" آپ کا مطلب ہے تخلص۔ خنجر صاحب ابھی کہہ رہے تھے کہ نواب صاحب کے لئے تخلص کوثر اچھا رہے گا۔"

نواب صاحب نے چونک کر کہا۔" یہ کیسے ہو سکتا ہے ہماری بیگم کی چھوٹی بہن کا نام ہے یہی۔"

ہم نے کہا۔ "دیوان حافظ سے تخلص نکالا جائے آپ کے لیے۔"

نواب صاحب نے تعجب سے پوچھا۔" کون سے دیوانے حافظ؟ حافظ عبدالغفور تو نہیں۔ وہ تو آج کل باہر ہیں۔"

مرزا صاحب نے کہا۔ "کیوں خنجر صاحب ساقی کیسا رہے گا۔"

نواب صاحب نے اچھل کر کہا۔ " بھئی یہ ٹھیک ہے۔ کیوں استاد بڑا بانکا تخلص ہے ساقی۔"

ہم نے عرض کیا۔ "بالکل ٹھیک نہایت اچھا تخلص ہے اور بڑا مبارک ہے۔"

نواب صاحب نے خوش ہو کر کہا۔ "تو اب ہمارا پورا نام ہوا نواب عبدالکریم خاں ساقی۔ مزہ آ گیا یار۔"

اس عرصہ میں ملازم مٹھائی اور پھولوں کے ہار لے کر آ گیا۔ نواب صاحب نے اپنے ہاتھ سے ہمارے گلے میں ہار ڈالا اور ہم نے اپنے ہاتھ سے نواب صاحب کو مٹھائی اور قند دیتے ہوئے کہا۔ "خدا آپ کو شیریں کلام بنائے۔"

حاضرین نے۔ "آمین" کا نعرہ کورس میں بلند کیا اور سب نے نواب صاحب کو مبارک باد دی۔ نواب صاحب نے اسی وقت اکاون روپے اور ایک قلمدان ہم کو مرحمت فرماتے ہوئے کہا۔ "لو اُستاد یہ اُستادی کا قلمدان ہے اب ہم شاگرد اور تم اُستاد۔ اب لگے ہاتھ مشاعرہ تو کر ڈالو جلدی سے جیسا نواب نگاری کے یہاں ہوا کرتا ہے۔"

तमाम मामलात तय पा गये। और ख़ंजर साहब अब इसी वक़्त से आपके यहाँ रहेंगे। यह सुनते ही नवाब साहब ने ख़िदमतगार को मिठाई और फूल पान लाने का हुक्म दिया कि शागिर्दी और उस्तादी की रस्म अदा हो जाये और हम से कहा।

"उस्ताद अब कोई अच्छा सा, वही क्या नाम उसका मलफ़्फ़ुज़"

मिर्ज़ा साहब ने बात काटकर कहा। "आपका मतलब है तख़ल्लुस। ख़ंजर साहब अभी कह रहे थे कि नवाब साहब के लिए तख़ल्लुस "कौसर" अच्छा रहेगा।"

नवाब साहब ने चौंक कर कहा। "यह कैसे हो सकता है हमारी बेगम की छोटी बहन का नाम यही है।"

हमने कहा। "दीवाने–हाफ़िज़[1] से तख़ल्लुस निकाला जाये आपके लिए।"

नवाब साहब ने तअज्जुब से पूछा। "कौन से दीवाने हाफ़िज़? हाफ़िज़ अब्दुल ग़फ़ूर तो नहीं। वह तो आज कल बाहर हैं।"

मिर्ज़ा साहब ने कहा। "क्यों ख़ंजर साहब साक़ी कैसा रहेगा।"

नवाब साहब ने उछलकर कहा। "भई यह ठीक है। क्यों उस्ताद बड़ा बाँका तख़ल्लुस है साक़ी।"

हमने अर्ज़ किया "बिल्कुल ठीक निहायत अच्छा तख़ल्लुस है और बड़ा मुबारक है।"

नवाब साहब ने ख़ुश होकर कहा। तो अब हमारा पूरा नाम हुआ नवाब अब्दुल करीम ख़ाँ साक़ी। मज़ा आ गया यार।"

इस अर्से में मुलाज़िम मिठाई और फूलों के हार लेकर आ गया। नवाब साहब ने अपने हाथ से हमारे गले में हार डाला और हमने अपने हाथ से नवाब साहब को मिठाई और क़न्द देते हुए कहा। ख़ुदा आपको शीरीं कलाम बनाये।"

हाज़ेरीन ने "आमीन" का नारा कोरस में बुलन्द किया और सब ने नवाब साहब को मुबारकबाद दी। नवाब साहब ने उसी वक़्त इकावन रुपये और एक क़लमदान हमको मरहमत फ़रमाते हुए कहा। "लो उस्ताद यह उस्तादी का क़लमदान है अब हम शागिर्द और तुम उस्ताद। अब हाथ लगे मुशायरा कर डालो जल्दी से जैसा नवाब टिकारी के यहाँ हुआ करता है।"

1. फ़ारसी के मशहूर शायर हाफ़िज़ का काव्य संग्रह

اب سمجھ میں آئی اس شاعری کے شوق کی وجہ کہ یہ سب کچھ نواب صاحب ٹکاری کی چوٹ پر ہو رہا ہے۔ وہ ایک پڑھا لکھا صاحب ذوق رئیس دن رات اس کے یہاں بھی یہی علمی ادبی چرچے۔ اچھا خاصا شعر وہ کہتا ہے آپ چلے ہیں اُس کی نقل اتارنے۔ مگر اب تو کرنا ہی تھا مشاعرہ۔ اخراجات کی منظوری لی جو نہایت دریا دلی سے دی گئی۔ طرح مقرر کی، دعوت نامے چھپوائے۔ شعرائے کرام سے وعدے لیے اور سب سے بڑی بات یہ کہ اپنے نواب صاحب کے لیے بھرپور غزل کہی۔ مگر خدا جانتا ہے کہ غزل کہنے میں اتنی محنت نہیں پڑتی جتنی محنت نواب صاحب کو پڑھنے کی مشق کرانے میں کی۔ ضد یہ تھی کہ گا کر پڑھوں گا اور عالم یہ کہ ایسے بے سُرے سے کبھی سابقہ نہ پڑا تھا۔ بمشکل تمام ایک ہفتہ تک شب و روز محنت کر کے موزونیت، تلفظ اور لے کی طرف سے تو تھوڑا بہت اطمینان ہو گیا مگر آواز تو ظاہر ہے جیسی تھی ویسی ہی رہی۔ اس ایک ہفتہ میں معلوم یہ ہوتا تھا کہ اچھے خاصے بینڈ ماسٹر ہو کر رہ گئے ہیں۔ نواب صاحب غزل پڑھ رہے ہیں اور ہم ان کے سامنے کھڑے ہوئے ہاتھ سے اتار چڑھاؤ سمجھا رہے ہیں۔ خدا خدا کر کے مشاعرے کی رات آئی۔ نواب کی کوٹھی پر جشن کا سماں تھا اور معلوم ہوتا تھا کہ نواب صاحب دولھا بنے بیٹھے ہیں۔ شہر کے تمام اعلیٰ حکام رؤسا اور شعراء میں سے تمام نامی گرامی شاعر محفل میں موجود۔ لیجیے مشاعرہ شروع ہو گیا اور بڑی کامیابی کے ساتھ اس وقت تک جاری رہا جب تک شمع محفل نواب صاحب کے سامنے نہیں آئی۔ اب جو ہمارے خداوندِ نعمت کی باری آئی تو ایک تو جناب کی قطع اس پر سے گھبراہٹ پھر مصیبت بالائے مصیبت یہ کہ طرز بھول گئے جو صاحب پہلے پڑھ رہے تھے اُن ہی کی دھُن میں شروع ہو گئے اور وہ بھیانک آواز نکالی کہ لاکھ ضبط سے کام لیا پھر بھی لوگوں کی ہنسی نہ رُکی۔ بمشکل تمام اس طوفان کو رکوایا تو کسی بدتمیز سخن فہم نے داد دیتے ہوئے کہہ دیا۔ ''کیا کہنا ہے خنجر صاحب رنگ چھپائے نہیں چھپتا۔'' لاکھ عقل کے نیلام کنندہ سہی مگر یہ چوٹ سمجھ گئے اور تیور بگڑ گئے۔ سونے پر سہاگہ یہ ہوا کہ بحیثیت اُستاد کے آخر میں جو غزل ہم نے پڑھی تو وہ اتفاق سے خوب چلی پھبتیں اڑ گئیں۔ دھویں پار ہو گئے۔ نتیجہ اس کا یہ ہوا کہ مشاعرہ تو خیر ختم ہو گیا مگر شامت آئی ہماری۔ فوراً طلبی ہوئی اور اب جو دیکھتے ہیں تو نواب صاحب پھولے اور سُوجے بیٹھے ہیں۔ ہم کو دیکھتے ہی برس پڑے۔

अब समझ मे आई इस शायरी के शौक़ की वजह कि यह सब कुछ नवाब साहब टिकारी की चोट पर हो रहा है। वह एक पढ़ा लिखा साहबे–ज़ौक़ रईस दिन रात उसके यहाँ भी यही इल्मी अदबी चर्चे। अच्छा ख़ासा शेर वह कहता है आप चले हैं उसकी नक़ल उतारने। मगर अब तो करना ही था मुशायरा। एख़राजात की मंज़ूरी ली जो निहायत दरियादिली से दी गई। तरह मुक़र्रर की, दावतनामे छपवाये। शोअराए–कराम से वादे लिये और सब से बड़ी बात यह कि अपने नवाब साहब के लिए भरपूर ग़ज़ल कही। मगर ख़ुदा जानता है कि ग़ज़ल कहने में इतनी मेहनत नहीं करनी पड़ी जितनी मेहनत नवाब साहब को पढ़ने की मश्क़ कराने में की। ज़िद यह थी कि गाकर पढ़ूंगा और आलम यह कि ऐसे बेसुरे से कभी साबक़ा न पड़ा था। बमुश्किल तमाम एक हफ़्ते तक शबो–रोज़ मेहनत करके मौज़ूनियत, तलफ़्फ़ुज़ और लै की तरफ़ से तो थोड़ा बहुत इत्मीनान हो गया मगर आवाज़ तो ज़ाहिर है जैसी थी वैसी ही रही। इस एक हफ़्ते में मालूम यह होता था कि अच्छे ख़ासे बैंड मास्टर होकर रह गये हैं। नवाब साहब ग़ज़ल पढ़ रहे हैं और हम उनके सामने खड़े हुए हाथ से उतार चढ़ाव समझा रहे हैं। ख़ुदा ख़ुदा कर के मुशायरे की रात आई। नवाब की कोठी पर जश्न का समाँ था और मालूम होता था कि नवाब साहब दूल्हा बने बैठे हैं। शहर के तमाम आला हुक्काम रऊसा और शोअरा में से तमाम नामी–गरामी शायर महफ़िल में मौजूद। लीजिये मुशायरा शुरु हो गया और बड़ी कामयाबी के साथ उस वक़्त तक जारी रहा जब तक शम्ए–महफ़िल नवाब साहब के सामने आई। अब जो हमारे ख़ुदावन्दे–नेमत की बारी आई तो एक तो जनाब की कतअ उस पर से घबराहट फिर मुसीबत बालाये मुसीबत यह कि तर्ज़ भूल गये जो साहब पहले पढ़ रहे थे उन ही की धुन में शुरु हो गये और वह भयानक आवाज़ निकाली कि लाख ज़ब्त से काम लिया फिर भी लोगों की हंसी न रुकी। बमुश्किल तमाम इस तूफ़ान को रुकवाया तो किसी बदतमीज़ सुख़न फ़हम ने दाद देते हुए कह दिया। "क्या कहना है ख़ंजर साहब रंग छुपाये नहीं छुपता।" लाख अक़्ल के नीलाम कुनिन्दा सही मगर यह चोट समझ गये और तेवर बिगड़ गये। सोने पर सुहागा यह हुआ कि बहैसियत उस्ताद के आख़िर में जो ग़ज़ल हमने पढी तो वह इत्तेफ़ाक़ से ख़ूब चली छतें उड़ गईं। धुएँ पार हो गये। नतीजा इसका यह हुआ कि मुशायरा तो ख़ैर ख़त्म हो गया मगर शामत आई हमारी। फ़ौरन तलबी हुई और अब जो देखते हैं तो नवाब साहब फूले और सूजे बैठे हैं। हम को देखते ही बरस पड़े।

''کیوں صاحب یہی ہے آپ کی وفاداری کہ آپ نے میرے ساتھ یہ سلوک کیا، آپ کا قصور نہیں ہے یہ خطا ہے میرے نمک کی میرا مذاق اُڑوایا لوگوں سے کہتے پھرے کہ میں نے غزل لکھ کر دی ہے۔''

عرض کیا۔ ''توبہ۔توبہ۔ بھلا یہ کیوں کر ممکن تھا مجھ سے۔ یہ آپ سے کس نے کہا۔''

نواب صاحب نے آنکھیں نکال کر۔ ''کہتا کون۔ میں نے خود سُنا کہ لوگ آپ سے پکار پکار کر کہہ رہے تھے کہ رنگ چھپائے نہیں چھپتا۔ اس کا کیا مطلب تھا آخر، پھر یہ کہ اپنی غزل ایسی تگڑی بنائی اور میری ایسی پھسپُسی۔

عرض کیا۔ ''یہ بھی جناب والا کا خیال۔ کسی سخن فہم کے سامنے دونوں غزلیں رکھ دیجیے کہ کون سی غزل اچھی ہے۔ میں نے تو خود غزل کے اچھے شعر آپ کے لیے نکال دیے تھے اور کمزور شعر اپنے لیے رکھ لیے تھے۔''

نواب صاحب نے کہا۔ ''یہ سب کہنے کی باتیں ہیں یہی بات ہوتی تو آپ کی غزل کیوں اچھلتی اس قدر اور میری غزل کا کیوں مذاق اڑتا اتنا۔''

اب یہ بات نواب صاحب کو کیوں کر سمجھائی جا سکتی تھی کہ مذاق غزل کا نہیں بلکہ خود آپ کا اڑا ہے۔ آخر عاجز آ کر عرض کیا، بہر حال آئندہ سے میں خود مشاعرہ میں غزل نہیں پڑھوں گا۔''

غالباً نواب صاحب یہی چاہتے تھے سمجھاتے ہوئے بولے۔ ''اب دیکھیے نا آپ کو تنخواہ تو اسی بات کی ملتی ہے کہ ہم نے آپ کی شاعری کو گویا خرید لیا ہے آپ نے کسی زردوزی کا کام کرنے والے کو یہ نہ دیکھا ہوگا کہ وہ خود زردوزی کا لباس پہنے۔ آپ نے کسی دھوبی کو نہ دیکھا ہوگا کہ وہ اپنے کپڑوں پر استری کر کے پہنے اور گاہکوں کے کپڑے رہنے دے۔ آپ نے کسی بڑھئی کو نہ دیکھا ہوگا کہ وہ اپنے لیے میز کرسیاں بنائے۔ یہ سب کچھ وہ بناتے ضرور ہیں مگر بیچنے کے لیے۔ اسی طرح کے آپ بھی کاریگر ہیں۔ آپ بھی شعر بنائیے مگر اپنے لیے نہیں، اب خود اپنا شاعر ہونا بھول جائیے۔''

دلاور خان نے ہاں میں ہاں ملائی۔ ''اور نہیں تو کیا۔ میاں تم اپنے بچوں کا

"क्यों साहब यही है आपकी वफ़ादारी कि आपने मेरे साथ यह सुलूक किया, आपका कुसूर नहीं है यह ख़ता है मेरे नमक की मेरा मज़ाक उड़वाया लोगों से कहते फिरे कि मैने लिखकर दी है।"

अर्ज़ किया। "तैबा। तौबा, भला यह क्योंकर मुमकिन था मुझसे। यह आप से किस ने कहा।"

नवाब साहब ने आँखें निकालकर "कहता कौन। मैं ने सुना कि लोग आपसे पुकार पुकार कर कह रहे थे कि रंग छुपाये नहीं छुपता। इसका क्या मतलब था आख़िर, फिर यह कि अपनी ग़ज़ल ऐसी तगड़ी बनाई और मेरी ऐसी फुसफुसी।

अर्ज़ किया। यह भी जनाब वाला का ख़याल। किसी सुख़न फ़हम के सामने दोनों ग़ज़लें रख दीजिये कि कौन सी ग़ज़ल अच्छी है। मैंने तो ख़ुद ग़ज़ल के अच्छे शेर आपके लिए निकाल दिये थे और कमज़ोर शेर अपने लिए रख लिए थे।"

नवाब साहब ने कहा। "यह सब कहने की बातें हैं यही बात होती तो आप की ग़ज़ल क्यों उछलती इस क़द्र और मेरी ग़ज़ल का क्यों मज़ाक उड़ता इतना।"

अब यह बात नवाब साहब को क्योंकर समझाई जा सकती थी कि मज़ाक ग़ज़ल का नहीं बल्कि ख़ुद आपका उड़ा है। आख़िर आजिज़ आकर अर्ज़ किया, बहर हाल आइन्दा से मैं ख़ुद मुशायरे में ग़ज़ल नहीं पढूंगा।"

ग़ालेबन नबाव साहब यही चाहते थे समझाते हुए बोले। " अब देखिये ना आपको तनख़्वाह तो इसी बात की मिलती है कि हमने आपकी शायरी को गोया ख़रीद लिया है आपने किसी ज़रदोज़ी का काम करने वाले को यह न देखा होगा कि वह ख़ुद ज़रदोज़ी का कपड़ा पहने। आपने किसी धोबी को न देखा होगा कि वह अपने कपड़ों पर स्त्री करके पहने और गाहकों के कपड़े रहने दे। आपने किसी बढ़ई को न देखा होगा कि वह अपने लिये मेज़ कुर्सीयाँ बनाये। यह सब कुछ वह बनाते ज़रुर हैं मगर बेचने के लिए। उसी तरह के आप भी कारीगर हैं। आप भी शेर बनाइये मगर अपने लिए नहीं, अब ख़ुद अपना शायर होना भूल जाइये।"

दिलावर ख़ान ने हाँ में हाँ मिलाई। "और नहीं तो क्या। मियाँ तुम अपने बच्चों काख़याल करो, यह तो सब अमीरोंरईसों के शौक़ हैं, शायर

خیال کرو، یہ تو سب امیروں رئیسوں کے شوق ہیں، شاعر بنو گے تو کیا کھاؤ گے۔

اور سب نے بھی قائل کیا اور آخر ہم خاموش ہو گئے۔ نتیجہ یہ کہ اب ہم کو شعر گوئی کی قطعاً اجازت نہیں جو کچھ کہیں وہ نواب صاحب کا۔ خود نہ کسی مشاعرے میں شرکت کی اجازت نہ کسی رسالے میں کلام بھیجنے کا اختیار۔ البتہ کہتے رہتے ہیں دن رات اور خدا کے فضل سے نواب صاحب کا تیسرا دیوان آج کل پریس میں ہے۔ اس دیوان کے ہر مصرعہ کے اعداد نکالنے سے ہماری تاریخ وفات نکلتی ہے۔ ویسے خدا نے واقعی ہمیں جنت نصیب کر رکھی ہے۔"

बनोगे तो खाओगे क्या।"

और सब ने भी क़ायल किया और आख़िर हम ख़ामोश हो गये। नतीजा यह कि अब हम को शेर गोई की क़तअन इजाज़त नहीं जो कुछ कहें वह नवाब साहब का। खुद न किसी मुशायरे में शिरकत की इजाज़त, न किसी रिसाले में कलाम भेजने का अख़्तियार। अलबता कहते रहते हैं दिन रात और ख़ुदा के फ़ज़्ल से नवाब साहब का तीसरा दीवान आज कल प्रेस में है। उस दीवान के हर मिसरे के आदाद[1] निकालने से हमारी तारीख़े–वफ़ात निकलती है। वैसे ख़ुदा ने वाक़ई हमें जन्नत नसीब कर रखी है।"

1. गिनती

کنھیالال کپور

غالب جدید شعرا کی ایک مجلس میں

[دور جدید کے شعرا کی ایک مجلس میں مرزا غالب کا انتظار کیا جا رہا ہے اس مجلس میں تقریباً تمام جلیل القدر شعرا تشریف فرما ہیں۔ مثلاً ن م ارشد، ہیرا جی، ڈاکٹر قربان حسین خالص میاں رفیق احمد خوگر، راجہ مہر علی خاں، پروفیسر غیظ احمد غیظ، بکرماجیت ورما، عبدالحی نگاہ وغیرہ وغیرہ۔ یکا یک مرزا غالب داخل ہوتے ہیں۔ ان کی شکل وصورت بعینہٖ وہی ہے جو مولانا حالی نے یادگار غالب میں بیان کی ہے، ان کے ہاتھ میں دیوان غالب کا ایک نسخہ ہے تمام شعرا کھڑے ہو کر آداب بجالاتے ہیں]

غالب:۔ حضرات میں آپ کا نہایت شکر گزار ہوں کہ آپ نے مجھے جنت میں دعوت نامہ بھیجا اور اس مجلس میں مدعو کیا۔ میری مدت سے آرزو تھی کہ دور جدید کے شعرا سے شرف نیاز حاصل کروں۔

कन्हैया लाल कपूर

ग़ालिब जदीद शोअरा[1] की एक मजलिस में

{दौरे—जदीद के शोअरा की एक मजलिस में मिर्ज़ा ग़ालिब का इन्तज़ार किया जा रहा है उस मजलिस में तक़रीबन तमाम जलीलुलक़द्र[2] शोअरा तशरीफ़ फ़रमा हैं। मसलन नून मीम अरशद, हीरा जी, डाक्टर कुर्बान हुसेन ख़ालिस, मियाँ, रफ़ीक़ अहमद ख़ूगर, राजा मेहर अली ख़ाँ, प्रोफ़ेसर गैज़ अहमद गैज़ विक्रमाजीत वर्मा, अब्दुल हई निगाह वग़ैरह वग़ैरह। यकायक मिर्ज़ा ग़ालिब दाख़िल होते हैं। उनकी शक्लो—सूरत बऐनही[3] वही है जो मौलाना हाली ने यादगारे—ग़ालिब में बयान की है, उनके हाथों में दीवाने—ग़ालिब का एक नुस्ख़ा है तमाम शोअरा खड़े होकर आदाब बजा लाते हैं}

ग़ालिब : हज़रात मैं आपका निहायत शुक्रगुज़ार हूँ कि आपने मुझे जन्नत में दावतनामा भेजा और इस मजलिस में मदऊ किया। मेरी मुद्दत से आरज़ू थी कि दौरे—जदीद के शोअरा से शरफ़े—नयाज़ हासिल करूँ।

---

1. शायर का बहुवचन 2. महान 3. बिल्कुल उसी तरह

ایک شاعر: یہ آپ کی ذرہ نوازی ہے ورنہ ؎

وہ آئیں گھر ہمارے خدا کی قدرت ہے
کبھی ہم ان کو کبھی اپنے گھر کو دیکھتے ہیں

غالب: رہنے بھی دیجیے اس بے جا تعریف کو من آنم کہ من دانم۔

دوسرا شاعر: تشریف رکھیے گا۔ کہیے جنت میں خوب گذرتی ہے آپ تو فرمایا کرتے تھے ہم کو معلوم ہے جنت کی حقیقت لیکن

غالب: بھئی جنت بھی خوب جگہ ہے جب سے وہاں گیا ہوں ایک شعر بھی موزوں نہیں کر سکا۔

دوسرا شاعر: تعجب جنت میں آپ کو کافی فراغت ہے اور پھر ہر ایک چیز میسر ہے پینے کو شراب انتقام لینے کو پری زاد - اور اس پر یہ فکر کوسوں دور کہ ؎

آپ کا بندہ اور پھروں ننگا آپ کا نوکر اور کھاؤں ادھار

باوجود اس کے آپ کچھ لکھ..........

تیسرا شاعر: (بات کاٹ کر) سنایئے اقبال کا کیا حال ہے۔

غالب: وہی جو اس دنیا میں تھا دن رات خدا سے لڑنا جھگڑنا وہی پرانی بحث ع

مجھے فکر جہاں کیوں ہو جہاں تیرا ہے یا میرا

پہلا شاعر: میرے خیال میں وقت کافی ہو گیا ہے اب مجلس کی کاروائی شروع کرنی چاہیے۔

دوسرا شاعر: میں کرسی صدارت کے لیے جناب م ن ارشد کا نام تجویز کرتا ہوں۔

تیسرا شاعر: اور میں تائید کرتا ہوں،

(ارشد صاحب کرسی صدارت پر بیٹھنے سے پہلے حاضرین مجلس کا شکریہ ادا کرتے ہیں)۔

م ن ارشد: میرے خیال میں ابتدا مرزا غالب کے کلام سے ہونی چاہیے...... میں نہایت ادب سے مرزا موصوف سے درخواست کرتا ہوں کہ اپنا کلام پڑھیں۔

एक शायर: यह आपकी जर्रा–नवाज़ी है वगरना –
वह आयें घर में हमारे ख़ुदा की कुदरत है
कभी हम उनको कभी अपने घर को देखते हैं

ग़ालिब : रहने भी दीजिये इस बेजा तारीफ़ को मन आनम कि मन दानम[1]।

दूसरा शायर: तशरीफ़ रखियेगा। कहिये जन्नत में ख़ूब गुज़रती है आप तो फ़रमाया करते थे हमको मालूम है जन्नत की हक़ीकत लेकिन

ग़ालिब : भई जन्नत भी ख़ूब जगह है जब से वहाँ गया हूँ एक शेर भी मौज़ूँ नहीं कर सका।

दूसरा शायर: ताअज्जुब जन्नत में आपको काफ़ी फ़राग़त है और हर एक चीज़ मयस्सर है पीने को शराब इन्तक़ाम लेने को परीज़ाद। और इस पर यह फ़िक्र कोसों दूर कि –
आपका बंदा और फिरुँ नंगा
आपका नौकर और खाऊँ उधार
बावजूद इसके आप कुछ लिख.........

तीसरा शायर: (बात काटकर) सुनाइये इक़बाल का क्या हाल है।

ग़ालिब : वही जो इस दुनिया में था दिन रात ख़ुदा से लड़ना झगड़ना वही पुरानी बहस –
मुझे फ़िक्रे–जहाँ क्यों हो जहाँ तेरा है या मेरा

पहला शायर: मेरे ख़याल मे वक़्त काफ़ी हो गया है अब मजलिस की कारवाई शुरु करनी चाहिए।

दूसरा शायर: मैं कुर्सिए–सदारत के लिए जनाब मीम नून अरशद का नाम तजवीज़ करता हूँ।

तीसरा शायर: और मैं ताईद करता हूँ,
(अरशद साहब कुर्सिए–सदारत पर बैठने से पहले हाज़रीने–मजलिस का शुक्रिया अदा करते हैं)।

मीम नून अरशद: मेरे ख़याल में इब्तदा मिर्ज़ा ग़ालिब के कलाम से होनी चाहिए...... मैं निहायत अदब से मिर्ज़ा मौसूफ़ से दरख़्वास्त करता हूँ कि अपना कलाम पढ़ें।

---

1. मैं जैसा हूँ ख़ुद ही जानता हूँ

غالب: بھئی جب ہمارے سامنے شمع لائی جائے گی تو ہم بھی کچھ پڑھ کر سنادیں گے۔

م ن ارشد: معاف کیجیے گا۔ مرزا۔ اس مجلس میں شمع وغیرہ کسی کے سامنے نہیں لائی جائے گی۔ شمع کے بجائے یہاں پچاس کینڈل پاور کا لیمپ ہے اس کی روشنی میں ہر ایک شاعر اپنا کلام پڑھے گا۔

غالب: بہت اچھا صاحب تو غزل سنیے گا۔

باقی شعرا: ارشاد

غالب: عرض کیا ہے،

خط لکھیں گے گرچہ مطلب کچھ نہ ہو
ہم تو عاشق ہیں تمہارے نام کے

(باقی شعرا ہنستے ہیں مرزا حیران ہو کر ان کی جانب دیکھتے ہیں)

غالب: اجی صاحب یہ کیا حرکت ہے نہ داد نہ تحسین اس بے موقع خندہ زنی کا مطلب؟

ایک شاعر: معاف کیجیے گا مرزا ہمیں یہ شعر کچھ بے معنی سا معلوم ہوتا ہے۔

غالب: بے معنی؟

ہیرا جی: دیکھیے نا مرزا، آپ فرماتے ہیں خط لکھیں گے گرچہ مطلب کچھ نہ ہو۔ اگر مطلب کچھ نہیں تو خط لکھنے کا فائدہ ہی کیا اور اگر آپ صرف معشوق کے نام ہی کے عاشق ہیں تو تین پیسے کا خط برباد کرنا ہی کیا ضرور، سادہ کاغذ پر اس کا نام لکھ لیجیے۔

ڈاکٹر قربان حسین خالص: میرے خیال میں اگر یہ شعر اس طرح لکھا جائے تو زیادہ موزوں ہے۔

خط لکھیں گے کیوں کہ چھٹی ہے ہمیں دفتر سے آج
اور چاہے بھیجنا ہم کو پڑے بیرنگ ہی
پھر بھی تم کو خط لکھیں گے ہم ضرور

ग़ालिब : भई जब हमारे सामने शमा लाई जायेगी तो हम भी कुछ पढ़कर सुना देंगे।

मीम नून अरशद: माफ़ कीजियेगा मिर्ज़ा। इस मजलिस में शमा वग़ैरह किसी के सामने नहीं लाई जायेगी। शमा के बजाय यहाँ पचास कैण्डिल पावर का लैम्प है उसकी रोशनी में हर एक शायर अपना कलाम पढ़ेगा।

ग़ालिब : बहुत अच्छा साहब तो ग़ज़ल सुनियेगा।

बाक़ी शोअरा: इरशाद

ग़ालिब : अर्ज़ किया है,

ख़त लिखेंगे गरचे मतलब कुछ न हो
हम तो आशिक़ हैं तुम्हारे नाम के

(बाक़ी शोअरा हंसते हैं मिर्ज़ा हैरान होकर उनकी जानिब देखते हैं)

ग़ालिब : अजी साहब यह क्या हरकत है न दाद न तहसीन इस बे मौक़ा ख़न्दाज़नी[1] का मतलब?

एक शायर: माफ़ कीजियेगा मिर्ज़ा हमें यह शेर कुछ बेमानी सा मालूम होता है।

ग़ालिब : बेमानी?

हीराजी : देखिये ना मिर्ज़ा, आप फ़रमाते हैं ख़त लिखेंगे गरचे मतलब कुछ न हो। अगर मतलब कुछ नहीं तो ख़त लिखने का फ़ायदा ही क्या और अगर आप सिर्फ़ माशूक़ के नाम ही के आशिक़ हैं तो तीन पैसे का ख़त बरबाद करना ही क्या ज़रुर, सादा काग़ज़ पर उसका नाम लिख लीजिये।

डाक्टर कुर्बान हुसेन ख़ालिस: मेरे ख़याल में अगरचे यह शेर इस तरह लिखा जाये तो ज़्यादा मौज़ूँ है–

ख़त लिखेंगे क्योंकि छुट्टी है हमें दफ़्तर से आज
और चाहे भेजना हमको पड़े बैरंग ही
फिर भी तुमको ख़त लिखेंगे हम ज़रुर

---

1. हंसी

چاہے مطلب کچھ نہ ہو
جس طرح سے میری اک اک نظم کا
کچھ بھی تو مطلب نہیں
خط لکھیں گے کیوں کہ الفت ہے ہمیں
میرا مطلب ہے محبت ہے ہمیں
یعنی عاشق ہیں تمہارے نام کے

غالب: یہ تو اس طرح معلوم ہوتا ہے جیسا آپ میرے اس شعر کی ترجمانی کرر ہے ہیں۔

بک رہا ہوں جنوں میں کیا کیا کچھ
کچھ نہ سمجھے خدا کرے کوئی

ہیرا جی: جنوں! جنوں کے متعلق مرزا میں نے کچھ عرض کیا ہے اگر اجازت ہو تو کہوں۔

غالب: ہاں ہاں بڑے شوق سے۔

ہیرا جی: جنوں ہوا جنوں ہوا
مگر کہاں جنوں ہوا
کہاں ہوا وہ کب ہوا
ابھی ہوا یا اب ہوا
نہیں ہوں میں یہ جانتا
مگر جدید شاعری
میں کہنے کا جو شوق ہے
تو بس یہی ہے وجہ کہ
دماغ میرا چل گیا
یہی سبب ہے جو مجھے
جنوں ہوا جنوں ہوا

चाहे मतलब कुछ न हो
जिस तरह से मेरी इक इक नज़्म का
कुछ भी तो मतलब नहीं
ख़त लिखेंगे क्योंकि उल्फ़त है हमें
मेरा मतलब है मोहब्बत है हमें
यानी आशिक़ हैं तुम्हारे नाम के

ग़ालिब : यह तो इस तरह मालूम होता है जैसा आप मेरे इस शेर की तर्जुमानी कर रहे हैं।

बक रहा हूँ जुनूँ में क्या क्या कुछ
कुछ न समझे ख़ुदा करे कोई

हीराजी : जुनूँ! जुनूँ के मुतअल्लिक मिर्ज़ा मैंने कुछ अर्ज़ किया है अगर इजाज़त हो तो कहूँ।

ग़ालिब : हाँ हाँ बड़े शौक़ से।

हीराजी : जुनूँ हुआ जुनूँ हुआ
मगर कहाँ जुनूँ हुआ
कहाँ हुआ वह कब हुआ
अभी हुआ या अब हुआ
नहीं हूँ मैं यह जानता
मगर जदीद शायरी
में कहने का जो शौक़ है
तो बस यही वजह है कि
दिमाग़ मेरा चल गया
यही सबब है जो मुझे
जुनूँ हुआ जुनूँ हुआ

غالب: (ہنسی کو روکتے ہوئے) سبحان اللہ کیا برجستہ اشعار ہیں۔

م ن ارشد: اب مرزا غزل کا دوسرا شعر فرمایئے۔

غالب: میں اب مقطع ہی عرض کروں گا کہا ہے:

عشق نے غالب نکما کر دیا
ورنہ ہم بھی آدمی تھے کام کے

عبدالحی نگاہ: گستاخی معاف مرزا۔ اگر اس شعر کا پہلا مصرع اس طرح لکھا جاتا تو ایک بات پیدا ہو جاتی۔

غالب: کس طرح؟

عبدالحی نگاہ: عشق نے ہاں ہاں تمھارے عشق نے
عشق نے سمجھے؟ تمھارے عشق نے
مجھ کو نکما کر دیا
اب نہ اٹھ سکتا ہوں میں
اور چل تو سکتا ہی نہیں
جانے کیا بکتا ہوں میں
یعنی نکما کر دیا
اتنا تمھارے عشق نے
گرتا ہوں اور اٹھتا ہوں میں
اٹھتا ہوں اور گرتا ہوں میں
یعنی تمہارے عشق نے
اتنا نکما کر دیا

غالب: (طنزاً) بہت خوب بھئی غضب کر دیا۔

غیظ احمد: اور دوسرا مصرع اس طرح لکھا جا سکتا تھا:

جب تک نہ مجھ کو عشق تھا
تب تک مجھے کچھ ہوش تھا

ग़ालिब : (हंसी को रोकते हुए) सुबहानअल्लाह क्या बरजस्ता अशआर हैं।

मीम नून अरशद : अब मिर्ज़ा ग़ज़ल का दूसरा शेर फ़रमाइये।

ग़ालिब : मैं अब मक़्ता ही अर्ज़ करूँगा कहा है:

इश्क़ ने ग़ालिब निकम्मा कर दिया
वरना हम भी आदमी थे काम के

अब्दुल हई निगाह : गुस्ताख़ी माफ़ मिर्ज़ा। अगर इस शेर का पहला मिसरा इस तरह लिखा जाता तो एक बात पैदा हो जाती।

ग़ालिब : किस तरह?

अब्दुल हई निगाह :

इश्क़ ने हाँ हाँ तुम्हारे इश्क़ ने
इश्क़ ने समझे? तुम्हारे इश्क़ ने
मुझको निकम्मा कर दिया
अब न उठ सकता हूँ मैं
और चल तो सकता ही नहीं
जाने क्या बकता हूँ मैं
यानी निकम्मा कर दिया
इतना तुम्हारे इश्क़ ने
गिरता हूँ और उठता हूँ मैं
उठता हूँ और गिरता हूँ मैं
यानी तुम्हारे इश्क़ ने
इतना निकम्मा कर दिया

ग़ालिब : (तन्ज़न) बहुत ख़ूब भई ग़ज़ब कर दिया।

गैज़ अहमद : और दूसरा मिसरा इस तरह लिखा जा सकता था–

जब तक न मुझको इश्क़ था
तब तक मुझे कुछ होश था

سب کام کر سکتا تھا میں
اور دل میں میرے جوش تھا
اس وقت تھا میں آدمی
اور آدمی تھا کام کا
لیکن تمھارے عشق نے
مجھ کو نکما کر دیا

غالب: واللہ کمال ہی تو کر دیا۔ بھئی اب آپ لوگ اپنا کلام سنائیں۔

م ن ارشد: اب ڈاکٹر قربان حسین خالص جو جدید شاعری کے امام ہیں اپنا کلام سنائیں گے۔

ڈاکٹر خالص: اجی ارشد صاحب میں کیا کہوں اگر میں امام ہوں تو آپ مجتہد ہیں آپ جدید شاعری کی منزل ہیں اور میں سنگ میل اس لیے آپ اپنا کلام پہلے پڑھیے۔

م ن ارشد: توبہ توبہ اتنی کسر نفسی اچھا اگر آپ مصر ہیں تو میں ہی اپنی ایک نظم پہلے پڑھتا ہوں۔ نظم کا عنوان ہے "بدلہ" عرض کیا ہے۔

آ مری جان میرے پاس انگیٹھی کے قریب
جس کے آغوش میں یوں ناچ رہے ہیں شعلے
جس طرح دور کسی دشت کی پہنائی میں
رقص کرتا ہو کوئی بھوت کہ جس کی آنکھیں
کرم شب تاب کی مانند چمک اٹھتی ہیں
ایسی تشبیہ کی لذت سے مگر دور ہے تو
تو کہ اک اجنبی انجان سی عورت ہے جسے
رقص کرنے کے سوا اور نہیں کچھ آتا
اپنے بے کار خدا کے مانند

सब काम कर सकता था मैं
और दिल में मेरे जोश था
उस वक़्त था मैं आदमी
और आदमी था काम का
लेकिन तुम्हारे इश्क़ ने
मुझको निकम्मा कर दिया

ग़ालिब : वल्लाह कमाल ही तो कर दिया। भई अब आप लोग अपना कलाम सुनायें।

मीम नून अरशद : अब डाक्टर क़ुर्बान हुसेन ख़ालिस जो जदीद शायरी के इमाम हैं अपना कलाम सुनायेंगे।

डाक्टर ख़ालिस : अजी अरशद साहब मैं क्या कहूँ अगर मैं इमाम हूँ तो आप मुज्तहिद[1] हैं आप जदीद शायरी की मंज़िल हैं और मैं संगे–मील इसलिए आप अपना कलाम पहले पढ़िये।

मीम नून अरशद : तौबा तौबा इतनी कसरे–नफ़सी[2] अच्छा अगर आप मुसिर हैं तो मैं ही अपनी एक नज़्म पहले पढ़ता हूँ। नज़्म का उनवान है "बदला" अर्ज़ किया है।

आ मेरी जान मेरे पास अंगीठी के क़रीब
जिसके आग़ोश में यूँ नाच रहे हैं शोले
जिस तरह दूर किसी दश्त की पहनाई में
रक़्स करता हो कोई भूत कि जिसकी आँखें
किरमे–शबे–ताब की मानिन्द चमक उठती हैं
ऐसी तशबीह की लज़्ज़त से मगर दूर है तू
तू कि इक अजनबी अंजान सी औरत है जिसे
रक़्स करने के सिवा और नहीं कुछ आता
अपने बेकार ख़ुदा के मानिन्द

1. नई बात कहने वाला 2. हस्ती को मिटाना

دو پہر کو جو کبھی بیٹھے ہوئے دفتر میں
خودکشی کا مجھے یک لخت خیال آتا ہے
میں پکار اٹھتا ہوں یہ جینا ہے بھی کیا جینا
اور چپ چاپ دریچے میں سے پھر جھانکتا ہوں
آمری جان میرے پاس انگیٹھی کے قریب
تا کہ میں چوم ہی لوں عارض گلفام ترا
اور ارباب وطن کو یہ اشارہ کر دوں
اس طرح لیتا ہے اغیار سے بدلہ شاعر'
اور شب عیش گزر جانے پر
بہر جمع درم و دام نکل جاتا ہے
ایک بوڑھے سے تھکے ماندے سے رہوار کے پاس
چھوڑ کر بستر سنجاب و سمور

(نظم سن کر سامعین پر وجد کی حالت طاری ہو جاتی ہے ہیرا جی یہ کہتے ہوئے سنائی دیتے ہیں۔ یہ نظم اس صدی کی بہترین نظم ہے بلکہ میں تو کہوں گا کہ اگر ایک طرح سے دیکھا جائے تو اس میں انگیٹھی بھوت اور دفتر تہذیب و تمدن کی مخصوص الجھنوں کے حامل ہیں) (حاضرین ایک دوسرے کو معنی خیز نظروں سے دیکھتے ہوئے زیر لب مسکراتے ہیں۔)

غالب: ارشد صاحب معاف کیجیے گا آپ کی یہ نظم کم از کم میرے فہم سے تو بالاتر ہے۔

غیظ احمد غیظ: یہ صرف ارشد پر ہی کیا منحصر ہے، مشرق کی جدید شاعری ایک بڑی حد تک مبہم اور ادارک سے بالاتر ہے۔

م ن ارشد: مثلاً میرے ایک دوست کے اس شعر کو لیجیے۔

پاپوش کی کیا فکر ہے دستار سنبھالو
پایاب ہے جو موج گذر جائے گی سر سے

दोपहर को जो कभी बैठे हुए दफ़्तर में
ख़ुदकुशी का मुझे यक लख़्त ख़्याल आता है
मैं पुकार उठता हूँ यह जीना भी क्या जीना है
और चुपचाप दरीचे में से फिर झाँकता हूँ
आ मेरी जान मेरे पास अंगीठी के करीब
ताकि मैं चूम ही लूँ आरिज़े–गुलफ़ाम[1] तेरा
और अरबाबे–वतन को यह इशारा कर दूं
इस तरह लेता है अग़ियार[2] से बदला शायर
और शबे–ऐश गुज़र जाने पर
बहरे–जम्मअ दिरमो–दाम[3] निकल जाता है
एक बूढ़े से थके मांदे से रहवार के पास
छोड़कर बिस्तरे–संजाबो–समूर[4]

(नज़्म सुनकर सामेईन पर वज्द की हालत तारी हो जाती है हीराजी यह कहते हुए सुनाई देते हैं। यह नज़्म इस सदी की बेहतरीन नज़्म है बल्कि मैं तो यूँ कहूँगा कि अगर एक तरह से देखा जाये तो इस में अंगीठी भूत और दफ्तर तहज़ीबो–तमद्दुन की मख़्सूस उलझनों के हामिल हैं) (हाज़रीन एक दूसरे को मानी–ख़ेज़ नज़रों से देखते हुए ज़ेरे–लब मुस्कुराते हैं।)

ग़ालिब : अरशद साहब माफ़ कीजियेगा आपकी यह नज़्म कम अज़ कम मेरे फ़हम[5] से तो बाला तर है।

ग़ैज़ अहमद ग़ैज़ : यह सिर्फ़ अरशद पर ही क्या मुन्हसिर है, मशरिक़ की जदीद शायरी एक बड़ी हद तक मुबहम[6] और इदराक[7] से बालातर है।

मीम नून अरशद : मसलन मेरे एक दोस्त के इस शेर को लीजिये।
पापोश की क्या फ़िक्र है दस्तार संभालो
पायाब है जो मौज गुज़र जायेगी सर से

---

1. सुर्ख़ गाल 2. दुश्मन 3. मालो–दौलत इकट्ठा करने के लिए 4. जानवर की खाल का विस्तर 5. समझ 6. जिसका अर्थ साफ़ न हो 7. बुद्धि

غالب: (شعر کو دہرا کر) صاحب سچ تو یہ ہے کہ اگر چہ اس شعر میں سر اور پیر کے الفاظ شامل ہیں مگر باوجود ان کے اس شعر کا نہ سر ہے نہ پیر۔

م ن ارشد: اجی چھوڑیے اس حرف گیری کو آپ اس شعر کو سمجھے ہی نہیں مگر خیر اس بحث میں کیا رکھا ہے کیوں نہ اب ڈاکٹر قربان حسین خالص سے درخواست کی جائے کہ اپنا کلام پڑھیں۔

ڈاکٹر خالص: میری نظم کا عنوان ہے ''عشق'' عرض کیا ہے۔

عشق کیا ہے؟
میں نے اک عاشق سے پوچھا
اس نے یوں رو کر کہا
عشق ایک طوفان ہے
عشق ایک سیلاب ہے
عشق ہے اک زلزلہ
شعلۂ جوالہ - عشق
عشق ہے پیغام موت

غالب: بھئی یہ کیا مذاق ہے، نظم پڑھیے مشاعرے میں نثر کا کیا کام؟

ڈاکٹر خالص: (جھنجھلا کر) تو آپ کے خیال میں یہ نثر ہے، یہ ہے آپ کی سخن فہمی کا عالم اور فرمایا تھا آپ نے۔ ہم سخن فہم ہیں غالب کے طرفدار نہیں۔

غالب: میری سمجھ میں تو نہیں آیا کہ یہ کس قسم کی نظم ہے نہ ترنم نہ قافیہ نہ ردیف۔

ڈاکٹر خالص: مرزا صاحب۔ یہی تو جدید شاعری کی خصوصیت ہے۔ آپ نے اردو شاعری کو قافیہ اور ردیف کی فولادی زنجیروں میں قید کر رکھا ہے ہم نے اس کے خلاف جہاد کر کے اسے آزاد کیا اور اس طرح اس میں وہ اوصاف پیدا کیے ہیں جو محض خارجی خصوصیات سے کہیں زیادہ اہم ہیں۔ میری مراد رفعت تخیل تازگی افکار اور ندرت فکر سے ہے۔

غالب: رفعت تخیل کیا خوب کیا پرواز ہے۔

ग़ालिब : (शेर को दोहराकर) साहब सच तो यह है कि अगरचे इस शेर में सर और पैर के अल्फ़ाज़ शामिल हैं मगर बावजूद उनके इस शेर का न सर है न पैर।

मीम नून अरशद : अजी छोड़िये इस हर्फ़गीरी[1] को, आप इस शेर को समझे ही नहीं मगर ख़ैर इस बहस में क्या रखा है क्यों न अब डाक्टर कुर्बान हुसेन ख़ालिस से दरख़्वास्त की जाय कि अपना कलाम पढ़ें।

डाक्टर ख़ालिस : मेरी नज़्म का उनवान है "इश्क़" अर्ज़ किया है।

इश्क़ क्या है?
मैंने इक आशिक़ से पूछा
उसने यूँ रो कर कहा
इश्क़ इक तूफ़ान है
इश्क़ इक सैलाब है
इश्क़ है एक ज़लज़ला
शोलए–जव्वाला[2] – इश्क़
इश्क़ है पैग़ामे–मौत

ग़ालिब : भई यह क्या मज़ाक़ है, नज़्म पढ़िये मुशायरे में नस्र[3] का क्या काम?

डाक्टर ख़ालिस : (झुंझला कर) तो आपके ख़याल में यह नस्र है, यह है आपकी सुख़न–फ़हमी का आलम और फ़रमाया था आपने। हम सुख़न–फ़हम हैं ग़ालिब के तरफ़दार नहीं

ग़ालिब : मेरी समझ में तो नहीं आया कि यह किस क़िस्म की नज़्म है न तरन्नुम न क़ाफ़िया न रदीफ़।

डाक्टर ख़ालिस : मिर्ज़ा साहब। यही तो जदीद शायरी की ख़ुसूसियत है। आपने उर्दू शायरी को क़ाफ़िया और रदीफ़ की फ़ौलादी जंज़ीरों में क़ैद कर रखा है हमने उसके ख़िलाफ़ जिहाद करके उसे आज़ाद किया और इस तरह इसमें वह औसाफ़ पैदाकिये हैं जो महज़ ख़ारज़ी[4] ख़ुसूसियात से कहीं ज़्यादा अहम हैं। मेरी मुराद रफ़अते–तख़य्युल ताज़गिए–अफ़कार और नुदरते–फ़िक्र से है।

ग़ालिब : रफ़अते–तख़य्युल, क्या ख़ूब परवाज़ है।

1. ऐब निकालना 2. चक्कर काटने वाला 3. गद्य 4. बाहरी

میں نے ایک عاشق سے پوچھا اس نے یوں رو کر کہا

ڈاکٹر خالص: (چڑ کر) عاشق رو کر نہیں کہے گا تو کیا قہقہہ لگا کر کہے گا؟ مرزا آپ یہ بھی نہیں جانتے کہ عشق اور رونے میں کتنا گہرا تعلق ہے۔

غالب: مگر آپ کو قافیہ اور ردیف ترک کرنے کی ضرورت کیوں پیش آئی۔

رفیق احمد خوگر: اس کی وجہ مغربی شعراء کا تتبع نہیں بلکہ ہماری طبیعت کا فطری میلان ہے جو زندگی کے دوسرے شعبوں کی طرح شعر و ادب میں بھی آزادی کا جویا ہے، اس کے علاوہ دور جدید کی روح انقلاب کشمکش تحقیق تجسس تعقل پرستی اور جدوجہد ہے ماحول کی اس تبدیلی کا اثر ادب پر ہوا ہے اور میرے اس نقطے کو ٹھیکرے نے بھی اپنی کتاب وینٹی فیئر میں تسلیم کیا ہے چنانچہ اس لیے ہم نے محسوس کیا کہ قدیم شاعری ناقص ہونے کے علاوہ روح میں وہ لطیف کیفیت پیدا نہیں کر سکتی جو مثال کے طور پر ڈاکٹر خالص کی شاعری کا جوہر ہے۔ قدیم شعرا اور جدید شعرا کے ماحول میں زمین و آسمان کا فرق ہے۔ قدیم شعرا بقول مولانا آزاد حسن و عشق کی حدود سے باہر نہ نکل سکے اور ہم جن میدانوں میں گھوڑے دوڑا رہے ہیں نہ ان کی وسعت کی کوئی بھی انتہا ہے اور نہ ان کے عجائب و لطائف کا شمار۔

غالب: میں آپ کا مطلب نہیں سمجھا۔

م ن ارشد: خوگر صاحب یہ کہنا چاہتے ہیں کہ ہم ایک نئی دنیا میں رہتے ہیں یہ ریڈیو ہوائی جہاز اور دھماکے سے پھٹنے والے بموں کی دنیا ہے۔ یہ بھوک بیکاری انقلاب اور آزادی کی دنیا ہے اس دنیا میں رہ کر ہم اپنا وقت حسن و عشق گل و بلبل شیریں فرہاد کے افسانوں میں ضایع نہیں کر سکتے۔ شاعری کے لیے اور بھی موضوع سخن ہیں جیسا کہ ہمارے ایک شاعر نے کہا۔

آج تک سرخ و سیہ صدیوں کے سائے کے تلے
آدم و حوا کی اولاد پہ کیا گزری ہے
موت اور زیست کی روزانہ صف آرائی میں

मैंने एक आशिक़ से पूछा उसने यूँ रोकर कहा

डाक्टर ख़ालिस : (चिढ़कर) आशिक़ रोकर नहीं कहेगा तो क्या क़हक़हा लगाकर कहेगा? मिर्ज़ा आप यह भी नहीं जानते कि इश्क़ और रोने में कितना गहरा तअल्लुक़ है।

ग़ालिब : मगर आपको क़ाफ़िया और रदीफ़ तर्क करने की ज़रुरत क्यों पेश आई।

रफ़ीक़ अहमद ख़ूगर : इसकी वजह मग़रबी शोअरा का ततब्बो[1] नहीं बल्कि हमारी तबीयत का फ़ितरी मैलान है जो ज़िन्दगी के दूसरे शोबों की तरह शेरो–अदब में भी आज़ादी का जोया[2] है, इसके अलावा दौरे–जदीद की रुहे–इन्क़लाब, कशमकश तहक़ीक़, तजस्सुस, तअक़ुल–परस्ती और जद्दोजेहद है। माहौल की इस तब्दीली का असर अदब पर हुआ है और मेरे इस नुक़्ते को थेकरे ने भी अपनी किताब वेनीटी फ़ेयर में तस्लीम किया है चुनांचे इसलिए हम ने महसूस किया कि क़दीम शायरी नाक़िस होने के अलावा रुह में वह लतीफ़ कैफ़ियत पैदा नहीं कर सकती जो मिसाल के तौर पर डाक्टर ख़ालिस की शायरी का जौहर है। क़दीम शोअरा और जदीद शोअरा के माहौल में ज़मीनो–आसमान का फ़र्क़ है क़दीम शोअरा बक़ौल मौलाना आज़ाद हुस्नो–इश्क़ की हुदूद से बाहर न निकल सके और हम जिन मैदानों में घोड़े दौड़ा रहे हैं न उनकी वुसअत की कोई भी इन्तहा है और न उनके अजायबो–लतायफ़ का शुमार।

ग़ालिब : मैं आपका मतलब नहीं समझा।

मीम नून अरशद : ख़ूगर साहब यह कहना चाहते हैं कि हम एक नई दुनिया में रहते हैं यह रेडियो, हवाई जहाज़ और धमाके से फटने वाले बमों की दुनिया है। यह भूक बेकारी इन्क़लाब और आज़ादी की दुनिया है। इस दुनिया में रह कर हम अपना वक़्त हुस्नो–इश्क़, गुलो–बुलबुल, शीरीं–फ़रहाद के अफ़सानों में ज़ाया[3] नहीं कर सकते। शायरी के लिए और भी मौज़ूए–सुख़न हैं जैसा कि हमारे एक शायर ने कहा –

आज तक सुर्ख़ो–सियह सदियों के साये तले
आदमो–हव्वा की औलाद पे क्या गुज़री है
मौत और ज़ीस्त की रोज़ाना सफ़–आराई में

---

1. पैरवी 2. तलाश करने वाला 3. बरबाद

ہم پہ کیا گزرے گی اجداد پہ کیا گزری ہے
یہ حسیں کھیت پھٹا پڑتا ہے جوبن جن کا
یہ ہر ایک سمت پُر اسرار کڑی دیواریں
یہ بھی ہیں ایسے کئی اور بھی مضموں ہوں گے

راجہ مہر علی خاں: بہت خوب۔ یہ بھی ہیں ایسے کئی اور بھی مضموں ہوں گے ایسے ہی مضامین میں سے ایک مضمون ''ڈاک خانہ'' ہے جو میری اس نظم کا جو میں ابھی آپ کے سامنے پڑھوں گا موضوع ہے۔

غالب: ڈاک خانہ؟

راجہ مہر علی خاں: مرزا اس میں حیران ہونے کی کیا بات ہے۔ سنیئے عرض کیا ہے:

ڈاک خانہ کے ہے اندر آج اف کتنا ہجوم
ڈالنے کو خط کھڑے ہیں کس قدر اف آدمی
ان میں ہر اک کی تمنا ہے کہ وہ
ڈال کر جلدی سے خط یا پارسل
بھاگ کر دیکھے کہ اس کی سائیکل
ہے پڑی باہر جہاں رکھ کر اسے
ڈاک خانہ میں ابھی آیا تھا وہ خط ڈالنے
جا رہے خط چہار اطراف کو
بمبئی کو مصر کو لندن کو کوہ قاف کو
دیکھنا آئی ہے اک عورت لفافہ ڈالنے
کون کہتا ہے کہ اک عورت ہے یہ
یہ تو لڑکا ہے کسی کالج کا کہ
جس کے بال
خد و خال
اس قدر ملتے ہیں عورت سے کہ ہم

हम पे क्या गुज़रेगी अजदाद पे क्या गुज़री है
ये हसीं खेत फटा पड़ता है जोबन जिनका
यह हर एक सिम्त पुर–असरार कड़ी दिवारें
यह भी हैं ऐसे कई और भी मज़मूं होंगें

राजा मेहर अली : बहुत ख़ूब। यह भी हैं ऐसे कई और भी मज़मूं होंगे ऐसे ही मज़ामीन में से एक मज़मून "डाकख़ाना" है जो मेरी इस नज़्म का, जो मैं अभी आपके सामने पढूँगा मौज़ूअ है।

ग़ालिब : डाकख़ाना?

राजा मेहर अली ख़ाँ : मिर्ज़ा इसमें हैरान होने की क्या बात है। सुनिये अर्ज़ किया है:

डाकख़ाने के है अन्दर आज उफ़ कितना हुजूम
डालने को ख़त खड़े है किस क़दर उफ़ आदमी
उनमें हर एक की तमन्ना है कि वह
डाल कर जल्दी से ख़त या पार्सल
भाग कर देखें कि उसकी साइकिल
है पड़ी बाहर जहाँ रखकर उसे
डाकख़ाने में अभी आया था वह ख़त डालने
जा रहे ख़त चहार अतराफ़ को
बम्बई को, मिस्र को, लंदन को कोहे–काफ़ को
देखना आई है एक औरत लिफ़ाफ़ा डालने
कौन कहता है कि इक औरत है यह
यह तो लड़का है किसी कॉलेज का कि
जिसके बाल
ख़द्दो–ख़ाल
इस क़दर मिलते हैं औरत से कि हम

اس کو عورت کا سمجھتے ہیں بدل
اف ہماری لغزشیں
ہے مگر کس شخص کا یہ سب قصور
کیا نظر میری نہیں کرتی ہے کام
جھٹپٹا سا ہو گیا ہے شام کا
یا ہمارے ہے تمدن کا قصور
کہ ہمارے نوجواں
ڈاک خانے میں ہیں جب آتے لفافہ ڈالنے
اس قدر دیتے ہیں وہ دھوکا ہمیں
کہ نظر آتے ہیں ہم کو عورتیں

(زوروں کی داد دی جاتی ہے۔ ہر طرف سے مرحبا بھئی کمال کر دیا کے نعرے بلند ہوتے ہیں۔ مرزا غالب کی سراسیمگی ہر لحہ بڑھتی جا رہی ہے)

م ن ارشد: اب میں ہندوستان کے مشہور شاعر پروفیسر غیظ سے درخواست کروں گا کہ وہ اپنے تازہ افکار سے ہمیں نوازیں۔

پروفیسر غیظ: میں نے تو کوئی نئی چیز نہیں لکھی۔

ہیرا جی: تو پھر وہی نظم سنا دیجیے جو پچھلے دنوں ریڈیو والوں نے آپ سے لکھوائی تھی

پروفیسر: آپ کی مرضی ہے تو وہی سن لیجیے عنوان ہے ''لگائی''

فون پھر آیا دل زار نہیں فون نہیں
سائیکل ہو گا، کہیں اور چلا جائے گا
ڈھل چکی رات اترنے لگا کھمبوں کا بخار
کمپنی باغ میں لنگڑانے لگے سرد چراغ
تھک گیا رات کو چلا کے ہر اک چوکیدار
گل کرو دامن افسردہ کے بوسیدہ داغ
یاد آتا ہے مجھے سرمۂ دنبالہ دار

इसको औरत का समझते हैं बदल
उफ हमारी लग्ज़िशें
है मगर किस शख़्स का यह सब क़सूर
क्या नज़र मेरी नहीं करती है काम
झुटपुटा सा हो गया है शाम का
या हमारे है तमद्दुन का क़सूर
कि हमारे नौजवान
डाकख़ाने में हैं जब आते लिफ़ाफ़ा डालने
इस क़दर देते हैं वह धोका हमें
कि नज़र आते हैं हमको औरतें
(ज़ोरों की दाद दी जाती है। हर तरफ़ से मरहबा
भई कमाल कर दिया के नारे बुलन्द होते हैं।
मिर्ज़ा ग़ालिब की सरासीमगी[1] हर लम्हा बढ़ती
जा रही है)

मीम नून अरशद : अब मैं हिन्दुस्तान के मशहूर शायर प्रोफ़ेसर गैज़ से दरख़्वास्त करूँगा कि वह अपने ताज़ा अफ़कारें से हमें नवाज़ें।

प्रोफेसर गैज़ : मैंने तो कोई नई चीज़ नहीं लिखी।

हीराजी : तो फिर वही नज़्म सुना दीजिये जो पिछले दिनों रेडियो वालों ने आप से लिखवाई थी।

प्रोफ़ेसर : आपकी मर्ज़ी है तो वही सुन लीजिये उनवान है "लगाई"
फ़ोन फिर आया दिले-ज़ार नहीं फ़ोन नहीं
साइकिल होगा, कहीं और चला जायेगा
ढ़ल चुकी रात उतरने लगा खम्बों का बुख़ार
कम्पनी बाग़ में लंगड़ाने लगे सर्द चिराग़
थक गया रात को चिल्ला के हर इक चौकीदार
गुल करो दामने-अफ़सुरदा के बोसीदा दाग़
याद आता है मुझे सुर्मए-दुंबालादार

1. घबराहट

اپنے بے خواب گھروندے ہی کو واپس لوٹو
اب یہاں کوئی نہیں کوئی نہیں آئے گا

(نظم کے دوران میں اکثر مصرعے دو دو بلکہ چار چار بار پڑھوائے جاتے ہیں اور پروفیسر غیظ بار بار مرزا غالب کی طرف داد طلب نگاہوں سے دیکھتے ہیں مرزا غالب مبہوت ہیں)۔

م ن ارشد: حضرات میرے خیال میں یہ کوئی عشقیہ نظم نہیں ہے بلکہ اس میں شاعر نے اینٹی فاشسٹ جذبے کو خوب نبھایا ہے۔

رفیق احمد: (سرگوشی کے انداز میں ہیرا جی سے) بکواس ہے!

م ن ارشد: اب ہیرا جی اپنا کلام پڑھیں گے۔

ہیرا جی: میری نظم کا عنوان ہے "بینگن"

غالب: بینگن؟

ہیرا جی: بینگن۔ اگر آپ آم کی صفت میں قصیدہ لکھ سکتے ہیں تو کیا بندہ بینگن پر ایک نظم لکھنے کا حقدار نہیں۔

غالب: معاف کیجیے گا۔ نظم پڑھیے۔

ہیرا جی: عرض کیا ہے

چنچل بینگن کی چھب نیاری
رنگ میں تم ہو کرشن مراری
جان گئی ہیں سکھیاں پیاری
رادھا رانی آ ہی گئی تو -
کرشن کنھیا ڈھونڈھ رہے ہیں
لیکن میں تو بھول چکا ہوں
بینگن سے یہ بات چلی تھی
بھوک لگی ہے کتنی ہائے
جی میں ہے ایک بھون کے بینگن

अपने बेख़्वाब घरौंदे ही को वापस लौटो
अब यहाँ कोई नहीं कोई नहीं आयेगा

(नज़्म के दौरान में अक्सर मिस्रे दो–दो बल्कि चार–चार बार पढ़वाये जाते हैं और प्रोफ़ेसर गैज़ बार–बार मिर्ज़ा ग़ालिब की तरफ़ दाद–तलब निगाहों से देखते हैं मिर्ज़ा ग़ालिब मबहूत[1] हैं)।

मीम नून अरशद : हज़रात मेरे ख़्याल में यह कोई इश्क़िया नज़्म नहीं है बल्कि इसमें शायर ने एण्टी फासिस्ट जज़्बे को ख़ूब निभाया है।

रफ़ीक़ अहमद : (सरगोशी के अन्दाज़ में हीराजी से) बकवास है!

मीम नून अरशद : अब हीराजी अपना कलाम पढ़ेंगे।

हीराजी : मेरी नज़्म का उनवान है "बैगन"

ग़ालिब : बैगन?

हीराजी : बैंगन। अगर आप आम की सिफ़त में क़सीदा लिख सकते हैं तो क्या बंदा बैगन पर एक नज़्म लिखने का हक़दार नहीं।

ग़ालिब : माफ़ कीजियेगा। नज़्म पढ़िये।

हीराजी : अर्ज़ किया है।

चंचल बैगन की छब न्यारी
रंग में तुम हो कृष्ण मुरारी
जान गई हैं सखियाँ प्यारी
राधा रानी आ ही गई तो–
कृष्ण कन्हैया ढूंढ़ रहे हैं
लेकिन मैं तो भूल चुका हूँ
बैगन से यह बात चली थी
भूक लगी है कितनी हाय
जी में है एक भून के बैगन

---

1. हैरान

کھاؤں لیکن رادھا پیاری
رنگ کو اس کے دیکھ کے مجھ کو
یاد آتے ہیں کرشن مراری
اس لیے بھوکا رہنا بہتر۔
چوں کہ میں ہوں پریم پجاری

(ہر طرف سے داد دی جاتی ہے بعض شعرا یہ کہتے ہوئے سنے جاتے ہیں بھئی جدید شاعری ہیرا جی ہی کا حصہ ہے)۔

م ن ارشد: اب جناب بکرماجیت ورما سے استدعا کی جاتی ہے کہ اپنا کلام سنائیں۔

بکرماجیت ورما: میں نے حسب معمول کچھ گیت لکھے ہیں۔

غالب: (حیران ہو کر) شاعر اب گیت لکھ رہے ہیں۔ میرے اللہ دنیا کدھر کو جا رہی ہے۔

بکرماجیت ورما: مرزا آپ کے زمانے میں گیت شاعری کی ایک باقاعدہ صنف قرار نہیں دیئے گئے تھے دور جدید کے شعرا نے انہیں ایک قابل عزت صنف کا درجہ دے دیا ہے۔

غالب: جی ہاں ہمارے زمانے میں عورتیں، بھانڈ، مراسی یا اسی قماش کے اور لوگ گیت لکھا کرتے تھے۔

بکرماجیت ورما: پہلا گیت ''برہن کا سندیس'' عرض کیا ہے۔

اڑ جا دیس بدیس رے کوّے اڑ جا دیس بدیس
سن کر تیری کائیں کائیں۔

غالب: خوب سن کر تیری کائیں کائیں!

بکرماجیت: عرض کیا ہے:

سن کر تیری کائیں کائیں
آنکھوں میں آنسو بھر آئیں
بول یہ تیرے من کو بھائیں

खाऊँ लेकिन राधा प्यारी
रंग को उसके देख के मुझको
याद आते हैं कृष्ण मुरारी
इसलिए भूका रहना बेहतर–
चूंकि मैं हूँ प्रेम–पुजारी
(हर तरफ़ से दाद दी जाती है बाज़ शोअरा यह कहते हुए सुने जाते हैं मई जदीद शायरी हीराजी ही का हिस्सा है)।

मीम नून अरशद : अब जनाब विक्रमाजीत वर्मा से इस्तदआ की जाती है कि अपना कलाम सुनायें।

विक्रमाजीत वर्मा : मैंने हस्बे–मामूल कुछ गीत लिखे हैं।

ग़ालिब : (हैरान होकर) शायर अब गीत लिख रहे हैं। मेरे अल्लाह दुनिया किधर को जा रही है।

विक्रमाजीत वर्मा : मिर्ज़ा आपके ज़माने में गीत शायरी की एक बाक़ायदा सिन्फ़[1] क़रार नहीं दिये गये थे। दौरे–जदीद के शोअरा ने उन्हें एक क़ाबिले–इज़्ज़त सिन्फ़ का दर्जा दे दिया है।

ग़ालिब : जी हाँ हमारे ज़माने में औरतें, भांड, मिरासी या इसी क़माश[2] के और लोग गीत लिखा करते थे।

विक्रमाजीत वर्मा : पहला गीत "बिरहन का संदेस" अर्ज़ किया है।
उड़ जा देस–बिदेस रे कौवे उड़ जा देस–बिदेस
सुनकर तेरी काएँ–काएँ

ग़ालिब : ख़ूब, सुनकर तेरी काएँ–काएँ!

विक्रमाजीत : अर्ज़ किया है:
सुनकर तेरी काएँ–काएँ
आँखों में आँसू भर आयें
बोल यह तेरे मन को भाएँ

1. विद्या 2. पेशा

مت جانا پردیس رے کوے اڑ جا دیس بدیس

م ن ارشد: بھئی کیا اچھوتا خیال ہے۔ پنڈت صاحب میرے خیال میں ایک گیت آپ نے کبوتر پر بھی لکھا تھا وہ بھی مرزا کو سنا دیجیے۔

بکرماجیت ورما: سنیے پہلا بند ہے:

بول کبوتر بول
دیکھو کوئلیا کوک رہی ہے
من میں میرے ہوک اٹھی ہے
کیا تجھ کو بھی بھوک لگی ہے
بول غٹرغوں بول کبوتر
بول کبوتر بول

باقی شعرا: (ایک زبان ہو کر) بول کبوتر بول بول کبوتر بول

(اس اثنا میں مرزا غالب نہایت گھبراہٹ اور سراسیمگی کی حالت میں دروازے کی طرف دیکھتے ہیں)۔

بکرماجیت ورما: اب دوسرا بند سنیے:

بول کبوتر بول
کیا میرا ساجن کہتا ہے
کیوں مجھ سے روٹھا رہتا ہے
کیوں میرے طعنے سہتا ہے
بھید یہ سارے کھول کبوتر
بول کبوتر بول

باقی شعرا: (ایک زبان ہو کر) بول کبوتر بول کبوتر بول کبوتر بول۔

(اس شور وغل کی تاب نہ لاتے ہوئے میاں رفیق احمد خوگر اور عبدالحی نگاہ کے سنانے کی باری آنے سے پہلے ہی مرزا غالب بھاگ کر کمرے سے باہر نکل جاتے ہیں)۔

मत जाना परदेस रे कौवे उड़ जा देस–बिदेस

मीम नून अरशद : भई क्या अछूता ख़याल है। पंडित साहब मेरे ख़याल में एक गीत आपने कबूतर पर भी लिखा था वह भी मिर्ज़ा को सुना दीजिये।

विक्रमाजीत वर्मा : सुनिये पहला बंद है:

बोल कबूतर बोल
देख कोयलिया कूक रही है
मन में मेरे हूक उठी है
क्या तुझको भी भूक लगी है
बोल गुटरगूँ बोल कबूतर
बोल कबूतर बोल

बाक़ी शोअरा : (एक ज़बान होकर) बोल कबूतर बोल, बोल कबूतर बोल (इस अस्ना[1] में मिर्ज़ा ग़ालिब निहायत घबराहट और सरासीमगी की हालत में दरवाज़े की तरफ़ देखते हैं)

विक्रमाजीत वर्मा : अब दूसरा बंद सुनिये:

बोल कबूतर बोल
क्या मेरा साजन कहता है
क्यों मुझसे रुठा रहता है
क्यों मेरे ताने सहता है
भेद यह सारे खोल कबूतर
बोल कबूतर बोल

बाक़ी शोअरा : (एक ज़बान होकर) बोल कबूतर बोल, कबूतर बोल, कबूतर बोल

(इस शोरो–गुल की ताब न लाते हुए मियाँ रफ़ीक़ अहमद ख़ूगर और अब्दुल हई निगाह के सुनाने की बारी आने से पहले ही मिर्ज़ा ग़ालिब भागकर कमरे से बाहर निकल जाते हैं)।

---

1. दरमियान, बीच

کرشن چندر

میرا امَن پسند صفحہ

کچھ لوگ صبح اُٹھتے ہی جماہی لیتے ہیں، کچھ لوگ بستر سے اُٹھتے ہی ورزش کرتے ہیں، کچھ لوگ گرم چائے پیتے ہیں۔ میں اخبار پڑھتا ہوں اور جس روز فرصت زیادہ ہو اس روز تو میں اخبار کو شروع سے آخر تک معہ اشتہارات اور عدالت کے سمنوں تک پورا پڑھ ڈالتا ہوں۔

یوں تو اخبار سارے کا سارا اچھا ہوتا ہے لیکن عام لوگوں کے لیے اخبار کا ہر صفحہ اتنی دل چسپی نہیں رکھتا۔ میں نے ایسے لوگ بھی دیکھے ہیں جو اخباروں میں صرف ریس کا نتیجہ دیکھتے ہیں یا وہ صفحہ جس پر روئی، تلی، پیتل، لوہا، تانبا، پٹ سن، سونا، چاندی، گڑ، پاپڑ اور آلوؤں کے سوکھے قتلوں کے بھاؤ درج ہوتے ہیں اور ایسے بھی لوگ ہیں جو اخبار کا پہلا صفحہ ہی پڑھتے ہیں جس پر بڑی دہشت ناک خبریں موٹے موٹے حروف میں درج ہوتی ہیں روز قتل اور ڈاکہ اور بددیانتی اور خون خرابے کے واقعات کو بڑی بڑی سرخیوں میں چھاپا جاتا ہے۔ بعض لوگ اخبار کے ہاتھ میں آتے ہی اُس کا اداریہ کھول کے پڑھتے ہیں جس پر آج ایک چیز کے حق میں لکھا گیا ہے تو کل اُسی ذمہ داری سے اُس چیز کے خلاف لکھا جائے گا اور اگر پہلے دن آپ اس چیز کے حق میں ہوں گے تو دوسرے دن اس کے خلاف ہو جائیں گے۔ یار لوگوں نے اس صورت حال کا نام رائے عامہ رکھ چھوڑا ہے۔ خیر اپنی اپنی سُوجھ بُوجھ۔

कृष्ण चन्द्र

मेरा मनपसंद सफ़ह[1]

कुछ लोग सुबह उठते ही जमाही लेते हैं, कुछ लोग बिस्तर से उठते ही वर्ज़िश करते हैं, कुछ लोग गर्म चाय पीते हैं। मैं अख़बार पढ़ता हूँ और जिस रोज़ फुर्सत ज़्यादा हो उस रोज़ तो मैं अख़बार को शुरु से आख़िर तक मय इश्तेहार और अदालत के सम्मनों तक पूरा पढ़ डालता हूँ।

यूँ तो अख़बार सारे का सारा अच्छा होता है लेकिन आम लोगों के लिए अख़बार का हर सफ़ह इतनी दिलचस्पी नहीं रखता। मैंने ऐसे लोग भी देखे हैं जो अख़बारों में सिर्फ़ रेस का नतीजा देखते हैं या वह सफ़ह जिस पर रुई, तिल्ली, पीतल, लोहा, तांबा, पटसन, सोना, चांदी, गुड़, पापड़ और आलुओं के सूखे क़तलों के भाव दर्ज होते हैं और ऐसे भी लोग हैं जो अख़बार का पहला सफ़ह ही पढ़ते हैं जिस पर बड़ी दहशतनाक ख़बरें मोटे–मोटे हुरुफ़ में दर्ज होती हैं रोज़ क़त्ल और डाका और बद–दयानती और ख़ून ख़राबे के वाक़यात को बड़ी–बड़ी सुर्ख़ियों में छापा जाता है। बाज़ लोग अख़बार के हाथ में आते ही उसका इदारिया[2] खोल के पढ़ते हैं जिस पर आज एक चीज़ के हक़ में लिखा गया है तो कल उसी ज़िम्मेदारी से उस चीज़ के ख़िलाफ़ लिखा जायेगा और अगर पहले दिन आप उस चीज़ के हक़ मे होंगे तो दूसरे दिन इसके ख़िलाफ़ हो जायेंगे। यार लोगों ने इस सूरते–हाल का नाम राय–आम्मा[3] रख छोड़ा है। ख़ैर अपनी–अपनी सूझ–बूझ।

1. पृष्ठ 2. संपादकीय 3. जनमत

سچ پوچھیے تو مجھے اخبار کے ان صفحوں میں سے کوئی صفحہ پسند نہیں۔ ریس کے ٹپ اکثر غلط نکلتے ہیں۔ میں کئی دفعہ غپا کھا چکا ہوں اور ریس کے اخباری ماہر کی جان کو رو چکا ہوں، روئی، پٹ سن اور پاپڑ کے بھاؤ بدلتے دیکھے ہیں، سونا تو خیر سونا ہے لیکن چاندی کا بھاؤ بھی آج کل یوں بڑھ رہا ہے کہ سمجھ میں نہیں آتا کہ کون سی دھات اچھی ہے، سونا یا چاندی؟ یہی حال ملوں، کارخانوں اور بینکوں کے حصّوں کا ہے ان میں اس قدر تیزی مندی دکھائی دیتی ہے کہ میں نے تو اب یہ صفحہ پڑھنا ہی چھوڑ دیا ہے۔ پہلا صفحہ بھی میں نے پڑھنا چھوڑ دیا ہے۔ کبھی یہ میرا من پسند صفحہ تھا، لیکن متواتر دو سال تک اس صفحہ کی خونیں اور تھرا دینے والی چیزیں پڑھ کر مجھے اختلاجِ قلب ہو گیا ہے اور اب ڈاکٹروں نے مجھے اس صفحہ کے پڑھنے سے منع کر دیا ہے اور جو لوگ کہ نہیں چاہتے ہیں کہ ان کے دل کی حرکت اک دم بند ہو جائے ان کے لیے بھی پرہیز مفید رہے گا۔

آج کل میرا من پسند صفحہ وہ ہے جو پہلا صفحہ اُلٹنے کے فوراً بعد آتا ہے۔ میں دوسرا صفحہ جس پر صرف اشتہار ہوتے ہیں، میرے خیال میں یہ اخبار کا سب سے سچا، سب سے عمدہ اور سب سے دلچسپ صفحہ ہوتا ہے۔ یہ انسانوں کے لین دین اور تجارتی کاروبار کا صفحہ ہے۔ ان کی ذاتی مصروفیتوں اور کاوشوں کا آئینہ دار ہے ان کی زندگی کی ٹھوس سماجی حقیقتوں کا ترجمان ہے۔ یہاں پر آپ کو کار والے اور بے کار ٹائپسٹ اور مل مالک مکان کی تلاش کرنے والے اور مکان بیچنے والے، گیراج ڈھونڈھنے والے اور ذاتی لائبریری بیچنے والے کتّے پالنے والے اور چوہے مارنے والے۔ سرسوں کا تیل بیچنے والے اور انسانوں کا تیل نکالنے والے۔ پچاس لاکھ کا مل خریدنے والے اور پچاس روپے کی ٹیوشن کرنے والے سبھی بھاگتے دوڑتے چیختے چلاتے روتے ہنستے نظر آتے ہیں یہ ہماری زندگی کا سب سے جیتا جاگتا صفحہ ہے جس کا ہر اشتہار ایک مکمل افسانہ ہے اور ہر سطر اک شعر۔ یہ ہماری دینا کی سب سے بڑی سیر گاہ ہے جس کی رنگا رنگ کیفیتیں مجھے گھنٹوں مسحور کیے رکھتی ہیں۔ آیئے آپ بھی میرے اس من پسند صفحہ کی دلچسپیوں میں شامل ہو جایئے۔ دیکھیے یہ ذاتی کالم ہے۔

نائی لان جرابوں کا سٹاک آگیا ہے بیوپاری فوراً توجہ کریں۔

सच पूछिये तो मुझे अख़्बार के उन सफ़्हों में से कोई सफ़्ह पसंद नहीं। रेस के टिप अक्सर ग़लत निकलते हैं। मैं कई दफ़ा ग़प्पा खा चूका हूँ और रेस के अख़्बारी माहिर की जान को रो चुका हूँ, रोटी, पटसन और पापड़ के भाव बदलते देखे हैं, सोना तो ख़ैर सोना है लेकिन चांदी का भाव भी आज कल यूँ बढ़ रहा है कि समझ में नहीं आता कि कौन सी धात अच्छी है, सोना या चांदी? यही हाल मिलों, कारख़ानों और बैंकों के हिस्सों का है इनमें इस क़दर तेज़ी–मन्दी दिखाई देती है कि मैं ने तो अब यह सफ़्ह पढ़ना ही छोड़ दिया है। पहला सफ़्ह भी मैंने पढ़ना छोड़ दिया था, लेकिन मुतवातिर दो साल तक इस सफ़्ह की ख़ूनीं और थर्रा देने वाली चीज़ें पढ़ कर मुझे एख़्तलाजे–क़ल्ब हो गया है और अब डाक्टरों ने मुझे इस सफ़्ह के पढ़ने से मना कर दिया है और जो लोग कि नहीं चाहते हैं कि उनके दिल की हरकत एक दम बंद हो जाए उनके लिए भी परहेज़ मुफ़ीद रहेगा।

आज कल मेरा पसंदीदा सफह यह है जो पहला सफ़्ह उलटने के फ़ौरन बाद आता है। मैं दूसरा सफ़्ह जिस पर इश्तेहार होते हैं, मेरे ख़याल में यह अख़्बार का सब से सच्चा, सब से उम्दा और सब से दिलचस्प सफ़्ह होता है। यह इन्सानों के लेन–देन और तिजारती कारोबार का सफ़्ह है। उनकी ज़ाती मसरुफ़ियतों और काविशों का आइनादार है उनकी ज़िन्दगी की ठोस समाजी हक़ीक़तों का तरजुमान है। यहाँ पर आपको कार वाले और बेकार टाइपिस्ट और मिल मालिक मकान की तलाश करने वाले और मकान बेचने वाले, गैराज ढूंढ़ने वाले और ज़ाती लाइब्रेरी बेचने वाले या कुत्ते पालने वाले और चूहे मारने वाले। सरसों का तेल बेचने वाले और इन्सानों का तेल निकालने वाले। पचास लाख का मिल ख़रीदने वाले और पचास रुपये की टयूशन करने वाले सभी भागते दौड़ते चीख़ते चिल्लाते रोते हंसते नज़र आते हैं। यह हमारी ज़िंदगी का सब से जीता जागता सफ़्ह है जिस का हर इश्तेहार एक मोकम्मल अफ़साना है और हर एक सतर एक शेर। यह हमारी दुनिया की सब से बड़ी सैरगाह है जिस की रंगारंग कैफ़ियतें मुझे घंटो मसहूर किये रखती हैं। आइये आप भी मेरे इस मन पसंद सफ़्ह की दिलचस्पयों में शामिल हो जाइये। देखिये ये ज़ाती कॉलम है।

नाइलोन जुराबों का स्टाक आ गया है व्योपारी फ़ौरन तव्वज्जो करें।

آپ کہیں گے یہ تو کوئی ذاتی دل چسپی کی چیز نہیں ہے۔ بھئی ہمیں نائی لان جرابوں سے کیا لینا، یہ صحیح ہے لیکن ذرا صنفِ نازک سے پوچھیے جن کے دل یہ خبر سُن کر ہی زور سے دھڑک اُٹھے ہوں گے اور ٹانگیں خوشی سے ناچنے لگی ہوں گی۔ آج کل عورت کے دل میں نائی لان جراب کی وہی قدر و قیمت ہے جو کسی زمانے میں موتیوں کی مالا کی ہوتی تھی۔ آگے چلیے۔

ڈارلنگ فوراً خط لکھو، معرفت ایس ڈی کھر ونجہ نیلام پور۔ کون ڈارلنگ ہے وہ۔ کسی مصیبت میں ہے وہ۔ وہ کیوں اس کے گھر یا کسی دوست یا سہیلی کے ہاں خط نہیں بھجوا سکتا۔ اخبار میں یہ اشتہار کیوں دے رہا ہے کہ بیچارہ دیکھیے کیسی کیسی مجبوریاں ہوں گی اس بیچاری لڑکی کے لیے بھی۔ وہ بھی میری طرح ہر روز یہ اخبار کھولتی ہوگی۔ اس میں ذاتی کالم دیکھتی ہوگی اور اپنے لیے کوئی خبر نہ پا کر کیسی اُداس اور رنجور ہو جاتی ہوگی۔ اور آج جب وہ ذاتی کالم میں یہ خبر پڑھے گی تو کیسے چونک جائے گی خوشی سے اس کا چہرہ چمک اُٹھے گا۔ مسرت کی سنہری ضیا اس کی روح کے ذرے ذرے کو چمکا دے گی اور وہ بے اختیار اخبار اپنے کلیجے سے لگا لے گی اور اس کی لانبی لانبی پلکیں اس کے رخساروں پر جھک جائیں گی یعنی اگر اس کی لانبی پلکیں ہوئیں تو ورنہ یہ بھی ہو سکتا ہے کہ اس کی پلکیں نہایت چھوٹی چھوٹی ہوں جیسے چوہیا کے بال ہوتے ہیں اور ماتھا گھٹا ہوا ہو۔ کچھ بھی ہو وہ ایس ڈی کھر ونجہ کی ڈارلنگ ہے۔ ایس ڈی کھر ونجہ کون ہے ؟ اب اس کے متعلق آپ اندازہ لگائیے۔ ممکن ہے وہ کوئی بھڑ بونجہ ہو یا معمولی کلرک ہو یا ہلاس مونی گولیاں بیچنے والا ہو یا نیلام پور میں رس گلے اور بنگالی مٹھائی کی دوکان کرتا ہو یا کسی بڑے مل کا مالک ہو وہ یہ سب کچھ ہو سکتا ہے اور اب سوچتے جائیے دیکھیے زندگی کس قدر دلچسپ ہوتی جا رہی ہے۔

اس سے اگلا کالم دیکھیے یہ مکانات کا کالم ہے۔ یہ بھی بے حد دلچسپ ہے کیونکہ آج کل مکان کہیں ڈھونڈے سے بھی نہیں ملتے لیکن یہاں آپ کو ہر طرح کے مکان مل جائیں گے۔

میرے پاس سمندر کے کنارے ایک بنگلے میں ایک علٰحدہ کمرہ ہے لیکن میں شہر میں رہنا چاہتا ہوں۔ اگر کوئی صاحب مجھے شہر کے اندر ایک اچھا کمرہ دے سکیں تو میں

आप कहेंगे ये तो कोई ज़ाती दिलचस्पी की चीज़ नहीं है। भई, हमें नाइलोन जुराबों से क्या लेना, यह सही है लेकिन ज़रा सिन्फ़े–नाज़ुक से पूछिये जिनके दिल ये ख़बर सुनकर ही ज़ोर से धड़क उठे होंगे और टाँगे ख़ुशी से नाचने लगी होंगी। आज कल औरत के दिल में नाइलोन जुराब की वही क़द्र है जो किसी ज़माने में मोतियों की माला की होती थी। आगे चलिये।

डार्लिंग फ़ौरन ख़त लिखो, मार्फ़त एस. डी. खरौंजा नीलाम पुर। कौन डार्लिंग है वह। किसी मुसीबत में है वह। वह क्यों उसके घर या किसी दोस्त या सहेली के यहाँ ख़त नहीं भेजवा सकता। अख़्बार में ये इश्तेहार क्यों दे रहा है कि वह बेचारा, देखिये कैसी–कैसी मजबूरियाँ होंगी उस बेचारी लड़की के लिये भी। वह भी मेरी तरह हर रोज़ अख़्बार खोलती होगी। उस में ज़ाती कॉलम देखती होगी और अपने लिये कोई ख़बर न पाकर कैसी उदास और रंजूर हो जाती होगी। और आज जब वह ज़ाती कॉलम में यह ख़बर पढ़ेगी तो कैसे चौंक जायगी ख़ुशी से उसका चेहरा चमक उठेगा। मुसर्रत की सुनहरी ज़िया उसकी रुह के ज़र्रे–ज़र्रे को चमका देगी और वह बे अख़्तियार अख़्बार अपने कलेजे से लगा लेगी और उसकी लांबी–लांबी पलकें उसके रुख़सारों पर झुक जायेंगी यानी अगर उसकी लांबी पलकें हुईं तो वरना यह भी हो सकता है कि उसकी पलकें निहायत छोटी छोटी हों जैसे चुहिया के बाल होते हैं और माथा घटा हुआ हो। कुछ भी हो वह एस. डी. खरौंजा की डार्लिंग है। एस. डी. खरौंजा कौन है? अब इसके मुताअल्लिक़ आप अन्दाज़ा लगाइये। मुमकिन है वह कोई भड़भूंजा हो या मामूली क्लर्क हो या हलास मोनी गोलियाँ बेचने वाला हो या नीलाम पुर में रसगुल्ले और बंगाली मिठाई की दूकान करता हो या किसी बड़े मिल का मालिक हो। वह यह सब कुछ हो सकता है और अब सोचते जाइये देखिये ज़िन्दगी किस क़दर दिलचस्प होती जा रही है।

इस से अगला कॉलम देखिये। ये मकानात का कॉलम है। यह भी बेहद दिलचस्प है क्योंकि आज कल मकान कहीं ढूंढ़े से भी नहीं मिलते लेकिन यहाँ आपको हर तरह के मकानात मिल जायेंगे।

मेरे पास समुन्दर के किनारे एक बंगले में अलाहेदा कमरा है लेकिन मैं शहर में रहना चाहता हूँ। अगर कोई साहब मुझे शहर के अन्दर एक अच्छा कमरा दे सकें तो मैं उन्हें समन्दर के किनारे का अपना कमरा

انھیں سمندر کے کنارے کا اپنا کمرہ دے دوں گا اور ساتھ ہی اس کا کل ساز و سامان بھی جس میں ایک صوفہ دو ٹیبل لیمپ اور ایک پیتل کا لوٹا شامل ہے۔

لیجیے اگر آپ شہری زندگی سے اُکتا گئے ہوں تو سمندر کے کنارے جا کے رہیے۔ اگر آپ سمندر کے کنارے رہنے سے گھبراتے ہوں تو شہر میں جا کے رہیے۔ پیتل کا لوٹا تو کہیں بھی رہ سکتا ہے۔

یہ دوسرا اشتہار دیکھیے۔

کرائے کے لیے خالی ہے، نیا مکان، آٹھ کمرے، دو کچن پانچ غسل خانے، گراج بھی ہے اور مکان کے اوپر چھت ابھی نہیں ہے۔ مگر اگلے مہینے تک تیار ہو جائے گی۔ کرائے دار فوراً توجہ کریں۔

آپ یہ پڑھ کر فوراً توجہ کرتے ہیں بلکہ کپڑے بدل کر چلنے کے لیے آمادہ بھی ہو جاتے ہیں۔ کہ اتنے میں آپ کی نظر اگلی سطر پر پڑتی ہے لکھا ہے۔

''کرایہ واجبی مگر سال بھر کا پیشگی دینا ہوگا۔ سالانہ کرایہ اٹھارہ ہزار''

اور آپ پھر بیٹھ جاتے ہیں اور اگلا اشتہار دیکھتے ہیں، لکھا ہے عمدہ کھانا، بہترین منظر، کھلا کمرہ، فرنیچر سے سجا ہوا بجلی پانی مُفت۔ کرایہ سب ملا کے ساڑھے تین سو روپے ماہانہ۔

آپ خوشی سے چلا اُٹھتے ہیں مل گیا مجھے ایک کمرہ مل گیا اور کس قدر سستا اور عمدہ اور کھانا ساتھ میں واہ واہ آپ فوراً خط لکھنے کی سوچتے ہیں اور پھر کلیجہ پکڑ کر بیٹھ جاتے ہیں کیونکہ آگے لکھا ہے۔

''دل کشا ہوٹل دارجلنگ''

ظاہر ہے کہ آپ بمبئی میں نوکر ہیں۔ دلکشا ہوٹل۔ دارجلنگ میں رہ کر بمبئی کی نوکری نہیں کر سکتے۔

اگلا کالم دیکھیے یہ اگلے دو کالم ''ضرورت ہے'' کے اشتہاروں سے بھرے پڑے ہیں جس میں ایک خوبصورت ٹائپسٹ گرل کی ضرورت ہے۔ ایک بڈھے مدراسی اکاؤنٹنٹ کی ضرورت ہے جو کناری زبان کے علاوہ تامل، تلنگو، ملیالم، شہنائی اور عربی بھی

दे दूँगा और साथ ही उसका कुल साज़ो–सामान भी जिसमें एक सोफ़ा दो टेबुल और एक पीतल का लोटा शामिल है।

लीजिये अगर आप शहरी ज़िन्दगी से उकता गये हों तो समुन्दर के किनारे जाके रहिये। अगर आप समुन्दर के किनारे रहने से घबराते हों तो शहर में जाके रहिये। पीतल का लोटा तो कहीं भी रह सकता है।

यह दूसरा इश्तेहार देखिये।

किराये के लिए खाली है, नया मकान, आठ कमरे, दो किचेन, पाँच गुस्ल ख़ाने, गेराज भी है और मकान के ऊपर छत अभी नहीं है। मगर अगले महीने तक तैयार हो जायेगी। किरायेदार फ़ौरन तवज्जो करें।

आप यह पढ़कर फ़ौरन तवज्जो करते हैं बल्कि कपड़े बदल कर चलने के लिये आमादा भी हो जाते हैं कि इतने में आपकी नज़र अगली सतर पर पड़ती है लिखा है।

"किराया वाजबी मगर साल भर का पेशगी देना होगा। सालाना किराया अट्ठारह हज़ार"।

और आप फ़िर बैठ जाते हैं और अगला इश्तेहार देखते हैं, लिखा है उम्दा खाना, बेहतरीन मंज़र, खुला कमरा, फ़र्निचर से सजा हुआ बिजली पानी मुफ़्त। किराया सब मिला के साढ़े तीन सौ रुपये माहाना।

आप ख़ुशी से चिल्ला उठते हैं मिल गया मुझे एक कमरा मिल गया और किस क़दर सस्ता और उम्दा खाना साथ में वाह–वाह आप फ़ौरन ख़त लिखने की सोचते हैं और फर कलेजा पकड़ कर बैठ जाते हैं क्योंकि आगे लिखा है।

"दिल कुशा होटल दार्जिलिंग"

ज़ाहिर है कि आप बम्बई में नौकर हैं। दिल कुशा होटल दार्जिलिंग में रह कर बम्बई की नौकरी नहीं कर सकते।

अगला कॉलम देखिये। ये अगले दो कॉलम "ज़रुरत है" के इश्तेहारों से भरे पड़े हैं जिस में एक ख़ूबसूरत टाइपिस्ट गर्ल की ज़रुरत है। एक बूढ़े मदरासी एकाउन्टेन्ट की ज़रुरत है जो किनारी ज़बान के अलावा तामिल, तेलगू , मलयालम, शहनाई और अरबी भी

جانتا ہو، تنخواہ ستر روپے ماہوار۔ ایک کمپونڈر کی ضرورت ہے جو کم از کم ایم بی بی ایس ہو اور اگر ولایت سے ایل آر سی پی اور ایف آر سی ایس بھی ہو تو اسے پانچ روپے سالانہ ترقی بھی دی جائے گی۔ ایک چپراسی کی ضرورت ہے۔ جسے چالیس روپے تنخواہ دی جائے گی۔ اُردو اخبار کے لیے ایک ایڈیٹر کی ضرورت ہے جسے تیس روپے ماہوار تنخواہ دی جائیگی ایک صاحب کو سکریٹری کی ضرورت ہے جو ان کے لیے تقریریں لکھ سکے۔ ایک جادوگر کی ضرورت ہے جو ان کا دل بہلا سکے۔ ایک لیڈی کمپنین کی ضرورت ہے جو گھوڑے کی سواری جانتی ہو اور گلمرگ کے ہوٹلوں سے واقفیت رکھتی ہو ایک فٹر کی ضرورت ہے جو بڑے سوراخ میں چھوٹی کیل گاڑ سکے ایک انجنیر کی ضرورت ہے جو چھوٹی کیل کے لیے بڑا سوراخ کر سکے ایک باورچی کی ضرورت ہے جو گوشت کے بغیر شامی کباب بنا سکے۔ ایک دھوبی کی ضرورت ہے جو قمیص پھاڑ دے لیکن بٹن سالم رکھے اور اعلیٰ ہٰذالقیاس یہی وہ کالم ہے جسے پڑھ کر مجھے اپنے سماج کی نیرنگیوں اُس کی پستیوں اور بلندیوں اور چیرہ دستیوں کا اندازہ ہوتا ہے جو کچھ دنیا میں آپ کے اردگرد ہو رہا ہے۔ اس کی سچی تصویر آپ کو انھیں کالموں میں ملتی ہے۔ اخبار کے باقی صفحے تو خواہ مخواہ بے کار جھوٹ بول کر ہمارا وقت ضائع کرتے ہیں۔

اس کا اگلا کالم موٹروں کتابوں اور کتوں کا ہے۔ اس میں آپ دیکھیں گے کہ ایک ہی ماڈل کی نئی گاڑی ہے مگر وہ دو مختلف داموں میں بک رہی ہے۔ سیٹھ حُسن لال کی گاڑی سات ہزار میں بکاؤ ہے، کیونکہ وہ اسے بیچ کر کوئی دوسرا ماڈل لینا چاہتے ہیں۔ اور وہی گاڑی مسٹر مکڈانلڈ کے پاس ہے اور وہ اسے دو ہزار میں بیچے دے رہے ہیں کیونکہ مسٹر مکڈانلڈ ولایت جا رہے ہیں۔ ایک خوب صورت کتا ہے جو ڈیڑھ سو میں بکتا ہے۔ شکسپیر کے ڈراموں کا باتصویر سٹ ہے جو دس روپے میں جا رہا ہے یہ میں نے بارہا دیکھا ہے کہ کتوں کے دام کتابوں سے کہیں زیادہ ہیں اور یہ بھی کہ اس کالم میں موٹروں اور کتوں کے خریدنے اور بیچنے والے تو بہت ملتے ہیں، لیکن کتابوں کے صرف بیچنے والے تو نظر آتے ہیں خریدنے والا کوئی نہیں۔ جتنے اشتہار ہیں اس سے ہمیں اپنے ملک کے عظیم کلچر کا اندازہ ہوتا ہے۔

जानता हो, तन्ख़ाह सत्तर रुपये माहवार। एक कम्पाउंडर की ज़रुरत है जो कम अज़ कम एम. बी. बी. एस. हो और अगर विलायत से एल. आर. सी. पी. और एफ़. आर. सी. एस. भी हो तो उसे पाँच रुपये सालाना तरक़्क़ी भी दी जायेगी। एक चपरासी की ज़रुरत है। जिसे चालिस रुपये तन्ख़्वाह दी जायेगी। उर्दू अख़बार के लिए एक एडिटर की ज़रुरत है जिसे तीस रुपये माहवार तन्ख़्वाह दी जायेगी। एक साहब को सिक्रेट्री की ज़रुरत है जो उनके लिए तक़रीरें लिख सके। एक जादूगर की ज़रुरत है जो उनका दिल बहला सके। एक लेडी कम्पेनियन की ज़रुरत है जो घोड़े की सवारी जानती हो और गुलमर्ग के होटलों से वाक़फ़ियत रखती हो। एक फ़िटर की ज़रुरत है जो बडे सूराख़ में छोटी कील गाड़ सके। एक इन्जीनियर की ज़रुरत है जो छोटी कील के लिए बड़ा सूराख़ कर सके। एक बावर्ची की ज़रुरत है जो गोश्त के बग़ैर शामी कबाब बना सके। एक धोबी की ज़रुरत है जो क़मीज़ फाड़ दे लेकिन बटन सालिम रखे और अलाहाज़लक़यास[1] यही वह कॉलम है जिसे पढ़कर मुझे अपने समाज की नैरंगियों उसकी पस्तियों और बुलंदियों और चीरा दस्तियों का अन्दाज़ा होता है जो कुछ दुनिया में आपके इर्द गिर्द हो रहा है इसकी सच्ची तस्वीर आपको इन्ही कॉलमों में मिलती है। अख़बार के बाक़ी सफ़े तो ख़्वाहमख़्वाह बेकार झूट बोलकर हमारा वक़्त ज़ाया करते हैं।

इसका अगला कॉलम मोटरों किताबों और कुत्तों का है। इसमें आप देखेंगे कि एक ही मॉडल की नई गाड़ी है मगर दो मुख़्तलिफ़ दामों में बिक रही है। सेठ हुस्न लाल की गाड़ी सात हज़ार में विकाऊ है, क्योंकि वह उसे बेच कर कोई दूसरा मॉडल लेना चाहते हैं। और वही गाड़ी मिस्टर मेकडानाल्ड के पास है और वह उसे दो हज़ार में बेचे दे रहे हैं क्योंकि मिस्टर मेकडानाल्ड विलायत जा रहे हैं। एक ख़ूबसूरत कुत्ता है जो डेढ़ सौ में बिकता है। शेक्सपियर के ड्रामों का बा–तस्वीर सेट है जो दस रुपये में जा रहा है यह मैंने बारहा देखा है कि कुत्तों के दाम किताबों से कहीं ज़्यादा हैं और यह भी कि इस कॉलम में मोटरों और कुत्तों के ख़रीदने और बेचने वाले तो बहुत मिलते हैं, लेकिन किताबों के सिर्फ़ बेचने वाले तो नज़र आते हैं ख़रीदने वाला कोई नहीं। जितने इश्तेहार हैं उस से हमें अपने मुल्क के अज़ीम कल्चर का अन्दाज़ा होता है।

1. इसी बात पर आगे की बात सोचिए

اس صفحہ کا سب سے آخری کالم جسے میں سب سے پہلے پڑھتا ہوں، شادی کا کالم ہے۔ بر کی ضرورت ہے، ایک نوجوان حسین اٹھارہ سالہ گریجویٹ لڑکی کے لیے۔

بر کی ضرورت ہے، ایک خوش رو خوش خو اور خوش قامت تعلیم یافتہ بے حد حسین لڑکی کے لیے جو ناچنا گانا بھی جانتی ہے اور ادبی ذوق بھی رکھتی ہے۔

بر کی ضرورت ہے، ایک خوبصورت خاندانی لڑکی کے لیے جس کا باپ ایک مل کا مالک ہے، لڑکا اچھا ہونا چاہیے، ذات پات کی کوئی تمیز نہیں۔

اور میں بھی ذات پات کی پرواہ کیے بغیر ہر جگہ عرضی بھیجنے کی سوچتا ہوں کہ اتنے میں میری بیوی میرے سر پر آن کے کھڑی ہو جاتی ہے اور مجھ سے پوچھتی ہے کیا پڑھ رہے ہو؟ اور میں ایک حزیں مسکراہٹ سے اپنا من پسند صفحہ بند کر دیتا ہوں۔

इस सफ़ह का सब से आख़री कॉलम जिसे मैं सब से ज़्यादा पढ़ता हूँ , शादी का कॉलम है। वर की ज़रुरत है, एक ख़ुश–रु और ख़ुश–ख़ू और ख़ुश–क़ामत तालीम याफ़्ता बेहद हसीन लड़की के लिए जो नाचना गाना भी जानती है और अदबी ज़ौक़ भी रखती है।

वर की ज़रुरत है, एक ख़ूबसूरत ख़ानदानी लड़की के लिए जिसका बाप एक मिल का मालिक है, लड़का अच्छा होना चाहिये, ज़ात पात की कोइ तमीज़ नहीं है।

और मैं ज़ात पात की परवाह किये बग़ैर हर जगह अर्ज़ी भेजने की सोचता हूँ कि इतने में मेरी बीवी मेरे सर पर आन खड़ी हो जाती है और मुझसे पूछती है कि क्या पढ़ रहे हो? और मैं एक हर्ज़ी मुस्कुराहट से अपना मन पसंद सफ़ह बन्द कर देता हूँ।

فرقت کاکوروی

جشنِ جمہوریت کی ایک دوپہر

گورستان عیش باغ لکھنؤ کے ''چمن'' نمبر ۵ میں دور تک قبروں کا سلسلہ چلا گیا ہے۔ درمیان میں جو حصہ قبروں کی زد سے بچا ہوا ہے۔ اس پر چھوٹی چھوٹی چوکیوں کو ملا کر کچھ اس طرح بچھا دیا گیا کہ اس نے چبوترے کی شکل اختیار کرلی۔ اس چوکی دار چبوترے پر ایک میلی کچیلی دری بچھی ہے چوکیوں کے پستہ قد پاؤں میں جکڑی ہوئی چار چھڑوں پر ایک سفید پھٹی چادر اس طرح تان دی گئی ہے کہ اس نے خود شامیانے کے فرائض انجام دینا شروع کر دیے ہیں۔ اس ننھے منّے چبوترے پر گنتی کے چار پانچ افراد بیٹھ کر بارش یا دھوپ سے اپنے کو کم و بیش محفوظ رکھ سکتے ہیں۔ بقیہ ساٹھ ستّر مدقوق اور کرم خوردہ افراد جو اس وقت اس گورستانی جنگل میں منگل مناتے نظر آ رہے ہیں۔ مختلف ٹکڑیوں اور ٹولیوں میں تقسیم ہیں۔ ان نحیف الجثہ حضرات کے چپسے اور ڈھلے عبرتناک جسموں سے کافور کی بُو آنے لگی ہے۔ تین چار حضرات شامیانے کی بغل میں بیٹھے پُرانے گرکی ڈلیوں کو توڑ توڑ کر ننھی ننھی کنکریوں میں منتقل کر رہے ہیں۔ اس ٹولی کے عقب میں کچھ فاصلے پر چار عرق کشیدہ جسم اپنے مدک، چرس اور گانجے کی نگالیوں کو کلّی اور غرارہ کرانے میں مصروف ہیں۔ ایک جگہ پر بڑی سی دیگ میں چائے کی یخنی بن رہی ہے۔ اور تھوڑے تھوڑے وقفہ سے کچھ لوگ اٹھ اٹھ کر اس میں جھانک بھی لیتے ہیں تا کہ باتوں کی جھک میں یخنی کی تیاری

फ़ुरक़त काकोरवी

जश्ने-जम्हूरीयत की एक दोपहर

गोरिस्ताने-ऐश बाग़[1] लखनऊ के "चमन" नम्बर 5 में दूर तक क़ब्रों का सिलसिला चला गया है। दरमियान में जो हिस्सा क़ब्रों की ज़द से बचा हुआ है उस पर छोटी-छोटी चौकियों को मिलाकर कुछ इस तरह बिछा दिया गया है कि उसने चबूतरे की शक्ल अख़्तियार कर ली। उस चौकीदार चबूतरे पर एक मैली कुचैली दरी बिछी है चौकियों के पस्ता क़द पाँव में जकड़ी हुई चार छड़ों पर एक सफ़ेद फ़टी चादर इस तरह तान दी गई है कि उसने खुद शामियाने के फ़राएज़ अंजाम देना शुरु कर दिये हैं। इस नन्हे मुन्ने चबूतरे पर गिनती के चार पाँच अफ़राद बैठकर बारिश या धूप से अपने को कमो-बेश महफ़ूज़ रख सकते हैं। बक़िया साठ सत्तर मदकूक़ और किर्म-ख़ुर्दा[2] अफ़राद जो इस वक़्त इस गोरिस्तानी जंगल में मंगल मनाते नज़र आ रहे हैं मुख़्तलिफ़ टुकड़ियों और टोलियों में तक़्सीम हैं। इन नहीफ़ुलजुस्सा[3] हज़रात के चुसे और ढ़ले इबरतनाक जिस्मों से काफ़ूर की बूआने लगी है। तीन चार हज़रात शामियाने की बग़ल में बैठे पुराने गुड़ की डलियों को तोड़-तोड़ कर नन्ही कंकरीयों में मुन्तक़िल कर रहे हैं। इस टोली के अक़ब में कुछ फ़ासले पर चार अर्क़ कशीदा जिस्म अपने मदक, चरस और गाँजे की निगालियों को कुल्ली और ग़रारा कराने में मस्रुफ़ हैं। एक जगह पर बड़ी सी देग़ में चाय की यख़नी बन रही है। और थोड़े वक़्फ़े से कुछ लोग उठ-उठ कर उसमें झाँक लेते हैं ताकि बातों की झक में यख़नी की तैयारी

1. ऐश बाग़ का क़ब्रस्तान 2. दीमक के खाये हुए 3. कमज़ोर जिस्म वाले

اور عدم تیاری سے باخبر رہیں۔ اتنے میں قبرستان کے پھاٹک سے کچھ لوگ کندھوں پر شاہی وقتوں کے کرم خوردہ دوشالے ڈالے ہاتھوں میں عصا اور بغل میں کابکیں لٹکائے داخل ہوتے ہیں۔ وضع قطع سے یہ لوگ اس گروہ کے معززین معلوم ہوتے ہیں۔

قبرستان کے پھاٹک پر دفتی کا ایک بڑا سا سائن بورڈ آویزاں ہے جس پر جشن جمہوریت ۱۹۵۱ء جلی حرفوں میں لکھا ہے چنانچہ ہر نو وارد پھاٹک میں داخل ہوتے ہی ٹھٹھک کر اس سائن بورڈ کو اس طرح پڑھتا نظر آتا ہے جس طرح سینما کے علتی تماشہ گاہ میں داخل ہونے سے پہلے گیلری کی تصاویر پر ایک نظر ڈال لیتے ہیں۔ کچھ لوگ سپاٹ قبروں پر چادریں بچھائے بغل میں کابکیں رکھے سینک سلائی پونڈوں کو ہاتھ روک روک کر احتیاط سے تراش رہے ہیں کہ گنوں کی سبزی چھریوں کی زد سے محفوظ رہے انہی میں ایک صاحب افیون کے فضائل بیان فرما رہے ہیں۔!

منّے: سچ کہیے گا میر صاحب۔ اس معبود حقیقی نے چنیا جان کیا شے پیدا کی ہے۔

میر صاحب: اے حضت کیا کہنے۔ نوشدارو کہیے ''بل کن'' آب بقا۔

منّے: حضور والا اس کے فرائض کے لیے دفتر چھپیں رنگت یہ نکالے، قوت یہ بخشے۔ علم یہ سکھائے شب زندہ دار دل و دماغ حاضر۔ پھر پیتے ہی رگ رگ میں طاقت دوڑ جائے۔ عضو عضو میں خون کے عوض طاقت نظر آئے۔

میر صاحب: ارے میاں یہ کرامت کیوں نہیں بیان کرتے کہ چاہے ہوش نہ باقی رہے، گردن زمیں سے مل جائے مگر نیند کا آنا حرام۔ اِدھر چسکی پی اُدھر مراقبہ میں گئے۔ پھر انجام پر نگاہ کیجیے تو یعنی کہ افیونی کی موت پر تو فرشتوں نے رشک کیا ہے۔ قبلۂ عالم انجیل میں دیکھیے تو جگہ جگہ اس کا ذکر آیا ہے۔ آگے بڑھ کر فضا میں طلسم ہوش ربا گھوم رہی ہے

''صف آرائی شروع ہوئی، میمنہ و میسرہ و قلب و جناح و ساقہ و کمیں گاہ چودہ صفیں مثل سکندری کے آراستہ ہوئیں سواروں کے آگے پیادے جنگ کے آمادے دیوار فوج تھے۔ سوار دریائے لشکر میں موج در موج تھے۔ گھوڑے برابر تھوتھنی سے تھوتھنی اور پٹھے سے پٹھا، دُم سے دُم سم سے سم

और अदम तैयारी से बाख़बर रहें। इतने में कब्रिस्तान के फाटक से कुछ लोग कंधों पर शाही वक़्तों के किर्म-ख़ुर्दा दोशाले डाले हाथों में असा और बग़ल में काबुकें लटकाये दाख़िल होते हैं। वज़ा-क़ता से यह लोग उस गिरोह के मोअज़्ज़ज़ीन मालूम होते हैं।

क़ब्रिस्तान के फ़ाटक पर दफ़्ती का एक बड़ा सा साइन बोर्ड आवेज़ाँ है जिस पर जश्ने-जम्हूरीयत 51 ई॰ जली हर्फों में लिखा है चुनांचे हर नौवारिद फ़ाटक में दाख़िल होते ही ठिठक कर इस साइन बोर्ड को इस तरह पढ़ता नज़र आता है जिस तरह सिनेमा के इल्लती तमाशा-गाह में दाख़िल होने से पहले गैलरी की तसावीर पर एक नज़र डाल लेते हैं। कुछ लोग सपाट क़ब्रों पर चादरें बिछाये बग़ल में काबुकें रखे सींक सिलाई पौंडों को हाथ रोक-रोक कर एहतयात से तराश रहे हैं कि गन्नों की सब्ज़ी छुरियों की ज़द से महफ़ूज़ रहे उन्हीं में एक साहब अफ़ियून के फ़ज़ाएल बयान फ़रमा रहे हैं!

मुन्ने : सच कहियेगा मीर साहब। उस माबूदे-हक़ीक़ी ने दुनिया जान क्या शय पैदा की है।

मीर साहब: ऐ हज़्ज़त क्या कहने। नोशदारद कहिए "बिलकुन" आबे-बक़ा।

मुन्ने : हुज़ूरे वाला इस के फ़राएज़ के लिए दफ़्तर छपीं, रंगत यह निकाले, क़ूव्वत यह बख़्शे। इल्म यह सिखाए, शब ज़िंदा दार दिलो-दिमाग़ हाज़िर। फिर पीते ही रग-रग में ताक़त दौड़ जाए। अज़्व-अज़्व में ख़ून के एवज़ ताक़त नज़र आये।

मीर साहब: अरे मियाँ यह करामत क्यों नहीं बयान करते कि चाहे होश न बाक़ी रहे, गर्दन ज़मीन से मिल जाए मगर नींद का आना हराम। इधर चुस्की पी उधर मराक़बे में गये। फिर अंजाम पर निगाह कीजिये तो यानी कि अफ़ियूनी की मौत पर तो फ़रिश्तों ने रश्क किया है। क़िबला-ए-आलम इन्जील में देखिए तो जगह-जगह इसका ज़िक्र आया है। आगे बढ़कर फ़िज़ा में तिलस्मे-होशरुबा घूम रही है-

"सफ़ आराई[1] शुरु हुई है, मैमना[2] व मैसरा[3] व क़ल्बो जिनाह[4], साक़ा व कमीं[5] गाह चौदह सफ़ें मिस्ले-सिकन्दरी के आरास्ता हुई सवारों के आगे प्यादे जंग के आहादे दीवारे-फ़ौज थे। सवार दरयाए लश्कर में मौज दर मौज थे। घोड़े बराबर थूथनी से थूथनी और पट्ठे से पट्ठा, दुम से दुम सुम से सुम

1. जंग की तय्यारी 2. दायें बाज़ू की फ़ौज 3. बायें बाज़ू की फ़ौज
4. फ़ौज का दरमियानी और अगला हिस्सा 5. छिप कर वार करने की जगह

ملائے ہوئے تھے۔ نقیب جو آگے بڑھ آتا تھا اس کو پیچھے ہٹاتے تھے، گھٹے ہوئے کو آگے بڑھاتے تھے دم بدم باجے ذری بجتے تھے مرکب الف ہوتے تھے۔"

(واہ واہ سبحان اللہ کی آوازیں بلند ہوئیں اور ایک ساتھ فضا میں یہ آوازیں ارتعاش کرتی سنائی پڑتی ہیں)" یہ سوچ کر ایک ترنج اٹھا کر تخت سے شدید کے مارا کہ سینے کے پار ہو گیا۔ غلغلہ اس کے مرنے کا برپا ہوا۔ پھر افراسیاب نے ہاتھوں کو ہلا کر برقیں دسوں بڑی دیر تک شور وغل رہا۔ جب وہ ہنگامہ برطرف ہوا افراسیاب گنبد پر آیا۔ حیرت نے تعظیم کی افراسیاب نے کہا اے حیرت یہ تمہارا ابھینابی بہار کا پہلا سحر تھا کہ شدید آپ میں نہ تھا۔ یہ تمہاری ذات سے اتنا بڑا لشکر میرا ہلاک ہوا"

(پھاٹک کی سیدھ میں کچھ فاصلہ پر بعض حضرات بحث و مباحثہ میں مصروف ہیں)

ایک: اماں۔ دتی سنا کہ کوئی شاہ صاحب پیر محمد صاحب کے ٹیلے پر ٹکے ہیں اور مردے زندہ کرتے ہیں۔

دوسرا: نہیں واللہ

تیسرا: سنا تو میں نے بھی ہے بل کن یہاں تک معلوم ہوا ہے کہ پرسوں فتو کی لڑکی کی خبر اُڑگئی کہ وہ مرگئی۔ باپ بھائی کا جو حال تھا نہ پوچھو۔ اماں فضل پائی والے کے بڑے لڑکے فجو کو تو بیاہی تھی۔ فجو کا برا حال تھا۔ چنانچہ شاہ صاحب کے پاس سب اس کی میت کو لے گئے دوسری شام کو لڑکی بھلی چنگی آ گئی۔

چوتھا: اچھا تو آج پلٹیتوں میں چل کر دیکھیں گے واللہ یہ تو معجزہ ہو گیا۔ معجزہ۔ کچھ تفصیل بھی معلوم ہوئی۔

تیسرا: یہ مرزا صاحب بیٹھے تو ہیں۔ اماں مرزا پھوٹو نا۔

پہلا: اماں ہاں، مرزا صاحب بیان کرو نا۔

मिलाये हुए थे। नक़ीब जो आगे बढ़ आता था उसको पीछे हटाते थे, घटे हुए का आगे बढ़ाते थे दम ब दम बाजे ज़री बजते थे मरकब अलिफ़ होते थे।"

"(वाह वाह सुब्हान अल्लाह की आवाज़ें बुलन्द हुई और एक साथ फ़िज़ा में यह आवाज़ें इरतआश करती सुनाई पड़ती हैं)" यह सोचकर एक तरंग उठाकर तख़्त से शदीद के मारा कि सीने के पार हो गया। गुलगुला उसके मरने का बरपा हुआ। फिर अफ़रासियाब ने हाथों को हिलाकर बर्क़ी दसों बड़ी देर तक शोरो–गुल रहा। जब वह हंगामा बरतरफ़ हुआ अफ़रासियाब गुम्बद पर आया। हैरत ने ताज़ीम की, अफ़रासियाब ने कहा ऐ हैरत यह तुम्हारा अमिनाबी बहार का पहला सेहर था कि शदीद आप में न था। यह तुम्हारी ज़ात से इतना बड़ा लश्कर मेरा हलाक हुआ"

(फाटक की सीध में कुछ फ़ासला पर बाज़ हज़रात बहसो–मोबाहसे में मसरुफ़ हैं)

एक : अमाँ। दती सुना कि कोई शाह साहब पीर मोहम्मद के टीले पर टिके है और मुर्दे ज़िंदा करते हैं।

दूसरा : नहीं वल्लाह।

तीसरा : सुना तो मैंने भी है बिल कुन यहाँ तक मालूम हुआ है कि परसों फ़त्तू की लड़की की ख़बर उड़ गई कि वह मर गई। बाप भाई का जो हाल था न पूछो। अमाँ फ़ज़ल पाई वाले के बड़े लड़के फ़ज्जू को तो ब्याही थी। फ़ज्जू का बुरा हाल था। चुनांचे शाह साहब के पास सब उसकी मय्यत को ले गये दूसरी शाम को लड़की भली चंगी आ गई।

चौथा : अच्छा तो आज पलटीतों में चलकर देखेंगे वल्लाह यह तो मोजज़ा हो गया मोजज़ा। कुछ तफ़सील भी मालूम हुई।

तीसरा : यह मिर्ज़ा साहब बैठे तो हैं। अमाँ मिर्ज़ा फूटोना।

पहला : अमाँ हाँ, मिर्ज़ा साहब बयान करो ना।

(کئی افیونی کِھسک کِھسک کر قریب آجاتے ہیں)

مرزا صاحب: بھائی صاحب وہ شاہ صاحب یہاں کی مخلوق تو ہیں نہیں۔ کہیں عرب ورب کی طرف کے ہیں۔ مگر پرسوں جو معجزہ دکھایا ہے۔ قسم قرآن کی پروفیسر معشوق علی بھی اس کے آگے مات۔ جب سے نکلے ہیں ایک خلقت انھیں دیکھنے چلی آرہی ہے۔ اماں وہ بھیڑ ہے کہ معاذ اللہ سنا ہے کہ دن ہی دن دکھائی پڑتے ہیں اِدھر شام ہوئی، اُدھر غائب صرف معصوم کنواریوں کو نظر آتے ہیں۔ حالانکہ کسی وخت (وقت) اپنی جگہ سے نہیں ہلتے۔

پہلا: اماں فتو کی لڑکی کا واقعہ بیان کرو گے اِدھر اُدھر کی اُڑانے۔

مرزا صاحب: ذری چھری تلے دم لو۔ سنی سنائی تو واللہ مجھے بھی یقین نہ آتا مگر آنکھوں دیکھی ہے تو جھوٹ بولنے

دوسرا: تو ہوا یہ کہ جونہی لاش شاہ صاحب کے سامنے رکھی گئی، انھوں نے پہلے تو اس کا سراہنا اپنی طرف کیا۔ اس کے بعد فتو کے باپ اور اس کے شوہر کو بلایا اور کچھ کان میں کہا۔ اس کے بعد زری زور سے بولے ''تو تیار ہونا؟'' اس کے بعد جب دونوں نے ہامی بھرلی۔ حلفہ حلفی ہوگئی تو شاہ صاحب نے ایک استرا نکال کر اپنا سر کاٹ لیا۔ قسم قرآن کی یہ دیکھ کر میرے تو ہوش اُڑ گئے۔ پھر اسی حالت میں ایک بکرا جوان شاہ صاحب کے سرہانے بندھا تھا۔ اس کا سر کاٹ لیا۔ اس کے بعد اپنے دھڑ پر بکری کا سر رکھا اور بکرے پر اپنا سر رکھ دیا۔ اس پر دونوں میں خوب لڑائی خوب گتھم گتھا ہوتے ہوتے دونوں کے سر سے ایک شے زرد رنگ کی گری جو نہایت چمکیلی تھی۔ ایسی چمکیلی کہ گوہر شب تاب اس کے آگے مات۔ رفتہ رفتہ اس زری کا ڈھیر بن گیا اور اس کو اچانک ایک چڑیا نے جو جھپٹ کر نہ جانے کہاں سے آگئی کھالیا۔ بس مفت چڑیا کو شاہ صاحب نے جھٹ پکڑا اس کا کباب سیخ کیا اتنے میں جو دیکھتے ہیں تو شاہ صاحب کے سر اقدس پر خاص انھیں کا سر تھا۔ شاہ صاحب نے جھٹ کباب لے فتو کی لڑکی کے منہ میں رکھ ہی تو دیا۔ کباب کا منہ میں

(कई अफ़ियूनी खिसक–खिसक कर क़रीब आ जाते हैं)

मिर्ज़ा साहब : भाई साहब वह शाह साहब यहाँ की मख़लूक़ तो हैं नहीं। कहीं अरब वरब की तरफ़ के हैं। मगर परसों जो मोजज़ा दिखाया है। क़सम कुरआन की प्रोफ़ेसर माशूक़ अली भी इसके आगे मात। जब से टिके हैं एक ख़िल्क़त उन्हें देखने चली आ रही है। अमाँ वह भीड़ है कि मआज़–अल्लाह सुना है कि दिन ही दिन दिखाई पड़ते हैं इधर शाम हुई, उधर ग़ायब सिर्फ़ मासूम कुँवारियों को नज़र आते हैं। हालांकि किसी वख़्त (वक़्त) अपनी जगह से नहीं हिलते।

पहला : अमाँ फ़ज्जू की लड़की का वाक़्या बयान करो लगे इधर उधर की उड़ाने।

मिर्ज़ा साहब : ज़री छुरी तले दम लो। सुनी सुनाई तो वल्लाह मुझे यक़ीन न आता मगर आँखों देखी है तो झूट बोलने

दूसरा : तो हुआ यह कि जूँ ही लाश शाह साहब के सामने रखी गई, उन्होंने पहले तो उसका सिराहना अपनी तरफ़ किया। उसके बाद फ़ज्जू के बाप और उसके शौहर को बुलाया और कुछ कान में कहा। उसके बाद ज़री ज़ोर से बोले "तो तैयार हो ना?" उसके बाद जब दोनों ने हामी भर ली। हल्फ़ा–हल्फ़ी[1] हो गई तो शाह साहब ने एक उस्तरा निकाल कर अपना सर काट लिया। क़सम कुरआन की यह देखकर मेरे होश उड़ गये। फिर उसी हालत में एक बकरा जवान शाह साहब के सिरहाने बंधा था। उसका सर काट लिया। उसके बाद अपने धड़ पर बकरी का सर रखा और बकरे पर अपना सर रख दिया। इस पर दोनों में ख़ूब लड़ाई ख़ूब गुथम गुत्था होते होते दोनों के सर से एक शै ज़र्द रंग की गिरी जो निहायत चमकीली थी। ऐसी चमकीली कि गौहरे–शब ताब उसके आगे मात। रफ़्ता रफ़्ता उस ज़री के ढ़ेर बन गया और उसको अचानक एक चिड़िया ने जो झपट कर न जाने कहाँ से आ गई खा लिया। बस मुफ़्त चिड़िया को शाह साहब ने झट पकड़ा और उसका कबाब सीख़ किया इतने में जो देखते है तो शाह साहब के सरे–अक़दस पर ख़ास उन्हीं का सर था। शाह साहब ने झट कबाब ले फत्तू की लड़की के मुँह में रख ही तो दिया। कबाब का मुँह में

1. क़सम

رکھنا تھا کہ وہ الا اللہ کہہ کر اٹھ کھڑی ہوئی۔

ایک دور کی آواز: اماں جھوٹے مر گئے اور اولاد چھوڑ گئے۔

دوسری آواز: اماں چھٹن صاحب کہاں تھے؟ واللہ تمہاری تلاش میں تو کنوؤں میں بانس ڈال دیے پچھلے سال نہیں ملے تھے۔ تب کا دن اور آج کی گھڑی ہے کہ عید کا چاند ہو گئے۔ پھر پچھلے اتوار جانی مرزا کے یہاں بھی پالی میں نظر نہیں پڑے۔ اور آج بھی کچھ بجھے بجھے نظر پڑتے ہو (نگالی بڑھاتے ہوئے) لو ایک چھینٹا ابھی اغن صاحب پی کر گئے ہیں تم بھی پیو اور ہمیں بھی پلاؤ۔ واللہ مدت سے تمہارے ہاتھ کے بنے چھینٹوں کر ترس گئے۔ یاد ہیں بنے نواب کی محل والی صحبتیں اماں کیا زمانہ تھا (بغل میں ایک ساتھی کا شانہ ہلا کر) فجو صاحب دیکھتے ہو یہ کون صاحب تمہارے سامنے آدم پار کھڑے ہیں۔

فجو صاحب: جی ہاں، ملاحظہ کیا۔ میں نے تو قسم ہے قرآن کی اسی مارے ان سے میل ملاقات ترک کر دی کہ جب گھر پر جاؤ تو یہ ندارد۔ اماں ہم تو کہتے ہیں زندگی چندروزہ۔ ہنس بول کر گزار لو۔ نہ جانے کس وقت وہاں بلوا آجائے۔ نہ آج جشنِ آزادی کے موقع پر پوسٹر کے ذریعہ ان تک ہمارے اس جلسہ کی بھنک پہنچی اور نہ یہ آج یہاں دکھائی پڑتے۔ اماں ہاں ذری یہ تو بتانا کہ جلسہ ہے کے بجے سے ۱۲ بجے مجھے بٹیر کو گولی کھلانا ہے۔

وہی صاحب: اماں خیر تو ہے نصیب اعداء۔ یہ بٹیر پر کیا افتاد گزری۔

فجو صاحب: پرسوں شبن صاحب کے بٹیر سے شد کرنے میں بٹیر مکھی کھا گیا شب بھر طبیعت بدمزہ رہی صبوں (صبح) پھر بظاہر چاق و چوبند تو ہو گیا۔ مگر اب بھی وقفہ سے اونگھ جاتا ہے حالانکہ مکھی کھاتے ہی میں نے دن سے اوٹھا وہیں سے کرادی تھی۔

ایک آواز: حضرات اب جلسہ شروع ہونے جارہا ہے۔ آپ سب اِدھر شامیانے کی طرف کھسک آئیں۔

دوسری آواز: ٹھہرو یار آتے ہیں۔ ذری نگالی دھولیں۔

रखना था कि वह इलल्लाह कहकर उठ खड़ी हुई।

एक दूर की आवाज़ : अमाँ छोटे मर गये और औलाद छोड़ गये।

एक दूसरी आवाज़ : अमाँ छुट्टन साहब कहाँ थे? वल्लाह तुम्हारी तलाश में तो कुँओं में बाँस डाल दिये पिछले साल नहीं मिले थे। तब का दिन और आज की घड़ी है कि ईद का चाँद हो गये। फिर पिछले इतवार जानी मिर्ज़ा भी पाली में नज़र नहीं पड़े। और आज भी कुछ बुझे-बुझे नजर पड़ते हो (नगाली बढ़ाते हुए) लो एक छींटा अभी अग्गन साहब पीकर गये हैं तुम भी पियो और हमें भी पिलाओ। वल्लाह मुद्दत से तुम्हारे हाथ से बने छींटों को तरस गये। याद है बन्ने नवाब के महल वाली सोहबतें अमाँ क्या ज़माना था (बग़ल में एक साथी का शाना हिलाकर) फ़ज्जू साहब देखते हो यह कौन साहब तुम्हारे सामने आदम पार खड़े हैं।

फ़ज्जू साहब : जी हाँ मुलाहजा किया। मैंने तो क़सम है क़ुरआन की इसी मारे इनसे मेल मुलाक़ात तर्क कर दी कि जब घर पर जाओ तो यह नदारद। अमाँ हम तो कहते हैं जिंदगी चंद रोज़ा। हंस बोलकर गुज़ार लो। न जाने किस वक्त वहाँ बुलवा आ जाय। न आज जश्ने-आज़ादी के मौक़े पर पोस्टर के ज़रिये उन तक हमारे इस जलसे की भनक पहुँची और न यह आज यहाँ दिखाई पड़ते। अमाँ हाँ ज़री यह तो बताना कि जलसा है कै बजे से 12 बजे मुझे बटेर को गोली खिलाना है।

वही साहब: अमाँ खैर तो है नसीबे-आदा। यह बटेर पर क्या उफ़्ताद[1] गुज़री।

फ़ज्जू साहब : परसों शबन साहब के बटेर से शुद करने में बटेर मक्खी खा गया शब भर तबीअत बदमज़ा रही सबूँ (सुबह) फिर बज़ाहिर चाक़ो चौबन्द तो हो गया। मगर अब भी वक़्फ़े से ऊँघ जाता है हालांकि मक्खी खाते ही मैंने दन से उठा वहीं कै करा दी थी।

एक आवाज़ : हज़रात अब जलसा शुरु होने जा रहा है। आप सब इधर शामियाने की तरफ़ खिसक आयें।

दूसरी आवाज़ : ठहरो यार आते हैं। ज़री निगाली धोलें।

1. मुसीबत

تیسری آواز: لو صاحب جلسہ تو شروع ہو گیا۔

چوتھی آواز: اماں اچھے آغا چل کر ذری ان کی بھی سن لو۔

پانچویں آواز: اماں تمہیں قسم ہے ذری دیکھو تو ہر شخص چوکی پر بیٹھنے کے لیے کتنا بے چین ہے بھئی کیا ننھا سا شامیانہ تان رکھا ہے۔

تیسرا: اماں برس برس کے دن تو ایک بدھی لے کر کسی بانس ہی واس پر ٹانگ دی ہوتی

پہلا: واللہ کیا پیٹ بھروں کی سی باتیں ہیں بیڑوں کی کاکن کے دام میسر نہیں چلے ہیں ادھی بدھی نصب کرنے۔ اماں دیکھ رہے ہو۔ شامیانے کا خرچہ کس مشکل سے نکلا ہے۔

چوکی پر کی ایک آواز: حضرات اب جلسہ شروع ہونے جارہا ہے۔ میں اس کی صدارت کے لیے اچھے آغا صاحب کا نام پیش کرتا ہوں۔

(سامعین کی چاؤں چاؤں کے ساتھ)

ایک اور آواز: لو بنے صاحب رہ گئے۔

دوسری آواز: کیوں صاحب دلارے جانی آغا صاحب سے کس چیز میں کم تھے جو انھیں صدر نہیں بنایا گیا۔

تیسری آواز: اماں کیا جھک جھک لگا رکھی ہے۔ نکلے دانت اب بیٹھنے سے رہے۔ خوشی کے موقع پر بے فضول کی باتوں سے کیا حاصل۔

چوتھی آواز: اچھا صاحب آپ جامے سے باہر نہ ہوں لیجیے ہم چپ ہو جاتے ہیں۔ اب جو زبان سے بولے اس پر تین حرف۔

شامیانے سے صدر کی آواز: تو چھٹن صاحب۔ آپ کچھ فرمائیں گے؟

چھٹن صاحب: (باقر مرزا کی طرف اشارہ کرتے ہوئے جو ایک طرف چوکی پر پیر لٹکائے بیٹھے ہیں)

مرزا صاحب: واللہ پہلے آپ شروع ہوں۔ میرا نمبر تو آپ کے بعد ہی ہوگا۔

باقر مرزا: جناب صدر نے تو آپ سے درخواست کی ہے نہ کہ اس ناچیز سے۔

صدر: مرزا صاحب واللہ معاف فرمایئے گا قسم ہے قرآن کی آپ کچھ اس طرح

तीसरी आवाज़ : लो साहब जलसा तो शुरु हो गया।

चौथी आवाज़ : अमाँ अच्छे आग़ा चलकर ज़री उनकी भी सुन लो।

पाँचवी आवाज़ : अमाँ तुम्हें क़सम है ज़री देखो तो हर शख़्स चौकी पर बैठने के लिए कितना बेचैन है भई क्या नन्हा सा शामियाना तान रखा है।

तीसरा : अमाँ बरस–बरस के दिन तो एक बद्धी लेकर किसी बाँस ही वास पर टाँग दी होती।

पहला : वल्लाह क्या पेटमरों की सी बातें हैं बटेरों की काकुन के दाम मय्यसर नहीं चले हैं अद्धी–बद्धी नसब करने। अमाँ देख रहे हो। शामियाने का खर्चा किस मुश्किल से निकला है।

चौकी पर की एक आवाज़ : हज़रात अब जलसा शुरु होने जा रहा है। मैं इसकी सदारत के लिए अच्छे आगा साहब का नाम पेश करता हूँ।

(सामेईन की चाऊँ चाऊँ के साथ)

एक और आवाज़ : क्यों साहब दुलारे जानी आग़ा साहब से किस चीज़ में कम थे जो उन्हें सदर नहीं बनाया गया।

तीसरी आवाज़ : अमाँ क्या झिक–झिक लगा रखी है। निकले दाँत अब बैठने से रहे। खुशी के मौक़े पर बेफ़िज़ूल की बातों से क्या हासिल।

चौथी आवाज़ : अच्छा साहब आप जामे से बाहर न हों लीजिये हम चुप हो जाते हैं। अब जो ज़बान से बोले उसपर तीन हरफ़।

शामियाने से सदर की आवाज़ : तो छुट्टन साहब। आप कुछ फ़रमायेंगें?

छुट्टन साहब : (बाक़र मिर्ज़ा की तरफ़ इशारा करते हुए जो एक तरफ़ चौकी पर पैर लटकाए बैठे हैं)

मिर्ज़ा साहब : वल्लाह पहले आप शुरु हों। मेरा नम्बर तो आप के बाद ही होगा।

बाक़र मिर्ज़ा : जनाबे सदर ने तो आप से दरख़्वास्त की है न कि इस नाचीज़ से।

सदर : मिर्ज़ा साहब वल्लाह माफ़ फरमाइयेगा क़सम है कुरआन की आप कुछ इस तरह कैरी की पत्तियों में

کیری کی طرح پتیوں میں چھپے چھپائے بیٹھے تھے کہ آپ تک نگاہ ہی نہیں گئی تو پھر آیئے نا۔

چھٹن صاحب: (مرزا صاحب سے) واللہ بس اب شروع ہو جایئے۔ کچھ کلمات آپ فرما دیں۔ کھڑے ہو کر میں کہہ دوں گا پھر تو اچھے آغا اپنا حق ادا ہی کریں گے۔

مرزا صاحب بڑے تکلف سے اٹھ کر پہلے تو ہر چہار طرف جھک کر کورنش اور تسلیمات عرض کرتے ہیں پھر صدر سے مخاطب ہو کر اشارہ سے اجازت لیتے ہیں۔

صدر: بسم اللہ

مرزا صاحب: بھایئو! آج پورے ایک سال کے بعد ہم لوگ دوبارہ جشن جمہوریت منانے کی غرض سے اپنے آبا و اجداد کے اس پُرانے ٹھیے پر جمع ہوئے ہیں۔ گرد و پیش مرنے والوں کی روحیں نہ شرمائیں تو ایک بات عرض کروں کہ اس پچھلے ایک سال کے عرصہ میں ہمارے بہت سے ساتھی ہم سے بچھڑ کر پیوند خاک ہو گئے۔ تاہم اس بات پر جس قدر بھی اظہار مسرّت کریں کم ہے کہ اگر چہ وہ پاک روحیں ہم میں موجود نہیں تاہم وہ ہم سے دور بھی نہیں۔ وہ ہم عاشقانِ صادق ہیں نہ ہوتے ہوئے بھی ہم میں موجود ہیں۔

ہر گز نمیرد آں کہ دِلش زندہ شد بہ عشق
ثبت است بر جریدۂ عالم دوام ما

ہم میں اور ان حضرات میں اگر بُعد ہے تو صرف گز دو گز کا کہ ہم اوپر بیٹھے جشنِ آزادی منا رہے ہیں۔ اور وہ اپنی ڈھائی گزی تربتوں میں لیٹے لیٹے جشن کے مزے لوٹ رہے ہیں۔ اس سے بڑھ کر ہمارے طبقے کی حکومت سے وفاداری کی اور کیا مثال ہو سکتی ہے۔ جلسے سے واہ واہ سبحان اللہ، قسم قرآن کی کیسا گوشہ نکالا ہے جزاک اللہ کی آوازیں بلند ہوتی ہیں اور مرزا صاحب جھک جھک کر سلام کرتے ہیں۔

छुपे छुपाये बैठे हैं कि आप तक निगाह ही नहीं गई तो फिर आइये ना।

छुट्टन साहब : (मिर्ज़ा साहब से) वल्लाह बस अब शुरु हो जाइये। कुछ कलमात आप फरमा दें। खड़े होकर मैं कह दूँगा फिर तो अच्छे आगा अपना हक अदा ही करेंगे। मिर्ज़ा साहब बड़े तकल्लुफ़ से उठकर पहले तो हर चहार तरफ़ झुककर कवर्निश और तस्लीमात अर्ज़ करते हैं फिर सदर से मुख़ातिब होकर इशारे से इजाज़त लेते हैं।

सदर : बिस्मिल्लाह

मिर्ज़ा साहब : भाइयो! आज पूरे एक साल के बाद हम लोग दोबारा जश्ने जम्हूरीयत मनाने की गरज से अपने आबओ–अजदाद के इस पुराने ठिये पर जमा हुए हैं। गिर्दो–पेश मरने वालों की रुहें न शर्मायें तो एक बात अर्ज़ करुँ कि इस पिछले एक साल के अर्से में हमारे बहुत से साथी हम से बिछड़ कर पैवन्दे–ख़ाक हो गये। ताहम इस बात पर जिस कद्र भी इज़हारे मोस्र्रत करें कम है कि अगरचे वह पाक रुहें हम में मौजूद नहीं ताहम वह हम से दूर भी नहीं। वह हम आशिकाने सादिक़ हैं न होते हुए भी हम में मौजूद हैं।

हर्गिज़ नमीरद आँ कि दिलश जिन्दा शुद ब इश्क़
सब्त अस्त बर जरीदा–ए–आलम व दामे मा

हम में और उन हज़रात में अगर बोअद[1] है तो सिर्फ़ गज़ दो गज़ का कि हम ऊपर बैठे जश्ने–आज़ादी मना रहे हैं। और वह अपनी ढ़ाई गज़ी तुर्बतों[2] में लेटे–लेटे जश्न के मज़े लूट रहे हैं। इस से बढ़कर हमारे तब्के की हुकूमत से वफ़ादारी की और क्या मिसाल हो सकती है। जलसे से वाह वाह सुब्हान अल्लाह, कसम कुरआन की कैसा गोशा निकाला है जज़ाक अल्लाह की आवाज़ें बुलन्द होती हैं और मिर्ज़ा साहब झुक–झुक कर सलाम करते हैं।

---

1. दूरी 2. क़ब्रों

حضرات عمائدین حکومت مجھے معاف فرمائیں میں یہ عرض کروں کہ ہم اور ہمارے جملہ رفقاء جن میں سے بیشتر اس وقت ہم میں موجود نہیں ہیں ان کو حکومت سے صرف اس بات کا شکوہ ہے کہ جب سے ہمارے دیس کے نیتاؤں نے ملک کی باگ ڈور اپنے ہاتھوں میں لی ہے اس وقت سے کاکن کے دام بہت چڑھ گئے ہیں جس کے سبب ہماری پالیاں بے رونق ہوکر رہ گئی ہیں۔ پیٹ بھر کاکن میسر نہ ہونے کے سبب ہمارے اکثر چوٹی کے بٹیر گزر گئے لہذا ان بے زبانوں کی طرف سے ہم اس جشن آزادی کے موقع پر حکومت سے دادرسی کے طالب ہیں۔ دوسری چیز اس سلسلہ میں یہ عرض کرنے کی ہے کہ خاتمہ زمینداری کے معاملے میں عمائدین حکومت کی طرف سے جواقدامات عمل میں لائے جارہے ہیں ان کی ضرب بھی براہ راست ہم ہی وفاداروں پر پڑ رہی ہے۔ جو باوجود مالی مشکلات کے آپ کی ہر خوشی کو اپنی خوشی اور ہر غم کو اپنا غم تصور کرتے ہیں کیونکہ بڑے بڑے زمیندار جن کے علاقوں میں ہر فصل میں بٹیروں کا شکار لگتا ہے، ان کے مٹنے کے سبب ہمارے ہاتھ پاؤں کٹ کر رہ گئے ہیں۔ ہم تباہ و برباد ہو گئے ہیں۔ ہماری حالت ایک یتیم بچے کی سی ہوگئی ہے۔ جس کا کوئی وارث نہ ہو۔ اچھے بٹیر بازار میں آنا بند ہو گئے جو گھا گر کبھی آٹھ دس آنے کو ملتا تھا۔ یقین جانیے کہ اب وہ پانچ سات روپے میں بھی میسر نہیں آتا۔ درحقیقت زمینداروں کی تباہی ہماری تباہی ہے اور ہمارے مظلوم طبقے کی تباہی زمینداروں کی تباہی ہے۔ کیونکہ نواب اغن صاحب اور بھورے نواب صاحب جن کے دم سے سالہاسال سے چوٹیوں پر اتواریں ہوا کرتی تھیں خاتمہ زمینداری کی آواز سنتے ہی بند ہوگئیں اور حضور یہ واقعہ ہے کہ خاتمہ زمین داری کا اعلان کرکے سرکار نے نہ صرف زمینداری کو نقصان پہنچایا ہے بلکہ ہمارے ڈربے بھی پھونک دیے ہیں۔ ہمارے بٹیروں پر عرصۂ حیات تنگ کر دیا ہے۔ مگر ہم عمائدین حکومت کو یقین دلاتے ہیں اور وہ چاہے اسے باور کریں یا نہ کریں مگر

हज़रात अमायदीने हुकूमत मुझे माफ फरमायें मैं यह अर्ज़ करूँ कि हम और हमारे जुम्ला रोफ़का जिनमें से बेश्तर इस वक़्त हम में मौजूद नहीं हैं उनको हुकूमत से सिर्फ़ इस बात का शिकवा है कि जब से हमारे देश के नेताओं ने मुल्क की बागडोर अपने हाथों में ली है उस वक़्त से काकुन के दाम बहुत चढ़ गये हैं जिसके सबब हमारी पालियाँ बेरौनक़ होकर रह गई हैं। पेट भर काकुन मय्यसर न होने के सबब हमारे अक्सर चोटी के बटेर गुज़र गये लिहाज़ा उन बेज़बानों की तरफ़ से हम इस जश्ने–आज़ादी के मौक़े पर हुकूमत से दादरसी के तालिब हैं। दूसरी चीज़ इस सिलसिले में यह अर्ज़ करने की है कि ख़ातमए–जमीनदारी के मामले में अमायदीने हुकूमत की तरफ़ से जो एक़दामात अमल मे लाये जा रहे हैं उनकी ज़र्ब भी बराहे रास्त हम ही वफ़ादारों पर पड़ रही है। जो बावजूद माली मुश्किलात के आप हर ख़ुशी को अपनी ख़ुशी और हर ग़म को अपना ग़म तसव्वुर करते हैं क्योंकि बड़े–बड़े जमीनदार जिन इलाक़ों में हर फसल में बटेरों का शिकार लगता है, उन के मिटने के सबब हमारे हाथ पाँव कटकर रह गये हैं। हम तबाहो–बर्बाद हो गये हैं। हमारी हालत एक यतीम बच्चे की सी हो गई है। जिसका कोई वारिस न हो। अच्छे बटेर बाज़ार में आना बंद हो गये जो घागर कभी आठ दस आने को मिलता था। यक़ीन जानिये कि अब वह पाँच सात रुपये में भी मयस्सर नहीं आता। दर हक़ीक़त ज़मीनदारों की तबाही हमारी तबाही है और हमारे मज़लूम तबक़े की तबाही ज़मीनदारों की तबाही है। क्योंकि नवाब अग्गन साहब और भूरे नवाब साहब जिनके दम से सालहा साल से चोटियों पर इतवारें हुआ करती थीं ख़तमए–ज़मीनदारी की आवाज़ सुनते ही बंद हो गई और हुज़ूर यह वाक़या है कि ख़तमए–ज़मीनदारी का ऐलान करके सरकार ने न सिर्फ़ ज़मीनदारी को नुक़सान पहुँचाया है बल्कि हमारे डरबे भी फूँक दिये हैं। हमारे बटेरों पर अर्सए–हयात[1] तंग कर दिया है। मगर हम अमायदीने हुकूमत को यक़ीन दिलाते हैं और यह चाहे उसे बावर करें या न करें मगर इस माद्दी दुनिया से

1. जीवन

اس مادّی دنیا سے گزرنے کے بعد زمیندار پھر زمیندار ہی رہتا ہے خواہ اس پر جور و تشدد گزرنے والوں کا ہی حال کیوں نہ ہو۔ چنانچہ عرض کرتا ہوں۔

مرنے کے بعد بھی نہ ریاست کی بو گئی
دو گز زمین پا کے زمیندار ہو گئے

(چہار جانب سے سبحان اللہ۔ مکرر ارشاد، ماشاء اللہ قسم قرآن کی طبیعت خوش کر دی واللہ مرزا کیا کیا حق ادا کر رہے ہو کی آوازیں بلند ہوتی ہیں)

ایک زور کی آواز: مرزا صاحب! واللہ سیری نہیں ہوئی پھر ارشاد ہو (مرزا صاحب جھک جھک کر اور دوہرے ہو ہو کر شعر کو دہراتے جاتے ہیں اور سلام کرتے جاتے ہیں) تو اس سلسلہ میں مجھے آپ کا زیادہ وقت نہیں لینا ہے صرف اتنا عرض کرنا ہے کہ جہاں ہماری سرکار کی طرف سے ملک کے گوشہ گوشہ میں بڑے بڑے فارم اور بڑے بڑے مرغی خانے کھولے جانے کی اسکیم ہے وہاں کچھ فارم ایسے بھی کھلوائے جائیں جہاں ہم بٹیروں کا شکار لگا کر اچھی بٹیریں حاصل کر سکیں۔

ایک آواز: حضت، کچھ افیون چرس، مدک اور گانجے کی زحمتوں پر بھی روشنی ڈالتے چلیے۔

مرزا صاحب: (سلسلہ تقریر کو جاری رکھتے ہوئے) تو جن دوسری چیزوں کی طرف میں اربابِ حکومت کی توجہ مبذول کرانا چاہتا ہوں۔ ان میں سے ایک یہ ہے کہ اِدھر بعض حضرات نے مجھے آن کر بتایا کہ اِدھر کچھ نشے پانی پر بھی سرکار کی طرف سے بندشیں عائد ہوئی ہیں جس کے سبب دوکانداروں نے افیون چرس، مدک اور گانجے سے شوق رکھنے والوں کے راستہ میں رکاوٹ پیدا کر دی ہیں جو سرکار برطانیہ کے دور میں بھی نہیں تھیں۔ منشیات پر محصول بڑھ گئے ہیں۔ افیون بازاروں سے عنقا ہو گئی ہے جس کے سبب ہمارے بہت سے رفقار کا رشتۂ حیات منقطع ہو گیا ہے اور ہمارے بڑے بڑے کہنہ مشق اساتذہ ہم کو داغ جدائی دے گئے جس کے سبب ہم ان کے فیضانِ صحبت

गुज़रने के बाद ज़मीनदार फिर ज़मीनदार ही रहता है ख़्वाह उस पर जौरो–तशद्दुद[1] गुज़रने वालों का ही हाल क्यों न हो। चुनांचे अर्ज़ करता हूँ।

मरने के बाद भी न रियासत की बू गई
दो गज़ ज़मीन पा के ज़मींदार हो गये

(चहार जानिब से सुब्हान अल्लाह। मोकर्रर इरशाद, माशाअल्लाह क़सम क़ुरआन की तबीअत खुश करदी वल्लाह मिर्ज़ा क्या–क्या हक़ अदा कर रहे हो की आवाज़ें बुलन्द होती हैं)

एक ज़ोर की आवाज़ : मिर्ज़ा साहब! वल्लाह सैरी नहीं हुई फिर इरशाद हो (मिर्ज़ा साहब झुक–झुक कर और दाहरे हो–हो कर शेर को दोहराते जाते हैं और सलाम करते जाते हैं–) तो इस सिलसिले में मुझे आपका ज़्यादा वक्त नहीं लेना है सिर्फ़ इतना अर्ज़ करना है कि जहाँ हमारी सरकार की तरफ़ से मुल्क के गोशे–गोशे में बड़े–बडे फ़ारम और मुर्ग़ी ख़ाने खोले जाने की स्कीम है वहाँ कुछ फ़ारम ऐसे भी खुलवाये जायें जहाँ बटेरों का शिकार लगाकर अच्छी बटेरें हासिल कर सकें।

एक आवाज़ : हज़्ज़त, कुछ अफ़ियून चरस, मदक और गांजे की ज़हमतों पर भी रोशनी डालते चलिये।

मिर्ज़ा साहब : (सिलसिलए–तक़रीर को जारी रखते हुए) तो जिन दूसरी चीज़ों की तरफ़ मैं अरबाबे हुकूमत की तवज्जो मब्ज़ूल कराना चाहता हूँ। उनमें से एक यह है कि इधर बाज़ हज़रात ने मुझे आन कर बताया कि इधर नशे पानी पर भी सरकार की तरफ़ से बंदिशें आयद हुई हैं जिसके सबब दूकानदारों ने अफ़ियून चरस, मदक, और गांजे से शौक़ रखने वालों के रास्ते में रुकावट पैदा कर दी है जो सरकार बरतानिया के दौर में भी नहीं थी। मुनश्शियात[2] पर महसूल बढ़ गये हैं। अफ़ियून बाज़ारों से अन्क़ा[3] हो गई है जिसके सबब हमारे बहुत से रोफ़क़ा का रिश्तए–हयात मुनक़ता हो गया है और हमारे बड़े–बड़े कोहना मश्क़ असातज़ा हमको जुदाई दे गये जिसके सबब हम उनके फ़ैज़ाने–सोहबत

---

1. ज़ुल्म 2. नशे वाली चीज़ें 3. ग़ायब

سے محروم ہو گئے۔ لہٰذا اس جشنِ آزادی کے موقع پر ہمارا مطالبہ ہے کہ کوآپریٹو سوسائٹی اور گاؤں پنچایتوں کے ذمہ داروں کو سرکاری طور پر توجہ دلائی جائے کہ وہ اس ضمن میں ہم کو سہولتیں پہنچائیں اور بٹیروں کی دوا دارو کے لیے جہاں شہروں اور دیہاتوں میں مرغیوں کے ہسپتال قائم کیے جا رہے ہیں، وہاں بٹیروں کے لیے بھی سرکاری شفاخانے کھولے جائیں اور ان شفاخانوں میں ہمارے ان آدمیوں کو جگہیں دی جائے جنھوں نے اپنی عمر کے بہترین حصہ بٹیروں پر ریاض کرنے میں صرف کر دیے ہیں۔
(صفِ سامعین سے سبحان اللہ، واہ واہ، کیا نکات بیان کر رہے ہو مرزا کی آوازیں بلند ہوتی ہیں اور فاضل مقرر گھوم گھوم کر ہر آواز پر دہرے ہو ہو کر سلام کرتا ہے)

کئی آوازیں: جزاک اللہ، جزاک اللہ۔

مرزا صاحب: (سلسلہ کلام کو جاری رکھتے ہوئے) تاکہ ہمارے طبقے کو بھی احساس ہو کہ ہم آزاد ہوئے۔ ہمارے نیتاؤں کے ہاتھوں میں ملک کی باگ ڈور آئی۔ اور ہماری غلامی کی بیڑیاں کٹیں۔

صدر: (مرزا صاحب سے) واللہ کیا کیا پہلو نکال رہے ہو۔ قسم قرآن کی ختم تقریر پر چھٹن صاحب کے ہاتھوں کے بنے ہوئے دو چھینٹے میری طرف سے۔
(سامعین میں سے کئی آوازیں۔ مرزا صاحب دو چھینٹے ختم تقریر پر چھٹن صاحب کے ہاتھوں کے بنے ہوئے میری طرف سے بھی قبول فرمایئے)

مرزا صاحب: (سلسلۂ کلام کو ختم کرتے ہوئے) ان الفاظ کے ساتھ میں اپنی تقریر کو ختم کرتا ہوں۔ (سامعین کی صفوں سے پھر ایک شور اور ایک غوغا بلند ہوتا ہے اور ''واللہ مرزا صاحب حق ادا کر دیا کیا تیور سے تقریر کی ہے'' کی آواز بلند ہوتی ہے اور صدر سبحان اللہ اور واہ واہ کے ساتھ مرزا کی پیٹھ تھپ تھپاتے ہیں اس کے بعد)

صدر: (سامعین سے مخاطب ہو کر) نواب چھٹن صاحب جو ہمارے شہر کے مشہور و

से महरुम हो गये। लिहाज़ा इस जश्ने–आज़ादी के मौक़े पर हमारा मुतालबा है कि कोऑपरेटिव सोसाइटी और गाँव पंचायतों के ज़िम्मेदारों को सरकारी तौर पर तवज्जो दिलाई जाये कि वह इस ज़िमन में हम को सहूलतें पहुँचायें और बटेरों की दवा दारु के लिए जहाँ शहरों और देहातों में मुर्ग़ियों के हस्पताल क़ायम किए जा रहे हैं, वहाँ बटेरों के लिए भी सरकारी शिफ़ाख़ाने खोले जायें और उन शिफ़ाख़ानों में हमारे उन आदमियों को जगहें दी जायें जिन्होंने अपनी उम्र के बेहतरीन हिस्से बटेरों पर रियाज़ करने में सर्फ़ कर दिये हैं।

(सफ़े सामेईन से सुब्हान अल्लाह, वाह वाह, क्या नुकात बयान कर रहे हो, मिर्ज़ा की आवाज़ें बुलंद होती हैं और फ़ाज़िल मुक़र्रिर घूम–घूम कर हर आवाज़ पर दोहरे हो–हो कर सलाम करता है)

कई आवाज़ें : जज़ाक अल्लाह, जज़ाक अल्लाह।

मिर्ज़ा साहब : (सिलसिलए–कलाम को जारी रखते हुए) ताकि हमारे तबक़े को भी एहसास हो कि हम आज़ाद हुए। हमारे नेताओं के हाथों में मुल्क की बाग डोर आई। और हमारी गुलामी की बेड़ियाँ कटीं।

सदर : (मिर्ज़ा साहब से) वल्लाह क्या क्या पहलू निकाल रहे हो। क़सम क़ुरआन की ख़त्मे–तक़रीर पर छुट्टन साहब के हाथों के बने दो छींटें मेरी तरफ़ से।

(सामेईन में से कई आवाज़ें। मिर्ज़ा साहब दो छींटे ख़त्मे–तक़रीर पर छुट्टन साहब के हाथों के बने हुए मेरी तरफ़ से भी क़ुबूल फरमाइये)

मिर्ज़ा साहब : (सिलसिलए–कलाम को ख़त्म करते हुए) इन अल्फ़ाज़ के साथ मैं अपनी तक़रीर को ख़त्म करता हूँ। (सामेईन की सफ़ों से फिर एक शोर और एक ग़ोग़ा बुलंद होता है और "वल्लाह मिर्ज़ा साहब हक़ अदा कर दिया क्या तेवर से तक़रीर की है" की आवाज़ें बुलन्द होती हैं और सदर सुब्हान अल्लाह और वाह वाह के साथ मिर्ज़ा की पीठ थपथपाते हैं उसके बाद)

सदर : (सामेईन से मुख़ातिब होकर) नवाब छुट्टन साहब जो हमारे शहर के मशहूरो–मारुफ़ बटेर बाज हैं....... और

معروف بٹیر باز ہیں......اور بٹیروں کے معالج خصوصی بھی ہیں۔ آپ کے سامنے اپنے زرّیں خیالات پیش کریں گے۔

چھٹن صاحب: (اپنی جگہ پر کھڑے ہو کر اور صدر سے مخاطب ہوتے ہوئے) بھائی مجھے معاف کرو۔ اب کون سا گوشہ مرزا صاحب نے چھوڑا ہے جس پر بولا جائے بہر حال آپ کے حکم کی تعمیل کرتا ہوں (جھک کر سلام کرتے ہوئے اور اشارے سے اجازت طلب کرتے ہوئے)

صدر: بسم اللہ چھٹن صاحب۔

چھٹن صاحب: بھائیو! میں آپ کا زیادہ وقت نہ لوں گا۔ مجھے شراب کی بندش کے سلسلہ میں صرف اتنی سی بات عرض کرنا ہے کہ اِدھر بعض اضلاع سے میرے دوستوں کے خطوط آئے ہیں وہ لکھتے ہیں کہ وہاں سرکار کے حکم سے شراب کی خرید و فروخت موقوف ہوگئی ہے حتیٰ کی بٹیروں کے لیے چمچے دو چمچے برانڈی کی ضرورت ہوتی ہے تو سونے کے بھاؤ بھی برانڈی میسر نہیں آتی۔ تو حضرات حکومت کے اس اقدام کو بہ نظر تحسین دیکھتے ہوئے کیونکہ اس موذی شے کا استعمال شرعاً ناجائز اور مذہباً حرام ہے، مجھے یہ عرض کرنا ہے کہ اتنی بھی سختی کیا جنور تڑپ تڑپ کر مر جائیں مگر دو بوند شراب نہ ملے۔ چنانچہ پرسوں کانپور سے بڑے آغا نے لکھا ہے کہ ان کا پیارو بٹیر برانڈی دو بوندیں میسر نہ آنے کے سبب راہی ملکِ عدم ہوگیا۔ پیارو مرحوم کی جیتی ہوئی پالیاں آپ کے سامنے ہیں۔ وہ اس وقت کم از کم ہماری ٹکڑی میں بڑا عزت دار بٹیر تھا لہٰذا اس طرح تڑپ کر مر جانے کا میری دانست میں کیا اپنے کیا پرائے سبھوں کو غم ہوگا (جلسہ گاہ سے اظہارِ تاسف کی آوازیں) لہٰذا اس ضمن میں حکومت کو توجہ دلانے کی ضرورت ہے کہ اتنی سختی بنی نوع انسان تو گوارا کرے گا مگر پرندوں کے بس کی بات نہیں جو وہ ان سختیوں کو برداشت کریں۔ وہ تو اپنی جان ہی سے گزر جائیں گے۔

ایک صاحب: (صفِ سامعین میں کھڑے ہو کر) جناب چھٹن صاحب آپ کی یہ اطلاع

बटेरों के मोआलिजे ख़ुसूसी[1] भी हैं। आपके सामने ज़रीं ख़यालात पेश करेंगे।

छुट्टन साहब : (अपनी जगह पर खड़े होकर और सदर से मुख़ातिब होते हुए) भाई मुझे माफ़ करो। अब कौन सा गोशा मिर्ज़ा साहब ने छोड़ा है जिस पर बोला जाय। बहर हाल आपके हुक्म की तामील करता हूँ (झुक कर सलाम करते हुए और इशारे से इजाज़त तलब करते हुए)।

सदर : बिस्मिल्लाह छुट्टन साहब।

छुट्टन साहब : भाइयो! मैं आपका ज़्यादा वक़्त न लूँगा। मुझे शराब की बंदिश के सिलसिले में सिर्फ़ इतनी सी बात अर्ज़ करना है कि इधर बाज़ अज़्ला[2] से मेरे दोस्तों के ख़ुतूत आये हैं वह लिखते हैं कि वहाँ सरकार के हुक्म से शराब की ख़रीदो–फ़रोख़्त मौकूफ़ हो गई हैं हत्ता कि बटेरों के लिए चम्चे दो चम्चे ब्रांडी की ज़रुरत होती है तो सोने के भाव भी ब्रांडी मय्यसर नहीं आती। तो हज़रात हुकूमत के इस इक़दाम को ब नज़र तहसीन देखते हुए क्योंकि इस मूज़ी शय का इस्तेमाल शरअन नाजायज़ और मज़हबन हराम है, मुझे यह अर्ज़ करना है कि इतनी भी सख़्ती क्या जनवर तड़प तड़प कर मर जायें मगर दो बूंद शराब न मिले। चुनांचे परसों कानपूर से बड़े आग़ा ने लिखा है कि उनका प्यारो बटेर ब्रांडी के दो बूंद य्यसर न आने के सबब राहिये–मुल्के–अदम हो गया। प्यारो मरहूम की जीती हुई पालियाँ आपके सामने हैं। वह इस वक़्त कम अज़ कम हमारी टुकड़ी में बड़ा इज़्ज़तदार बटेर था लिहाज़ा इस तरह तड़प कर मर जाने का मेरी दानिस्त में क्या अपने पराये सभूँ को ग़म होगा (जलसा गाह से इज़हारे– तास्सुफ़[3] की आवाज़ें) लिहाज़ा इस ज़िम्न में हुकूमत को तवज्जो दिलाने की ज़रुरत है कि इतनी सख़्ती बनी नौए–इंसान तो गवारा करेगा लेकिन परिन्दों के बस की बात नहीं जो वह इन सख़्तियों को बरदाश्त करें। वह तो अपनी जान ही से गुज़र जायेंगे।

एक साहब : (सफ़े सामेईन में खड़े होकर) जनाब छुट्टन साहब आपकी यह इत्तला ग़लत है। दवाख़ानों में बतौरे दवा हर वक़्त

1. इलाज करने वाले विशेषज्ञ 2. ज़िले का बहुवचन 3. अफ़सोस

غلط ہے۔ دواخانوں میں بطورِ دوا ہر وقت اور ہر جگہ شراب مل سکتی ہے۔ یہ خبر حکومت کے کسی بدخواہ کی اُڑائی ہوئی ہے کہ پیارو شراب نہ ملنے کے سبب مر گیا۔ مجھے معلوم ہوا ہے کہ اس کا کوا بیٹھ گیا تھا جس کے سبب دم گھٹنے سے اس کی وفات واقع ہوئی۔ اس مداخلت کو معاف فرمایا جائے۔

چھٹن صاحب: اچھا کیا آپ نے اس غلط فہمی کی وضاحت فرما دی بہر حال میں حکومت سے اپنے مطالبہ کو واپس لیتا ہوں۔ اور اب اپنی تقریر ختم کرتا ہوں۔ نیز جناب صدر سے درخواست کروں گا کہ وہ اس ضمن میں اگر کوئی شکایت رہ گئی ہو تو ہٹا کر ہم کو شکریہ کا موقع دیں۔ چار بجے ننھے نواب صاحب کے یہاں جشن آزادی کے سلسلے میں پالی ہے اور اس وقت ڈھائی بجنے کو ہیں۔

صدر: حضرات! ان تقریروں کے بعد جو جناب مرزا صاحب اور چھٹن صاحب نے کیں اس کی چنداں ضرورت نہیں کہ میں آپ کے قیمتی وقت کو ضائع کروں جب کہ چار بجے آپ سب حضرات کو ننھے نواب صاحب کے یہاں بھی چلنا ہے۔ تاہم طلسم ہوشربا میں ایک مقام پر بے ثباتی عالم کے باب میں بہادری اور جرأت کی تلقین کی گئی ہے چنانچہ اس عبارت کی روشنی میں آپ کو چند نصیحتیں کرنا چاہتا ہوں کیوں کہ اس وقت آپ اپنے مطالبات کی دھن میں پاگل ہو رہے ہیں۔ طلسم ہوشربا میں ایک جگہ آیا ہے

"تلوار کی آنچ مشہور ہے گیلے سوکھے دونوں جلتے ہیں سر وگردن میں لاگ ہے یہی غضب کی آگ ہے زندگی دونوں کے نام ہیں، نام کرلوا ے نوجوانو لڑ بھڑ کر سرخ رو ہو جس کا قدم ڈگمگایا وہ کہیں آبرو نہ پائے گا"

یہ ٹکڑا میں نے طلسم ہوشربا سے آپ حضرات کے سامنے اس غرض سے پیش کیا کہ اس وقت ہم کو اپنے آبا و اجداد کی پرانی روایات کو زندہ رکھنا ہے۔ ان کی عزت و ناموس کو برقرار رکھنا ہے۔ اسی کے لیے مرنا اور اسی کے لیے جینا ہے اور جدید سرکار کی بادِ حوادث کے جھونکوں سے مردانہ وار مقابلہ کرنا ہے۔ اس وقت ہم کو پورے عزم اور بے باکی کے ساتھ اپنے

हर जगह शराब मिल सकती है। यह ख़बर हुकूमत के किसी बदख़्वाह की उड़ाई हुई है कि प्यारो शराब न मिलने के सबब मर गया। मुझे मालूम हुआ है कि उसका कौआ बैठ गया था जिसके सबब दम घुटने से उसकी वफ़ात वाके हुई। इस मदाख़ेलत को माफ़ फरमाया जाये।

छुट्टन साहब : अच्छा किया आपने इस ग़लत फ़हमी की वज़ाहत फरमा दी बहर हाल मैं हुकूमत से अपने मोतालबे को वापिस लेता हूँ। और अब अपनी तक़रीर ख़त्म करता हूँ। नीज़ जनाबे सदर से दरख़्वास्त करूँगा कि वह इस ज़िम्न में अगर कोई शिकायत रह गई हो तो बता कर हमको शुक्रिया का मौक़ा दें। चार बजे नन्हे नवाब साहब के यहाँ जश्ने-आज़ादी के सिलसिले में पाली है और इस वक़्त ढ़ाई बजने को हैं।

सदर : हज़रात! इन तक़रीरों के बाद जो जनाब मिर्ज़ा साहब और छुट्टन साहब ने कीं इसकी चंदाँ ज़रुरत नहीं कि मैं आपके क़ीमती वक़्त को ज़ाया करूँ जबकि चार बजे आप सब हज़रात को नन्हे नवाब साहब के यहाँ भी चलना है। ताहम तिलिस्मे-होशरुबा में एक मुक़ाम पर बेसबातिए आलम के बाब में बहादुरी और जुरअत की तल्क़ीन की गई है चुनांचे इस इबारत की रोशनी में आपको चंद नसीहतें करना चाहता हूँ क्योंकि इस वक़्त आप अपने मुतालबात की धुन में पागल हो रहे हैं। तिलस्मे होशरुबा में एक जगह आया है-

"तलवार की आँच मशहूर है गीले सूखे दोनों जलते हैं सरो-गर्दन में लाग है यही ग़ज़ब की आग है ज़िन्दगी दोनों के नाम हैं, नाम करलो ऐ नौजवानों लड़ भिड़ कर सुर्ख़रु हो जिसका क़दम डगमगाया वह कहीं आबरु न पायेगा"

यह टुकड़ा मैंने तिलस्मे होशरुबा से आप हज़रात के सामने इस गरज़ से पेश किया है कि इस वक़्त हमको अपने आबाओ-अजदाद की पुरानी रवारयात को जिन्दा रखना है। उनकी इज़्ज़त व नामूस को बरक़रार रखना है। इसी लिए मरना और इसी के लिए जीना है और जदीद सरकार की बादे-हवादिस के झोंकों से मर्दानावार मुक़ाबला करना है। इस वक़्त हमको पूरे अज़्म और बेबाकी के साथ अपने मोतालबात हुकूमत के रुबरु पेश

مطالبات حکومت کے روبرو پیش کرنا ہے۔ خواہ اس کا انجام کچھ ہی کیوں نہ ہو۔

اتنے میں ایک شخص نے قبرستان کے پھاٹک سے جلسہ گاہ میں باآواز بلند اعلان کیا ''اماں بھاگو دوڑ آ گئی کسی بد بخت نے مرزا کی تقریر کی پوری رپٹ چوکی پر کرادی۔'' یہ سننا تھا کہ جلسہ گاہ میں ایک بھگدڑ مچ گئی گرتے پڑتے الفونی مدکیے اور چرسیے کا بکیں اور پیالیاں چھوڑ چھوڑ کر قبروں کی آڑ اور جھاڑیوں میں چھپ گئے جلسہ ختم ہو گیا۔

بعد میں معلوم ہوا کہ دو مسلمان سپاہی سرخ پگڑیاں باندھے اپنے کسی عزیز کی قبر پر فاتحہ پڑھنے عین اسی وقت پھاٹک کے قریب سے گزر رہے تھے جس وقت جلسہ گاہ میں آغا صاحب کی تقریر ہو رہی تھی۔

करना है। ख़्वाह इसका अंजाम कुछ ही क्यों न हो। इतने में एक शख़्स ने क़ब्रिस्तान के फाटक से जलसागाह में बआवाज़े बुलन्द ऐलान किया "अमा भागो दौड़ो, आ गई किसी बदबख़्त ने मिर्ज़ा की तक़रीर की पूरी रपट चौकी पर करा दी।" यह सुनना था कि जलसागाह में एक भगदड़ मच गई गिरते पड़ते अफ़ियूनी मदकिये और चरसिये काबुकें और प्यालियाँ छोड़–छोड़ कर क़ब्रों का आड़ और झाड़ियों में छुप गये जलसा ख़त्म हुआ। बाद मे मालूम हुआ कि दो मुसलमान सिपाही सुर्ख़ पगड़ियाँ बांधें अपने किसी अज़ीज़ की क़ब्र पर फ़ातेहा पढ़ने ऐन उसी वक़्त फाटक के क़रीब से गुज़र रहे थे जिस वक़्त जलसागाह में आग़ा साहब की तक़रीर हो रही थी।

ذرا دیکھنا یہ کس کی تصویریں ہیں

ٹرین کسی بدمست شرابی کی طرح لڑکھڑاتی ہوئی چل رہی تھی۔ ہمارا ڈبہ ویسے تو خیر سے سکنڈ کلاس تھا، لیکن فی الحقیقت وہ مرحوم انٹر کلاس کا ایک نہایت سن رسیدہ ڈبہ تھا جسے ریلوے والوں نے شاید ہنگامی حالات کے تحت محکمۂ آثار قدیمہ سے واپس منگا لیا تھا۔ اس کی گدیاں اُدھڑی ہوئی تھیں۔ فرش میں گڑھے تھے۔ چول چول ڈھیلی پڑی تھی۔ اس کی پیشانی پر اگر ریلوے والے سکنڈ کی علامت نہ ڈال دیتے تو غالباً تھرڈ کلاس والے بھی اسے چوتھا درجہ سمجھ کر آگے بڑھ جاتے۔ فدوی کا خیال ہے کہ ایسا ایک آدھ ڈبہ ہر گاڑی میں ضرور جڑا ہوا ہونا چاہیے۔ کیوں کہ یہ ہمارے قومی کردار، ہماری سیاست جمہوریت اور ہمارے سماجی معیار کی بڑی بھرپور نمائندگی کرتا ہے۔

ڈبے میں اس وقت ہم چار نفر تھے۔ دو ہم دو وہ۔ ہم سے مراد تو آپ سمجھ ہی گئے ہوں گے۔ یعنی ملاّ اور ملائن۔ مگر ''وہ'' کی مراد سمجھنے میں ذرا دیر لگے گی۔

मुल्ला इब्नुलअरब मक्की

ज़रा देखना यह किस की तस्वीरें हैं

ट्रेन किसी बदमस्त शराबी की तरह लड़खड़ाती हुई चल रही थी। हमारा डिब्बा वैसे तो तौर से सेकेण्ड क्लास था, लेकिन फ़िलहक़ीक़त वह मरहूम इन्टर क्लास का सिनरसीदा डिब्बा था जिसे रेलवे वालों ने शायद हंगामी हालात के तहत महकमए–आसारे–क़दीमा[1] से वापस मंगा लिया था। उसकी गद्दियाँ उधड़ी हुई थीं। फ़र्श में गढ़े थे। चूल–चूल ढ़ीली पड़ी थी। उसकी पेशानी पर अगर रेलवे वाले सेकेण्ड की अलामत न डाल देते तो ग़ालेबन थर्ड क्लास वाले भी उसे चौथा दर्जा समझकर आगे बढ़ जाते। फ़िदवी का ख़याल है कि ऐसा एक आध डिब्बा हर गाड़ी में ज़रुर जुड़ा हुआ होना चाहिये। क्योंकि यह हमारे क़ौमी किरदार, हमारी सियासत, जमहूरियत और हमारे समाजी मेयार की बड़ी भरपूर नुमाइंदगी करता है।

डिब्बे में उस वक़्त हम चार नफ़र थे। दो हम, दो वह। हम से मुराद तो आप समझ ही गये होंगे। यानी मुल्ला और मुल्लाइन। मगर "वह" की मुराद समझने में ज़रा देर लगेगी। मेरे लिए वह अजनबी ही थे।

---

1. पुरातत्व विभाग

ملا ابن العرب مکی

ذرا دیکھنا یہ کس کی تصویریں ہیں

ٹرین کسی بدمست شرابی کی طرح لڑکھڑاتی ہوئی چل رہی تھی۔ ہمارا ڈبہ ویسے تو خیر سے سکنڈ کلاس تھا، لیکن فی الحقیقت وہ مرحوم انٹر کلاس کا ایک نہایت سن رسیدہ ڈبہ تھا جسے ریلوے والوں نے شاید ہنگامی حالات کے تحت محکمۂ آثار قدیمہ سے واپس منگا لیا تھا۔ اس کی گدیاں اُدھڑی ہوئی تھیں۔ فرش میں گڑھے تھے۔ چول چول ڈھیلی پڑی تھی۔ اس کی پیشانی پر اگر ریلوے والے سکنڈ کی علامت نہ ڈال دیتے تو غالباً تھرڈ کلاس والے بھی اسے چوتھا درجہ سمجھ کر آگے بڑھ جاتے۔ فدوی کا خیال ہے کہ ایسا ایک آدھ ڈبہ ہر گاڑی میں ضرور جُڑا ہوا ہونا چاہیے۔ کیوں کہ یہ ہمارے قومی کردار، ہماری سیاست جمہوریت اور ہمارے سماجی معیار کی بڑی بھرپور نمائندگی کرتا ہے۔

ڈبے میں اس وقت ہم چار نفر تھے۔ دو ہم دو وہ۔ ہم سے مراد تو آپ سمجھ ہی گئے ہوں گے۔ یعنی ملّا اور ملّائن۔ مگر "وہ" کی مراد سمجھنے میں ذرا دیر لگے گی۔

मुल्ला इब्नुलअरब मक्की

ज़रा देखना यह किस की तस्वीरें हैं

ट्रेन किसी बदमस्त शराबी की तरह लड़खड़ाती हुई चल रही थी। हमारा डिब्बा वैसे तो तौर से सेकेण्ड क्लास था, लेकिन फ़िलहक़ीक़त वह मरहूम इन्टर क्लास का सिनरसीदा डिब्बा था जिसे रेलवे वालों ने शायद हंगामी हालात के तहत महकमए–आसारे–क़दीमा[1] से वापस मंगा लिया था। उसकी गद्दियाँ उधड़ी हुई थीं। फ़र्श में गढ़े थे। चूल–चूल ढीली पड़ी थी। उसकी पेशानी पर अगर रेलवे वाले सेकेण्ड की अलामत न डाल देते तो ग़ालेबन थर्ड क्लास वाले भी उसे चौथा दर्जा समझकर आगे बढ़ जाते। फ़िदवी का ख़याल है कि ऐसा एक आध डिब्बा हर गाड़ी में ज़रुर जुड़ा हुआ होना चाहिये। क्योंकि यह हमारे क़ौमी किरदार, हमारी सियासत, जमहूरियत और हमारे समाजी मेयार की बड़ी भरपूर नुमाइंदगी करता है।

डिब्बे में उस वक़्त हम चार नफ़र थे। दो हम, दो वह। हम से मुराद तो आप समझ ही गये होंगे। यानी मुल्ला और मुल्लाइन। मगर "वह" की मुराद समझने में ज़रा देर लगेगी। मेरे लिए वह अजनबी ही थे।

1. पुरातत्व विभाग

میرے لیے وہ اجنبی ہی تھے۔ ایک مرد اور ایک لڑکی۔

مرد کی عمر چالیس سے کم نہ رہی ہوگی اور لڑکی شاید بیس بائیس کی ہو۔ مرد کے مانگ بنے ہوئے بالوں میں سفیدی کا تناسب تقریباً چالیس فیصدی تھا، لیکن لڑکی کے بال بے حد سیاہ اور لمبے تھے۔ لمبائی کا اندازہ اُن دو چوٹیوں سے ہو رہا تھا جو اس کے دونوں برہنہ بازوؤں پر جھول رہی تھیں۔ ہوسکتا ہے ان میں کچھ مصنوعی بال بھی شامل ہوں، لیکن آج کے زمانے میں اصلی اور مصنوعی کے چکر میں پڑنے والے احمق کہلاتے ہیں۔ میری بلا سے وہ اصلی ہوں یا مصنوعی ہر صورت میں وہ عریاں بازوؤں کے گورے پن کو نمایاں کرنے کے لیے بہت کافی تھے جیسا کہ حق ہے کافی ہونے کا۔

ایک گھنٹہ پیشتر مرد اس ڈبے میں اکیلا داخل ہوا تھا۔ وہ سوٹ کیس ہاتھ میں سنبھالے اس وقت داخل ہوا تھا جب گاڑی حرکت میں آ چکی تھی۔ ڈبے میں اُس وقت صرف ہم ہی ہم تھے۔ ملائن نے چہرے سے نقاب اُلٹ رکھا تھا۔ سامنا ہوا اور بھرپور ہوا، گو اس کی مدّت پل بھر سے زائد نہ رہی ہو۔ پھر نصف گھنٹے تک اس ڈبے میں اور کوئی نہیں آیا۔ اس مدت میں وہ سگریٹ پی پی کر اخبار پڑھتا رہا مگر رہ رہ کر اس کی چور نظریں ملائن کا بھی جائزہ لیتی رہیں۔ برقعہ دلکش ہو تو دعوتِ نظارہ کا کام دیتا ہے۔ ملائن کا برقعہ سیاہ لیڈی منٹن کا تھا جس کی وضع بڑی پُرکشش تھی۔ ایسے برقعے میں اگر چُڑیل بھی ہو تو دیکھنے والے تصورات کے شیش محل بنائے بغیر نہیں رہ سکتے مگر ملائن تو چشم بددور چندے آفتاب چندے ماہتاب تھی۔ نہ سہی ہونٹوں پر لپ اسٹک اور جبین و عارض پر پاؤڈر کی تہہ لیکن وہ سب کچھ تھا جس نے ہمارے دَور کے آرٹ، کلچر اور تہذیب و تمدّن کو جنم دیا ہے۔ جس نے ثقافت کے نوک پلک درست کیے ہیں۔ گو کہ ملائن اب رُخ بدل کر سکوی سمٹی بیٹھی تھی۔ مرد کی طرف اس کی پشت تھی، لیکن وہ اللہ کا بندہ امید کا دامن ہاتھ سے نہیں چھوڑنا چاہتا تھا۔

میں اندر ہی اندر اونٹتا رہا۔ نصف گھنٹے بعد ایک اسٹیشن سے چوتھا مسافر داخل ہوا اور یہ وہی لڑکی تھی جس کا تذکرہ میں ابھی کر چکا ہوں۔ وہ اکیلی ہی سوار ہوئی تھی۔ سامان کے نام اس کے ہاتھ میں ایک خوبصورت پرس کے سوا کچھ نہ تھا۔ اس نے طائرانہ

एक मर्द और एक लड़की।

मर्द की उम्र चालीस से कम न रही होगी और लड़की शायद बीस बाईस की हो। मर्द के माँग बने हुए बालों में सफ़ेदी का तनासुब तक़रीबन चालीस फ़ीसदी था, लेकिन लड़की के बाल बेहद सियाह और लम्बे थे। लम्बाई का अन्दाज़ा उन दो चोटियों से हो रहा था जो उसके दोनों बरहना बाज़ुओं पर झूल रही थीं। हो सकता है उन में कुछ मस्नुई[1] बाल भी शामिल हों, लेकिन आज के ज़माने में असली और मस्नुई के चक्कर में पड़ने वाले अहमक़ कहलाते हैं। मेरी बला से वह असली हों या मस्नुई हर सूरत में वह उरियाँ बाज़ुओं के गोरेपन को नुमायाँ करने के लिए काफ़ी थे जैसा कि हक़ है काफ़ी होने का।

एक घंटे पेश्तर मर्द इस डिब्बे में अकेला दाख़िल हुआ था। वह सूटकेस हाथ में संभाले उस वक़्त दाख़िल हुआ था जब गाड़ी हरकत में आ चुकी थी। डब्बे में उस वक़्त सिर्फ़ हम ही हम थे। मुल्लाइन ने चेहरे से नक़ाब उलट रखा था। सामना हुआ और भरपूर हुआ, गो इसकी मुद्दत पल भर से ज़ायद न रही। फिर निस्फ़[2] घंटे तक इस डिब्बे में और कोई नहीं आया। इस मुद्दत में वह सिगरेट पी–पी कर अख़बार पढ़ता रहा मगर रह–रह कर उसकी चोर नज़रें मुल्लाइन का भी जायज़ा लेती रहीं। बुर्क़ा दिलकश हो तो दावते नज़ारा का काम देता है। मुल्लाइन का बुर्क़ा सियाह लेडी मिन्टन का था जिसकी वज़ा[3] बड़ी पुरकशिश थी। ऐसे बुर्क़े में अगर चुड़ैल भी हो तो देखने वाले तसव्वुरात के शीश महल बनाये बग़ैर नहीं रह सकते मगर मुल्लाइन तो चश्मे–बद्दूर, चन्दे आफ़ताब चन्दे माहताब[4] थी। न सही होंटो पर लिपस्टिक और जबीनो–आरिज़[5] पर पाउडर की तह लेकिन वह सब कुछ था जिसने हमारे दौर के आर्ट कल्चर और तहज़ीबो–तमद्दुन को जन्म दिया है। जिसने सक़ाफ़त[6] के नोक पलक दुरुस्त किए हैं। गो कि मुल्लाइन अब रुख़ बदल कर सुकड़ी सिमटी बैठी थी। मर्द की तरफ़ उस की पुश्त[7] थी, लेकिन वह अल्लाह का बंदा उम्मीद का दामन हाथ से नहीं छोड़ना चाहता था।

मैं अन्दर ही अन्दर औंटता रहा। निस्फ़ घंटे बाद एक स्टेशन से चौथा मुसाफ़िर दाख़िल हुआ और यह वही लड़की थी जिसका तज़करा मैं अभी कर चुका हूँ। वह अकेली ही सवार हुई थी। सामान के नाम उसके हाथ में एक ख़ूबसूरत पर्स के सिवा कुछ न था। उस ने तायराना[8]

1. बनावटी, नक़ली 2. आधा 3. बनावट 4. सुन्दरता में सूरज और चाँद के बराबर 5. चेहरा 6. सभ्यता 7. पीठ 8. सरसरी

نظریں ڈالیں اور پھر ٹھٹک گئی مرد بھی ٹھٹکا۔ وہ ایک دوسرے کو بڑے غور سے دیکھ رہے تھے۔ دفعتاً مرد پہچان لینے کے انداز میں بولا۔

"ارے نرگس تم!

اور لڑکی چہکی تھی ......"اوہ ماسٹر صاحب آپ!"

پھر وہ خاصی گرم جوشی سے ملے تھے۔ گرم جوشی کے سوا اسے کیا کہیں گے کہ لڑکی مرد کے بالکل قریب ہی بیٹھ گئی تھی اور مرد نے اس کے دونوں شانوں پر اپنا ہاتھ ٹیک کر بڑی مسرور آواز میں کہا تھا۔

"بیوٹی فل بے بی بیوٹی فل ......اب تو تم بہت بڑی ہو گئیں۔"

اس کے بعد ان میں غیر مختتم گفتگو شروع ہو گئی تھی۔ معلوم ہوا کہ کئی سال پہلے جب لڑکی اسکول میں پڑھتی تھی تو یہ صاحب اس کے استاد تھے اب لڑکی کالج میں پڑھ رہی ہے۔

گاڑی کے شور میں ان کی گفتگو سننا ذرا دشوار تھا۔ بعض باتیں وہ قصداً بھی دبی ہی زبان سے کر رہے تھے لیکن میں بلا ارادہ ہمہ تن گوش بنا ہوا تھا۔ بظاہر میرے چہرے کے سامنے کتاب کھلی ہوئی تھی، لیکن کان اسی طرف لگے تھے اور نظریں بھی تھوڑے وقفے سے اُدھر ہی پھسل جاتی تھیں۔

شاعروں کی منطق سے تو لڑکی کو حسین کہنا مشکل ہے۔ اس کی ناک موٹی تھی اور آنکھیں چھوٹی۔ کمر بھی اتنی پتلی نہیں تھی کہ خوردبین کے بغیر نظر نہ آسکتی، لیکن ثقافتی نقطۂ نظر سے وہ سو فی صدی حسین تھی۔ ٹیڈی قسم کا چُست لباس، شاندار میک اپ اور زہد شکن ادائیں۔ ان چیزوں کی موجودگی میں کون کافر اس کے حسین ہونے سے انکار کر سکتا تھا۔ وہ حسین نہ ہوتی تو مجھے کتاب بینی کا سوانگ بھی نہ رچانا پڑتا۔ کتاب ہاتھ میں لینے کا منشاء ہی ملائن کو یہ اطمینان دلانا تھا کہ بھاگوان! بدگمان مت ہونا، تمھارا سعادت مند شوہر ایسی کسی لڑکی میں دلچسپی نہیں لے سکتا جس کے ننگے بازو تمھارے برقعے پر طنز کرنے کی جسارت کر رہے ہوں۔

ہمارے اور ان کے درمیان صرف ایک خالی سیٹ حائل تھی۔ اس سیٹ کے

नज़रें डालीं और ठिठक गई मर्द भी ठिठका। वह एक दूसरे को बड़े ग़ौर से देख रहे थे। दफ़अतन मर्द पहचान लेने के अन्दाज़ में बोला।

"अरे नरगिस तुम!

और लड़की चहकी थी...... "ओह मास्टर साहब आप!"

फिर वह ख़ासी गर्मजोशी से मिले थे। गर्मजोशी के सिवा इसे क्या कहेंगे कि लड़की मर्द के बिल्कुल क़रीब ही बैठ गई और मर्द ने उसके दोनों शानों पर अपना हाथ टेक कर बड़ी मसरुर आवाज़ में कहा था।

"ब्यूटीफुल बेबी ब्यूटीफुल...... अब तो तुम बहुत बड़ी हो गई।"

इसके बाद उन में ग़ैर मुख़्ततम[1] गुफ़्तगू शुरु हो गई थी। मालूम हुआ कि कई साल पहले जब लड़की स्कूल में पढ़ती थी तो यह साहब उसके उस्ताद थे अब लड़की कॉलेज में पढ़ रही है।

गाड़ी के शोर में उनकी गुफ़्तगू सुनना ज़रा दुश्वार था। बाज़ बातें वह क़स्दन[2] भी दबी ही ज़बान से कर रहे थे लेकिन मैं बिला इरादा हमातनगोश[3] बना हुआ था। बज़ाहिर मेरे चेहरे के सामने किताब खुली हुई थी, लेकिन कान उसी तरफ लगे थे और नज़रें थोड़े वक़्फ़े से उधर ही फिसल जाती थीं।

शायरों के मंतिक़[4] से तो लड़की को हसीन कहना मुश्किल है। उसकी नाक मोटी थी और आँखें छोटी। कमर भी इतनी पतली नहीं थी कि खुरदबीन के बग़ैर नज़र न आ सकती, लेकिन सकाफ़ती नुक़्तए–नज़र से वह सौ फ़ीसदी हसीन थी। टेडी क़िस्म का चुस्त लिबास, शानदार मेकअप और ज़ोहद–शिकन[5] अदायें। इन चीज़ों की मौजूदगी में कौन काफ़िर उसके हसीन होने से इन्कार कर सकता था। वह हसीन न होती तो मुझे किताब बीनी की स्वांग भी न रचाना पड़ता। किताब हाथ में लेने का मन्शा ही मुल्लाइन को यह इत्मीनान दिलाना था कि भागवान! बदगुमान मत होना, तुम्हारा सआदतमंद शौहर ऐसी किसी लड़की में दिलचस्पी नहीं ले सकता जिसके नंगे बाज़ू तुम्हारे बुर्के पर तन्ज़ करने की जसारत कर रहे हों।

हमारे और उनके दरमियान सिर्फ़ एक ख़ाली सीट हायल थी। उस सीट के गद्दे और पुश्ते के दरमियान तक़रीबन निस्फ़[6] बालिश्त ख़ला मौजूद

1. न ख़त्म होने वाली 2. जानबूझ कर 3. ध्यानपूर्वक 4. तर्क
5. तपस्या भंग करने वाली 6. आधी

گدّے اور پشتے کے درمیان تقریباً نصف بالشت خلاء موجود تھا۔ میں اس خلاء کو کتاب کی آڑ سے کھڑکی کے طور پر استعمال کر رہا تھا کئی بار مجھے اسی خلاء سے یہ دیکھنے کی سعادت نصیب ہوئی کہ محترم استاد کی انگلیاں نیک بخت شاگردہ کی بلوریں انگلیوں اور کلائیوں پر مچل رہی ہیں۔ وہ فلم، کلچر، ثقافت اور تہذیبی ارتقاء کے موضوعات پر شارٹ ہینڈ میں گفتگو کر رہے تھے۔ لڑکی نے فرفر کئی مشہور اداکاروں کے نام لیے، پھر کہنے لگی۔

''ممی دلیپ کمار کی بہت مدّاح ہیں۔ ان کا دعویٰ ہے کہ دلیپ کے بالوں کا اسٹائل جنگ باز قوموں کے لیے معصومیت کا بڑا مؤثر پیغام ہے!''

میں نے دُھڑ دُھڑی لی۔ لڑکی کی ممی کا دعویٰ میرے لیے فلسفے کی کڑوی گولی سے کم نہ تھا۔ مگر لڑکی نے سوچنے کا موقع نہیں دیا۔

''اور ڈیڈی کو وجنیتی مالا بہت پسند ہے۔ وہ کہتے ہیں کہ وجنیتی کا ہر رقص سماج کی کسی نہ کسی دُکھتی رگ پر انگلی رکھتا ہے اور اس کے پیروں کی ہر جنبش ہمارے جہالت زدہ سماج کے اُن پھوڑوں کی نشاندہی کرتی ہے جو زندگی کی جدید قدروں کو اپنائے بغیر کبھی اچھے نہیں ہو سکتے۔''

''ویری نائس۔ تمہارے ڈیڈی نے بڑی گہری بات کہی ہے۔'' ماسٹر صاحب لڑکی کی انگلیوں پر دباؤ دیتے ہوئے بولے ''سچا آرٹ ہمیشہ صحت مند رجحانات کی نمائندگی کرتا ہے۔ وجنیتی کا رقص لتاؔ کا ترنم، دلیپ کی ایکٹنگ یہ سب نئی زندگی کی شائستہ اور روشن قدروں کے ترجمان ہیں۔ ان سے ہم سماج کو سنوار سکتے ہیں۔ جہالت اور رجعت پسندی کا خاتمہ کر سکتے ہیں۔''

اس کے بعد انگریزی فلموں کی باتیں شروع ہو گئیں۔ لڑکی ان کے بارے میں بھی کافی معلومات رکھتی تھی۔ مگر ماسٹر صاحب نے ایک ایسی فلم کا ذکر چھیڑا جس کے بارے میں لڑکی کو کہنا پڑا:۔

''نہیں یہ فلم میں نے نہیں دیکھی۔''

''بڑی شاندار فلم ہے۔ اٹلی کی مشہور ڈانسر ایزوؔ بیلا نے اس میں اپنے آرٹ کا بڑا ونڈرفل مظاہرہ کیا ہے۔''

था। मैं उस ख़ला को किताब की आड़ से खिड़की के तौर पर इस्तेमाल कर रहा था कई बार मुझे उसी ख़ला से यह देखने की सआदत नसीब हुई कि मोहतरम उस्ताद की उंगलियाँ नेक बख़्त शागिर्दा की बिल्लौरीं उंगलियों और कलाइयों पर मचल रही हैं। यह फ़िल्म, कल्चर, सकाफ़त और तहज़ीबी इरतक़ा[1] के मौज़ूआत पर शार्ट हैंड में गुफ़्तगू कर रहे थे। लड़की ने फ़र–फ़र कई मशहूर अदाकारों के नाम लिए, फिर कहने लगी।

"मम्मी दिलीप कुमार की बहुत मद्दाह है। उनका दावा है कि दिलीप कुमार के बालों का स्टाइल जंगबाज़ कौमों के लिए मासूमियत का बड़ा मोअस्सर[2] पैग़ाम है!"

मैंने घुड़घुड़ी ली। लड़की की मम्मी का दावा मेरे लिए फलसफ़े की कड़वी गोली से कम न था। मगर लड़की ने सोचने का मौक़ा नहीं दिया।

"और डैडी को वैजन्ती माला बहुत पसंद है। वह कहते हैं कि वैजन्ती माला का हर रक़्स समाज की किसी न किसी दुखती रग पर उंगली रखता है और उसके पैरों की हर जुंबिश हमारे जहालत ज़दा समाज के उन फोड़ों की निशानदेही करती है जो ज़िन्दगी की जदीद क़दरों को अपनाये बग़ैर कभी अच्छे नही हो सकते।"

"वेरी नाइस। तुम्हारे डैडी ने बड़ी गहरी बात कही है।" मास्टर साहब लड़की की उंगलियों पर दबाव देते हुए बोले "सच्चा आर्ट हमेशा सेहतमंद रुजहानात की नुमाइंदगी करता है। वैजन्ती का रक़्स, लता का तरन्नुम, दिलीप की एक्टिंग यह सब नई ज़िन्दगी की शाइस्ता और रौशन क़दरों के तर्जुमान हैं। उनसे हम समाज को संवार सकते हैं। जहालत और रजअत[3] पसंदी का ख़ातमा कर सकते है।"

उसके बाद अंग्रेजी फ़िल्मों की बाते शुरु हो गयीं। लड़की उनके बारे में भी काफ़ी मालूमात रखती थी। मगर मास्टर साहब ने एक ऐसी फ़िल्म का ज़िक्र छेड़ा जिस के बारे में लड़की को कहना पड़ा:–

"नहीं यह फ़िल्म मैंने नहीं देखी।"

"बड़ी शानदार फ़िल्म है। इटली की मशहूर डांसर एज़ोबेला ने उस में अपने आर्ट का बड़ा वंडरफुल मुज़ाहरा किया है।"

1. तरक़्क़ी 2. असर पैदा करने वाला 3. पुराने विचार

''ایزوبیلا!'' لڑکی نے پُرشوق آواز میں دہرایا ''اس ڈانسر کا چرچا میں نے بہت سنا ہے مگر آج تک دیکھنے کا اتفاق نہیں ہوا۔

''بیڈ لک۔ ارے ایزوبیلا کو نہیں دیکھا تو پھر تم نے دنیا میں کیا دیکھا۔ اس فلم میں اس کا وہ لاجواب ڈانس بھی ہے جس کے لیے وہ دنیا بھر میں مشہور ہے۔''

''کس قسم کا ڈانس؟''

''ٹمباٹوک۔ اکدم آرٹ فل۔ وہ تہہ بر تہہ ملبوسات زیب تن کر کے ڈانس شروع کرتی ہے۔ پھر ہر گردش پر یہ ملبوسات ایک خاص تکنک کے ساتھ ایک ایک کر کے جسم سے جدا ہوتے جاتے ہیں رفتہ رفتہ لباس کے نام کی ایک دھجی بھی اس کے بدن پر باقی نہیں رہتی اور کمال یہ ہے کہ لباس کو تن سے جدا کرنے کے اس تدریجی عمل میں وہ اپنے ہاتھ بالکل استعمال نہیں کرتی۔''

آپ کا مطلب شاید یہ ہے کہ بہت ضروری ہی لباس اس کے بدن پر باقی رہ جاتا ہوگا؟'' لڑکی بولی۔

''نو بے بی......ضروری کا لفظ اس موقع پر بے محل ہے ضرورت تو ایک اضافی شے ہے۔ ہم جاڑے میں کوٹ اور جسٹر پہنتے ہیں لیکن گرمیوں میں بش شرٹ ہی ضرورت کا مفہوم پورا کر دیتی ہے اسی طرح آرٹ اور فن کے دائرے میں ضرورت کا معیار ہماری عام زندگی سے مختلف ہے۔ کیا تم نے ایلورا اور اجنتا وغیرہ کی نقاشی اور آرٹ کا حال نہیں پڑھا۔ وہاں سچائیاں بالکل بے نقاب ہیں۔ آرٹ زندگی کے سادہ اور فطری رُخ کا ترجمان ہوتا ہے اسے مصنوعی لباسوں اور پردوں میں مقید کرنا وحشیانہ تنگدلی ہے۔ تم دیکھو کی ایزوبیلا لباس کی مصنوعی قید سے نکل ایک مقدس اور نورانی اپسرا کی شکل اختیار کر لیتی ہے۔ اس کے ایک ایک موئے بدن سے کرنیں سی پھوٹتی ہیں اور تماشائی کچھ دیر کے لیے رنگین قوس قزح کی اُن حسین فضاؤں میں اُڑ جاتے ہیں جہاں فطرت اپنے بالکل حقیقی اور سادہ رنگ میں جلوہ گر ہے۔''

لڑکی خاموشی سے ماسٹر صاحب کا مُنھ تکتی رہی۔ اس نے اسی نوع کے لطیف نکتے کالج میں بھی ضرور سُنے ہوں گے شاید اسی لیے وہ ان پر مبہوت نہیں ہو سکی۔

"एज़ोबेला!" लड़की ने पुरशौक़ आवाज़ में दोहराया "उस डांसर का चर्चा मैंने बहुत सुना है मगर आज तक देखने का इत्तेफ़ाक़ नहीं हुआ।

बैडलक। अरे एज़ोबेला को नहीं देखा तो फिर तुमने दुनिया में क्या देखा। इस फ़िल्म में उसका वह लाजवाब डांस भी है जिसके लिए वह दुनिया भर में मशहूर है।"

"किस क़िस्म का डांस?"

"टमबाटोक। एक दम आर्टफुल। वह तह ब तह मलबूसात ज़ेबतन कर के डांस शुरु करती है। फिर हर गर्दिश पर यह मलबूसात एक ख़ास तकनीक के साथ एक एक करके जिस्म से जुदा होते जाते हैं। रफ़्ता–रफ़्ता लिबास के नाम की एक धज्जी भी उसके बदन पर बाक़ी नहीं रहती और कमाल यह है कि लिबास को तन से जुदा करने के इस तदरीजी अमल में वह अपने हाथ बिल्कुल इस्तेमाल नहीं करती।"

आपका मतलब शायद यह है कि बहुत ज़रुरी ही लिबास उसके बदन पर बाक़ी रह जाता होगा? लड़की बोली।

"नो बेबी...... ज़रुरी का लफ़्ज़ इस मौक़े पर बे महल है ज़रुरत तो एक इज़ाफ़ी[1] शय है। हम जाड़े में क़ोट और चेस्टर पहनते हैं लेकिन गर्मियों में बुश शर्ट ही ज़रुरत का मफ़हूम पूरा कर देती है इसी तरह आर्ट और फ़न के दायरे में ज़रुरत का मेयार हमारी आम ज़िन्दगी से मुख़्तलिफ़ है। क्या तुमने एलोरा और अजन्ता वग़ैरह की नक़्क़ाशी और आर्ट का हाल नहीं पढ़ा। वहाँ सच्चाइयाँ बिल्कुल बे नक़ाब हैं। आर्ट ज़िन्दगी के सादा और फ़ितरी रुख़ का तर्जुमान होता है उसे मसनुई[2] लिबासों और परदों में मुक़य्यद करना वहशियाना तंगदिली है। तुम देखो कि एज़ोबीला लिबास की मसनुई क़ैद से निकल एक मोक़द्दस[3] और नूरानी अप्सरा की शक्ल अख़्तियार कर लेती है। उसके एक एक मूए–बदन[4] से किरणें सी फूटती हैं और तमाशाई कुछ देर के लिए रंगीन क़ौसे–क़ज़ह की उन हसीन फ़िज़ाओं में उड़ जाते हैं जहाँ फ़ितरत अपने बिल्कुल हक़ीक़ी और सादा रंग में जलवागर है।"

लड़की ख़ामोशी से मास्टर साहब का मुँह तकती रही। उस ने उसी नौअ[5] के लतीफ़[6] नुक्ते कॉलेज में भी ज़रुर सुने होंगे शायद इसीलिए वह उन पर मबहूत[7] नहीं हो सकी।

---

1. बेकार 2. बनावटी 3. पवित्र 4. जिस्म के बाल 5. तरह
6. नाज़ुक 7. आश्चर्यचकित

"تم یہ سن کر خوش ہوگی کہ یہ فلم اگلے سنڈے کو تمہارے ہی شہر میں دیکھی جاسکتی ہے۔"

"کس ہال میں؟" لڑکی نے بے ساختہ پوچھا۔

"ہال میں نہیں۔ ہمارے ملک کے جاہل و پس ماندہ عوام ابھی ضبطِ نفس اور خودی کے میدان میں اتنے آگے نہیں بڑھ سکے کہ اس طرح کی فلمیں عام سینماؤں میں دکھائی جاسکیں۔ اس کی نمائش ریمبو نائٹ کلب کے اسٹیڈیم میں مخصوص اجازت کے تحت مخصوص لوگوں کے لیے ہوگی۔"

"پھر؟ ہماری پہنچ وہاں کیسے ہوگی۔"

"اس کی فکر مت کرو۔ ریمبو والوں سے میرے ذاتی تعلقات ہیں۔ سنڈے کو میں تمہارے یہاں پہنچ رہا ہوں امید ہے کہ تمہاری ممی اور ڈیڈی مجھے بھولے نہ ہوں گے۔"

"مگر وہ اس طرح کی فلمیں دیکھنے کی اجازت نہیں دے سکتے۔"

"تم بہت بھولی ہو....." ماسٹر صاحب نے لڑکی کے رخسار پر بڑے پیار سے انگلیوں کا چپت مارتے ہوئے کہا "ہم ان سے یہ کب کہیں گے کہ ہم کون سی پکچر دیکھنے جارہے ہیں......ویسے یہ مت سمجھو کہ تمہارے ڈیڈی آرٹ کے بارے میں تاریک خیال ہیں۔ اسی کلب میں انھوں نے بڑے شوق سے ہالی وڈ کی وہ مشہور فلم دیکھی تھی جس میں دو جاسوس لڑکیوں کو ننگا کر کے کوڑے مارے گئے ہیں۔"

"نہیں!" لڑکی چونکی......"ڈیڈی اتنے نرم دل ہیں کہ ایسا منظر فلم میں بھی دیکھنے کی تاب نہیں لا سکتے۔"

ٹھیک ہے، مگر جب کوڑے مارنے کا آغاز ہوا تھا تو انھوں نے آنکھیں بند کر لی تھیں۔ دونوں جاسوس لڑکیاں ننگی کر کے ستونوں سے باندھ دی جاتی ہیں پھر کئی منٹ تک اسی سیٹ پر کچھ ڈائیلاگ چلتے ہیں اس کے بعد سزا کی ابتدا ہوتی ہے۔"

گاڑی ایک اسٹیشن پر رُک گئی۔ ان کی باتوں کا سلسلہ بھی ٹوٹ گیا کوئی نیا مسافر ڈبے میں داخل نہیں ہوا۔ پھر گاڑی چلی ماسٹر صاحب دفعتاً مجھ سے مخاطب ہوئے۔

तुम यह सुनकर खुश होगी कि यह फ़िल्म अगले संडे को तुम्हारे ही शहर में देखी जा सकती है।"

"किस हॉल में?" लड़की ने बेसाख़्ता पूछा।

"हॉल में नहीं। हमारे मुल्क के जाहिल व पसमांदा आवाम अभी ज़ब्ते नफ़्स[1] और खुदी के मैदान में इतने आगे नहीं बढ़ सके कि इस तरह की फ़िल्में आम सिनेमाओं में दिखाई जा सकें। इसकी नुमाइश रैनबो नाईट क्लब के स्टेडियम में मख़्सूस इजाज़त के तहत मख़्सूस लोगों के लिए होगी।"

"फिर? हमारी पहुँच वहाँ कैसे होगी।"

"इसकी फ़िक्र मत करो। रैनबो वालों से मेरे ज़ाती तअल्लुक़ात हैं। संडे को मैं तुम्हारे यहाँ पहुँच रहा हूँ उम्मीद है कि तुम्हारे मम्मी और डैडी मुझे भूले न होंगे।"

"मगर वह इस तरह की फ़िल्में देखने की इजाज़त नहीं दे सकते।"

"तुम बहुत भोली हो......" मास्टर साहब ने लड़की के रुख़्सार पर बड़े प्यार से उंगलियों का चपत मारते हुए कहा "हम उन से यह कब कहेंगे कि हम कौन सी पिक्चर देखने जा रहे हैं......... वैसे यह मत समझो कि तुम्हारे डैडी आर्ट के बारे में तारीक ख़याल हैं। उसी क्लब में उन्होंने बड़े शौक़ से हॉलीउड की वह मशहूर फ़िल्म देखी थी जिस में दो जासूस लड़कियों को नंगा कर के कोड़े मारे गये हैं।"

"नहीं!" लड़की चौंकी...... "डैडी इतने नरम दिल हैं कि ऐसा मंज़र फ़िल्म में भी देखने की ताब नहीं ला सकते।"

"ठीक है, मगर जब कोड़े मारने का आग़ाज़ हुआ था तो उन्होंने आँखें बन्द कर ली थीं। दोनों जासूस लड़कियाँ नंगी करके सुतूनों[2] से बांध दी जाती हैं फिर कई मिनट तक उसी सेट पर कई डायलॉग चलते हैं उसके बाद सज़ा की इब्तदा होती है।"

गाड़ी एक स्टेशन पर रुक गई। उनकी बातों का सिलसिला भी टूट गया कोई नया मुसाफ़िर डिब्बे में दाख़िल नहीं हुआ। फिर गाड़ी चली मास्टर साहब दफ़अतन मुझसे मुख़ातिब हुए।

1. स्वयं पर काबू रखना 2. खंभों

"مولانا آپ کے پاس ماچس ہوگی؟"

میں چونکا یا یوں کہیئے کہ چونکنے کی ایکٹنگ کی۔

"جی۔ جی ہاں ہوگی ...... مگر آپ کیا جادوگر ہیں؟" میں آنکھیں پھیلا کر حیرت کا مجسمہ بن گیا۔

"جادوگر" انھوں نے سوالیہ نظروں سے مجھے گھورا۔

"اور نہیں تو کیا۔ آپ کو بھلا کیسے معلوم ہوا کہ میں مولانا ہوں؟"

میرے اس سائنٹفک استدلال پر پل بھر کے لیے وہ متحیر ہوئے مگر میرے چہرے سے اس وقت شاید حماقتوں کا فوارہ اُبل رہا تھا۔ ان کا تحیر اگلے ہی لمحے تمسخر آمیز دلچسپی میں بدل گیا، لڑکی کے چہرے پر بھی استہزائی تبسم کھیلنے لگا۔

"اوہ...... دراصل مجھے قیافہ شناسی میں مہارت ہے۔ آپ کی داڑھی سو فیصد ی کسی مولانا ہی کی داڑھی ہوسکتی ہے۔"

"...... اررر" میں نے بوکھلاہٹ کے انداز میں اس طرح داڑھی کو مٹھی میں پکڑا جیسے اس کی موجودگی پر شرمندہ ہوں اب میری حماقت میں چار چاند لگ گئے تھے۔

"تعجب ہے مولانا ......" انھوں نے میرے ہاتھ سے ماچس لیتے ہوئے کہا "آپ آج بھی داڑھی اور برقعے میں یقین رکھتے ہیں۔"

"جی نہیں۔ میں یقین وقین کچھ نہیں رکھتا۔ میرا بس چلے تو ساری داڑھیوں اور برقعوں کو چلم میں رکھ کر پی جاؤں۔ مجھے ایسی لڑکیاں بہت اچھی لگتی ہیں۔" میرا شرمیلا سا اشارہ نرگس کی طرف تھا۔ "مگر یہ ظالم زمانہ یہ سماج یہ یہ قدم قدم پر دیواریں کھڑی کرتا ہے۔"

"یہ آپ کے ساتھ کون ہیں" انھوں نے درمیانی نشست کے پشتے پر جھکتے ہوئے پوچھا۔ ان کی نظریں ملائن کے برقعے پر پھسل رہی تھیں۔

"میری شامت ...... میری پرلے سرے کی دقیانوسی بیوی۔"

انھوں نے ذرا سا مڑ کر نرگس کی طرف دیکھا۔ آنکھوں میں کچھ اشارے ہوئے پھر وہ بڑی لجاجت سے بولے۔

"मौलाना आपके पास माचिस होगी?"

मैं चौंका या यूँ कहिये कि चौंकने की ऐक्टिंग की।

"जी.... जी हाँ होगी.... मगर आप क्या जादूगर हैं?" मैं आँखें फैला कर हैरत का मोजस्समा बन गया।

"जादूगर" उन्होंने सवालिया नज़रों से मुझे घूरा।

"और नहीं तो क्या। आपको भला कैसे मालूम हुआ कि मैं मौलाना हूँ?"

मेरे इस साइंटिफ़िक इस्तदलाल[1] पर पल भर में लिए वह मुतहय्यर[2] हुए मगर मेरे चेहरे से उस वक़्त शायद हिमाक़तों का फ़व्वारा उबल रहा था। उनका तहय्युर अगले ही लम्हे तमस्खुर–आमेज़[3] दिलचस्पी में बदल गया, लड़की के चेहरे पर भी इस्तहज़ाई[4] तबस्सुम खेलने लगा।

"ओह.... दरअसल मुझे क़याफ़ा–शनासी[5] में महारत है। आपकी दाढ़ी सौ फ़ीसदी किसी मौलाना की दाढ़ी हो सकती है।"

"अररर.....", मैंने बौखलाहट के अंदाज़ में इस तरह दाढ़ी को मुट्ठी में पकड़ा जैसे उसकी मौजूदगी पर शर्मिन्दा हूँ अब मेरी हिमाक़त में चार चाँद लग गये थे।

"तअज्जुब है मौलाना......" उन्होंने मेरे हाथ से माचिस लेते हुए कहा "आप आज भी दाढ़ी और बुर्क़े में यक़ीन रखते है।"

"जी नहीं। मैं यक़ीन वक़ीन कुछ नहीं रखता। मेरा बस चले तो सारी दाढ़ियों और बुर्क़ों को चिलम में रख कर पी जाऊँ। मुझे ऐसी लड़कियाँ बहुत अच्छी लगती हैं।" मेरा शर्मिला सा इशारा नर्गिस की तरफ़ था। "मगर यह ज़ालिम ज़माना यह समाज.....यह......यह क़दम–क़दम पर दीवारें खड़ी करता है।"

"यह आपके साथ कौन हैं" उन्होंने दर्मियानी नशिस्त[6] के पुश्ते पर झुकते हुए पूछा। उनकी नज़रें मुल्लाइन के बुर्क़े पर फिसल रही थीं।

"मेरी शामत...... मेरी परले सिरे की दक़्यानूसी बीवी।"

उन्होंने ज़रा सा मुड़ कर नर्गिस की तरफ़ देखा। आँखों में कुछ इशारे हुए फिर वह बड़ी लजाजत से बोले।

---

1. तर्क 2. हैरान 3. व्यंग 4. व्यंग 5. चेहरे को पहचानना 6. बीच की सीट

"آپ دلچسپ آدمی ہیں۔ اگر اجازت ہو تو ہم اِدھر آجائیں؟" ان کا مطلب درمیان کی خالی سیٹ سے تھا۔

"جی ہاں شوق سے......

اس وقت ملائن نے ایسی خونخوار نظروں سے مجھے گھورا تھا جن کی قہرمانی نقاب کی جالی پھاڑے دے رہی تھی۔ گھٹنے کا ایک ٹھوکا بھی میری کوکھ میں لگا تھا، لیکن اتنے ہی میں وہ دونوں پاس کی سیٹ پر آچکے تھے۔ ملائن اور بھی کونے میں سمٹ گئی اس کا بس چلتا تو اس وقت مجھے کچا ہی چبا جاتی۔ کم سے کم زبان کے تیر تو ضرور چلاتی۔ لیکن خدا بھلا کرے مولٰنا اشرف علیؒ کا ان کی کسی کتاب میں اس نے پڑھ لیا ہے کہ عورت کی آواز بھی عورت ہی ہے پس غالباً اسی لیے ایک اجنبی مرد کی موجودگی میں زبان نہیں کھول سکتی تھی۔

"بات یہ ہے مولانا۔ فرسودہ اور تنگ نظر سماج کے خلاف مردانہ وار بغاوت کیے بغیر ہم اونچے نہیں اُٹھ سکتے۔ ہم دونوں آپ ہی کی طرح مسلمان ہیں۔ ہمیں اسلام کی صداقت پر اٹل یقین ہے۔ لیکن اسلام کو بات بات میں گھسیٹ کر لانا مذہب کی توہین ہے۔ مذہب مسجد اور مندر کے دائرے کی چیز ہے۔ اسے وہیں رہنا چاہیے۔ زمانہ ہم سے ہمہ گیر انسانی قدروں کا مطالبہ کر رہا ہے۔" ماسٹر صاحب کا لہجہ بڑا وزن دار تھا۔

"بالکل بالکل......" میں نے زوردار تائید کی "قدریں اور تہذیب اور قیامت...... نہ وہ ثقافت وغیرہ کے الفاظ مجھے بہت اچھے لگتے ہیں مگر میری مشکل یہ ہے ماسٹر صاحب کہ بازار میں کوئی ایسی کتاب نہیں ملتی جس میں نئی تہذیب کے بنیادی اصول و قواعد درج کر دیئے گئے ہوں۔ میں انھیں سیکھنا چاہتا ہوں۔"

وہ مسکرائے ارے یہ کونسی مشکل ہے۔ سب سے پہلا اور اہم اصول تو یہی ہے کہ دقیانوسی اخلاقی تصورات کو ذہن سے جھٹک دیجیے۔ یہ عورت غریب کو جانوروں کی طرح باندھ کر رکھنا، یہ پردہ، یہ داڑھی ان سب چیزوں کے بارے میں مہذب ممالک کا عمل آپ کے سامنے ہے۔ عورت اور مرد کو شاید قرآن میں بھی ایک دوسرے کا لباس کہا گیا ہے۔ پھر یہ کہاں کی شرافت ہوگی کہ ان دونوں کے خلا ملا پابندیاں لگائی جائیں۔"

"आप दिलचस्प आदमी हैं। अगर इजाज़त हो तो हम इधर आ जायें?" उनका मतलब दरमियानी ख़ाली सीट से था।

"जी हाँ शौक़ से......"

उस वक़्त मुल्लाइन ने ऐसी ख़ूँख़ार नज़रों से मुझे घूरा था कि क़हरमानी नक़ाब की जाली फाड़े दे रही थी। घुटने का एक ठोका मेरी कोख में लगा था, लेकिन इतने ही में वह दोनों पास की सीट पर आ चुके थे। मुल्लाइन और भी कोने में सिमट गई उसका बस चलता तो उस वक़्त मुझे कच्चा ही चबा जाती। कम से कम ज़बान के तीर तो ज़रुर चलाती। लेकिन खुदा भला करे मौलाना अशरफ़ अली का उनकी किसी किताब में उसने पढ़ लिया कि औरत की आवाज़ भी औरत ही है पस ग़ालेबन इसी लिए एक अजनबी मर्द की मौजूदगी में ज़बान नहीं खोल सकती थी।

"बात यह है मौलाना। फ़रसूदा और तंग नज़र समाज के ख़िलाफ़ मर्दानावार बग़ावत किये बग़ैर हम ऊँचे नहीं उठ सकते। हम दोनों आप ही की तरह मुसलमान हैं। हमें इस्लाम की सदाक़त[1] पर अटल यक़ीन है। लेकिन इस्लाम को बात–बात में घसीट कर लाना मज़हब की तौहीन है। मज़हब मस्जिद और मंदिर के दायरे की चीज़ है। उसे वहीं रहना चाहिये। ज़माना हम से हमागीर इन्सानी क़द्रों का मोतालबा कर रहा है।" मास्टर साहब का लहजा बड़ा वज़नदार था।

"बिल्कुल बिल्कुल....." मैंने ज़ोरदार ताईद की "क़दरें और तहज़ीब और क़यामत...... न वह सक़ाफ़त वग़ैरह के अल्फ़ाज़ मुझे अच्छे लगते हैं मगर मेरी मुश्किल यह है मास्टर साहब कि बाज़ार में कोई ऐसी किताब नहीं मिलती जिसमें नई तहज़ीब के बुनियादी उसूलो–क़वायद दर्ज कर दिये गये हों। मैं उन्हें सीखना चाहता हूँ।"

वह मुस्कुराये....... अरे यह कौन सी मुश्किल है। सब से पहला और अहम उसूल तो यही है कि दक़ियानूसी अख़्लाक़ी तसव्वुरात को ज़ेहन से झटक दीजिये। यह औरत ग़रीब को जानवरों की तरह बांध कर रखना, यह दाढ़ी इन सब चीज़ों के बारे में मुहज़्ज़ब मुमालिक का अमल आपके सामने है। औरत और मर्द को शायद क़ुरआन में भी एक दूसरे का लिबास कहा गया है। फिर यह कहाँ की शराफ़त होगी कि इन दोनों के ख़लामला पाबंदियाँ लगाई जायें।"

1. सच्चाई

"ٹھیک ہے جناب" میں خود بھی بارہا اس طرح سوچتا ہوں مگر ماسٹر صاحب ہمارا دقیانوسی سماج تو قدم قدم پر روڑے اٹکاتا ہے۔"

"سماج کے ٹھوکر مار دیجیے۔"

"ماری تھی ماسٹر صاحب۔ مگر اپنا ہی انگوٹھا ٹوٹ گیا۔ ظالم سماج کا کچھ نہیں بگڑا۔"

نرگس کھلکھلا کر ہنسی۔ ماسٹر بھی مسکرائے

"آپ کا مطلب؟" انھوں نے سوال کیا۔

"اب کیا بتاؤں ماسٹر صاحب۔ میری ایک خالہ زاد بھتیجی ہے وہ مجھے بہت اچھی لگتی ہے۔ ایک مرتبہ ہم دونوں سینما چلے گئے تھے وہاں ہمیں ایک گانا بہت پسند آیا جو ہیروئن نے گایا تھا ایک دن اس کے سب گھر والے کہیں گئے ہوئے تھے تو ہم دونوں نے اسی گانے کی نقل شروع کر دی۔ اتنے میں اس کا بڑا بھائی آ گیا اسے بڑا غصہ آیا۔ میں نے کہا غصہ مت کرو ہم تو فقط نقل کر رہے ہیں۔ اس پر اس نے ایک بڑی خراب بات کہی۔ پھر وہ طیش میں آ کر اپنی بہن کی طرح بڑھا۔ میں نے اس موقع پر فلم "پھول رہی سرسوں" کا ایک مکالمہ دہرا دیا...... "ظالم! تو ہمیں مار بھی ڈالے تو ہماری محبت مرنے والی نہیں۔ ہمارے خون کے ایک ایک قطرے سے ہمیشہ یہی آواز آتی رہے گی کہ محبت امر ہے محبت امر ہے۔"

اس مکالمہ کو سن کر وہ آگ بگولا ہو گیا اور پھر مجھے نہیں معلوم کتنے چانٹے اور مکے اس نے میرے رسید کیے ہیں۔ بہت پٹ جانے کے بعد میں نے بے خیالی میں اس کے ایک گھونسہ رسید کر دیا۔ اس کے نتیجے میں اس کے سارے دانت باہر آ گئے اور پھر عدالت سے مجھے ایک مہینے کی سزا ہوئی۔"

وہ دونوں ہنسے۔

"وہ آپ کی خالہ زاد بھتیجی کا بھائی یقیناً جاہل اور گنوار ہوگا۔" ماسٹر صاحب نے اس انداز میں کہا جیسے وہ سچ مچ میرے بھی ماسٹر ہوں "مہذب لوگوں میں رومانس اور ذاتی معاملات میں اس تنگدلی کا کوئی وجود نہیں۔ آخر آپ خود سوچیے، انسان کے فطری

"ठीक है जनाब" मैं ख़ुद भी बारहा इस तरह सोचता हूँ...... मगर मास्टर साहब हमारा दकियानूसी समाज तो क़दम क़दम पर रोड़े अटकाता है।"

"समाज को ठोकर मार दीजिये।"

"मारी थी मास्टर साहब। मगर अपना ही अंगूठा टूट गया। ज़ालिम समाज का कुछ नहीं बिगड़ा।"

नर्गिस खिलखिला कर हंसी। मास्टर भी मुस्कुराये।

"आपका मतलब?" उन्होंने सवाल किया।

"अब क्या बताऊँ मास्टर साहब। मेरी एक ख़ालाज़ाद भतीजी है वह मुझे बहुत अच्छी लगती है। एक मर्तबा हम लोग सिनेमा देखने चले गये वहाँ हमें एक गाना बहुत पसंद आया जो हीरोइन ने गाया था। एक दिन उसके सब घर वाले कहीं गये हुए थे तो हम दोनों ने उसी गाने की नक़ल शुरु कर दी। इतने में उसका बड़ा भाई आ गया। उसे बड़ा गुस्सा आया। मैंने कहा गुस्सा मत करो हम तो फ़क़त नक़ल कर रहे हैं। इस पर उसने एक बड़ी ख़राब बात कही। फिर वह तैश में आकर अपनी बहन की तरफ़ बढ़ा। मैंने इस मौक़े पर फ़िल्म "फूल रही सरसों" का एक मोकालमा[1] दोहराया..... "ज़ालिम तू हमें मार भी डाले तो हमारी मोहब्बत मरने वाली नहीं। हमारे ख़ून के एक एक क़तरे से हमेशा यही आवाज़ आती रहेगी कि मोहब्बत अमर है मोहब्बत अमर है।"

"इस मोकालमे को सुनकर वह आग बगूला हो गया और फिर मुझे नहीं मालूम कितने चाँटे और मुक्के उसने मेरे रसीद किये हैं। बहुत पिट जाने के बाद मैंने बेख़याली में उसके घूंसा रसीद कर दिया। उसके नतीजे में उसके सारे दाँत बाहर आ गये और फिर अदालत से मुझे एक महीने की सज़ा हुई।"

"वह आपकी ख़ालाज़ाद भतीजी का भाई यक़ीनन जाहिल और गंवार होगा।" मास्टर साहब ने इस अंदाज़ में कहा जैसे वह सचमुच मेरे भी मास्टर हों "मोहज़्ज़ब लोगों में रोमांस और ज़ाती मामलात में इस तंगदिली का कोई वजूद नहीं। आख़िर आप ख़ुद सोचिये, इन्सान के फ़ितरी तक़ाज़ों

1. संवाद

تقاضوں کے بہاؤ کو روکنا اعصاب کے لیے کس قدر مضر ہوگا۔ نئی تہذیب انسان کو اس کے پیدائشی حقوق دیتی ہے، آزادی دیتی ہے۔ دنیا کی لذتوں سے لطف اندوز ہونے کا موقع دیتی ہے۔"

"زندہ باد زندہ باد" میں احمقوں کی طرح لہرایا "آپ جیسا مہذب آدمی آج پہلی بار مجھے ملا ہے جی ہاں میں اب سماج سے بغاوت کروں گا۔ فرسودہ اخلاق سے بغاوت کروں گا۔"

"یقیناً کیجیے...... میں مشورہ دوں گا کہ اس کی ابتداء اسی وقت سے ہو جائے۔"

یہ کہتے ہوئے ماسٹر صاحب نے ملائن کے برقعہ پر شاید بیسیوں بار نظر ڈالی تھی۔

"کیوں نرگس کیا تم بھی مولٰنا کو یہی مشہورہ نہیں دو گی؟"

"ہاں مولانا۔ ہم سبھی کو مل جل کر تہذیب و تمدّن کی زلفیں سنوارنی ہیں۔ مجھے دیکھیے۔ اکیلی سفر کر رہی ہوں۔ کون میرا کیا بگاڑ لے گا۔"

"میں...... میں آپ ہی کو دیکھ رہا ہوں مس نرگس...... یہ آپ کے بازو کتنے دل کش ہیں۔" یہ کہتے کہتے میں نے اس کے عریاں بازو کو انگلیوں سے چھوا۔ وہ چمک گئی۔ ماسٹر صاحب نے بھی بُرا سا منہ بنایا۔

"یہ آپ کیا کرتے ہیں......" نرگس منمنائی۔

"کیا کرتا ہوں" میں نے حیرت سے آنکھیں چوڑائیں۔ "آپ لوگ جو کچھ تعلیم دے رہے ہیں اسی پر عمل شروع کرتا ہوں۔ کیا...... کیا مجھ سے آپ کا مفہوم سمجھنے میں غلطی ہوئی؟"

"نہیں نہیں" ماسٹر صاحب نے دوستانہ لہجے میں کہا "سمجھنے میں آپ نے غلطی نہیں کی۔ منشاء یہ ہے کہ نئی تہذیب میں بھی بے تکلفی کے کچھ مراتب ہیں جن میں تدریج کو ملحوظ رکھنا ضروری ہوتا ہے۔ ابھی آپ اور مس نرگس میں بے تکلفی نہیں ہے۔"

"ہو جائے گی۔ ابھی میں ان سے پیار کی میٹھی میٹھی باتیں کروں گا تو ہو جائے گی ویسے میں نے سنا ہے کلبوں اور بال رُوموں میں نئے نئے مرد نئی نئی عورتوں کے بازو میں بازو ڈال کر ڈانس کرتے ہیں۔ ابھی آپ ہی فرما رہے تھے کہ فطری تقاضوں کے

के बहाव को रोकना आसाब के लिए किस कद्र मुज़िर[1] होगा। नयी तहज़ीब इन्सान को उसके पैदाइशी हुकूक़ देती है, आज़ादी देती है। दुनिया की लज़्ज़तों से लुत्फ़अंदोज़ होने का मौक़ा देती है।"

"ज़िन्दाबाद ज़िन्दाबाद" मैं अहमक़ों की तरह लहराया "आप जैसा मोहज़्ज़ब आदमी आज पहली बार मुझे मिला है। जी हाँ मैं अब समाज से बग़ावत करुँगा। फ़र्सूदा अख़लाक़ से बग़ावत करुँगा।"

"यक़ीनन कीजिये..... मैं मश्वरा दूँगा कि इसकी इब्तदा इसी वक़्त से हो जाये।" यह कहते हुए मास्टर साहब ने मुल्लाइन के बुर्क़े पर शायद बीसियों बार नज़र डाली थी।

"क्यों नर्गिस क्या तुम भी मौलाना को यही मश्वरा नहीं दोगी?"

"हाँ मौलाना। हम सभी को मिल जुल कर तहज़ीबो–तमद्दुन की जुल्फ़ें संवारनी हैं। मुझे देखिये। अकेली सफ़र कर रही हूँ। कौन मेरा क्या बिगाड़ लेगा।"

"मैं...... मैं आप ही को देख रहा हूँ मिस नर्गिस..... यह आपके बाज़ू कितने दिलकश हैं।" यह कहते कहते मैंने उसके उरयाँ बाज़ू को उंगलियों से छुआ। वह चमक गई। मास्टर साहब ने भी बुरा सा मुँह बनाया। "यह आप क्या करते हैं......" नर्गिस मिनमिनाई।

"क्या करता हूँ" मैंने हैरत से आँखें चौड़ाईं। "आप लोग जो कुछ तालीम दे रहे हैं उसी पर अमल शुरु करता हूँ। क्या..... क्या मुझ से आपका मफ़हूम समझने में ग़लती हुई?"

"नहीं नहीं" मास्टर साहब ने दोस्ताना लहजे में कहा "समझने में आपने ग़लती नहीं की। मन्शा यह है कि नई तहज़ीब में भी बेतकल्लुफ़ी के कुछ मरातिब हैं जिन में तदरीज[2] को मलहूज़ रखना जरुरी होता है। अभी आप और मिस नर्गिस में बेतकल्लुफ़ी नहीं है।"

"हो जायेगी। अभी मैं उनसे प्यार की मीठी मीठी बातें करुँगा तो हो जायेगी वैसे मैंने सुना है क्लबों और बॉल रुमों में नये–नये मर्द नई–नई औरतों के साथ बाज़ू में बाज़ू डाल कर डांस करते हैं। अभी आप ही फ़रमा रहे थे कि फ़ितरी तक़ाज़ों के बहाव को रोकना आसाब का सत्यानास कर

1. हानिकारक 2. क्रम

بھاؤ کور و کتنا اعصاب کا ستیاناس کر دیتا ہے۔"

انھوں نے تشویشناک نظروں سے مجھے گھورا۔ شاید وہ اپنی اس رائے پر نظر ثانی کرنا چاہتے تھے جو انھوں نے میرے بارے میں قائم کی تھی۔ میرے چہرے پر اب بھی سنجیدگی نہیں تھی شاید حماقت ہی کے طوفان اُمنڈ رہے تھے۔

"آپ لوگ عجیب ہیں۔" میں نے حیرت کے انداز میں کہا "ابھی تو فرسودہ اخلاق اور ظالم سماج سے بغاوت کا درس دے رہے تھے۔ کیا اس کا مطلب صرف اتنا ہی تھا کہ مجھے اپنی داڑھی مونڈ کر بیوی کا برقعہ نوچ ڈالنا چاہیے۔"

انھوں نے الجھن بھری نظروں سے ایک دوسرے کی طرف دیکھا۔

"مس نرگس!" میں لہرایا "آپ سوچیے یہ مَردوں کے صبر و ضبط کو چیلنج دینے والا چست اور نیم عریاں لباس آپ نے کیوں پہنا ہے۔ یہ چہرے پر غازے اور سُرخی کا لیپ کیوں ہے۔ یہ آپ کے بدن سے سینٹ کی بھینی بھینی خوشبوں کیوں آ رہی ہے......اور ماسٹر صاحب آپ بھی سوچیے جب آپ جیسا روشن خیال انگلیوں کا فقط لمس بھی اپنی شاگردہ کے بازوؤں پر برداشت نہیں کر سکا حالاں کہ یہ بازو اسی لیے برہنہ کیے گئے ہیں کہ دیکھنے والے ان سے بقدر ظرف استفادہ کر سکیں۔ تو بتایئے اس غریب بھائی کو جاہل اور گاؤدی کہنے کا آپ کو کیا حق ہے جس نے فلمی گانے کی نقل برداست نہیں کی تھی۔"

"آپ نہایت چارسوبیس معلوم ہوتے ہیں۔" ماسٹر صاحب بھنا گئے "شرم نہیں آتی داڑھی لگا کر ایسی باتیں کرتے۔"

"شرم ایک اضافی چیز ہے ماسٹر صاحب۔ آپ کو مس نرگس کے ساتھ ایزو بیلا کا ننگا ناچ دیکھتے ہوئے شرم نہیں آئے گی تو میں آخر داڑھی پر کیوں شرماؤں۔ معاف کیجیے گا سماج کے جتنے بھی دشمن آج تک مجھے ملے ہیں وہ سب آپ ہی کی طرح نازک مزاج تھے۔ ان کی بھی یہی خواہش تھی کہ میں اپنی بیوی کا برقعہ نوچ پھینکوں...... لیکن جب وہی حق میں نے استعمال کرنا چاہا جو وہ خود استعمال کرنا چاہتے تھے تو وہ بکھر گئے۔ مرنے مارنے پر تُل گئے۔ کیا یہ بھی نئی تہذیب کا کوئی بنیادی قاعدہ ہے؟"

"آپ تاریک خیال ہیں، عیاش ہیں، خود غرض ہیں۔" ان کی آواز میں

देता है।"

उन्होंने तश्वीशनाक नज़रों से मुझे घूरा। शायद वह अपनी इस राय पर नज़रेसानी करना चाहते थे जो उन्होंने मेरे बारे में क़ायम की थी। मेरे चेहरे पर अब संजीदगी नहीं थी शायद हिमाकत ही के तूफ़ान उमंड रहे थे।

"आप लोग अजीब हैं।" मैंने हैरत के अन्दाज़ में कहा "अभी तो फ़रसूदा अख़लाक़ और ज़ालिम समाज से बग़ावत का दर्स दे रहे थे। क्या इसका मतलब सिर्फ़ इतना ही था कि मुझे अपनी दाढ़ी मूंड कर बीवी का बुर्क़ा नोच डालना चाहिये।"

उन्होंने उलझन भरी नज़रों से एक दूसरे की तरफ़ देखा। "मिस नर्गिस!" मैं लहराया "आप सोचिये यह मर्दों के सब्रो–ज़ब्त को चैलेन्ज देने वाला चुस्त और नीम–उरयाँ लिबास आपने क्यों पहना है। यह चेहरे पर ग़ाज़े और सुर्ख़ी का लेप क्यों है। यह आपके बदन से सेंट की भीनी भीनी खुशबू क्यों आ रही है..... और मास्टर साहब आप भी सोचिये जब आप जैसा रौशन ख़याल उंगलियों का फ़क़त लम्स भी अपनी शागिर्दा के बाज़ूओं पर बर्दाश्त नहीं कर सका..... हालाँकि यह बाज़ू इसी लिए बरहना किये गये हैं कि देखने वाले इन से बक़द्र इस्तफ़ादा कर सकें। तो बताइये उस ग़रीब भाई को जाहिल और गाउदी कहने का आपको क्या हक़ है जिस ने फ़िल्मी गाने की नक़ल बर्दाश्त नहीं की थी।"

"आप निहायत चार सौ बीस मालूम होते हैं" मास्टर साहब भन्ना गये "शर्म नहीं आती दाढ़ी लगा कर ऐसी बातें करते हैं।"

"शर्म एक इज़ाफ़ी चीज़ है मास्टर साहब। आपको मिस नर्गिस के साथ एर्ज़ोंबेला का नंगा नाच देखते हुए शर्म नहीं आयेगी तो मैं दाढ़ी पर क्यों शर्माऊँ। माफ़ कीजिये गा समाज के जितने भी दुश्मन आज तक मुझे मिले हैं वह सब आप ही की तरह नाज़ुक मिजाज़ थे। उनकी भी यही ख़्वाहिश थी कि मैं अपनी बीवी का बुर्क़ा नोंच फेंकूँ..... लेकिन जब वही हक़ मैं इस्तेमाल करना चाहा जो वह खुद इस्तेमाल करना चाहते थे तो वह बिखर गये। मरने मारने पर तुल गये। क्या यह भी नई तहज़ीब का कोई बुनियादी क़ायदा है?"

"आप तारीक ख़याल हैं, अय्याश हैं, खुद गर्ज़ हैं।" उनकी आवाज़

شعلے لپک رہے تھے چہرہ مارے تاؤ کے لمبوترا ہو گیا تھا۔

"کمال ہے صاحب" میں استعجاب کی شان قائم رکھتے ہوئے بڑبڑایا "آپ ایک ہی چیز کو سیاہ بھی کہہ رہے ہیں اور سفید بھی۔ عیاشی تو نئی تہذیب کا پہلا سنگ بنیاد ہے پھر اسے آپ تاریک خیالی کیسے کہہ سکتے ہیں۔"

ان کے چہرے پر ایسے آثار تھے کہ شاید ہاتھ چھوڑ دیں۔ مگر مجھے کوئی فکر نہیں تھا کیوں کہ ان کے بازوؤں کا کس بل میں پہلے ہی تول چکا تھا۔ بہت ہوتا تو بس یہ ہوتا کہ پہلے ہی وہلے میں وہ ایک دو ہاتھ رسید کر جاتے مگر اس کے بعد انھیں سانس لینے کی مہلت بھی شاید ہی ملتی دفعتاً وہ دونوں یہاں سے اُٹھ کر اپنی پہلی جگہ جا بیٹھے۔

"ڈیر ماسٹر صاحب میری ماچس؟" میں مسکرایا۔

انھوں نے بوکھلا کر ماچس جیب سے نکالی اور میری طرف پھینک دی "آپ خفا ہو گئے جناب" میں نے لجاجت سے کہا "حالاں کہ فدوی تو آپ کی شاگردی پر ہمہ تن آمادہ ہے۔"

"شٹ اپ" وہ تڑخے "خواتین کی موجودگی میں لڑائی بھڑائی شائستگی کے خلاف ہے ورنہ ورنہ "

"ہاں ہاں ورنہ کیا...... آپ پسند کریں تو میری بیوی اور مس نرگس بیت الخلا میں چلی جائیں گی۔ پھر آپ مجھے کھڑکی سے باہر پھینک دیجیے گا۔"

چوپ رہو "وہ حلق کے بل چیخے۔ نرگس کی آنکھوں میں خوف جھانک رہا تھا۔ ملائن کا ٹمپریچر شاید ایک سو دس ہو، وہ کئی بار کہنی اور گھٹنے کی زبان سے مجھے خاموشی اختیار کرنے کا حکم دے چکی تھی۔ مگر دیوانگی کی اس رو کو میں کیا کرتا جو کبھی کبھی میری کھوپڑی میں کالی ناگن کی طرح لہراتی ہے۔ مرا دل چاہ رہا تھا کہ کم سے کم ایک ٹکر ماسٹر صاحب سے ضرور ہو اور میں انھیں یہ نکتہ سمجھا سکوں کی جبڑے پر پڑے ہوئے ایک فولادی گھونسے سے بڑھ کر سچا آرٹ کوئی نہیں۔

لیکن گاڑی ایک اسٹیشن پر رُکی اور وہ دونوں اُتر گئے، اُتر کر وہ کسی دوسرے کمپارٹمنٹ میں جا بیٹھے ہوں گے۔ ایک سکنڈ کلاس اس گاڑی میں اور بھی تھا شاید اسی لیے

में शोले लपक रहे थे चेहरा मारे ताव के लम्बूतरा हो गया था।

"कमाल है साहब" मैं इस्तेजाब[1] की शान क़ायम रखते हुए बड़बड़ाया "आप एक ही चीज़ को सियाह भी कह रहे हैं और सफ़ेद भी। अय्याशी तो नई तहज़ीब का पहला संगे-बुनियाद है फिर उसे आप तारीक ख़याली कैसे कह सकते हैं।"

उनके चेहरे पर ऐसे आसार थे कि शायद हाथ छोड़ दें। मगर मुझे कोई फ़िक्र नहीं थी क्योंकि उनके बाजुओं का कस बल मैं पहले ही तौल चुका था। बहुत होता तो बस यह होता कि पहले ही वहले में वह एक दो हाथ रसीद कर जाते मगर उसके बाद उन्हें सांस लेने की मोहलत भी शायद ही मिलती दफ़अतन वह दोनों यहाँ से उठ कर अपनी पहली जगह जा बैठे।

"डियर मास्टर साहब मेरी माचिस?" मैं मुस्कुराया।

उन्होंने बौखला कर माचिस जेब से निकाली और मेरी तरफ़ फेंक दी "आप ख़फ़ा हो गये जनाब" मैंने लजाजत से कहा "हालाँकि फ़िदवी तो आपकी शगिर्दी पर हमा-तन आमादा है।"

"शटअप" वह तड़खे "ख़वातीन का मौजूदगी में लड़ाई भिड़ाई शाइस्तगी के ख़िलाफ़ है वरना....... वरना......"

"हाँ हाँ वरना क्या..... आप पसंद करें तो मेरी बीवी और मिस नर्गिस बैतुलख़ला में चली जायें। फिर आप मुझे खिड़की से बाहर फेंक दीजिये गा।"

चुप रहो "वह हलक़ के बल चीख़े। नर्गिस की आँखों में ख़ौफ़ झाँक रहा था। मुल्लाइन का टेम्परेचर शायद एक सौ दस हो, वह कई बार कुहनी और घुटने की ज़बान से मुझे ख़ामोशी अख़्तियार करने का हुक्म दे चुकी थी। मगर दीवानगी की इस रौ को मैं क्या करता जो कभी कभी मेरी खोपड़ी में काली नागिन की तरह लहराती है। मेरा दिल चाह रहा था कि कम से कम एक टक्कर मास्टर साहब से ज़रुर हो और मैं उन्हें यह नुक्ता समझा सकूँ कि जबड़े पर पड़े हुए एक फ़ौलादी घूंसे से बढ़कर सच्चा आर्ट कोई नहीं।

लेकिन गाड़ी एक स्टेशन पर रुकी और वह दोनों उतर गये, उतर कर वह किसी दूसरे कम्पार्टमेंट में जा बैठे होंगे। एक सेकेंड क्लास इस गाड़ी में और भी था शायद इसी लिए नये मुसाफ़िर इधर आ भी नहीं रहे थे।

1. हैरानी

نئے مسافر ادھر آ بھی نہیں رہے تھے۔
اب ملائن کا گھٹا ہوا طوفان اُبلا۔ گاڑی چلتے ہی اس نے نقاب اُلٹ دیا آنکھیں شعلے برسا رہی تھیں۔ رخسار لال بھبوکا تھے۔
ہائے میرے اللہ۔ آپ کا دماغ آخر کس قسم کا ہے۔ نوج ایسا غیر ذمہ دار کوئی ہو۔"
"پرواہ مت کرو میں اپنے دماغ سے خود عاجز ہوں۔"
"اب اگر وہ ماسٹر پولیس کو بلا لایا تو؟"
"ہم دونوں جیل جائیں گے۔ وہاں مفت کی روٹیاں توڑا کریں گے۔"
"خدا کے لیے سنجیدگی اختیار کیجیے میرا تو دل سینے سے نکلا جا رہا ہے۔"
"ہائیں...... یعنی جانتی ہو اس کا کیا مطلب ہوتا ہے۔"
"بھاڑ میں گیا مطلب۔ مجھے خبر ہوتی تو کبھی بھی آپ کے ساتھ سفر نہ کرتی...... دیکھ لیجیے گا اگلے اسٹیشن پر پولیس ضرور آئے گی۔"
"بلا سے آئے۔ میں تمہارے سوا دنیا میں کسی سے نہیں ڈرتا۔ تمہاری ہی وجہ سے تمہارے بھیا کا بھی رعب مانتا ہوں۔"
"وہی بلا وجہ کی باتیں۔ اللہ ہی ہے جو آج عزت رہ جائے۔"
"عزت اور ذلت تو ہمیشہ سے اللہ ہی کے قبضے میں ہے بھاگوان سچ جانو وہ دونوں خود ڈر رہے ہوں گے کہ کہیں میں پولیس کو نہ بلاؤں۔"
"کیوں"
شاگردہ کو ننگا ناچ دکھانے کا پروگرام بنانا ابھی ہمارے پس ماندہ ملک میں لائق دست اندازی پولیس ہوسکتا ہے۔ حالاں کہ داڑھی اور برقعہ ابھی تک جرم نہیں ہیں۔"
وہ تو یہ رپورٹ کریں گے کہ آپ نے لڑکی پر دست درازی کی تھی۔"
"ہرگز نہیں کریں گے۔ انھیں کسی بکھیڑے میں پڑنے کی فرصت کہاں ہے۔ بہت ممکن ہے وہ اپنے اپنے اسٹیشنوں تک سفر کرنے کے بجائے قریب ہی کے کسی جنکشن پر اُتر جائیں۔ ماسٹر شاگردہ کو سمجھائے گا کہ ڈیرے بی بی یہ مولٰنا نہایت خبیث قسم کا انسان معلوم

अब मुल्लाइन का घुटा हुआ तूफ़ान उबला। गाड़ी चलते ही उसने नक़ाब उलट दिया। आँखे शोले बरसा रही थीं। रुख़सार लाल भबूका थे।

"हाय मेरे अल्लाह। आपका दिमाग़ आख़िर किस किस्म का है। नौज ऐसा ग़ैर ज़िम्मेदार कोई न हो।"

"परवा मत करो मैं अपने दिमाग से खुद आजिज़ हूँ।"

"अब अगर वह मास्टर पुलिस को बुला लाया तो"

"हम दोनों जेल जायेंगे। वहाँ मुफ़्त की रोटियाँ तोड़ा करेंगे।"

"खुदा के लिए संजीदगी अख़्तियार कीजिये मेरा तो दिल सीने से निकला जा रहा है।"

"हायँ..... यानी जानती हो इसका क्या मतलब होता है।"

"भाड़ में गया मतलब। मुझे ख़बर होती तो कभी भी आप के साथ सफ़र न करती...... देख लीजियेगा अगले स्टेशन पर पुलिस ज़रुर आयेगी।"

"बला से आये। मैं तुम्हारे सिवा दुनिया में किसी से नहीं डरता। तुम्हारी ही वजह से तुम्हारे भैय्या का भी रोब मानता हूँ।"

"वही बिला वजह बातें। अल्लाह ही है जो आज इज़्ज़त रह जाये।"

"इज़्ज़त और ज़िल्लत तो हमेशा से अल्लाह के ही कब्ज़े में है भागवान सच जानो वह दोनों खुद डर रहे होंगे कि कहीं मैं पुलिस न बुलाऊँ।"

"क्यों"

शागिर्दा को नंगा नाच दिखाने का प्रोग्राम बनाना अभी हमारे पसमान्दा मुल्क में लायक़े दस्त अंदाज़ी पुलिस हो सकता है। हालाँकि दाढ़ी और बुर्क़ा अभी तक जुर्म नहीं है।"

वह तो यह रिपोर्ट करेंगे कि आपने लड़की पर दस्त दराज़ी की थी।"

"हरगिज़ नहीं करेंगे। उन्हें किसी बखेड़े में पड़ने की फ़ुर्सत कहाँ है। बहुत मुमकिन है वह अपने अपने स्टेशनों तक सफ़र करने के बजाय क़रीब ही के किसी जंकशन पर उतर जायें। मास्टर शागिर्दा को समझायेगा कि डियर बेबी यह मौलाना निहायत ख़बीस किस्म का इन्सान मालूम होता

ہوتا ہے پتا نہیں کیا جھگڑا کھڑا کردے آؤ ہم گاڑی چھوڑ کر شہر چلیں۔ وہاں پکچر دیکھیں گے اور پھر کسی اور گاڑی سے سفر کریں گے۔"

"آپ کا دماغ تو ہر وقت آسمانوں میں اُڑتا رہتا ہے۔ میں نے تو کان پکڑے جو آئندہ آپ کے ساتھ سفر کروں۔"

है पता नहीं क्या झगड़ा खड़ा कर दे आओ हम गाड़ी छोड़कर शहर चलें। वहाँ पिक्चर देखेंगे और फिर किसी और गाड़ी से सफ़र करेंगे।"

"आपका दिमाग़ तो हर वक़्त आसमानों में उड़ता रहता है। मैंने तो कान पकड़े जो आइंदा आपके साथ सफ़र करूँ।"

مُونچھیں

میں اب تک اِس غلط فہمی میں تھا کہ یہ مونچھیں جو آج لگ بھگ تین بیسی ساٹھ برس سے دم کے ساتھ چلی آرہی ہیں، میری اپنی جائداد ہیں، اور نائی کو چھوڑ کر، جسے صرف اتنی چھوٹ ملی ہے کہ ہر دوسرے تیسرے، وہ بھی اپنی رائے سے نہیں، میری مرضی کے مطابق ان کی نوک پلک ٹھیک کردے، اور کسی کو اِن کی کتر بیونت، کاٹ چھانٹ میں دخل دینے، مین میکھ نکالنے کا حق نہیں۔ اِن کا اَن داتا ہوں تو میں، پالن ہار ہوں تو میں، اور میرے اس پیدائشی حق میں کوئی ساجھی نہیں، یہ میری ہیں اور صرف میری ہیں۔

چنانچہ میں اِن مونچھوں کی شکست وریخت میں اپنی من مانی کرتا رہا، اور کسی بڑے سے بڑے افلاطون خاں کو بھی ان کی طرف آنکھ اُٹھا کر دیکھنے کی جرأت نہیں ہوئی، اب ایک خدائی فوجدار، دخل در معقولات، مان نہ مان میں تیرا مہمان قسم کا گروہ نکلا ہے، جو اور تو اور اِن مونچھوں پر بھی اپنا عملہ دخلہ جتاتا ہے۔

جب سے میں برت رہا ہوں، اِن مونچھوں پر کئی دَور بیتے ہیں۔ برس پندرہ یا کہ سولہ کا سن جو اوپر کے ہونٹ پر ریشمی رواں چمکا اور مسیں بھیگیں، تب شبھ گھڑی نیک ساعت دیکھ کر کنبے برادری کی بیویوں کو بُلوایا گیا۔ سورج ڈھلنے سے پہلے کورے کونڈوں میں گرم گرم جلیبیاں بھر کے چوکیوں پر جمایا گیا، مہمانوں میں سب سے بڑی بوڑھی سہاگن

मूंछें

मैं अब तक इस ग़लतफ़हमी में था कि यह मूंछें जो आज लगभग तीन बीसी, साठ बरस से दम के साथ चली आ रही हैं, मेरी अपनी जायदाद हैं, और नाई को छोड़कर, जिसे सिर्फ़ इतनी छूट मिली है कि हर दूसरे तीसरे, वह भी अपनी राय से नहीं, मेरी मर्ज़ी के मुताबिक़ उनकी नोक पलक ठीक कर दे, और किसी को इनकी कतरब्योंत, काट–छाँट में दख़्ल देने, मीन मेख निकालने का हक़ नहीं। इनका अन्नदाता हूँ तो मैं, पालनहार हूँ तो मैं, और मेरे इस पैदाइशी हक़ में कोई साझी नहीं, यह मेरी हैं और सिर्फ़ मेरी हैं।

चुनांचे मैं इन मूंछों की शिकस्तो–रेख़्त में अपनी मनमानी करता रहा, और किसी बड़े से बड़े अफ़लातून खाँ को कभी इनकी तरफ़ आँख उठाकर देखने की जुर्रत नहीं हुई, अब एक खुदाई फ़ौजदार, दख़्ल दर माक़ूलात, मान न मान मैं तेरा मेहमान क़िस्म का गिरोह निकला, जो और तो और इन मूंछों पर भी अपना अमल–दख़ला जताता है।

जब से मैं बरत रहा हूँ , इन मूंछों पर कई दौर बीते हैं। बरस पंद्रह या कि सोलह का सिन जो ऊपर के होंट पर रेशमी रोवाँ चमका और मसें भींगीं, तब शुभ घड़ी नेक साअत देखकर कुनबे बिरादरी की बीवियों को बुलवाया गया। सूरज ढ़लने से पहले कोरे कूँडों में गर्म गर्म जलेबियाँ भरके चौकियों पर जमाया गया, मेहमानों में सब से बड़ी बूढ़ी सुहागिन

نانی دادی نے نیاز دے کر پہلی جلیبی کھائی، پھر باقی بیویاں جٹ پڑیں اور دم کے دم میں کونڈے صاف کر کے مبارک سلامت کہتی رُخصت ہو گئیں۔

اس رسم نے گویا اعلان کر دیا کی صاحبزادے نامِ خدا جوان ہو گئے۔ چڑھتا خون، مونچھوں کی فصل دن دونی رات چوگنی بڑھنے لگی اور میں سوچتا رہا کہ انھیں کس سانچے میں ڈھالوں، اور چہرے کا کینڈا دیکھتے ہوئے کس فیشن کی پالوں۔ پڑوس میں ڈولی کا اڈا تھا، مونچھوں کے فرق سے اپنی اور ایک کہار کے چہرے کی کاٹ ملتی جلتی پائی۔ دس پندرہ دن کی لگا تار اینٹھن میں اپنی مونچھوں کا رُوپ بھی وہی بن گیا، میری اور للتوا کہار کی مونچھیں جُڑواں بہنیں دکھائی دینے لگیں۔ وہی کڑوے تیل سے چکنائے چمکیلے بال، وہی نوکیں چھلّے دار۔

کچھ دن بعد ایکا ایکی اِن سے جی بھر گیا۔ جانتے ہیں اب کیا کیا میں نے؟ اِن چھلّوں کو ریورس گیئر میں ڈال دیا۔ انگلیوں کے پورے سُن پڑ گئے تب کہیں اِنکے بل نکلے، نئے نمونے کی تلاش میں تھا جو اپنے ایک اسکول ماسٹر کی مونچھیں پسند آئیں۔ ماسٹر صاحب پڑھاتے کم تھے۔ کاسمیٹک کی پُٹ دی ہوئی چوہیا کی دُم مونچھوں کا رعب زیادہ جماتے تھے۔ یہ وضع نبھ نہ سکی۔ کاسمیٹک کی بُو سے بار بار چھینکوں کی ڈاک بیٹھنے لگی، آچھیں! آچھیں! کی باڑھ چلنے لگی، اور زکام نے ناک میں دم کر دیا، ناچار انھیں سلام کرنا پڑا۔ اب جو فیشن میں نے بدلا اس سے مونچھوں کی شکل ٹڈل بریکٹ جیسی بنتی تھی۔ اس کے لیے دونوں نوکیں اُٹھا کر کلّوں پر چپکانا، اوپر سے پٹی باندھنی پڑی۔ یہ تو کسی نے جانا کسی نے جانا نہیں کہ پٹی تلے کیا بھید تھا، ہونٹ پر بل توڑ نکلا سمجھ کر کسی نے پلٹس باندھنے کی صلاح دی تو کسی نے آپریشن کرانے کی۔ پٹی بندھتی رہی، کھُلی تو نئے پٹھے کی مونچھیں تیار تھیں، نہایت شاندار بڑے رعب داب کی، قیصر ولیم کی مونچھوں سے ٹکر لینے والی۔

ارے صاحب ایک قانونئے دوست سے ملاقات ہونے پر یہ خطرناک نکتہ کھلا کہ کھڑی نوکوں کی یہ آنی دار مونچھیں انسانی کمزوری کے کسی لمحے میں ضرر شدید کا سبب اور جرم قابلِ دست اندازی پولیس بن سکتی تھیں، اور میں بیٹھے بٹھائے تعزیرات کی دفعہ فلاں کی رُو سے پہلے حوالات، پھر ترقی پا کر جیل خانہ بھیجا جا سکتا تھا۔

नानी–दादी ने न्याज़ देकर पहली जलेबी खाई, फिर बाक़ी बीवियाँ जुट पड़ी और दम के दम में कूँडे साफ़ करके मुबारक सलामत कहती रुख़सत हो गयीं।

इस रस्म ने गोया एलान कर दिया कि साहबज़ादे नामे–ख़ुदा जवान हो गये। चढ़ता ख़ून, मूंछों की फ़स्ल दिन दूनी रात चौगनी बढ़ने लगी और मैं सोचता रहा कि उन्हें किस साँचे में ढ़ालूं, और चेहरे का कैंडा देखते हुए किस फ़ैशन की पालूं। पड़ोस में डोली का अड्डा था, मूंछों के फ़र्क़ से अपनी और एक कहार के चेहरे की काट मिलती जुलती पाई। दस पंद्रह दिन की लगातार ऐंठन में अपनी मूंछों का रुप भी वही बन गया, मेरी और ललतुवा कहार की मूंछे जुड़वाँ बहने दिखाई देने लगीं। वही कड़वे तेल से चिकनाये चमकीले बाल, वही नोकें छल्लेदार।

कुछ दिन बाद एका–एकी इन से जी भर गया। जानते हैं अब क्या किया मैंने? इन छल्लों को रिवर्स गेयर में डाल दिया। उंगलियों के पोरे सुन पड़ गये तब कहीं इनके बल निकले, नये नमूने की तलाश में था जो अपने एक स्कूल मास्टर की मूंछें पसंद आयीं। मास्टर साहब पढ़ाते कम थे। कॉस्मेटिक की पुट दी हुई चुहिया की दुम मूंछों का रोब ज़्यादा जमाते थे। यह वज़अ[1] निभ न सकी। कॉस्मेटिक की बू से बार–बार छींकों की डाक बैठने लगी, आछीं! आछीं! की बाढ़ चलने लगी, और ज़ुकाम ने नाक में दम कर दिया, नाचार उन्हें सलाम करना पड़ा। अब जो फ़ैशन मैंने बदला उससे मूंछों की शक्ल मिडिल ब्रैकेट जैसी बनती थी। इसके लिए दोनों नोकें उठाकर कल्लों पर चिपकाना, ऊपर से पट्टी बांधनी पड़ी। यह तो किसी ने जाना किसी ने नहीं जाना कि पट्टी तले क्या भेद था, होंट पर बलतोड़ निकला समझ कर किसी ने पुलटिस बांधने की सलाह दी तो किसी ने आपरेशन कराने की। पट्टी बंधी रही, खुली तो नये पट्ठे की मूंछे तैयार थीं, निहायत शानदार बड़े रोबदाब की, कैसर विलियम की मूंछों से टक्कर लेने वाली।

अरे साहब एक क़ानूनिये दोस्त से मुलाक़ात होने पर यह ख़तरनाक नुक़्ता खुला कि खड़ी नोकों की यह अनीदार मूंछें इन्सानी कमज़ोरी के किसी लम्हे में ज़रर–शदीद[2] का सबब और जुर्म क़ाबिले–दस्त अन्दाज़िए–पुलिस बन सकती थीं, और मैं बैठे बिठाये ताज़ीरात की दफ़ा फ़लाँ की रु से पहले हवालात, फिर तरक़्क़ी पाकर जेलख़ाने भेजा जा सकता था।

---

1. बनावट 2. बड़ा नुक्सान (चोट)

سوچا۔ بات لگتی ہوئی تھی، آؤ دیکھا نہ تاؤ، ایک دم اُسترہ پھروا دیا یہ عمل مدتوں جاری رہا۔ شامت جو آئے دفعتاً من میں اچنگ اٹھی کہ مونچھیں پھر سے پالی جائیں۔ اس فیصلے کا اعلان کرنا کیا تھا بھڑوں کے چھتے کو چھیڑنا تھا۔ نہیں نہیں کر کے دس بارہ ساتھی چمٹ ہی تو گئے۔ سب نے ایک آواز ہو کر کہا۔ "بسنت کی کچھ خبر ہے جناب کو! آپ ہم پنچوں میں بیٹھے ہیں، اب آپ اپنے بس میں نہیں، پرائے بس میں ہیں، جگت بھاتا پہننا تو پڑتا ہی ہے، اب من بھاتا کھانے پر بھی ہم پنچوں کی مہر ہو گی تب نوالہ توڑنا ہو گا۔" "آپ کو پنچ بنایا کس نے؟" میں نے پوچھا۔ جواب ملا۔ "بناتا کون ہمیں خود بننا نہیں آتا"۔ اِن میں سے ایک نے فرمایا۔ "بارہ برس سے منڈنے والی مونچھیں اب ٹائم بار ہو چکیں۔ آپ نے رکھ لیں تو ہم پنچوں کی آنکھ میں پھانس کی طرح کھٹکیں گی۔ اور بھی سنئے آپ نے مونچھیں پال لیں تو بہتر جگہ اپنا حلیہ بدلوانا پڑیگا۔ پچاس جگہ بیان حلفی دینا ہو گا کہ آپ وہی ہیں جو بارہ برس سے ہیں پھر محلے بھر کے جانے پہچانے کتے آپ کو اجنبی جان کر بھونکیں گے۔ کوئی کوئی محتاط لوگ آپ پر جاسوس ہونے کا شبہ کریں گے۔ بچے آپ کو دیکھ کر بھاگنے لگیں گے۔" اس پر سب نے مل کر ایک دوسرے کی ہاں میں ہاں ملائی اور نہ سہی سمجھ میں ایک بڑی کمزوری ہے وہ یہ کہ میں ایک امن پسند شہری ہوں، ان پنچوں کی دھونس میں آ گیا، مگر رہ رہ کے سوچتا ہوں کی آخر یہ مونچھیں ہیں کس کی، میری یا ان پنچوں کی۔

آنے کو تو پنچوں کی دھونس میں آ گیا مگر اپنی بے بسی پر اندر ہی اندر پیچ تاب کھاتا رہا سوچا تھانے میں رپٹ کر دوں اور مونچھوں میں خواہ مخواہ دخل در معقولات کے ارتکاب یا اور کسی دفعہ کے تحت نتھی کرا کے ان پنچوں کی ٹنڈیاں کسوا دوں کچہریوں کے کیڑے ایک منشی جی سے مشورہ کیا جنہوں نے حق المحنت کے پیشگی دو چہرے شاہی ہتیا کے بتایا۔ "مداخلتِ بے جا کا کیس ہوتا تو آپ کا کیس سو بسوے ہرا تھا مگر دخل در معقولات کے بارے میں قانون ساکت ہے۔ آپ پنچوں کا بال بیکا نہ کر سکیں گے۔ "پھر بڑی اپنائیت سے شہری تعلقات کا رشتہ جتا کر فرمایا۔" اس مشورے کی فیس نہ لوں گا آپ ہمارے صاحب سے مل لیں۔ وہ مخالف کو زچ کر دینے کے بادشاہ ہیں۔ ایسے ایسے قانونی گر اور نایاب

सोचा। बात लगती हुई थी, आव देखा न ताव, एक दम उस्तरा फिरवा दिया। यह अमल मुद्दतों जारी रहा। शामत जो आये, दफ़अतन मन में उचंग उठी कि मूंछें फिर से पाली जायें। इस फैसले का एलान करना क्या था भड़ों के छते को छेड़ना था। नहीं–नहीं कर के दस बारह साथी चिमट ही तो गये। सब ने एक आवाज़ होकर कहा "बसंत की कुछ ख़बर है जनाब को! आप हम पंचों में बैठे हैं, अब आप अपने बस में नहीं, पराये बस में हैं, जगत भाता पहनना तो पडता ही है, अब मन भाता खाने पर भी हम पाँचों की मोहर होगी तब निवाला तोड़ना होगा।" "आपको पंच बनाया किसने?" मैंने पूछा। जवाब मिला "बनाता कौन हमें खुद बनना नहीं आता" इनमें से एक ने फ़रमाया। "बारह बरस से मुंडने वाली मूंछे अब टाईम बार हो चुकीं। आपने रख लीं तो हम पंचों की आँख में फांस की तरह खटकेंगी। और भी सुनिये, आपने मूंछे पाल लीं तो बहत्तर जगह अपना हुलिया बदलवाना पड़ेगा। पच्चास जगह बयाने–हलफ़ी देना होगा कि आप वही हैं जो बारह बरस से हैं फिर मोहल्ले भर के जाने पहचाने कुत्ते आपको अजनबी जानकर भौंकेंगे। कोई–कोई मोहतात लोग आप पर जासूस होने का शुबहा करेंगें। बच्चे आपको देख कर भागने लगेंगे।" इस पर सब ने मिलकर एक दूसरे की हाँ में हाँ मिलाई और न सही समझ में एक बड़ी कमज़ोरी है वह यह कि मैं एक अमन पसंद शहरी हूँ , उन पंचों की धौंस में आ गया, मगर रह–रह के सोचता कि आख़िर यह मूंछें हैं किसकी, मेरी या इन पंचों की।

आने की तो पंचों की धौंस में आ गया मगर अपनी बेबसी पर अंदर ही अंदर पेचो–ताब खाता रहा। सोचा थाने में रपट करदूँ और मूंछों में ख़्वाहमख़ाह दख़्ल दर माकूलात[1] के इरतकाब या और किसी दफ़ा के तहत नत्थी करा के उन पंचों की टुंडियाँ कसवा दूँ। कचहरियों के कीड़े एक मुन्शी जी से मशवरा किया जिन्होंने हक्कुलमेहनत के पेशगी दो चेहरे शाही हथिया के बताया। "मोदाख़लते–बेजा का केस होता तो आपका केस सौ बिसवे हरा था मगर दख़्ल दर माकूलात के बारे में क़ानून साकित है। आप पंचों का बाल बीका न कर सकेंगे। "फिर बड़ी अपनाइयत से शहरी तअल्लुकात का रिश्ता जताकर फ़रमाया" इस मशवरे की फीस न लूंगा आप हमारे साहब से मिल लें। वह मुख़ालिफ़ को ज़िच[2] कर देने के बादशाह हैं। ऐसे–ऐसे क़ानूनी गुर और नायाब चुटकुले उन्हें अज़बर हैं

1. बीच में बोलना 2. बेबस

چٹکلے انھیں از بر ہیں کہ ایک نہ ایک داؤں پہ رکھ کے حریف کو یوں چاروں شانے چت کر دیں گے پریوی کونسل تک آپ کا بول بالا رہے گا۔ اور آپ خم ٹھونک کے اپنی مانی مونچھیں پالنے میں آزاد ہوں گے۔ منشی جی کی بات کچھ جچی نہیں۔ "صاحب" کے چنگل میں پھنس کر جیب ہلکی ہونے کا مزید خطرہ تھا۔

انتقام کی آگ بھڑکتی رہی اور میں مونچھوں کے غم میں جھلستا رہا۔ جوئندہ یابندہ۔ اب کے ایک بڑے مقدمہ باز، بلکہ یوں کہیے کہ مقدمہ ساز سے اپنا دکھڑا رونے کا موقع ملا۔ ساری داستان گہری آنکھوں سے سُن کر بے ساختہ فرمایا۔ "پنچوں کے فیصلے پر خاموش بیٹھنے میں تمادی عارض ہونے کا اندیشہ ہے۔ فوراً احتجاج کیجیے۔ احتجاج! اگرچہ خاصا بھاری بھرکم لفظ ہے مگر ہم، بہو بیٹیاں یہ کیا جانیں۔ اسے برتنے اور عمل میں لانے کی حد تک میں بالکل کورا ہوں۔ وضاحت چاہی، طریقہ پوچھا۔ کہنے لگے۔ "اپنے حق کے لیے آواز اُٹھانے، رفع حاجت کے لیے ہلّو مچانے کو احتجاج کہتے ہیں۔ دو گرہ کالے کپڑے کی دھجی بازو پر باندھیے، اور گلی گلی، کوچے کوچے، مونچھیں زندہ باد کے نعرے لگاتے پھریے۔ اپنا مہرہ دوزورہ کرنا ہو تو دو چار روپے کا منہ نہ کیجیے۔ آس پاس کے دس بارہ مادر پدر آزاد لونڈوں کو چکمی دے کے اپنا ہم نوا بنایئے اور سمجھ لیجیے کہ بازی جیت لی۔"

تجویز بہ ظاہر سولہ آنے کارگر تھی مگر امنِ عامہ میں خلل ڈالنے، یا دماغی توازن کھو بیٹھنے کی پاداش میں اپنی پیدائشی آزادی سے ہاتھ دھونے کی ہمت نہیں ہوئی۔ آدمی تھے جہاندیدہ، تیور دیکھ کے تاڑ گئے کہ یہ میرے بس کی بات نہ تھی۔ بولے "اچھا احتجاج کی کڑیاں آپ نہیں جھیل سکتے، جانے دیجیے، دوسرا نہایت مجرب نسخہ بتاتا ہوں۔ بھوک ہڑتال، سورج نکلنے سے پہلے ڈٹ کر ناشتہ کرنا اور پنچوں کی چوپال کے سامنے چوراہے پر آلتی پالتی مار کے چپ چاپ بیٹھ جانا۔ دن چڑھتے چڑھتے شہر میں بات پھیل جائے گی، اپنے پرائے ہمدردی کرنے لگیں گے۔ فاقہ شکنی کے لیے پنچوں پر دباؤ پڑے گا اور شام ہوتے ہوتے آپ پھر سے مونچھیں پالنے کا پروانہ لے کر ہار پھول سے لدے ہوئے گھر آ جائیں گے۔"

میں نے کہا۔ "یہ بھی تو سن لیجیے میں بھوک کا کچا، ہاضمے کا اچھا ہوں، دوپہر

कि एक न एक दाँव पे रख कर हरीफ़ को यूँ चारों शाने चित कर देंगे पैरवी कौंसिल तक आपका बोल बाला रहेगा। और आप ख़म ठोंक कर अपनी मानी मूंछे पालने में आज़ाद होंगे। मुंशी जी की बात कुछ जची नहीं। "साहब" के चुंगुल में फंसकर जेब हल्की होने का मज़ीद ख़तरा था।

इन्तक़ाम की आग भड़कती रही और मैं मूंछों के ग़म में झुलसता रहा। जोइन्दा[1] या बंदा। अबके एक बड़े मुक़दमे बाज़, बल्कि यूँ कहिए कि मुक़दमा साज़ से अपना दुखड़ा रोने का मौक़ा मिला। सारी दास्तान गहरी आँखों से सुनकर बेसाख़्ता फ़रमाया "पंचों के फैसले पर ख़ामोश बैठने में तमादी आरिज[2] होने का अन्देशा है। फ़ौरन एहतजाज कीजिये। एहतजाज अगरचे ख़ासा भरी भरकम लफ़्ज़ है मगर हम, बहू बेटियाँ यह क्या जानें। उसे बरतने और अमल में लाने की हद तक मैं बिल्कुल कोरा हूँ। वज़ाहत चाही, तरीक़ा पूछा। कहने लगे "अपने हक़ के लिए आवाज़ उठाने, रफ़ए हाजत के लिए हुल्लड़ मचाने को एहतजाज कहते हैं। दो गिरह काले कपड़े की धज्जी बाज़ू पर बांधिये, और गली–गली, कूचे–कूचे, मूंछें ज़िन्दाबाद के नारे लगाते फिरये। अपना मोहरा दोज़ोरा करना हो तो दो चार रुपये का मुँह न कीजिये। आस–पास के दस बारह मादर–पिदर आज़ाद लौंडों को चखी देकर अपना हमनवा बनाइये और समझ लीजिये कि बाज़ी जीत ली।"

तजवीज़ बज़ाहिर सोलह आने कारगर थी मगर अम्ने–आम्मा में ख़लल डालने, या दिमाग़ी तवाज़ुन खो बैठने की पादाश में अपनी पैदाईशी आज़ादी से हाथ धोने की हिम्मत नहीं हुई। आदमी थे जहाँदीदा, तेवर देख कर ताड़ गये कि यह मेरे बस की बात न थी। बोले "अच्छा एहतजाज की कड़ियाँ आप नहीं झेल सकते, जाने दीजिये, दूसरा सस्ता निहायत मुजर्रब[3] नुस्ख़ा बताता हूँ। भूख हड़ताल, सूरज निकलने से पहले डटकर नाश्ता करना और पंचों की चौपाल के सामने चौराहे पर आलती–पालती मार के चुपचाप बैठ जाना। दिन चढ़ते–चढ़ते शहर में बात फैल जायेगी, अपने पराये हमदर्दी करने लगेंगे। फ़ाक़ाशिकनी के लिए पंचों पर दबाव पड़ेगा और शाम होते–होते आप फिर से मूंछे पालने का परवाना लेकर हार फूल से लदे हुए घर आ जायेंगे।"

मैंने कहा "यह भी सुन लीजिये मैं भूख का कच्चा, हाज़मे का अच्छा हूँ , दोपहर तक बैठक न संभाल सकूंगा। अक्सर ऐसा होता है

1. तलाश करने वाला 2. इतना समय बीत जाना कि दावा दायर करने का हक़ न रहे 3. आज़माया हुआ

تک بیٹھک نہ سنبھال سکوں گا۔ اکثر ایسا ہوا ہے کہ کھانا دیر سے ملنے پر بچوں کی کہن سال ماں کے لیے طلاق ہونٹوں تک آ کے لوٹی ہے۔ "اپنے مشورے کی یوں توہین ہوتے دیکھ کر جھلا گئے اور بولے۔ "یہ نہیں وہ نہیں تو مونچھیں جائیں جہنم میں۔ میں تمھیں اتنا کچھ چیند یا جانتا تو اپنا اشرفی تولے کا قیمتی وقت کبھی نہ ضائع کرتا۔"

الغرض دن سرکتے گئے اور گتھی نہ سلجھی۔ اب طرفہ ماجرا سنیے، ایک دن جیسے القا ہوا، دیوان حافظ نکالا اور دل میں کہا کہ لاؤ ان رحمتہ اللہ علیہ سے بھی مشورہ کر دیکھوں۔ شاید کہ ہمیں بیضہ برآرد پر و بال۔ بڑے خشوع و خضوع فاتحے کا ہفت خواں سر کیا اور "شاخ نبات" کے ہزاروں واسطے دے کر فال طلب کی۔ دل دھڑک رہا تھا۔ ہاتھ میں لرزش تھی جو دیوان کھلا اور صفحے کی پہلی ہی سطر میں 'مردے از غیب بروں آید و کارے بکند' کی خوش خبری دیتا ہوا یہ مصرع نکلا۔

مردے از غیب کے انتظار نے دماغ میں ہل چل ڈال دی، یعنی جو کوئی بولا صدا کانوں میں آئی آپ کی۔ کسی نے دروازہ کھٹکٹایا "وہ آیا" کہہ کے لپکا، ڈاکیہ تھا، بیرنگ خط لایا تھا۔ لاحول ولاقوت۔ پھر زنجیر کھڑکی۔ اس بار حلال خور تھا، دوپہر کی روٹی لینے آیا تھا۔ اسی طرح کئی بار مردے از غیب کے سلسلے میں گھن چکر بنا رہا، قریب تھا کہ صبر کا پیالہ چھلک جائے اور حافظ جی کا دیوان دریا بُرد کر دوں جو دروازے پر کسی نے دستک دی۔ منہ سے کچھ اول فول نکلنے کو تھا جو سُنائی دیا "دُہائی میاں کی" باہر آیا، میرا منکھی کا شتکار کریما کبڑیا تھا۔ "کیا ہے کریم بخش؟ "دُہائی ہے میاں کی۔ بیگھ بھر گوبھی کی پود ھ لگائی تھی' گاؤں کا منکھیا کنویں پر لٹھ باندھے بیٹھا ہے، پانی روک رکھا ہے، پودے مُرجھا کے زمین ناپنے لگے ہیں۔ چل کے پانی دلوایئے۔" مکھیا شورہ پشت تھا، فوجداری کی نوبت آئی تو اپنا دامن بھی اُلجھنے کا ڈر تھا جانا پڑا۔ قضیہ رفع دفع ہوا تو اور کئی کام نکل آئے اور حافظ جی کا 'مردے از غیب' ذہن سے اُتر گیا۔

شہر میں کہاں تو مونچھوں کو ترس گیا تھا یا اب گاؤں کی فضا میں اُدھر کریما کبڑیے کا کھیت شاداب ہوا، اِدھر میری مونچھیں چمکیں۔ پانی کو دیکھ کے جیسے مرگی کا دورہ پڑتا ہے، ویسے ہی پنچوں کو نہ دیکھ کر مجھے بھی نئے سرے سے مونچھیں پانے کی ہوک

कि खाना देर से मिलने पर बच्चों की कोहन साल[1] माँ के लिए तलाक़ होंटों तक आके लौटी है। अपने मशवरों की यूँ तौहीन होते देख कर झल्ला गये और बोले "यह नहीं वह नहीं तो मूंछें जायें जहन्नुम में। मैं तुम्हें इतना कचपेंदिया जानता तो अपना अशरफ़ी तोले का क़ीमती वक़्त कभी न ज़ाया करता।"

अलगरज़ दिन सरकते गये और गुत्थी न सुलझी। अब तुरफ़ा माजरा[2] सुनिये, एक दिन जैसे इल्का[3] हुआ, दीवाने हाफ़िज़[4] निकाला और दिल में कहा कि लाओ इन रहमतुल्लाहअलैह से भी मशवरा कर देखूँ। शायद कि हमीं बैज़ा बरआरद परोबाल[5]। बड़े खुशूओ–खुज़ूअ[6] फातहे का हफ़्त ख़्वाँ सर किया और "शाख़े नबात" के हज़ारों वास्ते देकर फ़ाल तलब की। दिल धड़क रहा था। हाथ में लरज़िश थी जो दीवान खुला और सफ़े की पहली सतर में "मर्दे अज़ गैब बरुँ आयदवकारे बकुनद[7]" की खुशख़बरी देता हुआ यह मिसरा निकला।

मर्दे अज़ गैब के इन्तज़ार ने दिमाग़ में हलचल डाल दी, यानी जो कोई बोला सदा कानों में आई आपकी। किसी ने दरवाज़ा खटखटाया "वह आया" कह के लपका, डाकिया था, बैरंग ख़त लाया था। लाहौलवलाकूव्वत। फिर ज़ंजीर खड़की। इस बार हलाल ख़ोर था, दोपहर की रोटी लेने आया था, इसी तरह कई बार मर्दे अज़ गैब के सिलसिले में घनचक्कर बना रहा, क़रीब था कि सब्र का प्याला छलक जाये और हाफ़िज़ जी का दीवान दरया बुर्द करदूँ जो दरवाज़े पर किसी ने दस्तक दी। मुँह से कुछ औल–फ़ौल निकलने को था जो सुनाई दिया "दुहाई मियाँ की" बाहर आया, मेरा शिकमी[8] काश्तकार करीमा कबड़िया था। "क्या है करीम बख़्श? "दुहाई है मियाँ की। बीघ भर गोभी की पौध लगाई थी, गाँव के मुखिया कुएँ पर लट्ठ बांधे बैठा है, पानी रोक रखा है, पौधे मुरझा के ज़मीन नापने लगे हैं। चल के पानी दिलवाइये।" मुखिया शोरा पुश्त[9] था, फ़ौजदारी की नौबत आई तो अपना दामन भी उलझने का डर था जाना पड़ा। क़ज़िया[10] रफ़ा दफ़ा हुआ तो और कई काम निकल आये और हाफ़िज़ जी का 'मर्दे अज़ गैब' ज़ेहन से उतर गया।

शहर में कहाँ तो मूंछों को तरस गया था या अब गाँव की फ़िज़ा में उधर करीमा कबड़िये का खेत शादाब हुआ,
इधर मेरी मूंछें चमकीं। पानी को देखकर जैसे मिर्गी का दौरा पड़ता है, वैसे ही पंचों को न देखकर मुझे भी नये सिरे से मूंछें पाने की हूक

1. बूढ़ी 2. अनोखी बात 3. वह बात जो इश्वर दिल में डाल दे 4. फ़ारसी के प्रसिद्ध कवि का कविता संग्रह 5. शायद इसी से समस्या का समाधान हो 6. विनम्रता 7. इश्वर की तरफ़ से कोई व्यक्ति आता है और काम अन्जाम दे देता है 8. पैदाइशी 9. झगड़ालू 10. झगड़ा

اٹھی اور اِس بار نئے ماڈل کی سوجھی یعنی نتھنوں کے عین نیچے اوپر کے ہونٹ کے بیچوں بیچ اُتھلا سا جو گڑھا ہوتا ہے اسے چھوڑ کر ناک سے اِدھر اُدھر دو خط لگوا دیے۔ نہ پوچھیے اس دن کی بے پایاں مسرت جب آئینے میں ہونٹ کا گڑھا بالوں سے بھرپور پایا۔

گھر آیا، رات تھی۔ اطمینان کی نیند سویا۔ سویرے منہ ہاتھ دھو کے بنا سنورا اور بازار سے گزرتے ہوئے یہ مژدہ سنا کہ پُرانے پنچوں کی ٹولی ٹوٹ گئی۔ دو ایک سے بھینٹ ہونے پر جھینپے جھینپے کترا کے نکل گئے۔

ایک گلی میں کئی لونڈے گلی ڈنڈا کھیل رہے تھے۔ ایک نے ہاتھ روک کے غور سے مجھے دیکھا اور پکار کے اپنے ساتھی سے کہا۔ ''ابے چھدّا، دیکھ مونچھ مُنڈ ے آ گئے۔'' چھدّا بولا۔ ''اندھا ہے بے، تو نے کیا دیکھا۔ ان کی مُونچھ نے بچہ دیا ہے۔ اس پر سب نے قہقہہ لگایا اور میں یہ کہتا ہوا آگے بڑھ گیا کہ 'مُنھ پھٹ لونڈے ہیں بچ تو نہیں۔''

اب ایک سوال جواب طلب ہے کہ ''کارے بکند'' کریما کبڑیا تھا یا گوبھی کے رُوپ میں ''مردے از غیب'' نے جنم لیا تھا؟

•••••••••

उठी और इस बार नये मॉडल की सूझी यानी नथुनों के ऐन नीचे ऊपर के होंट के बीचों बीच उथला सा जो गढ़ा होता है उसे छोड़कर नाई से दो ख़त इधर–उधर लगवा दिये। न पूछिये उस दिन की बेपायाँ मुसर्रत जब आईने में होंट का गढ़ा बालों से भरपूर पाया।

घर आया, रात थी। इत्मीनान की नींद सोया। सवेरे मुँह हाथ धो कर बना संवरा और बाज़ार से गुज़रते हुए यह मुज़्दा[1] सुना कि पुराने पंचों की टोली टूट गई। एक दो से भेंट होने पर झेंपते–झेंपते कतरा के निकल गये।

एक गली में कई लौण्डे गुल्ली डंडा खेल रहे थे। एक ने हाथ रोक के ग़ौर से मुझे देखा और पुकार के अपने साथी से कहा। "अबे छिद्दा, देख मूंछ मुण्डे आ गये" छिद्दा बोला "अन्धा है बे, तूने क्या देखा। इनकी मूंछ ने बच्चा दिया है। इस पर सब ने क़हक़हा लगाया और मैं यह कहता हुआ आगे बढ़ गया कि "मुँहफट लौण्डे हैं पंच तो नहीं।"

अब एक सवाल जवाब तलब है कि "कारे बकुनद" करीमा कबड़िया था या गोमी के रुप में "मर्दे अज़ ग़ैब" ने जनम लिया था?

1. खुशख़बरी

وجاہت علی سندیلوی

سوانح حیات

خیر خود ہمیں تو اپنے نجی تجربات کی بنا پر بہت دنوں سے اس بات کا علم تھا کہ چشم بددور ہم ایک بڑے آدمی ہیں۔ لیکن ہماری سمجھ میں نہ آتا کہ آخر اس حقیقت کبریٰ کا انکشاف ہم اپنے عزیزوں، دوستوں یا دیگر ہم چشموں پر کیسے کریں تا کہ وہ ہم کو گھر کی مرغی دال برابر سمجھنا ترک کر دیں۔ اور یہ جو آئے دن ہمیں اپنے دوست پنڈت جی کے منھ سے ''عجیب سر پھرے ہو تم!'' یا مرزا صاحب کی زبان سے ''واہی ہوئے ہو کیا؟'' اپنی ہر ایک جدت طرازی کے متعلق سننا پڑتا ہے نہ صرف بند ہو جائے بلکہ ہمارے گرد و پیش کے سبھی لوگ بلکہ دور دور کے لوگ ہمیں ایک مسلم الثبوت بڑا آدمی سمجھ کر ہماری بڑائی پر ایمان لے آئیں اور ہمارے سامنے سر بہ سجود ہو کر ہمارے منھ سے نکلا ہوا ہر لفظ اپنے لیے ایک فرمان سمجھنے لگیں۔

بہت دماغ لڑایا، بڑا غور خوض کیا، لیکن خاطر خواہ ترکیب سمجھ میں نہ آئی۔ یوں ترکیبیں تو بہت سی سامنے آئیں لیکن کسی میں گھر سے نکال دیے جانے کا امکان زیادہ تھا کسی میں مار کھا جانے کا اندیشہ قوی تر تھا۔ کسی میں ڈھول کے اندر پول ظاہر ہو جانا لازمی تھا،

वजाहत अली संदीलवी

सवानेह हयात[1]

ख़ैर खुद हमें अपने निजी तजरबात की बिना पर बहुत दिनों से इस बात का इल्म था कि चश्मे बद दूर हम एक बड़े आदमी हैं। लेकिन हमारी समझ में न आता कि आख़िर इस हक़ीक़ते–कुबरा[2] का इन्केशाफ़ हम अपने अज़ीज़ों, दोस्तों या दिगर हम–चश्मों पर कैसे करें ताकि वह हम को घर की मुर्ग़ी दाल बराबर समझना तर्क कर दें। और यह जो आये दिन हमें अपने दोस्त पंडित जी के मुँह से "अजीब सरफिरे हो तुम!" या मिर्ज़ा साहब की ज़बान से "वाही हुए हो क्या?" अपनी हर एक जिद्दत–तराज़ी के मुतअल्लिक़ सुनना पड़ता है न सिर्फ़ बंद हो जाय बल्कि हमारे गिर्दो–पेश के सभी लोग बल्कि दूर–दूर के लोग हमें एक मुसल्लमस्सुबूत बड़ा आदमी समझकर हमारी बड़ाई पर ईमान ले आयें और हमारे सामने सर–बसुजूद होकर हमारे मुँह से निकला हुआ हर लफ़्ज़ अपने लिए एक फ़रमान समझने लगें।

बहुत दिमाग़ लड़ाया, बड़ा ग़ौरो–ख़ौज़ किया, लेकिन ख़ातिर ख़्वाह तरकीब समझ में न आई। यूँ तरकीबें तो बहुत सी सामने आयीं लेकिन किसी में घर से निकाल दिए जाने का इमकान ज़्यादा था किसी में मार खा जाने का अन्देशा क़वी तर था। किसी में ढोल के अन्दर पोल ज़ाहिर हो जाना लाज़मी था, किसी में पुलिस का ख़ौफ़ था तो किसी में अदालत और

---

1. जीवनी 2. बड़ी सच्चाई

کسی میں پولیس کا خوف تھا تو کسی میں عدالت اور جیل کا ڈر۔ لہٰذا ان سے کانوں پر ہاتھ دھرنا اور درگذر کرنا ہی زیادہ مناسب معلوم ہوا۔ البتہ اس قسم کی ذہنی ورزشوں سے یہ بات بخوبی ذہن نشین ہوگئی کہ بڑا آدمی بننے سے بڑا آدمی کہلانا کہیں زیادہ ٹیڑھی کھیر ہے۔

ہم اس ادھیڑ بن میں ایک روز کسی بڑے آدمی کی خودنوشت سوانح حیات کا مطالعہ کر رہے تھے کہ دفعتاً بڑا آدمی کہلانے کا ایک تیر بہدف نسخہ ہماری سمجھ میں آ گیا اور ہم بیساختہ پھڑک اٹھے۔ کیوں نہ ہم اپنی خودنوشت سوانح حیات لکھ ڈالیں؟ جب سے چھاپے کی مشین ایجاد ہوئی ہے ہر بڑا آدمی اپنی خودنوشت سوانح حیات لکھنا اپنا پیدائشی حق سمجھتا ہے بلکہ یوں سمجھنا چاہیے کہ خودنوشت سوانح حیات بڑکپن کا ایک جزو لاینفک قرار پا چکی ہے۔ پھر آخر ہم اس کارِ خیر سے کیوں محروم رہیں؟ تعجب تو یہ ہوا کہ یہ بات ہماری سمجھ میں پہلے کیوں نہ آئی؟ ہماری سوانح حیات کچھ ایسی غیر دلچسپ بھی نہیں ہے۔ اور پھر اگر ہم حسب ضرورت کچھ نمک مرچ لگا دیں گے تو سونے پر سہاگے کا کام دے جائے گا۔ ہماری خودنوشت سوانح حیات ہمارے بڑکپن کا ایک ناقابل تردید ثبوت ہوگا اور اس تاریخی دستاویز کی موجودگی میں پھر کس کے منہ میں دانت ہوں گے جو ہمیں ایک بڑا آدمی تسلیم کرنے سے انکار کر سکے ع

آفتاب آمد دلیل آفتاب

اور پھر اگر بعض واقعات کے متعلق کچھ واقف کار حضرات صحت یا عدم کا کوئی جھگڑا لگائیں گے تو اُن کی سنے گا بھی کون؟ تحریری ثبوت کے مقابلے میں زبانی ثبوت کی کیا وقعت اور اہمیت ہو سکتی ہے؟ اور ہمارے قدردان ان کو فوراً یہ کہہ کر خاموش کر دیں گے کہ آپ حاسد ہیں اور اگر آپ کو چمگادڑ کی طرح روشنی نظر نہیں آتی تو چشمۂ آفتاب را چہ گناہ؟ آپ اپنی آنکھوں کا علاج کرائیے!

ہم اپنی سوانح حیات کے متعلق سب انتظام مکمل کر چکے تھے یعنی قلم، دوات، کاغذ، جاذب وغیرہ اکٹھا کر لیا تھا اور صرف لکھنا ہی باقی رہ گیا تھا کہ ہم کو خیال آیا کہ چوں کہ ہم اپنی اس کتاب لاجواب میں اپنے کارناموں کے بیان کرنے کے ساتھ ہی ساتھ اپنے عزیزوں اور دوستوں کی اور خصوصاً پنڈت جی اور مرزا صاحب کی مزاج پرسی کرنا بلکہ حجامت

जेल का डर। लिहाज़ा उनसे कानों पर हाथ धरना और दरगुज़र करना ही ज़्यादा मुनासिब मालूम हुआ। अलबत्ता इस किस्म की ज़ेहनी वर्ज़िशों से यह बात बखूबी ज़ेहन–नशीं हो गई कि बड़ा आदमी बनने से बड़ा आदमी कहलाना कहीं ज़्यादा टेढ़ी खीर है।

हम इस उधेड़बुन में एक रोज़ किसी बड़े आदमी की खुदनविश्त[1] सवानेह हयात का मुतालेआ कर रहे थे कि दफ़अतन बड़ा आदमी कहलाने का एक तीर बहदफ़ नुस्ख़ा हमारी समझ में आ गया और हम बेसाख़्ता ़ड़क उठे। क्यों न हम अपनी खुदनविश्त सवानेह हयात लिख डालें? जब से छापे की मशीन ईजाद हुई है हर बड़ा आदमी अपनी खुदनविश्त सवानेह हयात लिखना अपना पैदाइशी हक़ समझता है बल्कि यूँ समझना चाहिए कि ख़ुदनविश्त सवानेह हयात बड़कपन का एक जुज़्वेलायनफ़क[2] क़रार पा चुकी है। फिर आख़िर हम इस कारे–ख़ैर से क्यों महरुम रहें? तअज्जुब तो यह हुआ कि यह बात हमारी समझ में पहले क्यों न आई? हमारी सवानेह हयात कुछ ऐसी ग़ैर दिलचस्प भी नहीं है। और फिर अगर हम हस्बे ज़रुरत कुछ नमक मिर्च लगा दें तो सोने पर सोहागे का काम दे जायेगा। हमारी ख़ुदनविश्त सवानेह हयात महारे बड़कपन का एक ना क़ाबिले तरदीद सबूत होगा और इस तारीख़ी दस्तावेज़ की मौजूदगी में फिर किस मुँह में दाँत होंगे जो हमें एक बड़ा आदमी तस्लीम करने से इन्कार कर सके –

आफ़ताब आमद दलीले आफ़ताब[3]

और फिर अगर बाज़ वाक़यात के मुतअल्लिक़ कुछ वाकिफ़ कार हज़रात सेहत या अदम का कोई झगड़ा लगायेंगे तो उनकी सुनेगा भी कौन? तहरीरी सुबूत के मुक़ाबले में ज़बानी सुबूत की क्या वक़अत और अहमीयत हो सकती है? और हमारे क़द्रदान उनको फ़ौरन यह कह कर ख़ामोश कर देंगे कि आप हासिद हैं और अगर आपको चमगादड़ की तरह रोशनी नज़र नहीं आती तो चश्मए–आफ़ताब रा चे गुनाह[4]? आप अपनी आँखों का इलाज कराइये!

हम अपनी सवानेह हयात के मुतअल्लिक़ सब इन्तज़ाम मुकम्मल कर चुके थे यानी क़लम, दवात, काग़ज़, जाज़िब वग़ैरह इकट्ठा कर लिया था और सिर्फ़ लिखना ही बाक़ी रह गया था कि हम को ख़याल आया चूंकि हम अपनी इस किताबे–लाजवाब में अपने कारनामों के बयान करने के साथ ही अपने अज़ीज़ों और दोस्तों की और खुसूसन पंडित जी और मिर्ज़ा साहब की मिज़ाज पुर्सी करना बल्कि हजामत बनाना चाहते हैं, लिहाज़ा

1. आत्मकथा 2. अभिन्न अंग 3. सूरज स्वयं सूरज की दलील है
4. प्रकाश के श्रोत का क्या दोष

بنانا چاہتے ہیں، لہٰذا بعض امور تشریح طلب کے متعلق اگر مولانا فروغ احمد سے مشورہ کرلیا جائے تو کیا مضائقہ؟ اور پھر مولانا قصبے کے اکلوتے کتب فروش ہیں۔ اگر کتاب چھپنے کے بعد اس کے متعلق کوئی ہنگامہ بلند ہوا تو سب سے پہلے ان ہی بے چارے کا ثبوت بزرگی اور دکان اس کی زد میں آئے گی۔ لہٰذا ان کو ہم راز بنالینا نہ صرف قرین مصلحت بلکہ تقاضائے انسانیت ہے!

قصہ مختصر ہم مولانا کے پاس پہنچے اور تنہائی پاکر ان کو اپنی نیت اور منصوبے سے آگاہ کردیا۔ فروغ احمد مولانا ہونے کے علاوہ کسی دور کے رشتے سے ہمارے بھائی کے سالے تھے اور چوں کہ ہم سے کچھ زیادہ واقف نہیں تھے، لہٰذا ہم پر ضرورت سے زیادہ مہربان بھی تھے۔ انھوں نے ہماری تجویز کو بگوش دل سنا اور بولنے سے پہلے کافی دیر تک اپنی گنجان داڑھی میں اپنی انگلیوں سے خلال کرتے رہے۔ گویا اپنے ثبوت بزرگی کے ترازو پر ہماری باتوں کو تول رہے ہوں پھر انھوں نے ہم سے ایک انتہائی مہمل سوال کیا۔

"اور آپ اپنی اس خودنوشت سوانح حیات میں لکھیے گا کیا؟"

ہم نے بڑی سادہ لوحی سے جواب دیا۔ یہی اپنے قصبے کی تاریخ یہاں کے اکابرین کے حالات، اپنے اجداد کی فتوحات، اپنے کچھ پسندیدہ اشعار اور افسانے، کچھ اپنے مشاہدات اور تجربات، اپنے مختصر حالات اور ساتھ ہی ساتھ اپنے اعزا کی تونا چشمیاں اور اپنے احباب کی چیرہ دستیاں، زمانے کی ناقدردانیاں اور دنیا کے اہم مسائل پر اپنے تازہ ترین خیالات اور معتقدات وغیرہ وغیرہ"۔

"تو اس کا مقصد کیا ہوگا؟ مولانا نے بڑی خشونت سے پوچھا۔

اب ہمیں مجبوراً راز درون پردہ، جس کو ہم نے ابھی تک مولانا سے بیان نہیں کیا تھا، زبان پر لانا پڑ گیا۔ یہی کہ لوگ ہمیں سمجھنے کی کوشش کریں۔ مطلب یہ کہ وہ جانیں کہ ہم بھی ایک دماغ رکھتے ہیں۔ یعنی یہ کہ ہمارے دماغ میں بھی روشنی اور تابندگی ہے۔ مقصد یہ ہے کہ وہ ہمارا شمار نتھو، بدھو، خیرو، وغیرہ کے ساتھ نہ کریں اور جی ہاں! انھیں معلوم ہو جائے کہ ہم بھی کچھ ہیں۔ کچھ کیا؟ یعنی ہم کو ملک کے سوچنے سمجھنے والے بلکہ قیادت کرنے والے لوگوں کی صف میں بلا تکلف جگہ دی جاسکتی ہے! ہم ان پر اپنی شخصیت کچھ

बाज़ उमूरे–तश्रीह तलब[1] के मुतअल्लिक अगर मौलाना फ़रोग़ अहमद से मशवरा कर लिया जाय तो क्या मोज़ायका? और फिर मौलाना कस्बे के इकलौते कुतुब फ़रोश हैं। अगर किताब छपने के बाद उसके मुतअल्लिक़ कोई हंगामा बुलन्द हुआ तो सब से पहले उन ही बेचारे का सबूते–बुज़ुर्गी और दुकान उसकी ज़द में आयेगी। लिहाज़ा उनको हमराज़ बना लेना न सिर्फ़ क़रीने–मस्लेहत बल्कि तक़ाज़ए–इन्सानियत है!

किस्सा मुख़्तसर हम मौलाना के पास पहुँचे और तन्हाई पाकर उनको अपनी नियत और मन्सूबे से आगाह कर दिया। फ़रोग़ अहमद मौलाना होने के अलावा किसी दूर के रिश्ते से हमारे भाई साहब के साले थे और चूंकि हम से कुछ ज़्यादा वाक़िफ़ न थे, लिहाज़ा हम पर ज़रुरत से ज़्यादा मेहरबान भी थे। उन्होंने हमारी तजवीज़ को बगोशे–दिल सुना और बोलने से पहले काफ़ी देर तक अपनी गुंजान दाढ़ी में अपनी उंगलियों से ख़िलाल करते रहे। गोया अपने सुबूते–बुज़ुर्गी के तराज़ू पर हमारी बातों को तौल रहे हों फिर उन्होंने हमसे एक इन्तहाई मोहमल सवाल किया। "और आप अपनी खुदनविश्त सवानेह हयात में लिखियेगा क्या?"

हमने बड़ी सादा लौही से जवाब दिया। यही अपने क़स्बे की तारीख़, यहाँ के अकाबरीन के हालात, अपने अजदाद की फ़तूहात, अपने कुछ पसंदीदा अशार और अफ़साने, कुछ अपने मुशाहेदात और तजरबात, अपने मुख़्तसर हालात और साथ–साथ अपने अइज्ज़ा[2] की तोता चश्मियाँ और अपने अहबाब की चीरा दस्तियाँ, ज़माने की नाक़द्रदानियाँ और दुनिया के अहम मसायल पर अपने ताज़ा तरीन ख़्यालात और मोतक़दात वग़ैरह–वग़ैरह।"

तो इसका मकसद क्या होगा? मौलाना ने बड़ी ख़ुशूनत[3] से पूछा।

अब हमें मजबूरन राज़े–दुरुने–पर्दा[4], जिसको हम ने अभी तक मौलाना से बयान नहीं किया था, ज़बान पर लाना पड़ गया। यही कि लोग हमें समझने की कोशिश करें। मतलब यह कि वह जानें कि हम भी एक दिमाग़ रखते हैं। यानी यह कि हमारे दिमाग़ में भी रोशनी और ताबिन्दगी है। मक़सद यह है कि वह हमारा शुमार नत्थू , बुद्धू , ख़ैरु, वग़ैरह के साथ न करें और जी हाँ! उन्हें मालूम हो जायेगा कि हम भी कुछ हैं। कुछ क्या? यानी हम को मुल्क के सोचने समझने वाले बल्कि क़यादत करने वाले लोगों की सफ़ में बिला तकल्लुफ़ जगह दी जा सकती है! हम उन पर अपनी शख़्सियत कुछ इस तरह से ज़ाहिर कर देना चाहते हैं कि उन्हें हमारी

---

3. व्याख्या योग्य 2. संबन्धियों, 3. रुखेपन, 4. रहस्य

اس طرح سے ظاہر کر دینا چاہتے ہیں کہ انھیں ہماری ضرورت کا احساس ہو جائے۔ مطلب یہ کہ آپ سمجھ گئے ہوں گے۔ ہم بھی ایک آدمی ہیں۔ سینے میں دل اور منھ میں زبان رکھنے والے گویا کہ اب ہم اپنے منھ سے کیا کہیں؟ یہی کہ اگر آپ چاہیں تو ہمیں بھی ایک چھوٹا موٹا بڑا آدمی کہہ سکتے ہیں۔ ہم بری طرح بوکھلا گئے تھے اور اگر ہم اپنے ساتھ ہی مولانا کو بوکھلایا ہوا نہ دیکھتے تو نہیں معلوم ہمارے منھ سے اور بھی کیا الم غلم نکل جاتا۔

مولانا تھوڑی دیر تک ہمیں کچھ ایسی چنگاری نکلنے والی آنکھوں سے دیکھتے رہے کہ ہمیں دفعتاً محسوس ہوا کہ جیسے ہم غسل آفتابی کر رہے ہوں۔ اس کے بعد انھوں نے بڑی بیزاری سے اپنا دہانہ کھولا۔ ''تو آپ اپنی خودنوشت سوانح حیات سے دنیا کو یہ جتانا چاہتے ہیں کہ آپ بھی ایک بڑے آدمی ہیں!''

''جی ہاں''! ہم نے بھی یہ سوچ کر کہ ہمارے جیتے جی مولانا کے ہاتھوں جو ہمارا پوسٹ مارٹم ہو رہا ہے وہ جتنی جلد ختم ہو جائے اتنا ہی بہتر ہے، منھ پھٹ جواب دے دیا۔

''خیال برا نہیں ہے''۔ مولانا نے خلاف توقع ہماری ہمت افزائی کی اور ان کے چہرے کی خشونت اور بیزاری اور گنجان بالوں کے درمیان ایک ہلکا سا طنزیہ تبسم جھلملانے لگا۔ جیسے کالے بادلوں میں کوندا لپک رہا ہو۔ ہمیں بھی یہ شبہ ہوا کہ اب ہمارے لیے ان کی نظروں میں حیرت کے ساتھ ہی ساتھ کچھ احترام بھی پیدا ہو گیا تھا۔

''ہمیں آپ سے اسی قسم کی ہمت افزائی کی اُمید تھی۔'' ہم نے جلدی سے مولانا کو اپنے پچھلے قول سے مکر جانے کا موقع دیے بغیر کہا

''آپ نے بڑے آدمیوں کی سوانح عمریاں تو پڑھی ہوں گی؟''

''زندگی بھر میں ایک خودنوشت سوانح حیات پڑھنا شروع کی تھی لیکن طبیعت نہ لگی اور اسے بند کر کے رکھ دیا''

''آپ سے پانچ سال کی عمر میں کون سا کارنامہ سرزد ہوا تھا؟'' مولانا واقعی غیر متوقع سوال کرنے کے ماہر نظر آتے۔

ہم نے حافظے پر بہت زور دینے کے بعد جواب دیا...... ''ہم نے ایک اکنی کھالی تھی۔ والدہ صاحبہ کا خیال تھا کہ ہم مر جائیں گے۔ چنانچہ انھوں نے فوراً ڈاکٹر کو بلایا۔

ज़रुरत का एहसास हो जाय। मतलब यह कि आप समझ गये होंगे। हम भी एक आदमी हैं। सीने में दिल और मुँह में ज़बान रखने वाले गोया कि अब हम अपने मुँह से क्या कहें? यही कि अगर आप चाहें तो हमें भी एक छोटा मोटा बड़ा आदमी कह सकते हैं। हम बुरी तरह बौखला गये और अगर हम अपने साथ ही मौलाना को बौखलाया हुआ न देखते तो नहीं मालूम हमारे मुँह से और भी क्या अल्लम ग़ल्लम निकल जाता।

मोलाना थोड़ी देर तक हमें कुछ ऐसी चिंगारी निकलने वाली आँखों से देखते रहे कि हमें दफ़अतन महसूस हुआ कि जैसे हम गुस्ले–आफ़ताबी कर रहे हों। इसके बाद उन्होंने बड़ी बेज़ारी से अपना दहाना खोला। "तो आप अपनी खुदनविश्त सवानेह हयात से दुनिया को यह जताना चाहते हैं कि आप भी एक बड़े आदमी हैं!"

"जी हाँ!" हमने भी यह सोचकर कि हमारे जीते जी मौलाना के हाथों जो हमारा पोस्टमार्टम हो रहा था वह जितनी जल्द ख़त्म हो जाय उतना ही बेहतर है, मुँहफट जवाब दे दिया। "ख़याल बुरा नहीं है।" मौलाना ने ख़िलाफ़े–तवक़्क़ो हमारी हिम्मत अफ़्जाई की और उनके चेहरे की ख़ुशूनत और बेज़ारी और गुंजान बालों के दरमियान एक हल्का से तंज़िया तबस्सुम झिलमिलाने लगा। जैसे काले बादलों में कौंद लपक रहा हो। हमें भी यह शुबहा हुआ कि अब हमारे लिए उनकी नज़रों में हैरत के साथ ही साथ कुछ एहतराम भी पैदा हो गया था।

"हमें आपसे इसी क़िस्म की हिम्मत अफ़्ज़ाई की उमीद थी।" हमने जल्दी से मौलाना को अपने पिछले क़ौल से मुकर जाने का मौक़ा दिये बग़ैर कहा

"आपने बड़े आदमियों की सवानेह उम्रियाँ तो पढ़ी होंगी?"

"ज़िन्दगी भर में एक खुदनविश्त सवानेह हयात पढ़ना शुरु की थी लेकिन तबीअत न लगी और बंद करके
रख दिया।"

"आपसे पाँच साल की उम्र में कौन सा कारनामा सरज़द हुआ था?" मौलाना वाक़ई ग़ैर मोतवक़्क़ा सवाल करने के माहिर नज़र आते।

हमने हाफ़िज़े पर बहुत ज़ोर देने के बाद जवाब दिया...... "हम ने एक इकन्नी खा ली थी। वालिदा साहब का ख़याल था कि हम मर जायेंगे। चुनांचे उन्होंने फ़ौरन डाक्टर को बुलाया। उसकी बेहतरीन कोशिशों के

اُس کی بہترین کوششوں کے باوجود ہمارے علم میں نہ اُگنی ہمارے جسم سے باہر نکلی اور نہ ہم مرے"۔

"ہشت!" نہیں معلوم مولانا نے ہم سے فرمایا یا اپنے چہرے پر بیٹھی ہوئی مکھی سے، اس کے بعد دوسرا سوال کیا۔ "آپ نے بچپن میں کبھی کسی غیر معمولی ذہانت کا ثبوت دیا؟"

ہمیں اپنے حافظے پر غیر معمولی زور دینا پڑا۔ "ہم ایک دفعہ بچپن میں اسکول سے بھاگ کر چند ساتھیوں کے ساتھ تالاب پر سنگھاڑے کھانے گئے تھے۔ اتفاق سے عین موقع واردات پر تالاب کا ٹھیکیدار آ گیا۔ سب ساتھی تو بھاگ کھڑے ہوئے لیکن ہم امرودوں کے کنج میں چھپ گئے اور شام تک چھپے مزے سے امرود کھاتے رہے۔"

"ہشت!" کرتے ہوئے مولانا نے فرمایا...... "آپ کبھی پٹے ہیں؟"

سنِ شعور پر پہنچ جانے کے بعد باقاعدہ تو کبھی نہیں پٹا، البتہ بچپن میں گھر پر اور اسکول میں ضرورت سے زیادہ پٹا ہوں۔

"کبھی جیل گئے ہیں؟" مولانا کے منہ سے سوالات اور وہ بھی غیر متوقع مشین گن کی گولیوں کی طرح نکلنا شروع ہو گئے۔

"ابھی تک تو اتفاق نہیں ہوا۔"

"کبھی کسی عورت سے محبت کی ہے؟"

"جی ہاں"!

"کس سے"؟

"اپنی بیوی سے"!

استغفر اللہ! میرا مطلب ہے کہ آپ نے آج تک کبھی کوئی خطرناک قسم کی محبت کی ہے؟

"اگر آپ کا مطلب کسی عورت کو بھگانے وغیرہ کا ہے تو کبھی نہیں"!

"آپ کوئی الیکشن لڑے ہیں"؟

"جی نہیں"!

बावजूद हमारे इल्म में न इकन्नी हमारे जिस्म से बाहर निकली और न हम मरे।"

"हुश्त!" नहीं मालूम मौलाना ने हम से फ़रमाया या अपने चेहरे पर बैठी हुई मक्खी से, उसके बाद दूसरा सवाल किया। "आपने बचपन में कभी किसी ग़ैर मामूली ज़हानत का सुबूत दिया?"

हमें अपने हाफ़िज़े पर ग़ैर मामूली ज़ोर देना पड़ा। 'हम एक दफ़ा बचपन में स्कूल से भागकर चंद साथियों के साथ तालाब पर सिंघाड़े खाने गये थे। इत्तेफ़ाक़ से ऐन मौक़ए–वारदात पर तालाब का ठेकेदार आ गया। सब साथी तो भाग खड़े हुए लेकिन हम अमरुदों के कुंज में छुप गये और शाम तक छुपे मज़े से अमरुद खाते रहे।'

"हुश्त!" करते हुए मौलाना ने फ़रमाया...... "आप कभी पिटे हैं?"

सिने–शऊर पर पहुँच जाने के बाद बाक़ायदा तो कभी नहीं पिटा, अलबत्ता बचपन में घर पर और स्कूल में ज़रुरत से ज़्यादा पिटा हूँ।

"कभी जेल गये?" मौलाना के मुँह से सवालात और वह भी ग़ैर मोतवक़्क़ा मशीन गन की गोलियों की तरह निकलना शुरु हो गये।

"अभी तक तो इत्तेफ़ाक़ नहीं हुआ।"

"कभी किसी औरत से मोहब्बत की है?"

"जी हाँ!"

"किस से?"

"अपनी बीवी से!"

अस्तग़फ़िरुल्लाह! मेरा मतलब है कि आपने आज तक कभी कोई ख़तरनाक क़िस्म की मोहब्बत की है?

अगर आपका मतलब किसी औरत को भगाने वग़ैरह का है तो कभी नहीं!"

"आप कोई इलेक्शन लड़े हैं?"

"जी नहीं!"

"کسی مشتعل جلوس کی قیادت کی ہے"؟

"جی نہیں"!

آپ نے کوئی کل ہند سفر کیا ہے؟ کوئی چندہ وصول کیا ہے؟ کوئی ادارہ قائم کیا ہے؟ کوئی نئی ایجاد کی ہے؟ کوئی قابل ضبطی کتاب لکھی ہے؟ مولانا نے ایک دم سے بہت سے سوالات اُگلنا شروع کر دیے اور ہم بدحواس ہو کر بیچ میں بول اُٹھے۔

"جی نہیں" جی نہیں جی نہیں ہم اِن مبتذل حرکات سے بہت دور رہے ہیں"۔

"مبتذل حرکات؟ اجی انھیں کے بل بوتے پر تو کوئی آدمی بڑا آدمی کہلاتا ہے۔ آپ کی زندگی میں ان کا فقدان ہے تو آپ اپنی خودنوشت سوانح حیات میں لکھیے گا کیا؟ خاک دھول؟ اینٹ، پتھر؟ اور اگر یوں ہی گدھے کی سرگذشت کی قسم کی کوئی کتاب لکھنا ہے تو چمگادڑ کی سرگذشت لکھ ڈالیے لیکن پھر بڑا آدمی بننے کا دعویٰ ہر گز مت کیجیے" مولانا ایک سانس میں یہ سب کچھ بک گئے۔

ہم نے اپنے غصے کو ضبط کرتے ہوئے ملائمیت سے کہا۔ "مولانا آپ خفا کیوں ہوئے جا رہے ہیں۔ آپ کے بتائے ہوئے بہت سے کام اگرچہ ابھی تک نہیں کیے گئے ہیں لیکن وہ مستقبل قریب میں کیے جا سکتے ہیں"۔

"مثلاً"

"ذہانت کے کام کیے جا سکتے ہیں۔ مار کھائی جا سکتی ہے۔ الیکشن لڑا جا سکتا ہے۔ جلوس نکالا جا سکتا ہے۔ سفر کیا جا سکتا ہے۔ چندہ وصول کر کے دکھایا جا سکتا ہے اور ادارہ قائم کیا جا سکتا ہے۔ جیل کی زیارت کی جا سکتی ہے۔ عورت کو بھگایا جا سکتا ہے۔ کسی نئی ایجاد کو اپنے نام منسوب کیا جا سکتا ہے۔ قابل ضبطی کتاب لکھی جا سکتی ہے۔ وغیرہ وغیرہ"۔

"میں کب کہتا ہوں کہ بڑے آدمیوں والا کوئی کام کرنے سے آپ قاصر ہیں۔ لیکن اپنی سوانح حیات لکھنے تو آپ اب جا رہے ہیں اور اس میں درج کیے جانے والے واقعات آپ سے سرزد ہوں گے مستقبل بعید میں۔ سوانح حیات کو بھی کوئی پنج سالہ پلان

"किसी मुश्तइल जुलूस की क़यादत की है?"

"जी नहीं"

आपने कोई कुलहिन्द सफ़र किया है? कोई चंदा वसूल किया है? कोई इदारा क़ायम किया है? कोई नई ईजाद की है? कोई क़ाबिले–ज़ब्ती किताब लिखी है? मौलाना ने एक दम से बहुत से सवालात उगलना शुरु कर दिए और हम बदहवास होकर बीच में बोल उठे।

"जी नहीं" "जी नहीं" "जी नहीं" "हम इन मुब्तज़िल[1] हरकात से बहुत दूर रहे हैं"

मुब्तज़िल हरकात? अजी उन्हीं के बलबूते पर तो कोई आदमी बड़ा आदमी कहलाता है। आपकी ज़िन्दगी में इनका फ़ोक़दान है तो आप अपनी ख़ुदनविश्त सवानेह हयात में लिखियेगा क्या? ख़ाक धूल? इंट पत्थर? और अगर यूँही गधे की सरगुज़श्त की क़िस्म की कोई किताब लिखना है तो चमगादड़ की सरगुज़श्त लिख डालिये लेकिन फिर बड़ा आदमी बनने का दावा हर्गिज़ मत कीजिये" मौलाना एक सांस मे यह सब कुछ बक गये।

हम ने अपने ग़ुस्से को जब्त करते हुए मुलायमियत से कहा। "मौलाना आप ख़फ़ा क्यों हुए जा रहे हैं। आपके बताए हुए बहुत से काम अगरचे अभी तक नहीं किये गए हैं लेकिन वह मुस्तक़बिल[2] क़रीब में किए जा सकते हैं"

"मसलन"

ज़हानत के काम किए जा सकते हैं। मार खाई जा सकती है। इलेक्शन लड़ा जा सकता है। जुलूस निकाला जा सकता है। चंदा वसूल करके दिखाया जा सकता है और इदारा क़ायम किया जा सकता है। जेल की ज़ियारत की जा सकती है। औरत को भगाया जा सकता है। किसी नई ईजाद को अपने नाम से मंसूब किया जा सकता है। क़ाबिल ज़ब्ती किताब लिखी जा सकती है। वग़ैरह वग़ैरह।

मैं कब कहता हूँ कि बड़े आदमियों वाला कोई काम करने से आप क़ासिर हैं। लेकिन अपनी सवानेह हयात लिखने तो आप अब जा रहे हैं और इस में दर्ज किये जाने वाले वाक़यात आपसे सरज़द होंगे मुस्तक़बिल बईद में। सवानेह हयात को भी पंच–साला प्लान समझ लिया है आपने?

1. छोटी, छिछोरी 2. भविष्य

سمجھ لیا ہے آپ نے؟ اور پھر آپ کا بچپن اور جوانی کا زمانہ تو نا قابل اصلاح طور سے بگڑ چکا''؟

مولانا کا آخری اہانت آمیز جملہ ہمارے لیے نا قابل برداشت تھا۔ لہٰذا ہم نے غصے سے کہا ''کیا مطلب آپ کا اس سے کہ ہمارے بچپن اور جوانی کا زمانہ نا قابل اصلاح طور پر بگڑ چکا؟''

''مطلب یہ کہ جب بچپن میں آپ کو چھوٹے موٹے معجزات دکھانا چاہیے تھا تب تو آپ صرف اکنیاں اور امرود کھا رہے تھے۔ جوانی میں جب آپ کو کوئی خطرناک قسم کا عشق کرنا چاہیے تھا تب آپ صرف رسمی شادی کر رہے تھے۔ جب آپ کو جلسے جلوس بلکہ جیل میں ہونا چاہئے تھا تب تو آپ میاں پوت بنے گھر میں کبوتروں کو دانہ کھلا رہے تھے۔ اب آپ نے جب بنیاد ہی نہیں ڈالی تو اوپر مکان کس بوتے پر بنائیے گا؟ بڑا آدمی تو بچپن سے بڑا آدمی ہونا شروع ہو جاتا ہے۔ ایک دم سے کسی کو بڑا بنتے میں نے آج تک نہ دیکھا نہ سنا۔''

''لیکن مولانا آپ بڑا آدمی ہونے کے لیے جن لوازمات کو ضروری سمجھتے ہیں میں ان کو انتہائی لغو اور مہمل سمجھتا ہوں۔ اس کے تو یہ معنی ہوئے کہ کوئی شریف آدمی ایک بڑا آدمی ہو ہی نہیں سکتا۔''

''دیکھیے آپ مجھے غلط سمجھنے کی کوشش مت کیجیے۔ میں نے آپ کو بڑے آدمیوں کے نہیں بڑے آدمیوں کی سوانح حیات کے لوازمات بتائے ہیں۔''

''تو کیا بڑے آدمیوں کی حقیقی زندگی ان کی سوانح حیات کی زندگی سے مختلف ہوتی ہے؟''

ضبط کی کوشش کے باوجود ایک بھیانک قہقہہ مولانا کے منہ سے دغ ہی تو گیا۔

''اجی میں تو خود نوشت سوانح حیات کو افسانوی ادب کی اعلیٰ ترین صنف سمجھتا ہوں۔ جب سے مجھے سوانح حیات پڑھنے کا چسکا لگا ہے میں نے ناول اور افسانے پڑھنا قطعاً بند کر دیا ہے۔ نہیں معلوم کتنی سوانح حیات پڑھ چکا ہوں بلکہ سچ پوچھیے تو یہ کتابوں کی دکان اسی بے ہودہ شوق کا ایک شاخسانہ ہے۔''

और फिर आपका बचपन और जवानी का ज़माना तो नाक़बिले–इस्लाह तौर से बिगड़ चुका?"

मौलाना का आख़िरी अहानत–आमेज़ जुमला हमारे लिए नाक़ाबिले–बर्दाश्त था। लिहाज़ा हमने गुस्से से कहा "क्या मतलब आपका इससे कि हमारे बचपन और जवानी का ज़माना नाक़बिले–इस्लाह तौर पर बिगड़ चुका?"

"मतलब यह कि जब बचपन में आपको छोटे मोटे मोअजेज़ात[1] दिखाना चाहिए था तब तो आप सिर्फ़ इकन्नियाँ और अमरुद खा रहे थे। जवानी में जब आप कोई ख़तरनाक क़िस्म का इश्क़ करना चाहिए था तब आप सिर्फ़ रस्मी शादी कर रहे थे। जब आपको जलसे जलूस बल्कि जेल में होना चाहिए था तब तो आप मियाँ पूत बने घर में कबूतरों को दाना खिला रहे थे। अब आप ने जब बुनियाद ही नहीं डाली तो ऊपर मकान किस बूते पर बनाइयेगा? बड़ा आदमी तो बचपन से बड़ा आदमी होना शुरु हो जाता है। एक दम से किसी को बड़ा बनते मैंने आज तक न देखा न सुना।"

"लेकिन मौलाना आप बड़ा आदमी होने के लिए जिन लवाज़मात को ज़रुरी समझते हैं उनको इन्तहाई लग्व और मोहमल समझता हूँ। इसके तो यह मानी हुए कि कोई शरीफ़ आदमी एक बड़ा आदमी हो ही नहीं सकता।"

"देखिए आप मुझे ग़लत समझने की कोशिश मत कीजिये। मैंने आपको बड़े आदमियों के नहीं बड़े आदमियों की सवानेह–हयात के लवाज़मात बताए हैं।"

"तो क्या बड़े आदमियों की हक़ीक़ी ज़िन्दगी उनकी सवानेह–हयात की ज़िन्दगी से मुख़्तलिफ़ होती है?"

ज़ब्त की कोशिश के बावजूद एक भयानक क़हक़हा मौलाना के मुँह से दग़ ही तो गया।

"अजी मैं तो ख़ुदनविश्त सवानेह हयात को अफ़ासनवी अदब की आला तरीन सिन्फ़[2] समझता हूँ। जब से मुझे सवानेह हयात पढ़ने का चस्का लगा है मैंने नॉवेल और अफ़साने पढ़ना क़तअन बंद कर दिया है। नहीं मालूम कितनी सवानेह हयात पढ़ चुका हूँ बल्कि सच पूछिये तो यह किताबों की दूकान इसी बेहूदा शौक़ का एक शाख़साना है।"

1. चमत्कार 2. विधा

"واہ مولانا! آپ اس شوق کو بے ہودہ شوق فرماتے ہیں۔ کسی شاعر نے سچ کہا کہ بڑے آدمیوں کی سوانح حیات ہمیں سکھاتے ہیں کہ ہم اپنے آپ کو کیسے بڑا بنا سکتے ہیں؟"

"اجی توبہ کیجیے! بڑے آدمیوں کی سوانح حیات ہمیں یہ سکھاتے ہیں کہ چھوٹوں کا بڑا بن جانا مشکل ہی نہیں ناممکن ہے۔"

"مولانا کیا آپ ہمیشہ اس طرح پہیلیوں میں گفتگو کرتے ہیں؟"

"اجی اس موضوع پر مجھ سے گفتگو کرنے سے پہلے آپ دس بیس سوانح حیات پڑھ ڈالیے تاکہ اصل حقیقت آپ پر خود روشن ہو جائے۔"

ہم نے مولانا فروغ احمد کے مشورے پر عمل کرتے ہوئے انھیں سے مستعار لے کر بہت سے بڑے آدمیوں کی سوانح عمریاں پڑھ ڈالیں۔ ان کو پڑھ کر ہم نے جو عبرت حاصل کی ہے اس سے ہم اپنے عزیزوں اور دوستوں کو محروم نہیں رکھنا چاہتے۔

بڑا آدمی پیدا ہوتے ہی اپنے بڑکپن کے جوہر دکھانا شروع کر دیتا ہے۔ وہ کسی جھاڑی یا نالی میں گرتا ہے تو اسے باہر نکالنے سے پیشتر لوگ اس پر یہ انگلی اٹھاتے ہیں "دیکھو یہی لڑکا ایک دن بڑا آدمی بنے گا۔" بڑے آدمی کی پیدائش کے بعد اس کے والدین میں سے دونوں یا کوئی ایک بہت جلد مر جاتا ہے اور اگر نہیں مرتا ہے تو بڑے آدمی سے بچھڑ ضرور جاتا ہے یا اپنی دوسری مصروفیات کی بنا پر بڑے آدمی سے بے تعلق رہتا ہے۔ سوانح حیات میں اس قسم کی رنگ آمیزی غالباً یوں ضرور سمجھی جاتی ہے تاکہ بڑا آدمی اپنے والدین کا ضرورت سے زیادہ احسان مند نہ ہونے پائے اور وہ اس کے بڑکپن میں اپنا کوئی حصہ نہ بتانے لگیں۔ بڑے آدمی کا بچپن انتہائی عسرت اور بے چارگی میں گزرتا ہے۔ اور اگر وہ شومئی قسمت سے کسی امیر گھرانے میں پیدا ہوا ہو تو وہ غریبوں اور مفلسوں کی حالت زار پر بچپن ہی سے آہ وزاری کرنے لگتا ہے تاکہ سند رہے اور وقت ضرورت کام آئے۔ اس کا نام اسکول میں لکھا جاتا ہے تو یا تو وہ اپنے درجے میں اول آتا ہے اور یا سب سے آخر میں۔ درمیان میں اپنے لیے کوئی عمومی جگہ بنانا وہ اپنی بڑی توہین سمجھتا ہے۔ یوں تو کون بچہ ہوگا جو اپنے طفلانہ اشتیاق سے اپنے بزرگوں سے الٹے سیدھے سوالات نہ پوچھتا ہو لیکن بڑا

"वाह मौलाना! आप इस शौक़ को बेहूदा शौक़ फ़रमाते हैं। किसी शायर ने सच कहा कि बड़े आदमियों की सवानेह हयात हमें सिखाते हैं कि हम अपने आपको कैसे बड़ा बना सकते हैं?"

"अजी तौबा कीजिये! बड़े आदमियों की सवानेह हयात हमें यह सिखाते हैं कि छोटों का बड़ा बन जाना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है।"

"मौलाना क्या आप हमेशा इस तरह पहेलियों में गुफ़्तगू करते हैं?"

अजी इस मौज़ू पर मुझसे गुफ़्तगू करने से पहले आप दस–बीस सवानेह हयात पढ़ डालिये ताकि असल हक़ीक़त आप पर ख़ुद रौशन हो जाय।"

हमने मौलाना फ़रोग़ अहमद के मशवरे पर अमल करते हुए उन्हीं से मुस्तआर[1] लेकर बहुत बड़े आदमियों की सवानेह उम्रियाँ पढ़ डालीं। उनको पढ़कर हमने जो इबरत हासिल की है उससे हम अपने अज़ीज़ों और दोस्तों को महरुम नहीं रखना चाहते।

बड़ा आदमी पैदा होते ही अपने बड़कपन के जौहर दिखाना शुरु कर देता है। वह किसी झाड़ी या नाली में गिरता है तो उसे बाहर निकालने से पेशतर लोग उस पर यह उंगली उठाते है "देखो यही लड़का एक दिन बड़ा आदमी बनेगा।" बड़े आदमी की पैदाइश के बाद उसके वालदैन में से दोनों या कोई एक बहुत जल्द मर जाता है और अगर नहीं मरता है तो बड़े आदमी से बिछड़ ज़रुर जाता है या अपनी दूसरी मसरुफ़ियात की बिना पर बड़े आदमी से बेतअल्लुक़ रहता है। सवानेह हयात में इसी क़िस्म की रंग आमेज़ी ग़ालेबन यूँ ज़रुर समझी जाती है ताकि बड़ा आदमी अपने वालदैन का ज़रुरत से ज़्यादा एहसानमंद न होने पाए और वह इसके बड़कपन में कोई हिस्सा न बटाने लगें। बड़े आदमी का बचपन इन्तहाई उसरत[2] और बेचारगी में गुज़रता है। और अगर वह शोमिए–क़िसमत[3] से किसी अमीर घराने में पैदा हुआ हो तो वह ग़रीबों और मुफ़लिसों की हालते–ज़ार पर बचपन ही से आहो–ज़ारी करने लगता है ताकि सनद रहे और वक़्त ज़रुरत काम आये। उसका नाम स्कूल में लिखा जाता है तो या तो वह अपने दर्जे में अव्वल आता है और या सब से आख़िर में। दरमियान में अपने लिए कोई उमूमी जगह बनाना वह अपनी तौहीन समझता है। यूँ तो कौन बच्चा होगा जो अपने तिफ़्लाना इश्तियाक़ से अपने बुज़ुर्गों से उल्टे सीधे सवालात न पूछता हो लेकिन बड़ा आदमी अपने बचपन में जो सवालात पूछता है उनकी

1. उधार 2. ग़रीबी 3. दुर्भाग्य

آدمی اپنے بچپن میں جو سوالات پوچھتا ہے اُن کی کچھ شان ہی نرالی ہوتی ہے اور وہ اس کی آیندہ زندگی کی صاف غمازی کرتے نظر آتے ہیں۔ مثلاً اگر وہ اپنی ماں سے کسی نووارد بھائی بہن کے متعلق پوچھتا ہے "ممی تم یہ روتا بچہ بازار سے کیوں خرید لائیں؟" تو سوانح نویس کو فوراً معلوم ہو جاتا ہے کہ بڑا آدمی اپنی ماں کو در پردہ ضبط تولید کی تعلیم دے رہا تھا یا جب بڑا آدمی کسی تتلی کو پکڑ کر اپنے کسی ساتھی سے کہتا ہے "دیکھو یہ ننھا سا ہوائی جہاز ہے۔" تو سوانح نویس کو صاف پتا چل جاتا ہے کہ بڑا آدمی صوبہ کا وزیر ہوگا اور حکومت کے خرچ سے ہوائی جہاز کا سفر کرے گا۔

جوانی آتے ہی بڑے آدمی کی معروفیتیں بڑی تیزی سے بڑھنا شروع ہو جاتی ہیں۔ پہلے تو وہ عشق سے دوچار ہوتا ہے اگر شادی ہو گئی ہو تو خیر، ورنہ عمر بھر کے لیے بڑا آدمی ایک زخم جگر اپنے پیٹ میں چھپائے پھرتا ہے۔ جلسے، جلوس، اور ہنگاموں کے درمیان دخل در معقولات دینے کا بڑے آدمی کو خاص ملکہ ہوتا ہے۔ لاٹھی چارج کی پہلی لاٹھی اسی کے سر پر لگتی ہے اور جیل میں سرکاری مہمان ہونے کی غرض سے سب سے پہلے اسی کا نمبر آتا ہے البتہ گولی چلنے کے وقت اُس کے کان کچھ سکڑ جاتے ہیں اور گولی اس کے کان کے پاس سے نکلتی ہوئی کسی گم نام والنٹیر کے لگ جاتی ہے اور وہ بیچارہ خس کم جہاں پاک کا مصداق بن جاتا ہے۔ بڑے آدمی کی جوانی میں کی ہوئی پیش گوئیاں اس کے بڑھاپے میں سو فی صدی صحیح ثابت ہوتی ہیں، اس کی رائے ہمیشہ اس کے دیگر، ہم عصروں سے نرالی ہوتی ہے اور اگر وہ کسی وجہ سے غلط ثابت ہوتی ہیں تو اس میں حالات اور متعلقہ لوگوں ہی کا قصور زیادہ ہوتا ہے۔ اس کے دوست کم اور دشمن زیادہ ہوتے ہیں۔ وہ پرلے درجے کا ابن الوقت اور موقع شناس ہوتا ہے اور زمانے کی ہر نئی کروٹ اس کے لیے ترقی کا ایک نیا زینہ ثابت ہوتا ہے۔

اور پھر جب جوانی کی ارتقائی منزلیں طے کر کے بڑا آدمی ایک مسلم الثبوت بڑا آدمی بن جاتا ہے تو اس سے بڑائی کے آثار خود بخود نمایاں ہونا شروع ہو جاتے ہیں۔ وہ بہادر، دلیر، منہ پھٹ، حاضر جواب، مخیر، پرخلوص اور نہیں معلوم کیا کیا کچھ ہونا شروع ہو جاتا ہے اور اس کے ہر قول و فعل سے بڑائی ٹپکنے لگتی ہے اور وہ اس تلخ حقیقت سے بالکل ہی بے

कुछ शान ही निराली होती है और वह उसकी आइन्दा ज़िन्दगी की साफ़ ग़म्माज़ी[1] करते नज़र आते हैं। मसलन अगर वह अपनी माँ से किसी नौवारिद भाई बहन के मुतअल्लिक़ पूछता है "मम्मी तुम यह रोना बच्चा बाज़ार से क्यों ख़रीद लाईं?" तो सवानेह नवीस को फ़ौरन मालूम हो जाता है कि बड़ा आदमी माँ को दर पर्दा ज़ब्ते–तौलीद[2] की तालीम दे रहा था या जब बड़ा आदमी किसी तितली को पकड़ कर अपने किसी साथी से क. ता है "देखो यह मुन्ना सा हवाई जहाज़ है," तो सवानेह नवीस को साफ़ पता चल जाता है कि बड़ा आदमी सूबे का वज़ीर होगा और हुकूमत के ख़र्च से हवाई ज़हाज़ का सफ़र करेगा।

जवानी आते ही बड़े आदमी की मसरुफ़ियतें बड़ी तेज़ी से बढ़ना शुरु हो जाती हैं। पहले तो वह इश्क़ से दोचार होता है अगर शादी हो गई हो तो ख़ैर, वरना उम्र भर के लिए बड़ा आदमी एक ज़ख़्मे–जिगर अपने पेट में छिपाये फिरता है। जलसे, जुलूस, और हंगामों के दरमियान दख़्ल दर माक़ूलात देने का बड़े आदमी को ख़ास मल्का होता है। लाठी चार्ज की पहली लाठी उसी के सर पर लगती है और जेल में सरकारी मेहमान होने की ग़रज़ से सब से पहले उसी का नम्बर आता है अलबत्ता गोली चलने के वक़्त उसके कान कुछ सिकुड़ जाते हैं और गोली उसके कान के पास से निकलती हुई किसी गुमनाम वॉलेंटियर के लग जाती है और वह बेचारा ख़सकम जहाँ पाक का मिस्दाक़ बन जाता है। बड़े आदमी की जवानी में की हुई पेशगोईयाँ उसके बुढ़ापे में सौ फ़ीसदी सही साबित होती हैं, उसकी राय हमेशा उसके दीगर, हमअस्रों से निराली होती है और अगर वह किसी वजह से ग़लत साबित हुई तो उसमें हालात और मुताअल्लेक़ा लोगों ही का क़ुसूर ज़्यादा होता है। उसके दोस्त कम और दुश्मन ज़्यादा होते हैं। वह परले दर्जे का इब्नुलवक़्त और मौक़ा–शनास होता है और ज़माने की हर नई करवट उसके लिए तरक़्क़ी का एक नया ज़ीना साबित होती है।

और फिर जब जवानी की इरतक़ाई मंज़िलें तय करके बड़ा आदमी एक मुसल्लमुस्सुबूत बड़ा आदमी बन जाता है तो उस से बड़ाई के आसार ख़ुद नुमायाँ होना शुरु हो जाते हैं वह बहादुर, दिलेर, मुँहफट, हाज़िर जवाब, मुख़य्यर[3], पुरख़ुलूस और नहीं मालूम क्या क्या कुछ होना शुरु हो जाता है और उसके हर क़ौलो–फ़ेल से बड़ाई टपकने लगती है और वह इस तल्ख़–हक़ीक़त से बिल्कुल ही बे परवा और बेगाना नज़र आता है –

1. अभिव्यक्ति 2. परिवार नियोजन 3. दानी

پروا اور بے گانہ نظر آتا ہے۔

ع کہ خونِ صد ہزار انجم سے ہوتی ہے سحر پیدا

وہ اپنے بڑائی کے منصب تک پہنچنے میں کسی دوسرے کی اعانت یا ہمت افزائی کے اظہار کو اپنے لیے انتہائی قابل شرم سمجھتا ہے۔

بڑے آدمیوں کی سوانح حیات میں سب سے قابل توجہ بات یہ ہوتی ہے کہ وہ جس کام میں بھی ہاتھ ڈالتا ہے اس کا مرکزی کردار بن جاتا ہے۔ مثلاً اگر ایام طفولیت میں وہ کسی جلسے میں رضا کار کے فرائض انجام دے رہا تھا تو اس جلسے کا سب سے سنسنی خیز واقعہ جناب صدر کے قریب نہیں بلکہ ٹھیک اُس جگہ پر رونما ہوگا جہاں ہمارا مستقبل کا لیڈر کھڑا کچالو کھا رہا تھا۔

کہتے ہیں کہ تین اشخاص جو جلد ہی بڑے آدمی بننے والے تھے۔ ایک ساتھ ایک ریل کے ڈبے میں سفر کر رہے تھے۔ پہلے نے کہا ''اب اگلا اسٹیشن قریب ہی ہے!'' دوسرے نے کہا ''بھوک لگی ہے'' تیسرے نے کہا ''اب اگلے اسٹیشن پر ہی کھانا کھائیں گے۔'' اس ایک واقعہ کو ان تینوں نے بعد میں اپنی اپنی سوانح حیات میں یوں لکھا۔ پہلا ''ہمارے گروہ پر خواب غفلت چھایا ہوا تھا۔ میں پہلا شخص تھا جس نے اپنے ساتھیوں کی توجہ اس حقیقت کی طرف مبذول کرائی کہ ایک بج رہا ہے اور ہمیں اب کوئی عملی کام یعنی اپنے کھانے پینے کی فکر کرنا چاہیے۔'' دوسرا ''جی ہاں میں اور صرف میں وہ پہلا شخص تھا جس نے موقع کی نزاکت کا احساس کرتے ہوئے خطرے کی گھنٹی سب سے پہلے بجائی اور تائید اور تردید سے بے نیاز ہو کر صاف صاف کہہ دیا کہ ہمارا واقعی مطالبہ کیا ہے یعنی ہمیں بھوک لگی ہے!'' تیسرا ''ہمارے گروہ کے سامنے تجاویز تو بہت تھیں لیکن انھیں عملی جامہ پہنانے کے لیے کوئی واضح پروگرام ہرگز نہیں تھا۔ میں نے وقت کے تقاضے کو سمجھ لیا اور اپنے ساتھیوں کے سامنے ایک انتہائی آسان راہ عمل کا دروازہ کھول دیا یعنی انھیں سمجھایا کہ اگلا اسٹیشن قریب ہے اور وہاں ہم اپنا پیٹ بھر سکتے ہیں۔ یہ صرف میری ہی قیادت کا طفیل تھا کہ میرا گروہ فاقے کی موت سے بال بال بچ گیا۔''

اب ہم نے اپنی خودنوشت سوانح حیات کا خیال چھوڑ کر مولانا فروغ احمد کی سوانح

कि ख़ूने-सद हज़ार अंजुम से होती है सहर पैदा·

वह अपने बड़ाई के मन्सब तक पहुँचने में किसी दूसरे की अयानत या हिम्मत अफ़ज़ाई के इज़हार को अपने लिए इन्तहाई क़ाबिले-शर्म समझता है।

बड़े आदमियों की सवानेह हयात में सब से क़ाबिले तवज्जो बात यह होती है कि वह जिस काम में भी हाथ डालता है उसका मरकज़ी किरदार बन जाता है। मसलन अगर अय्यामे-तिफ़ूलि़यत[1] में वह किसी जलसे में रज़ाकार[2] के फ़रायज़ अन्जाम दे रहा था तो उस जलसे का सब से सनसनीख़ेज़ वाक़या जनाब सद्र के क़रीब नहीं बल्कि ठीक उस जगह पर रुनुमा होगा जहाँ हमारा मुस्तक़बिल का लीडर खड़ा कचालू खा रहा था।

कहते हैं कि तीन अशख़ास जो जल्द ही बड़े आदमी बनने वाले थे एक साथ एक रेल के डिब्बे में सफ़र कर रहे थे। पहले ने कहा "अब अगला स्टेशन क़रीब ही है!" दूसरे ने कहा "भूख लगी है" तीसरे ने कहा "अब अगले स्टेशन पर ही खाना खायेंगे।" एक इस वाक़ए को इन तीनों ने बाद में अपनी अपनी सवानेह हयात में यूँ लिखा। पहला "हमारे गिरोह पर ख़्वाबे-ग़फ़लत छाया हुआ था। मैं पहला शख़्स था जिसने अपने साथियों की तवज्जो इस हक़ीक़त की तरफ़ मब्जूल कराई कि एक बज रहा है और हमें अब कोई अमली काम यानी अपने खाने पीने की फ़िक्र करना चाहिए।" दूसरा "जी हाँ मैं और सिर्फ़ मैं वह पहला शख़्स था जिसने मौक़े की नज़ाकत का एहसास करते हुए ख़तरे की घंटी सब से पहले बजाई और ताईद और तरदीद से बे नयाज़ होकर साफ़-साफ़ कह दिया कि हमारा वाक़ई मोतालबा क्या है यानी हमें भूख लगी है!" तीसरा "हमारे गिरोह के सामने तजावीज़ तो बहुत थीं लेकिन उन्हें अमली जामा पहनाने के लिए कोई वाज़ेह प्रोग्राम हर्गिज़ नहीं था। मैंने वक़्त के तक़ाज़े को समझ लिया और अपने साथियों के सामने एक इन्तहाई आसान राहे-अमल का दरवाज़ा खोल दिया यानी उन्हें समझाया कि अगला स्टेशन क़रीब है और वहाँ हम अपना पेट भर सकते हैं। यह सिर्फ़ मेरी ही क़यादत के तुफ़ैल था कि मेरा गिरोह फ़ाक़े की मौत से बाल-बाल बच गया।"

अब हमने अपनी ख़ुदनविश्त सवानेह हयात का ख़याल छोड़कर मौलाना फ़रोग़ अहमद की सवानेह हयात लिखने का बेड़ा उठाया है और

1. बचपन 2. कार्यकर्ता

حیات لکھنے کا بیڑا اٹھایا ہے اور ان کے بوسیدہ بچپن، سڑے ہوئے رومانوں، فراری زہد اور دیگر پوست کندہ حالات کی تحقیق اور تلاش میں لگے ہوئے ہیں اور یقیناً بہت جلد افسانوی ادب میں یا پھر جیل اور اسپتال کی آبادی میں ایک گراں قدر اضافہ ہونے والا ہے۔

00000000

उनके बोसीदा बचपन, सड़े हुए रुमानों, फ़रारी ज़ोह्द और दीगर पोस्तकन्दा[1] हालात की तहक़ीक़ और तलाश में लगे हुए हैं और यक़ीनन बहुत जल्द अफ़सानवी अदब में या फिर जेल और अस्पताल की आबादी में एक गराँक़द्र इज़ाफ़ा होने वाला है।

ooooooooo

1. खाल पर लिखे

عبدالمجیب سہالوی

تعزیت

ہمارا خیال ہے کہ مرنے سے زیادہ مرنے والے کی تعزیت مشکل ہے کیوں کہ موت تو بن بلائے ہنستی ہوئی خود گھر پر آجاتی ہے اور تعزیت کے لیے منھ لٹکائے ہوئے دوسرے کے گھر جانا پڑتا ہے اور جانا ہی نہیں بلکہ مرحوم کی ''بےوقت موت'' کو (چاہے وہ نوے برس کی عمر ہی میں کیوں نہ ہوئی ہو) ایک ''ناقابل تلافی نقصان'' ثابت کرتے ہوئے ان کی فرضی خوبیوں کی فہرست اس تفصیل کے ساتھ گنانا ہوتی ہے کہ اگر مرحوم سُن لیں تو خود انھیں ہنسی آجائے اور انھیں اپنی موت پر رشک آنے لگے اس لیے کہ زندگی میں کسی کو کبھی ان کے حق میں ایک کلمۂ خیر کہنے کی توفیق نہ ہوئی اور موت کی بدولت آج انھیں تعزیت کرنے والوں کے منھ سے ایسے مدحیہ قصیدے سننے کو مل رہے ہیں کہ کیا کسی بادشاہ کو زندگی میں درباری شاعروں سے سننے کو ملے ہوں گے۔

تعزیت پرخلوص بھی ہوتی ہے اور رسمی بھی۔ مگر وہ چاہے رسمی ہو، چاہے مخلصانہ دونوں مشکل ہیں کیوں کہ اگر مرنے والے سے آپ کو خلوص تھا تو آپ کی حالت خود تعزیت کے لائق ہوگی اور ایسی حالت میں آپ تعزیت کرنے جائیں گے تو آپ مرحوم کے پس ماندگان کو تسلی دینے کے بجائے خود رونے لگیں گے جیسا کہ شاعر نے کہا ہے۔

अब्दुल मुजीब सहाल्वी

ताज़ियत[1]

हमारा ख़याल है कि मरने से ज़्यादा मरने वाले की ताज़ियत मुश्किल है क्योंकि मौत तो बिन बुलाये हंसती हुई ख़ुद घर पर आ जाती है और ताज़ियत के लिए मुँह लटकाये हुए दूसरे के घर जाना पड़ता है और जाना ही नहीं बल्कि मरहूम की "बे वक़्त मौत" को (चाहे वह नौव्वे वर्ष की उम्र ही में क्यों न हुई हो) एक "नाक़ाबिले–तलाफ़ी नुक़सान" साबित करते हुए उनकी फ़र्ज़ी ख़ूबियों की फ़ेहरिस्त इस तफ़्सील के साथ गिनाना होती है कि अगर मरहूम सुन लें तो ख़ुद उन्हें हंसी आ जाय और उन्हें अपनी मौत पर रश्क आने लगे इसलिए कि ज़िन्दगी में किसी को भी उनके हक़ में एक कलमए–ख़ैर कहने की तौफ़ीक़ न हुई और मौत की बदौलत आज उन्हें ताज़ियत करने वालों के मुँह से ऐसे मदही क़सीदे[2] सुनने को मिल रहे हैं कि क्या किसी बादशाह को ज़िन्दगी में दरबारी शायरों से सुनने को मिले होंगे।

ताज़ियत पुरख़ुलूस भी होती है और रस्मी भी। मगर वह चाहे रस्मी हो, चाहे मुख़्लिसाना दोनों मुश्किल हैं क्योंकि अगर मरने वाले से आप को ख़ुलूस था तो आप की हालत ख़ुद ताज़ियत के लायक़ होगी और ऐसी हालत में आप ताज़ियत करने जायेंगे तो आप मरहूम के पसमांदगान को तसल्ली देने के बजाये ख़ुद रोने लगेंगे जैसा कि शायर ने कहा है –

1. किसी की मृत्यु पर उसके परिवार वालों को सांत्वना देना
2. तारीफ़

تسلی میں بھی تخمِ غم بو دیے
وہ سمجھاتے سمجھاتے خود رو دیے

اور اگر آپ رسمی طور پر اس خیال سے تعزیت کے لیے نکلے ہیں کہ ع

کیا خوب سودا نقد ہے اس ہاتھ دے اس ہاتھ لے

آج آپ جن کی تعزیت کے لیے جا رہے ہیں کل ان کے لڑکے آپ کی تعزیت کے لیے آئیں گے یا یہ مرحوم آپ کے کسی بزرگ کی موت پر آپ کے گھر تعزیت کے لیے آئے تھے تو ایسی صورت میں تعزیت کا کام مشکل تر ہو جاتا ہے کیوں کہ آپ دراصل تعزیت کرنے نہیں بلکہ اس تعزیتی قرض کو ادا کرنے جاتے ہیں جو آپ پر واجب الادا تھا۔ اور آپ جانتے ہیں کہ قرض کی ادائیگی کوئی آسان کام نہیں، خصوصیت کے ساتھ وہ قرض جو رتر کے میں ملا ہو۔ اور پھر اس قرض کا کیا کہنا جو روپیوں پیسوں کا نہیں، آنسوؤں اور غموں کا ہو۔ پیسے کا قرض تو ایک اُدھار لے کر دوسرے کو ادا کیا جا سکتا ہے لیکن آنسو نہ اُدھار لیے جا سکتے ہیں نہ دیے جا سکتے ہیں ان کے لیے تو ایکٹروں یا گویوں کی طرح ریاض کرنا ہوتا ہے۔ اسی لیے تعزیت ایک فن ہو گیا ہے اور ظاہر ہے کہ کسی فن کے حصول میں کتنے پاپڑ بیلنا پڑتے ہیں۔ خدا نظر بد سے بچائے، اگر آپ شاعر ہیں تو ایک اور مثال پیش کر دوں شاعر ہونے کی وجہ سے آپ جانتے ہی ہیں کہ سیروں خون تھوکنا پڑتا ہے تب جا کے شعر برآمد ہوتا ہے۔ بس یہی حال تعزیت کا ہے۔ گڑے مُردے اکھاڑنے پڑتے ہیں اپنے باپ دادا کی موت یاد کر کے انسو اکٹھا کرنے پڑتے ہیں اور پھر جب یہ سارے درد و غم جمع ہو جاتے ہیں تب جا کے کہیں تعزیت کا قرض ادا ہو پاتا ہے۔

قرض کے ذکر پر یاد آ گیا کہ تعزیت کرنے کی طرح قرض مانگنا بھی بڑے فنکار کا کام ہے۔ قرض اور تعزیت دونوں کے لیے منھ لٹکانا ضروری ہوتا ہے لیکن فرق صرف یہ ہوتا ہے کہ قرض کے لیے گھر سے نکلتے وقت منھ خود بخود لٹکا ہوتا ہے اور تعزیت کے لیے مرنے والے کے گھر پہنچ کر منھ لٹکانا پڑتا ہے۔ منھ کے خود لٹکے ہونے اور ارادتاً لٹکانے میں جو نازک فرق ہے اسے صرف حالات سے مجبور ہو کر قرض مانگنے والے کا ہی دل محسوس کر سکتا ہے، رسمی تعزیت کرنے والے کبھی محسوس نہیں کر سکتے۔ جہاں تک ہماری ذات کا

तसल्ली में भी तुख़्मे-ग़म[1] बो दिये
वह समझाते समझाते खुद रो दिये

अगर आप रस्मी तौर पर इस ख़याल से ताज़ियत के लिए निकले हैं कि –

क्या ख़ूब सौदा नक़्द है इस हाथ दे उस हाथ ले

आज आप जिन की ताज़ियत के लिए जा रहे हैं कल उनके लड़के आपकी ताज़ियत के लिए आयेंगे या यह मरहूम आपके किसी बुज़ुर्ग की मौत पर आपके घर ताजियत के लिए आये थे तो ऐसी सूरत में ताज़ियत का काम मुश्किल से मुश्किल तर हो जाता है क्योंकि आप दरअस्ल ताज़ियत करने नहीं बल्कि उस ताज़ियती क़र्ज़ को अदा करने जाते हैं जो आप पर वाजिबुलअदा था। और आप जानते हैं कि क़र्ज़ की अदायगी कोई आसान काम नहीं, खुसूसियत के साथ वह क़र्ज़ जो तर्के में मिला हो। और फिर उस क़र्ज़ का क्या कहना जो रुपयों पैसों का नहीं, आँसुओं और ग़मों का हो। पैसे का क़र्ज़ तो एक उधार लेकर दूसरे को अदा किया जा सकता है लेकिन आँसू न उधार लिए जा सकते हैं न दिए जा सकते हैं इनके लिए तो एक्टरों या गवय्यों की तरह रियाज़ करना होता है। इसी लिए ताज़ियत एक फ़न हो गया है और ज़ाहिर है कि किसी फ़न के हुसूल में कितने पापड़ बेलने पड़ते हैं। खुदा नज़रे-बद से बचाये, अगर आप शायर हैं तो एक और मिसाल पेश कर दूँ शायर होने की वजह से आप जानते ही हैं कि सेरों ख़ून थूकना पड़ता है तब जाके शेर बरामद होता है। बस यही हाल ताज़ियत का है। गड़े मुर्दे उखाड़ने पड़ते हैं अपने बाप दादा की मौत याद कर के आँसू इकट्ठा करने पड़ते हैं और फिर जब यह सारे दर्दो-ग़म जमा हो जाते हैं तब जाके कहीं ताज़ियत का क़र्ज़ अदा हो पाता है।

क़र्ज़ के ज़िक्र पर याद आया कि ताज़ियत करने की तरह क़र्ज़ मांगना भी बड़े फ़नकार का काम है। क़र्ज़ और ताज़ियत दोनों के लिए मुँह लटकाना ज़रुरी होता है लेकिन फ़र्क सिर्फ़ यह होता है कि क़र्ज़ के लिए घर से निकलते वक़्त मुँह खुद बखुद लटका होता है और ताज़ियत के लिए मरने वाले के घर पहुँच कर मुँह लटकाना पड़ता है। मुँह के खुद लटके होने और इरादतन लटकाने में जो नाज़ुक फ़र्क होता है उसे सिर्फ़ हालात से मजबूर होकर क़र्ज़ माँगने वाले का ही दिल महसूस कर सकता है, रस्मी ताज़ियत करने वाले कभी महसूस नहीं कर सकते। जहाँ तक हमारी ज़ात

1. ग़म के बीज

تعلق ہے قرض کی مصیبت بار بار برداشت کرنے کی وجہ سے ہمیں یہ فائدہ ہوا کہ ہمارے لیے تعزیت کی مشکل اس حد تک ضرور آسان ہوگئی ہے کہ ہمیں مرنے والے کے گھر پہنچ کر زبردستی روہانسا منہ نہیں بنانا پڑتا بلکہ ہماری صورت ہی اب روہانسی ہوگئی ہے۔ البتہ اگر کسی جگہ خلوص کی بنا پر زیادہ رقت طاری کرنے کی ضرورت ہوئی تو ہم تعزیت کے وقت قرض کی ادائیگی کا بھی تصور کر لیتے ہیں۔ اس طرح فاقہ مستی کا رنگ لانے کے خوف سے ہمارا چہرہ خاصا سوگوار ہو جاتا ہے اور مرنے والے کے پسماندگان کے دلوں پر ہمارے خلوص کا کافی اثر پڑتا ہے۔ حالاں کہ ہم جانتے ہیں کہ اس میں خلوص و ہمدردی سے زیادہ ہمارے حالات کو دخل ہے جنھوں نے ہمیں بغیر کسی خاص کوشش کے تعزیت جیسے مشکل فن میں اُن پیشہ ور تعزیت مندوں سے کہیں زیادہ کامیاب بنا دیا ہے جو اس تاک ہی میں بیٹھے رہتے ہیں کہ کوئی اللہ کو پیارا ہو اور وہ اپنے فن کے مظاہرے کے لیے پہنچ جائیں۔

آپ کہیے گا کہ یہ پیشہ ور تعزیت مند کیسے ہوتے ہیں۔ میرے خیال میں پیشہ ور تعزیت مند وہ ہیں جو ایک خاص بندھے ٹکے انداز میں تعزیتی تقریر کرتے ہیں اور اس تقریر کے دوران جگہ جگہ شعر بھی پڑھتے ہیں۔ مثلاً ع

حسرت ان غنچوں پہ ہے جو بن کھلے مُرجھا گئے

ایک پیشہ ور تعزیت مند، پُرسے میں پہنچتا ہے اور پہنچتے ہی زندگی کی بے ثباتی کا ذکر کرتا ہے کہ "مشیت ایزدی میں کیا چارہ ہے۔

موت سے کس کو رستگاری ہے　　　آج وہ کل ہماری باری ہے

"آدمی پانی کا بُلبلہ ہے، ایک دم کا ٹھکانا نہیں"۔ پھر آہ سرد بھرتے ہوئے شعر پڑھتا ہے۔

ہستی اپنی حباب کی سی ہے　　　یہ نمائش سراب کی سی ہے

"بھیا صبر کرو، جس کی امانت تھی اس نے لے لی۔ اپنا یہاں کیا ہے جس پر بھروسہ کیا جائے۔ سامان سو برس کے ہیں کل کی خبر نہیں، ہم کو بھی ایک دن اسی راہ پر جانا ہے۔ ہر ایک پر یہ دن آنے والا ہے ع

بہت آگے گئے، باقی جو ہیں تیار بیٹھے ہیں

صبر کرو صبر کے سوا چارہ کیا ہے۔

का ताअल्लुक़ है क़र्ज़ की मुसीबत बार–बार बर्दाश्त करने की वजह से हमें फ़ायदा यह हुआ कि हमारे लिए ताज़ियत की मुश्किल इस हद तक ज़रूर आसान हो गई है कि हमें मरने वाले के घर पहुँच कर ज़बरदस्ती रुहाँसा मुँह बनाना पड़ता है बल्कि हमारी सूरत ही अब रोहाँसी हो गई है। अलबत्ता अगर किसी जगह ख़ुलूस की बिना पर ज़्यादा रिक़्क़त तारी करने की ज़रुरत हुई तो हम ताज़ियत के वक़्त क़र्ज़ की अदायगी का भी तसव्वुर कर लेते हैं। इस तरह फ़ाक़ा मस्ती का रंग लाने के ख़ौफ़ से हमारा चेहरा ख़ासा सोगवार हो जाता है और मरने वाले के पसमान्दगान के दिलों पर हमारे ख़ुलूस का काफ़ी असर पड़ता है। हालाँकि हम जानते हैं कि इस में ख़ुलूसो हमदर्दी से ज़्यादा हमारे हालात को दख़्ल है जिन्होंने हमें बग़ैर किसी ख़ास कोशिश के ताज़ियत जैसे मुश्किल फ़न में उन पेशावर ताज़ियतमंदों से कहीं ज़्यादा कामयाब बना दिया है जो इस ताक में बैठे रहते हैं कि कोई अल्लाह को प्यारा हो और वह अपने फ़न के मुज़ाहरे के लिए पहुँच जायें।

आप कहियेगा कि यह पेशावर ताज़ियतमंद कैसे होते हैं। मेरे ख़याल में पेशावर ताज़ियतमंद वह हैं जो एक ख़ास बंधे–टके अंदाज़ में ताज़ियती तक़रीर करते हैं और उस तक़रीर के दौरान जगह–जगह शेर पढ़ते हैं। मसलन –

हसरत उन गुंचों पे है जो बिन खिले मुरझा गये

एक पेशावर ताज़ियतमंद पुरसे में पहुँचता है और पहुँचते ही ज़िन्दगी की बे सबाती का ज़िक्र करता है कि "मशीयते–एज़दी[1]" में क्या चारा है –

मौत से किसको रुस्तगारी है आज वह, कल हमारी बारी है

"आदमी पानी का बुलबुला है। एक दम का ठिकाना नहीं।" फिर आहे–सर्द भरता हुआ शेर पढ़ता है–

हस्ती अपनी हबाब की सी है यह नुमाइश सराब की सी है

"भय्या सब्र करो, जिसकी अमानत थी उसने ले ली। अपना यहाँ क्या है जिस पर भरोसा किया जाय। सामान सौ बरस के हैं कल की ख़बर नहीं, हम को भी एक दिन इसी राह पर जाना है। हर एक पर यह दिन आने वाला है –

बहुत आगे गये, बाक़ी जो हैं तैयार बैठे हैं

सब्र करो सब्र के सिवा चारा क्या है।

1. अल्लाह की मर्ज़ी

مجھے دیکھو۔ پانچ کو قبرستان پہنچا چکا ہوں لیکن مجھ کمبخت کو موت نہیں آئی۔ آہ! مگر موت مانگنے سے کب آتی ہے۔ اگر مانگے ملتی تو میں کب کا مر چکا ہوتا اور آج اپنے فضلو بھائی کے پُرسے کے لیے نہ آنا پڑتا۔ کیا کہوں مرحوم کی تصویر آنکھوں کے سامنے پھر رہی ہے۔ کیا ہنس مکھ آدمی تھے۔ بڑی سی بڑی مصیبت پڑے چہرے پر شکن نہ آتی تھی۔ پر دوسروں کی مصیبت نہ دیکھ سکتے تھے۔ جن کی موت پر تعزیت کے لیے گئے مگر تسلی دینے کے بجائے خود پھوٹ پھوٹ کر رونے لگے۔ لوگ پکڑ نہ لیتے تو پچھاڑ کھا کر گر پڑتے خدا مرحوم کو جوارِ رحمت میں جگہ دے آدمی کیا تھے فرشتہ تھے۔ کیا اخلاق تھا مرحوم کا۔ منہ سے پھول جھڑتے تھے۔ کبھی کسی کو کچی بات نہ کہی۔ صوم وصلوٰۃ کے ایسے پابند کہ ایک وقت کی نماز قضا نہ ہوئی (حالاں کہ مرحوم کو عید بقرعید کے علاوہ کسی نے مسجد کی طرف جاتے بھی نہیں دیکھا) چہرے پر نور برستا تھا۔ ہائے! آپ کو کیا صبر دلاؤں خود اپنا کلیجہ پھٹا جاتا ہے دل کو یقین نہیں آتا کہ وہ ہم سے جُدا ہو گئے۔ ایک وقت ملاقات نہ ہوتی تو چین نہ پڑتا۔ یہ مستقل جدائی کیوں کر برداشت ہوگی۔ مگر رونے سے کیا ہوگا آنسوؤں سے غم دُھلنے سے رہا صبر کرنا ہی ہے۔ صبر کا پھل میٹھا ہوتا ہے۔ اپنے کو سنبھالیے۔ روئیے نہیں رونے سے مرحوم کی روح کو رنج ہوگا۔ صبر کیجیے۔ دونوں وقت ملتے ہیں مرنے والا تو مر گیا اب لوٹ کر آنے والا نہیں۔''

مگر اب تعزیت زیادہ مشکل نہیں رہی اس لیے کہ فنِ تعزیت کے فن کاروں نے جیسا کہ آپ نے ابھی دیکھا اچھا خاصا تعزیتی لٹریچر رسمی تعزیت کرنے والوں کی آسانی اور سوگواروں کی پریشانی کے لیے فراہم کر دیا ہے جس میں مرحوم کی بے وقت موت کو ناقابل تلافی نقصان قرار دینے سے لے کر مرحوم کے جوارِ رحمت میں جگہ پانے کی توقع تک تمام مراحل کے لیے ڈھلے ڈھلائے جملے موجود ہیں۔ بس اب تعزیت کرنے والے کا کام صرف منہ بنا کر اور موقع بے موقع آہ سرد بھر کر انھیں جملوں کو بے دھڑک دُہرا دینا ہے۔

کلاکار نہیں تعزیت کار اپنے فن کی کامیابی اسی میں خیال کرتے ہیں کہ مرے پر سو دُرّے کے بہ طور غم نصیب پسماندگان کے سامنے مرنے والے کی پیدائش سے لے کر آخری ہچکی تک تمام واقعات پوری تفصیل کے ساتھ بار بار ایسے رقت آمیز لہجے میں

मुझे देखो। पाँच को क़ब्रिस्तान पहुँचा चुका हूँ लेकिन मुझ कमबख़्त को मौत नहीं आई। आह! मगर मौत माँगने से कब आती है। अगर माँगे मिलती तो मैं कब का मर चुका होता और आज अपने फ़ज़लू भाई के पुरसे के लिए न आना पड़ता। क्या कहूँ मरहूम की तस्वीर आँखों के सामने फिर रही है। क्या हंसमुख आदमी थे। बड़ी सी बड़ी मुसीबत पड़े चेहरे पर शिकन न आती थी। पर दूसरों की मुसीबत न देख सकते थे। मज्जन की मौत पर ताज़ियत के लिए गये मगर तसल्ली देने के बजाए ख़ुद फूट फूट कर रोने लगे। लोग पकड़ न लेते तो पछाड़ खाकर गिर पड़ते। ख़ुदा मरहूम को जवारे-रहमत में जगह दे आदमी क्या थे फ़रिश्ता थे। क्या एख़्लाक़ था मरहूम का। मुँह से फूल झड़ते थे। कभी किसी को कच्ची बात न कही। सोमो-सलात[1] के ऐसे पाबंद कि एक वक़्त की नमाज़ क़ज़ा न हुई (हालाँकि मरहूम को ईद बक़रीद के इलावा किसी ने मस्जिद की तरफ़ जाते भी नहीं देखा) चेहरे पर नूर बरसता था। हाय! आपको क्या सब्र दिलाऊँ ख़ुद अपना कलेजा फटा जाता है, दिल को यक़ीन नहीं आता कि वह हम से जुदा हो गये। एक वक़्त मुलाक़ात न होती तो चैन न पड़ता। यह मुस्तक़िल जुदाई क्योंकर बर्दाश्त होगी। मगर रोने से क्या होगा आँसुओं से ग़म धुलने से रहा, सब्र करना ही है। सब्र का फल मीठा होता है। अपने को संभालिए। रोइये नहीं, रोने से मरहूम की रुह को रंज होगा। सब्र कीजिये। दोनों वक़्त मिलते हैं, मरने वाला तो मर गया अब लौटकर आने वाला नहीं।"

मगर अब ताज़ियत ज़्यादा मुश्किल नहीं रही इसलिये क फ़ने-ताज़ियत के फ़नकारों ने जैसा कि आप ने अभी देखा अच्छा ख़ासा ताज़ियती लिटरेचर रस्मी ताज़ियत करने वालों का आसानी और सोगवारों की परेशानी के लिए फ़राहम कर दिया है जिस में मरहूम की बे वक़्त मौत को नाक़ाबिले तलाफ़ी नुक़सान क़रार देने से लेकर मरहूम के जवार-रहमत में जगह पाने की तवक़्क़ो तक तमाम मराहिल के लिए ढले-ढलाये जुमले मौजूद हैं। बस अब ताज़ियत करने वाले का काम सिर्फ़ मुँह बनाकर और मौक़ा बे मौक़ा आहे-सर्द भरकर उन्हीं जुमलों को बेधड़क दोहरा देना है।

कलाकार नहीं ताज़ियतकार अपने फ़न की कामयाबी उसी में ख़याल करते हैं कि मरे पर सौ दुर्रे के बतौर ग़म नसीब पसमांदगान के सामने मरने वाले की पैदाइश से लेकर आख़िरी हिचकी तक तमाम वाक़यात पूरी तफ़सील के साथ बार-बार ऐसे रिक़्क़त आमेज़ लहजे में

1. रोज़े-नमाज़ ।

دہرائیں کہ پسماندگان کے زخموں کو مندمل ہونے اور آنسوؤں کو خشک ہونے کا بالکل موقع نہ ملے اور دنیا کی بے ثباتی کا وہ نقشہ کھینچیں کہ ان کے دل میں صبر کا حوصلہ پیدا ہونے کے بجائے خودکشی کا جذبہ پیدا ہو جائے یا کم سے کم وہ شدّتِ غم سے بے قابو ہو کر سر پھوڑنے اور کوئیں میں پھاندنے کے لیے تیار ہو جائیں۔ چنانچہ کبھی کبھی تو بوڑھی بیوہ عورتوں کو کسی نوجوان بیوہ کی تعزیت کرتے وقت اس قسم کی تلقین کرتے بھی سُنا گیا ہے۔ ''رنڈاپے کی زندگی سے تو موت بہتر ہے۔ کوئی میرے دل سے پوچھے کہ میں نے بیوگی کے یہ بیس سال کیسے کاٹے ہیں۔ میرا بس چلتا تو میں بھی کچھ کھا کر مرحوم کے ساتھ مٹی میں مل جاتی''۔ گویا ان بیوہ بڑی بی کا مقصد یہ ہوتا ہے کہ نوجوان بیوہ کے لیے اب کوئی چارہ نہیں، سوائے اس کے کہ وہ زہر کی پڑیا منگا کر اپنی زندگی سے چھٹکارا حاصل کرلے۔ ایسا معلوم ہوتا ہے کہ ان بوڑھی بیواؤں کا کام صرف نووارد بیواؤں کو اپنی غلطی سے آگاہ کر کے انھیں خودکشی کے لیے آمادہ کرنا رہ گیا ہے۔

ایک مرتبہ میرے ایک قریبی دوست کے بچہ کا انتقال ہو گیا۔ پلوٹھی کا لڑکا تھا۔ ماں باپ دونوں کی آنکھ کا تارا۔ اس کے مرنے کا دونوں کو قدرتاً بڑا قلق ہوا۔ میں دورے پر گیا ہوا تھا۔ چار روز بعد جب واپس آیا تو بیگم سے اس سانحہ کی اطلاع ملی۔ سامان گھر پر ڈال، سیدھا دوست کے گھر روانہ ہو گیا۔ وہاں پہنچا تو دیکھا کہ ان کی روانگی کا انتظام ہے۔ کچھ سامان باہر رکھا ہے اور ایک تانگہ بھی کھڑا ہے۔ بہرحال میں نے آواز دی تو انھیں جھنجھلا کر زور سے یہ کہتے سنا کہ کہہ دو گھر پر نہیں ہیں۔ میں یہ بات سُن رہا تھا۔ پہلے تو میں سوچنے لگا کہ اب کیا کروں مگر پھر زور سے پکارا کہ ''بھائی'' میں ہوں سعید! یہ سنتے ہی وہ ڈیوڑھی میں آگئے اور لپٹ کر رونے لگے۔ میرا بھی دل بھر آیا مگر زبان سے تسلی اور تعزیت کی الفاظ نکلنے نہیں پائے تھے کہ دل نے بے ساختہ آواز دی ع

جس سے بڑھے بے تابیِ دل کی ایسی تسلی رہنے دے

زبان نے دل کے مشورے کو فوراً مان لیا کیوں کہ اُسے بارہا تجربہ ہو چکا تھا کہ نازک جذبات کی ترجمانی اس نے ہمیشہ خاموش رہ کر زیادہ اچھے طریقہ پر کی ہے۔ ہم دونوں تھوڑی دیر تک خاموش رہے۔ اس کے بعد میں نے بچہ کی بیماری اور موت کے متعلق

दोहरायें कि पसमांदगान के ज़ख़्मों को मुन्दमिल[1] होने और आँसुओं को खुश्क होने का बिल्कुल मौका न मिले और दुनिया की बेसबाती का वह नक़्शा खींचें कि उन के दिल में सब्र का हैसला पैदा होने के बजाए खुदकशी का ज़ज़्बा पैदा हो जाए या कम से कम वह शिद्दते–ग़म से बेक़ाबू होकर सर फोड़ने और कुएँ में फांदने के लिए तैयार हो जायें। चुनांचे कभी–कभी तो बूढ़ी बेवा औरतों को किसी नौजवान बेवा की ताज़ियत करते वक़्त इस क़िस्म की तल्क़ीन करते भी सुना गया है। "रंडापे की ज़िन्दगी से तो मौत बेहतर है। कोई मेरे दिल से पूछे कि मैं ने बेवगी के यह बीस साल कैसे काटे हैं। मेरा बस चलता तो मैं भी कुछ खाकर मरहूम के साथ मिट्टी में मिल जाती।" गोया उन बेवा बड़ी बी का मक़्सद यह होता है कि नौजवान बेवा के लिए अब कोई चारा नहीं, सिवाए इसके कि वह ज़हर की पुड़िया मंगाकर अपनी ज़िन्दगी से छुटकारा हासिल कर ले। ऐसा मालूम होता है कि इन बूढ़ी बेवाओं का काम सिर्फ़ नौवारिद बेवाओं को अपनी ग़लती से आगाह कर के उन्हें खुदकशी के लिए आमादा करना रह गया है।

एक मर्तबा मेरे एक क़रीबी दोस्त के बच्चे का इन्तक़ाल हो गया। पहलोठी का लड़का था। माँ बाप दोनों की आँख का तारा उसके मरने का दोनों को कुदरतन बड़ा क़लक़ हुआ। मैं दौरे पर गया हुआ था। चार रोज़ बाद जब वापस आया तो बेगम से इस सानहे की इत्तला मिली। सामान घर पर डाल, सीधा दोस्त के घर रवाना हो गया। वहाँ पहुँचा तो देखा कि उनकी रवानगी का इन्तज़ाम है। कुछ सामान बाहर रखा है और एक ताँगा भी खड़ा है। बहर हाल मैंने आवाज़ दी तो उन्हें झुंझलाकर ज़ोर से यह कहते सुना कि कह दो घर पर नहीं हैं। मैं यह बात सुन रहा था। पहले तो मैं सोचने लगा कि अब क्या करूँ मगर फिर ज़ोर से पुकारा कि "भाई" मैं हूँ सईद! यह सुनते ही वह ड्योढ़ी में आ गये और लिपट कर रोने लगे। मेरा भी दिल भर आया मगर ज़बान से तसल्ली और ताज़ियत की अल्फ़ाज़ नहीं निकलने पाये थे कि दिल ने बे साख़्ता आवाज़ दी –

जिससे बढ़े बेताबी दिल की ऐसी तसल्ली रहने दे

ज़बान ने दिल के मश्वरे को फ़ौरन मान लिया क्योंकि उसे बारहा तजुर्बा हो चुका था कि नाज़ुक जज़्बात की तर्जुमानी उसने हमेशा ख़ामोश रह कर ज़्यादा अच्छे तरीक़े पर की है। हम दोनों थोड़ी देर तक ख़ामोश रहे। उसके बाद मैंने बच्चे की बीमारी और मौत के मुतअल्लिक़

1. मिटना, भरना

کچھ پوچھنے کے بجائے ان کی روانگی کا سبب دریافت کرنا زیادہ مناسب خیال کیا۔ انھوں نے کہا کہ بچہ کی جدائی سے ہم دونوں کے دلوں پر جو گذری ہے اس کے متعلق کچھ کہنا ہی بے کار ہے لیکن ماں کی بُری حالت ہے۔ چار دن ہو گئے ہیں طرح طرح سے بہلانے کی کوشش کر رہا ہوں لیکن تعزیت کرنے والوں نے میری اور خاص طور پر میری بیوی کی زندگی تلخ کر دی ہے۔ میری ہزار کوششوں کے باوجود ان ظالموں نے ایک منٹ کے لیے غم بھلانے کی فرصت نہ دی اور جب میں نے محسوس کیا کہ تعزیت کرنے والی بیویاں رُلا رُلا کر بچہ کے ساتھ میری بیوی کو بھی قبرستان پہنچائے بغیر دم نہیں لیں گی تو میں نے فیصلہ کر لیا کہ تھوڑے دنوں کے لیے یہاں سے ہٹ جاؤں۔ چنانچہ ہم لوگ دو ہفتہ کے لیے پہاڑ پر جا رہے ہیں تا کہ ہمارے دُکھے دل نادان تعزیت کرنے والوں کی بیداد سے بچ سکیں اور زخموں کو مندمل ہونے کا موقع مل سکے ابھی وہ یہ جملہ پورا بھی نہ کر پائے تھے کہ میں نے دیکھا کہ ایک رکشا سڑک سے ان کے گھر کی طرف مڑ رہا ہے اور اس پر ایک برقعہ پوش خاتون بیٹھی ہیں۔ مجھے فوراً موقع کی نزاکت کا احساس ہوا اور میں نے دوڑ کر رکشے والے سے پوچھا ''کس کے یہاں جانا ہے'' اس کے جواب میں برقعہ پوش خاتون نے بھرائی ہوئی آواز میں میرے دوست کا نام لیا۔ میرا ماتھا ٹھنکا اور میں نے خیال کیا کہ اگر اس وقت یہ خاتون تعزیت کے لیے وہاں گئیں تو انھیں گھر واپس ہونے کے بجائے اسپتال نہ جانا پڑے۔ اس لیے میں نے منہ سکھا کر کہا کہ میں انہی کے گھر سے لوٹ رہا ہوں۔ اُن کی بیوی کی حالت زیادہ خراب ہو گئی تھی اس لیے میرے دوست انھیں لے کر ان کے میکے چلے گئے ہیں اور غالباً ایک ماہ بعد واپس آئیں۔ اس پر انھوں نے ایک سرد آہ بھر کر کہا کہ ہاں بیٹا ! مصیبت ایک طرف سے نہیں آتی۔ میں نے جلدی سے کہا جی ہاں ! دیکھئے نا چاروں طرف سے چلی آ رہی ہے۔ اس کے بعد وہ دل میں تعزیت کی تمنا لیے اپنے گھر واپس گئیں۔

• • • •

कुछ पूछने के बजाए उनकी रवानगी का सबब दरियाफ़्त करना ज़्यादा मुनासिब ख़याल किया। उन्होंने कहा कि बच्चे की जुदाई से हम दोनों के दिलों पर जो गुज़री है उस से मुतअल्लिक़ कुछ कहना ही बेकार है लेकिन माँ की बुरी हालत है। चार दिन हो गये हैं तरह तरह से दिल बहलाने की कोशिश कर रहा हूँ लेकिन ताज़ियत करने वालों ने मेरी और ख़ास तौर पर [illegible] बीवी की ज़िन्दगी तल्ख़ कर दी है। मेरी हज़ार कोशिशों के बावजूद इन ज़ालिमों ने एक मिनट के लिए ग़म भुलाने की फ़ुर्सत न दी और जब मैंने महसूस किया कि ताज़ियत करने वाली बीवियाँ रुला-रुला कर बच्चे के साथ मेरी बीवी को भी क़ब्रिस्तान पहुँचाये बग़ैर दम नहीं लेंगी तो मैंने फ़ैसला कर लिया कि थोड़े दिनों के लिए यहाँ से हट जाऊँ। चुनानचे हम लोग दो हफ़्ते के लिए पहाड़ पर जा रहे हैं ताकि हमारे दुखे दिल नादान ताज़ियत करने वालों की बेदाद से बच सकें और ज़ख़्मों को मुन्दमिल होने का मौक़ा मिले – अभी वह यह जुम्ला पूरा भी न कर पाये थे कि मैंने देखा कि एक रिक्शा सड़क से उनके घर की तरफ़ मुड़ रहा है और उस पर एक बुर्क़ापोश ख़ातून बैठी हैं। मुझे फ़ौरन मौक़े की नज़ाकत का एहसास हुआ और मैंने दौड़कर रिक्शे वाले से पूछा "किस के यहाँ जाना है" इसके जवाब में बुर्क़ापोश ख़ातून ने भर्राई हुई आवाज़ में मेरे दोस्त का नाम लिया। मेरा माथा ठनका और मैंने ख़याल किया कि अगर इस वक़्त यह ख़तून ताज़ियत के लिए वहाँ गईं तो उन्हें घर वापस होने के बजाए अस्पताल न जाना पड़े। इसलिए मैंने मुँह सुखाकर कहा कि मैं उन्हीं के घर से लौट रहा हूँ। उनकी बीवी की हालत ज़्यादा ख़राब थी इसलिए मेरे दोस्त उन्हें लेकर उनके मैके चले गये हैं और ग़ालेबन एक माह बाद वापस आयें। इस पर उन्होंने एक सर्द आह भरकर कहा कि हाँ बेटा! मुसीबत एक तरफ़ से नहीं आती। मैंने जल्दी से कहा जी हाँ। देखिये ना चारों तरफ़ से चली आ रही है। इसके बाद वह दिल में ताज़ियत की तमन्ना लिये अपने घर वापस गयीं।

● ● ● ●

فکر تونسوی

دل کی ڈائریاں

ایک جیب کترے کی ڈائری

پہلی اپریل ــــــ

آج اپریل فول تھا۔ اس لیے میں نے اپنی آتما سے کہا۔ ''اے مکند لال کی آتما! آج لوگ دوسرے کو فول بنائیں گے میں تمھیں بناؤں گا! اور میں نے بھگوے کپڑے پہنے ماتھے پر ماتھے سے بھی لمبا سیندوری تلک لگایا اور علاقے کے اس مشہور مندر میں چلا گیا، جس کے پجاری کی جیب پچھلے مہینے کاٹی تھی مجھے اس پجاری پر غصہ بھی بہت آیا تھا۔ کیوں کہ اس کی جیب میں سے کئی کھوٹے سکے نکلے تھے۔ نہ جانے لوگ پوجا کے لیے کھوٹے سکے کیوں چڑھاتے ہیں۔

جب میں مندر میں پہنچا تو عقیدت مندوں کی ایک بھیڑ لگی ہوئی تھی۔ بے اختیار جی چاہا جیب کاٹنے کا نادر موقع ہے۔ لیکن آتما نے مجھے فحش گالی دی کی تم مرد ہو یا سیاسی لیڈر؟ وعدہ کر کے ایفا نہیں کرتے۔ میں ٹھنڈی سانس بھر کر خاموش ہو گیا۔ اگر چہ مجھے آتما پر سخت طیش آیا کہ یہ کیسی ڈھیٹ ہے۔ ہر وقت انسان سے چمٹی رہتی ہے۔

شردھالوؤں کی بھیڑ کو چیر کر میں بھگوان کی مورتی کے سامنے جا کھڑا ہوا اندھی عقیدت کے ساتھ آنکھیں بند کر لیں (اگر چہ کبھی کبھی ایک آنکھ تھوڑی سی کھول کر چڑھاوے کے دھن کی طرف بھی دیکھ لیتا تھا) اور پھر بھگوان کی مورتی کے سامنے حلف لیا

फ़िक्र तौंसवी

दिल की डायरियाँ
एक जेबकतरे की डायरी

पहली अप्रैल–

आज अप्रैलफूल था। इसलिए मैंने अपनी आत्मा से कहा। "ऐ मुकुन्द लाल की आत्मा! आज लोग एक दूसरे को फूल बनाएँगे मैं तुम्हें बनाऊँगा! और मैंने भगवे कपड़े पहने माथे पर माथे से भी लम्बा तिलक लगाया और इलाक़े के उस मशहूर मन्दिर में चला गया, जिसके पुजारी की जेब पिछले महीने काटी थी। मुझे उस पुजारी पर गुस्सा भी बहुत आया था। क्योंकि उसकी जेब में कई खोटे सिक्के निकले थे। न जाने लोग पूजा के लिए खोटे सिक्के क्यों चढ़ाते हैं।

जब मैं मन्दिर में पहुँचा तो अक़ीदतमंदों की एक भीड़ लगी हुई थी। बे अख़्तियार जी चाहा जेब काटने का नादिर मौक़ा है। लेकिन आत्मा ने मुझे फुहश गाली दी कि तुम मर्द हो या सियासी लीडर? वादा करके ईफ़ा[1] नहीं करते। मैं ठंडी सांस भरकर ख़ामोश हो गया। अगरचे मुझे आत्मा पर सख़्त तैश आया कि यह कैसी ढीट है। हर वक़्त इंसान से चिमटी रहती है।

श्रद्धालुओं की भीड़ को चीर कर मैं भगवान की मूर्ती के सामने जा खड़ा हुआ। अंधी अक़ीदत के साथ आँखें बंद कर लीं (अगरचे कभी–कभी आँख थोड़ी सी खोलकर चढ़ावे के धन की तरफ़ भी देख लेता था) और फिर भगवान की मूर्ती के सामने हलफ़ लिया कि अगर मैं आइंदा किसी

---
1. पूरा, वफ़ा

کہ اگر میں آئندہ کسی کی جیب کاٹوں تو تم مجھے کانا یا بہرا دونوں بنا دینا! یہ حلف میں نے دل ہی دل میں لیا۔ کیونکہ بلند آواز میں لیتا تو اِرد گرد کھڑے ہوئے لوگ سن لیتے۔ انسان کو ایمان دار بنتے ہوئے بھی لوگوں سے شرم آتی ہے۔

حلف لینے کے بعد میں چڑھاوے کے لیے جیب سے پیسے نکالنے لگا تو یہ دیکھ کر حیران رہ گیا کہ میری جیب کٹ چکی تھی۔

اس کے بعد سارا دان اداس رہا۔ میں آتما کو فول بنانے نکلا تھا۔ لیکن آتما نے مجھے فول بنا دیا! میں نے آتما سے پوچھا۔ ''تم نے کیا حرکت کی؟ میں تو صرف تم سے اپریل فول کر رہا تھا۔ صدق دلی سے جیب کتری سے توبہ تھوڑے کر رہا تھا لیکن تم سو گئیں اور کوئی میری جیب ہی کاٹ کر لے گیا۔

آتما نے جواب دیا ''قہہ قہہ قہہ!!''

میں نے کہا ''شیم شیم شیم!!''

تین اپریل ـــــــ

مندر میں جس آدمی نے میری جیب کاٹی تھی آج اس کا پتہ چل گیا ہے جیب کتروں کے گرو نے جسے ہم سب ''جگی دادا'' کہتے ہیں مجھ سے ذکر کیا کہ آج کل مندروں میں ٹٹ پونجیے شردھالو جانے لگے ہیں۔ پرسوں ہمارے گروہ کے ایک جیب کترے شمبھو نے ایک بھگوے کپڑوں والے بھگت کی جیب کاٹی تو اس میں سے صرف سوا روپیہ اور ایک ادھ جلی بیڑی نکلی:۔ یہ کہہ کر جگی دادا قہقہہ مار کر ہنسا میرا ماتھا ٹھنکا کہ یہ سوا روپیہ اور ادھ جلی بیڑی تو میری جیب میں تھی۔ جی میں آئی کی دادا کے سامنے اعتراف کروں کہ وہ مجھ ذات شریف ہی کی جیب تھی۔ لیکن پھر یہ سوچ کر لرز اٹھا کی دادا اپنے چابک سے میری چمڑی ادھیڑ دے گا............ اپنے گروہ میں ہی خارج کر دے گا یہ فن جیب کتری کی توہین ہے کہ جیب کترے کی ہی جیب کٹ جائے۔ دادا مجھے ان کو لیفائیڈ کر دے گا۔ اس لیے اپنی ندامت کا زہر چپ چاپ پی گیا۔

البتہ مجھے شمبھو سالے پر بہت غصہ آیا کہ اس نے مجھے پہچانا کیوں نہیں

की जेब काटूँ तो तुम मुझे काना या बहरा दोनों बना देना! यह हलफ़ मैंने दिल ही दिल में लिया। क्योंकि बुलन्द आवाज़ में लेता तो इर्द-गिर्द खड़े हुए लोग सुन लेते। इन्सान को ईमानदार बनते हुए भी लोगों से शर्म आती है।

हलफ़ लेने के बाद मैं चढ़ावे के लिए जेब से पैसे निकालने लगा तो यह देखकर हैरान रह गया कि मेरी जेब कट चुकी थी।

इसके बाद सारा दिन उदास रहा। मैं आत्मा को फूल बनाने निकला था। लेकिन आत्मा ने मुझे फूल बना दिया! मैंने आत्मा से पूछा। "तुमने क्या हरकत की? मैं तो सिर्फ़ तुमसे अप्रैल फूल कर रहा था। सिद्क़[1] दिली से जेब कतरी से तौबा थोड़े कर रहा था लेकिन तुम सो गईं और कोई मेरी जेब ही काटकर ले गया।

आत्मा ने जबाव दिया "क़ह क़ह क़ह!!"

मैंने कहा "शेम शेम शेम!!"

तीन अप्रैल –

मन्दिर में जिस आदमी ने मेरी जेब काटी थी आज उसका पता चल गया है। जेब कतरों के गुरु ने जिसे हम सब "जगी दादा" कहते हैं मुझसे ज़िक्र किया कि आज कल मन्दिरों में टटपूंजिये श्रद्धालू जाने लगे हैं। परसों हमारे गिरोह के एक जेब कतरे शम्भू ने एक भगुए कपड़ों वाले भगत की जेब काटी तो उसमें सिर्फ़ सवा रुपया और एक
अधजली बीड़ी निकली। यह कहकर जगी दादा क़हक़हा मारकर हंसा मेरा माथा ठनका कि यह सवा रुपये और
अधजली बीड़ी तो मेरी जेब में थी। जी में आई कि दादा के सामने एतराफ़ करूँ कि वह मुझ ज़ाते-शरीफ़ ही की जेब थी। लेकिन फिर यह सोचकर लरज़ उठा की दादा अपने चाबुक से मेरी चमड़ी उधेड़ देगा......... अपने गिरोह से ही ख़ारिज कर देगा यह फ़न्ने-जेब कतरी की तौहीन है कि जेबकतरे की ही जेब कट जाय। दादा मुझे अनक्वालीफ़ाइड कर देगा। इसलिए अपनी निदामत का ज़हर चुपचाप
पी गया।

अलबत्ता मुझे शम्भू साले पर बहुत गुस्सा आया कि उसने मुझे पहचाना क्यों नहीं हालाँकि हमने कई बार इकट्ठे मिलकर जेबें साफ़ की

---

1. सच्चे

حالاں کہ ہم نے کئی بار اکٹھے مل کر جیبیں صاف کی تھیں۔ دل میں فیصلہ کر لیا کہ کسی دن شمبھو کسی کی جیب کاٹے گا، تو میں ہاتھ کی صفائی دکھا کر اس کی جیب کاٹ لوں گا۔

آج شام کو ایک بس سٹاپ پر اپنا "کاروبار" کرنے کے لیے گیا تھا، ایک نوجوان کالجیٹ کا بٹوا اڑا لیا گیا، مگر اس بٹوے میں صرف ایک حسین لڑکی کا فوٹو نکلا، شاید اس کی کالجیٹ محبوبہ ہوگی۔ فوٹو کی پشت پر لڑکی کا ایڈریس لکھا ہوا تھا میں نے اس ایڈریس پر فوٹو واپس ڈاک سے بھیج دیا اور اس کے پیچھے کالجیٹ نوجوان کی طرف سے لکھ دیا۔ "شکریہ کے ساتھ واپس۔"

۱۴/اپریل ——

کئی دنوں سے کاروبار مدھم ہے۔ جس جیب میں ہاتھ ڈالتا ہوں شرمناک سی رقم ہاتھ لگتی ہے۔ نہ جانے لوگوں کی آمدنی کم ہوگئی ہے یا مہنگائی بڑھ گئی ہے کہ لوگوں کی جیب میں پیسے ٹکتے ہی نہیں۔ معلوم ہوتا ہے ہم سے بھی بڑے جیب کترے یعنی بلیک کیٹیئے میدان میں سرگرم ہوگئے ہیں۔ آخر گورنمنٹ ان بلیک مارکیٹیوں کے خلاف ایکشن کیوں نہیں لیتی۔ ان کی وجہ سے ہمارے ایسے خاندانی جیب کتروں کا بزنس تباہ ہو رہا ہے۔

مجھ پر قرض چڑھ گیا ہے۔ آمدنی نہ ہو تو قرض چڑھنا لازمی ہے۔ کاش! کوئی موٹی اسامی ہاتھ لگ جائے تو سارا دلدّر دور ہو جائے۔ جگی دادا نے کئی بار پیغام بھیجا بلکہ دھمکی بھی دی کہ ہمارا بھتہ ادا کر جاؤ نہیں تو پولیس کے ہاتھ گرفتار کرا دوں گا! ادھر علاقہ مدن پورہ کا چھوٹا تھانیدار بہت پریشان کر رہا ہے کہ ہمارا بھتہ ابھی تک کیوں نہیں پہنچا؟ جگی دادا اور چھوٹا تھانیدار دونوں ایک دوسرے کے ہمراز ہیں اور بھوتوں کی طرح ان کی روحیں میرے اردگرد منڈلاتی رہتی ہیں سالے ڈکٹیٹر بنے پھرتے ہیں۔ ہمارے ایسے عوام کی زندگی اجیرن کر رکھی ہے مفت خورے کہیں کے!

آج میں نے ایک راہ چلتے جیوتشی کو روک کر اپنے ہاتھ کی ریکھا دکھائی مہاراج! ذرا ان لکیروں پر تیر جاؤ اور دیکھو کہ مجھ بدبخت کے نصیب میں کوئی دولت لکھی ہے یا نہیں؟ جیوتشی نے مجھ سے اکیاون پیسے لے کر بتایا کہ میری پچاس ہزار روپے کی لاٹری

थीं। दिल में फैसला कर लिया कि किसी दिन शम्मू किसी की जेब काटेगा, तो मैं हाथ की सफ़ाई दिखाकर उसकी जेब काट लूँगा।

आज शाम को एक बस स्टाप पर अपना "कारोबार" करने के लिए गया था, एक नौजवान कालेजियट का बटवा उड़ा लिया गया, मगर उस बटुवे में सिर्फ़ एक हसीन लड़की का फ़ोटो निकला, शायद उस कालेजियट की महबूबा होगी। फ़ोटो की पुश्त पर लड़की का ऐड्रेस लिखा हुआ था मैंने उस ऐड्रेस पर फ़ोटो वापस डाक से भेज दिया और उसके पीछे कॉलेजियट नौजवान की तरफ़ से लिख दिया। "शुक्रिये के साथ वापस।"

14 अप्रैल –

कई दिनों से कारोबार मद्धिम है। जिस जेब में हाथ डालता हूँ शर्मनाक सी रक़म हाथ लगती है। न जाने लोगों की आमदनी कम हो गई है या महंगाई बढ़ गई है कि लोगों की जेब में पैसे टिकते ही नहीं। मालूम होता है हम से भी बड़े जेब कतरे यानी ब्लैक के लिए मैदान में सरगर्म हो गये हैं। आख़िर गर्वमेन्ट इन ब्लैक मार्केटियों के ख़िलाफ़ एक्शन क्यों नहीं लेती। इन की वजह से हमारे ख़ानदानी जेबकतरों का बिज़नेस तबाह हो रहा है।

मुझ पर क़र्ज़ चढ़ गया है। आमदनी न हो तो क़र्ज़ चढ़ना लाज़मी है। काश! कोई मोटी असामी हाथ लग जाय तो सारा दलिद्दर दूर हो जाय। जगी दादा ने कई बार पैग़ाम भेजा बल्कि धमकी भी दी कि हमारा भत्ता अदा कर जाओ नहीं तो पुलिस के हाथ गिरफ़्तार करा दूँगा! इधर इलाक़ा मदनपुरा का छोटा थानेदार बहुत परेशान कर रहा है कि हमारा भत्ता अभी तक क्यों नहीं पहुँचा? जगी दादा और छोटा थानेदार दोनों एक दूसरे के हमराज़ हैं और भूतों की तरह उनकी रुहें मेरे इर्द–गिर्द मंडलाती रहती हैं साले डिक्टेटर बनते फिरते हैं। हमारे ऐसे अवाम की ज़िन्दगी अजीरन कर रखी है मुफ़्तख़ोरे कहीं के!

आज मैंने एक राह चलते ज्योतिषी को रोक कर अपने हाथ की रेखा दिखाई। महाराज! ज़रा इन लकीरों पर तैर जाओ और देखो कि मुझ बदबख़्त के नसीब में कोई दौलत लिखी है या नहीं? ज्योतिषी ने मुझ से इकावन पैसे लेकर बताया कि मेरी पचास हज़ार रुपये की लाटरी

نکلنے والی ہے ! میں نے اٹھتے اٹھتے جیوتشی کی جیب پر اپنی قسمت آزمائی تو اس میں صرف پچاس پیسے نکلے! یہ گویا میری پچاس ہزار روپے کی لاٹری تھی! ہت تیرے جاہل جیوتشی کی ایسی تیسی ! ان کا ایک ہزار روپے ایک پیسے کے برابر ہوتا ہے۔ کمبختوں کو میتھمیٹکس بھی نہیں آتا۔

۱۷ اپریل ——

سنیچر جو کئی ہفتوں سے میرے تقدیر کے خانے میں پھسکڑا مارے بیٹھا تھا اچانک بھاگ گیا ہے۔ اس کے فرار سے میری اندر بہار آگئی۔ آج کا دن میری زندگی کا خوبصورت ترین دن تھا۔

آج ایک اعلیٰ ترین ہوٹل کے سامنے کھڑا تھا کہ اچانک تیزی سے ایک ٹیکسی آکر رکی اور اس میں سے ایک خوش پوش ادھیڑ آدمی اور غضب کی نوجوان حسینہ باہر نکلی۔ راکٹ کی سی تیزی کے ساتھ میرے دونوں ہاتھ حرکت میں آئے اور دوسرے لمحہ میرے ہاتھ میں دو بٹوے آچکے تھے۔ دونوں کی مجموعی رقم ایک ہزار دو سو سولہ روپے تھی اور تیسرے منٹ میں نے دیکھا نوجوان حسینہ اور خوش پوش آدمی دونوں خوبصورت ہوٹل کی سیڑھیوں پر چڑھ رہے تھے۔ ادھیڑ آدمی نوجوان حسینہ کا نازک گورا گورا ہاتھ اپنے ہاتھ میں لیے ہوئے سیڑھیاں چڑھ رہا تھا۔ دونوں قہقہے لگا رہے تھے۔ دونوں محبت کے نشے میں چور تھے۔ محبت انسانوں کے ہوش وحواس گم کر دیتی ہے۔ اور ہم جیب کتروں کے لیے نعمت غیر مترقبہ بن کر سامنے آتی ہے۔

وہ اس وقت تو قہقہے لگا رہے تھے، جب ہوٹل کا بیرا ان کے سامنے بل پیش کرے گا تو دونوں زار و قطار روئیں گے۔ سچ ہے محبت صرف ہنساتی نہیں ہے رلاتی بھی ہے۔ مجھے ان دونوں پر رحم بھی آیا کہ وہ ہوٹل کے منیجر کے سامنے کتنے شرمندہ ہوں گے۔ سارا عشق کافور ہو جائے گا۔ جی چاہا ان کی درد شا دیکھنے کے لیے ہوٹل کے باہر کھڑا رہوں اور ممکن ہو کسی بہانے ان کی جیب میں دس روپے کا ایک نوٹ ڈال دوں تا کہ بے چارے ٹیکسی پر واپس جا سکیں۔ نوجوان حسینہ اگر پیدل چلے گی تو اس کے نرم و نازک تلووں میں چھالے پڑ جائیں گے۔

निकलने वाली है! मैंने उठते–उठते ज्योतिषी की जेब पर अपनी क़िस्मत आज़माई तो उसमें सिर्फ़ पचास पैसे निकले! यह गोया मेरी पचास हज़ार रुपये की लॉटरी थी! हत तेरे जाहिल ज्योतिषी की ऐसी तैसी! उनका एक हज़ार रुपया एक पैसे के बराबर होता है। कमबख़्तों को मैथमेटिक्स भी नहीं आता।

17 अप्रैल –

सनीचर जो कई हफ़्तों से मेरे तक़्दीर के ख़ाने में फसकड़ा मारे बैठा था अचानक भाग गया है। उसके फ़रार से मेरे अन्दर बहार आ गई। आज का दिन मेरी ज़िन्दगी का ख़ूबसूरत तरीन दिन था।

आज एक आला तरीन होटल के सामने खड़ा था कि अचानक तेज़ी से एक टैक्सी आकर रुकी और उसमें से एक ख़ुश–पोश अधेड़ आदमी और ग़ज़ब की नौजवान हसीना बाहर निकली। रॉकेट की सी तेज़ी के साथ मेरे दोनों हाथ हरकत में आये और दूसरे लम्हे मेरे हाथ में दो बटुये आ चुके थे। दोनों की मजमुई रकम एक हज़ार दो सौ सोलह रुपये थी और तीसरे मिनट मैंने देखा नौजवान हसीना और ख़ुश–पोश आदमी दोनों ख़ूबसूरत होटल की सीढ़यों पर चढ़ रहे थे।
अधेड़ आदमी नौजवान हसीना का नाज़ुक गोरा–गोरा हाथ अपने हाथ में लिए हुए सीढ़ियाँ चढ़ रहा था। दोनो क़हक़हे लगा रहे थे। दोनों मोहब्बत के नशे में चूर थे। मोहब्बत इन्सानों के होशो–हवाश गुम कर देती है। और हम जेबकतरों के लिए नेमते ग़ैर मुतरक्क़बा[1] बनकर सामने आती है।

वह उस वक़्त तो क़हक़हे लगा रहे थे, जब होटल का बैरा उनके सामने बिल पेश करेगा तो दोनों ज़ारो–क़तार रोयेंगे। सच है मोहब्बत सिर्फ़ हंसाती नहीं है रुलाती भी है। मुझे उन दोनों पर रहम भी आया कि वह होटल के मनेजर के सामने कितना शार्मिन्दा होंगे सारा इश्क़ काफ़ूर हो जायेगा। जी चाहा उनकी दुर्दशा देखने के लिए होटल के बाहर खड़ा रहूँ और मुमकिन हो किसी बहाने उनकी जेब में दस रुपये का एक नोट डाल दूँ ताकि बेचारे टैक्सी पर वापस जा सकें। नौजवान हसीना अगर पैदल चलेगी तो उसके नरमो–नाज़ुक तलवों में छाले पड़ जायेंगे।

---

1. वह दौलत जिसके आने की उम्मीद न हो

لیکن جیب تراشی کے عظیم اصولوں کے مطابق اس جگہ رکنا خطرے سے خالی نہ تھا اس لیے میں ایک ٹیکسی پر چلا گیا۔ قرض اتار دیا۔ جگی دادا اور چھوٹے تھانیدار کا بھتہ بھی ادا کر دیا۔ بیوی کے لیے ایک ساڑی اور اپنے لیے خشک گوشت اور وہسکی خریدی اور اس وقت وہسکی کا پیگ سامنے رکھے آہستہ آہستہ نوش کر رہا ہوں اور ڈائری بھی لکھ رہا ہوں۔ کاش! مجھے اس ادھیڑ عاشق کا ایڈریس مل جاتا تو اسے شکریے کا ایک خط لکھ دیتا۔

۲۰ راپریل ـــــــ

آج تین دن بعد گھر سے باہر نکلا تھا۔ ان دونوں بٹوؤں کا نشہ ابھی اترا نہیں، لیکن اتار کا احساس ضرور شروع ہو گیا تھا۔ اس خدشے سے مارکیٹ میں پھر آ گیا کہ کہیں جیب تراشی کی پریکٹس نہ بھول جائے۔ آج تو ایک چھرا بھی اپنے ساتھ لے لیا۔ کیونکہ اخباروں میں پڑھا کہ آج کل حفاظت خود اختیاری کی خاطر جیب کترے حضرات چھرے ساتھ لیے پھرتے ہیں۔ بلکہ جب ایک جیب کترا جیب کاٹتے پکڑا گیا تو اس نے جیب کٹوانے والے کی بجائے شور مچانے والے ایک اور آدمی کے پیٹ میں چھرا اتار دیا، جب وہ بھاگنے میں کامیاب ہوا۔

ٹہلتے ٹہلتے ایک جلسہ گاہ میں پہنچا۔ ایک جگہ نو دس سال کے ایک چھوکرے کو لوگ پکڑے ہوئے تھے اور لات، مکّوں اور طمانچوں سے اسے ''بااخلاق'' بنا رہے تھے۔ معلوم ہو کہ اس نے ایک بوڑھے کی جیب میں سے تین روپے اڑا لیے تھے۔ میں نے آگے بڑھ کر اس چھوکرے کو تڑاخ تڑاخ چانٹے رسید کیے، جس سے اس کی ساری جیب کتری نکل گئی اور اس سے تین روپے لے کر بوڑھے کو واپس دے دیے اور اعلان کر دیا کہ میں خود اس لونڈے کو تھانے میں لے جاؤں گا!

بوڑھے نے میرا شکریہ ادا کیا اور جب میں اس لونڈے کو کان سے پکڑے تھانے کی طرف لے جا رہا تھا تو اس بوڑھے کے تین روپے میری جیب میں واپس آ چکے تھے کیونکہ جب بوڑھا میرا شکریہ ادا کر رہا تھا۔ میں اس کی جیب دوسری بار کاٹ رہا تھا! میں نے راستے میں اس چھوکرے کو گالیاں دے کر ان تین روپوں میں سے ایک روپیہ دے دیا۔

लेकिन जेब तराशी के अज़ीम उसूलों के मुताबिक़ उस जगह रुकना ख़तरे से ख़ाली न था इसलिए मैं एक टैक्सी पर चला गया। क़र्ज़ उतार दिया। जगी दादा और छोटे थानेदार का भत्ता भी अदा कर दिया। बीवी के लिए एक साड़ी और अपने लिए ख़ुश्क गोश्त और व्हिस्की ख़रीदी और इस वक़्त व्हिस्की का पैग सामने रखकर आहिस्ता–आहिस्ता नोश कर रहा हूँ और डायरी भी लिख रहा हूँ। काश! मुझे उस अधेड़ आशिक़ का ऐड्रेस मिल जाता तो उसे शुक्रिये का एक ख़त लिख देता।

20 अप्रैल –

आज तीन दिन बाद घर से बाहर निकला था। उन दोनों बटुओं का नशा अभी उतरा नहीं, लेकिन उतार का एहसास ज़रुर शुरु हो गया था। इस ख़दशे से मार्केट में फिर आ गया कि कहीं जेब तराशी की प्रैक्टिस न भूल जाये। आज तो एक छुरा भी अपने साथ ले लिया। क्योंकि अख़बारों में पढ़ा कि आज कल हिफ़ाज़ते–खुद अख़्तियारी की ख़ातिर जेब कतरे हज़रात छुरे साथ लिए फिरते हैं। बल्कि जब एक जेब कतरा जेब काटते पकड़ा गया तो उसने जेब कटवाने वाले की बजाय शोर मचाने वाले एक और आदमी के पेट में छुरा उतार दिया, जब वह भागने में कामयाब हुआ।

टहलते टहलते एक जलसागाह में पहुँचा। एक जगह नौ दस साल के एक छोकरे को लोग पकड़े हुए थे और लात, मुक्कों और तमांचों से उसे "बाएख़लाक़" बना रहे थे। मालूम हो कि उसने एक बूढ़े की जेब में से तीन रुपये उड़ा लिए थे। मैंने आगे बढ़कर उस छोकरे को तड़ाख़–तड़ाख़ चांटे रसीद किये, जिससे उसकी सारी जेबकतरी निकल गई और उससे तीन रुपये लेकर बूढ़े को वापस दे दिये और ऐलान कर दिया कि मैं ख़ुद इस लौण्डे को थाने में ले जाऊँगा!

बूढ़े ने मेरा शुक्रिया अदा किया और जब मैं उस लौण्डे को कान से पकड़े थाने की तरफ़ ले जा रहा था तो उस बूढ़े के तीन रुपये मेरी जेब में आ चुके थे क्योंकि जब बूढ़ा मेरा शुक्रिया अदा कर रहा था मैं उसकी जेब दूसरी बार काट रहा था! मैंने रास्ते में उस छोकरे को गालियाँ देकर उन तीन रुपयों में से एक रुपया दे दिया और उसे समझाया कि बेवकूफ़!

اور اسے سمجھایا کہ بے وقوف! جیب کاٹنا ہو تو پہلے کسی استاد سے یہ ہنر سیکھ لو۔ تمہارے ایسے خامکار جیب کتروں نے اس فن لطیف کو رسوا کیا ہے۔

میں نے وہ دو روپے بھکاریوں میں بانٹ دیئے۔ آخر وہ بھی انسان ہیں انھیں بھی زندہ رہنے کا حق ہے۔ اگر خود جیب نہیں کتر سکتے تو جیب کتروں ہی کی کمائی کھائیں۔

۲۵راپریل ——

بد قسمتی جب ساتھ دیتی ہے جیب کترا کسی کلرک کا بٹوہ اڑا لیتا ہے۔ آج ایک کلرک کا بٹوہ اپنے سامنے رکھے اس بد قسمتی اور اپنی بے وقوفی پر ہنس رہا ہوں ایسا محسوس ہوتا ہے جیسے یہ بٹوا نہ ہو، تیر کا نشان ہو۔ جس پر لکھا ہو ''شمشان گھاٹ کو۔''

در حقیقت غلطی مجھ سے ہوئی۔ میں گذشتہ تین دن سے ایک رشوت خور کلرک کا پیچھا کر رہا تھا تا کہ وہ فلسفہ مساوات کی رو سے اپنی رشوت کا روپیہ ہم جیب کتروں میں بھی ففٹی ففٹی بانٹ سکے۔ لیکن عین موقع پر وہ میرے ہاتھ سے نکل گیا۔ جس پر مجھے سخت غصہ آ گیا اور میں نے غصے میں آ کر ایک دوسرے کلرک کی جیب کاٹ لی۔ اس میں جو کچھ برآمد ہوا، ذرا ملاخطہ فرمایئے۔

۱۔ ایک ٹیلرنگ شاپ کا بل ساڑھے چھ روپے۔ یہ شاید ایک قمیص کا بل تھا جسے یہ کلرک نہ ادا کر سکا نہ قمیص لا سکا حالانکہ مقررہ تاریخ کو دو ہفتے گزر چکے تھے!

۲۔ کلرک کے سالے کا ایک خط جس میں اس نے دھمکی دی تھی کہ ہم اپنے بال بچوں سمیت آپ کے گھر میں گرمی کی تعطیلات گزارنے آ رہے ہیں۔ کلرک کے گھر کو اس نے ہل اسٹیشن سمجھ لیا تھا۔

۳۔ ایک چھوٹی سے ربڑ جو اس نے اپنے بچے کے لئے دفتر سے چرائی ہوگی۔

۴۔ ''ور کے لیے کنیا کی ضرورت'' کے اشتہار کی ایک کٹنگ اس کا مطلب ہے کلرک کی بیٹی جوانی کا بوجھ لیے اس کے کندھے پر بیٹھی ہے۔

۵۔ دس پیسے کا رسیدی ٹکٹ (اسے رسیدی ٹکٹ کی کیا ضرورت پڑی ہوگی، نہ

जेब काटना हो तो पहले किसी उस्ताद से यह हुनर सीख लो। तुम्हारे ऐसे ख़ामकार[1] जेबकतरों ने इस फ़न्ने–लतीफ़ को रुसवा किया है।

मैंने वह दो रुपये भिकारियों में बाँट दिये। आख़िर वह भी इन्सान हैं उन्हें भी जिन्दा रहने का हक़ है। अगर खुद जेब नहीं कतर सकते तो जेब कतरों ही की कमाई खायें।

25 अप्रैल –

बदक़िस्मती जब साथ देती है जेबकतरा किसी क्लर्क का बटुआ उड़ा लेता है। आज एक क्लर्क का बटुआ अपने सामने रखे उसकी बदकिस्मती और अपनी बेवकूफ़ी पर हंस रहा हूँ ऐसा महसूस होता है जैसे यह बटुआ न हो, तीर का निशान हो। जिस पर लिखा हो "शमशान घाट को।"

दरहक़ीक़त ग़लती मुझसे हुई। मैं गुज़िश्ता[2] तीन दिन से एक रिश्वत–ख़ोर क्लर्क का पीछा कर रहा था ताकि वह फ़लसफ़ए–मसावात[3] की रु से अपनी रिश्वत का रुपया हम जेबकतरों में भी फ़िफ़्टी–फ़िफ़्टी बाँट सके। लेकिन ऐन मौक़े पर वह मेरे हाथ से निकल गया। जिस पर मुझे सख़्त गुस्सा आ गया और मैंने गुस्से में आकर एक दूसरे क्लर्क की जेब काट ली। उसमें जो कुछ बरामद हुआ, ज़रा मुलाहेज़ा फ़रमाइये–

1. एक टेलरिंग शॉप का बिल साढ़े छः रुपये। यह शायद एक कमीज़ का बिल था जिसे यह क्लर्क न अदा कर सका न क़मीज़ ला सका हालाँकि मोक़र्ररा तारीख़ को दो हफ़्ते गुज़र चुके थे!
2. क्लर्क के साले का एक ख़त जिसमें उसने धमकी दी थी कि हम अपने बाल–बच्चों समेत आपके घर में गर्मी की तातीलात गुज़ारने आ रहे हैं। क्लर्क के घर को उसने हिल स्टेशन समझ लिया था।
3. एक छोटी सी रबड़ जो उसने अपने बच्चे के लिए दफ़्तर से चुराई होगी।
4. "वर के लिए कन्या की ज़रुरत" के इश्तहार की एक कटिंग इसका मतलब है क्लर्क की बेटी जवानी का बोझ लिए उसके कंधे पर बैठी है।
5. दस पैसे का रसीदी टिकट (उसे रसीदी टिकट की क्या ज़रुरत पड़ी होगी, न जाने कैसे उसके हाथ लग गया) जो मेरे लिए भी बेकार था।

---

1. अनुभवहीन 2. गुज़रे हुए, पिछले 3. बराबरी की फ़िलासफ़ी

جانے کیسے اس کے ہاتھ لگ گیا) جو میرے لیے بھی بیکار تھا۔

۶۔ ایک فوٹو گراف جس میں کلرک اپنے پانچ بچوں اور ایک بائیسکل کے ساتھ کھڑا تھا۔ وہ بائیسکل اس کا چھٹا بچہ معلوم ہو رہی تھی!

۷۔ دو روپے کے ایک میلے کچیلے نوٹ کے تین ٹکڑے............ وہ نوٹ اس کی غیر منقولہ جائداد کے طور پر محفوظ رکھا ہوا تھا۔

اس کے علاوہ کچھ انتہائی غیر ضروری کاغذات تھے۔ ایک میل سے بھری کنگھی تھی لیکن سب سے زیادہ بیش قیمت چیز جو کلرک مذکور کے ہارٹ فیل ہونے کا باعث بنے گی وہ تھی دو روپے بیس پیسے کی نقد رقم! جس کے بل بوتے پر کلرک اس مہینے کے آخری نازک دن گزارنا چاہتا تھا!

میں نے فیصلہ کیا ہے کہ تمام چیزیں ایک رجسٹرڈ پیکٹ کے ذریعہ کلرک مذکور کو پوسٹ کر دوں گا اور دو روپے بیس پیسے کی رقم اس کی رجسٹریشن فیس پر خرچ کر دوں گا۔

اور آئندہ کے لیے میں نے حلف لے لیا ہے کہ جب بھی کسی کی جیب کاٹنے لگوں گا، اس سے پوچھ لوں گا کہ تم کلرک تو نہیں ہو؟

۲۸ راپریل ——

آج میں جیل میں بیٹھا ہوں۔ کل فٹ بال میچ کے دوران اچانک جیب کاٹتے ہوئے پکڑا گیا تھا۔ میرا دوسرا ساتھی تو بٹوا لے کر فرار ہو گیا۔ لیکن میں ہتھے چڑھ گیا البتہ داروغہ جیل جب مجھے اندر بند کرنے لگا تو میں نے اس کی جیب سے بھی دس بارہ روپے کی رقم اڑا لی!

مجھے افسوس صرف یہ ہے کہ یکم مئی آنے والی ہے یہ سرکاری ملازموں کی تنخواہ کا دن ہے۔ اور تنخواہ کے دن ایک جیب کترے کا جیل میں رہنا جیب تراشی کی تاریخ کا ایک المناک حادثہ ہے۔ میں نے جگی دادا کو پیغام بھجوایا ہے کہ مجھے یکم مئی سے پہلے پہلے رہا کروا دے !!

6. एक फ़ोटोग्राफ़ जिसमें क्लर्क अपने पाँच बच्चों और एक बाइस्किल के साथ खड़ा था। वह बाइस्किल उसका छठा बच्चा मालूम हो रही थी!

7. दो रुपये के एक मैले कुचैले नोट के तीन टुकड़े..... वह नोट उसकी ग़ैर मन्कूला जायदाद[1] के तौर पर महफ़ूज़ रखा हुआ था।

इसके अलावा कुछ इन्तहाई ग़ैर ज़रुरी काग़ज़ात थे। एक मैल से भरी कंघी थी लेकिन सब से ज़्यादा बेशक़ीमत चीज़ जो क्लर्क मज़कूर[2] के हार्ट फ़ेल होने का बाएस बनेगी वह थी दो रुपये बीस पैसी की नक़द रक़म! जिसके बल बूते पर क्लर्क इस महीने का आख़री नाज़ुक दिन गुज़ारना चाहता था!

मैंने फ़ैसला किया कि तामाम चीज़े एक रजिस्टर्ड पैकिट के जरिए क्लर्क मज़कूर को पोस्ट कर दूँगा और दो रुपये पीस पैसे की रक़म उसकी रजिस्ट्रेशन फ़ीस पर ख़र्च कर दूँगा।

और आइन्दा के लिए मैंने हलफ़ लिया कि जब भी किसी की जेब काटने लगूँगा, उससे पूछ लूँगा कि तुम क्लर्क तो नहीं हो?

28 अप्रैल –

आज मैं जेल में बैठा हूँ। कल फुटबॉल मैच के दौरान अचानक जेब काटते हुए पकड़ा गया। मेरा दूसरा साथी तो बटुआ लेकर फ़रार हो गया। लेकिन मैं हत्थे चढ़ गया अलबत्ता दारोग़ा जेल जब मुझे अन्दर बन्द करने लगा तो मैंने उसकी जेब से भी दस बारह रुपये की रक़म उड़ाली!

मुझे अफसोस सिर्फ यह है कि यकुम मई आने वाली है यह सरकारी मुलाज़िमों की तनख़्वाह का दिन है। और तनख़्वाह के दिन एक जेबकतरे का जेल में रहना जेबतराशी की तारीख़ का एक अलमनाक हादसा है। मैंने जगी दादा को पैग़ाम भिजवाया कि मुझे यकुम मई से पहले पहले रिहा करवादे।

---

1. वह जाएदाद जो दूसरी जगह न ले जायी जा सके 2. सम्बन्धित

ایک لیڈر کی ڈائری ــــــ

نوٹ: میری یہ ذاتی ڈائری میرے انتقال کے پانچ سال بعد شائع کی جائے

۱۷ر اکتوبر ــــــ

کل میرا جنم دن تھا کہتے ہیں جو لوگ اکتوبر میں پیدا ہوتے ہیں وہ راج گدی پر بیٹھتے ہیں۔ میرا رسوئیا رام دھن بھی اکتوبر میں پیدا ہوا تھا۔ لیکن وہ راج محل کے جھوٹے برتن دھوتا ہے۔ رام دھن نے اپنا جنم دن کبھی نہ منایا کیوں کہ کانسٹی ٹیوشن کی رو سے ہر آزاد شہری کو یہ آزادی حاصل ہے کہ وہ اپنا جنم دن منائے یا نہ منائے (ہمارا کانسٹی ٹیوشن..........آزاد خیال ہے۔)

میں نے اخباروں میں یہ مجاہدانہ اعلان شائع کروایا تھا کہ اپنا جنم دن نہایت خاموشی اور سادہ طریقے سے مناؤں گا۔ لیکن صبح صبح مبارک باد دینے والوں کا یوں تانتا بندھ گیا جیسے گڑ کی بھیلی پر مکھیاں جمع ہو جاتی ہیں۔ مجھے ہاروں اور تحفوں سے لاد دیا گیا۔ ایک پریس رپورٹر نے مجھ سے پوچھا "کیا آپ اپنے پہلے بیان کی تردید کرنا پسند کریں گے؟ آپ کے جنم دن میں گاندھی جی کی سی سادگی ہوگی!"

لیکن میری بجائے میرے خرانٹ سکریٹری نے جواب دیا۔ "اس کا جواب عوام سے پوچھیے۔ کیونکہ اپا رُیا صاحب کا یہ جنم دن عوام خود منا رہے ہیں عوام نے اپنے لیڈر کے ہاتھ سے باگ ڈور چھین لی ہے۔

میرا سکریٹری جھوٹ بول رہا تھا۔ کیونکہ ہار اور تحفے لانے والے عوام بالکل نہیں تھے۔ ان میں کچھ وزیر تھے، کچھ بڑے بڑے کارخانہ دار تھے، کچھ میرے ٹٹ پونجیے سیاسی لیفٹننٹ تھے کچھ میری بیوی کی تھل تھل کرتے جسموں والی سہیلیاں تھیں۔ جن کے دبیز ہونٹوں پر تھپی ہوئی لپ سٹک کی کئی تہیں چڑھی ہوئی تھیں اور ان تہوں پر جب مبارک باد کی مصنوعی مسکراہٹ ابھرتی تھی تو مجھے گھن آجاتی تھی۔ لیکن میں اس گھن کا جواب مصنوعی مسکراہٹ سے دیتا تھا۔ میرے پاس اپنا کچھ بھی نہیں تھا۔ جو کچھ تھا، میرے مداحوں کا دیا ہوا تصنع تھا۔

एक लीडर की डायरी

नोटः मेरी यह ज़ाती डायरी मेरे इन्तकाल के पाँच साल बाद शाया[1] की जाये।

17 अक्टूबर–

कल मेरा जन्म दिन था कहते हैं जो लोग अक्टूबर में पैदा होते हैं वह राज गद्दी पर बैठते हैं। मेरा रसोइया
राम धन भी अक्टूबर में पैदा हुआ था। लेकिन वह राज महल के झूटे बर्तन धोता है। राम धन ने अपना जन्म दिन कभी न मनाया क्योंकि कान्सटीट्यूशन की रु से हर आज़ाद शहरी को यह आज़ादी हासिल है कि वह अपना जन्म दिन मनाये या न मनाये (हमारा कान्सटीट्यूशन....... आज़ाद ख़याल है)।

मैंने अख़बारों में यह मुजाहिदाना ऐलान शाया करवा दिया था कि अपना जन्म दिन निहायत ख़ामोशी और सादा तरीक़े से मनाऊँगा। लेकिन सुबह सुबह मुबारकबाद देने वालों का यूँ ताँता बंध गया जैसे गुड़ की भेली पर मक्खियाँ जमा हो जाती हैं। मुझे हारों और तोहफ़ों से लाद दिया गया। एक प्रेस रिपोर्टर ने मुझसे पूछा "क्या आप अपने पहले बयान की तरदीद करना पसंद करेंगे? आपके जन्म दिन में गाँधी जी की सी सादगी होगी!

लेकिन मेरे बजाय मेरे खुर्राट सिक्रेट्री ने जवाब दिया। "इसका जवाब अवाम से पूछिये। क्योंकि अपाड़िया साहब का यह जन्म दिन अवाम खुद मना रहे हैं, अवाम ने अपने लीडर के हाथ से बाग डोर छीन ली है।

मेरा सिक्रेट्री झूट बोल रहा था। क्योंकि हार और तोहफ़े लाने वाले अवाम बिल्कुल नहीं थे। उनमें कुछ वज़ीर थे, कुछ बड़े बड़े कारख़ानेदार थे, कुछ मेरे टटपूँजीये सियासी लेफ़्टीनेन्ट थे कुछ मेरी बीवी की थुल–थुल करते जिस्मों वाली सहेलियाँ थीं। जिनके दबीज़ होंटो पर थोपी हुई लिपिस्टिक की कई तहें चढ़ी हुई थीं और उन तहों पर जब मुबारकबाद की मसनुई[2] मुस्कुराहट उभरती थी तो मुझे घिन आ जाती थी। लेकिन मैं उस घिन का जवाब मसनुई मुस्कुराहट से देता था। मेरे पास अपना कुछ भी नहीं था। जो कुछ था, मेरे मद्दाहों[3] का दिया हुआ तसन्ना[4] था।

---

1. प्रकाशित 2. बनावटी 3. प्रशंसक 4. दिखावा

میرے جنم دن کی خوشی میں رات کو عوام نے یعنی جوائے ہوٹل کے مالک سیٹھ ٹھینگا پرساد نے عوام یعنی سیٹھوں وزیروں، سمگلروں اور دھارمک نیتاوں کو ایک سادہ اور خاموش ڈنر دیا۔ جس میں سلکی پردے کے پیچھے وسکی اور پردے کے باہر مونگ کی دال اور مرغ مسلم شامل تھے۔ سیٹھ ٹھینگا پرساد کے ہوٹل کی بدعنوانیوں کے خلاف جب دو سال پہلے میں نے ایک عوامی اندولن شروع کیا تھا۔ اس وقت سے وہ میرا مداح بن گیا تھا۔ ڈنر کے بعد میں نے سیٹھ ٹھینگا پرساد کے ساتھ فوٹو کھنچوایا۔ یہ جانتے ہوئے بھی کہ وہ اس فوٹو کی بدولت اپنے معزز گاہکوں کو بلیک میل کرے گا۔

میں اس بلیک میلر کی انیٹ سے انیٹ بجا سکتا تھا۔ لیکن اندولن کے دوران اس کی تیسری بیوی میرے پاس سمجھوتے کا فارمولا لے کر آئی تھی۔ وہ کم بخت بے حد خوبصورت تھی۔ عورت کو اتنا خوبصورت نہ ہونا چاہیے کہ پورے کا پورا سوشلزم اس کے سامنے سربسجدہ ہو جائے!

ڈنر کے بعد سکریٹری نے اعلان کیا کہ عوام کے محبوب نیتا شری لپاڑیا جی کو جو سادہ تحفے موصول ہوئے ہیں وہ جھگی جھونپڑی والوں کی بہبودی پر خرچ کیے جائیں گے۔

ایسا اعلان میرے گذشتہ جنم دن پر بھی کیا تھا۔ ہر دوسرے اعلان کا حشر پہلے اعلان کا سا ہوتا ہے۔ جھگی جھونپڑی کے کالے کلوٹے ادھ ننگے بچوں کے نصیب میں تو دو دولڈو لکھے تھے۔ حالاں کہ ان میں سے کئی بچے اکتوبر مہینے میں بھی پیدا ہوئے تھے۔

۱۳ر نومبر ــــــ

شاید یہی وہ نومبر کا دن تھا۔ آج سے چودہ برس پہلے میں نے اپنے پھٹے ہوئے جوتے اور پھٹے ہوئے پاجامے کے ساتھ ایک جلسے میں اخبار ''دین بندھو'' کی چودہ کاپیوں کو آگ لگائی تھی۔ اور اسی رات کو اخبار ''دین بندھو'' کا توندیل مالک لالہ بھگتی چند اپنی چمکیلی کار پر میرے تنگ و تاریک کوارٹر میں یوں آیا تھا جیسے کرشن بھگوان سداماں کے گھر آئے ہوں! اور ایک ہزار روپے کے کرنسی نوٹ میرے میلے کچیلے تکیہ پر رکھتے ہوئے کہا تھا۔ ''لپاڑیا جی! آپ سچ مچ ایک آتش بیان مقرر ہیں۔ لیکن افسوس! کہ اس

मेरे जन्म दिन की खुशी में रात को अवाम ने यानी ज्वाय होटल के मालिक सेठ ठेंगा प्रसाद ने अवाम यानी सेठों वज़ीरों, स्मगलरों और धार्मिक नेताओं को एक सादा और ख़ामोश डिनर दिया। जिसमें सिल्की पर्दे के पीछे व्हिस्की और पर्दे के बाहर मूँग की दाल और मुर्ग़ मुसल्लम शामिल थे। सेठ ठेंगा प्रसाद के होटल की बदउनवानियों के ख़िलाफ़ जब दो साल पहले मैंने एक अवामी आंदोलन शुरु किया था उस वक़्त से वह मेरा मद्दाह बन गया था। डिनर के बाद मैंने सेठ ठेंगा प्रसाद के साथ फ़ोटो खिंचवाया। यह जानते हुए भी कि वह इस फ़ोटो की बदौलत अपने मोअज़्ज़िज़ गाहकों को ब्लैकमेल करेगा।

मैं उस ब्लैकमेलर की ईंट से ईंट बजा सकता था। लेकिन आंदोलन के दौरान उसकी तीसरी बीवी मेरे पास समझौते का फ़ॉर्मूला लेकर आई थी। वह कमबख़्त बेहद खूबसूरत थी। औरत को इतना ख़ूबसूरत न होना चाहिये कि पूरे का पूरा सोशलिज़्म उसके सामने सर बसजदा हो जाये!

डिनर के बाद सिक्रेट्री ने ऐलान किया कि अवाम के महबूब नेता श्री लपाड़िया जी को जो सादा तोहफ़े मौसूल हुए हैं वह झुग्गी झोपड़ी वालों की बहबूदी पर ख़र्च किए जायेंगे।

ऐसा ऐलान मेरे गुज़िश्ता जन्म दिन पर भी किया था। हर दूसरे ऐलान का हश्र पहले ऐलान का सा होता है। झुग्गी झोपड़ी के काले कलूटे अधनंगे बच्चों के नसीब में तो दो–दो लड्डू लिखे थे। हालाँकि उनमें कई बच्चे अक्टूबर महीने में भी पैदा हुए थे।

13 नवम्बर–

शायद यही वह नवम्बर का दिन था। आज से चौदह वर्ष पहले मैंने अपने फटे हुए जूते और फटे हुए पाजामे के साथ एक जलसे में अख़बार "दीनबंधु" की चौदह कॉपियों को आग लगाई थी। और उसी रात को अख़बार "दीनबंधु" का तोंदैल मालिक लाला भगती चन्द अपनी चमकीली कार पर मेरे तंगो–तारीक क्वार्टर में यूँ आया था जैसे कृष्ण भगवान सुदामा के घर आये हों! और एक हज़ार रुपये के करंसी नोट मेरे मैले कुचैले तकिये पर रखते हुए कहा था, "लपाड़िया जी! आप सचमुच एक आतिश–बयान मुक़र्रिर हैं। लेकिन अफ़सोस! कि इस

ابھاگے دیش میں جوہر قابل کی قدر نہیں ہے۔ آپ دین ہیں اور ہمارا اخبار ''دین بندھو'' ہے۔ یہ ایک ہزار روپے کی تچھ بھینٹ ''دین بندھو'' کی طرف سے قبول فرمائیے اور اپنے لیے نئے پائجامے سلوا لیجیے

''تم مجھے رشوت دے کر میرا ضمیر خریدنا چاہتے ہو؟ میں نے گرج کر کہا تھا (ان دنوں میں کافی احمق تھا)۔

مگر لالہ بھگتی چند ضمیروں کا گھاگ بیوپاری تھا، میری جاہل انقلابی ضمیر کے بلند بانگ دعوے سے دل برداشتہ نہیں ہوا۔ میری پیٹھ پر مشفقانہ تھپکی دیتے ہوئے مسکرا کر بولا، نوجوان انقلابی! دیش کے کروڑوں مفلس تمہاری رہنمائی کا انتظار کر رہے ہیں۔ مگر دیش کا افلاس دور کرنے سے پہلے اپنا افلاس دور کرو۔ ورنہ چار سال بعد تمہاری یہ بھوک اور تاریکی اور غلاظت تمہاری ہڈیاں چاٹ جائے گی۔

اس ایک ہزار روپے کو تم ملٹی پرپز وٹامنز کی گولیاں تصور کر کے قبول کر لو یہ کہہ کر وہ چلا گیا۔ وٹامنز کی گولیاں میرے غلیظ سرہانے کے اندر گھٹتے ہوئے ٹی بی کے جراثیم کو مارنے کے لیے پڑی رہ گئیں، میرے ایمان کی مضبوط دیوار کی پہلی اینٹ گر چکی تھی غصے اور بے بسی کے ملے جلے تاثرات ساری رات بھوتوں کی طرح میرے خوابوں میں وحشیانہ رقص کرتے رہے۔ لیکن جب دوسری صبح بیدار ہوا تو اخبار ''دین بندھو'' کا تازہ پرچہ میرے سامنے پڑا تھا جس میں جلی عنوان کے ساتھ یہ خبر درج تھی:

''عوام کے محبوب رہنما شری لپاڑیا کی گرفتاری آج متوقع۔'' معتبر ذرائع سے معلوم ہوا ہے کہ کل جنتا کلاتھ ملز کے اندر عوام کے محبوب ترین رہنما شری لپاڑیا نے ریشمی کپڑوں کی ایک گانٹھ کو جو آگ لگائی تھی، اس سلسلے میں سرکار کی طرف سے ان کے خلاف وارنٹ گرفتاری جاری کیے جا چکے ہیں اور آج کسی وقت بھی ان کی گرفتاری متوقع ہے۔ مل ورکروں میں ان کی گرفتاری کے بعد کتنا غیض و غضب پھیل سکتا ہے؟ اس کے متعلق سارے شہر میں چہ میگوئیاں ہو رہی ہیں۔ مل کے اردگرد دفعہ ۱۴۴ لگا دی گئی ہے۔''

گویا لالہ بھگتی چند نے میری شہرت اور میری لیڈری کا شاندار آغاز کر دیا تھا میرا سر مارے احسان کے اخبار ''دین بندھو'' کے اوپر جھک گیا اور مجھے زندگی میں پہلی بار

अभागे देश में जौहरे–काबिल की कद्र नहीं है। आप दीन हैं और हमारा अख़बार "दीनबंधु" है। यह एक हज़ार रुपये की तुच्छ भेंट "दीनबंधु" की तरफ़ से कुबूल फ़रमाइये और अपने लिए नये पाजामे सिलवा लीजिये।

"तुम मुझे रिश्वत देकर मेरा ज़मीर ख़रीदना चाहते हो? मैंने गरज कर कहा था (उन दिनों मैं काफ़ी अहमक था)

मगर लाल भगती चन्द ज़मीरों का घाग व्यापारी था, मेरे जाहिल इन्क़लाबी ज़मीर के बुलन्द बाँग दावे से दिल–बरदाश्ता नहीं हुआ। मेरी पीठ पर मुशफ़िक़ाना थपकी देते हुए मुस्कुराकर बोला, नौजवान इन्क़लाबी! देश के करोड़ों मुफ़लिस तुम्हारी रहनुमाई का इन्तज़ार कर रहे हैं। मगर देश का अफ़लास दूर करने से पहले अपना अफ़लास दूर करो। वरना चार साल बाद तुम्हारी यह भूक हड़ताल और तारीकी और ग़लाज़त तुम्हारी हड्डियाँ चाट जायेगी।

इस एक हज़ार रुपये को तुम मल्टी परपज़ विटामिंस की गोलियाँ तसव्वुर कर लो, यह कहकर वह चला गया। विटामिंस की गोलियाँ मेरे ग़लीज़ सिरहाने के अन्दर घुटे हुए टीबी के जरासीम को मारने के लिए पड़ी रह गई, मेरे ईमान की मज़बूत दीवार की पहली ईंट गिर चुकी थी गुस्से और बेबसी के मिले जुले तास्सुरात सारी रात भूतों की तरह मेरे ख़्वाबों में वहशियाना रक़्स करते रहे। लेकिन जब दूसरी सुबह बेदार हुआ तो अख़बार "दीनबंधु" का ताज़ा पर्चा मेरे सामने पड़ा था जिसमें जली उनवान के साथ यह ख़बर दर्ज थी:

"अवाम के महबूब रहनुमा श्री लपाड़िया की गिरफ़्तारी आज मुतवक़्क़ो।" मोतबर ज़राए से मालूम हुआ है कि कल जनता क्लाथ मिल्स के अन्दर अवाम के महबूब तरीन रहनुमा श्री लपाड़िया ने रेश्मी कपड़ों की एक गाँठ को जो आग लगाई थी, उस सिलसिले में सरकार की तरफ़ से उनके ख़िलाफ़ वारंट गिरफ़्तारी जारी किये जा चुके हैं और आज किसी वक़्त भी उनकी गिरफ़्तारी मुतवक़्क़ो है। मिल वर्करों में उनकी गिरफ़्तारी के बाद कितना ग़ेज़ो–ग़ज़ब फैल सकता है? इसके मुतअल्लिक़ सारे शहर में चेहमीगोइयाँ हो रही हैं। मिल के इर्द–गिर्द दफ़ा 144 लगा दी गई है।"

गोया लाला भगतीचंद ने मेरी शोहरत और मेरी लीडरी का शानदार आग़ाज़ कर दिया था। मेरा सर मारे एहसान के अख़बार "दीनबंधु" के उपर झुक गया और मुझे ज़िन्दगी में पहली बार मालूम हुआ कि

معلوم ہوا کہ اخباروں کی آزادی صرف ایک پرفریب جمہوری طلسم ہے اور یہ دنیا ضمیروں کی خرید و فروخت کی ایک بڑی منڈی ہے۔ اور میں بھی منڈی کی ایک جنس ہوں۔

آج چودہ برس بعد لالہ بھگتی چند میرا لنگوٹیا دوست بن چکا ہے اور آج جب بھی ہم دونوں اس واقعہ کو یاد کرتے ہیں تو خوشی کے آنسو بہاتے ہیں۔

ہاں، آج چودہ نومبر ہے اور میں اپنی ڈائری میں یہ چند الفاظ خوشی کے آنسوؤں کی طرح بہا رہا ہوں۔ اور اپنے اس پھٹے ہوئے پاجامے کو الماری سے نکال کر سوچ رہا ہوں...... یہ پاجامہ آج بھی موجود ہے۔ ہندوستان کے افلاس کی طرح اور افلاس آج بھی ہندوستان میں زندہ ہے۔ اگر چودہ نومبر کو میں اخبار ''دین بندھو'' کے پرچوں کو آگ نہ لگاتا تو اس پاجامے کو ٹی۔بی کے جراثیم چاٹ چکے ہوتے۔ چودہ نومبر زندہ باد! افلاس کے پاجامے پائندہ باد!!

۳ر دسمبر ——

کچھ دنوں سے زندگی بہت ڈل ہو رہی تھی، نہ کوئی ہنگامہ تھا نہ شور و شر۔ سیٹھ ٹھینگا پرساد کی حسین ترین بیوی بھی پیرس کے سیر سپاٹے پر چلی گئی تھی اور مجھے داغ جدائی دے گئی تھی۔ غلطی میری اپنی تھی۔ میں نے ہی اسے ہندوستانی سنگیت کاروں کی ڈیلی گیشن میں شامل کرا دیا تھا۔

حالانکہ وہ علم موسیقی میں پرائمری پاس بھی نہ تھی۔ لیکن میرے من کے تاروں کو کبھی کبھار چھیڑ دیا کرتی تھی۔ اس لیے اس کے سنگیت کار ہونے میں کوئی شک و شبہ نہ تھا۔

وہ چلی گئی اور مجھے سرکاری کاموں کے بیابان میں تنہا چھوڑ گئی۔ میں نے اپنی تنہائی اور اداسی اور جدائی کا غم دور کرنے کے لئے ایک نیا شوشہ کھڑا کر دیا شہر کے ایک ویران ٹیلے پر ایک ذلیل سا چھوٹا سا مندر بنا ہوا تھا۔ یہ جانتے ہوئے بھی کہ اس مندر میں بھگوان رہتا ہے۔ میں نے اپنے ایک جنونی ورکر کے ہاتھوں اسے گروا دیا اور بھگوان کا بھگوان منہدم ہو کر نیچے گر پڑا۔

अख़बारों की आज़ादी सिर्फ़ एक पुर–फ़रेब जम्हूरी तिलस्म है और यह दुनिया ज़मीरों की ख़रीदो–फ़रोख़्त की एक बड़ी मंडी है। और मैं भी मंडी की एक जिंस हूँ।

आज चौदह बरस बाद लाल भगतीचंद मेरा लंगोटिया दोस्त बन चुका है और आज जब भी हम दोनों इस वाक़ए को याद करते हैं तो ख़ुशी के आँसू बहाते हैं।

हाँ, आज चौदह नवम्बर है और मैं अपनी डायरी में यह चंद अल्फ़ाज़ ख़ुशी के आँसुओं की तरह बहा रहा हूँ। और अपने उस फटे हुए पाजामे को अल्मारी से निकाल कर सोच रहा हूँ....... यह पाजामा आज भी मौजूद है। हिन्दोस्तान के अफ़लास की तरह और अफ़लास आज भी हिन्दोस्तान में ज़िंदा है। अगर चौदह नवम्बर को मैं अख़बार "दीनबंधु" के चाट चुके होते। चौदह नवम्बर ज़िन्दाबाद! अफ़लास के पाजामें पाइन्दाबाद!!

3 दिसम्बर–

कुछ दिनों से ज़िन्दगी बहुत डल हो रही थी, न कोई हंगामा था न शोरो–शर। सेठ ठेंगा प्रसाद की हसीन तरीन बीवी भी पैरिस के सैर–सपाटे पर चली गई थी और मुझे दाग़े–जुदाई दे गई थी। ग़लती मेरी अपनी थी। मैंने ही उसे हिन्दोस्तानी संगीतकारों की डेलीगेशन में शामिल करा दिया था।

हालाँकि वह इल्मे–मौसीक़ी में प्राइमरी पास भी न थी। लेकिन मेरे मन के तारों को कभी कभार छेड़ दिया करती थी। इसलिए उसके संगीतकार होने में कोई शको–शुब्हा न था।

वह चली गई और मुझे सरकारी कामों के बियाबान में तन्हा छोड़ गई। मैंने अपनी तन्हाई और उदासी और जुदाई का ग़म दूर करने के लिए एक नया शोशा खड़ा कर दिया। शहर के एक वीरान टीले पर एक ज़लील सा छोटा सा मन्दिर बना हुआ था। यह जानते हुए भी कि इस मन्दिर में भगवान रहता है। मैंने अपने एक जुनूनी वर्कर के हाथों उसे गिरवा दिया और भगवान का भगवान मुनहदिम होकर नीचे गिर पड़ा।

مندر گرنے کی خبر سے بھگوان کے ہزاروں بھگت پاگل ہو گئے۔ منہ سے جھاگ بہانے لگے۔ انھوں نے جوش اور غصّے میں دوسرے ہی دن مندر کی تعمیر پھر شروع کر دی۔ دوسری طرف سے خدا کے پرستاروں نے بھی خدا کی حفاظت کے لیے جھنڈے اٹھا لیے۔ ان کا دعویٰ تھا کہ اس مندر کے نیچے ایک پرانی مسجد دبی پڑی ہے اور کہ ہم اس مسجد میں دبے ہوئے خدا کو باہر نکالیں گے۔ دونوں طرف سے حقوق کی جنگ شروع ہو گئی۔ صبح کو مندر کی دیوار کھڑی ہو جاتی، دوپہر تک مسجد کی دیوار اور شام تک پھر مندر ابھرنے لگتا۔ بھگوان اور خدا آپس میں گتھم گتھا ہونے لگے۔ میری اداس اور ڈل زندگی میں ایک ہنگامہ، ایک رونق پیدا ہو گئی۔ میری پیرس میں گئی ہوئی حسین محبوبہ کا عارضی نعم البدل مجھے مل گیا۔

جب صورت حال نازک ہونے لگی تو میں نے تین ہنگامی اقدامات کیے (۱) فریقین کے نام صلح اور آشتی کی دردناک اپیل جاری کر دی (۲) دونوں اطراف کے ورکروں کی گرفتاریاں شروع کرا دیں (۳) پیرس میں اپنی حسین محبوبہ کو ٹیلی گرام بھیج دیا۔ "ڈارلنگ! سارا شہر فساد کی لپیٹ میں آ گیا ہے دن بھر بھاگ دوڑ کرتا ہوں۔ تم لوٹ آؤ تو اس تھکا دینے والے ہنگامے میں سکون اور سرور کے چند لمحے میسر آ جائیں۔

میری امن کی اپیل اور ٹیلی گرام دونوں کا کوئی اثر نہ ہوا۔ تناؤ اپنے عروج پر ہے۔ خدا اور بھگوان دونوں خاموش تماشائی ہیں، لاٹھیاں اور گولیاں چلائی جا چکی ہیں۔ کل سے سارا شہر ہڑتال پر ہے۔ آج دن بھر میں نے ہڑتال زدہ شہر کا دورہ کیا۔ ایک امن کمیٹی بنا دی گئی ہے جس میں فریقین کے فسادی رہنما شامل ہیں۔ دونوں طرف کے فسادی رہنما میرے عقیدت مند ہیں۔ میں نے ایک انکوائری کمیٹی بنا کر اس متنازعہ جگہ کی تاریخی ریسرچ کرنے کا حکم جاری کر دیا ہے۔

فیصلہ کرنا دشوار نہیں ہے۔ مگر میں ابھی پیرس سے ٹیلی گرام کے جواب کا انتظار کر رہا ہوں۔

मन्दिर गिरने की ख़बर से भगवान के हज़ारों भगत पागल हो गये। मुँह से झाग बहाने लगे। उन्होंने जोश और गुस्से में दूसरे ही दिन मन्दिर की तामीर फिर शुरु कर दी। दूसरी तरफ से खुदा के परस्तारों ने भी खुदा की हिफ़ाज़त के लिए झंडे उठा लिए। उनका दावा था कि इस मन्दिर के नीचे एक पुरानी मस्जिद दबी पड़ी है और कि हम इस मस्जिद में दबे हुए खुदा को बाहर निकालेंगे। दोनों तरफ़ से हकूक़ की जंग शुरु हो गई। सुबह को मन्दिर की दीवार खड़ी हो जाती, दोपहर तक मस्जिद की दीवार और शाम तक फिर मन्दिर उभरने लगता। भगवान और ख़ुदा आपस में गुत्थम–गुत्था होने लगे। मेरी उदास और डल ज़िन्दगी में एक हंगामा, एक रौनक़ पैदा हो गई। मेरी पैरिस में गई हुई हसीन महबूबा का आरज़ी[1] नेमुलबदल[2] मुझे मिल गया।

जब सूरते–हाल नाज़ुक होने लगी तो मैंने तीन हंगामी एक्दामात किए (1) फ़रीकैन के नाम सुलह और आश्ती[3] की दर्दनाक अपील जारी कर दी (2) दोनों अतराफ़ के वर्करों की गिरफ़्तारियाँ शुरु कर दीं (3) पैरिस में अपनी हसीन महबूबा को टेलीग्राम भेज दिया। "डार्लिंग! सारा शहर फ़साद की लपेट में आ गया है दिन भर भागदौड़ करता हूँ। तुम लौट आओ तो थका देने वाले हंगामे में सुकून और सुरुर के चंद लम्हे मयस्सर आ जायें।

मेरी अमन की अपील और टेलीग्राम दोनों का कोई असर न हुआ। तनाव अपने उरुज पर है। ख़ुदा और भगवान दोनों ख़ामोश तमाशाई हैं, लाठियाँ और गोलियाँ चलाई जा चुकी हैं। कल से सारा शहर हड़ताल पर है। आज दिन भर मैंने हड़तालज़दा शहर का दौरा किया। एक अमन कमेटी बना दी गई है जिसमें फ़रीकैन के फ़सादी रहनुमा शामिल हैं। दोनों तरफ़ के फ़सादी रहनुमा मेरे अक़ीदतमंद हैं। मैंने एक इन्कवाइरी कमेटी बनाकर उस मुतनाज़ा[4] जगह की तारीख़ी रिसर्च करने का हुक्म जारी कर दिया है।

फैसला करना दुश्वार नहीं है। मगर मैं अभी पैरिस से टेलीग्राम के जवाब का इन्तज़ार कर रहा हूँ।

---

1. अस्थाई 2. अच्छा बदल 3. शान्ति 4. जिस पर झगड़ा हो

۱۰ر دسمبر ——

پیرس سے ٹیلی گرام آگیا ہے۔ (مایوسی)

انکوائری کمیٹی کی رپورٹ بھی آگئی ہے۔ (ایک طرفہ ہے)

اس دوران میں فسادی فریقین کے پانچ آدمی ہلاک ہو چکے ہیں۔ یہ سرکاری اطلاع ہے۔ غیر سرکاری اطلاع میں ہمیشہ مرنے والوں کی تعداد زیادہ ہوتی ہے نہ جانے سرکاری طور پر آدمی زیادہ کیوں نہیں مرتے؟

سنگدل محبوبہ نے واپس آنے کے بجائے مجھے پیرس آنے کی دعوت دی ہے اس نے حکم دیا ہے کہ مندر اور مسجد کا فیصلہ فوراً کردو۔ سیاسی فیصلے حسیناؤں کے حکم سے کیے جاتے ہیں۔ عجیب دنیا ہے۔ عجیب سیاست ہے۔

لیکن میں ابھی تک الجھن میں ہوں۔ میرے کچھ مخالف لیڈر اانکوائری کمیٹی کی رپورٹ شائع کرنے کا مطالبہ کر رہے ہیں۔ کل مظاہرین کا ایک ہجوم اپوزیشن لیڈر شری گورکھ ناتھ جی کی قیادت میں میری کوٹھی کے باہر نعرے لگاتا رہا اور میں اندر بیٹھا اطمینان سے ٹیلی ویژن دیکھتا رہا۔ آج رات میں شری گورکھ ناتھ کو ڈنر پر بلا رہا ہوں۔ اسے مچھلی کے پکوڑے بہت پسند ہیں۔ وہ اکثر کہا کرتا ہے۔ مچھلی کے پکوڑے عوام کے گوشت پوست سے زیادہ لذیذ ہوتے ہیں۔

میرا خیال ہے ڈنر کی مستی میں ہم مسجد اور خدا دونوں کا فیصلہ کرلیں گے۔

۱۲ر دسمبر ——

گورکھ ناتھ کے ساتھ میرا سمجھوتہ نہیں ہوسکا وہ کم بخت اس معاملے کو طول دینا چاہتا ہے۔ کچھ اور زخمی، کچھ اور گرفتاریاں، کچھ اور قتل، کچھ اور بے وقوفیاں جو عوام کی طرف سے سرزد ہوں! ان بے وقوفیوں کے بل بوتے پر میرے سر سے تاج اتارے اور خود پہن لے۔

کیوں نہ میں وزارت سے استعفیٰ دے دوں اور اعلان کردوں کہ اس زمین پر مندر کا حق ہے اور مندر کی دیواروں میں اپنی ہڈیاں چنوا دوں گا۔ میرا لہو اور میرا گوشت

10 दिसम्बर–

पैरिस से टेलीग्राम आ गया है। (मायूसी)

इन्कवाइरी कमेटी की रिपोर्ट भी आ गई है। (एक तरफ़ा है)

इस दौरान फ़सादी फ़रीक़ैन के पाँच आदमी हलाक़ हो चुके हैं। यह सरकारी इत्तला है। ग़ैर–सरकारी इत्तला में हमेशा मरने वालों की तादाद ज़्यादा होती है। न जाने सरकारी तौर पर आदमी ज़यादा क्यों नहीं मरते?

संगदिल महबूबा ने वापस आने के बजाए मुझे पैरिस आने की दावत दी है। उसने हुक्म दिया है कि मन्दिर और मस्जिद का फ़ैसला फ़ौरन कर दो। सियासी फ़ैसले हसीनाओं के हुक्म से किए जाते हैं। अजीब दुनिया है। अजीब सियासत है।

लेकिन मैं अभी तक उलझन में हूँ। मेरे कुछ मुख़ालिफ़ लीडर इन्कवाइरी कमेटी की रिपोर्ट शाया करने का मोतालबा कर रहे हैं। कल मुज़ाहेरीन[1] का एक हुजूम अपोज़ीशन लीडर श्री गोरखनाथ जी की क़यादत में मेरी कोठी के बाहर नारे लगाता रहा और मैं अंदर बैठा इत्मीनान से टेलीवीज़न देखता रहा। आज रात श्री गोरखनाथ को डिनर पर बुला रहा हूँ। उसे मछली के पकौड़े बहुत पसंद हैं। वह अक्सर कहा करता है। मछली के पकौड़े अवाम के गोश्त–पोस्त से ज़्यादा लज़ीज़ होते हैं।

मेरा ख़याल है डिनर की मस्ती में हम मस्जिद और ख़ुदा दोनों का फ़ैसला कर लेंगे।

12 दिसम्बर–

गोरखनाथ के साथ मेरा समझौता नहीं हो सका वह कमबख़्त इस मामले को तूल देना चाहता है। कुछ और ज़ख़्मी, कुछ और गिरफ़्तारियाँ, कुछ और क़त्ल, कुछ और बेवकूफ़ियाँ जो अवाम की तरफ़ से सरज़द हों! उन बेवकूफ़ियों के बल–बूते पर मेरे सर से ताज उतारे और ख़ुद पहन ले।

क्यों न मैं वज़ारत[2] से इस्तीफ़ा देदूँ और एलान कर दूँ कि इस ज़मीन पर मन्दिर का हक़ है और मन्दिर की दीवारों में अपनी हड्डियाँ चुनवा दूँगा। मेरा लहू और मेरा गोश्त मन्दिर की तामीर में लगा दिया जाये, इस

1. प्रदर्शनकारी 2. मंत्री परिषद

مندر کی تعمیر میں لگا دیا جائے، اس سے دو فائدے ہوں گے (۱) گورکھ ناتھ کی تقدیر پھوٹ جائے گی۔ کیونکہ وہ بھی مندر کے حق میں شور و غل مچاتا پھرتا ہے۔ میرے میدان میں اترتے ہی لوگ گورکھ ناتھ کو بھول جائیں گے (۲) مندر کی حفاظت کے لیے جو دو لاکھ روپیہ چندہ جمع ہو چکا ہے۔ وہ میری تحویل میں آجائے گا۔

لیکن مسجد بچاؤ کمیٹی کا کیا ردِ عمل ہوگا۔ کیونکہ اس کمیٹی کا صدر بھی میرا فرشتہ ہے اور وہ اب تک مجھ سے پچیس ہزار روپے لے چکا ہے۔ اور پھر وہ میرا سچا وفادار بھی ہے۔

بڑی الجھن ہے۔ ابھی کچھ اور سوچنا چاہیے، کچھ اور انتظار کرنا چاہیے۔

۱۶ر دسمبر ——

کامیابی۔ مسرت۔ ذہانت!

متنازعہ جگہ کا حل تلاش کر لیا گیا ہے، ریسرچ کمیٹی کی رپورٹ میں ایک سنسنی خیز تبدیلی کر لی گئی ہے کہ یہاں مندر اور مسجد سے پہلے گوالے رہا کرتے تھے۔ اس لئے اس جگہ پر گایوں کی پرورش و پرداخت کی جائے گی اور عوام کو خالص، پاکیزہ دودھ بازار سے پچیس فی صدی رعایتی قیمت پر سپلائی کیا جائے گا۔ ریسرچ کمیٹی کے پانچ معزز ممبروں نے پانچ پانچ ہزار روپے لے کر یہ تسلیم کر لیا ہے کہ شری لپاڑیا ہم سے زیادہ بہتر مورّخ ہیں۔ انھوں نے تو رپورٹ میں یہ ترمیم بھی منظور کر لی کہ اس جگہ کی کھدائی کے دوران ایک گائے کا سینگ بھی ملا ہے۔ اور دودھ دوہنے والا برتن بھی۔

آج شام کو عوام کا ایک بھاری جلوس نکل رہا ہے جو گوشالہ بنانے کے حق میں ہوگا۔ عوام کو مہنگے خدا کی ضرورت نہیں، سستے دودھ کی زیادہ ضرورت ہے!

کل صبح سرکار کی طرف سے ایک فراخدلانہ پیش کش کی جائے گی کہ مندر اور مسجد کی تقدیس کو برقرار رکھنے کے لیے گوشالہ کے دائیں اور بائیں طرف کی زمین الاٹ کر دی جائے گی اور تعمیر کا سارا خرچ سرکار ادا کرے گی۔

فریقین کے دو بڑے رہنما میرے ہاتھوں سے جُوس کے گلاس پی کر کل صبح اپنی

से दो फ़ायदे होंगे (1) गोरखनाथ की तक़्दीर फूट जायेगी। क्योंकि वह भी मन्दिर के हक़ में शोरो-गुल मचाता फिरता है। मेरे मैदान में उतरते ही लोग गोरखनाथ को भूल जायेंगे (2) मन्दिर की हिफ़ाज़त के लिए जो दो लाख रुपया जमा हो चुका है। वह मेरी तहवील में आ जायेगा।

लेकिन मस्जिद बचाओ कमेटी का क्या रद्दे-अमल होगा। क्योंकि इस कमेटी का सद्र भी मेरा फ़रिश्ता है और वह अब तक मुझसे पचीस हज़ार रुपये ले चुका है। और फिर वह मेरा सच्चा वफ़ादार भी है।

बड़ी उलझन है। अभी कुछ और सोचना चाहिए, कुछ और इन्तज़ार करना चाहिए।

16 दिसम्बर—

कामयाबी, मुसर्रत, ज़िहानत!

मुतनाज़ा जगह का हल तलाश कर लिया गया, रिसर्च कमेटी की रिपोर्ट में एक सनसनी ख़ेज़ तब्दीली कर ली गई है कि यहाँ मन्दिर और मस्जिद से पहले ग्वाले रहा करते थे। इसलिए इस जगह पर गायों की परवरिशो-परदाख़्त की जायेगी और अवाम को ख़ालिस, पाकीज़ा दूध बाज़ार से पचीस फ़ीसदी रिआयती क़ीमत पर सप्लाई किया जायेगा। रिसर्च कमेटी के पाँच मोअज़्ज़िज़ मेम्बरों ने पाँच-पाँच हज़ार रुपये लेकर यह तस्लीम कर लिया है कि श्री लपाड़िया हम से ज़्यादा मवर्रिख़[1] हैं। उन्होंने तो रिपोर्ट में यह तरमीम भी मंजूर करली कि इस जगह की खुदाई के दौरान गाय का सींग भी मिला है। और दूध दुहने वाला बर्तन भी।

आज शाम को अवाम का एक भारी जुलूस निकल रहा है जो गउशाला बनाने के हक़ में होगा। अवाम को महंगे खुदा की ज़रुरत नहीं, सस्ते दूध की ज़्यादा ज़रुरत है!

कल सुबह सरकार की तरफ़ से एक फ़राख़दिलाना पेशकश की जायेगी कि मन्दिर और मस्जिद की तक़्दीस[2] को बरक़रार रखने के लिए गउशाला के दाएँ और बाएँ तरफ़ की ज़मीन एलॉट कर दी जायेगी और तामीर का सारा ख़र्च सरकार अदा करेगी।

फ़रीक़ैन के दो बड़े रहनुमा मेरे हाथों से जूस के गिलास पीकर कल सुबह अपनी भूक हड़ताल ख़त्म कर रहे हैं। अपने ही अज़ीज़ हैं।

---

1. इतिहासकार 2. पवित्रता

بھوک ہڑتال ختم کر رہے ہیں۔ اپنے ہی عزیز ہیں۔ بڑے فرمانبردار ہیں۔ میں کل صبح ہوائی جہاز سے پیرس کی طرف پرواز کر رہا ہوں۔ اس اندولن کی تکان مٹانے کے لیے محبوبہ کی آغوش بہت ضروری ہے۔ اگرچہ سرکاری طور پر میں فرانس میں بندروں کے ایکسپورٹ کے سلسلے میں گفتگو کرنے جا رہا ہوں۔

ایک بابو کی ڈائری ——

۳ر مئی ۱۹۷۰ء ——

کل میسرز ٹھینگارام جھینگامل کے مالک بھیگا چند نے مجھے خوش کرنے کے لیے ۱۹۷۰ء کی ایک ڈائری عنایت فرمائی۔ کیونکہ میں نے اس سے وعدہ کیا تھا کہ ریلوے کے گڈس پارسل کلرک بیجو ناتھ سے آپ کا ''مناسب'' تعارف کرادوں گا۔ مجھے یاد ہے کہ میں نے لفظ ''مناسب'' پر خاص زور دیا تھا۔ ایک لفظ کے بدلے میں ایک ڈائری مل جاتی ہے۔ مارکیٹ میں لفظ بھی بکتے ہیں۔ کتنی پیاری دنیا ہے۔ کتنی پیاری مارکیٹ ہے!

سنا ہے، ہر بڑا آدمی ڈائری لکھتا ہے، مجھے شک ہو گیا ہے کہ میں بڑا آدمی ہوں یا بننے والا ہوں۔ جب میں چھوٹا سا تھا تو میرا والد کہا کرتا تھا۔ ''میرا بیٹا بڑا ہو کر سبھاش بابو بنے گا۔'' والد کی دعا کا ففٹی ففٹی اثر ہوا۔ یعنی میں سبھاش بابو تو نہ بن سکا۔ صرف بابو بن گیا۔ مجھے اس لفظ سے سخت نفرت ہے۔ رکشا والا، تانگے والا، قلی، چپراسی سبھی بابو کہہ کر بلاتے رہیں گے میں بڑا آدمی نہیں بن سکتا۔ کسی نے مجھے بتایا کہ بابو لفظ ''بابونہ'' سے نکلا ہے جس کا مطلب ''بندر'' ہے۔ میں نے جب بھی آئینہ دیکھا ہے مجھے بندر کہیں دکھائی نہ دیا۔ جس دن مجھے اپنے اندر بند نظر آ گیا میں خودکشی کر لوں گا۔

میری بیوی ادھر آ رہی ہے۔ بندر کی بیوی! جب یہ دلہن بن کر آئی تھی تو بالکل فلم اسٹار سائرہ بانو معلوم ہوتی تھی۔ لیکن اب چھ ہی سات سال میں ''سلم ایریا'' بن کر رہ گئی ہے۔ میرے خیال میں مجھے ڈائری لکھنا بند کر دینا چاہیے۔ کیوں کہ وہ مجھ سے آ کر کہے گی۔ اے میرے چار بچوں اور پانچویں امیدوار بچے کے ڈیڈی! اپنے اس بچہ کو

बड़े फरमाबरदार हैं। मैं कल सुबह हवाई ज़हाज़ से पैरिस की तरफ़ परवाज़ कर रहा हूँ। इस आन्दोलन की तकान मिटाने के लिए महबूबा की आग़ोश बहुत ज़रुरी है। अगरचे सरकारी तौर पर मैं फ्रांस में बंदरों के एक्सपोर्ट के सिलसिले में गुफ़्तगू करने जा रहा हूँ।

एक बाबू की डायरी

3 मई 1970 ई.–

कल मेसर्स ठेंगा राम छींगामल के मालिक मनीका चंद ने मुझे खुश करने के लिए 1970 ई. की एक डायरी इनायत फरमाई। क्योंकि मैंने उससे वादा किया था कि रेलवे के गुड्स पार्सल क्लर्क बैजूनाथ से आपका "मुनासिब" तआर्रुफ़[1] करा दूँगा। मुझे याद है कि मैंने लफ़्ज़ "मुनासिब" पर ख़ास ज़ोर दिया था। एक लफ़्ज़ के बदले में एक डायरी मिल जाती है। मार्केट में लफ़्ज़ भी बिकते हैं। कितनी प्यारी दुनिया है। कितनी प्यारी मार्केट है!

सुना है हर बड़ा आदमी डायरी लिखता है, मुझे शक हो गया है कि मैं बड़ा आदमी हूँ या बनने वाला हूँ। जब मैं छोटा सा था तो मेरा वालिद कहा करता था। "मेरा बेटा बड़ा होकर सुभाष बाबू बनेगा।" वालिद की दुआ का फ़िफ़्टी–फ़िफ़्टी असर हुआ। यानी मैं सुभाष बाबू तो न बन सका। सिर्फ बाबू बन गया। मुझे इस लफ़्ज़ से सख़्त नफ़रत है। रिक्शे वाला, तांगे वाला, कुली, चपरासी सभी बाबू कहकर बुलाते रहेंगे मैं बड़ा आदमी नहीं बन सकता। किसी ने मुझे बताया कि लफ़्ज़ बाबू "बाबूना" से निकला है जिसका मतलब "बंदर" है। मैंने जब भी आईना देखा है मुझे बंदर कहीं दिखाई न दिया। जिस दिन मुझे अपने अंदर बंदर नज़र आ गया मैं खुदकुशी कर लूँगा।

मेरी बीवी इधर आ रही है। बंदर की बीवी! जब यह दुल्हन बनकर आई थी तो बिल्कुल फ़िल्म स्टार सायरा बानो मालूम होती थी। लेकिन अब छः ही सात साल में "स्लम ऐरिया" बनकर बनकर रह गई है। मेरे ख़याल

1. परिचय

ڈانٹو یہ اپنی نئی قمیص پھاڑ لایا ہے اور اسے یہ وارننگ بھی دے دو کہ اسے تنخواہ آنے تک ننگا رہنا پڑے گا۔

۶ر مئی ۱۹۷۰ء ـــــ

آج سارا دن بے حد مصروف رہا۔ مالک مکان آٹھویں بار مکان خالی کرنے کی دھمکی دینے آیا۔ آدھ گھنٹہ تک اسے گالیاں دیں اور گالیاں کھائیں گالیوں کے اس کاروبار کے دوران ننھے بچے کو بوتل میں سے دودھ بھی پلاتا رہا کیونکہ میری سلم ایریا برہم کماریوں کے ست سنگ میں بھگوان کے ساتھ براہ راست تعلقات قائم کرنے گئی ہوئی تھی۔ خاوند گالیاں کھاتا ہے۔ بیوی ست سنگ کرتی ہے جب وہ لوٹی تو میں نے مالک مکان سے جتنی گالیاں کھائی تھیں، وہ بیوی کے حلق میں انڈیل دیں۔ دفتر میں جا کر بڑے صاحب سے جھڑپ ہو گئی۔ اس نے دھمکی دی کہ تمہارے خلاف ان ایفی شینسی کی کچھ رپورٹیں آئی ہیں۔ مالک مکان مجھے دھمکی دیتا ہے میں بیوی کو دھمکی دیتا ہوں۔ بیوی بچوں کو دھمکی دیتی ہے ہر بڑا ہر چھوٹے کو دھمکیوں تلے پیتا جا رہا ہے۔ صاحب بڑا ہے، میں چھوٹا ہوں اگر نوکری چھوٹ گئی، اگر بیوی برہم کماریوں کے ساتھ بھاگ گئی؟ میں ڈر گیا صاحب سے وعدہ کر لیا کہ میسرز ٹھینگا مل کی دوکان سے آپ کے مکان کے لیے ایک من لوہے کا سریا لا دوں گا۔ بیوی کو ٹیلیفون کر دیا کہ فی الحال برہم کماریوں کے ساتھ بھاگنے کا پروگرام ملتوی کر دو۔ مالک مکان کے گھر جا کر منت سماجت کی کہ میں رشوت لینے کا نیک کام شروع کر رہا ہوں اور ڈیوڑھا کرایہ ادا کیا کروں گا۔ اور کیا کرتا۔ تین سو روپے ماہانہ پانے والا بابو ذلت آمیز سمجھوتوں کے سوا اور کر بھی کیا سکتا ہے۔

سارا دن سمجھوتے کرتا رہا۔ شام کو کلرکوں کی ریلی میں انقلاب زندہ باد کے نعرے لگاتا رہا۔ اس کے بعد من کی شانتی کے لئے ایک بھگوتی جاگرن میں شریک ہوا۔ اس وقت نیند نہیں آ رہی ہے۔ اس لیے ڈائری لکھ رہا ہوں۔

۱۰ر مئی ۱۹۷۰ء ـــــ

آج کوئی خاص گھٹنا نہیں ہوئی۔ اتوار کی چھٹی تھی، اس لیے دن بھرا کتاہٹ

में मुझे डायरी लिखना बंद कर देना चाहिए। क्योंकि यह मुझसे आकर कहेगी। ऐ मेरे चार बच्चों और पाँचवीं उम्मीदवार बच्चे के डैडी! अपने इस बच्चे को डाँटो यह अपनी नई कमीज़ फाड़ लाया है और इसे यह वार्निंग भी दे दो कि इसे तनख़्वाह आने तक नंगा रहना पड़ेगा।

6 मई 1970 ई.–

आज सारा दिन बेहद मसरुफ़ रहा। मालिक मकान आठवीं बार मकान ख़ाली करने की धमकी देने आया। आध घंटे तक उसे गालियाँ दीं और गालियाँ खायीं गालियों के इस कारोबार के दौरान नन्हे बच्चे को बोतल में से दूध भी पिलाता रहा क्योंकि मेरी स्लम ऐरिया बृह्म कुमारियों के सतसंग में भगवान के साथ बराहे–रास्त तअल्लुक़ात क़ायम करने गई हुई थी। ख़ाविंद गालियाँ खाता है। बीवी सतसंग करती है जब वह लौटी तो मैं ने मालिक मकान से जितनी गालियाँ खाई थीं, वह बीवी के हलक़ में उन्डेल दीं। दफ़्तर में जाकर बड़े साहब से झड़प हो गई। उसने धमकी दी कि तुम्हारे ख़िलाफ़ इन एफ़ीशिएन्सी की कुछ रिपोर्टें आई हैं। मालिक मकान मुझे धमकी देता है मैं बीवी को धमकी देता हूँ। बीवी बच्चों को धमकी देती है हर बड़ा हर छोटे को

धमकियों तले पिसता जा रहा है। साहब बड़ा है, मैं छोटा हूँ अगर नौकरी छूट गई, अगर बीवी बृह्म कुमारियों के साथ भाग गई? मैं डर गया साहब से वादा कर लिया कि मेसर्स ठेंगामल की दूकान से आपके मकान के लिए एक मन लोहे का सरिया ला दूँगा। बीवी को टेलीफ़ोन कर दिया कि फ़िलहाल बृह्म कुमारियों के साथ भागने का प्रोग्राम मुल्तवी कर दो। मालिक मकान के घर जाकर मिन्नत समाजत की कि मैं रिश्वत लेने का नेक काम शुरु कर रहा हूँ और ड्योढ़ा किराया अदा कर दिया करूँगा। और क्या करता। तीन सौ रुपये माहाना पाने वाला बाबू ज़िल्लत–आमेज़ समझौतों के सिवा और कर भी क्या सकता है।

सारा दिन समझौते करता रहा। शाम को क्लर्कों की रैली में इन्क़लाब ज़िन्दाबाद के नारे लगाता रहा। उसके बाद मन की शान्ती के लिए एक भगवती जागरण में शरीक़ हुआ। इस वक़्त नींद नहीं आ रही है। इसलिए डायरी लिख रहा हूँ।

رہی۔ بیوی کے ساتھ فلم دیکھنے کا وعدہ کیا اور توڑ دیا، تاش کھیلنے والے کچھ کلرک بابو آ گئے۔ وہ جوا کھیلنا چاہتے تھے۔ میں نے صاف کہہ دیا کہ میں نے اپنے کیرکٹر کی تعمیر شروع کر دی ہے۔ اس لیے جوا نہ کھیلوں گا۔ انھوں نے مجھے جورو کا غلام کہہ دیا۔ میں نے قبول کر لیا۔ شام کو تفریح کے لیے بچوں کو لے کر میونسپل پارک میں چلا گیا اور ان کے ساتھ گھاس پر بیٹھ کر مونگ پھلیاں کھاتا رہا۔ کئی مہینوں بعد بچوں نے اعلان کیا کہ تم ہمارے ڈیڈی ہو۔ مونگ پھلیاں اور میونسپل پارک صرف دو چیزیں ایسی ہیں جو انسان کو ڈیڈی بنا دیتی ہیں۔ میں نے جب بچوں کو اپنے اوپر اتنا مہربان دیکھا تو انھیں ان کی ممی کے خلاف بھڑکاتا رہا۔ اور ان میں سے ایک بچے نے تو مجھ سے وعدہ بھی کر لیا کہ آئندہ ممی کے رازہائے سربستہ آپ کو بتا دیا کروں گا۔

۱۳ر مئی ۱۹۷۰ء ——

گذشتہ دنوں سے محسوس کر رہا ہوں کہ ہمارے گھر کے سامنے والی چھت پر ایک نوجوان لڑکی ٹھیک اس وقت بال بکھیرے آ کھڑی ہوتی ہے۔ جب میں دفتر جانے لگتا ہوں وہ زلفوں کو کسی رقاصہ کے انداز میں جب جھٹکا دیتی ہے میرے دل میں گھنگھرو بج اٹھتے ہیں۔ شروع شروع میں تو مجھے نگاہیں ملانے کی جرأت نہ ہوئی کیوں کہ ایک تو میں کلرک ہوں۔ دوسرے محلّے والے بھی مجھے شریف آدمی کہتے ہیں اور تیسرے یہ کہ پیار کرنے کے لیے ٹائم چاہیے۔ میرا ٹائم دفتر کے لئے مخصوص ہے۔ پیار کرنے کے لیے نہیں۔ لیکن ایک دن تنگ آ کر میں نے اسے ہاتھ سے سلام کر دیا۔ وہ کمبخت مسکرا دی۔ اس مسکراہٹ نے میرے اندر کا سارا نظام اتھل پتھل کر دیا۔ اس دن بس پر سوار ہوتے وقت اچانک اس کی مسکراہٹ یاد آ گئی تو بس سے پاؤں پھسل گیا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ روٹی کا ڈبہ تو بس کے اندر چلا گیا اور میں بس سے باہر رہ گیا۔

بیوی نے پوچھا تھا۔ ''ڈبہ کہاں گم کر آئے''۔ میں نے جواب دیا ''چوری ہو گیا''۔ اب میں اسے کیسے بتاتا کہ سامنے وہ جو زلفوں والی سانولی سلونی لڑکی رہتی ہے۔ ڈبہ اسی نے چرایا ہے۔

10 मई 1970 ई.–

आज कोई घटना नहीं हुई। इतवार की छुट्टी थी, इसलिए दिन भर उकताहट रही। बीवी के साथ फ़िल्म देखने का वादा किया और तोड़ दिया, ताश खेलने वाले कुछ क्लर्क बाबू आ गये। वह जुआ खेलना चाहते थे। मैंने साफ़ कह दिया कि मैं ने अपने कैरेक्टर की तामीर शुरु कर दी है। इसलिए जुआ न खेलूँगा। उन्होंने मुझे जोरु का गुलाम कह दिया। मैंने कबूल कर लिया। शाम को तफ़रीह के लिए बच्चों को लेकर म्यूनिसपल पार्क में चला गया और उनके साथ घास पर बैठकर मूँगफलियाँ खाता रहा। कई महिनों के बाद बच्चों ने एलान किया कि तुम हमारे डैडी हो। मूँग फलियाँ और म्यूनिसपिल पार्क सिर्फ़ दो चीज़ें ऐसी हैं जो इन्सान को डैडी बना देती हैं। मैंने जब बच्चों को अपने उपर इतना मेहरबान देखा तो उन्हें उनकी मम्मी के ख़िलाफ़ भड़काता रहा। और उनमें से एक बच्चे ने तो मुझसे वादा भी कर लिया क आइन्दा मम्मी के राज़ हाए– सर बस्ता[1] आपको बता दिया करुँगा।

13 मई 1970 ई.–

गुज़िश्ता दिनों से महसूस कर रहा हूँ कि हमारे घर के सामने वाली छत पर एक नौजवान लड़की ठीक उस वक़्त बाल बिखेरे आ खड़ी होती है जब मैं दफ़्तर जाने लगता हूँ वह ज़ुल्फ़ों को किसी रक़्क़ासा के अन्दाज़ में झटका देती है मेरे दिल में घुंघरु बज उठते हैं। शुरु–शुरु में तो मुझे निगाहें मिलाने की जुर्रत न हुई क्योंकि एक तो मैं क्लर्क हूँ , दूसरे मोहल्ले वाले मुझे शरीफ़ आदमी कहते हैं और तीसरे यह कि प्यार करने के लिए टाइम चाहिए। मेरा टाइम दफ़्तर के लिए मख़्सूस है। प्यार करने के लिए नहीं। लेकिन तंग आकर मैंने उसे हाथ से सलाम कर दिया। वह कमबख़्त मुस्कुरा दी। उस मुस्कुराहट ने मेरे अन्दर का सारा निज़ाम उथल पुथल कर दिया। उस दिन बस पर सवार होते वक़्त अचानक उस की मुस्कुराहट याद आ गई तो बस से पाँव फिसल गया। नतीजा यह हुआ कि रोटी का डिब्बा तो बस के अन्दर चला गया और मैं बस से बाहर रह गया।

बीवी ने पूछा था। "डिब्बा कहाँ गुम कर आये।" मैंने जवाब दिया "चोरी हो गया। अब मैं उसे क्या बताता कि सामने वह जो ज़ुल्फ़ों वाली

1. छिपी हुई बातें

آج صبح وہ سانولی سلونی لڑکی چھت پر نہیں آئی۔ میرا دل ڈوبنے لگا، جی چاہا آج مجھ محروم دیدار کو دفتر نہ جانا چاہئے۔ کئی منٹ تک اس سانولے چاند کے طلوع ہونے کے انتظار میں سڑک پر کھڑا رہا۔ میرا چھوٹا بچہ بالکونی سے مجھے "بائی بائی" کرتا رہا۔ بچے کی اس حرکت سے گھبرا کر چل دیا۔ جاتے جاتے ایک ٹھنڈی آہ محبوبہ کی چھت کی طرف پھینک دی۔ سارا دن دفتر میں طبیعت مضمحل رہی۔ کسی کام کو جی نہ چاہا۔ شام کو اور ٹائم پر بھی کام نہیں کیا اور جلدی گھر لوٹ آیا کیا دیکھتا ہوں...... کہ چاند میرے گھر کی بالکونی میں اتر آیا ہے اور میری بیوی کے ساتھ غیر رومانی باتوں میں مصروف ہے۔ میرا دل زور زور سے دھڑکا جیسے باہر نکل کر محبوبہ کے قدموں پر جا گرے گا۔ میں نے جلدی جلدی بیوی کی آنکھیں بچا کر محبوبہ سے آنکھ ملائی۔ ایک خاموش مدبھری مسکراہٹ نے جواب دیا۔ "بائی بائی"۔

بعد میں بیوی نے مجھے بتایا کی ان لوگوں کا تبادلہ کانپور ہو گیا ہے اور کل جا رہے ہیں، عجیب محبوبہ ہے۔ اتنی جلدی بائی بائی کرنا تھا تو مسکرا کر کیوں دیکھا تھا ابھی تو خاموش پیار گفتگو کی منزل میں تھا۔ لبوں کو جنبش تک نہ ہوئی تھی۔ محبت کے دو بولوں کا تبادلہ تک نہ ہوا تھا۔ اور تم چلی گئیں، اتنا مختصر پیار! اس سے پہلے کی میں جرأت اظہار کروں، انداز گفتار سوچوں، تم باہیں چھڑا کر بھاگ گئیں!

اب تو ڈائری لکھنے میں لطف آنے لگا تھا۔ اب فائدہ ڈائری لکھنے کا سوچ رہا ہوں ڈائری کے باقی صفحے میسرز ٹھینگا مل کو لوٹا دوں۔ اس پیار میں میرے دو نقصان ہوئے۔ ایک تو دل ٹوٹ گیا اور دوسرے روٹی کا ڈبہ گم ہو گیا۔

۱۴ر مئی ۱۹۷۰ء ——

آج صبح ریشمی زلفوں والی محبوبہ اپنی فیملی کے ساتھ ٹیکسی پر سوار ہو کر روانہ ہو گئی۔ میں نے عینک لگا کر اس طرف دیکھا۔ میرا خیال ہے وہ اداس تھی میری عینک بہترین کوالٹی کی ہے، جھوٹ نہیں بولتی۔

میں نے آج اس کے ہجر میں تڑپنے کے لیے دفتر سے چھٹی لے لی۔ اس کے

साँवली सलोनी लड़की रहती है। डब्बा उसी ने चुराया है।

आज सुबह वह साँवली सलोनी लड़की छत पर नहीं आई। मेरा दिल डूबने लगा, जी चाहा आज मुझ महरुमे–दीदार को दफ़्तर न जाना चाहिए। कई मिनट तक उस साँवले चाँद के तुलूअ होने के इन्तज़ार में सड़क पर खड़ा रहा। मेरा छोटा बच्चा बालकोनी से मुझे "बाय बाय" करता रहा। बच्चे की इस हरकत से घबराकर चल दिया। जाते–जाते एक ठंडी आह महबूबा की छत की तरफ़ फेंक दी। सारा दिन दफ़्तर में तबीयत मुज़महिल रही। किसी काम को जी न चाहा। शाम को ओवर टाइम पर भी काम नहीं किया और जल्दी घर लौट आया क्या देखता हूँ......कि चाँद मेरे घर की बालकोनी में उतर आया है और मेरी बीवी के साथ ग़ैर रुमानी बातों में मसरुफ़ है। मेरा दिल ज़ोर–ज़ोर से धड़का जैसे बाहर निकल कर महबूबा के क़दमों पर जा गिरेगा। मैंने जल्दी जल्दी बीवी की आँखें बचाकर महबूबा से आँख मिलाई। एक ख़ामोश मद भरी मुस्कुराहट ने जवाब दिया। "बाय बाय"।

बाद में बीवी ने बताया इन लोगों का तबादला कानपुर हो गया है और कल जा रहे हैं, अजीब महबूबा है। इतनी जल्दी बाय बाय करना था तो मुस्कुरा कर क्यों देखा था अभी तो ख़ामोश प्यार गुफ़्तगू की मंज़िल में था। लबों को जुंबिश तक न हुई थी। मुहब्बत के दो बोलों का तबादला तक न हुआ था और तुम चली गई, इतना मुख़्तसर प्यार! इससे पहले कि मैं जुर्रते–इज़हार करूँ, अन्दाज़े–गुफ़्तार सोचूँ , तुम बाहें छुड़ाकर भाग गईं!

अब तो डायरी लिखने में लुत्फ़ आने लगा था। अब फ़ायदा डायरी लिखने का सोच रहा हूँ डायरी के बाक़ी सफ़े मेसर्स ठेंगामल को लौटा दूँ। इस प्यार में मेरे दो नुक़सान हुए। एक तो दिल टूट गया और दूसरे रोटी का डिब्बा गुम हो गया।

14 मई 1970 ई.–

आज सुबह रेशमी जुल्फ़ों वाली महबूबा अपनी फैमली के साथ टैक्सी पर सवार होकर रवाना हो गई। मैंने ऐनक लगाकर उसकी तरफ़ देखा। मेरा ख़याल है वह उदास थी मेरी ऐनक बेहतरीन क्वालिटी की है झूट नहीं बोलती।

جانے کے بعد بہت پچھتایا کہ اس سے کانپور کا ایڈریس ہی پوچھ لیتا۔ میرا سب کچھ چھین کر لے گئی۔ کم از کم اس کا ایڈریس تو میرے پاس رہ جاتا۔ سارا دن اپنی اس بے وقوفی اور محبوبہ کے مستقبل پر آہیں بھرتا رہا۔ آہیں بھرنے کے دوران میرا بڑا سالا آگیا۔ اس کے ساتھ انتہائی لغو اور بے معنی باتیں کرتا رہا۔ وہ اپنی بہن کو چند دن کے لیے لینے آیا تھا۔ میں نے بخوشی اجازت دے دی۔ بچے اپنے انکل کو دیکھ کر، مجھے بھول گئے۔ ایک تو محبوبہ کا ہجر اور اب بیوی کا ہجر۔ ایک میں آہیں ہیں دوسرے میں حسرت ہے۔ اس وقت بیوی بچے میرے سالے صاحب کے ساتھ سینما دیکھنے کے لیے گئے ہوئے ہیں اور میں گھر میں تنہا ہوں۔ یہ ڈائری لکھ رہا ہوں۔ بار بار نگاہیں اس چھت کی طرف اٹھ جاتی ہیں جہاں کہیں زلفیں لہرایا کرتی تھیں آج ایک کوا بیٹھا کائیں کائیں کر رہا ہے۔

اور میں سوچ رہا ہوں اب جب کہ رومان کے امکانات تاریک ہو گئے ہیں اپنے آپ کو مصروف رکھنے کے لیے کوئی شغل اختیار کر لوں۔ رشوت کا کام ہی شروع کر دوں۔ محبت نہ سہی رشوت ہی سہی۔ دل و دماغ کے لیے کوئی ہنگامہ تو رہنا ہی چاہیے۔

۲؍ مئی ۱۹۷۰ء ——

آج مندرجہ ذیل کارہائے نمایاں سرانجام دیے۔

۱۔ گھر کی چارپائیوں کی ادوائنیں کس دیں۔

۲۔ راشن کارڈ کی تجدید کروائی اور گھر کے پانچ افراد کی بجائے چھ افراد لکھوائے۔

۳۔ بلیک میں بناسپتی کا ایک ڈبہ خرید لیا۔

۴۔ دفتر سے سٹیشنری چرائی۔ بچوں کے کام آئے گی۔

۵۔ ایک دوست سے دس روپے ادھار لیے کیوں کہ تنخواہ ختم ہو چکی تھی۔ یہ دس روپے لوٹانے کا ارادہ نہیں ہے کیوں کہ اس دوست نے دو سال پہلے مجھ سے پانچ روپے ادھار لیے تھے لیکن ابھی تک نہیں لوٹائے تھے۔

۶۔ بیوی کو اس کے میکے میں ارجنٹ خط لکھا کہ اسے لو لیٹر سمجھ کر جلدی لوٹ آؤ تمھارے ہجر نے مجھے دو کوڑی کا نہیں رکھا۔

मैंने आज उसके हिज्र में तड़पने के लिए दफ़्तर से छुट्टी ले ली। उसके जाने के बाद बहुत पछताया कि उससे कानपुर का एड्रेस ही पूछ लेता। मेरा सब कुछ छीनकर ले गई। कम अज़ कम उसका एड्रेस तो मेरे पास रह जाता। सारा दिन अपनी इस बेवकूफ़ी और महबूबा के मुस्तक़बिल पर आहें भरता रहा। आहें भरने के दौरान मेरा बड़ा साला आ गया। उसके साथ इन्तहाई लग्व[1] और बेमानी बातें करता रहा। वह अपनी बहन को चंद दिनों के लिए लेने आया था। मैंने बखुशी इजाज़त देदी। बच्चे अपने अंकल को देखकर, मुझे भूल गये। एक तो महबूबा का हिज्र और अब बीवी का हिज्र। एक में आहें हैं दूसरे में हसरत है। इस वक़्त बीवी बच्चे मेरे साले साहब के साथ सिनेमा देखने के लिए गये हुए हैं और मैं घर में तन्हा हूँ। यह डायरी लिख रहा हूँ। बार–बार निगाहें उस छत की तरफ़ उठ जाती हैं जहाँ कहीं ज़ुल्फ़ें लहराया करती थीं आज एक कौआ बैठा कायँ–कायँ कर रहा है।

और मैं सोच रहा हूँ अब तब कि रुमान के इमकानात तारीक हो गये हैं अपने आपको मसरुफ़ रखने के लिए कोई शग़्ल अख्तियार कर लूँ। रिश्वत का काम ही शुरु कर दूँ। मोहब्बत न सही रिश्वत ही सही। दिलो–दिमाग़ के लिए कोई हंगामा तो रहना ही चाहिए।

2 मई 1970 ई.–

आज मुन्दरजा ज़ैल[2] कार–हाए नुमायाँ सर–अंजाम दिए।

1. घर की चारपाइयों की अदवाइनें कस दीं।
2. राशन कार्ड की तजदीद[3] करवाई और घर के पाँच अफ़राद के बजाये छः अफ़राद लिखवाये।
3. ब्लेक में बनस्पति का एक डिब्बा ख़रीद लिया।
4. दफ़्तर से स्टेशनरी चुराई। बच्चों के काम आयेगी।
5. एक दोस्त से दस रुपये उधार लिए क्योंकि तनख़्वाह ख़त्म हो चुकी थी। यह दस रुपये लौटाने का इरादा नहीं है क्योंकि उस दोस्त ने दो साल पहले मुझसे पाँच रुपये उधार लिए थे लेकिन अभी तक नहीं लौटाये थे।

---

1. बेकार 2. निम्नलिखित 3. नवीनीकरण

۷۔ اپنے ایک ساتھی کلرک کے خلاف بڑے صاحب کو چٹھی لکھی کہ وہ ہر روز دفتر آکر صرف حاضری لگاتا ہے اور پھر بھاگ جاتا ہے۔ تحقیق کی جائے۔ اس چٹھی کے نیچے اپنا نام نہیں لکھا۔ اس کلرک نے بھی میری اسٹیشنری چرانے کی رپورٹ کردی تھی۔

۸۔ گھر لوٹتے وقت بس میں سوار ہوا۔ رش زیادہ تھا اس لیے میں نے کنڈکٹر سے ٹکٹ لینا مناسب نہ سمجھا۔

۹۔ فروٹ شاپ پر آکر پھلوں کا ریٹ پوچھا، خریدے نہیں کیوں کہ حسب سابق بے حد مہنگے تھے۔ گھر آکر ایک "لیٹر ٹو دا ایڈیٹر" لکھا کہ مہنگائی نے ہم کلرکوں کی کمر توڑ دی ہے۔

۱۰۔ ایک بلی کو مارا جو بیوی کی غیر حاضری سے فائدہ اٹھا کو دودھ پینا چاہتی تھی، لیکن ڈنڈا بلی کے بجائے دودھ کی کڑھائی کو جالگا۔ دودھ الٹ گیا۔ نہ بلی کے کام آیا نہ میرے۔ میں اور بلی دونوں بہت دیر تک کفِ افسوس ملتے رہے۔

۲۵ر مئی ۱۹۷۰ء ـــــ

کل سے اہلیہ محترمہ تشریف لے آئیں۔ آتے ہی انھوں نے دو اہم سنسنی خیز خبریں سنائیں۔ ایک یہ کہ بڑا برخوردار عزیز از جاں رمیش چندر جوا کھیلتے ہوئے پولیس کے ہاتھوں گرفتار ہو گیا ہے۔ بہت مشکل سے نانا جی کے رسوخ کی بدولت معافی مانگ کر رہا کرایا گیا اور دوسری خبر یہ کہ پانچویں عزیز از جان کی ڈلیوری کا وقت قریب آپہنچا ہے۔ لہٰذا باادب باملاحظہ ہوشیار!

میں نے بیوی سے دست بستہ عرض کی کہ جہاں تک جوئے کے کیس کا تعلق ہے وہ ننھیال سے ورثے میں عنایت ہوا ہے۔ سنا ہے برخوردار کے نانا بھی بالکل اسی عمر میں جوا کھیلتے ہوئے حوالات تشریف لے گئے تھے۔ اس لیے تاریخ اپنے آپ کو دہرا رہی ہے۔

6. बीवी को उसके मैके में अर्जेंट ख़त लिखा कि उसे लव–लेटर समझकर जल्दी लौट आओ तुम्हारे हिज्र ने मुझे दो कौड़ी का नहीं रखा।

7. अपने एक साथी क्लर्क के ख़िलाफ़ बड़े साहब को चिट्ठी लिखी कि वह हर रोज़ दफ़्तर आकर सिर्फ़ हाज़री लगाता है और फिर भाग जाता है। तहक़ीक़ की जाए। उस चिट्ठी के नीचे अपना नाम नहीं लिखा। उस क्लर्क ने भी मेरी स्टेशनरी चुराने की रिपोर्ट कर दी थी।

8. घर लौटते वक़्त बस में सवार हुआ। रश ज़्यादा था इसलिए मैंने कन्डक्टर से टिकट लेना मुनासिब न समझा।

9. फ्रूट शॉप पर आकर फलों का रेट पूछा, खरीदे नहीं क्योंकि हस्बे साबिक़[1] बेहद महंगे थे। घर आकर एक "लेटर टू द एडिटर" लिखा कि महंगाई ने हम क्लर्कों की कमर तोड़ दी है।

10. एक बिल्ली को मारा जो बीवी की ग़ैर हाज़री से फ़ायदा उठाकर दूध पीना चाहती थी, लेकिन डंडा बिल्ली के बजाय दूध की कढ़ाई को जा लगा। दूध उलट गया। न बिल्ली के काम आया न मेरे। मैं और बिल्ली दोनों बहुत देर तक कफ़े–अफ़सोस[2] मलते रहे।

25 मई 1970 ई.–

कल से अहलिया[3] मोहतरमा तश्रीफ़ ले आयीं। आते ही उन्होंने दो अहम सनसनीख़ेज़ ख़बरें सुनायीं। एक यह कि बड़ा बरख़ुरदार अज़ीज़ अज़ जान रमेश चन्द्र जुआ खेलते हुए पुलिस के हाथों गिरफ़्तार हो गया। बहुत मुश्किल से नाना जी के रुसूख़ की बदौलत माफ़ी माँगकर रिहा कराया गया और दूसरी ख़बर यह कि पाँचवें अज़ीज़ अज़ जान की डिलेवरी का वक़्त क़रीब आ पहुँचा है। लिहाज़ा बा अदब बा मुलाहेज़ा होशियार!

मैंने बीवी से दस्त–बस्ता अर्ज़ की कि जहाँ तक जुए के केस का तअल्लुक़ है वह ननहियाल से विरसे में इनायत हुआ है। सुना है बरख़ुरदार के नाना भी बिल्कुल इसी उम्र में जुआ खेलते हुए हवालात तशरीफ़ ले गये

1. पूर्व की भाँति 2. हाथ मलना 3. बीवी

اور پانچویں برخوردار کی ڈلیوری کے سلسلے میں عرض یہ ہے کہ فیملی پلاننگ کے اصول توڑنے کا یہی نتیجہ برآمد ہوتا ہے۔ تمھارے بطن سے جوئے باز پیدا ہو رہے ہیں۔ جس سے دیش کا مستقبل خطرے میں پڑ رہا ہے۔ اس لیے ہر صبح بیدار ہوتے ہی چوک میں لٹکتی ہوئی فیملی پلاننگ کی لال تکون کی طرف دیکھا کرو۔ مندر جانے کی بجائے لال تکون کی طرف دیکھنا زیادہ مفید ہے۔

ان دونوں سوالوں پر بیوی سے ان بن ہوگئی ہے۔ آج رات کا کھانا نہیں پکایا گیا۔ کھانا نہ کھانے سے میری آتما بڑی شفاف ہوگئی ہے اور میں گوتم بدھ کی طرح رات کو نروان کی تلاش میں بھاگ جانا چاہتا ہوں۔

۲۰ر مئی ۱۹۷۰ء ــــــ

افسوس! کہ میں گوتم بدھ نہ بن سکا کیوں کہ فرار کی اس رات کو اچانک میری آنکھ لگ گئی اور صبح اس وقت کھلی جب میری بیوی میرے پلنگ کے پاس چائے کا گرم گرم کپ لیے کھڑی تھی۔ اس نے رو رو کر مجھ سے معافی مانگی جو میں نے عطا کر دی اور پھر ہم دونوں نے ایک دوسرے کو سمجھایا کہ ہم دونوں زندگی کی گاڑی کے دو پہیے ہیں اس لیے الگ نہیں ہوسکتے۔ روکھی سوکھی کھالیں گے لیکن دنیا کے سامنے رسوا نہ ہوں گے۔ ہمارا مطلب یقیناً یہی تھا کہ ہم اپنی ہی نگاہ میں رسوا ہوتے رہیں تو کوئی حرج نہیں جب نصیب میں کلرکی لکھی ہے تو پھر کیسا گوتم بدھ اور کیسی خانہ جنگی؟

گوتم بدھ نے آج دو روپے رشوت لی اور بچوں کے لیے خربوزے اور فالسے خرید لایا۔

۲ر جون ۱۹۷۰ء ــــــ

کل ہمیں تنخواہ ملی تھی۔ تنخواہ سے مسرت انگیز چیز یہ تھی کہ نئے گریڈ مقرر ہو جانے کے بعد گذشتہ ایک سال کا ''ایریر'' (بقایا) کا روپیہ مل گیا۔ میں نے بیوی کو چمپئی رنگ کی ایک نئی ساڑی لے دی جسے پہن کر وہ یوں معلوم ہوتی تھی جیسے پہلی رات کی دلہن

थे। इसलिए तारीख़ अपने आपको दोहरा रही है।

और पाँचवें बरखुरदार की डिलेवरी के सिलसिले में अर्ज़ यह है कि फ़ैमली प्लानिंग के उसूल तोड़ने का यही नीजा बरामद होता है। तुम्हारे बत्न[1] से जुऔबाज़ पैदा हो रहे हैं। जिससे देश का मुस्तक़बिल ख़तरे में पड़ रहा है। इसलिए हर सुबह बेदार होते ही चौक में लटकी हुई फ़ैमली प्लानिंग की लाल तिकोन की तरफ़ देखा करो। मन्दिर जाने की बजाए लाल तिकोन की तरफ़ देखना ज़्यादा मुफ़ीद है।

इन दोनों सवालों पर बीवी से अनबन हो गई। आज रात का खाना नहीं पकाया गया। खाना न खाने से मेरी आत्मा बड़ी शफ़्फ़ाफ़[2] हो गई और गौतम बुध की तरह रात को निरवान की तलाश में भाग जाना चाहता हूँ।

20 मई 1970 ई.–

अफ़सोस! कि मैं गौतम बुध न बन सका क्योंकि फ़रार की इस रात को अचानक मेरी आँख लग गई और सुबह उस वक़्त खुली जब मेरी बीवी मेरे पलंग के पास चाय का गर्म–गर्म कप लिए खड़ी थी। उसने रो–रो कर मुझसे माफ़ी माँगी जो मैंने अता कर दी और फिर हम दोनों ने एक दूसरे को समझाया कि हम दोनों ज़िन्दगी की गाड़ी के दो पहिये हैं इसलिए अलग नहीं हो सकते। रुखी–सूखी खा लेंगे लेकिन दुनिया के सामने रुसवा न होंगे। हमारा मतलब यक़ीनन यही था कि हम अपनी ही निगाह में रुसवा होते रहें तो कोई हरज नहीं जब नसीब में क्लर्की लिखी है तो फिर कैसा गौतम बुध और कैसी ख़ाना जंगी?

गौतम बुध ने आज दो रुपये रिश्वत ली और बच्चों के लिए ख़रबूज़े और फ़ालसे ख़रीद लाया।

2 जून 1970 ई.–

कल हमें तनख़्वाह मिली थी। तनख़्वाह से मुसर्ररत अंगेज़ चीज़ यह थी कि नये ग्रेड मुक़र्रर हो जाने के बाद गुज़िश्ता एक साल का

1. पेट 2. पवित्र, साफ़

ہے! بے اختیار جی چاہا ہنی مون منانے کے لیے ہل اسٹیشن پر چلا جاؤں لیکن بیوی نے سمجھایا کہ آئندہ سال چلیں گے۔ اس سال تو ڈلیوری............؟؟

• • • •

"ऐरियर" (बक़ाया) का रुपया भी मिल गया। मैंने बीवी को चम्पई रंग की एक नई साड़ी ले दी जिसे पहन कर वह यूँ मालूम होती थी जैसे पहली रात की दुल्हन है! बे अख़्तियार जी चाहा हनीमून मनाने के लिए हिल–स्टेशन पर चला जाऊँ लेकिन बीवी ने समझाया कि आइन्दा साल चलेंगे। इस साल तो डिलेवरी........??

● ● ● ●

برق آشیانوی

اِنگلش میڈیم

جیسے ہی ہم نے بھائی صاحب کے مکان میں قدم رکھا ایک شور وغل اور چیخ و پکار کی آواز سنائی دی۔ بات کے سمجھنے میں دیر نہ لگی۔ ایک ننھے سے برخوردار اپنی پوری توانیاں صرف کر کے نہ صرف رو رہے تھے بلکہ چیختے اور چلاتے بھی تھے۔ جب ہم موقع واردات پر پہونچے تو کیا دیکھتے ہیں کہ بھابی صاحبہ اپنے صاحبزادے کو دل کھول کر پیٹ رہی ہیں۔ ہم فوراً بیچ بچاؤ کر کے سمجھوتہ کرانے کی نیت سے درمیان میں کود پڑے اور جھپٹ کو ننھے کوان کے چنگل سے چھڑا لیا۔ لیکن ہماری تیزی نے ایک بید ہم کو بھی عنایت کر دی۔ ہم نے اس کی پروا نہ کی۔ کیوں کہ بھابی جان صاحبہ ہمارے بڑے بھائی صاحب کی اہلیہ محترمہ ہیں۔ اور بڑے بھائی صاحب سے ہم زمانہ تعلیم میں کئی دفعہ پٹ چکے ہیں۔ رہا بھابی جان صاحبہ کے ہاتھوں پٹنا تو وہ سعادت گویا آج نصیب ہوگئی۔ غرض جب ہم نے ننھی سی فاختہ کو ایک عقاب کے چنگل سے چھڑا لیا تو مرزا غالب کے مصرعہ میں تھوڑا سا تصرف فرماتے ہوئے دریافت کیا۔ ع

کہیے بھابی یہ ماجرا کیا ہے

बर्क़ आशियानवी

इंग्लिश मीडियम

जैसे ही हमने भाई साहब के मकान में क़दम रखा एक शोरो–गुल और चीख़ो–पुकार सुनाई दी। बात के समझने में देर न लगी। एक नन्हे से बरखुरदार अपनी पूरी तवानाई[1] सर्फ़ करके न सिर्फ़ रो रहे थे बल्कि चीख़ते और चिल्लाते भी थे। जब हम मौक़ए–वारदात पर पहुँचे तो क्या देखते हैं कि भाभी साहिबा अपने साहबज़ादे को दिल खोलकर पीट रही हैं। हम फ़ौरन बीच बचाव करके समझौता कराने की नियत से दरमियान में कूद पड़े और झपट कर नन्हे को उनके चुंगुल से छुड़ा लिया। लेकिन हमारी तेज़ी ने एक बेद हमको भी इनायत करदी। हमने उसकी परवाह न की। क्योंकि भाभी जान साहिबा हमारे बड़े भाई साहब की अहलिया मोहतरमा हैं। और बड़े भाई साहब से हम ज़मानए–तालीम में कई दफ़ा पिट चुके हैं। रहा भाभी जान साहिबा के हाथों पिटना तो वह सआदत गोया आज नसीब हो गई। ग़रज़ जब हमने नन्ही सी फ़ाख़्ता को एक अक़ाब के चुंगुल से छुड़ा लिया तो मिर्ज़ा ग़ालिब के मिसरे में थोड़ा सा तसर्रुफ़ फ़रमाते हुए दरियाफ़्त किया–

कहिये भाभी ये माजरा क्या है

---

1. ताक़त

اس پر بھابی جان نے جو ننھے کو مارتے مارتے تھک گئی تھیں اور ابھی تک سانس پھولا ہوا تھا۔ ہانپتے ہوئے کہا۔ "مارننگ (Morning) سے اس ریسکل (Rascal) کو ٹیچ (Teach) کر رہی ہوں کہ گاڈ (God) کہے لیکن یہ ہے کہ "خدا—خدا۔" کی رٹ لگائے جا رہا ہے۔ اپنے فادر (Father) کی طرح۔ ہم نے فوراً مداخلت کرتے ہوئے کہا۔ "نالائق ہے۔ بالکل نالائق۔ بھلا اس زمانے میں "خدا" کا نام لیتا ہے۔ ابھی بھابی صاحبہ آج سے برسوں پہلے بیچارے اکبرالہ آبادی نے اپنے گھر کے تمام دروازے بند کر کے ڈرتے ڈرتے ایک بار خدا کا نام لیا تھا۔ لیکن آپ جانتی ہیں کہ دیوار کے بھی کان ہوتے ہیں چنانچہ دیوار نے سن لیا اور اکبر کے رقیبوں کو لگا دیا۔ رقیبوں نے جھٹ جا کر پولیس میں رپورٹ کردی۔ اور اس جرم میں اُن کو پھانسی کی سزا ہونے والی تھی کہ سر راس مسعود نے انہیں بچالیا۔ اس واقعہ پر انہوں نے یہ شعر کہا تھا۔

رقیبوں نے رپٹ لکھوائی ہے جا جا کے تھانے میں
کہ اکبر نام لیتا ہے خدا کا اس زمانے میں

وہ تو یوں کہیے کہ ابھی حالات نے اتنی ترقی نہیں کی تھی اور زمانہ روشن نہیں ہوا تھا ورنہ آج کے ترقی یافتہ دور میں تو اس جرم میں کئی لوگوں کو پھانسی دے دی گئی ہے۔ آپ کے اس ننھے سے ریسکل (Rascal) کو اتنا تو سوچنا چاہیے تھا کہ کہیں پولیس کو خبر ہوگئی تو کیا ہوگا اور بھابی جان میں نے تو یہ بھی سنا ہے کہ ایسے کم سن ناعاقبت اندیش مجرمین کے جرم کی سزا ان کے والدین بالخصوص "والدہ" کو دی جاتی ہے کیوں کہ اس عمر کے بچے ماؤں کی آغوش سے الگ نہیں ہو پاتے۔ ذرا غور تو فرمایئے ——"

شٹ اپ (Shut Up) یو ایڈیٹ (You Idiot)" بھابی جان صاحبہ نے ہم کو ڈانٹ کر کہا "رہنے دو تمہاری ہمبک (Humbuck) میں زیادہ بیر (Bear) نہیں کر سکتی۔ تمہیں تو آلویس جوک (Always Joke) سوجھتا ہے۔ کبھی Situation کو نہیں دیکھتے۔"

"توبہ کیجیے بھابی جان میں یعنی ایک ایڈیٹ (Idiot) نے کبھی آپ سے جوک (Joke) کیا ہے۔" —— "نیور —— نیور (Never — Never)

इस पर भाभी जान ने जो नन्हे को मारते–मारते थक गई थीं और अभी तक साँस फूला हुआ था, हाँपते हुये कहा। मार्निंग (Morning) से इस रासकल (Rascal) को टीच (Teach) कर रही हूँ कि गॉड (God) कहे लेकिन ये है कि "खुदा–खुदा" की रट लगाये जा रहा है। अपने फ़ादर (Father) की तरह। हमने फ़ौरन मुदाख़लत करते हुये कहा "नालायक़ है। बिलकुल नालायक़। भला इस ज़माने में "खुदा" का नाम लेता है। अजी भाभी साहिबा आज से बरसों पहले बेचारे अकबर इलाहाबादी ने अपने घर के तमाम दरवाज़े बंद करके डरते डरते एक बार खुदा का नाम लिया था। लेकिन आप जानती हैं दीवार के भी कान होते हैं चुनानचे दीवार ने सुन लिया और अकबर के रक़ीबों को लगा दिया। रक़ीबों ने झट जाकर पुलिस में रिपोर्ट कर दी। और इस जुर्म में उनको फाँसी की सज़ा होने वाली थी कि सर रास मसउद ने उन्हें बचा लिया। इस वाक़ये पर उन्होंने ये शेर कहा था–

रक़ीबों ने रपट लिखवाई है जा जा के थाने में
कि अकबर नाम लेता है खुदा का इस ज़माने में

वह तो यूँ कहिये कि अभी हालात ने इतनी तरक़्क़ी नहीं की थी और ज़माना रौशन नहीं हुआ था वरना आज के तरक़्क़ी याफ़्ता दौर में तो इस जुर्म में कई लोगों को फाँसी दे दी गई है। आपके इस नन्हे से रासकल (Rascal) को इतना तो सोचना चाहिये था कि कहीं पुलिस को ख़बर हो गई तो क्या होगा और भाभी जान मैंने तो ये सुना है कि ऐसे कमसिन ना आक़ेबत अन्देश मुजरिमीन के जुर्म की सज़ा उनके वालदैन बिलखुसूस "वालदा" को दी जाती है क्योंकि इस उम्र के बच्चे माओं की आग़ोश से अलग नहीं हो पाते। ज़रा ग़ौर तो फ़रमाइये–"

"शटअप (Shut Up) यू ईडियट (You Idiot) भाभी जान साहिबा ने हमको डाँटकर कहा "रहने दो तुम्हारी हम्बक (Humbuck) मैं ज्यादा बीयर (Bear) नहीं कर सकती। तुम्हें तो आलवेज़ जोक (Always Joke) सूझता है। कभी Situation को नहीं देखते।"

"तौबा कीजिये भाभी जान मैं यानी एक ईडियट (Idiot) ने कभी आपसे जोक ;Joke) किया है" — "नेवर — नेवर (Never-Never)

بہت ٹرو (True) بولتے ہیں آپ — اب یہ بتاؤ —— ارلی مارننگ (Early Morning) کیا پرپز (Purpose) ہے آپ کے آنے کا۔"

ملٹی پرپز (Purpose) ہے۔ یعنی ایک یہ کہ بھائی جان صاحب کی قدم بوسی حاصل کرلیں —— پھر اُن کے مزاج پوچھیں —— اس کے بعد آپ کی قدم بوسی —— پھر آپ کے مزاج —— اور اس کے بعد ناشتہ اور چائے —— اور تب ——"

"نان سنس (Non Sense)" بھابی جان نے کہا۔ ہم نے بھی سنبھل کر کہا بات دراصل یہ ہے بھابی جان کہ آپ کا خادم زادہ یعنی میرا بیٹا تین سال کا ہو چکا ہے۔ میں نے ارادہ کیا ہے کہ اس کی تعلیم شروع کرادوں۔ اور وہ بھی انگلش میڈیم سے —— چوں کہ آپ مشن اسکول کی معلمہ ہیں اس لیے آپ سے مشورہ کرنے چلا آیا۔"

"یہ مولی ما۔ مولی ما۔ کیا بک رہے ہو۔ جب تم ہی انگلش میں ٹاک (Talk) نہیں کر سکتے تو پھر اپنے سن (Son) کو انگلش میڈیم سے کیا ایجوکیشن (Education) دلواؤ گے۔ جاؤ کسی گٹر (Gutter) میں فیس (Face) واش (Wash) کر کے آؤ۔"

ہم نے فوراً کان پکڑ لیے اور توبہ کرتے ہوئے کہا۔ "ایکسکیوز (Excuse) می (Me) مائی ڈیر بھابی جان۔ ان فیوچر (In Future) میں آپ کو ٹیچر بلکہ مسٹریس —— لیکن اف —— پھر ایکسکیوز می بھابی جان —— ہیڈ مسٹریس کہا کروں گا۔ کیوں کہ یسٹرڈے (Yesterday) بھائی جان کے تھرو (Through) انفرمیشن ملا کہ آپ کا پروموشن (Promotion) ہو گیا ہے اور اب آپ ہیڈ مسٹریس دی گریٹ ہو گئی ہیں۔ بالکل مغل "اعظم دی گریٹ" کی طرح۔"

اس پر بھابی جان صاحبہ کی باچھیں کھل گئیں اور ہمیں آج سے کچھ برسوں پہلے کا ایک واقعہ یاد آ گیا۔ ہوا یہ تھا کہ ایک اسکول کی عمارت کی تعمیر کا مسئلہ درپیش تھا۔ ایک ایسوسی ایشن کے ممبران جن میں ہم بھی شامل تھے مخیر اصحاب سے چندے وصول کر رہے

बहुत ट्रू (True) बोलते हैं आप – अब यह बताओ अर्ली मार्निंग (Early Morning) क्या परपज़ (Purpose) है आपके आने का"

मल्टीपरपज़ (Multipurpose) है। यानि एक यह कि भाई जान साहब की क़दम बोसी हासिल कर लें — फिर उनके मिज़ाज पूछें — इसके बाद आप की क़दम बोसी — फिर आपके मिज़ाज — और उसके बाद नाश्ता और चाय — और तब —"

"नानसेंस (Non Sense)" भाभी जान ने कहा। हमने भी संभल कर कहा बात दरअसल यह है भाभी जान कि आपका ख़ादिम ज़ादा यानी मेरा बेटा तीन साल का हो चुका है। मैंने इरादा किया है कि उसकी तालीम शुरु करा दूँ। और वह भी इंग्लिश मीडियम से — चूँकि आप मिशन स्कूल की मुअल्लिमा हैं इसलिए आपसे मश्वरा करने चला आया"

ये मूली मा–मूली मा क्या बक रहे हो। जब तुम ही इंगलिश में टॉक (Talk) नहीं कर सकते तो फिर अपने सन (Son) को इंग्लिश मीडियम से क्या एजुकेशन (Education) दिलवाओगे। जाओ किसी गटर (Gutter) में फेस (Face) वाश (Wash) करके आओ"।

हमने फ़ौरन कान पकड़ लिए और तौबा करते हुए कहा। एक्सक्यूज़ (Excuse) मी (Me) माई डियर भाभी जान। इन फ़्यूचर (In Future) मैं आपको टीचर बल्कि मिस्ट्रेस — लेकिन उफ़ फिर एक्सक्यूज़ मी भाभी जान — हेड मिस्ट्रेस कहा करूँगा। क्यूँकि यसटरडे (Yesterday) भाई जान के थ्रो (Through) इन्फ़ारमेशन मिला कि आपका प्रोमोशन (Promotion) हो गया है और अब आप हेड मिस्ट्रेस दी ग्रेट हो गई हैं। बिल्कुल "मुग़ले–आज़म दी ग्रेट" की तरह"

इस पर भाभी साहिबा की बाछें खिल गईं और हमें आज से कुछ बरसों पहले का वाक़या याद आ गया। हुआ यह था कि एक स्कूल की इमारत की तामीर का मसअला दरपेश था। एक एसोसीएशन के मेम्बरान जिन में हम भी शामिल थे मुख़इय्यर[1] असहाब से चंदे वसूल कर रहे थे।

1. दानी

تھے۔ چندہ دینے والوں میں ایک معزز قصائی صاحب بھی شامل تھے۔ معزز اس لیے کہ وہ انگریزوں کی فوجی چھاونی میں گوشت سپلائی کرنے کے ٹھیکیدار تھے۔ غرض جب چندہ دہندگان کی فہرست شائع ہوئی تو قصائی صاحب کے نام کے ساتھ "قصاب" کا لفظ لکھ دیا گیا۔ ہم سے اتفاقاً ملاقات ہوئی تو انہوں نے نہایت برہمی کے انداز میں ہم سے شکایت کی کہ وہ چندہ تو انتہائی فراخ دلی کے ساتھ دیتے ہیں لیکن لوگ اُن کی بے عزتی کر دیتے ہیں۔ دریافت کرنے پر معلوم ہوا کہ اُن کے نام کے ساتھ قصاب لکھ دیا گیا تھا۔ ہم پریشان ہو کر دریافت کرنے لگے کہ پھر ان کو کیا لکھا جائے تو انہوں نے کہا۔ "آپ اتنا بھی نہیں جانتے۔ ہم چھٹانک دو چھٹانک گوشت فروخت کرنے والے قصاب نہیں ہیں۔ بلکہ ہم تو بچر (Butcher) ہیں۔ ہم ملٹری کو بھی مٹن (Mutton) سپلائی کرتے ہیں۔ ہم کو بچر کے بجائے قصاب لکھا جاتا ہے۔" چنانچہ دوسری بات جب ہم نے کسی دوسرے مقصد کے لیے چندہ وصول کیا تو اُن کے نام کے ساتھ بچر ماسٹر اینڈ ملٹری کنٹراکٹر لکھا تھا۔ وہ ہم سے بہت خوش ہوئے اور ہمارے اخلاق و شرافت کی بے حد داد دی۔ تحفے کے طور پر ایک عدد دیگچی، چار عدد زبان، ایک عدد سرا اور آٹھ عدد پائے وغیرہ روانہ کر دیے تھے۔

چنانچہ آج بھابی صاحبہ کی ذہنیت بھی کچھ اُسی قسم کی معلوم کر کے تعجب ہوا لیکن اس وقت تعجب ظاہر کرنے کا موقع نہ تھا بلکہ ذہنیت کی توستائش سے ہمارا کام بن سکتا تھا۔ چنانچہ ہم نے اپنا کام بنانے کی خاطر کہا۔

"کانگریچولیشن (Congratulation) ٹو مائی ڈیر بھابی جان۔ اور اس سلسلے میں ہو جائے ایک پارٹی زوردار یعنی کہ ایٹ ہوم —— بلکہ ڈنر ——" بھابی جان بدستور مسکراتی رہیں۔ پھر کہنے لگیں۔ "آپ اپنے الڈر برادر (Elder Brother) سے ریکویسٹ (Request) کیجیے۔"

ہم نے کہا بھابی جان یہ تو ہوتا رہے گا۔ اب اصل پرابلم (Problem) پر تو کچھ لائٹ (Light) ڈالیے۔" بھابی جان نے کہا۔ "اب لائٹ وائٹ کیا تھرو (Through) کرنا ہے۔ اسکول لائیے۔ میں ایڈمیشن دلوا دوں گی۔" ہم نے خوش ہو

चंदा देने वालों में एक मोअज़िज़ कसाई साहब भी शामिल थे। मोअज़्ज़िज़ इसलिए कि वह अंग्रेजों की फ़ौजी छावनी में गोश्त सप्लाई करने के ठेकेदार थे। ग़रज़ जब चंदा देहन्दगान की फ़ेहरिस्त शाया हुई तो क़साई साहब के नाम के साथ "क़स्साब का लफ़्ज़ लिख दिया गया। हम से इत्तेफ़ाक़न मुलाक़ात हुई तो उन्होंने निहायत बेरहमी के अन्दाज़ में हम से शिकायत की कि वह चन्दा तो इन्तहाई फ़राख़ दिली के साथ देते हैं लेकिन लोग उनकी बेइज़्ज़ती कर देते हैं। दरयाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि उनके नाम के साथ क़स्साब लिख दिया गया था। हम परेशान होकर दरयाफ़्त करने लगे कि फिर उनको क्या लिखा जाये तो उन्हों ने कहा "आप इतना भी नहीं जानते। हम छटांक दो छटांक गोश्त फ़रोख़्त करने वाले क़स्साब नहीं हैं। बल्कि हम तो बूचर (Butcher) हैं हम मिलेट्री को भी मटन (Mutton) सप्लाई करते हैं। हमको बूचर के बजाए क़स्साब लिखा जाता है।" चुनांचे दूसरी बार जब हम ने किसी दूसरे मक़सद के लिए चंदा वसूल किया तो उनके नाम के साथ बूचर एण्ड मिलिट्री कन्ट्रेक्टर लिखा था। वह हम से बहुत खुश हुए और हमारे एख़लाको–शराफ़त की बेहद दाद दी। तोहफ़े के तौर पर एक अदद कलेजी, चार अदद ज़बान और आठ अदद पाए वग़ैरह रवाना कर दिये थे।

चुनांचे आज भाभी साहिबा की ज़हनियत भी कुछ उसी क़िस्म की मालूम करके तअज्जुब हुआ लेकिन उस वक़्त तअज्जुब ज़ाहिर करने का मौक़ा न था बल्कि ज़ेहनियत की तो सताइश से हमारा काम बन सकता था। चुनांचे हमने अपना काम निकालने की ख़ातिर कहा।

"कॉंग्रेचुलेशन (Congratulation) टू माई डियर भाभी जान। और इस सिलसिले में हो जाये एक पार्टी ज़ोरदार यानी कि एट होम — बल्कि डिनर —" भाभी जान बदस्तूर मुस्कुराती रहीं। फिर कहने लगीं। " आप अपने एल्डर ब्रादर (Elder Brother) से रिक्वेस्ट (Request) कीजिये।"

हमने कहा भाभी जान ये तो होता रहेगा। अब असल प्राबलम (Problem) पर तो कुछ लाईट (Light) डालिये।" भाभी जान ने कहा "अब लाइट वाइट क्या थ्रो (Through) करना है। स्कूल लाइये। मैं एडमिशन दिलवा दूँगी"। हमने खुश होकर कहा। वैरी गुड भाभी जान।

کر کہا۔ ویری گڈ بھابی جان۔ تری چیرز ٹو مائی بھابی جان۔ بلکہ بھابی جان دی گریٹ —— ہپ —— ہپ۔" ہم نے الغرض دوسرے ہی دن بھابی جان دی گریٹ کی مہربانی سے صاحبزادے کو مشن اسکول میں شریک کرادیا۔ اس سے ہم کو اور ہمارے گھر کے تمام افراد کو دلی بلکہ روحانی مسرت ہوئی کیوں کہ آج کل مشن اسکول میں اڈمیشن ملنا جوئے شیر لانے سے کم نہیں —— اور ہم یہ جوئے شیر لانے میں بڑی آسانی سے کامیاب ہوگئے تھے۔ اس پر جتنی خوشیاں منائی جاتیں کم تھیں۔ بلکہ اس خوشی میں ہم کو ناچنا چاہیے تھا۔ چوں کہ ہمیں ناچنا نہیں آتا اس لیے اچھل کود کر چپ ہو رہے لیکن چند ہی دن بعد صاحبزادے نے ہمیں تگنی کا ناچ نچانا شروع کردیا۔ معلوم ہوا کہ ایک خاص وضع اور رنگ کا یونیفارم سلوانا ضروری ہے۔ کم از کم چھ جوڑے اور اگر ہو سکے تو بارہ جوڑے فوری سلوانے چاہئیں۔ ایک قیمتی جوتا اور ٹائی بھی دلوانے کی ضرورت تھی۔ شرکت و تعلیمی فیس معہ دیگر کئی فیس کے اور کچھ تعلیمی اشیاء کی فہرست دیکھ کر تو ہمارے ہاتھوں سے طوطے اڑ گئے۔ لیکن ہم نے فوراً دانہ دکھا کر اُن کو پھر ہاتھوں پر بٹھالیا۔ مطلب یہ کہ حواس گم ہونے لگے، تو ہم نے یکجا کر لیے۔ اور اولوں کی مار کے لیے تیار ہوگئے اس لیے کہ ہم نے اپنی خوشی سے سر منڈایا تھا۔ بہر حال اولے بھی دل کھول کر برسے اور ہمارے گنجے سر کو خاصا لطف آگیا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ آمدنی کا کثیر حصہ مشن اسکول کی نذر ہوگیا۔ اور زندگی کی دیگر ضروریات منہ دیکھتی رہ گئیں۔ لیکن اس بات سے ایک گونہ مسرت ہوئی کہ ہمارا بچہ شہر کے بڑے بڑے عہدیداروں، سرمایہ داروں اور سربرآوردہ لوگوں کے بچوں کے ساتھ بیٹھ رہا ہے۔ بعض وقت یہ بھی خیال آتا کہ کیوں نہ ہم نے محلے کے کسی اسکول میں شریک کروالیا لیکن اس نامعقول خیال کو دل سے نکال دیتے تھے۔

چند مہینے گذرے ہوں گے کہ صاحبزادے نے پیٹ میں کے پاؤں نکالنے شروع کردیئے۔ اب انہوں نے امّی جان کی جگہ "ممّی" اور ابّا جان کی جگہ "ڈیڈی یا ڈیڈ" کہنا شروع کردیا۔ پانی مانگتے تو "واٹر" کہتے۔ برتن مانگتے تو "پلیٹ" انڈے کو "اگ" آم کو "مینگو" جام کو Gauva انگور کو Grape کہنے لگے۔ جس کی وجہ سے مصیبت یہ ہوئی کہ ہماری بیگم جو انگریزی سے ناواقف تھیں، گھبرا گئیں۔ ہم گھر پر نہیں

थ्री चियर्स टू माई भाभी जान। बल्कि जान दी ग्रेट — हिप — हिप"। हमने अलग़रज़ दूसरे ही दिन भाभी जान द ग्रेट की मेहरबानी से साहबज़ादे को मिशन स्कूल में शरीक करा दिया। इससे हमको और हमारे घर के तमाम अफ़राद को दिली बल्कि रुहानी मुसर्रत हुई क्योंकि आजकल मिशन स्कूल में एडमिशन मिलना जूए शीर[1] लाने से कम नहीं — और हम यह जूए शीर लाने में बड़ी आसानी से कामयाब हो गये थे। इस पर जितनी खुशियाँ मनाई जातीं कम थीं। बल्कि इस खुशी में हमको नाचना चाहिए था। चूंकि हमें नाचना नहीं आता इसलिए उछल कूद कर चुप हो रहे लेकिन चन्द ही दिन बाद साहबज़ादे ने हमें तिगनी का नाच नचाना शुरु कर दिया। मालूम हुआ कि एक ख़ास वज़्अ और रंग का यूनीफ़ार्म सिलवाना ज़रुरी है। कम अज़ कम छः जोड़े और अगर हो सके तो बारह जोड़े फ़ौरी सिलवाने चाहिये। एक क़ीमती जूता और टाई भी दिलवाने की ज़रुरत थी। शिरकत व तालीमी फ़ीस मय दीगर कई फ़ीस के और कुछ तालीमी अशिया की फ़ेहरिस्त देखकर तो हमारे हाथों से तोते उड़ गये। लेकिन हमने फ़ौरन दाना दिखा कर उनको फिर हाथों पर बिठा लिया। मतलब यह कि हवास गुम होने लगे, तो हम ने यकजा कर लिए। और ओलों की मार के लिए तैयार हो गये इसलिए कि हम ने अपनी ख़ुशी से सर मुंडाया था। बहर हाल ओले भी ख़ूब दिल खोलकर बरसे और हमारे गंजे सर को ख़ासा लुत्फ़ आ गया। नतीजा यह हुआ कि आमदनी का कसीर हिस्सा मिशन स्कूल की नज़र हो गया। और ज़िंदगी की दीगर ज़रुरियात मुँह देखती रह गईं। लेकिन इस बात से यकगूना मुसर्रत हुई कि हमारा बच्चा शहर के बड़े बड़े ओहदेदारों, सरमायादारों और सरबरआवुरदा लोगों के बच्चों के साथ बैठ रहा है। बाज़ वक़्त यह भी ख़याल आता कि क्यों न हम ने मोहल्ले के किसी स्कूल में शरीक करवा लिया लेकिन इस ना माकूल ख़याल को दिल से निकाल देते थे।

चन्द महिने गुज़रे होंगे कि साहबज़ादे ने पेट में के पाँव निकालने शुरु कर दिए। उन्हों ने अपनी अम्मी जान की जगह "मम्मी" और अब्बा जान की जगह "डैडी या डैड" कहना शुरु कर दिया। पानी मांगते तो "वाटर" कहते। बर्तन मांगते तो "प्लेट" अण्डे को "एग" आम को "मैंगो" जाम को Gauva अंगूर को Grape कहने लगे। जिसकी वजह से मुसीबत यह हुई कि हमारी बेगम जो अंग्रेज़ी से ना–वाक़िफ़ थीं, घबरा गईं। हम घर

1. दूध की नहर

ہیں اور صاحبزادے اصرار کر رہے ہیں کہ ''سویٹ لائم (Sweet Lime) چاہیے۔
بیگم پریشان ہیں کہ آخر یہ کیا مانگتا ہے۔ گھر کی ماما کا ہنسی کے مارے برا حال ہے۔ بیگم ننھے میاں صاحب کو چمکار کر دھمکا کر ڈرا کر ہر طرح سے پوچھ رہی ہیں کہ۔ ''ارے نامراد آخر تجھے کیا چاہیے۔ کچھ اپنے ماں باپ کی زبان میں بھی بول۔'' لیکن صاحبزادے جیسے بھول گئے ہیں کہ اُن کی کوئی مادری زبان بھی تھی۔ جس میں ان کی مطلوبہ شئے کا کچھ نام بھی تھا۔ وہ برابر کہے جا رہے تھے ''سویٹ لائم'' چاہیے۔ یہ مسئلہ اس وقت حل ہوا جب بڑے صاحبزادے جو میٹرک میں زیرِ تعلیم ہیں، آئے اور انہوں نے یہ معمہ حل کیا کہ ننھے صاحبزادے ''موسمی'' مانگ رہے ہیں۔ ہمارے عزیز و اقارب اور دوست احباب کو معلوم ہوا کہ ہم صاحبزادے کو انگلش میڈیم سے تعلیم دلوا رہے ہیں تو انہوں نے ہمارے اس اقدام کو سراہا اور دل کھول کر ستائش کی۔ سچ پوچھیے تو ہم بھی خوشی کے مارے پھولے نہیں سماتے تھے۔ بلکہ یوں کہیے کہ جامے سے باہر ہوئے جاتے تھے۔

ایک روز جب ہم آفس سے گھر پہنچے تو ''انجمنِ ارتقائے اُردو'' کے ایک غیر معمولی جلسے کا دعوت نامہ ملا جو دوسری ہی شام کو مقرر تھا۔ چونکہ ہم اس انجمن کے نہایت ہی سرگرم کارکن تھے۔ اس لیے پروگرام میں ہمیں بھی تقریر کرنی تھی۔ یوں تو ہم اکثر اپنی عادت کے موافق کسی بھی تقریر کی مکمل تیاری کرتے تھے۔ لیکن جہاں اُردو زبان پر کچھ ''بولنے'' کا موقع آتا ہم کو تیاری کی خاص ضرورت نہ ہوتی۔ کیوں کہ اس موضوع پر کہنے کے لیے اتنا ''مسالہ'' ہمارے پاس ہمیشہ ریڈی میڈ موجود رہتا ہے کہ ہم فی البدیہہ ایک ہی نہیں بلکہ کہیے تو دو چار تقریریں لگاتار جھاڑ دے سکتے ہیں۔ جلسے میں ہماری تقریر کا وقت آ گیا تو ہم مائک کے سامنے کھڑے ہو گئے اور تقریباً نصف گھنٹے تک دھواں دھار تقریر کی۔ ہماری پوری تقریر کے چند مقررہ جملوں اور پیٹنٹ فقروں کے تکرار اور الفاظ کے دہراؤ بلکہ ''تہراؤ'' اور ''چہراؤ'' کو نچوڑ کر خلاصہ کر دیا جائے تو کچھ یوں ہو سکتا ہے۔''

''بہنو اور بھائیو! اردو جس کسمپرسی کی حالت میں آ پڑی ہے اس کی ذمہ داری زمانے کے نامساعد حالات سے زیادہ اُن لوگوں پر عاید ہوتی ہے جو اُردو کے حامی ہونے کا پُر زور دعویٰ تو کرتے ہیں لیکن مدارس میں اردو ذریعہ تعلیم پر زور نہیں دیتے۔ اردو

पर नहीं हैं और साहबज़ादे इसरार कर रहे है कि "स्वीट लाइम (Sweet Lime) चाहिए। बेगम परेशान हैं कि आख़िर ये क्या मांगता है। घर की मामा का हंसी के मारे बुरा हाल है। बेगम नन्हे मियाँ साहब को चुमकार कर, धमका कर, डरा कर, हर तरह से पूछ रही हैं कि "अरे नामुराद आख़िर तुझे क्या चाहियै। कुछ अपने माँ बाप की ज़बान में भी बोल" लेकिन साहबज़ादे जैसे भूल गये हैं कि उनकी कोई मादरी ज़बान भी थी। जिसमें उनकी मतलूबा शय का कुछ नाम भी था। वह बराबर कहे जा रहे थे "स्वीट लाईम" चाहिये। यह मसला उस वक़्त हल हुआ जब बड़े साहबज़ादे जो मैट्रिक में ज़ेरे–तालीम हैं, आये और उन्हों ने यह मोअम्मा हल किया कि नन्हे साहबज़ादे "मौसमी" माँग रहे हैं। हमारे अज़ीज़ो–अक़ारिब और दोस्त अहबाब को मालूम हुआ कि साहबज़ादे को इंगलिश मीडियम से तालीम दिलवा रहे हैं तो उन्होंने हमारे इस एक़दाम को सराहा और दिल खोल कर सताइश की। सच पूछिये तो हम भी ख़ुशी के मारे फूले नहीं समाते थे। बल्कि यूँ कहिये कि जामे से बाहर हुए जाते थे।

एक रोज़ जब हम ऑफ़िस से घर पहुँचे तो "अन्जुमन इरतक़ाए–उर्दू" के एक ग़ैर मामूली जलसे का दावत नामा मिला जो दूसरी शाम को मुक़र्रर था। चूँकि हम इस अन्जुमन के निहायत ही सरगर्म कारकुन थे इसलिए प्रोग्राम में हमें भी तक़रीर करनी थी। यूँ तो हम अक्सर अपनी आदत के मवाफ़िक़ किसी भी तक़रीर की मुकम्मल तैयारी करते थे। लेकिन जहाँ उर्दू ज़बान पर कुछ "बोलने" का मौक़ा आता हमको तैयारी की ख़ास ज़रुरत न होती। क्योंकि इस मौज़ू पर कहने के लिए इतना "मसाला" हमारे पास हमेशा रेडी मेड मौजूद रहता है कि हम फ़िलबदीह एक ही नहीं बल्कि कहिये तो दो चार तक़रीरें लगातार झाड़ दे सकते हैं। जलसे में हमारी तक़रीर का वक़्त आ गया तो हम माइक के सामने खड़े हो गए और तक़रीबन निस्फ़ घंटे तक धुवांधार तक़रीर की। हमारी पूरी तक़रीर के चन्द मुक़र्ररा जुमलों और पेटेंट फ़िक़रों की तकरार और अलफ़ाज़ के दोहराव बल्कि "तेहराव" "चहराव" को निचोड़ कर ख़ुलासा कर दिया जाये तो कुछ यूँ हो सकता है।

बहनों और भाइयों! उर्दू जिस कमपुरसी की हालत में आ पड़ी है उसकी ज़िम्मेदारी ज़माने के नामसाअद हालात से ज़्यादा उन लोगों पर आयद होती है जो उर्दू के हामी होने का पुरज़ोर दावा तो करते हैं लेकिन मदारिस में उर्दू ज़रियए–तालीम पर ज़ोर नहीं देते। उर्दू के हामियों को

کے حامیوں کو چاہیے کہ اپنے بچوں کو ایسے مدارس میں شریک کروائیں جہاں اردو میڈیم کو ارباب حکومت سے منظور کروا کر رائج کیا گیا ہے اور اردو زبان میں تعلیم کا انتظام کیا گیا ہے لیکن افسوس کا مقام ہے کہ لوگ اپنے بچوں کو ایسے مدارس میں جہاں اردو ذریعہ تعلیم ہے شریک نہیں کرواتے۔ اردو کی جماعتوں میں تعداد کم ہوتی جا رہی ہے۔ اور بالآخر شرح تعداد کے قاعدے کے تحت اردو جماعتیں برخاست کر دی جاتی ہیں۔ اس وقت شکایت کرتے ہیں کہ فلاں مدرسے سے اردو جماعت کو برخاست کر دیا گیا۔ حالاں کہ اس کی ذمہ داری اُن اردو پرستوں پر ہے جو اپنے بچوں کو اردو میڈیم سے تعلیم نہیں دلواتے۔"

ہماری تقریر پر اکثر تالیاں بجتی رہیں اور جلسے کے برخاست ہونے کے بعد لوگوں نے بہت تعریف کی۔ اس کے بعد جب ہم گھر پہونچے تو یہ معلوم کر کے ہماری مسرّت کی انتہا نہ رہی کہ صاحبزادے ہمیں "ڈیڈی۔ ڈیڈی" کہہ کر یاد کر رہے ہیں۔ جب ہم نے گود میں اُٹھا کر پیار کیا تو پوچھنے لگے۔ "ڈیڈی۔ گریپ (Grape) کہاں ہیں؟ اور آرنج (Orange) کیوں نہیں لائے۔"

یہ سن کر ہمارا دل باغ باغ ہو گیا۔ باغ بھی اتنا بڑا کہ اس میں ایک آرنج تو کیا ہزاروں آرنج کے درخت لگے تھے۔ اور کڑوروں گریپ (Grape) بیلوں پر جھول رہے تھے۔"

• • • • • •

चाहिए कि अपने बच्चों को ऐसे मदारिस में शरीक करवाएं जहाँ उर्दू मीडियम को अरबाबे–हुकूमत से मंजूर करवा कर रायज किया गया है और उर्दू ज़बान में तालीम का इन्तज़ाम किया गया है लेकिन अफ़सोस का मोक़ाम है कि लोग अपने बच्चों को ऐसे मदारिस में जहाँ उर्दू ज़रियए–तालीम है शरीक नहीं करवाते। उर्दू की जमातों में तादाद कम होती जा रही है। और बिलआख़िर शरहे–तादाद के क़ायदे के तहत उर्दू जमाअतें बर्ख़ास्त कर दी जाती है। उस वक़्त शिकायत करते हैं कि फ़लाँ मदरसे से उर्दू जमात को बर्ख़ास्त कर दिया गया। हालाँकि इसकी ज़िम्मेदारी उन उर्दू परस्तों पर है जो अपने बच्चों को उर्दू मीडियम से तालीम नहीं दिलवाते"।

हमारी तक़रीर पर अक्सर तालियाँ बजती रहीं और जलसे के बर्ख़ास्त होने के बाद लोगों ने बहुत तारीफ़ की। उसके बाद जब हम घर पहुँचे तो यह मालूम करके हमारी मसरर्रत की इन्तहा न रही कि साहबज़ादे "डैडी–डैडी" कह कर याद कर रहे हैं। जब हमने गोद में उठा कर प्यार किया तो पूछने लगे "डैडी" ग्रेप (Grape) कहाँ है? और आरेंज (Orange) क्यों नहीं लाये"।

यह सुनकर हमारा दिल बाग़–बाग़ हो गया। बाग़ भी इतना बड़ा कि उसमें एक आरेंज तो क्या हज़ारों आरेंज के दरख़्त लगे थे। और करोड़ों ग्रेप (Grape) बेलों पर झूल रहे थे"।

• • • • • •

مخلص بھوپالی

پاندان والی خالہ

۱

لو بائی تمھارا حصہ مٹھائی کا۔ خالہ نے گھر میں داخل ہوتے ہوئے کہا۔

کیسی مٹھائی خالہ؟

اے وہ اللہ رکھے لڑکی کی تاریخ ٹھہر گئی ۲۹ چاند کی۔ لڑکا بھی آیا تھا۔ چڑھاوے میں ایک گلے کی ہنسلی دے گیا۔ دو روز ٹھہرا۔ بھاگ بھاگ کر آدھ مری ہو گئی۔ نس نس دُکھ رہی ہے ابھی تک۔ میری ایک جان اور دنیا بھر کی لچوائیں لگی ہیں اکیلی جان کو۔ اتنا سہارا دینے والا نہیں ہے کوئی۔

خالہ داماد کیسا ہے۔ پسند آیا آپ کو؟ عورتوں نے پوچھا۔

ابھی بیوی نکاح نہ برات۔ داماد کدھر بن گیا۔ یوں کہو کہ لڑکا پسند آیا یا نہیں؟

ہاں خالہ! وہی مطلب لڑکے کا ہی پوچھا ہے۔

بس غنیمت ہے گاؤں کا ہے۔ بغیر لکھا پڑھا۔ گنوار و ناک نقشہ ہے۔ مگر ایسا بُرا نہیں۔ جب سے بات پکی ہوئی ہے تب سے تو اللہ رکھے ذرا اور ڈھنگ کا لگا۔ اللہ رسول کا کھلا ہوا حکم ہے کہ غیبت کرنا اچھا نہیں، اب جیسا بھی ہے اچھا ہے۔ قسمت کا کھیل ہے۔ جس کا ستارا جہاں مل جائے۔ کہنے کی بات نہیں مگر بڑے بڑے وکیل بیلسٹروں کے پیغام آئے تھے، مگر وہ نئے کے باوا جیتے جی اسی لڑکے سے پلّو باندھ گئے۔

पानदान वाली ख़ाला

1

लो बाई तुम्हारा हिस्सा मिठाई का। ख़ाला ने घर में दाख़िल होते हुए कहा। कैसी मिठाई ख़ाला?

ऐ वह अल्लाह रख्खे लड़की की तारीख़ ठहर गई 29 चाँद की। लड़का भी आया था। चढ़ाये में एक गले की हंसली दे गया। दो रोज़ ठहरा। भाग भाग कर अधमरी हो गई। नस नस दुख रही है अभी तक। मेरी एक जान और दुनिया भर की लुचवाऐं लगी है अकेली जान को। इतना सहारा देने वाला नहीं है कोई।

ख़ाला दामाद कैसा है। पसंद आया आपको? औरतों ने पूछा

अभी बीवी निकाह न बारात। दामाद किधर बन गया। यूँ कहो कि लड़का पसंद आया या नहीं?

हाँ ख़ाला! वही मतलब लड़के का ही पूछा है।

बस ग़नीमत है गाँव का है। बग़ैर लिखा पढ़ा। गंयारु नाक नक़्शा है। मगर ऐसा बुरा नहीं। जब से बात पक्की हुई है तब से अल्लाह रख्खे ज़रा और ढ़ंग का लगा। अल्लाह रसूल का खुला हुआ हुक्म है कि ग़ीबत[1] करना अच्छा नहीं, अब जैसा भी है अच्छा है। क़िस्मत का खेल है। जिसका सतारा जहाँ मिल जाय। कहने की बात नहीं मगर बड़े–बड़े वकील बैलिस्टरों के पैग़ाम आये थे, मगर वह नन्ने के बावा जीते जी उसी लड़के से पल्लू बांध गये।

1. किसी की अनुपस्थिति में उसकी बुराई करना

مرتے مرتے کہہ گئے تھے کہ دیکھ ننّے کی ماں اگر اس کے علاوہ کسی دوسرے سے حامی بھری تو پھر بروز قیامت کے دن مار مار کے ادھ مرا کر دوں گا۔ اور پھر ہزار بات کی ایک بات جانتی ہوں کہ لڑکے کا مُن اور لڑکی کا گُن دیکھنا چاہیے، اللہ رکھے میری لڑکی میں گُن ہیں۔

اچھا خالہ لڑکی نے بھی پسند کیا اپنے بر کو؟

لو بیوی۔ یہ نئی سنو۔ اللہ خیر! لڑکی کی کیا پسند اور کیا ناپسند۔ مرضی ماں باپ کی ہوتی ہے۔ پرانی چلن کی باتوں میں جو عزت ہوتی ہے وہ ان نئے چالوں میں کہاں؟ لڑکی کیا جانے اوندھا سیدھا۔ آج کل کی طرح تھوڑی کہ لکھ پڑھ کر پھر بس سڑکوں پے بَر کی تلاش میں ماری ماری پھرتی ہیں۔ حیا نہ شرم۔ ایسی بن سنور کے نکلتی ہیں کنواری بن بیاہی لڑکیاں کہ توبہ ہے میری۔ ایک چندی گلے میں ڈالی ہے، سینہ کھلا ہے، ٹھٹھے مارتی بازاروں میں سے گزرتی ہیں۔ ہزاروں مرد کی بُری نظریں پڑتی ہیں مگر نگوڑ ماریوں کو دنیا کی شرم نہ حیا۔ آگ لگے نئے نئے فیشن دیکھ لو روز۔ جس کو دیکھو ننگا سر، چوٹی چونڈے کے بجائے جیسے گھوڑے کی دُم بندھی ہوئی ہے۔ پھر اس پہ تو تنگی یہ کہ ٹیڑھی ترچھی مانگیں۔ ہاتھ ننگے جیسے رانڈ بیواؤں کے۔ کیسے ماں باپ ہیں ان کے جو منع نہیں کرتے۔ ہم تو بیوی صفا صفا کہتے ہیں کہ صبح لڑکی گھر سے نکلی اور شام کو آئی تو کیا معلوم کہاں کہاں سے گھوم گھام کے آئی۔ پڑھائی کا وہ شوق کہ توبہ ہے میری۔ جس کو دیکھو انگریزی پڑھ رہی ہے۔ کیا زمانہ پلٹا ہے کہ آئی ہوئی عقل جاتی ہے۔

تو خالہ لڑکیوں کو پڑھنا نہیں چاہیے؟ عورتوں نے بُرا مان کر پوچھا۔

کیوں نہ پڑھو، ضرور پڑھو۔ بس اتنا کہ کلام مجید، بہشتی زیور، نور نامہ اور تھوڑی بہت کام چلاؤ اردو انگریزی چلو قصہ ختم۔ اللہ بخشے وہ ننّے کے باوا کہا کرتے تھے کہ لڑکیوں کو اتنا پڑھاؤ کہ گھر کا سودا سلف، حساب کتاب آجائے۔ اتنا پڑھانا نہیں چاہیے کہ لیلیٰ مجنوں کے خط لکھنے لگیں۔ مگر بیوی! خالہ نے منہ کا اگال ایک طرف تھوکتے ہوئے کہا۔ یہی بات کہو تو نئی روشنی کی نگوڑ ماریاں کہتی ہیں کہ خالہ تم لڑکیوں کی برائیاں کرتی ہو۔ لو بیوی مجھے کیا ضرورت پڑی، بری بات، بری بات ہوتی ہے۔ کوئی لاکھ اچھی کہے تو کیا ہوتا ہے۔ وہ قلعدار صاحب کے یہاں گئی تھی تو اللہ مجھ بڈھی کو سمجھے، کہیں میرے منہ سے نکل

मरते मरते कह गये थे कि देख नन्ने की माँ अगर उसके अलावा किसी दूसरे से हामी भरी तो फिर बरोज़े–क़यामत के दिन मार मार के
अधमरा कर दूँगा। और फिर हज़ार बात की एक बात जानती हूँ कि लड़के का हुन[1] और लड़की का गुन देखना चाहिए, अल्लाह रख्खे मेरी लड़की में गुन है।

अच्छा ख़ाला लड़की ने भी पसन्द किया अपने बर को?

लो बीवी। यह नई सुनो। अल्लह ख़ैर! लड़की की क्या पसन्द और क्या ना पसन्द। मर्ज़ी माँ बाप की होती है। पुरानी चलन की बातों में जो इज़्ज़त होती है वह इन नये चालों में कहाँ? लड़की क्या जाने औंधा सीधा। आज कल की तरह थोड़ी कि लिख पढ़ कर फिर बस सड़कों पे बर की तलाश में मारी मारी फिरती हैं। हया न शर्म। ऐसी बन संवर के निकलती हैं कुँवारी बिन ब्याही लड़कियाँ कि तौबा है मेरी। एक चुंदी गले में डाली, सीना खुला है, ठट्ठे मारती बाज़ारों में से गुज़रती हैं। हज़ारों मर्द की बुरी नज़रें पड़ती हैं मगर निगोड़मारियों को दुनिया की शर्म न हया। आग लगे, नये नये फ़ैशन देख लो रोज़। जिसको देखो नंगा सर, चोटी चूंडे के बजाय जैसे घोड़े की दुम बंधी हुई है। फिर उस पे तवंगी यह कि टेढी तिरछी माँगें। हाथ नंगे जैसे रांड बेवाओं के। कैसे माँ बाप हैं उनके जो मना नहीं करते। हम तो बीवी सफ़ा सफ़ा कहते हैं कि सुबह लड़की घर से निकली और शाम को आई तो क्या मालूम कहाँ–कहाँ से घूम घूम के आई। पढ़ाई का वह शौक़ कि तौबा है मेरी। जिसको देखो अंग्रेज़ी पढ़ रही है। क्या ज़मानाँ पल्टा है कि आई हुई अक़्ल जाती है।

तो ख़ाला लड़कियों को पढ़ना नहीं चाहिए? औरतों ने बुरा मान कर पूछा।

क्यों न पढ़ो, ज़रुर पढ़ो। बस इतना कि कलामे–मजीद, बहिश्ती ज़ेयर, नूरनामा और थोड़ी बहुत काम चलाऊ उर्दू अंग्रेज़ी चलो किस्सा ख़त्म। अल्लह बख़्शे वह नन्ने के बावा कहा करते थे कि लड़कियों को पढ़ाओ कि घर का सौदा सुल्फ़, हिसाब किताब आ जाये। इतना पढाना नहीं चाहिए कि लैला मजनूं के ख़त लिखने लगें। मगर बीवी! ख़ाला मुँह का उगाल एक तरफ़ थूकते हुए कहा। यही बात कहो तो नई रोशनी की निगोड़ियाँ कहती हैं कि ख़ाला तुम लड़कियों की बुराईयाँ करती हो। लो बीवी मुझे क्या ज़रुरत पड़ी, बुरी बात, बुरी बात होती है। कोई लाख अच्छी कहे तो क्या होता है। वह क़िलेदार साहब के यहाँ गई थी तो अल्लाह मुझ बूढ़ी को समझे, कहीं मेरे मुँह से निकल

1. हुनर

گیا کہ قلعدارنی صاحب بائی تمہاری لڑکی اللہ رکھے اب جوانی سے لوٹی جارہی ہے نہ ہو تو جلدی سے کہیں کر کرا دو۔ بس بیا یہ کہنا غضب ہو گیا۔ تیر کی طرح لڑکی میرے پاس آئی اور میری طرف آنکھیں نکال کر اور کمر پے دونوں ہاتھ رکھ کے بولی کہ خالہ تم بھی بوڑھی ہوئی جارہی ہو تم بھی شادی کرلو کہیں جھٹ سے۔ دیکھا بیوی یہ اشراف کہتے ہیں اپنے کو! چولھے میں جائے ہمدردی۔ خالہ نے بٹوا میں سے چھالیہ، لونگ، زردہ نکال کر کہا۔ میں نے تو جب ہی سے توبہ کرلی۔ بے فضول کو کوئلے کی دلالی میں ہاتھ کالے کرنے سے فائدہ؟ اچھا چلوں! بازار سے سودا سلف لانا ہے۔ گھر میں کہنے کو جوان لڑکا ہے مگر جھاڑو پھرا بکرا دن رات غائب رہتا ہے۔

خالہ کیا سودا لاؤ گی؟

کیا سودا بیوی۔ بس یہی تیل پھلیل، نمک مرچ اور کیا۔ بازار میں تو لوٹ مچی ہے نوچ کھارہے ہیں یہ دوکاندار۔ جس چیز میں دیکھو تو بھیل۔ گرم مصالحہ دیکھو تو آدھواں آدھ گھوڑے کی لید پسی ہوئی ہوتی ہے۔ نمک میں ریت، تیل دیکھو نرا چکٹا ہوا۔ عقل کام نہیں کرتی کہ یہ جھاڑو پھرے دکاندار چیز بیچتے ہیں یا ایمان؟ خالص چیز تو ملنا چیل کا موت ہو گیا ہے اور تو اور غضب خدا کا پانی میں بھی پھٹکری ملی ہوئی ہوتی ہے۔ اللہ ان کو ایمان دے جو پانی جیسی خالص چیز میں بھی بھیل ملاتے ہیں۔ دن بھر یہ پیٹ کی ہاؤ ہاؤ اور رات کو یہ موت پڑے مچھر کھائے جاتے ہیں۔ رات بھر کانوں پر باجا بجا کرتا ہے۔ کل وہ سندھی کی دکان پر آٹا واپس کرنے گئی تھی تو کیا دیکھتی ہوں کہ منسپلٹی کی موٹروں کی لم ڈوری لگی ہوئی جارہی ہے اور بھونپو سے چلا چلا کے کہہ رہے تھے کہ ''پانی مت جمع کرو، مچھر مارو، مکھیں مت پیدا کرو'' یہ نئی سنو! ہم کیوں مکھیوں کو پیدا کرنے لگے۔ اب اس منسپلٹی آگ لگی کے کام کرو۔ خود کے کاموں سے تو دم مارنے کی فرصت نہیں ہے، کدھر مچھر مارتے پھریں گے۔ اور خیر چلو کوئی ہرج نہیں دو کام منسپلٹی کے بھی کر دو مگر یہ کیا کہ ہم ہی ہم کام کریں اور منسپلٹی ہمارا ایک کام بھی نہ کرے۔ نا بیوی! خالہ نے چھالیہ منہ میں ڈالتے ہوئے کہا۔ دونوں ہاتھوں سے تالی بجتی ہے۔

خالہ مچھر مارنا تو اچھی بات ہے۔ بخار پھیلتا ہے اس کمبخت مارے سے۔

गया कि क़िलेदारनी साहब बाई तुम्हारी लड़की अल्लाह रख्खे अब जवानी से लोटी जा रही है न हो तो जल्दी से कहीं कर कुरु दो। बस बया यह कहना गज़ब हो गया। तीर की तरह लडकी मेरे पास आई और मेरी तरफ़ आँखें निकाल कर और कमर पे दोनों हाथ रख के बोली कि ख़ाला तुम भी बूढ़ी हुई जा रही हो तुम भी शादी कर लो कहीं झट से। देखा बीवी, यह अशराफ़[1] कहते हैं अपने आपको! चूल्हे में जाय हमदर्दी। खाला ने बटुए में से छालिया, लौंग, ज़र्दा निकाल ८ कहा। मैं ने तो जब ही से तौबा कर ली। बे फ़िज़ूल को कोयले की दलाली में हाथ काले करने से फ़ायदा? अच्छा चलूँ! बाज़ार से सौदा सुल्फ़ लाना है। घर में कहने को जवान लड़का है मगर झाड़ू फिरा बकरा दिन रात ग़ायब रहता है।

ख़ाला क्या सौदा लाओगी?

क्या सौदा बीवी। बस यही तेल फुलैल, नमक मिर्च और क्या। बाज़ार में तो लूट मची है नोच खा रहे हैं वह दूकानदार। जिस चीज़ में देखो तो भेल। गर्म मसाला देखो तो आधवां—आध घोड़े की लीद पिसी होती है। नमक में रेत, तेल देखो निरा चिकटा हुआ। अक़्ल काम नहीं करती कि यह झाडू फिरे दूकानदार चीज बेचते हैं या ईमान? खालिस चीज़ तो मिलना चील का मूत हो गया है और तो और गजब खुदा का पानी में भी फिटकिरी मिली हुई होती है। अल्लाह उसको ईमान दे जो पानी जैसी ख़ालिस चीज़ में भी भेल मिलाते है। दिन भर यह पेट की हाउ—हाउ और रात को यह मौत पड़े मच्छर खाये जाते हैं। रात भर कानों पर बाजा बजा करता है। कल वह सिंधी की दुकान पर आटा वापिस करने गई थी तो क्या देखती हूँ कि मुन्सपिल्टी की मोटरों की लम डोरी लगी हुई जा रही हैं और भोंपू से चिल्ला चिल्ला के कह रहे थे कि "पानी मत जमा करो, मच्छर मारो, मक्खियाँ मत पैदा करो।" यह नई सुनो! हम क्यों मक्खियों को पैदा करने लगे। अब इस मुन्सपिल्टी आग लगी के काम करो। खुद के कामों से तो दम मारने की फुर्सत नहीं है, किधर मच्छर मारते फिरेंगे। और ख़ैर चलो कोई हर्ज नही दो काम मुन्सपिल्टी के भी कर दो मगर यह क्या कि हम ही हम काम करें और मुन्सपिल्टी हमारा एक काम भी न करे। ना बीवी! ख़ाला ने छालिया मुँह में डालते हुए कहा। दोनों हाथों से ताली बजती है।

ख़ाला मच्छर मारना तो अच्छी बात है। बुख़ार फैलता है इस कम्बख़्त मारे से।

---

1. शरीफ़ का बहुवचन

اے چلو رہنے بھی دو۔ خالہ نے اِدھر اُدھر سر گھما کر کہا۔ مچھر جھاڑ و پھرے کیا بخار پھیلائیں گے ان کی کیا اوقات ہے۔ جان میں جان نہیں ہے اور پھر اگر پھیلاتے بھی ہیں تو ہم کیا کریں۔ تم کاہے کی تنخواہ پاتے ہو۔ خود مارو دن رات مچھروں کو۔ ہم منع کریں یا تمھارا ہاتھ پکڑیں تو گنہگار۔ ہائے ہائے کیا زمانہ ہے۔ ان منسپلٹی والوں کی تو متیں لوٹ گئی ہیں۔ منسپلٹی کیا ہے بیا بھنگیوں کے پالنے کا دفتر ہے۔ ان کے لیے ہمارے تمھارے پیسے سے بڑی بڑی بلڈنگیں بنا دی ہیں۔ وہ دیکھو کبھی جا کے شاجان باد میں۔ صبح سے شام تک پھٹے پرانے گودڑے چیتھڑے لٹکے رہتے ہیں بلڈنگ کے سامنے۔ دینے کو محل تو دیدیے مگر کھانا پہننا اور رہنا نہ بتایا۔ سرکار اماں کے زمانے میں نہ تو ایسی لجاؤ میونسپلٹی تھی اور نہ مچھر پچھر تھے۔ الغاروں پانی پھکا کرتا تھا۔ جدھر دیکھو پانی کے ڈبرے بھرے رہتے تھے۔ مگر پوری عمر گزر گئی کیا مجال جو کبھی ایک مچھر بھی کہیں نظر پڑ جائے۔ مگر وہ تو ترکیب ہے منسپلٹی کی کہ لوگوں کو مچھروں سے ڈرائیں تو پھر کوئی پانی نہ پھینکے نلوں پے۔ بس یہ کُل بات ہے۔ جس بات میں دیکھو دغا فریب! بڑے تالاب کے کنارے یزید بنے بیٹھے ہیں اور پانی نہیں پینے دیتے۔ بھوپال تال تو دنیا جہاں میں مشہور ہے مگر پانی کا کال پڑا ہے۔ خالہ نے اتنا کہا تھا کہ ان کے لڑکے ننے نے باہر سے آواز دی۔ اماں جلدی چلو۔ وہ گاؤں سے لوگ آئے ہیں۔

اچھا بیٹا آئی۔ تو چل ذرا بٹھا عزت سے چل کے۔ خالہ نے گھبرا کر اپنے لڑکے کو جواب دیا۔

خالہ کون آیا گاؤں سے؟ عورتوں نے پوچھا۔

وہی لڑکے والے آئے ہوں گے۔ شادی کے لیے سودا سلف لینے۔ اب جاؤں وہ غفور دادا کو بلاؤں۔ گھر میں کوئی مرد نہیں ہے۔ ہائے ہائے وہ آج کو ہوتے تو کاہے کو تیری میری خوشامد کرتی پھرتی۔ ہم تو بیوی اُسی روز مر گئے تھے جب خدا بخشے اُنہیں، ہمیں رانڈ بیوہ کر کے سدھارے تھے۔ مرد لاکھ کیسا ہی ہو بڑا سہارا ہوتا ہے۔ دنیا عزت سے دیکھتی ہے۔ اچھا چلوں بیوی۔ دیکھوں لڑکے والے کوئی نئی فرمائش تو نہیں لائے۔

ऐ चलो रहने भी दो। ख़ाला ने इधर उधर सर घुमाकर कहा। मच्छर झाड़ू फिरे क्या बुख़ार फैलायेंगे उनकी क्या औक़ात है। जान में जान नहीं है और फिर अगर फैलाते भी हैं तो हम क्या करें। तुम काहे की तनख़्वाह पाते हो। ख़ुद मारो दिन रात मच्छरों को। हम मना करें या तुम्हारा हाथ पकड़ें तो गुनेहगार। हाय हाय क्या ज़माना है। उन मुन्सपिल्टी वालों की तो मतें लौट गई हैं। मुन्सपिल्टी क्या है बया भंगियों के पालने का दफ़्तर है। उनके लिए हमारे तुम्हारे पैसे से बड़ी बड़ी बिलडिंगें बना दी हैं। वह देखो कभी जा के शाजानबाद में। सुबह से शाम तक फटे पुराने गूदड़े चीथड़े टंगे रहते हैं बिलडिंग के सामने। देने को महल तो दे दिये मगर खाना पहनना और रहना न बताया। सरकार अम्माँ के ज़माने में न तो ऐसी लजाऊ मुन्सपिल्टी थी और न मच्छर पच्छर थे। अल्गारों पानी फिका करता था। जिधर देखो पानी के डबरे भरे रहते थे। मगर पूरी उम्र गुज़र गई क्या मजाल जो कभी एक मच्छर भी कहीं नज़र पड़ जाय। मगर वह तो तरकीब है मुन्सपिल्टी की कि मच्छरों से डरायें तो फिर कोई पानी न फेंके नलों पे। बस यह कुल बात है। जिस बात में देखो दग़ा फ़रेब! बड़े तालाब के किनारे यज़ीद[1] बने बैठे हैं और पानी नहीं पीने देते। भोपाल ताल तो दुनिया जहान में मशहूर है मगर पानी का काल पड़ा है। ख़ाला ने इतना कहा था कि उनके लड़के नन्ने ने बाहर से आवाज़ दी। अम्माँ जल्दी चलो। वह गाँव से लोग आये हैं।

अच्छा बेटा आई। तू चल ज़रा बिठा इज़्ज़त से चल के। ख़ाला ने घबरा कर अपने लड़के को जवाब दिया।

ख़ाला कौन आया गाँव से? औरतों ने पूछा।

वही लड़के वाले आये होंगे। शादी के लिए सौदा सुल्फ़ लेने। अब जाऊँ वह ग़फ़ूर दादा को बुलाऊँ। घर में कोई मर्द नहीं है। हाय हाय वह आज को होते तो काहे को तेरी मेरी ख़ुशामद करती फिरती। हम तो बीवी उसी रोज़ मर गये थे जब ख़ुदा बख़्शे उन्हें, हमें राण्ड बेवा कर के सिधारे थे। मर्द लाख कैसा ही हो बड़ा सहारा होता है। दुनिया इज़्ज़त से देखती है। अच्छा चलूँ बीवी। देखूं लड़के वाले कोई नई फ़रमाइश तो नहीं लाये।

1. वह व्यक्ति जिसने इमाम हुसैन पर पानी बन्द कर दिया था।

خالہ کی لڑکی کی گاؤں سے برات آگئی۔ خالہ کی مصروفیت، بھاگ دوڑ اور ان کے غصہ کا پارہ بوائیلنگ پائینٹ (Boiling Point) پر جا پہنچا۔ خالہ کی "خالائیت" آج نقطۂ عروج پر ہے۔ ملاحظہ ہو۔

او ملّو، بیٹا ذرا خیال رکھنا براتیوں کا۔ کوئی اوندھی سیدھی بات نہ نکالنا منہ سے نہیں تو سب گنوار ہیں جھاڑ دپھرے کوئی تھوڑا چڑھا کے بیٹھ جائے گا۔ اللہ کی شان ہے گاؤں والوں کے دماغ بھی عرش پر ہیں، بات کا بتنگڑ بنانا۔ منہ پھلانا تو ان کے بائیں ہاتھ کا کام ہے۔

ارے او ننّے، کیا مر گیا بیٹا۔ یہ شادی کا گھر دیکھو اور آج ہی اس بکرے کا دوستوں میں بیٹھنا دیکھو۔ دیکھنا بھیا بفاتی! کہاں بیٹھا ہے وہ ہمارا سنڈا؟ بیڑئیں پی رہا ہوگا کہیں بیٹھا ہوا۔

خالہ یہ ڈیرا (شامیانہ) آگیا، کہاں لگوائیں اسے جلدی بتاؤ۔ تانگہ لدا ہوا کھڑا ہے گھنٹہ بھر سے۔

ارے بھیا شبراتی، تمہاری بھی عقل کیسی ہے ڈیرا جھاڑ دپھرا کیا گھر میں لگے گا یا خالہ موت پڑی کے اوپر۔ باہر میدان میں اوندھا سیدھا کھڑا کر دو۔

خالہ یہ ننّے آگیا...... ارے حرام خور بکرے! تیرے کیا دیدے پھوٹ گئے تیری بہن کی شادی کا دن ہے۔ کام کتنے پڑے ہیں جان پے کرنے والا ایک نہیں ہے۔ میری ایک جان کہاں کہاں پھروں اور کیا کیا کروں؟۔ دیکھ ننّے کہے دیتی ہوں کہ کوئی کسر رہ گئی تو گنوٹے کل کو دنیا بھر میں نام اچھالیں گے اور عمر عمر کو طعنے تشنے دیں گے۔ ذرا جا کے بیٹھ ان کے پاس۔

خالہ چاول کتنے چڑھا دوں؟ ایک عورت نے قریب آکر خالہ سے پوچھا۔

ارے بہن! اللہ رکھے سفید بال ہو گئے تیرے۔ چھ بچوں کی اللہ رکھے ماں بن گئی تجھے یہی نہیں معلوم کہ کتنے چاول چڑھیں گے۔ ارے ہائی آدمی پیچھے

2

ख़ाला की लड़की की गाँव से बारात आ गई। ख़ाला की मसरुफियत, भाग दौड़ और उनके गुस्से का पारा ब्याएलिंग प्याइंट (Boiling Point) पर जा पहुँचा। ख़ाला की "ख़ालाइयत" आज नुक्तए–उरुज[1] पर है। मुलाहेजा हो।

ओ मल्लू , बेटा ज़रा ख़याल रखना बारातियों का। कोई औंधी सीधी बात न निकालना मुँह से नहीं तो सब गंवार हैं झाड़ू फिरे कोई थोथड़ा चढ़ा के बैठ जायेगा। अल्लह की शान है गाँव वालों के दिमाग़ भी अर्श पर हैं, बात का बतंगड़ बनाना। मुँह फुलाना तो उनके बायें हाथ का काम है।

अरे ओ नन्ने, क्या कर गया बेटा। यह शादी का घर है देखो और आज ही उस बकरे का दोस्तों में बैठना देखो। देखना भय्या बफ़ाती! कहाँ वह हमारा संडा? बीड़ियें पी रहा होगा कहीं बैठा हुआ।

ख़ाला यह डेरा (शामियाना) आ गया, कहाँ लगवायें इसे जल्दी बताओ। तांगा लदा हुआ खड़ा है घंटा भर से। अरे भय्या शुबराती, तुम्हारी भी अक्ल कैसी है डेरा झाड़ू फिरा क्या घर में लगेगा या ख़ाला मौत पड़ी के उपर। बाहर मैदान में औंधा सीधा खड़ा कर दो।

ख़ाला यह नन्ने आ गया...... अरे हरामख़ोर बकरे! तेरे क्या दीदे फूट गये तेरी बहन की शादी का दिन है। काम कितने पड़े है जान पे, करने वाला एक नहीं है। मेरी एक जान, कहाँ कहाँ फिरूँ और क्या क्या करूँ? देख नन्ने कहे देती हूँ कि कोई कसर रह गई तो मंचट्टे कल को दुनिया भर में नाम उछालेंगे और उम्र–उम्र को ताने तश्ने देंगे। ज़रा जाके बैठ उनके पास।

ख़ाला चावल कितने चढ़ा दूँ? एक औरत ने क़रीब आकर ख़ाला से पूछा।

अरे बहन! अल्लाह रख्खे सफ़ेद बाल हो गये तेरे। छः बच्चों की अल्लाह रख्खे माँ बन गई, तुझे यही नहीं मालूम कि कितने चावल चढ़ेंगे। अरे बाई आदमी पीछे

---

1. उँचाई

پاؤ بھر لے لے۔

خالہ آدمی بھی بتلاؤ گی یا نہیں۔ اپنی خوشی سے چڑھا دوں؟

ارے بائی تو خود جا کے گن لے جھاڑو پھروں کو وہ ڈیرے میں سامنے ہی تو بیٹھے ہوں گے۔ چار بیل گاڑیوں میں اوپر تلے کھچا کھچ بھر کے آئے ہیں، گنوٹے۔

خالہ تانگہ آیا ہے اتوارہ سے، پیسے دو جلدی۔

خدا غارت کرے ان تانگوں کو۔ بھیا بفاتی، میں تو تنگی ہو گئی ہوں کرایہ دے دے کے۔ کون بیا آئی ہیں۔ کل سے یہ وقت ہو گیا تانگوں کی لم ڈوری لگی ہوئی ہے۔ ابھی ایک کو نپٹایا کہ دوسرا آ گیا۔ چھ روپے ان بیویوں کے تانگوں میں دیکھتے ہی دیکھتے خرچ ہو گئے۔ یوں تو دنیا بھر میں اپنے اپنے کاموں سے جائیں گی تو خالی چدریا اوڑھی اور چلی گئیں اور شادی بیاہ میں آئیں گی تو نواب کی جورئیں بن بن کے آئیں گی۔ خود کے جیب سے پیسے نکلیں تو پتہ چلے!

خالہ زور سے مت کہو، عورتیں سن رہی ہوں گی۔

ارے بیا یہاں کوئی نہیں ہے۔ عورت دورت سب گھر کے اندر ہیں۔

خالہ قاضی صاحب آ گئے۔

ارے ننھے دوڑ بیٹا، جلدی سے عزت سے بٹھال اور دیکھ ارے سن تو بھیا بھاگے مت۔ وہ غفور دادا سے کہنا ذرا قاضی صاحب کو باتوں میں لگائیں۔ وہ دولھا میاں عین وقت پر پخانہ کرنے گئے ہیں تالاب پے۔ اچھا جا جلدی سے۔ مجھے کیا معلوم تھا کہ گنوار جھاڑو پھرے علی الاعلان پخانہ پھرتے ہیں نہیں تو کاہے کو چار روپے خرچہ کر کے باہری پخانہ بنواتی۔ بے حلق ہو کے کھاتے ہیں اور پھر بس بھاگتے پھرتے ہیں اِدھر اُدھر عین نکاح کے وقت۔

خالہ برتن آ گئے ہیں، کہاں رکھے جائیں گے؟

بھیا کیسے برتن؟ ذرا زور سے تو کہہ۔ یہاں تو بچوں کی چیخ پکار میں کان پڑی آواز سنائی نہیں دیتی۔

خالہ کرائے کے برتن ہیں، براتیوں کو کھانا کھلانے کے لیے!

पाव भर लेले।

ख़ाला आदमी भी बतलाओगी या नहीं। अपनी ख़ुशी से चढ़ा दूँ?

अरे बाई तू ख़ुद जाके गिन ले झाडू फिरों को, वह डेरे में सामने ही तो बैठे होंगे। चार बैलगाड़ियों में ऊपर तले खचाखच भर के आये हैं, गंवट्टे।

ख़ाला तांगा आया है इतवारा से, पैसे दो जल्दी।

ख़ुदा ग़ारत करे इन तांगों को। भय्या बफ़ाती, मैं तो नंगी हो गई हूँ किराया दे दे के। कौन बया आई हैं। कल से यह वक़्त हो गया तांगों की लम डोरी[1] लगी हुई है। अभी एक को निपटाया कि दूसरा आ गया। छः रुपये इन बीवीयों के तांगों में देखते ही देखते ख़र्च हो गये। यूँ तो दुनिया भर में अपने अपने कामों से जायेंगी तो ख़ाली चद्दर ओढ़ी और चली गईं और शादी ब्याह में आयेंगी तो नवाब की जोरुयें[2] बन–बन के आयेंगी। खुद के जेब से पैसे निकले तो पता चले!

ख़ाला ज़ोर से मत कहो, औरतें सुन रही होंगी।

अरे बया यहाँ कोई नहीं है। औरत वौरत सब घर के अन्दर हैं। ख़ाला काज़ी साहब आ गये।

अरे नन्ने दौड़ बेटा, जल्दी से इज़्ज़त से बिठाल और देख अरे सुन तो भय्या भागे मत। वह ग़फ़ूर दादा से कहना ज़रा काज़ी साहब को बातों में लगायें। वह दूल्हा मियाँ ऐन वक़्त पर पख़ाना करने गये हैं तालाब पे। अच्छा जा जल्दी से। मुझे क्या मालूम कि गंवार झाडू फिरे अललऐलान पख़ाना फिरते हैं नहीं तो काहे को चार रुपये ख़र्चा कर के बाहरी पख़ाना बनवाती। बे हलक़ होके खाते हैं और फिर बस भागते फिरते हैं इधर उधर ऐन निकाह के वक़्त।

ख़ाला बर्तन आ गये हैं, कहाँ रखे जायेंगे?

भय्या कैसे बर्तन? ज़रा ज़ोर से तो कह। यहाँ तो बच्चों की चीख़ पुकार में कान पड़ी आवाज़ सुनाई नहीं देती।

ख़ाला किराये के बर्तन हैं, बारातियों को खाना खिलाने के लिए!

---

1. पंक्ति 2. औरतें

ہاں ہاں بھیج دو شبراتی دادا اندر، ادھر ذرا ہاتھ بڑھا کے رکھ دو اندر۔

تمھارا کس سے پردہ ہے؟

للتاں آٹے کی بوری آ گئی پردہ کرا دو۔

خدا غارت کرے تیری اماں کو۔

خالہ.........

ارے مر گئی موت پڑی خالہ، کچھ کہو گے بھی یا نہیں۔ چاروں طرف للکار ہو رہی ہے۔ بھاگ بھاگ کر دوانی ہو گئی، حلق میں کانٹے پڑ گئے۔ ذرا نہیں ہے کوئی کہ باہر کی دوڑ ابھاگی کر لے۔

ارے شبراتی دادا کیا او نچا سننے لگے۔ کہہ تو دیا کہ ہاتھ بڑھا کے رکھ دو اندر۔ اور دیکھو ذرا گنوا کر بھجوانا نہیں تو کہیں وہ برتن والا ایک ایک کے چار چار لگائے، کیا زمانہ ہے۔ پرانے ٹھیکروں سے دولت بنا رہے ہیں۔ برسہا برس سے کرائے پر چلا رہے ہیں۔ سونے کے برتنوں کی قیمت وصول کر لی اب تک۔ اللہ ہی جانے اب ہیرے جواہرات کے بنائیں گے کیا کریں گے نگوڑ مارے؟ اور ہاں دادا صبح کو یاد سے واپس کر دینا نہیں تو دو روز کا کرایہ سر پہ پڑ جائے گا۔ یوں جھاڑو پھرے سالوں رکھے ہیں دوکان میں تو کچھ نہیں۔

خالہ تانگہ آیا ہے پیسے دینا بارہ آنے۔

اف فوہ خدا اٹھا لے اب تو۔ اوے بھیا کہاں سے آیا ہے، کس کی بیگم آئی ہیں، مجھے بھی بتاؤ۔ یوں تو ایک عزیز موت پڑا نہیں دیکھتا اُلٹ کے اور آج کے دن نہ معلوم کہاں سے اُبل پڑے ہیں، کیڑے مکوڑوں کی طرح۔

خالہ یہ پردے لیتا مہتبند صاحب (مہتمم صاحب) کی عورتوں کو دے دو۔

اے پھینک اُدھر جھاڑو پھرے پردے اردوں کو، جس پیا کا ہو گا خود فکر کر لیں گی۔ لو بیوی! اب پردے چادریں ٹانگتے ٹانگتے پھروں، مرنے کی تو فرصت نہیں ہے۔

خالہ قاضی صاحب نے نکاح شروع کر دیا ہے، لڑکی سے ''ہوں'' تو کرا دو یہ دو گواہ آ رہے ہیں۔

हाँ हाँ भेज दो शुबराती दादा अन्दर, उधर ज़रा हाथ बढ़ा के रख दो अन्दर।

तुम्हारा किस से पर्दा है? अम्माँ आटे की बोरी आ गई पर्दा करा दो।

खुदा ग़ारत करे तेरी अम्माँ को।

ख़ाला........

अरे मर गई मौत पड़ी ख़ाला, कुछ कहोगे भी या नहीं। चारों तरफ़ ललकार हो रही है। भाग–भाग कर दिवानी हो गई, हलक़ में काँटे पड़ गये। ज़रा नहीं है कोई कि बाहर की दौड़ा भागी कर ले।

अरे शुबराती दादा क्या ऊँचा सुनने लगे। कह तो दिया कि हाथ बढ़ा के रख दो अन्दर। और देखो ज़रा गिनवा कर भिजवाना नहीं तो कहीं वह बर्तन वाला एक–एक के चार–चार लगाये, क्या ज़माना है। पुराने ठीकरों से दौलत बना रहे हैं। बरसहा बरस से किराये पर चला रहे हैं। सोने के बर्तनों की क़ीमत वसूल करली अब तक। अल्लाह ही जाने अब हीरे जवाहारात के बनायेंगे क्या करेंगे निगोड़मारे? और हाँ दादा सुबह को याद से वापस कर देना नहीं तो दो रोज़ का किराया सर पे पड़ जायेगा। यूँ झाड़ू फिरे सालों रखे हैं दुकान में तो कुछ नहीं।

ख़ाला तांगा आया है पैसे देना बारह आने।

उफ़्फ़ोह खुदा उठा ले अब तो। आऐ भय्या, कहाँ से आया है, किसकी बेगम आई है, मुझे भी बताओ। यूँ तो एक अज़ीज़ मौत पड़ा नहीं देखता उलट के और आज के दिन न मालूम कहाँ से उबल पड़े हैं, कीड़े मकोड़ों की तरह।

ख़ाला यह पर्दे लेना मोहतबन्द साहब (मोहतमिम[1] साहब) की औरतों को देदो।

ऐ फेंक उधर झाड़ू फिरे पर्दे अर्दो को, जिस बया का होगा खुद फ़िक्र कर लेंगी। लो बीवी! अब पर्दे चादरें टाँगे टाँगे फिरूँ, मरने की तो फ़ुर्सत नहीं है।

ख़ाला काज़ी साहब ने निकाह शुरु कर दिया है, लड़की से "हूँ" तो करा दो यह दो गवाह आ रहे हैं।

---

1. प्रबंधक

ہاں بھیا آنے دو، ہو گیا وہ تو پردہ، جس بیا کو کرنا ہوگا خود چادر سامنے ٹانگ لیں گی۔

خالہ لڑکی سے ہوں تو کرا دو یہ رو رو کے جان دیے دے رہی ہے، عورتوں نے کہا۔

ارے بائی ہوگئی ''ہوں'' میں تو کہہ رہی ہوں چلا چلا کے ''ہوں'' وہ نگوڑ ماری جان دے دے گی مگر نہیں کرے گی۔ خالہ تیز تیز گئیں اور اپنی لڑکی کے سر پر ہاتھ رکھ کر کہا کہہ دے بیٹی زنیب۔ ہوں کہنے میں کیا ہرج ہے تیرا۔ ہاں بس چلو ہوگئی ہوں۔

خالہ یہ تو رو رہی ہے ہوں کب کہا، یہ تو ہچکیوں کی آواز ہے۔

اے تو نصیبن پھر بائی ہچکی سے ہوں نہیں کرے گی تو کیا علانیہ ہنس ہنس کے کہے گی چلو ہوگئی۔ خالہ کمرے سے باہر آکر چوکی پر بیٹھنا چاہتی تھیں کہ باہر سے آواز آئی۔

خالہ تانگہ.......... ایک روپیہ

ارے بھگا جھاڑو پھرے تانگوں کو، نہیں ہیں اب میرے پاس پیسے۔

خالہ قاضی صاحب جا رہے ہیں۔

تو جانے دو بھیا کیوں روکتے ہو، کون اب مجھے پڑھوانا ہے اپنا نکاح۔

خالہ لاؤڈ اسپیکر کہاں لگے گا؟

وہ دولھا کے کمر پے لگا دے، اسی کی فرمائش تھی نگوڑ مارے گنوار کی۔ رنڈیوں کے مادر زادگانے اسے ہی سنا۔

خالہ ذرا دروازے کے پاس آنا جلدی سے، ضروری بات ہے۔

توبہ ہے بیوی، میرے تو اب ہاتھ پاؤں جواب دے چکے۔ کل سے یہ وقت ہوگیا، بندریا کی طرح ناچ رہی ہوں۔ اچھا بولو بھائی کس نے بلایا تھا؟ دو بچے روتے ہوئے خالہ کے پاس آکر کھڑے ہوگئے اور خالہ سے سلسلۂ کلام جاری رکھتے ہوئے کہا۔ ارے بیویو! یہ کس کے بچے ہیں؟ ذرا ان کو تو چپ کرو خدا کے لیے۔ حلق میں زبان نہیں ڈال رہے ہیں۔ خدائیوں میں، گھر میں دیکھو تو ہیا کال مچی ہے۔ وہ جھاڑو پھرا بھونپو ایسا بج رہا ہے جیسے کانوں سے بندھا ہو۔ ہر بیوی تین تین چار چار بغل میں دابے

हाँ भय्या आने दो, हो गया वह तो पर्दा, जिस बया को करना होगा खुद चादर सामने टाँग लेंगी।

ख़ाला लड़की से हूँ तो करा दो यह रो–रो के जान दिये दे रही है, औरतों ने कहा।

अरे बाई हो गई "हूँ" मैं तो कह रही हूँ चिल्ला चिल्ला के "हूँ" वह निगोड़ मारी जान दे देगी मगर नहीं करेगी। ख़ाला तेज़ तेज़ गईं और अपनी लड़की के सर पर हाथ रख कर कहा कह दे बेटी ज़ैनब। हूँ कहने में क्या हर्ज है तेरा। हाँ बस चलो हो गई हूँ।

ख़ाला यह तो रो रही है हूँ कब कहा, यह तो हचिकियों की आवाज़ है।

ऐ तो नसीबन फिर बाई हिचकी से हूँ नहीं करेगी तो क्या ऐलानिया हंस–हंस के कहेगी चलो हो गई। ख़ाला कमरे से बाहर आकर चौकी पर बैठना चाहती थीं कि बाहर से आवाज़ आई।

ख़ाला तांगा.......... एक रुपया।

अरे मगा, झाड़ू फिरे तांगों को, नहीं हैं अब मेरे पास पैसे।

ख़ाला काज़ी साहब जा रहे हैं।

तो जाने दो भय्या क्यों रोकते हो, कौन अब मुझे पढ़वाना है अपना निकाह।

ख़ाला लाउड स्पीकर कहाँ लगेगा?

वह दूल्हा के कमर पर लगा दे, उसी की फरमाइश थी निगोड़ मारे गंवार की। रंडियों के मादर ज़ाद गाने उसे ही सुना।

ख़ाला ज़रा दरवाज़े के पास आना जल्दी से, ज़रुरी बात है।

तौबा है बीवी, मेरे तो अब हाथ पाँव जवाब दे चुके। कल से यह वक़्त हो गया, बंदरिया की तरह नाच रही हूँ। अच्छा बोलो माई किसने बुलाया था? दो बच्चे रोते हुए ख़ाला के पास आकर खड़े हो गये और ख़ाला से सिलसिलए–कलाम जारी रखते हुए कहा। अरे बीवीयों! यह किसके बच्चे हैं? ज़रा इनको तो चुप करो ख़ुदा के लिए। हलक़ में ज़बान नहीं डाल रहे हैं। खुदाइयों मैं, घर में देखो तो हय्या काल मची है। वह झाड़ू फिरा भोंपू ऐसा बज रहा है जैसे कानों से बंधा हो। हर बीवी तीन–तीन, चार–चार बग़ल में दाबे चली आ रही हैं।

چلی آرہی ہے۔ ایسا بھی جھاڑو پھرا کیا شوق بچوں کا۔ ایک دو ہو گئے، ہو گئے، اللہ انہیں کو زندہ رکھے۔

اماں تانگہ — ایک ......

دیکھ منے، خدا رسول کی قسم ہے میں دوانی ہو کر گھر سے نکل جاؤں گی۔ یہ تانگے پیٹنا پڑے مجھے زندہ نگل گئے۔ اللہ ان کو دنیا کے پردے سے مٹائے۔ کون بیا ہیں ہمیں نہیں بلانا اب کسی بیاو یا کو۔ بھگا سب کو اُلٹے پاؤں۔

ارے اماں وہ قاضی صاحب کو ان کے گھر چھوڑنے گیا تھا اس کے دام چاہئیں۔

اللہ رحم رحم، قاضی صاحب سے یہ نہیں بنا کہ دولھا والوں نے دس روپے نکاح پڑھوائی کے دیے تھے اس میں سے ایک روپیہ خیرات سمجھ کر ہی دے دیتے۔ ہائے ہائے کیا زمانہ آگیا ہے۔ خالی ایک آیت پڑھ دی اور دس روپے رکھوا لیے۔ ہلدی لگی نہ پھٹکری۔ یہ جادہ جا۔ آخر سرکار سے کس بات کی تنخواہ ملتی ہے ان قاضی مفتیوں کو۔ خیر لے بھیا تانگے والے۔

لاؤ بیا، تانگے والے نے آگے آکر ہاتھ پھیلایا۔

اے ادھر تو ہٹ ذرا۔ سامنے آکے آنکھوں میں آنکھیں ڈال رہا ہے۔ ہاں یوں کھڑا ہو بھیا۔ بے فضول کو پرائی بہو بیٹیوں کو تاکنے سے فائدہ؟ خالہ نے ایک روپیہ ہاتھ بڑھا کر تانگے والے کو دیتے ہوئے کہا۔ ہائے ہائے یہ ملاّ مولوی اللہ کا کلام بھی تو بغیر پیسے کے نہیں پڑھتے۔

• • • • •

ऐसा भी झाडू फिरा क्या शौक़ बच्चों का। एक दो हो गये, हो गये, अल्लाह उन्हीं को ज़िन्दा रखे।

अम्माँ तांगा – एक......

देख नन्ने, खुदा–रसूल की क़सम है मैं दिवानी होकर घर से निकल जाऊँगी। यह तांगे पटीना पड़े मुझे ज़िन्दा निगल गये। अल्लाह उनको दुनिया के पर्दे से मिटाये। कौन बया हैं हमें नहीं बुलाना अब किसी बया वया को। भगा सबको उल्टे पाँव।

अरे अम्माँ वह क़ाज़ी साहब को उनके घर छोड़ने गया था उसके दाम चाहिऐं।

अल्लाह रहम, रहम, क़ाज़ी साहब से यह नहीं बना कि दूल्हा वालों ने दस रुपये निकाह पढ़वाई के दिये थे उस में से एक रुपया ख़ैरात ही समझ कर दे देते। हाय हाय क्या ज़माना आ गया है। ख़ाली एक आयत पढ़ दी और दस रुपये रखवा लिये। हल्दी लगी न फिटकिरी। यह जादा[1] जा। आख़िर सरकार से किस बात की तनख़्वाह मिलती है इन क़ाज़ी मुफ़्तियों को। ख़ैर ले भय्या तांगे वाले।

लाओ बया, तांगे वाले ने आगे आकर हाथ फैलाया।

ऐ उधर तो हट ज़रा। सामने आके आँखों में आँखे डाल रहा है। हाँ यूँ खड़ा हो भय्या। बे फुज़ूल को पराई बहू बेटियों को ताकने से फ़ायदा? ख़ाला ने एक रुपया हाथ बढ़ाकर तांगे वाले को देते हुए कहा। हाय हाये ये मुल्ला मोलवी अल्लाह का कलाम भी तो बग़ैर पैसे के नहीं पढ़ते।

• • • • •

---

1. राह

شین مظفر پوری

پوشیدہ خط و کتابت

منّے کی اماں کو منّے کے ابّا کی طرف سے السّلام علیکم۔

خدا کرے تمہیں سارے جہان کی عُمر لگ جائے۔ اور اگر تم مناسب سمجھو تو خدا کرے میری عُمر بھی تمہیں لگ جائے تا کہ نہ رہے بانس اور نہ بجے بانسری۔ (اس سلسلے میں اپنی محترمہ والدہ صاحبہ کے نیک مشوروں سے بھی فائدہ اُٹھانے کی کوشش کرنا کہ وہ کہاں تک اس بات کے حق میں ہیں) اپنی خیریت کے بارے میں اپنی طرف سے کیا لکھوں۔ میری خیریت کا تھرمامیٹر تو تمہارے پاس ہی ہے۔ یہ کہنا تو سراسر مبالغہ بلکہ غلط ہوگا کہ جو حال تمہارا سو ہمارا، کیوں کہ میرے اور تمہارے حال میں ایک بنیادی فرق ہے ـــــ وہی فرق جو ملکہ برطانیہ الزبتھ ثانی اور اُن کے شوہر شہزادہ فلپ میں ہے۔ پرنس فلپ ملکہ کے شوہر ضرور ہیں مگر بادشاہ تو نہیں ہیں۔ لہذا میری خیریت بھی اس طرح تمہارے پاس گروی ہے۔ جب کبھی نگاہِ لطف جھکی تو زندگی شاد و آباد اور جب کبھی نگاہِ غضب اُٹھی تو زندگی مع خیریت وغیرہ تباہ و برباد۔

آگے کا حالِ زار یوں ہے تو تمہارا ایکسپریس ڈلیوری خط عین عالمِ اختلاج میں بجلی بن کر میرے خرمنِ سکون پر گرا ـــــ کانپتے ہوئے ہاتھوں سے لفافہ چاک کر کے پہلے سرسری طور پر دھڑکتے ہوئے دل کے ساتھ پڑھا، کیوں کہ تنخواہ ملنے میں ابھی کئی دن باقی ہیں۔ پھر دل مضبوط کر کے شروع سے آخر تک بڑے خشوع و خضوع کے ساتھ پورا

शीन मुज़फ़्फ़र पुरी

पोशीदा ख़तो-किताबत[1]

मुन्ने की अम्माँ को मुन्ने के अब्बा की तरफ़ से अस्सलामु अलैकुम।

खुदा करे तुम्हें सारे जहाँ की उम्र लग जाये। और अगर तुम मुनासिब समझो तो खुदा करे मेरी उम्र भी तुम्हें लग जाये ताकि न रहे बाँस न बजे बाँसुरी। (इस सिलसिले में अपनी मोहतरमा वालिदा साहिबा के नेक मशवरों से भी फ़ायदा उठाने की कोशिश करना कि वह कहाँ तक इस बात के हक़ में हैं) अपनी ख़ैरियत के बारे में अपनी तरफ़ से क्या लिखूँ। मेरी ख़ैरियत का थरमामीटर तो तुम्हारे पास ही है। यह कहना तो सरासर मुबालग़ा[2] बल्कि ग़लत होगा कि जो हाल तुम्हारा सो हमारा, क्योंकि मेरे और तुम्हारे हाल में एक बुनियादी फ़र्क़ है – वही फ़र्क़ जो मलिका बरतानिया एलिज़ाबेथ सानी और उनके शौहर शहज़ादा फ़िलिप में है। प्रिंस फ़िलिप मलिका के शौहर ज़रुर हैं मगर बादशाह तो नहीं। लिहाज़ा मेरी ख़ैरियत भी उसी तरह तुम्हारे पास गिरवी है। जब कभी निगाहे–लुत्फ़ झुकी तो ज़िन्दगी शादो–आबाद और जब कभी निगाहे–ग़ज़ब उठी तो ज़िन्दगी मय ख़ैरियत वग़ैरह तबाहो–बर्बाद।

आगे का हाले–ज़ार यूँ है तो तुम्हारा एक्सप्रेस डिलेवरी ख़त ऐन आलमे–इख़्तलाज में बिजली बनकर मेरे ख़िर्मने–सुकून पर गिरा —– काँपते हाथों से लिफ़ाफ़ा चाक करके पहले सरसरी तौर पर धड़कते हुए दिल के साथ पढ़ा, क्योंकि तनख़्वाह मिलने में अभी कई दिन बाक़ी हैं। फिर भी दिल मज़बूत करके शुरु से आख़िर तक बड़े खुशूओ–खुज़ूअ[3] के साथ पूरा

---

1. पत्र व्यवहार 2. अतिश्योक्ति 3. विनम्रता

خط دوبارہ پڑھا مگر وہ بات کہیں نہ ملی جس پر دل کی حرکت ایک لحہ کے لیے رُک جایا کرتی تھی۔ مجھے شک گزرا کہ کہیں یہ خط کسی غیر کا نہ ہو، کیوں کہ تمہارے خط میں رُوپے پیسے کا ذکر نہ ہونا ایسا ہی ہے جیسے تم سالن میں نمک ڈالنا بھول جاؤ۔ مگر خط یقیناً تمہارا ہی لکھا ہوا ہے۔ اگر کوئی ہزار سال بھی مشق کرے تو تمہاری بدخطی کی نقل نہیں کر سکتا۔ بلکہ اپنی عادت کے مطابق تم نے دو مرتبہ اپنا نام غلط لکھ لکھ کر کاٹا ہے اور تیسری مرتبہ صحیح لکھا ہے۔ ساری باتیں ملتی ہیں۔ اس لیے ماننا پڑتا ہے کہ خط تمہارا ہی ہے۔

میں حیران ہوں کہ آخر اچانک تمہاری اقتصادی پالیسی میں یہ انقلاب کیسے آ گیا۔ کہیں ایسا تو نہیں کہ میری مستقل اقتصادی پس ماندگی سے بد دل ہو کر تم نے براہِ راست امریکہ سے ساز باز کر لی ہو اور تمہارے علی الحساب بجٹ کا ''فلو'' میری انحطاط پزیر آمدنی کو چھوڑ کر ڈائرکٹ ''پی ایل چار سواسی'' والی امریکن ایڈ کی طرف رجوع کر گیا ہو۔ اگر ایسا ہے تو چشم ما روشن دلِ ماشاد ـــــ ایک اندیشہ یہ بھی ستا رہا ہے کہ کہیں یہ طوفان سے پہلے والا سکوت نہ ہو۔ اگر تم نے واقعی براہِ راست امریکہ سے رجوع کیا ہے، تو اچھا ہے۔ کیوں کہ سُنتے ہیں کہ امریکی امداد بالکل غیر مشروط ہوا کرتی ہے جو محض امن و انسانیت کے نام پر لٹائی جاتی ہے۔ یا اگر کوئی چھوٹی موٹی بے ضرر شرط بھی ہو تو کیا مضائقہ ہے! مثلاً زمین کسان کی اور پیداوار مہاجن کی۔ خیر یہ تو میں ذرا چٹکی لے رہا ہوں ورنہ تم بھلا کب کسی چکّر میں آنے والی ہو۔ تمہارے ہی چکّر سے کوئی نکل جائے تو وہ خوش نصیب ہوگا۔ فدوی جیسا سدھایا ہوا بے زبان ''فنانسر'' جب تمہارے کھونٹے سے بندھا ہوا ہے تو تمہیں اِدھر اُدھر بھٹکنے کی ضرورت ہی کیا ہے۔ چراغ لے کر بھی ڈھونڈو گی تو فدوی کا ثانی نہیں ملے گا۔ ''تمہیں چاہوں تمہارے چاہنے والوں کو بھی چاہوں'' کے معیار پر پورا اُترنے کی سعادت کسی کسی کو ہی نصیب ہوا کرتی ہے۔ معاف کرنا یہاں ''چاہنے والوں'' سے مُراد کوئی ایرا غیرا نہیں بلکہ تمہاری اماں وغیرہ ہیں۔

ہاں تو مُنّے کی اماں، تم نے اپنی سالہا سال کی اقتصادی پالیسی میں یہ تبدیلی کیوں کی ہے؟ میں اسے کوئی نیک شگون سمجھوں یا بدشگونی پر محمول کروں؟ اسے تمہاری قربانی سمجھوں یا ناراضگی سے تعبیر کروں؟ خُدا کے لئے ارجنٹ خط لکھ کر، بلکہ تار دے کر میری تسلی کرو۔

ख़त दोबारा पढ़ा मगर वह बात कहीं नहीं मिली जिस पर दिल की हरकत एक लम्हे के लिए रुक जाया करती थी। मुझे शक गुज़रा कि कहीं यह ख़त किसी ग़ैर का न हो, क्यों कि तुम्हारे ख़त में रुपये पैसे का ज़िक्र न होना ऐसा ही है जैसे तुम सालन में नमक डालना भूल जाओ। मगर ख़त यक़ीनन तुम्हारा ही लिखा हुआ है। अगर कोई हज़ार साल भी मश्क़ करे तो तुम्हारी बदख़ती की नक़ल नहीं कर सकता। बल्कि अपनी आदत के मुताबिक़ तुमने दो मर्तबा अपना नाम ग़लत लिखकर काटा है और तीसरी मर्तबा सही लिखा है। सारी बातें मिलती हैं। इसलिए मानना पड़ता है कि ख़त तुम्हारा ही है।

मैं हैरान हूँ कि आख़िर अचानक तुम्हारी इक़्तसादी2 पॉलीसी में यह इन्क़लाब कैसे आ गया। कहीं ऐसा तो नहीं कि मेरी मुस्तक़िल इक्तसादी पसमांदगी से बद्‌दिल होकर तुमने बराहे–रास्त अमेरिका से साज़–बाज़ करली हो और तुम्हारे अललहिसाब बजट का "फ्लो" मेरी इनहतात पिज़ीर आमदनी को छोड़कर डाइरेक्ट "पी एल चार सौ अस्सी" वाली अमेरिकन ऐड की तरफ़ रुजूअ कर गया हो। अगर ऐसे है तो चश्मेमारौशन दिले–माशाद[2] एक अंदेशा यह भी सता रहा है कि कहीं यह तूफ़ान से पहले वाला सुकूत न हो। अगर तुमने वाक़ई बराहे–रास्त अमेरिका से रुजूअ किया है, तो अच्छा है। क्योंकि सुनते हैं कि अमेरिकी इमदाद बिल्कुल ग़ैर मशरुत हुआ करती है जो महज़ अमनो–इन्सानियत के नाम पर लुटाई जाती है। या अगर कोई छोटी मोटी बे ज़रर शर्त भी हो तो क्या मुज़ायक़ा है! मसलन ज़मीन किसान की और पैदावार महाजन की। ख़ैर यह मैं तो ज़रा चुटकी ले रहा हूँ वरना तुम भला कब किसी चक्कर में आने वाली हो। तुम्हारे ही चक्कर से कोई निकल जाये तो वह ख़ुशनसीब होगा। फ़िदवी जैसा सिघाया हुआ बेज़बान "फ़नांसर" जब तुम्हारे खूंटे से बंधा हुआ है तो तुम्हें इधर उधर भटकने की ज़रुरत ही क्या है। चिराग़ लेकर भी ढूंढोगी तो फ़िदवी का सानी नहीं मिलेगा। "तुम्हें चाहूँ तुम्हारे चाहने वालों को भी चाहूँ" के मेयार पर पूरा उतरने की सआदत किसी–किसी को ही नसीब हुआ करती है। माफ़ करना यहाँ "चाहने वालों से मुराद कोई ऐरा–ग़ैरा नहीं बल्कि तुम्हारी अम्माँ वग़ैरह हैं।

हाँ तो मुन्ने की अम्माँ, तुमने अपनी सालहा–साल की इक़्तसादी पॉलीसी में यह तब्दीली क्यों की है? मैं उसे कोई नेक शगुन समझूँ या बदशगुनी पर महमूल करुँ? उसे तुम्हारी क़ुर्बानी समझूँ या नाराज़गी से ताबीर करुँ? ख़ुदा के लिए अर्जेंट ख़त लिखकर, बल्कि तार देकर मेरी तसल्ली करो।

1. आर्थिक 2. आँखों सुख, कलेजा टंडक

تم نے آگے چل کر اپنے خط میں بڑی دل سوزی کے ساتھ مہنگائی وغیرہ کا ذکر کیا ہے اور دَبی دَبی زبان میں اِندرا سرکار کو کوسنے بھی دیئے ہیں۔ خیر یہ تو تم جانو اور تمہاری ذات والی اِندرا گاندھی جانیں، کیوں کہ یہ عورت عورت کا معاملہ ہے۔ مگر احتیاطاً اور اطلاعاً ایک بات چپکے سے تمہارے کان میں ڈال دوں تا کہ بے خبری میں کہیں ماری نہ جاؤ، کیونکہ گھر کی زبان درازی باہر نہیں چل سکتی۔ وہ جو ایک زبردست قانون گزرا ہے جس کا نام ڈی۔آئی۔آر تھا اس لمبی رسّی کا ایک سِرا تو اِندرا سرکار کی چٹکی سے نکل چکا ہے مگر اس کا دوسرا سرا اِندرا سرکار کے انگوٹھے تلے اب بھی دَبا ہوا ہے۔ اس لئے سوچ سمجھ کر مُنھ سے بات نکالا کرو۔

تم نے اپنے خط میں حکومت پر جو مردانہ وار تنقید کی ہے اس سے ظاہر ہوتا ہے کہ تم حکومت کو گویا اپنی اس پڑوسن کی بہن سمجھتی ہو جس سے تمہاری لاگ ڈانٹ چلتی ہے۔ میں حیران ہوں کہ اتنے زبردست اور نوکیلے الفاظ تمہارے دماغ میں غیب سے آتے ہیں یا کِسی پرائیویٹ کتاب سے پڑھ رکھے ہیں! سننے والا اگر پرلے درجے کا بے حیا ہو تب بھی وہ کم از کم پسینہ پسینہ تو ضرور ہو جائے گا۔ ورنہ شرم والے تو ان الفاظ کی تاب نہ لا کر غش کھا جائیں گے۔ تمہارے اِس خط کو پڑھ کر ایک نادر خیال آیا ہے۔ سوچتا ہوں کہ اگر آئندہ جنرل الیکشن تک مہنگائی نے زندگی کو وَفا کرنے کا موقع دیا اور خانہ داری کے کوہِ گراں نے مجھے کُبڑا نہ بنا دیا تو انشاء اللہ ایک ٹکٹ خرید کر تم کو بھی اپوزیشن پارٹی کی طرف سے کھڑا کر کے الیکشن لڑواؤں گا۔ اگر تم جیت کر پارلیمنٹ میں پہنچ گئیں تو تمہارے تیور بتاتے ہیں کہ تم یقیناً دشمنوں کے چھکّے چھڑا دوگی۔ پہلے ہی دن سرکار کی ناک میں نکیل ڈال کر کھونٹے سے باندھ دوگی (جیسا کہ مجھے باندھ رکھا ہے) میں جانتا ہوں کہ تم جب گھر سے نکلوگی تو راشن کی دوکان اور سبزی مارکیٹ ہوتی ہوئی ہاتھ میں تھیلا جُھلاتی غیظ وغضب کے عالم میں پیدل ہی پارلیمنٹ پہنچوگی۔ ایک ہاتھ میں تھیلا اور دوسرے ہاتھ میں راشن کارڈ اور بازار بھاؤ کا پرچہ ہوگا۔ تم کسی تمہید کے بغیر براہِ راست صاف صاف ہلدی، دَھنیا، لہسن، تیل، دال، چاول، آٹا اور ساگ سبزی وغیرہ پر بحث چھیڑ دوگی۔ اور جب چُولھا چکّی پر بحث ہو چکے گی تب کسی کو ایٹم بم وغیرہ کا مسئلہ زیرِ بحث لانے دوگی۔ ایک خالص ہندوستانی عورت کا اس

तुमने आगे चलकर अपने ख़त में बड़ी दिल–सोज़ी[1] के साथ महंगाई वग़ैरह का ज़िक्र किया है और दबी–दबी ज़बान में इन्दिरा सरकार को कोसने भी दिये हैं। ख़ैर यह तो तुम जानो और तुम्हारी ज़ात वाली इन्दिरा गाँधी जानें, क्योंकि यह औरत औरत का मामला है। मगर एहतयातन और इत्तलाअन एक बात चुपके से तुम्हारे कान मे डाल दूँ ताकि बेख़बरी में कहीं मारी न जाओ, क्योंकि घर की ज़बान दराज़ी बाहर नहीं चल सकती। वह जो एक ज़बरदस्त क़ानून गुज़रा है जिसका नाम डी. आई. आर. था इस लम्बी रस्सी का एक सिरा तो इन्दिरा सरकार की चुटकी से निकल चुका है मगर उसका दूसरा सिरा इन्दिरा सरकार के अंगूठे तले अब भी दबा हुआ है। इसलिए सोच समझकर मुँह से बात निकाला करो।

तुमने अपने ख़त मे हुकूमत पर जो मर्दानावार तनक़ीद की है उससे ज़ाहिर होता है कि तुम हुकूमत को गोया अपनी पड़ोसन की बहन समझती हो जिससे तुम्हारी लाग डाँट चलती है। मैं हैरान हूँ कि इतने ज़बरदस्त और नोकीले अल्फ़ाज़ तुम्हारे दिमाग़ में ग़ैब से आते हैं या किसी प्राइवेट किताब से पढ़ रखे हैं! सुनने वाला अगर परले दर्जे का बेहया हो तब भी वह कम अज़ कम पसीना–पसीना तो ज़रुर हो जायेगा। वरना शर्म वाले तो इन अल्फ़ाज़ की ताब न लाकर ग़श खा जायेंगे। तुम्हारे इस ख़त को पढ़कर एक नादिर ख़्याल आया है। सोचता हूँ कि अगर आइंदा जनरल इलेक्शन तक महंगाई ने ज़िन्दगी को वफ़ा करने का मौक़ा दिया और ख़ानादारी के कोहे–गिराँ ने मुझे कुबड़ा न बना दिया तो इन्शाअल्लाह एक टिकट ख़रीद कर तुमको भी अपोज़ीशन पार्टी की तरफ़ से खड़ा करके इलेक्शन लड़ाऊँगा। अगर तुम जीतकर पारलियामेंट में पहुँच गई तो तुम्हारे तेवर बताते हैं कि तुम यक़ीनन दुश्मनों के छक्के छुड़ा दोगी। पहले ही दिन सरकार की नाक में नकेल डालकर खूंटे से बांध दोगी (जैसा मुझे बांध रखा है) मैं जानता हूँ कि तुम जब घर से निकलोगी तो राशन की दूकान और सब्ज़ी मार्केट होती हुई हाथ में थैला झुलाती ग़ैज़ो–ग़ज़ब के आलम में पैदल ही पारलियामेंट पहुँचोगी। एक हाथ में थैला और दूसरे हाथ में राशन कार्ड और बाज़ार भाव का पर्चा होगा। तुम किसी तमहीद के बग़ैर बराहे–रास्त साफ़–साफ़ हल्दी, धनिया, लहसन, तेल, दाल, चावल, आटा और साग सब्ज़ी वग़ैरह पर बहस छेड़ दोगी। और जब चूल्हा–चक्की पर बहस हो चुकेगी तब किसी को ऐटम बम वग़ैरह का मसला ज़ेरे–बहस लाने दोगी। एक ख़ालिस हिन्दुस्तानी औरत का इस तरह ख़ालिस हिन्दुस्तानी

1. दुःख

طرح خالص ہندوستانی پرابلم پر ڈائرکٹ بحث کرنا، پارلیمنٹ کی رانیوں، مہارانیوں، بیگموں اور ماداموں کو نہایت ناگوار گزرے گا اور ان کا مُنھ کچھ ایسا بگڑے گا جیسے کیک کے ذائقے میں باجرے کی روٹی کا مزا آنے لگا ہو —— اس کے بعد سی۔ آئی۔ ڈی والے تمہارے آگے پیچھے سائے کی طرح پھرا کریں گے۔ اور اگر کہیں ''ڈی۔ آئی۔ آر'' وغیرہ کے پھندے میں پھنسا کر تم کو نظر بند کر دیا گیا تو مُنے کے ابّا کا خدا ہی حافظ ہو گا۔ پھر سرکار تمہارا لوہا مان کر اپنی پارٹی میں کھینچ لے گی اور تم کسی ریاست کی چیف منسٹر ہو کر سچیتا کرپلانی بن جاؤ گی اور میں بے چارہ آچاریہ کرپلانی بن کر رہ جاؤں گا۔

اچھا اَب اس تھوڑے لکھے کو بہت جان کر یہ تو بتاؤ کہ پرسوں جو تنخواہ ملنے والی ہے اس کا کیا کروں؟ کبھی سوچتا ہوں کہ تم کو بھیج دوں کبھی خیال آتا ہے کہ خود رکھ لوں۔ اگر تم کو بھیج دوں تو میں کیا کروں گا؟ یا اگر خود رکھ لوں تو تم کیا کرو گی؟ کیوں کہ اَب بدقسمتی سے یہ تنخواہ ہم دونوں میں سے کسی ایک ہی کا کام چلا سکتی ہے۔ تمہارا یہ خط اتنا خشک اور سپاٹ ہے واللہ اور تم نے اس احتیاط سے لکھا ہے جیسے تم کو ڈر ہو کہ اگر ایک بھی ایسا ویسا لفظ پکڑا گیا تو تم پر عشق بازی کی تہمت لگ جائے گی یا میں اس ایک لفظ یا کسی ایک بات کو لے کر تم کو بلیک میل کرنا شروع کر دوں گا............ نیک بخت! میاں بیوی میں ازدواجی رسم ہوتی ہے (یا کم از کم اخلاقی فرض) کہ شروع میں یا آخر میں پیار اور لگاوٹ کے دو لفظ لکھ دیئے جاتے ہیں۔ واقعی نہیں تو جھوٹوں ہی سہی۔ مگر لکھنا ضرور چاہیے۔

تمہارا بندۂ بے دام یعنی جہیز میں ملا ہوا غلام
مُنّے کے آبا۔ بقلم خود

سَرتاجِ مَن سَلامت۔ مُنّے کے ابّا کو بندی مُنّے کی امّاں کا سلام وغیرہ پہنچ کر اور پیار محبت کی دو چار باتوں کے بعد معلوم ہو کہ آپ کا بے سر و پا خط بندی کو پہنچا۔ کچھ بات پلّے پڑی ہے اور کچھ بات اماں جان سے پوچھ کر سمجھوں گی۔ یہاں ہم لوگ بازار بھاؤ کے حساب سے راضی خوشی رہ کر سمجھتے ہیں کہ آپ بھی ضرور اسی حساب سے راضی خوشی ہوں

प्राब्लम पर डाइरेक्ट बहस करना, पारलीयामेंट की रानियों, महारानियों, बेगमों और मादामों को निहायत नागवार गुज़रेगा और उनका मुँह कुछ ऐसा बिगड़ेगा जैसे केक के ज़ायके में बाजरे की रोटी का मज़ा आने लगा हो – उसके बाद सी. आई. डी. वाले तुम्हरे आगे पीछे साये की तरह फिरा करेंगे। और अगर कहीं "डी. आई. आर." बग़ैरह के फंदे में फंसाकर तुमको नज़रबंद कर दिया गया तो मुन्ने के अब्बा का खुदा की हाफ़िज़ होगा। फिर सरकार तुम्हारा लोहा मानकर अपनी पार्टी में खींच लेगी और तुम किसी रियासत की चीफ़ मिनिस्टर होकर सुचेता किरपलानी बन जाओगी और मैं बेचारा अचार्य किरपलानी बनकर रह जाऊँगा।

अच्छा अब इस थोड़े लिखे को बहुत जानकर यह तो बताओ कि परसों जो तनख़्वाह मिलने वाली है उसका क्या करूँ? कभी सोचता हूँ तुमको भेज दूँ कभी ख़याल आता है कि खुद रख लूँ। अगर तुमको भेज दूँ तो मैं क्या करूँगा? या अगर खुद रख लूँ तो तुम क्या करोगी? क्योंकि अब बदकिस्मती से यह तनख़्वाह हम दोनों में से किसी एक ही का काम चला सकती है। तुम्हारा यह ख़त इतना ख़ुश्क और सपाट है कि वल्लाह और तुम ने इस एहतयात से लिखा है जैसे तुमको डर हो कि अगर एक भी ऐसा वैसा लफ़्ज़ पकड़ा गया तो तुम पर इश्क़बाजी की तोहमत लग जायेगी या मैं उस एक लफ़्ज़ या किसी एक बात को लेकर तुमको ब्लैकमेल करना शुरु कर दूँगा........ नेक बख़्त! मियाँ–बीवी में अज़दवाजी रस्म होती है (या कम अज़ कम एख़लाक़ी फ़र्ज़) कि शुरु में या आख़िर में प्यार और लगावट के दो लफ़्ज़ लिख दिये जाते हैं। वाक़ई नहीं तो झूटों ही सही। मगर लिखना ज़रुर चाहिए।

तुम्हारा बन्दए–बेदाम यानी जहेज़ में मिला हुआ ग़ुलाम
मुन्ने के अब्बा – बक़लम ख़ुद

सरताजे–मन सलामत। मुन्ने के अब्बा को बंदी मुन्ने की अम्माँ का सलाम वग़ैरह पहुँचकर और प्यार मोहब्बत की दो चार बातों के बाद मालूम हो कि आपका बेसरो–पा ख़त बंदी को पहुँचा। कुछ बात पल्ले पड़ी और कुछ बात अम्माँ जान से पूछकर समझूँगी। यहाँ हम लोग बाज़ार भाव के हिसाब से राज़ी ख़ुशी रहकर समझते हैं कि आप भी ज़रुर उसी हिसाब से राज़ी ख़ुशी होंगें। यूँ भी बाल–बच्चों की ख़िदमत करने वालों को ग़ैब की

گے۔ یوں بھی بال بچوں کی خدمت کرنے والوں کو غیب کی طرف سے ہر حال میں راضی خوشی رکھا جاتا ہے۔ میں نے کل ہی یہ بات مولوی صاحب کو تقریر میں کہتے سُنی ہے۔ لگے ہاتھوں مولوی صاحب نے ایک اور بات یہ کہہ دی تھی کہ ماں کے قدموں تلے جنت ہوتی ہے۔ مگر مرد کی ماں چونکہ عورت کی ساس بھی ہوتی ہے اس لیے ساس والی بہوؤں کے کلیجے پر سانپ لوٹ گیا اور وہ آپس میں کھُسر پھُسر کرنے لگیں کہ ماں کے قدموں تلے جنت تو ضرور ہوتی ہے لیکن مَرد کی ماں کے قدموں تلے نہیں بلکہ عورت کی، یعنی میری ماں کے قدموں تلے۔ آپ کی ماں کے بارے میں مجھے کچھ نہیں کہنا ہے، کیوں کہ وہ بے چاری تو سسرال میں میرے ''واک اِن'' کرنے سے پہلے ہی دُنیا سے ''واک آؤٹ'' کر چکی تھیں، جس کی وجہ سے محلّے کی بہوئیں میری قسمت پر رشک کرتی ہیں۔ یہ میں کیسے کہوں کہ مجھے اپنی قسمت پر ناز ہے۔ مولوی صاحب بہت تیز آدمی تھے۔ عورتوں کی سرگوشیوں کا مطلب بھانپ کر فوراً اپنی بات میں ایک ٹکڑا لگایا کہ اے نیک بیبیو، ناراض کیوں ہوتی ہو۔ اللہ نے ایک فضیلت بہو یعنی بیوی کو بھی دے رکھی ہے۔ مَرد کے لیے اگر ماں کے قدموں تلے جنت ہے تو بیوی کی زُلفوں کی چھاؤں میں بھی چھوٹی جنت ہے — تو مُنّے کے ابّا، یہ بات مجھے یوں یاد آگئی ہے کہ اِدھر کچھ دِنوں سے میرے بال گرنے لگے ہیں۔ اور مجھے کسی بھی قیمت پر یہ گوارا نہیں کہ آپ اپنی جنت سے محروم ہو جائیں۔ اس لیے آپ بندی کے لیے کوئی ایسا مجرب تیل ڈھونڈ کر بھیجیے کہ گھنی زلفوں کی گھنی چھاؤں میں آپ کی چھوٹی جنت سدا بنی رہے۔

دیگر احوال یہ ہیں کہ میں نے جو اُس دن جھٹ پٹ والا خط ڈاک میں ڈالا تھا اس میں بہت ضروری دو باتیں رَہ گئیں تھیں۔ آپ تو جانتے ہی ہیں کہ اپنی زبان جتنی صَبا رفتار ہے اپنا قلم اتنا ہی کوڑھی ہے۔ صبح لکھنا شروع کیا تو شام کو ختم ہوا۔ اگر بیچ میں خلل پڑتا رہے تو کبھی ایک خط میں دو دن بھی لگ جاتے ہیں۔ پھر بھی پوری بات لکھ نہیں پاتی۔ قلم کی سُست رفتاری کی وجہ سے ایک ایک لفظ کو مسواک کی طرح چبانا پڑتا ہے۔ لفظوں کے ہجے کرتے کرتے الگ جان جاتی ہے۔ خط اتنا پرائیویٹ ہوتا ہے کہ نہ کسی غیر سے لکھوا سکتی ہوں اور نہ کچھ پوچھ سکتی ہوں۔ اُس دن تو ایسا ہوا کہ خط لکھتے لکھتے اچانک یاد

तरफ़ से हर हाल में राज़ी—ख़ुशी रखा जाता है। मैंने कल ही यह बात मोलवी साहब को तक़रीर में कहते सुनी है। लगे हाथों मोलवी साहब ने एक और बात यह कह दी कि माँ के क़दमों तले जन्नत होती है। मगर मर्द की माँ चूंकि औरत की सास भी होती है इसलिए सास वाली बहुओं के कलेजे पर साँप लोट गया और वह आपस में खुसर—फुसर करने लगीं कि माँ के क़दमों तले जन्नत तो ज़रुर होती है लेकिन मर्द की माँ के क़दमों तले नहीं बल्कि औरत के यानी मेरी माँ के क़दमों तले। आपकी माँ के बारे में मुझे कुछ नहीं कहना, क्योंकि वह बेचारी तो ससुराल में मेरे "वाक—इन" करने से पहले ही दुनिया से "वाक—आउट" कर चुकी थीं। जिसकी वजह से मोहल्ले की बहुऐं मेरी क़िस्मत पर रश्क करती हैं। यह मैं कैसे कहूँ कि मुझे अपनी क़िस्मत पर नाज़ है। मोलवी साहब बहुत तेज़ आदमी थे। औरतों की सरगोशियों का मतलब भाँपकर फ़ौरन अपनी बात में एक टुकड़ा लगाया कि ऐ नेक बीवियों, नाराज़ क्यों होती हो। अल्लाह ने एक फ़ज़ीलत बहू यानी बीवी को भी दे रखी है। मर्द के लिए अगर माँ के क़दमों तले जन्नत है तो बीवी की ज़ुल्फ़ों की छांव में भी छोटी जन्नत है – तो मुन्ने के अब्बा, यह बात मुझे यूँ याद आ गई कि इधर कुछ दिनों से मेरे बाल गिरने लगे हैं। और मुझे किसी भी क़ीमत पर यह गवारा नहीं कि आप अपनी जन्नत से महरुम हो जायें। इसलिए आप कोई ऐसा मुजर्रब तेल ढूंढ़कर भेजिये कि घनी ज़ुल्फ़ों की घनी छांव में आपकी छोटी जन्नत सदा बनी रहे।

दीगर अहवाल यह हैं कि मैंने उस दिन झटपट वाला ख़त डाक में डाला था उसमें बहुत ज़रुरी दो बातें रह गई थीं। आप तो जानते ही हैं कि अपनी ज़बान जितनी सबा रफ़्तार है अपना क़लम उतना ही कोढ़ी है। सुबह लिखना शुरु किया तो शाम को ख़त्म हुआ। अगर बीच—बीच में ख़लल पड़ता रहे तो कभी एक ख़त में दो दिन भी लग जाते हैं। फिर भी पूरी बात लिख नहीं पाती। क़लम की सुस्त रफ़्तारी की वजह से एक एक लफ़्ज़ को मिस्वाक की तरह चबाना पड़ता है। लफ़्ज़ों के हिज्जे करते करते अलग जान जाती है। ख़त इतना प्राइवेट होता है कि न किसी ग़ैर से लिखवा सकती हूँ और न कुछ पूछ सकती हूँ। उस दिन तो ऐसा हुआ कि ख़त लिखते—लिखते अचानक यादआया कि पड़ोसन को एक उलाहना देना है

آیا کہ پڑوسن کو ایک الاہنا دینا ہے جو کئی دن گزر جانے سے پُرانا پڑتا جا رہا ہے —— جب الاہنا دینے گئی تو وہ کم بخت اُلجھ پڑی۔ پھر تو ایمرجنسی ہو گئی۔ اب میں خط کو دیکھتی یا اپنی ناک دیکھتی۔ پڑوسن نے ہار تو مان لی مگر مجھے تھکا کر۔ اِس لیے جتنا لکھ پائی اتنا ہی ڈاک میں ڈال دیا اور دل کی بات دل ہی میں رَہ گئی۔ سو آج لکھ رہی ہوں —— خط تو اُدھورا گیا مگر بی پڑوسن کو بھی چھٹی کا دُودھ یاد آ گیا ہوگا۔

ہاں تو دیگر احوال یہ ہیں کہ اب جو آپ مہینے کا منی آرڈر بھیجیں تو اس میں مہنگائی کا نیا بھتہ شامل کرنا نہ بھولیں، کیونکہ مہنگائی خاموشی کے ساتھ روز بروز اِس طرح بڑھ رہی ہے جیسے مُونڈے ہوئے سَر کے بال بڑھا کرتے ہیں۔ پچھلے سال تک جو چیزیں ہمارے دستر خوان پر ہوا کرتی تھیں آج اُن کو بس دوکان پر دیکھ کر صبر کر لینا پڑتا ہے۔ اَب تو کم سے کم اور خراب سے خراب پر بھی حساب بٹھانے سے پورا نہیں پڑ رہا ہے۔ اِن دنوں کسی ''امریکہ صاحب'' کا بڑا نام سننے میں آ رہا ہے —— آپ دِلّی شہر میں رہ کر بھی ایسے ایسے سخی داتاؤں سے ملاقات نہیں کرتے —— اس سے ملاقات کر کے کسی دن اپنے ہاں دعوت پر بُلائیے نا۔ ایسا پکا کر کھِلاؤں گی کہ ہونٹ چاٹتا جائے گا اور نمک کھالے گا تو پھر نمک کا حق بھی وہ صاحب ضرور ادا کرے گا۔ سُنتے ہیں کہ وہ لوگوں کو بڑے پیسے دیتا ہے۔ جو بھی سامنے پڑ جاتا ہے اس کی جھولی بھر دیتا ہے —— گیہوں وغیرہ بھی دیتا ہے۔ آخر آپ بھی تو بال بچے دار ٹھہرے۔ پھر کیوں غفلت میں پڑے ہیں؟ جان پہچان بڑھا کر امریکہ صاحب اور اس کی میم صاحب کو گھر لائیے۔ امریکہ صاحب سے آپ کا کام بنے یا نہ بنے مگر اس کی بیوی کی خوب خاطر تواضع کر کے شیشے میں اُتارنے کا میرا ذمہ۔ شاید آپ اپنے خط میں اسی امریکہ صاحب کا ذکر کیا ہے۔

دیگر گزارش یہ ہے کہ (کان میں کہنے کی بات) گھر کا خرچ پھر بڑھنے والا ہے آپ بوّ کے لیے بہت کہتے تھے کہ گھر میں کوئی چھوٹا بچہ ہوتا تو کھیل کود میں بوّ کا جی بہلتا رہتا۔ کسی اچھی ہی ساعت میں یہ بات آپ کے مُنھ سے نکلی ہوگی۔ اللہ نے سُن لی ہے اور اَب گھر میں پانچویں خوشی ہونے والی ہے۔ پھر تو بوّا اکیلی نہیں رہے گی۔ ایک اور بات راز کی آپ کو بتاؤں۔ ابھی یاد آ گئی ہے، کہیں آگے چل کر بھول نہ جاؤں۔ کچھ

जो कई दिन गुज़र जाने से पुराना पड़ता जा रहा है – जब उलाहना देने गई तो वह कमबख़्त उलझ पड़ी। फिर तो इमरजेंसी हो गई। अब मैं ख़त को देखती या अपनी नाक देखती। पड़ोसन ने हार तो मान ली मगर मुझे थकाकर। इसलिए जितना लिख पाई उतना ही डाक में डाल दिया और दिल की बात दिल ही में रह गई। सो आज लिख रही हूँ – ख़त तो अधूरा गया मगर बी पड़ोसन को छटी का दूध याद आ गया होगा।

हाँ तो दीगर अहवाल यह हैं कि अब जो आप महीने का मनीआर्डर भेजें तो उसमें महंगाई का नया भत्ता शामिल करना न भूलें, क्योंकि महंगाई ख़ामोशी के साथ रोज़–बरोज़ इस तरह बढ़ रही है जैसे मूंडे हुए सर के बाल बढ़ा करते हैं पिछले साल तक जो चीज़ें हमारें दस्तरख़्वान पर हुआ करती थीं आज उनको बस दूकान पर देखकर सब्र कर लेना पड़ता है। अब तो कम से कम और ख़राब से ख़राब पर भी हिसाब बिठाने से पूरा नहीं पड़ रहा है। इन दिनों किसी "अमेरिका साहब" का बड़ा नाम सुनने में आ रहा है – आप दिल्ली शहर में रह कर भी ऐसे ऐसे सख़ी दाताओं से मुलाक़ात नहीं करते – उससे मुलाक़ात करके किसी दिन अपने यहाँ दावत पर बुलाइये ना। ऐसा पका कर खिलाऊँगी कि होंट चाटता जायेगा और नमक खा लेगा तो फिर नमक का हक़ भी वह साहब ज़रुर अदा करेगा। सुनते हैं कि वह लोगों को बड़े पैसे देता है। जो भी सामने पड़ जाता है उसकी झोली भर देता है – गेहूँ वग़ैरह भी देता है। आख़िर आप भी तो बाल–बच्चेदार ठहरे। फिर क्यों गफ़लत में पड़े हैं? जान पहचान बढ़ा कर अमेरिका साहब और उसकी मेम साहब को घर लाइये। अमेरिका साहब से आपका काम बने या न बने मगर उसकी बीवी की ख़ूब ख़ातिर–तवाज़ोह करके शीशे में उतारने का मेरा ज़िम्मा। शायद आप ने अपने ख़त में उसी अमेरिका बाबू का ज़िक्र किया है।

दीगर गुज़ारिश यह है कि (कान में कहने की बात) घर का ख़र्च फिर बढ़ने वाला है आप बब्बो के लिए बहुत कहते थे कि घर में कोई छोटा बच्चा होता तो खेल कूद में बब्बो का जी बहलता रहता। किसी अच्छी साअत में यह बात आपके मुँह से निकली होगी। अल्लाह ने सुन ली है और अब घर में पाँचवी ख़ुशी होने वाली है। फिर तो बब्बो अकेली नहीं रहेगी। एक और बात राज़ की आपको बताऊँ। अभी याद आ गई है, कहीं आगे चलकर भूल न जाऊँ। कुछदिन हुए एक देसी मेम क्या–क्या आला–औज़ार

دن ہوئے ایک دیسی میم کیا کیا آلہ اوزار لیے گاؤں میں آئی تھی۔ جانتے ہیں کس لیے؟ قدرت کے کارخانے میں بلکہ قدرت کی اسپیشل صنعت وحرفت میں دخل دینے کے لیے۔ کہنے لگی کہ بی بی جی تمہارے لیے یہ چار ہی بہت ہیں۔ اپنے پر، اپنے میاں پر اور اپنے بچوں پر رحم کر کے ہماری خدمات سے فائدہ اُٹھاؤ مگر میں نے اس کو ڈانٹ پھٹکار کر بھگا دیا۔ نگوڑی کیا کیا اُلٹی سیدھی باتیں بتاتی تھی —— اَب کسی کسی دَم خیال آتا ہے تو ٹھیک ہی معلوم ہوتا ہے کہ کچھ نہ کچھ سوچنا ہی پڑے گا۔ کیوں کہ بچّوں کے پیٹ کے سائز کے ساتھ ان کے کپڑوں کے سائز بھی بڑھتے جا رہے ہیں۔ بچے اب چھوٹے برتنوں میں کھانا نہیں لیتے۔ درزی بھی ان کے لیے کپڑے اور سلائی دونوں زیادہ مانگنے لگا ہے۔

معلوم ہوا ہے کہ آج کل پنڈت نہرو کی بیٹی اندرا دیوی جی دِلّی میں راج پاٹ چلا رہی ہیں۔ ایک افواہ یہ بھی سُننے میں آئی ہے کہ ہم جیسوں کے لیے دیوی جی کے دل میں بڑی جگہ ہے۔ بڑی دیالو ہیں۔ آپ سے تو کچھ ہوگا نہیں۔ آپ ان دیوی جی کا نشان پتہ لکھ کر مجھے بھیج دیں۔ میں خود اپنی طرف سے ایک خاص خط ان کو لکھوں گی...... عورت چاہے عورت رہے یا میم بن جائے مگر اس کو گھر گرہستی سے تو واسطہ پڑتا ہی ہے۔ آخر ان کے گھر بھی تو نمک، تیل، دَھنیا، لہسن، اَدرک، مرچ وغیرہ آتی ہوگی اور وہ اپنے حال سے دوسروں کا حال سمجھنے کی کوشش ضرور کرتی ہوں گی۔ میں تو ان کی پرجا ٹھہری۔ اس لیے اپنے دل کا حال اور گھر گرہستی کا حال چال ان کو ضرور لکھوں گی۔

اماں جان کو کہیں سے یہ بھنک مِل گئی ہے کہ بڑھتی ہوئی مہنگائی کی وجہ سے آپ کی تنخواہ میں اضافہ ہوا ہے۔ انھوں نے ہی ہدایت کی ہے کہ میاں کے خرچ اور آمدنی پر کڑی نظر رکھو۔ آپ تو جانتے ہی ہیں کہ عورت کی زندگی میں اماں کے مشورے کے بغیر پتہ بھی نہیں ہلتا۔ میں تو اکثر تنہائی میں سوچا کرتی ہوں کہ اگر ساس صاحبہ مرحومہ گزر نہ گئی ہوتیں اور اپنی اماں جان کا سایۂ رحمت سر پر نہ ہوا ہوتا تو یہ نگوڑی زندگی کاٹے نہ کٹتی۔ آپ خدا کا شکر ادا کیجیے کہ آپ کی خوشدامن زندہ ہیں جن کی شمعِ ہدایت سے آپ کی دُنیا روشن ہے۔ اچّھا، اَب زیادہ کیا لکھوں خط کے جواب میں دیر

लिए गाँव में आई थी। जानते हैं किस लिए? कुदरत के कारख़ाने में बल्कि कुदरत की स्पेशल सनअतो–हिरफ़त में दख़ल देने के लिए। कहने लगी की बीबी तुम्हारे लिए यह चार ही बहुत हैं। अपने पर, अपने मियाँ पर और अपने बच्चों पर रहम करके हमारी ख़िदमात से फ़ायदा उठाओ मगर मैं ने उसको डाँट फटकार कर भगा दिया। निगोड़ी क्या–क्या उल्टी सीधी बातें बताती थी – अब किसी–किसी दम ख़याल आता है तो ठीक ही मालूम होता है कि कुछ न कुछ सोचना ही पड़ेगा। क्योंकि बच्चों के पेट के साइज़ के साथ उनके कपड़ों के साइज़ भी बढ़ते जा रहे हैं। बच्चे अब छोटे बर्तनों में खाना नहीं लेते। दर्ज़ी भी उनके लिए कपड़े और सिलाई दोनों ज़्यादा माँगने लगा है।

मालूम हुआ है कि आजकल पंडित नेहरु की बेटी इन्दिरा देवी जी दिल्ली में राज–पाट चला रही हैं। एक अफ़वाह यह भी सुनने में आई है कि हम जैसों के लिए देवी जी के दिल में बड़ी जगह है। बड़ी दयालू हैं। आपसे तो कुछ होगा नहीं। आप उन देवी जी का निशान पता लिखकर मुझे भेज दें। मैं खुद अपनी तरफ़ से एक ख़ास ख़त उनको लिखूँगी...... औरत चाहे औरत रहे या मेम बन जाय मगर उसको घर गृहस्ती से तो वास्ता पड़ता ही है। आख़िर उनके घर में भी तो नमक, तेल, धनिया, लहसन, अदरक, मिर्च वग़ैरह आती होगी और वह अपने हाल से दूसरों का हाल समझने की कोशिश ज़रुर करती होंगी। मैं तो उनकी परजा ठहरी। इसलिए अपने दिल का हाल और घर गृहस्ती का हाल–चाल उनको ज़रुर लिखूँगी।

अम्माँ जान को कहीं से यह भनक मिल गई है कि बढ़ती हुई महंगाई की वजह से आपकी तनख़्वाह में इज़ाफ़ा हुआ है। उन्होंने ही हिदायत दी है कि मियाँ के ख़र्च और आमदनी पर कड़ी नज़र रखो। आप तो जानते ही हैं कि औरत की ज़िन्दगी में अम्माँ के मशवरे के बग़ैर पत्ता भी नही हिलता। मैं तो अक्सर तन्हाई में सोचा करती हूँ कि अगर सास साहिबा मरहूमा गुज़र न गई होतीं और अपनी अम्माँ जान का सायए–रहमत सर पर न हुआ होता तो यह निगोड़ी ज़िन्दगी काटे न कटती। आप खुदा का शुक्र अदा कीजिये कि आप की ख़ुशदामन ज़िन्दा हैं जिनकी शम्मे–हिदायत से आप की दुनिया रौशन है। अच्छा, अब ज़्यादा क्या लिखूँ ख़त के जवाब में देर हो तो मनीआर्डर फ़ौरन भेजें। या खुद रक़म लेकर आ

ہوتو ہو مگر منی آرڈر فوراً بھیجیں۔ یا خود رقم لے کر آ جائیں۔ تاکہ دیر نہ ہو۔

آپ کی جُوتیوں کی خاک

بندی مُنّے کی اماں بقلم خود (آدھا بقلم مُنّے)

عالی جناب وزیرِ مالیات شری مُرارجی دیسائی صاحب:

بعد ادائے آداب گزارش ہے کہ بہت ڈرتے ڈرتے ایک بات آپ کو لکھ رہا ہوں۔ خدا کے لیے میرا نام ظاہر نہ کیجیے گا۔ حکومت سے تو میں ڈرتا نہیں، کیونکہ میں ایک زبردست اپوزیشن لیڈر کا شاگرد بلکہ سجادہ نشیں ہوں۔ خوف دراصل ان کا ہے جن سے بڑے بڑے بادشاہ بھی ڈرتے آئے ہیں۔ یہاں شاید آپ کا ذہن فوراً خدا کی طرف چلا جائے گا، حالانکہ میری مُراد صرف بیوی عُرف مُنّے کی اماں سے ہے جس کا ذکر اِس خط میں آگے چل کر آیا ہے۔ اگر اُس کو معلوم ہوگا کہ میں نے اُس کا نام لے کر آپ کو خط لکھا ہے تو وہ فوراً اپنی والدہ محترمہ سے رجوع کرے گی اور بیان صفائی دیتے دیتے میری جان پر بن آئے گی۔

آپ اس بات پر یقیناً حیران ہوں گے کہ ہندوستانی کرنسی کی قیمت میں ۳۶ فی صد کی کمی کا جو سنسنی خیز اعلان ڈیڑھ سال پہلے ہوا تھا وہ مُنّے کی اماں کے کانوں تک اَب پہنچ سکا ہے۔ میں نے آپ لوگوں کی عزت کا خیال کرتے ہوئے اب تک اس خبر کو اپنی وائف سے پوشیدہ رکھنے کی کوشش کی مگر کسی دشمن نے بھانڈا پھوڑ دیا ہے۔ ہُوا یوں کہ کچھ دِنوں پہلے تنخواہ لے کر میں مُنّے کی اماں کی خدمت میں حاضر ہوا جو یہاں سے سیکڑوں میل دور ایک پس ماندہ گاؤں میں اپنے گرہستانہ جاہ وجلال کے ساتھ فروکش ہے۔ ضابطہ اور دستور کے مطابق تنخواہ کا بند لفافہ ہنسی خوشی بیوی کے ہاتھ میں تھما کر داد طلب نظروں سے دیکھنے لگا۔ داد طلب نظروں سے دیکھنے کا بیک گراؤنڈ یہ ہے کہ ایک بار بیوی سے کسی بات پر بک بک جھک جھک ہوگئی تو اس نے مجھے یوں چیلنج کر دیا ''آپ کرتے ہی کیا ہیں، صرف کماتے ہی تو ہیں۔ ورنہ باقی سب کچھ تو مجھے ہی کرنا پڑتا ہے'' اس کے جواب میں

जायें। ताकि देर न हो।

आपकी जूतियों की ख़ाक

बन्दी मुन्ने की अम्मा बक़लम ख़ुद (आधा बक़लम मुन्ने)

आली जनाब वज़ीरे–मालियात श्री मुरारजी देसाई साहब:

बाद अदाये आदाब गुज़ारिश है कि बहुत डरते–डरते एक बात आपको लिख रहा हूँ। खुदा के लिए मेरा नाम ज़ाहिर न कीजियेगा। हुकूमत से तो मैं डरता नहीं, क्योंकि मैं एक ज़बर्दस्त अपोज़ीशन लीडर का शागिर्द बल्कि सज्जादा–नशीन हूँ। ख़ौफ़ दरअसल उनका है जिनसे बड़े–बड़े बादशाह भी डरते आये हैं। यहाँ शायद आपका ज़ेहन फ़ौरन ख़ुदा की तरफ़ चला जायगा, हालाँकि मेरी मुराद सिर्फ़ बीवी उर्फ़ मुन्ने की अम्माँ से है जिसका ज़िक्र इस ख़त में आगे चलकर आया है। अगर उसको मालूम होगा कि मैंने उसका नाम लेकर आपको ख़त लिखा है तो वह फ़ौरन अपनी वालदा मोहतरमा से रुजूअ करेगी और बयाने–सफ़ाई देते देते मेरी जान पर बन आयेगी।

आप इस बात पर यक़ीनन हैरान होंगे कि हिन्दुस्तानी करेंसी की क़ीमत में 36 फ़ीसद की कमी का जो सनसनी–ख़ेज़ एलान डेढ़ साल पहले हुआ था वह मुन्ने की अम्मा के कानों तक अब पहुँच सका है। मैंने आप लोगों की इज़्ज़त का ख़याल करते हुए अब तक इस ख़बर को अपनी वाईफ़ से पोशीदा रखने की कोशिश की मगर किसी दुश्मन ने भाण्डा फोड़ दिया है। हुआ यूँ कि कुछ दिनों पहले तनख़्वाह लेकर मैं मुन्ने की अम्मा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ जो यहाँ से सैंकड़ों मील दूर एक पसमान्दा गाँव में अपने गृहस्ताना जाहो–जलाल के साथ फ़रोकश है। ज़ाब्ते और दस्तूर के मुताबिक़ तनख़्वाह का बंद लिफ़ाफ़ा हंसी खुशी बीवी के हाथ में थमाकर दाद–तलब नज़रों से देखने लगा। दाद–तलब नज़रों से देखने का बैकग्राउंड यह है कि एक बार बीवी से किसी बात पर बक–बक, झक–झक हो गई तो उसने मुझे यूँ चैलेंज कर दिया "आप करते ही क्या हैं, सिर्फ़ कमाते ही तो हैं। वरना बाक़ी सब कुछ तो मुझे ही करना पड़ता है" इसके जवाब में मैंने निहायत इज्ज़ो–इन्केसार के साथ वाईफ़ को यह ऑफ़र दिया

میں نے نہایت عجز و انکسار کے ساتھ وائف کو یہ آفر دیا ''اگر کمانا اتنا ہی آسان کام ہے تو آؤ ادل بدل کرلیں۔ تم کما کرلایا کرو۔ باقی سب کچھ میں کرلیا کروں گا'' اِس کھلے آفر پر وائف کی ساری ہیکڑی دھری رہ گئی اور وہ بھیگی بلی بن کر دُم ہلانے لگی۔ تب سے مہینہ میں ایک بار تو بیوی کی نگاہ کو میرے سامنے جھکنا ہی پڑتا ہے —— یعنی تنخواہ کے دن مگر اس مرتبہ بیوی نے یہ جسارت دکھائی کہ تنخواہ کا لفافہ نظر جھکا کر نہیں بلکہ نظر ملا کر لیا اور خلافِ معمول اس مرتبہ لفافہ سے نوٹ نکال کر اس نے موقعۂ واردات پر ہی گنے۔ اور گننے کے فوراً بعد نوٹوں کو پھر لفافے میں بھر کر مجھے لوٹاتے ہوئے کہا ''میں تو یہ نہیں لیتی۔ پورا کر کے لائیے'' اور جب میں نے اس کو بتایا کی روپے پورے ہی ہیں تو وہ کہنے لگی ''میں نے اپنی آنکھوں سے ایک پُرانے اخبار میں دیکھا ہے کہ ڈیڑھ سال پہلے ہی رُوپیہ کی قیمت چھتیس رُوپیہ فی صد کم ہوگئی تھی۔ اس لیے آپ اس میں چھتیس تیا ایک سو آٹھ رُوپے لائیے اور پچھلا حساب بھی چکائیے۔ تب تو مجھ سے گھر چلے گا ورنہ سنبھالیے اپنا جنجال......'' تب مجھے احساس ہوا کہ ہندوستان کی عورت واقعی اس قدر بیدار ہو چکی ہے اَب اس کو سنبھالنا مشکل ہے۔ اور حساب کتاب میں بھی اتنی طاق کہ جھٹ چھتیس تیا ایک سو آٹھ جوڑ کر رکھ دیا۔ ارتھمیٹک کی اس زبردست مہارت کے بعد اَب ہندوستانی عورت کو کون بے وقوف بنا سکتا ہے —— خاص طور پر روپے پیسے کے معاملے میں۔ میں نے بڑے اَدب سے اسے مخاطب کیا ''اے نیک بخت خاتون، آپ کی سمجھ میں کچھ پھیر ہوا ہے۔ آپ کو یہ رُوپے لندن یا واشنگٹن یا پیرس یا ماسکو جا کر نہیں خرچ کرنے ہیں۔ بلکہ اِسی چہار دیواری میں ان کا بھگتان ہونا ہے۔ آپ کے چچا وزیر خزانہ نے کہہ دیا ہے کہ پبلک کو گھبرانے کی ضرورت نہیں یہ ریٹ صرف امریکہ، برطانیہ، رُوس وغیرہ سے لین دین کرنے کے لیے ہے۔ عام پبلک کے لیے ریٹ جوں کا توں ہے۔'' مگر میرے اِس کہنے پر بیوی کی غیرت نے جوش مارا اور وہ تاؤ کھا کر کہنے لگی ''اے واہ، میں کیا موئے امیریکہ برطانیہ وغیرہ سے ہیٹی ہوں۔ میں بھی وہی ریٹ لُوں گی'' —— موقع کی نزاکت کو دیکھتے ہوئے میں نے اُس کو ڈی۔ آئی۔ آر وغیرہ کی دھمکی دے کر کچھ ٹھنڈا کیا۔ جب وہ اپنی اوقات کو پہچان کر کچھ قابو میں آئی تو دَبے دَبے تاؤ کے ساتھ بولی ''اس بات کی کیا گارنٹی ہے کہ میرے ساتھ

"अगर कमाना इतना ही आसान है तो आओ अदल–बदल करलें। तुम कमाकर लाया करो। बाक़ी सब कुछ मैं कर लिया करूँगा" इस खुले ऑफ़र पर वाईफ़ की सारी हेकड़ी धरी रह गई और वह भीगी बिल्ली बनकर दुम हिलाने लगी। तब से महीने में एक बार तो बीवी की निगाह को मेरे सामने झुकना ही पड़ता है – यानी तनख़्वाह के दिन मगर इस मर्तबा बीवी ने यह जसारत दिखाई कि तनख़्वाह का लिफ़ाफ़ा नज़र झुकाकर नहीं बल्कि नज़र मिलाकर लिया और ख़िलाफ़े–मामूल इस मर्तबा लिफ़ाफ़े से नोट निकालकर उनसे मौक़ए–वारदात पर ही गिने। और गिनने के फ़ौरन बाद नोटों को फिर लिफ़ाफ़े में भरकर मुझे लौटाते हुए कहा "मैं तो यह नहीं लेती। पूरा करके लाइये" और जब मैंने उसको बताया कि रुपसे पूरे ही हैं तो कहने लगी "मैंने अपनी आँखों से एक पुराने अख़बार में देखा है कि डेढ़ साल पहले ही रुपये की क़ीमत छत्तीस रुपया फ़ीसद कम हो गई है। इसलिए आप इसमें छत्तीस तिया एक सौ आठ रुपये लाइये और पिछला हिसाब भी चुकाइये। तब तो मुझसे घर चलेगा वरना संभालिये अपना जंजाल....." तब मुझे एहसास हुआ कि हिन्दुस्तान की औरत वाक़ई इस क़द्र बेदार हो चुकी है अब इसको संभालना मुश्किल है। और हिसाब किताब में भी इतनी ताक़ कि झट छत्तीस तिया एक सौ आठ जोड़कर रख दिया। अर्थमेटिक की इस ज़बर्दस्त महारत के बाद अब हिन्दुस्तानी औरत को कौन बेवक़ूफ़ बना सकता है– ख़ास तौर से रुपये पैसे के मामले में। मैंने बड़े अदब से उसे मुख़ातिब किया "ऐ नेकबख़्त ख़ातून, आप की समझ में कुछ फेर हुआ है। आपको यह रुपये लंदन या वाशिंगटन या पैरिस या मास्को जाकर नहीं ख़र्च करने हैं। बल्कि इसी चहारदीवारी में इनका भुगतान होना है। आपके चचा वज़ीरे–ख़ज़ाना ने कह दिया है कि पब्लिक को घबराने की ज़रुरत नहीं यह रेट सिर्फ़ अमेरिका, बरतानिया, रुस वग़ैरह से लेन–देन करने के लिए हैं। आम पब्लिक के लिए रेट जूँ का तूँ है।" मगर मेरे इस कहने पर बीवी की ग़ैरत ने जोश मारा और वह ताव खाकर कहने लगी "ऐ वाह, मैं क्या मूए अमेरिका बरतानिया वग़ैरह से हेटी हूँ। मैं भी वही रेट लूँगी"– मौक़े की नज़ाकत को देखते हुए मैंने उसको डी॰ आई॰ आर॰ वग़ैरह की धमकी देकर कुछ ठंडा किया। जब वह अपनी औक़ात को पहचान कर कुछ क़ाबू में आई तो दबे–दबे ताव के साथ बोली "इस बात की क्या गारंटी है

کوئی دھوکا نہ ہوگا؟ اور اگر مہینہ لگنے سے پہلے ہی بجٹ فیل کر گیا تو کون پورا کرے گا "؟
مگر یہ تو قرار داد میں زبردست ترمیم کی تحریک تھی۔ اس لیے میں نے چھوٹے موٹے گوڑووں کے پاس بھٹکتے پھرنے کی بجائے گوڑووں کے گوڑو یعنی آپ سے ڈائرکٹ رجوع کیا ہے۔ اَب یا تو آپ میری وائف کو اپنی منطق سے قائل کیجیے یا مجھے پارٹ ٹائم نوکری بھی دیجیے تا کہ کسر پوری ہو۔

کئی مہینے گزر چکے ہیں مگر بیوی تنخواہ قبول کرنے پر اَب بھی آمادہ نہیں۔ اس کی اماں جان نے بھی اس کو کچھ پٹی پڑھادی ہے۔ وہ اپنی پُرانی اور بنی بنائی ساکھ پر اِدھر اُدھر سے قرض اُدھار کر کے کام چلا رہی ہے۔ گارنٹی کے بغیر بیوی اس پوائنٹ پر سمجھوتہ کرنے پر آمادہ نہیں مگر اَب قرض اُدھار کے دروازے بھی بند ہو رہے ہیں۔ اس کے علاوہ ہماری ایک "پانچویں" خوشی کا بجٹ بھی سر پر ہے جس کی فکر میں فدوی دُبلا ہوا جا رہا ہے۔

اب تنگ آمد بہ جنگ آمد کے اُصول پر عمل کرتے ہوئے وائف نے صاف صاف عدم تعاون اور عدم اعتماد کا ڈنکے کی چوٹ اعلان کر دیا ہے۔ پچھلے دنوں باتوں باتوں میں وہ اتنی تیز اور گرم ہوگئی کہ نوبت شاید ایک قدم آگے تک بھی پہنچ جاتی۔ مگر وہ تو خیر ہوئی کہ ایک پڑوسن عین موقع پر فرشتہ رحمت بن کر ٹپک پڑی اور اس نے بیچ بچاؤ کرا کے صورتِ حال پر کنٹرول کیا۔

اَب تھک ہار کر میں اپنی تنخواہ کی ساری جمع شدہ رقم اِس خط کے ساتھ منی آرڈر سے آپ کی خدمت اقدس میں روانہ کر رہا ہوں۔ آپ مع رقم فوراً میرے گھر سے رجوع کیجیے۔ میری گھر والی کو اپنی دلیلوں سے قائل کر کے میری عزت اور جان بچائیے۔ اور میری گھر والی کو گارنٹی دیجیے کہ رُوپیہ کا بھاؤ گرنے سے گھر کے بجٹ کا بھاؤ نہیں بڑھا ہے۔ اگر آپ اپنی علمی دلیلوں کو لیے ہوئے میرے عملی معاملات میں مدد کرنے کو نہ پہنچے تو میں گھر بار اور ملازمت چھوڑ کر بال بچوں کو آپ کے گھر کا راستہ بتا دوں گا اور خود بیراگی بن کر جنگل کا راستہ لوں گا۔ واضح رہے کہ آپ جب میری وائف کو اپنے نکات وغیرہ سمجھانے تشریف لائیں تو ۳۶ فیصد والے فرق کے حساب سے ڈیڑھ سال کی رقم جیب میں ڈالنا نہ بھولیں۔ کیوں کہ میری

कि मेरे साथ कोई धोका न होगा? और अगर महीना लगने से पहले ही बजट फ़ेल हो गया तो कौन पूरा करेगा–?" मगर यह तो क़रारदाद में ज़बर्दस्त तरमीम की तहरीक थी। इसलिए मैंने छोटे–मोटे गुरुओं के पास भटकते फिरने के बजाय गुरुओं के गुरु यानी आपसे डाइरेक्ट रुजूअ किया है। अब या तो आप मेरी वाईफ़ को अपनी मन्तिक़[1] से क़ायल कीजिये या मुझे पार्ट–टाईम नौकरी भी दीजिये ताकि कसर पूरी हो।

कई महीने गुज़र चुके हैं मगर बीवी तनख़्वाह क़बूल करने पर अब भी आमादा नहीं। उसकी अम्माँ जान ने भी उसको कुछ पट्टी पढ़ा दी है। वह अपनी पुरानी और बनी बनाई साख पर इधर उधर से क़र्ज़ उधार करके काम चला रही है। गारंटी के बग़ैर बीवी इस प्वाइंट पर समझौता करने पर आमादा नहीं मगर अब क़र्ज़ उधार के दरवाज़े भी बंद हो रहे हैं। इसके अलावा हमारी एक "पाँचवीं" ख़ुशी का बजट भी सर पर है जिसकी फ़िक्र में फ़िदवी दुबला हुआ जा रहा है।

अब तंग आमद[2] ब जंग आमद के उसूल पर अमल करते हुए वाईफ़ ने साफ़–साफ़ अदम तअव्वुन और अदम एतमाद का डंके की चोट एलान कर दिया है। पिछले दिनों बातों–बातों में वह इतनी तेज़ गर्म होगई कि नौबत शायद एक क़दम आगे तक पहुँच जाती। मगर वह तो ख़ैर हुई कि एक पड़ोसन ऐन मौक़े पर फ़रिश्तए–रहमत बनकर टपक पड़ी और उसने बीच बचाव कराके सूरते–हाल पर कंट्रौल किया।

अब थक हार कर मैं अपनी तनख़्वाह की सारी जमा शुदा रक़म इस ख़त के साथ मनीआर्डर से आपकी ख़िदमते–अक़दस में रवाना कर रहा हूँ। आप मय रक़म फ़ौरन मेरे घर से रुजूअ कीजिये। मेरी घर वाली को अपनी दलीलों से क़ायल करके मेरी इज़्ज़त और जान बचाइये। और मेरी घर वाली को गारंटी दीजिये कि रुपया का भाव गिरने से घर के बजट का भाव नहीं बढ़ा है। अगर आप अपनी इल्मी दलीलों को लिये हुए मेरे अमली मामलात में मदद करने को न पहुँचे तो मैं घर–बार और मुलाज़मत छोड़कर बाल–बच्चों को आपके घर का रास्ता बता दूँगा और ख़ुद बैरागी बनकर जंगल का रास्ता लूँगा। वाज़ेह रहे कि आप जब मेरी वाईफ़ को अपने नुकात वग़ैरह समझाने तशरीफ़ लायें तो 36 फ़ीसद वाले फ़र्क़ के हिसाब से डेढ़ साल की रक़म जेब में डालना न भूलें। क्योंकि मेरी

1. तर्क शास्त्र 2. तंग आने पर लड़ाई के लिए आमादा होना

وائف کا پارہ اَب خطرے کے نشان سے گزر چکا ہے۔

آپ کے "ڈی ویلوالیشن" وغیرہ کا مارا ہوا
عام آدمی عُرف پبلک عُرف مُنّے کا ابّا

دیوی اِندرا رانی کو بہن مُنّے کی اماں کی طرف سے بہت بہت سلام و دُعا پہنچے۔ بعد دُعا، سلام کے عرض ہے کہ مُنّے کے ابا سے آپ کا نشان پتہ پا کے بی پڑوسن کے خوش خط قلم سے یہ عرضی لکھوا رہی ہوں۔ کیوں کہ میں خود بہت بدخط ہوں۔ کچھ دن ہوئے بی پڑوسن عاقلہ بُوا کا شہر جانا ہوا تھا۔ وہاں سے واپس آ کر انہوں نے بتایا تھا کہ ایک بہت بھاری دماغ والی عورت کو ہندوستان کی راج گدّی پر بیٹھایا گیا ہے جس کا نام دیوی اِندرا ہے۔ مُنّے کے ابا ساری زندگی طعنہ دیتے رہے کہ اگر عورت ذات نہ ہوتی تو مرد کے لیے یہ دُنیا ہی بہشت ہوتی، کیوں کہ عورت پیدائشی ناقص العقل ہوتی ہے۔ مگر جس دن پہلی بار آپ کے راج پاٹ سنبھالنے کی خبر ملی اُس دن صبح سے شام تک مُنّے کے ابا کی گردن میرے سامنے جھکی رہی۔ جب تیز بھوک لگنے پر انہوں نے گردن اُٹھا کر میری طرف دیکھا تو میں نے فوراً کہا کہ دیکھ لو عورت کا مرتبہ اَب جاؤ دِلّی میں دیوی اِندرا کے اصطبل میں جھاڑو دیا کرنا۔

سچ پوچھو اِندرا بہن تو میں کوڑھ نصیب پہلے تم کو نہیں جانتی تھی۔ وہ تو عاقلہ بی نے بتایا کہ تم پنڈت جواہر لال نہرو کی بیٹی ہو۔ میں تمہارے باپ کو خوب جانتی ہوں۔ ایک بار الیکشن کے زمانے میں ہمارے گاؤں آئے تھے تو میں نے بڑے شوق سے سرسوں کا ساگ پکا کر مکّے کی روٹی کے ساتھ اُن کو کھلایا تھا اور گھر کے لیے جو چنے کا پانچ میل سَتو پوٹلی میں باندھ کر ساتھ کر دیا تھا گھر جا کر تم کو ضرور کھلایا ہوگا؟ کہو کچھ یاد آیا؟ سَتو میں گڑ کی مسالہ دار بھیلی بھی ڈال دی تھی۔ چلو نہ بھی یاد رہا ہو تو کیا ہوتا ہے۔ تم نے کھایا تو ہوگا ہی۔ کیوں کہ جس دانے پر جس کا نام لکھا ہوتا ہے وہ اُڑ کر اُس کے مُنھ میں جا پہنچتا ہے۔ دانے ہی پر کیا منحصر ہے، پھل اور انڈوں تک پر کھانے والوں کے نام لکھے ہوتے ہیں۔ اب یہی

वाईफ़ का पारा अब ख़तरे के निशान से गुज़र चुका है।

आपके "डीवैलुएशन" वग़ैरह का मारा हुआ
आम आदमी उर्फ़ पब्लिक उर्फ़ मुन्ने का अब्बा

देवी इन्दिरा रानी को बहन मुन्ने की अम्माँ की तरफ़ से बहुत बहुत सलामो–दुआ पहुँचे। बाद दुआ, सलाम के अर्ज़ है कि मुन्ने के अब्बा से आपका निशान पता पाके बी पड़ोसन के ख़ुश–ख़त क़लम से यह अर्ज़ी लिखवा रही हूँ। क्योंकि मैं खुद बहूत बद–ख़त हूँ। कुछ दिन हुए बी पड़ोसन आक़िला बुआ का शहर जाना हुआ था। वहाँ से वापस आकर उन्होंने बताया कि एक बहुत भारी दिमाग़ वाली औरत को हिन्दुस्तान की राज–गद्दी पर बिठाया गया है जिसका नाम देवी इन्दिरा है। मुन्ने के अब्बा सारी ज़िन्दगी ताना देते रहे कि अगर औरत ज़ात न होती तो मर्द के लिए दुनिया ही बेहिश्त होती, क्योंकि औरत पैदायशी नाक़िसुल–अक़्ल होती है। मगर जिस दिन पहली बार आपके राज–पाट संभालने की ख़बर मिली उस दिन सुबह से शाम तक मुन्ने के अब्बा की गर्दन मेरे सामने झुकी रही। जब तेज़ भूक लगने पर उन्होंने गर्दन उठाकर मेरी तरफ़ देखा तो मैंने फ़ौरन कहा देख लो औरत का मर्तबा अब जाओ दिल्ली में देवी इन्दिरा के अस्तबल में झाडू दिया करना।

सच पूछो इन्दिरा बहन तो मैं कोढ़ नसीब पहले तुमको नहीं जानती थी। वह तो आक़िला बी ने बताया कि तुम पंडित जवाहर लाल नेहरु की बेटी हो। मैं तुम्हारे बाप को ख़ूब जानती हूँ। एक बार इलैक्शन के ज़माने में हमारे गाँव आये थे तो मैंने बड़े शौक़ से सरसों का साग पका कर मक्के की रोटी के साथ उनको खिलाया था और घर के लिए जौ चने का पचमेल सत्तू पोटली में बांधकर साथ कर दिया था घर जाकर तुमको ज़रुर खिलाया होगा? कहो कुछ याद आया? सत्तू में गुड़ की मसालेदार भेली भी डाल दी थी। चलो न भी याद रहा हो तो क्या होता है। तुमने खाया तो होगा ही। क्योंकि जिस दाने पर जिस खाने वाले का नाम लिखा होता है वह उड़कर उसके मुँह में जा पहुँचता है। दाने ही पर क्या मुनहसिर है, फल और अण्डों तक पर खाने वालों के नाम लिखे होते है। अब यही

دیکھ لو کہ بندی نے چار پانچ سال سے مُرغیاں پال رکھی ہیں جو سال بھر میں سینکڑوں انڈے دیا کرتی ہیں۔ مگر نہ جانے ان انڈوں پر کہاں کے ایروں غیروں کے نام لکھے ہوتے ہیں جن کے پاس یہ ہمیشہ چلے جایا کرتے ہیں۔ سُو اِندرا بی بی تم کو گھر کی ایک دم سے ایک پرائیویٹ بات بتاتی ہوں پڑوسنوں پر رُعب ڈالنے کے لئے تو میں نے مشہور کر رکھا ہے کہ سارے اَنڈے میرے بچّے خود کھاتے ہیں۔ لیکن سچ یہ ہے کہ میں چپکے سے سارے انڈے بیچ دیا کرتی ہوں۔ کیوں کہ ان انڈوں پر ابھی تک میرے بچوں کے نام نہیں لکھے گیے ہیں۔ ایک دن مُنّا پوچھنے لگا............''امی جان، انڈا کھانے میں کیسا لگتا ہے؟'' میں نے کہا......؟ مزہ تو مجھے بھی یاد نہیں رہا۔ اپنے ابّا سے پوچھ لینا۔ شاید شہر میں وہ کھاتے ہوں''۔ اور جب مُنّے نے اپنے ابا سے پوچھا تو جواب ملا'' آزادی کے بعد انڈا کھانے میں کیسا لگتا ہے یہ تو میں بھی نہیں بتا سکتا۔ شہر سے لوٹوں گا تو اَپنے دفتر کے صاحب سے پوچھ کر آؤں گا''

اس کے بعد ہم میاں بیوی نے مِل کر بچے کو تسلّی دی کی جس دن مُرغی تیرے نام کا انڈا دے گی اُس دن تجھے خود بخود انڈے کا ذائقہ معلوم ہو جائے گا۔ پھر ایک دن چھوٹی بچّی پوچھنے لگی کہ دُودھ پر بھلا کیسے نام لکھے ہو سکتے ہیں؟ بی پڑوسن عاقلہ بی نے اُس کو سمجھایا کہ نام دُودھ پر نہیں بلکہ گائے بھینس پر لکھے ہوتے ہیں۔ اپنی بھینس پر بھی نہ جانے کِس کِس کے نام لکھے ہوئے ہیں۔ ایک دن چھوٹا لڑکا باہر سے دوڑا دوڑا گھر آیا ـــــ کسی نے اس کو بتایا تھا کہ دُودھ سے مکھن اور مکھن سے گھی نکلتا ہے۔ اب وہ بچہ جاننا چاہتا تھا کہ گھی کیا ہوتا ہے؟ مکھن کیسا ہوتا ہے۔؟ عاقلہ بی نے بچّے سے وعدہ کیا کہ وہ کسی دن اُس کو شہر لے جا کر مکھن اور گھی دکھلا لائے گی۔ پھر ایک دن ایسا ہوا کہ مُنّا اپنے درخت سے ایک پھل توڑ کر کھا گیا جس پر اسکی خوب پٹائی ہوئی۔ مُنّے نے رو رو کر کہا کہ جس چیز پر جس کا نام ہوتا ہے وہ اس کے حصّے میں آجاتی ہے تب اس کو سمجھایا گیا کہ بیٹے، ہم لوگوں کے نام صِرف درخت پر لکھے ہیں پھلوں پر نہیں۔

ہاں تو دیوی جی، میں تو بھُول ہی گئی کہ عرضی میں کیا لکھوانا ہے۔ یہ تو بات نکل آئی ہے۔ کوئی ایک بات ہو تو عرضی میں لکھواؤں۔ ایک ضروری بات یہ ہے کہ میں پہلے

देख लो कि बंदी ने चार–पाँच साल से मुर्गियाँ पाल रखी हैं जो साल भर में सैंकड़ों अण्डे दिया करती हैं। मगर न जाने उन अण्डों पर कहाँ के ऐरों–गैरों के नाम लिखे होते हैं जिनके पास यह हमेशा चले जाया करते हैं। सुनो इन्दिरा बीबी तुमको घर की एक दम से एक प्राइवेट बात बताती हूँ पड़ोसनों पर रोब डालने के लिए तो मैंने मशहूर कर रखा है कि सारे अण्डे मेरे बच्चे खुद खाते हैं। लेकिन सच यह है कि मैं चुपके से सारे अण्डे बेच दिया करती हूँ। क्योंकि इन अण्डों पर अभी तक मेरे बच्चों के नाम नहीं लिखे गये हैं। एक दिन मुन्ना पूछने लगा......... "अम्मी जान, अण्डा खाने में कैसा लगता है?" मैं ने कहा.......? मज़ा तो मुझे भी याद नहीं रहा। अपने अब्बा से पूछ लेना। शायद शहर में वह खाते हों।" और जब मुन्ने ने अपने अब्बा से पूछा तो जवाब मिला "आज़ादी के बाद अण्डा खाने में कैसा लगता है यह तो मैं भी नहीं बता सकता। शहर से लौटूँगा तो अपने दफ़्तर के साहब से पूछकर आऊँगा।"

इसके बाद हम मियाँ बीवी ने मिलकर बच्चे को तसल्ली दी कि जिस दिन मुर्गी तेरे नाम का अण्डा देगी उस दिन तुझे खुद बखुद अण्डे का ज़ायका मालूम हो जायगा। फिर एक दिन छोटी बच्ची पूछने लगी कि दूध पर भला कैसे नाम लिखा हो सकते हैं? बी पड़ोसन आकिला बी ने उसको समझाया कि नाम दूध पर नहीं बल्कि गाय भैंस पर लिखे होते हैं। अपनी भैंस पर भी न जाने किस–किस के नाम लिखे हुए हैं। एक दिन छोटा लड़का बाहर से दौड़ा दौड़ा घर आया– किसी ने उसको बताया था कि दूध से मख्खन और मख्खन से घी निकलता है। अब वह बच्चा जानना चाहता था कि घी क्या होता है? मख्खन कैसा होता है? आकिला बी ने बच्चे से वादा किया कि वह किसी दिन उसको शहर ले जाकर मख्खन और घी दिखला लायेगी। फिर एक दिन ऐसा हुआ कि मुन्ना अपने दरख़्त से एक फल तोड़कर खा गया जिस पर उसकी ख़ूब पिटाई हुई। मुन्ने ने रो–रो कर कहा कि जिस चीज़ पर जिसका नाम होता है वह उसके हिस्से में आ जाती है तब उसको समझाया गया कि बेटे, हम लोगों के नाम सिर्फ़ दरख़्त पर लिखे हैं फलों पर नहीं।

हाँ तो देवी जी, मैं तो भूल ही गई कि अर्ज़ी में क्या लिखवाना है। यह तो बात निकल आई है। कोई एक बात हो तो अर्ज़ी में लिखवाऊँ। एक ज़रुरी बात यह है कि मैं पहले हर साल मेहतरानी को एक नया जोड़ा

ہر سال مہترانی کو ایک نیا جوڑا دیا کرتی تھی۔ مگر دو سال سے اس میں ناغہ چل رہا تھا۔ اس بار جب مہترانی کا تقاضہ سخت ہو گیا تو میں نے دل پر جبر کر کے اپنی صرف ایک بار کی پہنی ہوئی ساڑی مہترانی کو پیش کر دی مہترانی نے ہونٹ بچکا کر کپڑا میری طرف پھینکتے ہوئے کہا ''بی بی جی، اگر ضرورت ہو تو ایسی دو چار ساڑیاں میں ہی لا کر دے دوں'' معلوم نہیں دیوی جی کی بڑی سمجھ میں ہم چھوٹے آدمیوں کی چھوٹی باتیں آتی بھی ہیں یا نہیں۔ ہمارے ہاں تو یہی سب باتیں ہیں۔ ہم رعایا لوگ راج پاٹ کی باتیں کہاں سے لائیں۔

مُنے کے ابا کی عُمر جوں جوں بڑھتی جاتی ہے آمدنی گھٹتی جاتی ہے۔ بچوں کی تعداد کے علاوہ ہر چیز کم ہوتی جا رہی ہے۔ خط میں کیا کیا لکھوں اور کہاں تک لکھوں۔ کبھی ہمارے گھر آ کر ساگ ستو کھاؤ تو بیٹھ کے باتیں ہوں۔ یا پھر اِس خط کا جواب دو تو آگے کا حال لکھوں۔ جوابی پوسٹ کارڈ لفافے کے اندر ڈال رہی ہوں۔

اور ہاں اصل بات تو لکھی ہی نہیں۔ ہمارے گھر تھوڑے ہی دنوں بعد پانچویں خوشی ہونے والی ہے۔ دُعا کرنا کہ یہی آخری خوشی بھی ہو۔ کیوں کہ اَب بار بار کی خوشیوں سے ناک میں دَم ہے۔ اور ہاں ذرا کہہ سُن کر مُنے کے ابا کی کچھ تنخواہ تو بڑھوا دو۔ جب سے رُوپیہ کوڑیوں کے مول ہوا ہے تب سے چیزیں اور بھی آگ کے مول بک رہی ہیں۔ آخر تم بھی تو کبھی کبھی سودا سلف کرنے بازار جاتی ہی ہو گی۔؟

تمہاری بلائیں لینے والی ستو خور بہن
مُنے کی اماں کیر آف مُنے کے ابا۔ بقلم پڑوسن

• • • •

दिया करती थी। मगर दो साल से उसमें नाग़ा चल रहा था। इस बार मेहतरानी का तक़ाज़ा सख़्त हो गया तो मैंने दिल पर जब्र करके अपनी सिर्फ़ एक बार की पहनी हुई साड़ी मेहतरानीको पेश कर दी– मेहतरानी ने होंट बिचका कर कपड़ा मेरी तरफ़ फेंकते हूए कहा "बीबी जी, अगर ज़रुरत हो तो ऐसी दो–चार साड़ियाँ मैं ही लाकर दे दूँ"– मालूम नहीं देवी जी की बड़ी समझ में हम छोटे आदमियों की छोटी बातें आती भी हैं या नहीं। हमारे हाँ तो यही सब बातें हैं। हम रियाया लोग राज–पाट की बातें कहाँ से लायें।

मुन्ने के अब्बा की उम्र ज्यूँ–ज्यूँ बढ़ती जाती है आमदनी घटती जाती है। बच्चों की तादात के अलावा हर चीज़ कम होती जा रही है। ख़त में क्या–क्या लिखूँ और कहाँ तक लिखूँ। कभी हमारे घर आकर साग सत्तू खाओ तो बैठ के बातें हों। या फिर ख़त का जवाब दो तो आगे का हाल लिखूँ। जवाबी पोस्टकार्ड लिफ़ाफ़े के अन्दर डाल रही हूँ।

और हाँ असल बात तो लिखी ही नहीं। हमारे घर थोड़े ही दिनों बाद पाँचवीं ख़ुशी होने वाली है। दुआ करना कि यही आख़री ख़ुशी भी हो। क्योंकि अब बार–बार की ख़ुशियों से नाक में दम है। और हाँ ज़रा कह–सुन कर मुन्ने के अब्बा की कुछ तनख़्वाह तो बढ़वा दो। जब से रुपया कौड़ियों के मोल हुआ है तब से चीज़ें और भी आग के मोल बिक रही हैं। आख़िर तुम भी तो कभी–कभी सौदा सुलुफ़ करने बाज़ार जाती ही होगी?

तुम्हारी बलायें लेने वाली सत्तू–ख़ोर बहन

मुन्ने की अम्माँ

केयर ऑफ़ मुन्ने के अब्बा। बक़लम पड़ोसन।

• • • •

حسنین عظیم آبادی

چکّر

جمیل مظہری کا ایک مشہور شعر ہے جس کی فکری توانائی یا زرّینی پر شک و شبہہ حماقت ہے۔ موصوف کہتے ہیں:—

بقدر پیمانۂ تخیل سرور ہر دل میں ہے خودی کا
اگر نہ ہو یہ فریب پیہم تو دم نکل جائے آدمی کا

"خودی" میں وضاحت کر دوں، حکیم مشرق کی وہ تلوار کی دھار نہیں کہ خدا خود بندے سے اس کی رضا دریافت کرے — یہاں شاعر کے سامنے ایک چلتی پھرتی صداقت آئی۔ اس صداقت کو اس نے محسوس کیا اور اپنی قلم کاری سے اسے شعری حسن و جمال عطا کر دیا — فارسی کا یہ مقولہ آپ نے سُنا ہوگا، ہر کس بہ خیالِ خویش خبطے دارد! بس، بات کی جڑ اتنی سی ہے۔ اقبال نے اتنی سی بات کا خواہ مخواہ ایک پہاڑ کھڑا کر دیا۔ اِس خودی یا خبط کے لیے میں عوامی لفظ "چکّر" استعمال کروں گا کہ ترسیل کا مسئلہ اِن دنوں سنگین ہے اور جمہور کا مزاج بے باک۔ — لفظ "چکّر" حرکی قوت سے بھرپور ہے۔ اس میں جو بلاغت ہے، آپ غور فرمائیں۔ جمیل مظہری کی 'سرورِ خودی' یا اقبال کی

हसनैन अज़ीमाबादी

चक्कर

जमील मज़हरी का एक मशहूर शेर है जिस की फ़िकरी तवानाई या ज़र्रीनी पर शको–शुबहा हिमाक़त है। मौसूफ़ कहते हैं –

बक़द्रे–पैमानाये–तख़य्युल सुरूर हर दिल में है ख़ुदी का
अगर न हो यह फ़रेबे–पैहम तो दम निकल जाये आदमी का

"ख़ुदी" मैं वज़ाहत कर दूँ , हकीमे–मशरिक़ की वह तलवार की धार नहीं कि ख़ुदा ख़ुद बन्दे से उसकी रज़ा दरयाफ़्त करे – यहाँ शायर के सामने एक चलती फ़िरती सदाक़त आई। इस सदाक़त को उसने महसूस किया और अपनी क़लमकारी से उसे शेरी हुस्नो–जमाल अता कर दिया – फ़ारसी का यह मकूला आपने सुना होगा, हर कस ब–ख़याले ख़ेश ख़ब्ते दारद[1]! बस बात की जड़ इतनी सी है। इक़बाल ने इतनी सी बात का ख़्वाहमख़्वाह एक पहाड़ खड़ा कर दिया। इस ख़ुदी या ख़ब्त के लिए मैं अवामी लफ़्ज़ "चक्कर" इस्तेमाल करूँगा कि तरसील का मसला इन दिनों संगीन है और जमहूर का मिज़ाज बेबाक – लफ़्ज़ "चक्कर" हरकी कूव्वत से भरपूर है। इसमें जो बलाग़त है, आप ग़ौर फ़रमायें। जमील मज़हरी की 'सुरूरे–ख़ुदी' या इक़बाल की 'रमूज़े–ख़ुदी' में यह हरकी कूव्वत कलअदम है

1. हर व्यक्ति अपने ख़याल में दीवाना है।

'رموزِ خودی' میں یہ حرکی قوت کالعدم ہے۔

یہ چکّر مرزا غالبؔ کے یہاں گردش کی شکل اختیار کر لیتا ہے وہ کہتے ہیں:—

رات دن گردش میں ہیں سات آسماں

ہو رہے گا کچھ نہ کچھ گھبرائیں کیا

اور گردشِ مدام کے خیال سے مرزا غالبؔ کا دل مثل پیالہ و ساغر گردش بھی کرنے لگتا ہے۔ جل کر کہتے ہیں۔

کیوں گردشِ مدام سے گھبرا نہ جائے دل

انسان ہوں پیالہ و ساغر نہیں ہوں میں

حالاں کہ گردش سے آزردگی بیکار سی بات ہے۔ گردش ایک مسلمہ صداقت ہے۔ من کی دُنیا میں ڈوب کر دیکھیے تو یہ قدرت کا عینی جلوہ نظر آتی ہے — کیفیت گردشِ چشم ہو یا منظر گردشِ جام۔ یا عصری تقاضوں کے بموجب، گردش اجناس مخالف۔ آپ اتفاق کریں گے، یہ نقش جاوداں، پیہم رواں، ہر دم جواں ہے زندگی کے جلوے ہیں۔ ان گردشی مناظر میں وہ قوت ہوتی ہے جس سے بوڑھے جوان اور جوان، جامے سے باہر ہو جاتے ہیں۔

مسئلہ خبط یا خودی کا نہیں، صرف چکّر کا ہے۔ چکّر جس سے کسی فرد و بشر کو مفر نہیں۔ زندگی کے کسی شعبے میں جھانکیے۔ کسی نامور کی سیرت کو کھنگا لیے۔ اُس بلند و بصیر انسان کو آپ کسی بڑے چکّر میں یقیناً مبتلا پائیں گے۔ مزاجاً اور عملاً، کبھی وہ از خود چکّر میں مبتلا ہوگا اور کبھی گرفتۂ غیر نظر آئے گا۔ درمیانی مال کی بات نہیں کرتا جو ٹک دیکھ لیا، دل شاد کیا، خوش وقت ہوئے اور چل نکلے قسم کے سالکین ہیں —— اُن فرزانوں کو دیکھیے جو پست و بسیار پست اور بلند و بسیار بلند قسم کا دل و دماغ رکھتے ہیں۔ آپ دیکھیں گے کہ اُن فرزانوں نے، جو نادانوں کی نظر میں دیوانے ہیں، خود تا حیات چکّر کھایا اور بعد وفات اُن پس ماندگان کو چکّر کھلایا جو اِن سے وابستہ مگر ان کی فرزانگی سے بے تعلق رہے۔ آپ کے نصیب و ناموس سے میں واقف نہیں۔ لیکن، چکّر کی ابتلا سے اگر واقعی محفوظ ہیں تو اسے اچھی علامت نہ سمجھیے۔ میری بات سمجھ میں نہ آئے تو اقبالؔ کی نظم ''ابلیس و جبریل'' کا

यह चक्कर मिर्जा ग़ालिब के यहाँ गर्दिश की शक्ल अख़्तियार कर लेता है वह कहते हैं –

रात दिन गर्दिश में हैं सात आसमाँ
हो रहे गा कुछ न कुछ घबरायें क्या

और गर्दिशे–मदाम के ख़याल से मिर्जा गालिब का दिल मिस्ले पियालओ–साग़र भी गर्दिश करने लगता है। जल कर कहते हैं –

क्यूँ गर्दिशे–मदाम से घबरा न जाये दिल
इन्सान हूँ पियालओ–साग़र नहीं हूँ मैं

हालाँकि गर्दिश से आज़ुरदगी बेकार सी बात है। गर्दिश एक मोसल्ल्मा सदाक़त है। मन की दुनिया में डूब कर देखिये तो यह कुदरत का ऐनी जलवा नज़र आती है – कैफ़ीयते–गर्दिशे–चश्म हो या मंज़र गर्दिशे–जाम। या असरी जक़ाज़ों के बमोजिब, गर्दिशे अजनास मुख़ालिफ़। आप इत्तिफ़ाक़ करेंगे, ये नक़्शे–जाविदाँ, पैहम रवाँ, हरदम जवाँ है ज़िंदगी के जलवे हैं। इन गर्दिशी मनाज़िर में वह कूव्वत होती है जिस से बूढ़े जवान और जवान, जामे से बाहर हो जाते हैं।

मसला ख़ब्त या ख़ुदी का नहीं, सिर्फ चक्कर का है। चक्कर जिससे किसी फ़र्दो–बशर को मफ़र नहीं। जिन्दगी के किसी शोबे में झांकिये। किसी नामवर की सीरत को खंगालिए। उस बुलन्दो–बसीर इन्सान को आप किसी बड़े चक्कर में यक़ीनन मुब्तला पायेंगे। मिज़ाजन और अमलन, कभी वह अज़ ख़ुद चक्कर में मुब्तला होगा और कभी गिरफ़्तए–ग़ैर नज़र आयेगा। दरमियानी माल की बात नहीं करता जो टुक देख लिया, दिल शाद किया, ख़ुश वक़्त हुये और चल निकले किस्म के सालिकीन हैं – उन फ़रज़ानों को देखिये जो पस्तो–बिसयार पस्त और बुलन्दो–बिसयार बुलन्द किस्म का दिलो–दिमाग रखते हैं। आप देखेंगे कि उन फ़रज़ानों ने, जो नादानों की नज़र में दीवाने हैं, ख़ुद ता–हयात चक्कर खाया और बाद वफ़ात उन पसमान्दगान को चक्कर खिलाया जो उन से वाबस्ता मगर उनकी फ़रज़ानगी से बे तअल्लुक़ रहे। आपके नसीबो–नामूस से मैं वाक़िफ़ नहीं। लेकिन, चक्कर की इबतला से अगर वाक़ई महफ़ूज़ हैं तो उसे अच्छी अलामत न समझिये। मेरी बात समझ में न आये तो इक़बाल की नज़्म "इब्लीसो–जिब्रील" का मुतालेआ करें और फ़क़त अल्लाह हू , अल्लाह हू ,

مطالعہ کریں اور فقط اللہ ہو، اللہ ہو، اللہ ہو کے پس منظر میں اپنا مقام اور مستقبل خود تلاش کریں۔ لہٰذا بعد، یہ بات سمجھ میں آجائے گی کہ ع

سکوں محال ہے قدرت کے کارخانے میں

خدا مغفرت کرے! مولوی عبدالحق مرحوم بھی ایک سخت قسم کے چکر میں مبتلا رہے۔ یہ ایسا جابر چکر تھا کہ مولوی صاحب جیتے جی ہی مجسّم ''اردو الحق'' ہو گئے —— مرحوم ساری زندگی مجرد رہے لیکن اولاد معنوی کی پیداوار میں متاہل سے بھی زیادہ چست و چاق تھے۔ اُردو زبان اُن کا اوڑھنا بچھونہ تھی، ستر پوشی کا سامان تھی۔ مرحوم جس کسی میں اُردو کا کچھ درد دیکھتے، اُسے ایسی ایسی مقویاتِ اُردو کھلاتے کہ خادم زبان ہو کر وہ ادب اور تہذیب کا ریختہ بن جاتا —— عبدالحق مرحوم اپنا دفتر حیدر آباد سے شاہجہاں آباد لے آئے۔ دارالسلطنت میں انجمن کے مرکزی دفتر آجانے سے بہت نئے کاموں کا ریلا رہتا۔ آئے دن اردو دوست حضرات طرح طرح کے چھوٹے بڑے کاموں کے سلسلے میں مولوی صاحب سے رجوع کرتے۔ ایک دن کسی صاحب کا فون آیا۔ پوچھا گیا کہ کون ہے اور کیا کام ہے؟ —— جواب ملا مرکزی شعبۂ تعلیمات وثقافت کا آفس ہے اور ایک انگریزی لفظ کے اردو ترجمہ کی فوری ضرورت ہے —— پوچھا گیا کہ وہ کون سا لفظ ہے؟ —— جواب ملا 'VICIOUS CIRCLE'' سائل کو ٹھہرنے کا مشورہ دیا گیا کہ مولوی صاحب دوسرے کمرے میں مصروف کار ہیں۔ اس لفظ کا ترجمہ ان سے دریافت کر کے بتایا جاتا ہے۔

عبدالحق مرحوم کو خبر دی گئی۔ سُنا اور سُن کر سوچ میں پڑ گئے کہ وی سیئس سرکل کا اُردو ترجمہ کیا ہو سکتا ہے؟ —— دفتر کے دیگر شریک کار بھی جمع ہو گئے۔ اپنے اپنے طور پر ہر شخص اِس انگریزی لفظ کے اردو مترادفات سوچنے اور پیش کرنے لگا —— یہ ترجمے لیکن مولوی صاحب کو نہ بھائے۔ فکر لحظہ بہ لحظہ سُلگتی ہی گئی۔ اُردو اُردو الحق کا منصب اور انجمن ترقی اُردو کا دفتر اچانک خطرے میں آگیا، جیسے کوہ سلیمان ملکہ سبا اور راجنہ سمیت بحر ہند میں ڈوبکیاں کھا رہا ہو —— اُدھر سائل کو جواب کا انتظار تھا اور اِدھر مولوی

अल्लाह हू , के पस–मन्ज़र में अपना मोकाम और मुस्तकबिल खुद तलाश करें, अम्मा–बाद[1], ये बात समझ में आ जायेगी कि –

सुकूँ मोहाल है कुदरत के कारख़ाने में

ख़ुदा मगफ़ेरत करे! मोलवी अब्दुल हक़ मरहूम भी एक सख़्त क़िस्म के चक्कर में मुब्तला रहे। यह ऐसा जाबिर चक्कर था कि मोलवी साहब जीते जी ही मोजस्सम "उर्दू–उल–हक़" हो गये– मरहूम सारी ज़िन्दगी मुजर्रद[2] रहे लेकिन औलाद मानवी की पैदावार में मोताहिल[3] से भी ज़्यादा चुस्तो–चाक़ थे। उर्दू ज़बान उनका ओढ़ना बिछौना थी, सत्रपोशी[4] का सामान थी। मरहूम जिस किसी में उर्दू का कुछ दर्द देखते, उसे ऐसी ऐसी मुक़व्वियाते–उर्दू खिलाते कि ख़ादिमे–ज़बान होकर वह अदब और तहज़ीब का रेख़्ता बन जाता – अब्दुल हक़ मरहूम अपना दफ़्तर हैदराबाद से शाहजहाँबाद ले आये। दारुस्सलतनत में अन्जुमन के मरकज़ी दफ़्तर आ ज़ाने से नित नये कामों का रेला रहता। आये दिन उर्दू दोस्त हज़रात तरह–तरह के छोटे बड़े कारनामों के सिलसिले में मोलवी साहब से रुजूअ करते। एक दिन किसी साहब का फ़ोन आया। पूछा गया कि कौन है और क्या काम है?– जवाब मिला मरकज़ी शोबये–तालीमातो–सक़ाफ़त का ऑफ़िस है और एक अंग्रेजी लफ़्ज़ के उर्दू तर्जुमा की फौरी ज़रूरत है– पूछा गया कि वह कौन सा लफ़्ज़ है? –जवाब मिला "VICIOUS CIRCLE" साएल को ठहरने का मश्वरा दिया गया कि मोलवी साहब दूसरे कमरे में मसरूफ़े–कार हैं। इस लफ़्ज़ का तर्जुमा उनसे दरयाफ़्त कर के बताया जाता है।

अब्दुल हक़ मरहूम को ख़बर दी गई। सुना और सुनकर सोच में पड़ गये कि वीसियश सर्किल का उर्दू तर्जुमा क्या हो सकता है?– दफ़्तर के दीगर शरीके–कार भी जमा हो गये। अपने अपने तौर पर हर शख़्स इस अंग्रेजी लफ़्ज़ के उर्दू मुतरादफ़ात सोचने और पेश करने लगा– ये तर्जुमे लेकिन मोलवी साहब को न भाये। फ़िक्र लहज़ा–ब–लहज़ा सुलगती ही गई। उर्दू , उर्दू–उल–हक का मनसब और अन्जुमने तरक़्क़ी उर्दू का दफ़्तर अचानक ख़तरे में आ गया, जैसे कोहे–सुलैमान मलका सबा और अजन्ना समेत बहरे–हिन्द में डूबकियाँ खा रहा हो– उधर साइल को जवाब का इन्तज़ार था इधर मोलवी साहब मय अराकीन चक्कर पर चक्कर खा

---

1. इसके बाद 2. जो शादीशुदा न हो 3. शादीशुदा

4. पर्दा (स्त्री–पुरुष के लिंग का)

صاحب مع اراکین چکر پر چکر کھا رہے تھے۔ اچانک ایک صاحب نے جان کی امان مانگتے ہوئے عرضی چاہی۔ مولوی صاحب نے منظوری دے دی۔ اُن صاحب نے نہایت معصومیت سے فرمایا —— ''چوتیا چکر'' VICIOUS CIRCLE کا یہ فصیح و بلیغ ترجمہ سُن کر مولوی عبدالحق مرحوم فرطِ طرب سے بے تابانہ اُٹھ گئے۔ دہرے ہو ہو کر اِس برجستہ ترجمہ پر انھوں نے دو دو صاد کیا۔

چکّر چھوٹا سا لفظ ہے۔ پر، یہ سہ حرفی مشدّد لفظ آسیبی خاصیت رکھتا ہے۔ شہ زورِ اجنّہ کی طرح یہ انسان پر اچانک مسلط ہو جاتا ہے۔ کان میں پھونکتا ہے۔ بس آدھ پھونک، جو شاعری یا فقیری اور کبھی دولت یا عورت کی جاہ ہوتی ہے —— مفعول اگر جیالا ہے تو راکھشش کی مانند یہ اُس پر سوار ہو جاتا ہے۔ اُس انسان کو پھر یہ مصرعوں یا مقبروں اور بازاروں یا درس گاہوں کے چکّر کھلاتا رہتا ہے، چکّر پر چکّر!

کہتے ہیں کہ لکھنؤ کے ایک یادگار زمانہ خاندانی نواب جنھیں وراثتاً متموّل بزرگوں سے فقر و فاقہ کی اچھی خاصی دولت ملی تھی۔ اپنی ربودہ خلوت میں بستر پر گاؤ تکیہ لگائے کسی کھانئی کلاسیکی شاعر کا دیوان مطالعہ فرما رہے تھے۔ جاڑے کے دن تھے سردی اپنے شباب پر تھی۔ پلنگ کے پاس رکھی ہوئی انگیٹھی روشن تھی۔ کوئلے دھیمے دھیمے یوں سُلگ رہے تھے جس طرح نواب صاحب کے گلپھڑے میں معطر گلوریاں گھل رہی تھیں۔ نگاہیں اشعار سے زیادہ قوافی کی بندش پر تھیں۔ سرد ہاتھ تھوڑی تھوڑی پر انگیٹھی کے پاس گرم ہونے کو بے اختیار اٹھ جاتا ہے۔

اچانک بیگم صاحبہ خلوت میں داخل ہوئیں۔ جلے کپڑوں کی تیکھی بو محسوس کر کے یہ مضطرب ہو گئیں —— تیز تیز قدموں سے نواب صاحب کے پلنگ کے پاس پہنچیں۔ دیکھا کہ رضائی کا ایک کونہ انگیٹھی سے لگا دھواں دے رہا ہے —— گھبرا گئیں۔ چٹ نواب صاحب کے جسم سے رضائی کھینچی۔ اور جلے حصے کو دونوں ہاتھوں سے مل مل کر بجھانے لگیں ''ہائے اللہ! ایسی بے خبری!'' —— انھوں نے رضائی

रहे थे। अचानक एक साहब ने जान की अमान मांगते हुए अर्ज़ी चाही। मोलवी साहब ने मंज़ूरी दे दी। उन साहब ने निहायत मासूमियत से फ़रमाया– "चूतिया चक्कर" VICIOUS CIRCLE का ये फ़सीहो–बलीग़ तर्जुमा सुनकर मोलवी अब्दुल हक़ मरहूम फरते–तरब से बे–ताबाना उठ गये। दोहरे हो होकर इस बरजस्ता तर्जुमे पर उन्होंने दो दो साद[1] किया।

चक्कर छोटा सा लफ़्ज़ है। पर, ये सेह–हर्फ़ी मुशद्दद[2] लफ़्ज़ आसेबी ख़ासियत रखता है। शहज़ोर अजन्ना[3] की तरह यह इन्सान पर अचानक मुसल्लत हो जाता है। कान में फूंकता है, बस आध फूंक, जो शायरी या फ़कीरी और कभी दौलत या औरत की जाह[4] होती है– मफ़ऊल अगर जियाला है तो राक्षस की मानिन्द यह उस पर सवार हो जाता है। उस इन्सान को फिर ये मिसरों या मकबरों और बाज़ारों या दरसगाहों के चक्कर खिलाता रहता है, चक्कर पर चक्कर!

कहते हैं लखनऊ के एक यादगारे–ज़माना ख़ानदानी नवाब जिन्हें विरासतन मुतमव्विल बुज़ुर्गों से फ़क्रो–फ़ाक़ा की अच्छी ख़ासी दौलत मिली थी। अपनी रबूदा[5] ख़िलवत में बिस्तरे पुर गाव तकिया लगाये किसी खांटी क्लासीकी शायर का दीवान मोतालेआ फ़रमा रहे थे। जाड़े के दिन थे सर्दी अपने शबाब पर थी। पलंग के पास रखी हुई अंगीठी रौशन थी। कोयले धीमे धीमे यूँ सुलग रहे थे जिस तरह नवाब याहब के गलफड़े में मोअत्तर गिलोरियाँ घुल रही थीं। निगाहें अश्आर से ज़्यादा क़वाफ़ी की बन्दिश पर थीं। सर्द हाथ थोड़ी–थोड़ी देर पर अंगेठी के पास गर्म होने को बेअख़्तियार उठ जाता है।

अचानक बेगम साहिबा ख़िलवत में दाख़िल हुईं। जले कपड़ों की तीखी बू महसूस कर के ये मुज़तरिब हो गईं– तेज़–तेज़ क़दमों से नवाब साहब के पलंग के पास पहुंची। चट नवाब साहब के जिस्म से रज़ाई खींची। और जले हिस्सों को दोनों हाथों से मल–मल कर बुझाने लगीं। "हाय अल्लाह!– ऐसी बेख़बरी!"– उन्होंने रज़ाई नोचते हुये कहा

1. स्वीकार 2. वह वर्ण जिसे दो बार प्रयोग किया गया हो
3. ताक़वर जिन 4. शान 5. ग़फ़लत

نوچتے ہوئے کہا ''ساری رضائی جل گئی بیٹھے ہیں تاپنے ——''

بیگم کی آواز چشم زدن میں نواب صاحب کو عالمِ شعر سے عالم شہود میں لے آئی۔ میٹھی نظروں سے انھوں نے بیگم کو دیکھا۔ باطمینان پیر سمیٹے ہوئے اپنی انگشت شہادت کو درمیان دیوان پیوست کر دیا۔ بولے ''بہت خوب۔ ہائے کیا برجستہ کہا تم نے! بہت خوب!'' —— مسکراتے ہوئے بیگم کا جملہ کئی بار دہرایا—— ''ساری رضائی جل گئی بیٹھے ہیں تاپنے، واہ، واہ!!''

اظہار تحسین میں سر نے کئی بار ہلکورے کھائے۔ نواب صاحب شاد ماں ہو ہو کر داد دیتے رہے۔ ''کیا خوب! ساری رضائی جل گئی بیٹھے ہیں تاپنے۔''

بیگم نواب صاحب کے جنون کی شاعری سے بے خبر نہ تھیں۔ رضائی کی سوختنی اور شوہر کی سخن سنجی پر نوحہ پڑھتی رہیں —— نواب صاحب کا شعری مزاج لہلہا گیا، جیسے دلبر سے اچانک کوئی ہو جائے دوچار!—— سوچنے لگے، رضائی بے شک جلی، خود جلنے سے بچے، لیکن واہ رے تیری قدرت اور واہ رے تیری شان، کیسا بولتا ہوا مصرع بیگم کو عنایت ہوا ہے——!!

خلوت کی بات باہر پہنچی۔ دوستوں میں ذکر آیا۔ سخن فہموں نے آفریں کہی، واللہ نواب صاحب کیا غضب کی آمد ہوئی ہے۔!!

نواب صاحب کو چکّر نے آ دبوچا۔ بے کل ہو گئے کہ کاش دوسرا مصرع مل جاتا، ایسا ہی چہکتا چمکیلا جو اوّل کے شایانِ شان ہوتا ——!! وہ مسکراتے رہے، جی مچلتا رہا—— دوستوں نے مشورہ دیا کہ اہلِ دہلی سے رجوع کرنا بہتر ہوگا۔

نواب صاحب نے مولیٰ کا نام لے کر پچھم کی راہ پکڑی۔ مختصر سامان کے علاوہ خاصدان اور زردہ کا زرکار بٹوہ ساتھ لیے دہلی پلیٹ فارم پر گھومنے لگے۔ قلی نے نزدیک آ کر پوچھا۔ ''کدھر جاؤ گے جی؟''

نواب صاحب بجھ گئے۔ آزردگی سے کہا۔ ''کسی شاعر کے یہاں لے چلو۔''

اگلے وقت کی دہلی ہوتی تو قلی باربرداری اور رہبری میں تکلف سے باز نہ آتا۔

"सारी रज़ाई जल गई बैठे हैं तापने–"

बेगम की आवाज़ चश्मे–ज़दन[1] में नवाब साहब को आलमे–शेर से आलमे–शहूद में ले आई। मीठी नज़रों से उन्होंने बेगम को देखा। बाइतमीनान पैर समेटते हुए अपनी अंगुश्ते–शहादत को दरमयाने–दीवान पेवस्त कर दिया। बोले "बहुत ख़ूब। हाय क्या बरजस्ता कहा तुमने! बहुत ख़ूब!"–, मुस्कराते हुए बेगम का जुमला कई बार दोहराया– "सारी रज़ाई जल गई बैठे हैं तापने, वाह, वाह!!"

इज़हारे–तहसीन में सर ने कई बार हिलकोरे खाये। नवाब साहब शादमां हो–हो कर दाद देते रहे। "क्या ख़ूब! सारी रज़ाई जल गई बैठे हैं तापने।"

बेगम नवाब साहब के जुनून की शायरी से बे ख़बर न थीं। रज़ाई की सोख़्तनी और शैहर की सुख़नसंजी पर नौहा पढ़ती रहीं– नवाब साहब का शेरी मिज़ाज लहलहा गया, जैसे दिलबर से अचानक कोई हो जाये दो चार!– सोचने लगे, रज़ाई बेशक जली, ख़ुद जलने से बचे, लेकिन वाह रे तेरी कुदरत और वाह रे तेरी शान, कैसा बोलता हुआ मिसरा बेगम को इनायत हुआ है–!!

ख़िलवत की बात बाहर पहुँची। दोस्तों में ज़िक्र आया। सुख़न फ़हमियों ने आफ़रीं कही, यल्लाह नवाब साहब क्या गज़ब की आमद हुई है।

नवाब साहब को चक्कर ने आ दबोचा। बेकल हो गये कि काश दूसरा मिसरा मिल जाता, ऐसा ही चहकता चमकीला जो अव्वल के शायाने–शान होता–!! वह मुस्कराते रहे, जी मचलता रहा– दोस्तों ने मश्वरा दिया कि अहले–दिल्ली से रुजूअ करना बेहतर होगा।

नवाब साहब ने मौला का नाम लेकर पच्छिम की राह पकड़ी। मुख़्तसर सामान के अलावा ख़ासदान और ज़र्दा का ज़रकार बटुआ साथ लिये देहली प्लेटफ़ारम पर घूमने लगे। कुली ने नज़दीक आकर पूछा। "किधर जाओगे जी?"

नवाब साहब बुझ गये। आज़ुर्दगी से कहा। "किसी शायर के यहाँ ले चलो।"

अगले वक़्त की देहली होती तो कुली बारदारी और रहबरी से बाज़ न आता। यहाँ सारे कुली ग़ैर शाहजहाँबादी थे। कैसी तव्वजो और

---

1. अचानक

یہاں سارے قلی غیر شاہجہاں آبادی تھے۔ کیسی توجہ اور کیسا تعاون؟ —— نواب صاحب کا سامان قلی نے ویسا ہی چھوڑا اور دوسری جانب بڑھ گیا۔ کئی قلی یکے بعد دیگرے آئے۔ نواب صاحب کی بات کسی کے پلّے نہ پڑی۔

قلیوں کی اس بے ادبی پر نواب صاحب دل ہی دل میں کڑھتے رہے۔ چار وناچار انھوں نے خود بستر بغل میں دبایا۔ ایک ہاتھ میں خاصدان اور دوسرے میں لوٹا اُٹھایا اور اسٹیشن کے باہر آ گئے۔

سامنے اوٹو رکشا اور ٹیکسی کی آتی جاتی قطار تھی۔ نواب صاحب کی آزردگی بڑھ گئی —— ان ندیدوں سے کیا اُمید؟ —— افتاں وخیزاں وہ نیم چکّر لگاتے ہوئے آگے بڑھے۔ شیڈ میں تانگے نظر آئے۔ نواب صاحب کو آس بندھی —— یہ ٹھہرے دلّی والے! مولیٰ نے چاہا تو بے نیل مرام نہ رہوں گا۔

تیز تیز قدموں سے نواب صاحب نے تانگے والوں کی طرف رُخ کیا۔

''آنا نواب صاحب اِدھر آنا——'' اِس اندازِ تخاطب پر نواب صاحب کا خستہ چہرہ شگفتہ ہو گیا۔ دل نے کہا، ہائے دلّی! اور ہائے دلّی والے!! کیسی قدر شناس آنکھیں ہیں یہ!!——

ایک تانگے والا دو قدم آگے بڑھا، بولا ''کہاں جائیں گے نواب صاحب؟'' اور یہ کہتے ہوئے اُس نے جھٹ بغل کا بستر آپ لے لیا۔ ''آیئے سواری حاضر ہے۔''

''بھیّا مجھے کسی شاعر کے یہاں لے چلو۔'' نواب صاحب اس لجاجت سے بولے جیسے کوئی نادار عاشق پری چہرہ محبوبہ سے زکوٰۃ حُسن مانگ رہا ہو!

''شاعر کے یہاں؟'' —— سنتے ہی تانگے والے نے حیرت سے دُہرایا۔ پوچھا۔ ''نواب صاحب، کہاں سے تشریف لا رہے ہیں؟''

''خاکسار لکھنؤ سے آ رہا ہے۔'' نواب صاحب نے انکسارانہ جواب دیا اور خاصدان کو تانگے میں رکھتے ہوئے رازدارانہ فرمایا۔ ''میاں ایک خاص کام سے دلّی آیا ہوں۔ اللہ تمھیں خوش رکھے۔ مجھے کسی شاعر کے یہاں پہنچا دو۔''

कैसा तआव्वुन?– नवाब साहब का सामान कुली ने वैसा ही छोड़ा और दूसरी जानिब बढ़ गया। कई कुली यके बाद दीगरे आये। नवाब साहब की बात किसी के पल्ले न पड़ी।

कुलियों की इस बे अदबी पर नवाब साहब दिल ही दिल में कुढ़ते रहे। चारो–नाचार उन्होंने ख़ुद बिस्तर बग़ल में दबाया। एक हाथ में ख़ासदान और दूसरे में लोटा उठाया और स्टेशन से बाहर आ गये।

सामने ऑटो रिक्शा और टैक्सी की आती जाती क़तार थी। नबाव साहब की आज़ुर्दगी बढ़ गई– इन नदीदों से क्या उम्मीद?– अफ़्ताँ व ख़ेज़ाँ[1] वह नीम चक्कर लगाते हुए आगे बढ़े। शेड में ताँगे नज़र आये। नवाब साहब को आस बंधी– यह ठहरे दिल्ली वाले! मौला ने चाहा तो बेनील मराम[2] न रहूंगा।

तेज़–तेज़ क़दमों से नवाब साहब ने तांगे वाले की तरफ़ रुख़ किया। "आना नवाब साहब इधर आना–" इस अन्दाज़े–तख़ातुब पर नवाब साहब का ख़स्ता चेहरा शगुफ़्ता हो गया। दिल ने कहा, हाय दिल्ली! और दिल्ली वाले!! कैसी क़द्र–शनास आँखें हैं यह!!–

एक तांगे वाला दो क़दम आगे बढ़ा और बोला "कहां जायेंगे नवाब साहब?" और यह कहते हुए उसने झट बग़ल का बिस्तर आप ले लिया। "आइये सवारी हाज़िर है।"

"भय्या, मुझे किसी शायर के यहाँ ले चलो।" नवाब साहब इस लजाजत से बोले जैसे कोई नादार आशिक़ परी चेहरा महबूबा से ज़काते–हुस्न माँग रहा हो!

"शायर के यहाँ?"– सुनते ही तांगे वाले ने हैरत से दोहराया। पूछा। "नवाब साहब, कहां से तशरीफ़ ला रहे हैं?"

"ख़ाकसार लखनऊ से आ रहा है।" नवाब साहब ने इनकसाराना जवाब दिया और ख़ासदान को तांगे में रखते हुए राज़दाराना फ़रमाया। "मियाँ एक ख़ास काम से दिल्ली आया हूँ। अल्लाह तुम्हें ख़ुश रखे। मुझे किसी शायर के यहाँ पहुँचा दो।"

---

1. गिरते–पड़ते 2. नाकाम

آس پاس کے دو چار تانگے والے اسی درمیان نزدیک آگئے۔ تانگے والے نے اُن سے مخاطب ہوتے ہوئے کہا۔ ''آپ لکھنؤ سے آئے ہیں۔ کہتے ہیں کسی شاعر کے یہاں پہنچادو۔''

''شاعر کے یہاں؟'' ایک ضعیف تانگے والے نے پوچھا۔

''ہاں چچا۔'' اُس نے جواب دیا۔ ''کس شاعر کے یہاں جانا چاہتے ہیں؟''

بوڑھا تانگے والا نواب صاحب کے قریب آیا۔ اُن پر ایک نظر ڈالتے ہوئے بولا۔ ''نواب صاحب، کیا بات ہے؟ ہم پُرانی دلّی والے ہیں۔ ناگوار نہ ہو تو فرمایئے۔ کیسے آنا ہوا؟''

نواب صاحب نے مقصدِ سفر کی وضاحت کی۔ بتایا کہ ثانی مصرع کے چکّر میں لکھنؤ کی خاک چھانتے ہوئے اب دہلی آنا ہوا ہے۔ بوڑھے تانگے والے کے چہرے پر طمانیت کی ایک لہر دوڑ گئی۔ پوچھا۔ ''نواب صاحب بُرا نہ مانیں وہ مصرع میں بھی تو سنوں۔''

''بڑے میاں'' نواب صاحب نے جواب دیا۔ ''یہ خدا کا دیا مصرع ہے۔ ہائے کیسا بے ساختہ وارد ہوا ہے۔!''

''ہاں ہاں''! تانگے والے نے اعتراف کرتے ہوئے قطع کلام کیا۔ ''سنوں تو وہ کیا ہے؟''

نواب صاحب نے سنجیدگی کے ساتھ فرمایا:

''ساری رضائی جل گئی بیٹھے ہیں تاپنے''

سُنتے ہی تانگے والے نے پوچھا۔ ''واہ نواب صاحب، اس کا دوسرا مصرع آپ کو لکھنؤ میں نہ ملا؟''

''بڑے میاں، مصرعے تو بہت ملے۔ ایک سے ایک، پر مجھے نہ جچے——'' سر ہلاتے ہوئے نواب صاحب نے اعتراف کیا —— تانگے والے کے چہرے پر مسکراہٹ اچانک دوڑ گئی۔ بولا ''ذرا پھر کہیے نواب صاحب۔''

आस पास के दो चार तांगे वाले इस दरमियान नज़दीक आ गये। तांगे वाले ने उनसे मुख़ातिब होते हुए कहा। "आप लखनऊ से आये हैं। कहते हैं किसी शायर के यहाँ पहुँचा दो।"

"शायर के यहाँ?" एक ज़ईफ़ तांगे वाले ने पूछा।

"हाँ चचा" उसने जवाब दिया। किस शायर के यहाँ जाना चाहते है?"

बूढ़ा तांगे वाला नवाब साहब के क़रीब आया। उन पर एक नज़र डालते हुए बोला। "नवाब साहब, क्या बात है? हम पुरानी दिल्ली वाले हैं। नागवार न हो तो फ़रमाइये। कैसे आना हुआ?"

नवाब साहब ने मक़सदे–सफ़र की विज़ाहत की। बताया कि सानी मिसरे के चक्कर में लखनऊ की ख़ाक छानते हुए देहली आना हुआ है। बूढ़े तांगे वाले के चेहरे पर तमानियत की एक लहर दौड़ गई। पूछा नवाब साहब बुरा न मानें वह मिसरा मैं भी तो सुनूँ।"

"बड़े मियाँ" नवाब साहब ने जवाब दिया। "ये ख़ुदा का दिया मिसरा है। हाय कैसा बेसाख़्ता वारिद हुआ है!"

"हाँ हाँ!" तांगे वाले ने एतराफ़ करते हुए क़तअ–कलाम किया। "सुनूँ तो वह क्या है?"

नवाब साहब ने सन्जीदगी के साथ फ़रमाया:

"सारी रज़ाई जल गई बैठे हैं तापने"

सुनते ही तांगे वाले ने पूछा। "वाह नवाब साहब, इसका दूसरा मिसरा आपको लखनऊ में न मिला?"

बड़े मियाँ, मिसरे तो बहुत मिले। एक से एक, पर मुझे न जचे–" सर हिलाते हुए नवाब साहब ने एतराफ़ किया– तांगे वाले के चेहरे पर मुस्कराहट अचानक दौड़ गई। बोला "ज़रा फिर कहिये नवाब साहब।"

"ساری رضائی جل گئی بیٹھے ہیں تاپنے۔" نواب صاحب نے اسی سنجیدگی کے ساتھ فرمایا۔

بوڑھے تانگے والے نے اُن کی طرف اشارہ کرتے ہوئے برجستہ کہا:

"ایسا بھی چوتیا کہیں دیکھا ہے آپ نے؟"

نواب صاحب وفورِ انبساط سے جھوم گئے۔ چٹ تانگے والے کو گلے لگالیا۔ گلو گیر ہو کر کہا۔ "قربان جاؤں بڑے میاں! سبحان اللہ!! دلّی دلّی ہی ٹھہری۔ کیا فی البدیہہ مصرع لگایا تم نے!!"

چکّر کی آسیبی خاصیت اگر دفعتاً دور ہو جائے تو یہ اچھی علامت نہیں ہے۔ اس کا مطلب یہ ہوتا ہے کہ گھر اور گھاٹ دونوں گیا —— آپ کا کسی چکّر میں مبتلا ہو جانا خراب نہیں، لیکن آپ کا گھن چکّر بن جانا خراب ہے۔ اس سے انسان قلندر بن جاتا ہے اور رفتہ رفتہ اُس میں وہ خصائل آجاتے ہیں جو قلندر کے چند ہم قافیہ الفاظ کے لیے مخصوص ہیں۔

لو شمع حقیقت کی ہے اپنی جگہ قائم
فانوس کی گردش سے کیا کیا نظر آتا ہے

•••••

"सारी रज़ाई जल गई बैठे हैं तापने" नवाब साहब ने उसी संजीदगी के साथ फ़रमाया।

बूढ़े तांगे वाले ने उनकी तरफ़ इशारा करते हुए बरजस्ता कहा:

"ऐसा भी चूतीया कहीं देखा है आपने?"

नवाब साहब वफ़ूरे–इन्बेसात से झूम गये। चट तांगे वाले को गले लगा लिया। गुलूगीर होकर कहा। "कुर्बान जाऊँ बड़े मियाँ! सुब्हान अल्लाह!! दिल्ली दिल्ली ही ठहरी। क्या फ़िलबदीह मिसरा लगाया तुमने!!"

चक्कर की आसेबी ख़ासियत अगर दफ़अतन दूर हो जाये तो यह अच्छी अलामत नहीं है। इस का मतलब यह होता है कि घर और घाट दोनों गया– आपका किसी चक्कर में मुबतला हो जाना ख़राब नहीं, लेकिन आपका घनचक्कर बन जाना ख़राब है। इससे इन्सान क़लन्दर बन जाता है और रफ़्ता–रफ़्ता उसमें वह ख़सायल आ जाते हैं जो क़लन्दर के चन्द हम–क़ाफ़िया अलफ़ाज़ के लिए मख़सूस है–

लौ शम्मे–हक़ीक़त की है अपनी जगह क़ायम
फ़ानूस की गर्दिश से क्या क्या नज़र आता है

●●●●●

بھارت چند کھنہ

ضرورت ہے ۔ ایک صدر کی

مبادا کہ عنوان سے کسی قسم کی غلط فہمی پیدا ہو، یہ بات شروع میں ہی واضح کر دی جاتی ہے کہ اس عنوان کا تعلق کسی ترقی یافتہ یا پس ماندہ ملک کے صدر کے چناؤ سے نہیں، کسی سرکاری، غیر سرکاری، ترکاری، ریزگاری یا ریاکاری فروشوں کی انجمن کے صدر کے انتخاب سے بھی نہیں ہے۔ بلکہ موضوع کا تعلق ایسے صدر سے ہے جن کو کسی ادبی جلسہ، کسی تہذیبی محفل، کسی مشاعرہ، کسی شام غزل، کسی شب بہاراں، کسی کتاب کے رسم اجرا، کسی دانشور کو جس کی کشتیِ حیات بحرِ فنا میں ڈوبنے والی ہو خراجِ عقیدت پیش کرنے یا پھر کسی رنگارنگ پروگرام کے موقعہ پر صدر بنا کر جلسہ میں کسی اصلی دلہن کی طرح بٹھا دیا جانا مقصود ہو، جس میں یہ صدر خاموش، غمگین، شرمسار، لاچار آنکھوں میں نیند کا غبار سنبھالے، جلسہ کے دوران ہونے والی جملہ ستم رانیوں کو اپنی کرنی کا پھل سمجھ کر، سہتا ہوا چپ چاپ بیٹھا رہتا ہے۔ اس کی نازبرداری کے سلسلہ میں پانی کا ایک گلاس (گلاس کا صاف ستھرا ہونا ضروری نہیں) اس کے سامنے دھر دیا جاتا ہے تا کہ اس کو صرف خون کے گھونٹ ہی پینے پر اکتفا نہ کرنی پڑے۔ البتہ اس کو اس بات کی پوری پوری آزادی ہوتی ہے کہ۔

تھک جائے جو اک پہلو تو وہ پہلو بدل ڈالے

مگر بانیانِ جلسہ اس بات کی گارنٹی فراہم نہیں کرتے کہ صدارت کے فرائض

भारत चन्द खन्ना

ज़रुरत है - एक सद्र की

मोबादा[1] कि उनवान से किसी क़िस्म की ग़लत फ़हमी पैदा हो, यह बात शुरु में ही वाज़ेह कर दी जाती है कि इस उनवान का तअल्लुक़ किसी तरक़्क़ी–याफ़्ता या पसमांदा मुल्क के सद्र के चुनाव से नहीं, किसी सरकारी, ग़ैर सरकारी, तरकारी, रेज़गारी या रियाकारी फ़रोशों की अन्जुमन के सद्र के इन्तिख़ाब से भी कम नहीं है। बल्कि मौज़ू का तअल्लुक़ ऐसे सद्र से है जिनको किसी अदबी जलसे, किसी तहज़ीबी महफ़िल, किसी मुशायरे, किसी शामे–ग़ज़ल, किसी शबे–बहाराँ, किसी किताब के रस्मे इजरा, किसी दानिश्वर को जिसकी किश्तिए–हयात बहरे फ़ना में डूबने वाली हो ख़िराजे–अक़ीदत पेश करने या फिर किसी रंगारंग प्रोग्राम के मौक़े पर सद्र बना कर जलसे में किसी असली दुल्हन की तरह बिठा दिया जाना मक़सूद हो, जिस में यह सद्र ख़ामोश, ग़मगीन, शर्मसार, लाचार आँखों में नींद का ग़ुबार संभाले, जलसे के दौरान होने वाली जुम्ला सितम–रानियों को अपनी करनी का फल समझ कर, सहता हुआ चुप चाप बैठा रहता है। उसकी नाज़बरदारी के सिलसिले में पानी का एक गिलास (गिलास का साफ़ सुथरा होना ज़रुरी नहीं) उसके सामने धर दिया जाता है ताकि उसको सिर्फ़ ख़ून के घूँट ही पीने पर इक्तफ़ा न करनी पड़े। अलबत्ता उसको इस बात की पूरी–पूरी आज़ादी होती है कि –

थक जाये जो एक पहलू तो वह पहलू बदल डाले

मगर बानियाने–जलसा इस बात की गारंटी फ़राहम नहीं करते कि सदारत के फ़राएज़ अदा करते हुये अकड़ जान के बाद साहबे सद्र का

---

1. ईश्वर करे ऐसा न हो

ادا کرتے ہوئے اکڑ جانے کے بعد صاحب صدر کا جوتا چپل اسی جگہ پر جہاں وہ اس سے رخصت ہوئے تھے ان کا انتظار کرتا، ان کی طرح اپنی رکھی ہوئی جگہ پر رکھا مل جائے گا۔ کیوں کہ ایسے جوتوں کے انتظار میں اردو کے کئی آبلہ پا شیدائی ہاتھ کی صفائی دکھلاتے ہوئے اپنے دکھتے پیروں کی حفاظت کا اہتمام اور بدبخت صدر کی اپنے جوتوں سے محرومی کا پکا انتظام کر دیتے ہیں اور پھر یہ ظالم صاحب صدر کی پریشانی کی کیفیت کو دور سے دیکھنے کے لیے جلسہ کے اختتام تک موجود بھی رہتے ہیں۔ یہی وجہ ہے کہ بہت سے تجربہ کار صدر بوقتِ صدارت اپنے جوتوں کو اپنی صدری کے اندر کچھ ویسی ہی احتیاط سے سینے سے لگائے رکھتے ہیں جس طرح الہٰ دین کے قصہ کا جادوگر طلسمی چراغ کو سنبھالے رکھتا ہے۔ البتہ یہ کیفیت کسی وی آئی پی کے ساتھ پیش نہیں آسکتی۔ کیوں کہ موصوف کے جوتے اتارتے ہی ان کا پرسنل اسسٹنٹ، پرسنل اٹنڈنٹ کے فرائض سنبھالتے ہوئے ان پر جھپٹ کر گرتا ہے اور ان کو اپنی پرسنل کسٹڈی میں لے لیتا ہے۔

یہ ایسے جلسے ہوتے ہیں جو معشوق، دھوبی، درزی یا جاکی کے وعدوں کی طرح کبھی وقت یا تاریخِ اعلان کردہ پر منعقد نہیں ہوتے، جن کے بارے میں اعلانات چھپواتے وقت بانیانِ جلسہ کے کسی قلم تراش قسم کے انسان کے دماغ میں جلسہ کا...... جو کبھی بھولے سے بھی اعلان میں عظیم الشان قسم سے کم درجے کا نہیں ہوتا...... ایک موہوم و مبہم سا خاکہ ہوتا ہے، ایک طرح کی کانپتی ہوئی پرچھائیں، ایک بھٹکتا ہوا سا خیال، جلسہ منعقد کرنے کی ایک آرزو۔! بس یوں سمجھیے کہ کسی شخص کے دل میں کوئی خواہش پیدا ہوئی، قلم حرکت میں آیا اور ایک اعلان جاری ہو گیا۔

اس اعلان میں مقام، تاریخ، وقت اور سال کا قطعی تعین نہیں ہوتا بلکہ مبہم سے اشارے ہوتے ہیں۔ پھر یہ سوچ شروع ہوتی ہے جلسہ گاہ کون سی ہوگی یا ہو سکتی ہے۔ اس ضمن میں کانفرنس ہال کے خیال، اسمبلی کی چھت، شہر نگاراں کا سب سے بڑا تھیٹر، اس کا سب سے وسیع اور شاندار اسٹیڈیم، شادی گھروں، کالج کے میدانوں، سرائے خانوں، خانقاہوں، مندروں کے پچھواڑوں، درگاہوں کے احاطوں، ہوٹلوں کے تہہ خانوں، فیکٹریوں کے گوداموں، مرغزاروں اور زیارت گاہوں کے محلِ وقوع ذہن میں آتے ہیں۔

जूता चप्पल उसी जगह पर जहाँ वह उस से रुख़सत हुये थे उनका इन्तज़ार करता, उनकी अपनी रखी हुई जगह पर रखा मिल जाये गा। क्योंकि ऐसे जूतों के इन्तज़ार में उर्दू के कई आबला–पा[1] शैदाई हाथ की सफ़ाई दिखाते हुये अपने दुखते पैरों की हिफ़ाज़त का एहतमाम और बदबख़्त सद्र का अपने जूतों से महरुमी का पक्का इनतज़ाम कर देते हैं और फिर ये ज़ालिम साहबे सद्र की परेशानी की कैफ़ियत को दूर से देखने के लिए जलसे के एख़्तताम तक मौजूद भी रहते हैं। यही वजह है कि बहुत से तजुर्बेकार सदर बवक़्ते सदारत अपने जूतों को अपनी सदरी के अन्दर कुछ वैसी ही एहतयात से सीने से लगाये रखाते हैं जिस तरह आलदीन के क़िस्से का जादूगर तिलस्मी चिराग़ को संभाले रखता है। अलबत्ता यह कैफ़ियत किसी वी. आई. पी. के साथ पेश नहीं आ सकती। क्योंकि मौसूफ़ के जूते उतारते ही उनका पर्सनल आसिस्टेंट, पर्सनल एटेंडेंट के फ़राएज़ संभालते हुए उन पर झपट कर गिरता है और उनको अपनी पर्सनल कस्टडी में ले लेता है।

ये ऐसे जलसे होते हैं जो माशूक़, धोबी, दर्जी या जाकी के वादों की तरह कभी वक़्त या तारीख़े–एलान करदा पर मुनअक़िद[2] नहीं होते, जिन के बारे में एलानात छपवाते वक्त बानियाने जलसा के किसी क़लम–तराश क़िस्म के इन्सान के दिमाग़ में जलसे का...... जो कभी भूले से भी एलान में अज़ीमुश्शान क़िस्म से कम दर्जे का नहीं होता...... एक मौहूमो–मुबहम सा ख़ाका होता है, एक तरह की काँपती हुई परछांई, एक भटकता हुआ सा ख़याल, जलसे में मुनअक़िद करने की एक आरज़ू! बस यूँ समझिये कि किसी शख़्स के दिल में कोई ख़्वाहिश पैदा हुई, क़लम हरकत में आया और एक एलान जारी हो गया।

इस एलान में मोक़ाम, तारीख़, वक़्त और साल का क़तई तअय्युन नहीं होता बल्कि मुबहम से इशारे होते हैं। फिर ये सोच शुरु होती है जलसा–गाह कौन सी होगी या हो सकती है। इस ज़िम्न में कान्फ्रेन्स हॉल के ख़याल, एसम्बली की छत, शहरे–निगाराँ का सब से बड़ा थियेटर, उसका सब से वसीअ और शानदार स्टेडियम, शादी घरों, कॉलेज के मैदानों, सराये ख़ानों, ख़ानकाहों, मंदिरों के पिछवाड़े, दरगाहों के अहातों, होटलों के तहख़ानों, फैक्ट्रियों के गोदामों, मुर्ग़ज़ारों और ज़ियारत गाहों के महल्ले–वक़ूअ ज़ेहन में आते हैं। जब ये सब मोक़ामात पेशगी ही सारे साल

1. जिसके पैर में छाले पड़ गये हों 2. आयोजित

جب یہ سب مقامات پیشگی ہی سارے سال کے لیے بُک ہو چکے ہوتے ہیں اور ان کو کسی وسیلہ سے بُک نہیں کیا جا سکتا تو تان کسی پراچین بارہ دری پر ٹوٹتی ہے جس کے باروں دروازے اس کی صدیوں پُرانی شان وشوکت کی یاد میں تڑپ تڑپ کر ایسے ٹوٹے پھوٹے اور لنگڑے ہو گئے ہوتے ہیں جس طرح کسی آرتھرائیٹس کے مریض کے جوڑ۔ جو ہلکے سے ہوا کے جھونکے سے بھی لرزنے لگتے ہیں۔ اور جن میں ایسی آوازیں پیدا ہوتی ہیں جیسی کسی ہندوستانی دہشت انگیز فلم کے ایسے وحشت ناک سین میں سنائی دیتی ہیں جس میں ازلی بے وقوف ہیروئن، پیدائشی چالاک ولن کے جھانسوں میں آ کر کسی انتہائی اندھیری رات کو کسی بھوت بنگلہ میں ہیرو سے ملاقات کرانے کا تیقن دیے جانے پر بھاگم بھاگ پہنچ جاتی ہے اور بنگلہ میں سے آنے والی خوف ناک آوازوں کو سن کر بے تحاشا چیخیں مارنے لگتی ہے اور جب تھک جاتی ہے تو کوئی خون منجمد کر دینے والا دردناک فلمی گانا شروع کر دیتی ہے۔ ان ہولناک آوازوں کو سن کر سینما ہال میں بیٹھے بچے ماؤں کی چھاتیوں سے چمٹ جاتے ہیں اور مائیں سمٹ کر اپنے احمق شوہروں کے شانے تھام لیتی ہیں۔ ایسے جلسہ گاہ میں اگر جلسہ شروع ہونے سے عین پہلے برقی آف ہو جائے تو جلسہ میں بھی خوف کی لہر پھیل جاتی ہے۔ گھپ اندھیرے میں کچھ بانیانِ جلسہ آپس میں گفتگو اور تکرار سے گزرتے ہوئے جوتم پیزار پر اُتر آتے ہیں کہ فلاں ابن فلاں نے ہمارے موجودہ برقی انتظام کی برکتوں کو جانتے ہوئے بھی اخراجات میں انتہائی کفایت کو ملحوظ رکھتے ہوئے پیٹرومیکس کا انتظام بھی احتیاطاً رکھنے سے سب کو باز رکھا تھا۔ بانیانِ جلسہ کی خوش قسمتی اس میں ہوتی ہے کہ یہ سارا ایکشن اندھیرے میں انجام پاتا ہے اور اس کو فلمانے کا کوئی بندوبست نہیں ہوتا۔ اس افراتفری کی کیفیت میں بعض تجربہ کار منتظمین صدر جلسہ کو جا کر تھام لیتے ہیں کہ کہیں وہ مٹی کا مادھو ڈر کے مارے جلسہ سے فرار نہ ہو جائے اور جس کی غیر موجودگی کو پیٹرومیکس، ویکس کی بتی، اگر بتی یا چائے کی پتی بھی پورا نہ کر سکے۔

بات جو انتخابِ صدر کے تعلق سے شروع ہوئی تھی کہاں سے کہاں پہنچ گئی۔ انتخابِ صدر کا مسئلہ، اگرچہ اس کو کوئی خاص کام انجام دینا نہیں ہوتا اس کے روایتی مقام کے باعث بہت اہم ہوتا ہے۔ اولاً کسی ناش (ن۔الف۔شین) یعنی نہایت اہم شخصیت کی

के लिए बुक हो चुके होते हैं और उन को किसी वसीले से बुक नहीं किया जा सकता तो तान किसी प्राचीन बारहदरी पर टूटती है जिसके बारहों दरवाज़े उसकी सदियों पुरानी शानो–शौकत की याद में तड़प–तड़प कर ऐसे टूटे–फूटे और लंगड़े हो गये होते हैं जिस तरह किसी आर्थराइटिस के मरीज़ के जोड़। जो हल्के से हवा के झोंके से भी लरज़ने लगते हैं। और जिन में ऐसी आवाज़ें पैदा होती हैं जैसी किसी हिन्दुस्तानी दहशत अंगेज़ फ़िल्म के ऐसे वहशतनाक सीन में सुनाई देती है जिस में अज़ली बेवकूफ़ हीरोइन, पैदाइशी चालाक विलेन के झांसों में आकर किसी इन्तहाई अन्धेरी रात को किसी भूत बंगले में हीरो से मुलाकात कराने का तयक़्क़ुन[1] दिये जाने पर भागम–भाग पहुँच जाती है और बंगले में से आने वाली खौफ़नाक आवाज़ों को सुनकर बेतहाशा चीख़ें मारने लगती है और जब थक जाती है तो कोई ख़ून मुन्जमिद कर देने वाला दर्दनाक फ़िल्मी गाना शुरु कर देती है। उन हौलनाक आवाज़ों को सुन कर सिनेमा हॉल में बैठे बच्चे माओं की छातियों से चिमट जाते हैं और मायें सिमट कर अपने अहमक़ शौहरों के शाने थाम लेती हैं। ऐसे जलसा गाह में अगर जलसा शुरु होने के ऐन पहले बरक़ी[2] ऑफ़ हो जाये तो जलसे में भी ख़ौफ़ की लहर फ़ैल जाती है। घुप अन्धेरे में कुछ बानियाने–जलसा आपस में गुफ़्तगू और तकरार से गुज़रते हुए जूतम पेज़ार पर उतर आते हैं कि फ़लाँ इब्ने फ़लाँ ने हमारे मौजूदा बरक़ी इन्तज़ाम की बरकतों को जानते हुए भी अख़राजात में इन्तहाई किफ़ायत को मलहूज़ रखते हुए पेट्रोमेक्स का इन्तजाम भी एहतयातन रखने से सब को बाज़ रखा था। बानियाने जलसा की खुशकिस्मती इसमें होती है कि ये सारा एक्शन अन्धेरे में अन्जाम पाता है और इस को फ़िल्माने का कोई बन्दोबस्त नहीं होता। इस अफ़रातफ़री की कैफ़ियत में बाज़ तजुर्बेकार मुन्तज़मीन सद्रे–जलसा को जा कर थाम लेते हैं कि कहीं वह मिट्टी का माधौ डर के मारे जलसे से फ़रार न हो जाय और जिसकी ग़ैर मौजूदगी को पेट्रोमेक्स, वेक्स की बत्ती, अगरबत्ती या चाय की पत्ती भी पूरा न कर सके।

बात जो इन्तख़ाबे–सद्र के ताअल्लुक़ से शुरु हुई थी कहाँ से कहाँ पहुँच गई। इन्तख़ाबे–सद्र का मसला, अगरचे इसको कोई ख़ास काम अन्जाम देना नहीं होता इसके रिवायती मक़ाम के बाएस बहुत अहम होता है। अव्वलन किसी नाश (नून, अलिफ़, शीन) यानी निहायत अहम शख़्सियत की

1. भरोसा 2. बिजली

تلاش شروع ہوتی ہے۔ مقصد بسا اوقات صرف جلسہ کی زینت ہی نہیں ہوتا بلکہ کسی منتظم جلسہ کے پیشِ نظر کسی اٹکی ہوئی فائل کا نکلوانا، کسی فراموش شدہ سڑک کی مرمت، بجلی کا کنکشن، بلدیہ ٹیکس کو جو کسی مکان کو کسی بلدیہ کے منتظم نے مخل سمجھ کر عاید کر دیا ہو کم کروانا، کسی مقام پر پانی کی سربراہی یا ایسی ہی بعض مصیبتوں سے چھٹکارا پانا ہوتا ہے۔ اس لیے صدارت کے لیے ناشوں کا گانٹھنا محض تعارف حاصل کرنے یا ربط پیدا کرنے کے مقصد سے کیا جاتا ہے اور جلسہ کے بعد شخصِ متعلقہ کوئی موقعہ پاکر راست برسرِ مطلب آجاتا ہے۔ خیر یہ تو بعد کی باتیں ہیں۔ جب کوئی اہم شخصیت صدارت کرنا قبول فرمالیتی ہے تو پرسنل اسسٹنٹ بعض صورتوں میں اہم شخصیت کی لمبائی بانیانِ جلسہ کو بتلا دیتا ہے۔ یہ اطلاع ہار کی موزونیت سے تعلق رکھتی ہے۔ کیوں کہ ایسا بھی ہو چکا ہے کہ جب کسی بہت اہم شخصیت کے لیے ان کی اہمیت کے اعتبار سے بانیانِ جلسہ نے نہایت عظیم الشان قسم کا ہار پہنایا تو شخصیت کا قد ہار کی لمبائی سے ایک فٹ کم نکلا اور چوں کہ اس اہم شخصیت کو دس پندرہ قدم چل کر کسی تصویر کی نقاب کشائی کرنا تھا، اس لیے موصوف بائیں ہاتھ سے ہار کو اُٹھائے اس طرح قدم اُٹھا رہے تھے جس طرح بارش میں عورتیں ساڑی کے نچلے حصّہ کو خراب ہونے سے بچانے کے لیے اونچا اُٹھا کر چلتی ہیں۔ اور یہ ناپ کی بات اس وقت سے اور بھی اہمیت حاصل کر چکی ہے جب کسی ایسے ہی جلسہ میں منتظمین نے ایک نہایت عمدہ موٹا تازہ ہار صاحبِ صدر کی آرائش کے لیے بنوایا تھا، مگر جب جلسہ میں گُل پوشی کی رسم انجام دی جانے لگی تو معلوم ہوا کہ صاحبِ صدر کی شخصیت اپنی اہمیت کی موزونیت کے اعتبار سے نہایت غذا اگزیدہ تھی۔ سر پر ٹوپی کی بجائے ایک عظیم الشان پگڑ بندھا تھا جو غالباً موصوف کو وراثت میں ملا تھا ورنہ فی زمانہ سر کو ڈھانپنے کے لیے اس قدر کپڑے کا استعمال امرِ محال معلوم ہوتا ہے، اس میں اس قدر کپڑا تھا کہ تمام بانیانِ جلسہ کے لیے ایک ایک کرتہ پاجامہ سِلائی کرنے کے لیے کافی تھا۔ اور پھر شاید خدا کو یہی منظور تھا کہ وہ ہار ان کے سر کے محیط سے چھوٹا ثابت ہو جس کے باعث پہلے تو صاحبِ صدر کا پگڑ سر سے کھسک کر ان کے قدموں میں آرہا۔ پھر ان کی جٹائیں پریشان ہو کر ان کے چہرے پر نقاب کی شکل میں نمودار ہوئیں اور بالآخر ہار پہنانے کی کشمکش میں ہار کا دھاگا ٹوٹ گیا اور سرِ محفل صاحبِ صدر کے سر پر

तलाश शुरु होती है। मक़सद बसा औक़ात सिर्फ़ जलसे की ज़ीनत ही नहीं होता बल्कि किसी मुनज़्ज़म जलसे के पेशे नज़र किसी अटकी हुई फ़ाइल निकलवाना, किसी फ़रामोश शुदा सड़क की मरम्मत, बिजली का कनेक्शन, बल्दिया[1] टेक्स को जो किसी बल्दिया के मुन्तज़िम ने महल समझ कर आयद कर दिया हो कम करवाना, किसी मुक़ाम पर पानी की सरबराही या ऐसी ही बाज़ मुसीबतों से छुटकारा पाना होता है। इसलिए सदारत के लिए नाशों का गांठना महज़ तआरुफ़ हासिल करने या रब्त पैदा करने के मक़सद से किया जाता है और जलसे के बाद शख़्से–मुतअल्लेक़ा कोई मौक़ा पाकर रास्त बर सरे मतलब[2] आ जाता है। ख़ैर यह तो बाद की बातें हैं। जब कोई अहम शख़्सियत सदारत करना क़बूल फ़रमा लेती है तो पर्सनल आसिस्टेंट बाज़ सूरतों में अहम शख़्सियत की लम्बाई बानियाने–जलसा को बतला देता है। ये इत्तला हार की मौज़ूनियत से तअल्लुक़ रखती है। क्योंकि ऐसा भी हो चुका है कि जब किसी बहुत अहम शख़्सियत के लिए उनकी अहमियत के एतबार से बानियाने जलसा ने निहायत अज़ीमुश्शान क़िस्म का हार पहनाया तो शख़्सियत का क़द हार की लम्बाई से एक फुट कम निकला और चूंकि उस अहम शख़्सियत को दस पन्दरह क़दम चल कर किसी तस्वीर की नक़ाब कुशाई करना था, इसलिए मौसूफ़ बायें हाथ से हार को उठाये इस तरह क़दम उठा रहे थे जिस तरह बारिश में औरतें साड़ी के निचले हिस्से को ख़राब होने से बचाने के लिए उँचा उठा कर चलती हैं। और यह नाप की बात उस वक़्त से और भी अहमियत हासिल कर चुकी है जब किसी ऐसे ही जलसे में मुन्तज़मीन ने एक निहायत उम्दा मोटा ताज़ा हार साहबे सद्र की आराइश के लिए बनवाया था, मगर जब जलसे में गुलपोशी की रस्म अन्जाम दी जाने लगी तो मालूम हुआ कि साहबे सद्र की शख़्सियत अपनी अहमियत की मौज़ूनियत के एतबार से निहायत ग़िज़ा गज़ीदा[3] थी। सर पर टोपी के बजाए एक अज़ीमुश्शान पग्गड़ बंधा हुआ था जो ग़ालेबन मौसूफ़ को विरासत में मिला था वरना फ़ी ज़माना सर को ढांपने के लिए इस क़द्र कपड़े का इस्तेमाल अमरे–मोहाल मालूम होता है, इस में इस क़द्र कपड़ा था कि तमाम बानियाने जलसा के लिए एक एक कुर्ता पाजामा सप्लाई करने के लिए काफी था। और फिर शायद ख़ुदा को यही मंज़ूर था कि यह हार उन के सर के मोहीत[4] से छोटा साबित हो जिस के बाएस पहले तो साहबे सद्र का पग्गड़ सर से खिसक कर उनके क़दमों में आ रहा। फिर उनकी जटायें परेशान होकर उनके चेहरे पर नक़ाब की शक्ल में नमूदार हुई और बिलआख़िर हार पहनाने की कशमकश में हार का धगा टूट गया और सरे महफ़िल साहबे सद्र के सर पर फूलों की बारिश हो गई।

1. नगर पालिका 2. सीधे मतलब की बात पर आना 3. अच्छी ख़ासी ख़ुराक वाले 4. घेर

پھولوں کی بارش ہوگئی۔ اور صاحب صدر کسی پُرانے زمانے کے شاہی دربار کے مسخرے کی طرح حاضرین کے لیے تصویرِ فرحت بنے غصہ سے کانپتے کھڑے تھے۔ کیفیت یہ تھی ع

گھونگھٹ کے تار رنگے گئے رنگِ عتاب میں

جب سے یہ واقعہ ہوا ہے بانیانِ جلسہ بطورِ احتیاط پھولوں کو ربر کی ڈوری میں پروکر لاتے ہیں تا کہ اگر بفرضِ محال ہار صدر جلسہ کے سر اور گردن کے محیط سے کم نکلے تو کم از کم ربر کی ڈوری کی مدد سے گلے میں ہار کی طرح نہ تو نہ سہی، چوڑی کی طرح سر میں پہنا دیا جائے گا اور گردن میں پھانسی کے پھندے کی طرح پھنسا رہے۔

بے پناہ طور پر اہم شخصیتوں کو صدر بنانے میں ایک اور بڑی مصیبت جو مضمر ہے وہ یہ ہے کہ یہ لوگ بسا اوقات سین سے یکلخت بغیر کسی اطلاع کے غائب ہو جاتے ہیں، بالکل اسی طرح جس طرح کوئی مشکل کشا کسی دفتر میں دوسرے دن ملنے کا وعدہ کر کے اسی دن ایک ماہ کی رخصت پر بوریا بستر باندھ کر رفو چکر ہو جاتا ہے اور ڈیڑھ ماہ بعد طلوع ہوتا ہے۔ بہر حال جلسہ میں یہ حال ہوتا ہے کہ حاضرین، مقررین اور منتظمین سب موجود مگر صاحب صدر غیر موجود ہوتے ہیں۔ جب پون گھنٹہ انتظار میں گزر جاتا ہے اور مدعوئین شور و غل مچانے کے موڈ سے بڑھ کر اپنے دل میں کچھ اور ٹھانے نظر آتے ہیں تو صاحب صدر زیر بحث کے دفتر، دولت خانہ، خانہ ہائے دوستاں اور دوسرے اڈوں پر جہاں وہ بعض اوقات مل سکتے ہیں، ٹیلی فون کھڑکھڑائے جاتے ہیں۔ بعض مرتبہ معلوم ہوتا ہے کہ اگر موصوف کو گھوڑوں کے چوک نزد پھل بنڈہ، حیدرآباد میں صدارت کرنی تھی تو وہ اس وقت جنگل میں منگل منانے بھاکرہ ننگل پہنچے ہوتے ہیں اور بعض مرتبہ تو ایسا بھی ہوتا ہے کہ ان کی آمد و رفت کا جاننے والا ان کی حرکات و سکنات سے بالکل لاعلمی کا اظہار کرتا ہے۔ منتظمین جلسہ سر پیٹ لیتے ہیں اور جلسہ میں آکر سامعین کی صفوں میں سے کسی سادہ لوح انسان کو گلے میں ہاتھ ڈال کر اٹھا لاتے ہیں اور ڈائس پر لا کر سامعین سے اس کا تعارف کراتے ہیں۔ اعلان کردہ صدر کی غیر موجودگی کے تعلق سے اپنے غم و غصہ کو صدرِ مستور کی گوناگوں مصروفیات، بھاری سرکاری، غیر سرکاری، معاشرتی اور جمہوری ذمہ داریوں کی چادر میں

और साहबे सद्र किसी पुराने ज़माने के शाही दरबार के मसख़रे की तरह हाज़ेरीन के लिए तस्वीरे–फ़रहत बने गुस्से से काँपते खड़े थे। कैफ़ियत यह थी कि –

घूंघट के तार रंग गये रंगे एताब में

जब से ये वाक़या हुआ है बानियाने–जलसा बतौरे–एहतियात फूलों को रबड़ की डोरी में पिरो कर लात हैं ताकि अगर बग़रज़े–मोहाल हार सदर जलसा के सर और गर्दन के मोहीत से कम निकले तो कम अज़ कम रबड़ की डोरी की मदद से गले में हार की तरह न तो न सही, चूड़ी की तरह सर में पहना दिया जायेगा और गर्दन में फाँसी के फन्दे की तरह फंसा रहे।

बे पनाह तौर पर अहम शख़्सियतों को सदर बनाने में एक बड़ी मुसीबत जो मुज़मर है वह यह है कि यह लोग बसा औक़ात सीन से यकलख़्त बग़ैर किसी इत्तला के ग़ायब हो जाते हैं बिल्कुल उसी तरह जिस तरह कोई मुश्किल कुशा[1] किसी दफ़्तर में दूसरे दिन मिलने का वादा कर के उसी दिन एक माह की रुख़्सत पर बोरिया बिस्तर बाँध कर रफ़ू चक्कर हो जाता है और डेढ़ माह बाद तुलूअ होता है। बहर हाल जलसे में यह हाल होता है कि हाज़ेरीन, मोकर्ररीन और मुन्तज़ेमीन सब मौजूद मगर साहबे सद्र ग़ैर मौजूद होते हैं। जब पौन घंटा इन्तजार में गुज़र जाता है और मदऊईन शोरो–गुल मचाने के मूड से बढ़ कर अपने दिल में कुछ और ठाने नज़र आते हैं तो साहबे सद्र ज़ेरे बहस के दफ़्तर, दौलत ख़ाने, ख़ाना हाये दोस्ताँ और दूसरे अड्डों पर जहाँ वह बाज़ औक़ात मिल सकते हैं, टेलीफ़ोन खड़खड़ाये जाते हैं। बाज़ मर्तबा मालूम होता है कि अगर मौसूफ़ को घोड़ों के चौक नज़्द फल बन्डा, हैदराबाद में सदारत करनी थी तो वह उस वक़्त जंगल में मंगल मनाने भाखड़ा नंगल पहुँचे होते हैं और बाज़ मर्तबा तो ऐसा भी होता है कि उनकी आमदो–रफ़्त का जानने वाला उनकी हरकातो–सकनात से बिल्कुल ला–इल्मी का इज़हार करता है। मुन्तज़ेमीने–जलसा सर पीट लेते हैं और जलसे में आकर सामेईन की सफ़ों में से किसी सादा–लौह[2] इन्सान को गले में डाल कर उठा लाते हैं और डाइस पर लाकर सामेईन से उसका तआरुफ़ कराते हैं। एलान करदा सद्र की ग़ैर मौजूदगी के ताअल्लुक़ से अपने ग़मो–ग़ुस्से को सद्रे मस्तूर की गूनागूँ मसरुफ़ियात, भारी सरकारी, ग़ैर सरकारी, मआशरती और जम्हूरी ज़िम्मेदारियों की चादर में लपेट कर माफ़ी मांगते हैं और सामेईन में से

1. परेशानी दूर करने वाला 2. भोला भाला, बेवक़ूफ़

لپیٹ کر معافی مانگتے ہیں اور سامعین میں سے پکڑے ہوئے بکرے کی پیٹھ تھپتھپاتے ہوئے، یہ ثابت کرنے کی کوشش کرتے ہیں کہ موصوف کی صدارت میں ان کے جلسہ کی شان کچھ اور بڑھ جائے گی۔ کیوں کہ مسندِ صدارت پر ان کی موجودگی آمد بمقابلہ 'آورد' کی حیثیت رکھتی ہے۔ اس کے بعد نئے صدر کو تالیوں کی گونج میں ہار پہنانے کی کاروائی سرانجام پاتی ہے۔

حاضرین کرام! خاکسار بیان کر چکا ہے کہ بعض اوقات صدر، اعلان کردہ کی نقل و حرکت سے متعلقین اور غیر متعلقین ہر دو ناواقف ہوتے ہیں۔ ایسے ہی بیک گراؤنڈ میں اصلی صدر کے طلوع نہ ہونے پر جب سامعین میں سے پکڑے ہوئے مہرے کو صدارتی ہار پہنایا جارہا تھا، تو عین اس وقت اصل صدر صاحب نہ معلوم کہاں کہاں سے بھٹکتے ہوئے جلسہ میں جلوہ افروز ہو گئے اور آناً فاناً ڈائس پر پہنچ گئے۔ ان کو وہاں موجود پا کر گل پوشی کرنے والے ہاتھ ہوا میں منجمد ہو گئے۔ گل پوشی کرانے والی جھکی گردن مارے شرم کے کچھ اور جھک گئی اور سامعین صدور کے اس جوڑے کو بیک وقت ڈائس پر دیکھ کر بے اختیار سیٹیاں اور تالیاں بجانے لگے۔

اس کیفیت میں کنویز جلسہ نے خود بھی ایک فلک شگاف قہقہہ لگایا۔ پھر فاتحانہ انداز سے فرمایا کہ ''مجھے یقینِ کامل تھا کہ ہمارے معزز صدر وعدہ فرما کر ضرور وعدہ وفا کریں گے۔ وہ دیر سے ضرور تشریف لائے ہیں، مگر ادبی جلسوں میں دیر، دیر نہیں ہوتی بلکہ مروّجہ روایات کا ثبوت فراہم کرتی ہے اور بہرصورت دیر آید درست آید کی مثل تو مشہور ہے ہی۔ مجھے اس بات کی بڑی مسرت ہے کہ اعلان کے مطابق جلسہ کی کاروائی عزت مآب کی صدارت میں شروع ہو رہی ہے۔''

یہ سُن کر ظاہر ہے کہ سامعین میں سے پکڑ کر لایا ہوا مرغا کھسکنے کی کوشش کرتا ہے مگر کنویز صاحب اپنی ٹانگ سے ان کی راہِ فرار کو روکتے ہوئے مزید یہ اعلان کرتے ہیں کہ ''عزت مآب کی صدارت میں جلسہ کا پہلا دور منعقد ہوگا اور صاحبِ صدر کے تشریف لے جانے پر ایک مختصر سے محفل شعر و لطیفہ گوئی برپا ہوگی جس کی صدارت ہمارے عارضی صدر صاحب کریں گے۔''

पकडे हुए बकरे की पीठ थपथपाते हुए यह साबित करने की कोशिश करते हैं कि मौसूफ़ की सदारत में उन के जलसे की शान कुछ और बढ़ जायेगी। क्योंकि मसनदे सदारत पर उन की मौजूदगी आमद बमुकाबला 'आवुरद' की हैसियत रखती है। इसके बाद नये सद्र को तालियों की गूँज में हार पहनाने की करवाई सर–अंजाम पाती है।

हाज़ेरीन कराम! ख़ाकसार बयान कर चुका है कि बाज़ औक़ात सदरे–एलान करदा की नक़लो–हरकत से मुताल्लेक़ीन और ग़ैर मुताल्लेक़ीन हर दो नावाकिफ़ होते हैं। ऐसे ही बैकग्राउंड में असली सद्र के तुलूअ न होने पर जब सामेईन में से पकड़े हुये मोहरे को सदारती हार पहनाया जा रहा था, तो ऐन उस वक़्त अस्ल सद्र साहब न मालूम कहाँ कहाँ से भटकते हुए जलसे में जलवा अफ़रोज़ हो गये और आनन फ़ानन में डाइस पर पहुँच गये। उनको वहाँ मौजूद पाकर गुलपोशी करने वाले हाथ हवा में मुन्जमिद हो गये। गुलपोशी कराने वाली झुकी गर्दन मारे शर्म के कुछ और झुक गई और सामेईन सद्र के इस जोड़े को बयकवक़्त डाइस पर देख कर बे अख़्तियार सीटियाँ और तालियाँ बजाने लगे।

इस कैफ़ियत में कन्वेनर जलसा ने ख़ुद भी एक फ़लक शगाफ़ क़हक़हा लगाया। फिर फातेहाना अन्दाज़ से फरमाया कि "मुझे यक़ीने–कामिल था कि हमारे मोअज़्ज़िज़ सद्र वादा फ़रमा कर ज़रुर वादावफ़ा करेंगे। वह देर से ज़रुर तशरीफ़ लाए हैं, मगर अदबी जलसों में देर, देर नहीं होती बल्कि मुरव्वेजा रवायात[1] का सबूत फ़राहम करती है और बहर सूरत देर आयद दुरुस्त आयद की मसल[2] तो मशहूर है ही। मुझे इस बात की बड़ी मसर्ररत है कि एलान के मुताबिक़ जलसे की कारवाई इज़्ज़त मआब की सदारत में शुरु हो रही है।"

यह सुन कर ज़ाहिर है सामेईन में से पकड़ कर लाया हुआ मुर्ग़ा खिसकने की कोशिश करता है मगर कन्वेनर साहब अपनी टाँग से उनकी राहे–फ़रार को रोकते हुए मज़ीद यह एलान करते हैं कि "इज़्ज़त मआब की सदारत में जलसे का पहला दौर मुन्अक़िद होगा और साहबे सदर के तशरीफ़ ले जाने पर एक मुख़्तसर सी महफ़िले–शेरो–लतीफ़ा–गोई बर्पा होगी जिसकी सदारत हमारे आरज़ी सद्र साहब करेंगे।"

1. जारी परम्परा 2. कहावत

اس اعلان پر مزید سیٹیوں، تالیوں اور کرسیوں کی سیٹوں کو پیٹنے کی آوازیں بلند ہوتی ہیں۔ اصلی صدر کو ہار پہنایا جاتا ہے جس کو گلے سے اُتار کر موصوف میز پر سامنے رکھ دیتے ہیں۔ پھر تصویر لی جاتی ہے اور کنوینر صاحب میز پر سے ہار اُٹھا کر ایک کارکن کے حوالے کر دیتے ہیں تاکہ تصویر کشی میں آسانی ہو۔ مگر وہ کارکن کو یہ تاکید بھی کر دیتے ہیں کہ ہار کو محفلِ شعر کے صدر کے لیے محفوظ رکھنا ہے۔ یہاں اس بات کی وضاحت کر دینا ضروری ہے کہ یہ ہار اپنی افادیت کی آخری منزل پر اس وقت پہنچتا ہے جب کنوینر صاحب اس کو دوسرے صدر کے پنجے سے بھی بچا کر بالآخر اپنے گھر لے جاتے ہیں اور اپنی بیگم کو بھی یہ کہہ کر خوش کر دیتے ہیں کہ ع

ہار پھولوں کا مری جان تیرے واسطے آخرِ شب

لیکن جب بانیانِ جلسہ کی گرفت میں کوئی نامور، اہم، ٹھوس اور چکنی ہستی نہیں آتی ہے اور ایسا بارہا ہوتا آیا ہے کہ کوئی نیا شگوفہ کھل جاتا ہے، مثلاً اسمبلی کی تحلیل، وزرات کی نئی تشکیل، قلم دانوں کی نئی تقسیم، کسی غیر متوقعہ اور اچانک وفات سے کسی اہم جگہ کا خالی ہو جانا، الیکشن کی آمد اور دی فیکٹرز کی آمد ورفت وغیرہ سے اہم شخصیتیں اپنے معمول کے سب معمولی کام چھوڑ کر اپنے رشتے استوار کرنے، اپنے لیے زیادہ اہم مقام حاصل کرنے کے لیے مختلف مقامات کے دوروں پر نکل پڑتے ہیں۔ ایسے موقعوں پر ''ناش'' منڈی سے دفعتاً اسی طرح غائب ہو جاتے ہیں جس طرح مداری کی تھیلی سے انڈے، راشن کی دکان سے شکر یا کیروسین کا تیل اور میری کھونٹی پر لٹکائی ہوئی پتلون کی جیب سے ریز گاری۔ ان حالات میں بانیانِ جلسہ کو کسی ن۔م۔ش یعنی نہایت معمولی شخصیت کی تلاش ہوتی ہے۔ مگر شخصیت خواہ کتنی ہی معمولی کیوں نہ ہو اُس میں بھی صدارت کا رتبہ حاصل کرنے کے لیے چند خوبیوں کی موجودگی ضروری ہوتی ہے۔

سب سے پہلے غیر اہم شخص کے حلیے کو دیکھا جاتا ہے۔ سوال خوبصورتی کا نہیں ہوتا، بلکہ یہ دیکھا جاتا ہے کہ ایسا شخص معقول ہونے کے علاوہ دید کے ناقابل نہ ہو۔ اس کی صورت شکل ڈراونی اور گھناونی نہ ہو اور محفل میں مستورات کو مسلسل گھورنے والا نہ ہو۔ اور اس بات کی پڑتال بھی کر لی جاتی ہے کہ اس کے پاس کم از کم ایک جوڑا کپڑوں کا

इस एलान पर मज़ीद सीटियाँ, तालियों और कुर्सीयों की सीटों को पीटने की आवाज़ें बुलन्द होती हैं। असली सद्र को हार पहनाया जाता है जिसको गले से उतार कर मौसूफ़ मेज़ पर सामने रख देते हैं। फिर तस्वीर ली जाती है और कन्वेनर साहब मेज़ पर से हार उठा कर एक कारकुन के हवाले कर देते हैं ताकि तस्वीरकशी में आसानी हो। मगर वह कारकुन को यह भी ताकीद कर देते हैं कि हार को महफ़िले–शेर के सद्र के लिए महफ़ूज़ रखना है। यहाँ इस बात की वज़ाहत कर देना ज़रुरी है कि यह हार अपनी अफ़ादियत की आख़री मंज़िल पर उस वक़्त पहुँचता है जब कन्वेनर साहब दूसरे सद्र के पंजे से बचा कर बिलआख़िर अपने घर ले जाते हैं और अपनी बेगम को भी यह कह कर खुश कर देते हैं कि –

हार फूलों का मेरी जान तेरे वास्ते है आख़िरे–शब

लेकिन जब बानियाने जलसा की गिरफ़्त में कोई नामवर, अहम, ठोस और चिकनी हस्ती नहीं आती और ऐसा बारहा होता आया है कि कोई नया शगूफ़ा खिल जाता है, मसलन ऐसेम्बली की तहलील, वज़ारात की नई तश्कील, क़लमदानों की नई तक़्सीम, किसी ग़ैर मतवक़्क़ा और अचानक वफ़ात से किसी अहम जगह का ख़ाली हो जाना, इलेक्शन की आमद और दी फ़ैक्टर्स की आमदो–रफ़्त वग़ैरह से अहम शख़सियतें अपने मामूल के सब मामूली काम छोड़कर अपने रिश्ते उस्तवार करने, अपने लिए ज़्यादा अहम मोक़ाम हासिल करने के लिए मुख़्तलिफ़ मोक़ामात के दौरे पर निकल पड़ते हैं। ऐसे मौक़ों पर "नाश" मंडी से दफ़अतन उसी तरह ग़ायब हो जाते हैं जिस तरह मदारी की थैली से अन्डे, राशन की दूकान से शकर या केरोसेन का तेल और मेरी खूंटी पर लटकाई हुई पतलून की जेब से रेज़गारी। इन हालात में बानियाने जलसा को किसी नून, मीम, शीन यानी निहायत मामूली शख़्सीयत की तलाश होती है। मगर शख़्सीयत ख़्वाह कितनी ही मामूली क्यों न हो उस में भी सदारत का रुतबा हासिल करने के लिए चन्द ख़ूबियों की मौजूदगी ज़रुरी होती है।

सब से पहले ग़ैर–अहम शख़्स के हुलिए को देखा जाता है। सवाल ख़ूबसूरती का नहीं होता, बल्कि यह देखा जाता है कि ऐसा शख़्स माक़ूल होने के एलावा दीद के नाक़ाबिल न हो। उस की सूरत शक़्ल डरावनी और घिनावनी न हो और महफ़िल में मस्तूरात[1] को मुसलसल घूरने वाला न हो। और इस बात की पड़ताल भी कर ली जाती है कि उस के

1. महिलाओं

ایسا ہو جن کو پہن کر وہ جلسہ میں معقول سا انسان نظر آئے۔ ان امور کے متعلق اطمینان کر لینے کے بعد اس کے کپڑے پہننے کے سلیقہ پر بھی نظر ڈالی جاتی ہے، کیوں کہ بعض ایسے شرفا بھی سفید پوشوں میں نظر آتے ہیں جو اپنی بہترین بش شرٹ کا ستیاناس اس طرح کر کے رکھ دیتے ہیں کہ اُوپر کے دو بٹن چھوڑ کر تیسرے بٹن کو سب سے اُوپر والے کاج میں لگا دیتے ہیں اور اپنی اس حماقت سے بالکل بے خبر رہتے ہیں۔ بعض یہی سلوک پتلون کے سامنے کے دو بٹنوں اور کاجوں کے ساتھ روا رکھتے ہیں۔ اور پھر کئی ایسے بھی بے خبر ہوتے ہیں جو پتلون کے زپ یا بٹنوں کے استعمال کو یکسر بے ضرورت سمجھتے ہیں۔

خیر ان بے ہودگیوں سے ہٹ کر صدر کے انتخاب میں صدر کی صحت کا جائزہ بھی لیا جاتا ہے۔ بانیانِ جلسہ اپنے شکار کو بالکل اسی طرح دیکھتے ہیں جس طرح کوئی ماہر باروچی مرغ خریدتے وقت اس کے صحت مند ہونے کا یقین کر لینا چاہتا ہے۔ بات یہ ہے کہ زندگی اس وقت ایک ایسے دور سے دوچار ہے جس میں عام سفید پوش سیاہ منڈی میں سفید چینی کی قیمت سن کر مارے غصہ کے لال پیلا ہو جاتا ہے۔ وہ چینی کو چائے کی پیالی میں اسی احتیاط اور اختصار سے ڈالتا ہے جیسے کوئی ہومیو پیتھک ڈاکٹر دوائی کی پڑیاں بنا رہا ہو، صابن کی قیمتوں کی ترقیِ اقبال کی وجہ سے اس کے استعمال میں اس پر اس طرح نرمی سے ہاتھ پھیرتا ہے جس طرح کوئی بزرگ کسی برخوردار کو دعا دیتے وقت اس کے سر پر شفقت سے ہاتھ پھیرتا ہے۔ اور ٹوتھ پیسٹ کی قیمتوں پر آئے ہوئے عروج سے مرعوب ہو کر اس کو ٹوتھ برش پر ایسی چابکدستی سے بکھیرتا ہے جس طرح کوئی پیتھالوجی کا ماہر قطرۂ خون کو شیشے کی سلائیڈ پر یہ جاننے کے لیے پھیلاتا ہے کہ آخر اس نے مریض کے دل میں اس قدر شور کیوں مچا رکھا تھا۔ ایسے دورِ حیات میں صاحبِ صدر کے رشتۂ حیات کی پختگی کو جانچنا اس لیے ضروری سمجھا جاتا ہے کہ کہیں دورانِ جلسہ صاحبِ صدر پر دل کا دورہ نہ پڑ جائے اور منتظمین جلسہ کے لیے یہ ضروری ہو جائے کہ پہلے کسی ڈاکٹر کو فوراً فراہم کریں۔ پھر اسٹریچر اور امبولنس کا انتظام کریں، صدر کو اس میں ڈال کر اسپتال پہنچائیں اور اگر موصوف راستہ ہی میں ملکِ عدم کے راستہ پر پڑ جائیں تو ان کے کفن دفن کا اہتمام بھی کریں۔

پھر بانیانِ جلسہ اس بات کا یقین بھی کر لینا چاہتے ہیں کہ صدارت کے لیے

पास कम अज़ कम एक जोड़ा कपड़ों का ऐसा जोड़ा हो जिनको पहन कर वह जलसे में माकूल सा इन्सान नज़र आये। इन उमूर के मुतआलिक इत्मीनान कर लेने के बाद उसके कपड़े पहनने के सलीके पर भी नज़र डाली जाती है, क्योंकि बाज़ ऐसे शोरफ़ा भी सफ़ेद पोशों में नज़र आते हैं जो अपनी बेहतरीन बुश–शर्ट का सत्यानाश इस तरह कर के रख देते हैं कि उपर के दो बटन छोड़ कर तीसरे बटन को सब से उपर वाले काज में लगा देते हैं और अपनी हिमाक़त से बिल्कुल बे ख़बर रहते हैं। .बाज़ यही सुलूक पतलून के सामने के दो बटनों और काजों के साथ रवा रखते हैं। और फ़िर कई ऐसे भी बे ख़बर होते हैं जो पतलून की ज़िप के इस्तेमाल को यकसर बे ज़रुरत समझते हैं।

ख़ैर इन बेहूदगियों से हटकर सद्र के इन्तख़ाब में सद्र की सेहत का जायज़ा भी लिया जाता है। बानियाने–जलसा अपने शिकार को बिल्कुल उसी तरह देखते हैं जिस तरह कोई माहिर बावरची मुर्ग़ खरीदते वक़्त उसके सेहतमंद होने का यक़ीन कर लेना चाहता है। बात यह है कि ज़िंदगी इस वक़्त एक ऐसे दौर से दोचार है जिस में आम सफ़ेद पोश सियाह मंडी में सफ़ेद चीनी की कीमत सुनकर मारे गुस्से के लाल पीला हो जाता है। वह चीनी को चाय की प्याली में उसी एहतयात और एख़्तसार से डालता है जैसे कोई होमियोपैथिक डाक्टर दवाई की पुड़यॉं बना रहा हो, साबुन की क़ीमतों की तरक़्क़ीए–इक़बाल की वजह से इस के इस्तेमाल में उस पर इस तरह नरमी से हाथ फेरता है जिस तरह कोइ बुज़ुर्ग किसी बरखुरदार को दुआ देते वक़्त उसके सर पर शफ़क़त से हाथ फेरता है। और टूथ पेस्ट की क़ीमतों पर आये हुए उरुज से मरऊब होकर उसको टूथ ब्रश पर ऐसी चाबुकदस्ती से बिखेरता है जिस तरह कोई पैथालोजी का माहिर क़तरए–ख़ून को शीशे की स्लाइड पर से जानने के लिए फैलाता है कि आख़िर इस ने मरीज़ के दिल में इस क़द्र शोर क्यों मचा रखा था। ऐसे दौरे हयात में साहबे सद्र के रिश्तए–हयात की पुख़्तगी को जॉंचना इसलिए ज़रुरी समझा जाता है कि कहीं दौराने जलसा साहबे सद्र पर दिल का दौरा न पड़ जाये और मुन्तज़ेमीने–जलसा के लिए यह ज़रुरी हो जाए कि पहले किसी डाक्टर को फ़ौरन फ़राहम करें। फिर स्ट्रेचर और एम्बूलेंस का इन्तज़ाम करें, सद्र को उस में डाल कर अस्पताल पहुँचाएं और अगर मौसूफ़ रास्ते ही में मुल्के–अदम के रास्ते पर पड़ जायें तो उनके कफ़न दफ़न का एहतमाम भी करें।

फिर बानियाने जलसा इस बात का यक़ीन भी कर लेना चाहते हैं कि सदारत के लिए जिस शख़्स को गांठा जा रहा है वह पाबंदी से

جس شخص کو گانٹھا جا رہا ہے وہ پابندی سے وقت پر جلسہ گاہ وارد ہو جائے گا۔ وہ کسی ایسے جھمیلے میں پڑنا نہیں چاہتے جس میں صاحب صدر اِنکم ٹیکس نہ دینے کی پاداش میں گرفتار ہو کر بوقتِ صدارت جیل خانے میں تشریف فرما، مچھروں اور کھٹملوں سے نبرد آزمائی کر رہے ہوں یا پھر گرفتار ہونے کے ڈر سے راہ فرار اختیار کر چکے ہوں۔ چنانچہ وہ ایسے سفید پوش کو ڈھونڈتے ہیں جو اِنکم ٹیکس کے محکمہ کی دسترس سے باہر ہو، مگر ایسا بھی نہ ہو جو اپنی شرافت کو بھاڑ میں جھونکتے ہوئے منہ پھاڑ کر سفر خرچ، بھتہ، اور صدارت کے دوران پہنے جانے والے کپڑوں کی دھلوائی اور استری کروانے کے اخراجات طلب کر بیٹھے۔ ان کے پیشِ نظر تو ایسا شخص ہوتا ہے جو نہ صرف سفر خرچ وغیرہ کا مطالبہ نہ کرے بلکہ مقامِ جلسہ پر پہنچنے کے لیے جو راستہ اسے اختیار کرنا ہو اس راہ پر آتے ہوئے چند کارکنوں کو بھی اپنی شکستہ حال موٹر میں بٹھا کر ساتھ لیتا آئے تاکہ صاحب صدر کو جلسہ گاہ کی تلاش میں زحمت نہ اُٹھانی پڑے۔ بعض مرتبہ تو ہوشیار جلسہ ساز تکلف برطرف کرتے ہوئے صدرِ جلسہ کو اس بات کا پابند بھی کر دیتے ہیں کہ آتے ہوئے مائیکروفون فٹ کرنے والے کو ساز و سامان کے ساتھ لیتے آئیں۔ ایسی صورت میں بعض مرتبہ ایسی صورتِ حال بھی پیدا ہو چکی ہے کہ لفٹ دینے کے بعد مائیکروفون لگانے کی اُجرت بھی صاحب صدر کو بالآخر ادا کرنی پڑی، کیوں کہ جلسہ کے بعد جملہ بانیانِ و منتظمینِ جلسہ ہوا میں تحلیل ہو گئے تھے!

•••••••

वक़्त पर जलसा गाह वारिद हो जायेगा। वह किसी ऐसे झमेले में नहीं पड़ना चाहते जिस में साहबे सद्र इन्कम टैक्स न देने की पादाश में गिरफ़्तार होकर बवक़्ते सदारत जेल ख़ाने में तशरीफ़ फ़रमा, मच्छरों और खटमलों से नबर्द आज़माई कर रहे हों या फिर गिरफ़्तार होने के डर से राहे–फ़रार अख़्तियार कर चुके हों। चुनांचे वह ऐसे सफ़ेद–पोश को ढूंढते हैं जो इन्कम टैक्स के मोहकमे की दस्तरस से बाहर हो, मगर ऐसा भी न हो जो अपनी शराफ़त को भाड़ में झोंकते हुए मुँह फाड़ कर सफ़र ख़र्च, भत्ता, और सदारत के दौरान पहने जाने वाले कपड़ों की धुलवाई और स्त्री करने वाले के एख़राजात तलब कर बैठे। उन के पेशे–नज़र तो ऐसा शख़्स होता है जो न सिर्फ़ सफ़र ख़र्च वग़ैरह का मोतालबा न करे बल्कि माक़ामे जलसा पर पहुँचने के लिए जो रास्ता उसे अख़्तियार करना हो उस राह पर आते हुए चन्द कारकुनों को भी अपनी शिकस्ता हाल मोटर में बिठा कर साथ लेता आये ताकि साहबे सद्र को जलसा–गाह की तलाश में ज़हमत न उठानी पड़े। बाज़ मर्तबा तो होशियार जलसा साज़ तकल्लुफ़ बरतरफ़ करते हुए सद्रे–जलसा को इस बात का पाबन्द भी कर देते हैं कि आते हुए माइक्रोफ़ोन फ़िट करने वाले को साज़ो–सामान के साथ लेते आयें। ऐसी सूरत में बाज़ मर्तबा ऐसी सूरते हाल भी पैदा हो चुकी है कि लिफ़्ट देने के बाद माइक्रोफ़ोन लगाने की उजरत भी साहबे सद्र को बिलआख़िर अदा करनी पड़ी, क्योंकि जलसे के बाद जुम्ला बानियाने व मुन्तज़ेमीने जलसा हवा में तहलील हो गये थे!

•••••••

ابراہیم جلیس

دماغ چاٹنے والے

میرے مُلاقاتیوں کی تعداد مُعین نہیں ہے مگر ان میں چند مُلاقاتی ایسے ہیں جن کے بارے میں رہ رہ کر مجھے یہ خیال آتا ہے کہ کاش اُن سے میری مُلاقات نہ ہوتی یا کاش اب اُن سے میری راہ و رسم منقطع ہو جائے۔ یہ ضرور ہے کہ پہلی بار جب میں کسی مُلاقاتی سے ملتا ہوں تو عادتاً یہ ضرور کہہ دیتا ہوں کہ "مجھے آپ سے مل کر بڑی خوشی ہوئی"...... یہ جملہ تو بالکل رسمی ہے اس کے معنی و مفہوم اور اس کی اہمیت پر غور کیے بغیر خود بخود زبان سے نکل جاتا ہے۔ لیکن اس کا یہ مطلب تو نہیں کہ اس جُملے سے ناجائز فائدہ اٹھایا جائے اور اس لیے بار بار مُلاقات کی جائے کہ پہلی بار مجھے ان سے مل کر بڑی خوشی ہوئی تھی۔ ویسے اب میں سچ سچ بتا دوں کہ اب تو ان مُلاقاتیوں سے مل کر مجھے بے حد کوفت ہوتی ہے۔ جی چاہتا ہے کہ ذرا ڈھیٹ بن کر، ذرا بے مُرّوت ہو کر صاف صاف کہہ دوں کہ صاحبان! میں آپ سے ہرگز نہیں ملنا چاہتا۔ مجھے آپ سے مل کر نہ پہلی بار خوشی ہوئی تھی اور نہ اب ہوئی ہے اور نہ آئندہ کبھی ہو سکتی ہے۔ میں بڑی عاجزی سے درخواست گزار ہوں کہ مجھے معاف کیجیے اور خُدا کے لیے میرا پیچھا چھوڑ دیئے۔

इब्राहीम जलीस

दिमाग़ चाटने वाले

मेरे मुलाक़ातियों की तादाद मोअइय्यन[1] नहीं है मगर उनमें चंद मुलाक़ाती ऐसे हैं जिनके बारे में रह–रहकर मुझे ख़याल आता है कि काश उनसे मेरी मुलाक़ात न हुई होती या काश अब उनसे मेरी राहो–रस्म मुन्क़ता हो जाये। यह ज़रुर है कि पहली बार जब मैं किसी मुलाक़ाती से मिलता हूँ तो आदतन यह ज़रुर कह देता हूँ कि "मुझे आपसे मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई...... यह जुम्ला तो बिल्कुल रस्मी है इसके माने व मफ़हूम और इसकी अहमियत पर ग़ौर किये बग़ैर ख़ुद–बख़ुद ज़बान से निकल जाता है। लेकिन इसका यह मतलब तो नहीं कि इस जुम्ले से नाजायज़ फ़ायदा उठाया जाय और इसलिए बार–बार मुलाक़ात की जाये कि पहली बार मुझे उनसे मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई थी। वैसे अब मैं सचमुच बता दूँ कि अब उन मुलाक़तियों से मिलकर मुझे बड़ी कोफ़्त होती है। जी चाहता है ज़रा ढीट बनकर, ज़रा बेमुरव्वत होकर साफ़ कह दूँ कि साहिबान! मैं आपसे हर्गिज़ नहीं मिलना चाहता। मुझे आपसे मिलकर न पहली बार ख़ुशी हुई थी और न अब हुई है और न आइन्दा कभी हो सकती है। मैं बड़ी आजिज़ी से दरख़्वास्त गुज़ार हूँ कि मुझे माफ़ कीजिये और ख़ुदा के लिए मेरा पीछा छोड़िये।

---

1. तय

لیکن کیا اب میں ایسا کہہ سکتا ہوں؟ نہیں نہیں، شاید میں ایسا نہیں کہہ سکتا۔ میں لاکھ کوشش کروں تب بھی ایسا نہیں کہہ سکتا۔ کیوں کہ مجھ میں وہ اخلاقی جرأت ہی نہیں ہے جس کی ہر بڑے آدمی نے تلقین کی ہے اور جو ابتدائے آفرینش سے آج تک (پیغمبروں اور غیر معمولی آدمیوں کو چھوڑ کر) کسی انسان میں پیدا نہ ہوسکی۔ اس دُنیائے آب وگل میں اخلاقی جرأت کو اتنی اہمیت حاصل نہیں ہے جتنی کہ اخلاقی بُودلی کو حاصل ہے۔ اخلاقی بُودلی کے لیے دل گردے کی ضرورت نہیں۔ البتہ اخلاقی جرأت رکھنا بڑے دل گردے کا کام ہے۔ لیکن چوں کہ میرے دل گردے بہت کمزور ہیں اور فطرتاً تن آسان بھی ہوں اس لیے مجھ میں اخلاقی جرأت پیدا ہو ہی نہیں سکتی، چنانچہ ہر زید، بکر، عمر سے پہلی ملاقات پر میں بے کھٹکے یعنی بغیر سوچے سمجھے کہہ دیتا ہوں کہ مجھے آپ سے مل کر بڑی خوشی ہوئی۔

مگر ازراہ انصاف آپ فرمائیے کہ سید شاہ ضیاء الحسن سے مل کر کسی صحیح عقل و دماغ رکھنے والے انسان کو خوشی ہوسکتی ہے؟

مجھے اپنے دوست محمّد ریاض خاں پر بے حد غصہ آتا ہے کہ جس نے سیّد شاہ ضیاء الحسن سے ایک مبارک یا منحوس دن میرا تعارف کرایا۔ یہ کوئی سخن سازی نہیں بلکہ ایک کھلی ہوئی حقیقت ہے کہ جس دن بھی سیّد شاہ ضیاء الحسن سے کسی شخص کا تعارف ہوگا وہ دن اس شخص کے لیے یقیناً ایک منحوس دن ہوگا۔ چنانچہ میری زندگی میں اب اس منحوس دن کے علاوہ روز بروز منحوس گھڑیوں کا اضافہ ہوتا جارہا ہے۔ کیوں کہ یہ سیّد شاہ ضیاء الحسن روز روز مجھ سے ملتا ہے۔ میں جتنا اس سے دُور بھاگتا ہوں اُتنا ہی تیزی سے میری طرف دوڑتا ہے۔ مجھے پکڑ لیتا ہے اور مجھے اپنی شکست مان کر مجبوراً دانت کھول کر مسکرانا پڑتا ہے اور پھر میں پوچھتا ہوں:

''اوہ، سیّد شاہ ضیاء الحسن صاحب! کہیے مزاج تو اچھے ہیں؟'' اب پھر کچھ نہ پوچھیے۔ سیّد شاہ ضیاء الحسن کی زبان چلنے لگتی ہے۔ اس کی زبان چلنے لگتی ہے تو پھر گھنٹوں چلتی رہتی ہے رُکنے کا نام ہی نہیں لیتی۔ آپ بیٹھے اور اپنے صبر و ضبط کا امتحان دیتے رہیے۔ نتیجتاً ناکامی آپ کو یا مجھے ہی ہوگی۔ سیّد شاہ ضیاء الحسن کبھی ناکام نہیں ہوسکتا۔

وہ اس خوش فہمی میں مبتلا ہے کہ چوں کہ وہ دو دو تین تین گھنٹوں تک بے تکان

लेकिन अब मैं ऐसा कह सकता हूँ? नहीं–नहीं, शायद मैं ऐसा नहीं कह सकता। मैं लाख कोशिश करूँ तब भी ऐसा नहीं कह सकता। क्योंकि मुझमें वह अख़्लाक़ी जुर्रत ही नहीं है जिसकी हर बड़े आदमी ने तल्कीन की है और जो इब्तेदए–आफ़रीनश[1] से आज तक (पैगम्बरों और गैर मामूली आदमियों को छोड़कर) किसी इन्सान में पैदा न हो सकी। इस दुनियाए–आबो–गिल में अख़्लाकी जुर्रत को इतनी अहमियत हासिल नहीं है जितनी कि अख़्लाक़ी बुज़दिली को हासिल है। अख़्लाक़ी बुज़दिली के लिए गुर्दे की ज़रुरत नहीं। अलबत्ता अख़्लाक़ी जुर्रत रखना बड़े दिल गुर्दे का काम है। लेकिन चूंकि मेरे दिल गुर्दे बहुत कमज़ोर हैं और फ़ितरतन तन–आसान भी हूँ इसलिए मुझमें अख़्लाक़ी जुर्रत पैदा हो ही नहीं सकती, चुनान्चे हर ज़ैद, बकर, उमर से पहली मुलाक़ात पर मैं बे खटके यानी बग़ैर सोचे समझे कह देता हूँ कि आपसे मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई।

मगर अज़ राहे–इन्साफ़ आप फ़रमाइये कि सैयद शाह ज़ियाउल हसन से मिलकर किसी सही अक़्लो–दिमाग़ रखने वाले इन्सान को ख़ुशी हो सकती है?

मुझे अपने दोस्त मुहम्मद रियाज़ ख़ाँ पर बेहद गुस्सा आता है कि जिसने सैयद शाह ज़ियाउल हसन से एक मुबारक या मनहूस दिन मेरा तआर्रुफ़ कराया। यह कोई सुख़न–साज़ी[2] नहीं बल्कि एक खुली हुई हक़ीक़त है कि जिस दिन सैयद शाह ज़ियाउल हसन से किसी शख़्स का तआर्रुफ़ होगा वह दिन उस शख़्स के लिए यक़ीनन एक मनहूस दिन होगा। चुनान्चे मेरी ज़िन्दगी में अब इस मनहूस दिन के अलावा रोज़–बरोज़ मनहूस घड़ियों में इज़ाफ़ा होता जा रहा है। क्योंकि यह सैयद शाह ज़ियाउल हसन रोज़–रोज़ मुझसे मिलता है। मुझे पकड़ लेता है और मुझे अपनी शिकस्त मानकर मजबूरन दाँत खोलकर मुस्कुराना पड़ता है और फिर मैं पूछता हूँ :

"ओह, सैयद शाह ज़ियाउल हसन साहब! कहिये मिज़ाज तो अच्छे हैं?" अब फिर कुछ न पूछिए। सैयद शाह ज़ियाउल हसन की ज़बान चलने लगती है। उसकी ज़बान चलने लगती है तो फिर घंटों चलती रहती है, रुकने का नाम ही नहीं लेती। आप बैठें और अपने सब्रो–ज़ब्त का इम्तेहान देते रहिए। नतीजतन नाकामी आपको या मुझको होगी। सैयद शाह ज़ियाउल हसन कभी नाकाम नहीं हो सकता।

वह इस ख़ुशफ़हमी में मुबतला है कि चूंकि वह दो–दो तीन–तीन घंटों तक बेतकान गुफ़्तगू कर सकता है और सुनने वाले चुपचाप उसकी

1. आदिकाल 2. शायरी

گفتگو کر سکتا ہے اور سُننے والے چُپ چاپ اس کی باتیں سُنتے رہتے ہیں تو یقیناً اس کی گفتگو بڑی دلچسپ ہوتی ہے جبھی تو لوگ اپنے زخمِ جگر کو دیکھنے کی بجائے ہمہ تن گوش ہو کر بڑے انہماک سے اس کی باتیں سُنتے رہتے ہیں۔

سید ضیاء الحسن کبھی یہ جاننے یا محسوس کرنے کی کوشش نہیں کرے گا کہ آپ کس موڈ میں ہیں۔ وہ اس کی کبھی پروا نہیں کرے گا کہ آپ کو بُخار اور دردِ سر ہے یا آپ اپنی محبوبہ کا بے چینی سے انتظار کر رہے ہیں۔ اسے تو بس یہ خوش فہمی ہے کہ وہ بڑا دلچسپ باتونی یا ایک اچھا مجلسی آدمی ہے۔ اس لیے وہ باتیں شروع کر دیتا ہے۔ ہر قسم کی باتیں، ہر موضوع کی باتیں، ایران کی باتیں، توران کی باتیں، مہمل باتیں، بے کار باتیں۔ ضیاء الحسن باتیں ہی باتیں کرتا رہتا ہے۔ مگر نزدیک سے بغور دیکھنے پر بھی پتہ نہیں چلتا کہ وہ باتیں نہیں کر رہا بلکہ اپنے مخالف کا دماغ چاٹ رہا ہے۔

میں مانتا ہوں کہ انسان کے حلق میں زبان اسی لیے جڑ دی گئی ہے کہ وہ باتیں کرے۔ باتیں کرنا ہرگز کوئی غیر انسانی حرکت نہیں۔ مگر مجھے یہ کہنے میں ذرہ برابر بھی باک نہیں ہے کہ دماغ چاٹنا یقیناً غیر انسانی حرکت ہے۔

ضیاء الحسن جب کبھی ملتا ہے تو پہلے یہ ضرور کہہ دیتا ہے ''نہیں نہیں، کوئی خاص بات نہیں، بس ادھر سے گزر رہا تھا۔ سوچا تم سے دو ایک منٹ کے لیے باتیں کرتا چلوں''۔

اب سنیئے اس کی دو ایک منٹ کی باتیں۔

''ارے بھئی...... کچھ سنا تُم نے...... ابھی ابھی ایک افسوسناک واقعہ ہُوا۔ وہ موہن لال ہے نا...... چلتی گاڑی سے گر پڑا۔ بیچارے کو بڑی سخت چوٹ آئی''۔

میں پوچھتا ہوں:

''کون موہن لال''؟

وہ حیرت سے کہتا ہے!

''ارے موہن لال کو نہیں جانتے۔ ہاں ہاں، موہن لال کو تُم نہیں جانتے۔ تم اس سے کبھی ملے ہی نہیں۔ موہن لال بیچارہ ایک بڑا پیارا دوست ہے۔ ڈپٹی دیا نرائن کا بھانجا۔ بڑا دلچسپ، ہنس مکھ بالکل ڈپٹی نرائن کی طرح خوش مذاق اور زندہ دل...... ہے

बातें सुनते रहते हैं तो यक़ीनन उसकी गुफ़्तगू बड़ी दिलचस्प होती है, जभी तो लोग अपने ज़ख़्मे–जिगर को देखने के बजाए हमातन–गोश[1] होकर बड़े इन्हमाक से उसकी बातें सुनते रहते हैं।

सैयद शाह ज़ियाउल हसन कभी यह जानने या महसूस करने की कोशिश नहीं करेगा कि आप किस मूड में हैं। वह इसकी कभी परवा नहीं करेगा कि आपको बुख़ार और दर्दे–सर है या आप अपनी महबूबा का बेचैनी से इन्तज़ार कर रहे हैं। उसे तो बस यह ख़ुशफ़हमी है कि वह बड़ा दिलचस्प बातूनी या एक अच्छा मजलिसी आदमी है। इसलिए वह बातें शुरु कर देता है। हर क़िस्म की बातें, हर मौज़ू की बातें, ईरान की बातें, तूरान की बातें, मोहमल बातें, बेकार की बातें। ज़ियाउल हसन बातें ही बातें करता रहता है। मगर नज़दीक से बग़ौर देखने पर भी पता नहीं चलता कि वह बातें नहीं कर रहा है बल्कि अपने मुख़ालिफ़ का दिमाग़ चाट रहा है।

मैं मानता हूँ कि इन्सान के हलक़ में ज़बान इसी लिए जड़ दी गई है कि वह बातें करे। बातें करना हर्गिज़ कोई ग़ैर–इन्सानी हरकत नहीं। मगर मुझे यह कहने में ज़र्रा बराबर भी बाक नहीं है कि दिमाग़ चाटना यक़ीनन ग़ैर–इन्सानी हरकत है।

ज़ियाउल हसन जब कभी मिलता है तो पहले यह ज़रुर कह देता है "नहीं–नहीं, कोई ख़ास बात नहीं, बस इधर से गुज़र रहा था। सोचा तुमसे दो–एक मिनट के लिए बातें करता चलूँ।"

अब सुनिये उसकी दो–एक बातें।

"अरे भई.........कुछ सुना तुमने.........अभी–अभी एक अफ़सोसनाक वाक़या हुआ। वह मोहन लाल है ना........चलती गाड़ी से गिर पड़ा। बेचारे को सख़्त चोट आई"

मैं पूछता हूँ :

"कौन मोहन लाल?"

वह हैरत से कहता है!

"अरे मोहन लाल को नहीं जानते। हाँ–हाँ, मोहन लाल को तुम नहीं जानते। तुम उससे कभी मिले ही नहीं। मोहन लाल बेचारा एक बड़ा प्यारा दोस्त है। डिप्टी दया नारायण का भांजा। बड़ा दिलचस्प, हंसमुख

1. ध्यानपूर्वक

ہے، ڈپٹی دیانرائن کی کیا تعریف کی جائے ابھی ابھی پچھلی جولائی میں وہ سورگباش ہوئے ہیں...... بڑی حسرتناک موت تھی...... ہاں اس حسرتناک موت پر خوب یاد آیا۔ وہ بیچارا قمرالدین بھی تو مرگیا۔ اس کی موت بھی بڑی دردناک تھی۔ قمرالدین کو بھی شاید تم نہیں جانتے بیچارے کے چھوٹے چھوٹے بچے تھے۔

ارے ہاں بھئی ......تمہارے چھوٹے بچے کا مزاج اب کیسا ہے؟ کون سے ڈاکٹر کا علاج کروا رہے ہو۔ آج کل تو یہاں کوئی اچھا ڈاکٹر ہے ہی نہیں۔ سب نیم حکیم خطرہ جان ہیں۔ اب تو یار میرے علاج کرنے والے بھی ڈاکٹر ہیں اور کالج پڑھانے والے بھی ڈاکٹر ہیں۔ اس پر ایک بات یاد آئی۔ وہ جو ڈاکٹر فاروق حُسینؔ جو معاشیات کے پروفیسر تھے اُنھوں نے استعفیٰ دے دیا ہے۔ بڑا خوددار آدمی تھا۔ میں نے اپنی زندگی میں دو ہی خوددار آدمی دیکھے ہیں۔ ایک تو ڈاکٹر فاروق حُسینؔ دُوسرا اپنا محمد قاسم طبلہ مرچنٹ' تم نے محمد قاسم طبلہ مرچنٹ کا وہ واقعہ تو ضرور سُنا ہوگا کہ ایک بار انھوں نے ایک بڑے رئیس کا طبلہ دُرست کرنے سے انکار اس لیے کر دیا تھا کہ رئیس نے دُکان کے باہر ہی موٹر میں بیٹھے بیٹھے بڑی رعُونت سے کہا تھا کہ:

''اے میاں طبلے والے! ادھر آؤ اسے درست کرنا ہے''

محمد قاسم خوددار آدمی تھا۔ اُس نے ویسے دکان میں ہی بیٹھے بیٹھے کہا:

''غرض پڑی ہے تو موٹر سے اُتر کر یہاں آؤ، ورنہ اپنا راستہ ناپو!''

یہ ہے خودداری —— تجارت کرتا ہے، آزاد پیشہ آدمی ہے۔ وہ بھلا کسی رئیس کا ذلیل کیوں ہو؟ وہ تو اس وقت —— ارے بھائی جلیس! اُٹھ کھڑے ہوگئے۔ اماں یار بیٹھو۔ کہاں جا رہے ہو بیٹھو بھئی بیٹھو۔''

مگر میں نے جواب دیا کہ مجھے ساڑھے گیارہ بجے ایک صاحب سے ملنا ہے۔ معاف کرنا۔ ضیاءالحسن! میں محمد قاسم طبلچی کی داستانِ خودداری پوری طرح نہ سن سکا۔ مگر کیا کروں، مجبور ہوں۔ ٹھیک ساڑھے گیارہ بجے ان صاحب سے ملنا ضروری ہے اور اب گیارہ بجنے میں پندرہ منٹ باقی ہیں۔ اچھا پھر ملاقات ہوگی۔ خدا حافظ۔

बिल्कुल डिप्टी नरायण की तरह खुश–मज़ाक़ और ज़िंदा–दिल......है, डिप्टी नरायण की क्या तारीफ़ की जाये अभी–अभी पिछली जूलाई में वह स्वर्गवास हुए हैं.......बड़ी हसरतनाक मौत थी..... हाँ इस हसरतनाक मौत पर ख़ूब याद आया। वह बेचारा क़मरुद्दीन भी मर गया। उसकी मौत भी बड़ी दर्दनाक थी। क़मरुद्दीन को भी शायद तुम नहीं जानते बेचारे के छोटे–छोटे बच्चे थे।"

अरे हाँ भई..... तुम्हारे छोटे बच्चे का मिज़ाज अब कैसा है? कौन से डाक्टर का इलाज करवा रहे हो। आज कल तो यहाँ कोई अच्छा डाक्टर है ही नहीं। सब नीम हकीम ख़तरए–जान हैं। अब तो यार मेरे इलाज करने वाले भी डाक्टर हैं और कॉलेज पढ़ाने वाले भी डाक्टर हैं। इस बात पर एक बात याद आई। वह जो डाक्टर फ़ारुक़ हुसैन, जो मआशिआत[1] के प्रोफ़ेसर थे उन्होंने इस्तीफ़ा दे दिया है। बड़ा ख़ुद्दार आदमी था। मैंने अपनी ज़िन्दगी में दो ही ख़ुद्दार आदमी देखे हैं। एक तो डाक्टर फ़ारुक़ हुसैन, दूसरा अपना मुहम्मद क़ासिम तबला मार्चेंट, तुम ने मुहम्मद क़ासिम तबला मर्चेंट का वह वाक़या ज़रुर सुना होगा कि एक बार उन्होंने एक बड़े रईस का तबला दुरुस्त करने से इन्कार कर दिया था कि रईस ने दुकान के बाहर ही मोटर में बैठे–बैठे बड़ी रऊनत[2] से कहा था कि :

"ऐ मियाँ तबले वाले! इधर आओ इसे दुरुस्त करना है"

मोहम्मद क़ासिम ख़ुद्दार आदमी था। उसने वैसे ही दुकान में बैठे–बैठे ही कहा :

"ग़र्ज़ पड़ी है तो मोटर से उतर के यहाँ आओ, वरना अपना रास्ता नापो!"

यह है ख़ुद्दारी – तिजारत करता है, आज़ाद पेशा आदमी है। वह भला किसी रईस का दबैल क्यों हो? वह तो उस वक़्त – अरे भाई जलीस साहब! उठ खडे हो गये। अमाँ यार बैठो। कहाँ जा रहे हो बैठो भई बैठो।"

मगर मैंने जवाब दिया कि मुझे साढ़े ग्यारह बजे एक साहब से मिलना है। माफ़ करना। ज़ियाउल हसन! मैं मुहम्मद क़ासिम तबलची की दास्ताने–ख़ुद्दारी पूरी तरह न सुन सका। मगर क्या करूँ, मजबूर हूँ। ठीक साढ़े ग्यारह बजे उन साहब से मिलना ज़रुरी है और अब ग्यारह बजने में पन्द्रह मिनट बाक़ी हैं। अच्छा फिर मुलाक़ात होगी।
ख़ुदा हाफ़िज़।

---

1. अर्थशास्त्र 2. घमंड

اس کے بعد وہاں سے سر پر پاؤں رکھ کر بھاگتا ہوں۔ یہ بالکل جھوٹ ہے کہ ساڑھے گیارہ بجے مجھے کسی صاحب سے ملنا ہے۔ مگر یہ بالکل سچ ہے کہ مجھے زخمی موہن لال یا ان کے خوش مذاق، زندہ دل ماموں ڈپٹی دیانرائن آنجہانی یا چھوٹے چھوٹے بچوں والے مرحوم قمرالدین یا ڈاکٹر فاروق حُسین سابق پروفیسر معاشیات اور خوددار طبلہ مرچنٹ سے کوئی دلچسپی نہیں ہے۔ موہن لال، جسے میں جانتا تک نہیں تھا بھئی اگر موٹر سے گر پڑا تو میں کیا کروں؟ ڈپٹی دیانراین بڑے خوش مذاق اور زندہ دل آدمی تھے تو وہ ہوں گے۔ قمرالدین کی موت بڑی حسرتناک تھی تو بھئی اس کی موت میں میرا کیا دخل؟...... ڈاکٹر فاروق حُسین نے استعفیٰ دے دیا تو میرا کیا بگڑا؟ محمد قاسم طبلہ والے اگر خوددار ہیں تو ہوا کریں۔ مجھے تو ان سے طبلہ دُرست نہیں کرانا ہے۔

مجھے صرف اکیلے ضیاء الحسن ہی سے شکایت نہیں ہے۔ بلکہ ضیاء الحسن کے سارے بھائیوں سے شکوہ ہے۔ میرا روئے سخن ضیاء الحسن کے سگے یا رشتے کے بھائیوں کی طرف نہیں ہے بلکہ ضیاء الحسن کے پیشے کے بھائیوں یعنی ضیاء الحسن کی طرح دماغ چاٹو لوگوں سے ہے۔ دماغ چاٹنا نہ صرف ایک پیشہ ہے بلکہ اس کا شمار فنونِ لطیفہ میں بھی ہوتا ہے۔

سیّد شاہ ضیاء الحسن کے ہم پیشہ بھائی، ابوالفضل صاحب ہیں۔ یہ ابوالفضل صاحب کسی ضلع کی ایک تحصیل کے پیشکار ہیں۔ اپنی کسی نہ کسی کاروائی کے سلسلے میں ہر اٹھوارے پندھواڑے شہر آتے رہتے ہیں، اور جب بھی مجھ سے ملتے ہیں تو پہلا سوال یہ کرتے ہیں:

"میاں تم کب آئے؟"

میں جواب دیتا ہوں:

"جی میں تو یہیں ہوں، عرصے سے یہاں رہتا ہوں۔ میں تو پانچ سال سے کسی چھوٹے سے سفر پر بھی نہیں گیا۔"

وہ فرماتے ہیں:

"اوہ، وہ شاید آپ کے بھائی ہیں جو بمبئی میں ہیں۔"

उसके बाद वहाँ से सर पर पाँव रखकर भागता हूँ। यह बिल्कुल झूट है कि साढ़े ग्यारह बजे मुझे किसी साहब से मिलना है। मगर यह बिल्कुल सच है कि मुझे ज़ख़्मी मोहन लाल या उनके ख़ुश मज़ाक़, जिन्दा दिल मामूँ डिप्टी दया नरायण आँजहानी या छोटे–छोटे बच्चों वाले मरहूम क़मरुद्दीन या डाक्टर फ़ारुक़ हुसेन साबिक़ प्रोफ़ेसर मआशियात और ख़ुद्दार तबला मर्चेंट से कोई दिलचस्पी नहीं है। मोहन लाल जिसे मैं जानता तक नहीं था भई अगर मोटर से गिर पड़ा तो मैं क्या करूँ? डिप्टी दया नरायण बड़े ख़ुश मिज़ाज और जिन्दा–दिल आदमी थे तो वह होंगे। क़मरुद्दीन की मौत बड़ी हसरतनाक थी तो भई उसकी मौत में मेरा क्या दख़ल? ....डाक्टर फ़ारुक़ हुसेन ने इस्तीफ़ा दे दिया तो मेरा क्या बिगड़ा? मुहम्मद क़ासिम तबला वाले अगर ख़ुद्दार हैं तो हुआ करें। मुझे तो उनसे तबला दुरुस्त नहीं कराना है।

मुझे सिर्फ़ अकेले ज़ियाउल हसन ही से शिकायत नहीं है। बल्कि ज़ियाउल हसन के सारे भाइयों से शिकवा है। मेरा रुए–सुख़न ज़ियाउल हसन के सगे या रिश्ते के भाइयों की तरफ़ नहीं है बल्कि ज़ियाउल हसन के पेशे के भाइयों यानी ज़ियाउल हसन की तरह दिमाग़–चाटू लोगों से है। दिमाग़ चाटना न सिर्फ़ एक पेशा है बल्कि इसका शुमार फ़ुनूने–लतीफ़ा में भी होता है।

सैयद शाह ज़ियाउल हसन के हम–पेशा भाई, अबू फ़ज़ल साहब हैं। यह अबू फ़ज़ल साहब किसी ज़िले की एक तहसील के पेशकार हैं। अपनी किसी न किसी कारवाई के सिलसिले में हर अठवारे पंद्रहवाड़े शहर आते रहते हैं, और जब भी मुझसे मिलते हैं तो पहला सवाल यह करते हैं :

"मियाँ तुम कब आये?"

मैं जवाब देता हूँ :

"जी मैं तो यहीं हूँ, अर्से से यहाँ रहता हूँ। मैं तो पाँच साल से किसी छोटे से सफ़र पर भी नहीं गया।"

वह फ़रमाते हैं :

"ओह, वह शायद आपके भाई हैं जो बम्बई में हैं।"

میں کہتا ہوں:

''جی میرے تو کوئی بھائی بمبئی میں نہیں ہیں''

وہ مُصر ہو جاتے ہیں:

''ارے، کوئی تھے میاں تمہارے بمبئی میں؟''

اب میں ان سے کس طرح بحث کروں۔ اس لیے جھوٹ مُوٹ کہنے پر مجبور ہو جاتا ہوں: ''اچھا، آپ عابد حسین کو پوچھ رہے ہیں۔ جی، وہ تو بمبئی میں فلم ایکٹر بن گئے (حالانکہ عابد حسین تو یہیں ہیں اور یہیں ایک دفتر میں ملازم ہیں)

وہ خوش ہو کر فرماتے ہیں:

''ہاں، میں نے کہا تھا ناں، اچھا، اب آپ کیا کر رہے ہیں؟''

جی تو چاہتا ہے کہہ دوں، جھک مار رہا ہوں مگر چونکہ وہ میرے بزرگوں کے ملنے والوں میں سے ہیں اس لیے جواب دیتا ہوں:

''جی، ایک اخبار کا ایڈیٹر ہوں''

فرماتے ہیں:

''اخبار کے ایڈیٹر ہو! خوب، اچھا، آج کل اخباروں میں کیا چھپ رہا ہے؟''

ایسے سوال کے بعد اپنا اور ان کا جی ایک کر دینے کو جی چاہتا ہے۔ مگر انسان ایک بندۂ مجبور ہے اور وہ صرف تحصیل کے پیشکار ہیں بلکہ میرے بزرگوں کے ملنے جلنے والے بھی ہیں۔

وہ جب کبھی اپنی تحصیل سے شہر آتے تو ادھر کیے ہوئے سوالات ہر مرتبہ دہراتے ہیں اور دو تین گھنٹے تک برابر دماغ چاٹتے رہتے ہیں۔ مگر پرسوں میں نے انھیں بڑا چکمہ دیا۔ وہ شہر آئے تھے۔ اتفاق سے عابد روڈ پر نظر آ گئے۔ میں سائیکل پر جا رہا تھا۔ مجھے دیکھ کر پکارا:

''میاں! ارے ٹھہرو، ٹھہرو، بات تو سنو''

مگر میں نے بالکل انجان ہو کر پیڈل تیز کیے اور نام پلی سڑک پر مُڑ گیا۔ حالاں کہ مجھے معظم جاہی مارکیٹ جانا تھا۔

मैं कहता हूँ :

"जी मेरे तो कोई भाई बम्बई में नहीं हैं।"

वह मुसिर[1] हो जाते हैं :

"अरे, कोई थे मियाँ तुम्हारे बम्बई में?"

अब मैं उनसे किस तरह बहस करूँ। इसलिए झूट मूट कहने पर मजबूर हो जाता हूँ : अच्छा आप आबिद हुसेन को पूछ रहे हैं। जी, वह तो बम्बई में फ़िल्म एक्टर बन गये हैं (हालांकि आबिद हुसेन तो यहीं एक दफ़्तर में मुलाज़िम हैं)।

वह ख़ुश होकर फ़रमाते हैं :

"हाँ, मैंने कहा था नाँ, अच्छा, अब आप क्या कर रहे हैं?"

जी तो चाहता है कि कह दूँ, झक मार रहा हूँ मगर चूंकि वह मेरे बुज़ुर्गों के मिलने वालों में से हैं इसलिए जवाब देता हूँ :

"जी एक अख़बार का एडीटर हूँ"

फ़रमाते हैं :

"अख़बार के एडिटर हो! ख़ूब, अच्छा, आज कल अख़बारों में क्या छप रहा है?"

ऐसे सवाल के बाद अपना और उनका जी एक कर देने को जी चाहता है। मगर इन्सान एक बन्दए–मजबूर है और वह सिर्फ़ तहसील के पेशकार हैं बल्कि मेरे बुज़ुर्गों के मिलने जुलने वाले भी हैं।

वह जब भी कभी अपनी तहसील से शहर आते तो उधर किये हुए सवालात हर मर्तबा दोहराते हैं और दो–तीन घंटे तक बराबर दिमाग़ चाटते रहते हैं। मगर परसों मैंने उन्हें बड़ा चकमा दिया। वह शहर आये थे। इत्तफ़ाक़ से आबिद रोड पर नज़र आ गये। मैं साइकिल पर जा रहा था। मुझे देखकर पुकारा :

"मियाँ! अरे ठहरो, ठहरो, बात तो सुनो"

मगर मैंने बिल्कुल अंजान होकर पैडिल तेज़ किये और नामची सड़क पर मुड़ गया। हालाँकि मुझे मोअज़्ज़म जाही मार्केट जाना था।

---

1. हठ

ضیاء الحسن کے تیسرے برادرِ طریقت ہمارے ایک پڑوسی بزرگ بھی محکمہ مالگزاری کے پنشن یافتہ منتظم ہیں۔ انھیں بڑھاپے کی وجہ سے جلدی نیند نہیں آتی۔ اسی لیے بے خوابی کا وقت میرا دماغ چاٹنے میں گزارتے ہیں۔ روزانہ رات کو کھانے کے بعد آجاتے ہیں اور آتے ہی پہلا سوال یہ کرتے ہیں:

''سناؤ بابا! آج اخبار میں کیا لکھا ہے؟''

میں کوئی حافظ اخبار تو نہیں ہوں۔ اس لیے عمداً اخبار ان کی طرف بڑھا دیتا ہوں مگر وہ اخبار جوں کا توں واپس کرتے ہوئے فرماتے ہیں:

اخبار تو میں صبح کا ہی پڑھ چکا ہوں۔ اس میں کیا رکھا ہے۔ کچھ تو سناؤ۔ سٹالن ہندوستان پر کب ہلّہ بولنے والا ہے؟''

میرا ارادہ ہے کہ کسی دن جب میرے صبر و تحمل کا پیالہ چھلک جائے گا تو میں ان سے صاف صاف کہہ دوں گا کہ قبلہ نہ تو سٹالن کو باؤلے کتے نے کاٹا ہے کہ وہ ہندوستان پر حملہ کرے اور نہ مجھے کہ میں آپ کے ساتھ بیٹھ کر دو تین گھنٹوں تک اخبار کا آموختہ پڑھوں۔ آپ پنشن یافتہ ہیں۔ آپ کو بے خوابی کی شکایت ہے تو پھر آپ اپنے گھر بیٹھ کر تارے گنتے رہیے۔ میرا جوان وقت کیوں ضائع کرتے ہیں؟ میرا دماغ کہاں اتنا بیٹھا ہے کہ آپ بیٹھے چاٹا کیجیے۔ حضرت مجھے سونے دیجیے۔ رات کے گیارہ بج رہے ہیں۔ اپنی بزرگی یا میری سعادت مندی سے للّٰہ ناجائز فایدہ تو نہ اُٹھایئے۔

ضیاء الحسن کے ایک چوتھے ہم مشرب آرٹسٹ ہیں۔ لوگ انھیں ہرفن مولا کہتے ہیں مگر انھوں نے انتہائی سادگی سے اپنا تخلص بے کمال رکھا ہے۔ وہ ایک بہت اچھے شاعر، بہت اچھے افسانہ نگار، بہت اچھے مصوّر، بہت اچھے گویے اور بہت اچھے لطیفہ گو ہیں۔ بُلبُل ترنگ بھی بہت اچھا بجاتے ہیں۔ آج کل ناچ بھی سیکھ رہے ہیں۔ مگر ایک اچھا یا خرابی یہ ہے کہ وہ ''سُنانے کے مرض'' میں گرفتار ہیں۔ جب کبھی میں انھیں نظر آجاتا ہوں تو بس پکڑ کر موٹر میں بٹھا سیدھا گھر لے جاتے ہیں۔ حکم ہوتا ہے کہ پہلے چائے سگریٹ پی کر تازہ دم ہو جاؤ۔ چائے پی کر پہلا ہی سگریٹ جلاتا ہوں کہ وہ اپنی تازہ

ज़ियाउल हसन के तीसरे बिरादरे–तरीक़त हमारे एक पड़ोसी बुज़ुर्ग भी मोहकमए–मालगुज़ारी के पेंशन–याफ़्ता मुन्तज़िम हैं। उन्हें बुढ़ापे की वजह से जल्दी नींद नहीं आती। इसीलिए बेख़्वाबी का वक़्त मेरा दिमाग़ चाटने में गुज़ारते हैं। रोज़ाना रात को खाने के बाद आजाते हैं और आते ही पहला सवाल यह करते हैं :

"सुनाओ बाबा! आज अख़बार में क्या लिखा है?"

मैं कोई हाफ़िज़े–अख़बार तो हूँ नहीं। इसलिए अमदन्[1] अख़बार उनकी तरफ़ बढ़ा देता हूँ मगर वह अख़बार जूँ का तूँ वापिस करते हुए फ़रमाते हैं :

"अख़बार तो मैं सुबह ही पढ़ चुका हूँ। इसमें क्या रखा है। कुछ तो सुनाओ। स्टालिन हिन्दुस्तान पर कब हल्ला बोलने वाला है?"

मेरा इरादा है कि किसी दिन जब मेरे सब्रो–तहम्मुल का प्याला छलक जायेगा तो मैं उनसे साफ़–साफ़ कह दूँगा कि क़िब्ला न तो स्टालिन को बावले कुत्ते ने काटा है कि वह हिन्दुस्तान पर हमला करेगा और न मुझे कि मैं आपके साथ बैठकर दो–तीन घंटों तक अख़बार का आमोख़्ता[2] पढ़ूँ। आप पेंशन याफ़्ता हैं। आपको बेख़्वाबी की शिकायत है तो फिर आप अपने घर बैठकर तारे गिनते रहिए। मेरा जवान वक़्त क्यों ज़ाया करते हैं? मेरा दिमाग़ कहाँ इतना बैठा है कि आप बैठे चाटा कीजिये। हज़रत मुझे सोने दीजिये। रात के ग्यारह बज रहे हैं। अपनी बुज़ुर्गी या मेरी सआदत मन्दी से लिल्लाह फ़ायदा तो न उठाइये।

ज़ियाउल हसन के एक चौथे हम–मशरब आर्टिस्ट हैं। लोग उन्हें हरफ़नमौला कहते हैं मगर उन्होंने इन्तहाई सादगी से अपना तख़ल्लुस बेकमाल रखा है। वह एक बहुत अच्छे शायर, बहुत अच्छे अफ़साना निगार, बहुत अच्छे मुसव्विर, बहुत अच्छे गवय्ये और बहुत अच्छे लतीफ़ा–गो हैं। बुलबुल तरंग भी बहुत अच्छा बजाते हैं। आज कल नाच भी सीख रहे हैं। मगर एक अच्छाई या ख़राबी यह है कि वह "सुनाने के मर्ज़" में गिरफ़्तार हैं। जब कभी मैं उन्हें नज़र आ जाता हूँ तो बस पकड़ कर मोटर में बिठा सीधा घर ले जाते हैं। हुक्म होता है कि पहले चाय सिगरेट पीकर ताज़ा हो जाओ। चाय पीकर पहला ही सिगरेट जलाता हूँ कि वह अपनी ताज़ा

1. जान बूझ कर 2. पढ़ा हुआ पाठ

نظم یا غزل شروع کر دیتے ہیں۔ اب میں ہوں کہ بات بے بات واہ واہ کہنے لگتا ہوں۔ پندرہ بیس تازہ منظومات کا اسٹاک ختم ہو گیا تو وہ اندر سے چمڑے کا موٹا بیگ لے آئے۔ اب افسانے شروع ہوتے ہیں۔ رومانوی افسانے، سیاسی افسانے، تاریخی افسانے، جاسوسی افسانے۔

دو بج گئے۔ اندر سے دوپہر کا کھانا آ گیا۔ کھانا کھاتے کھاتے بھی اپنی نگارشات اور ان کی شانِ نزول زیرِ بحث آجاتی ہے۔ کھانا ختم کرنے کے بعد بچے کھچے مقالے، تقریریں، اقتباسات، ڈائری، کچھ بڑے لوگوں کے خطوط اور کچھ فرضی لڑکیوں کے محبت نامے۔ لیجیے اب پانچ بج گئے۔ شام کی چائے آتی ہے۔ شام کا وقت چوں کہ نثر نظم کے سے وزنی پروگراموں کے لیے موزوں نہیں ہوتا۔ اس لیے لطیفہ گوئی اور بیت بازی شروع ہو گئی۔ رات کے آٹھ بج گئے۔ اندر سے رات کا کھانا کھاتے کھاتے ٹیبل ٹاک ہوتی ہے نو بج جاتے ہیں۔ اب ذرا سکوت اور سناٹا طاری ہو جاتا ہے مگر اس پر بھی شہکار دکھانے لگے۔

"یہ تاج محل ہے، یہ نخلستان ہے، یہ نسیم جونیئر کی تصویر ہے۔"

"یہ ایک لڑکی کی تصویر ہے جس کے چہرے میں عشق کی ناکامی کے تاثرات ظاہر کرنے کے لیے میں نے انتہائی کوشش کی ہے"۔

میری یہ تیندوے کی تصویر اب کے سال بمبئی کی آرٹ ایگزبیشن میں بھیجی جانے والی ہے۔"

خدا خدا کر کے رات کے دو بج گئے۔ دو بجے سے موسیقی کا پروگرام ہو گیا۔ پھر رات کے پانچ بج گئے۔ اب بلبل ترنگ پر بھرویں بجانے لگے۔ یہ مجلس راگ و رنگ ابھی جاری تھی کہ قریب میں کسی ٹاپے سے مرغ بول پڑا۔ ایک مسجد سے مؤذن کی اذان گونجی۔

فرمایا: ارے دیکھا تم نے، آرٹسٹ کو گردشِ شام و سحر کی کوئی خبر نہیں ہوتی۔ اچھا۔ ارے تمہاری آنکھیں لال ہو رہی ہیں۔ اب تم سو جاؤ۔ میں ذرا شفق کا نظارہ کروں۔"

नज़्म या ग़ज़ल शुरु कर देते हैं। अब मैं हूँ कि बात बे बात वाह–वाह कहने लगता हूँ।

पन्द्रह–बीस ताज़ा मन्ज़ूमात का स्टॉक ख़त्म हो गया तो वह अंदर से चमड़े का मोटा बैग ले आये। अब अफ़साने शुरु होते हैं। रुमानवी अफ़साने, सियासी अफ़साने, तारीख़ी अफ़साने, जासूसी अफ़साने।

दो बज गये। अंदर से दोपहर का खाना आ गया। खाना खाते–खाते भी अपनी निगारशात और उनकी शाने–नुज़ूल ज़ेरे–बहस आ जाती हैं। खाना ख़त्म करने के बाद बचे–खुचे मकाले, तक़रीरें, एक़्तबासात, डायरी, कुछ बड़े लोगों के खुतूत और कुछ फ़र्ज़ी लड़कियों के मोहब्बत–नामे। लीजिये अब पाँच बज गये। शाम की चाय आती है। शाम का वक़्त चूंकि नस्र नज़्म के से वज़नी प्रोग्रामों के लिए मौज़ूँ नहीं होता। इसलिए लतीफ़ा–गोई और बैत–बाज़ी शुरु हो गई। रात के आठ बज गये। अंदर से रात का खाना खाते–खाते टेबल–टॉक शुरु होती है, नौ बज जाते हैं। अब ज़रा सकूत और सन्नाटा तारी हो जाता है मगर उस पर भी शहकार दिखाने लगे।

"यह ताजमहल है, यह नख़लिस्तान है, यह नसीम जूनीयर की तस्वीर है।"

"यह एक लड़की की तस्वीर है जिसके चेहरे में इश्क़ की नाकामी के तास्सुरात ज़ाहिर करने के लिए मैंने इन्तहाई कोशिश की है।"

"मेरी यह तेंदुये की तस्वीर – अब के साल बम्बई की आर्ट एक्ज़िबीशन में भेजी जाने वाली है।"

खुदा–खुदा करके रात के दो बज गये। दो बजे से मौसीक़ी का प्रोग्राम हो गया। फिर रात के पाँच बज गये। अब बुलबुल तरंग पर भैरवीं बजाने लगे। यह मजलिसे–रागो–रंग अभी जारी था कि क़रीब के किसी टापे से मुर्ग़ बोल पड़ा। एक मस्जिद से मोअज़्ज़िन की आज़ान गूँजी।

फ़रमायाः "अरे देखा तुमने, आर्टिस्ट को गर्दिशे शामो–सहर की कोई ख़बर नहीं होती। अच्छा। अरे तुम्हारी आँखें लाल हो रही हैं। अब तुम सो जाओ। मैं ज़रा शफ़क़ का नज़ारा करूँ"

میں سوچتا ہوں کہ کیا میں سو جاؤں؟ مگر شاید میں نہ سو سکتا ہوں اور نہ سوچ سکتا ہوں کیوں کہ میرے سر میں جتنا کچھ مغز تھا، آرٹسٹ نے سارے کا سارا چاٹ لیا ہے۔ اب مجھے کیا کرنا چاہیے؟

اب مجھے یہ کرنا چاہیے کہ جب بھی مجھے دوبارہ آرٹسٹ صاحب سے ملنا پڑے تو پہلے ہی اپنی بیوی بچوں کو وصیت کر آؤں۔ تاکہ پھر میں بھی آرٹسٹ بن جاؤں اور مجھے گردشِ شام وسحر کی خبر ہی نہ ہو۔ ظاہری بات ہے کہ جب سارا دماغ چاٹ لیا جائے تو پھر گردشِ شام وسحر کی خبر ہی نہ ہوگی۔

ضیاء الحسن صاحب کے پانچویں بھائی چودھری رام کرشن جی ہیں۔ بہت بچپن سے میرے ساتھ پرائمری جماعت میں پڑھتے تھے۔ پرائمری پاس کرنے کے بعد وہ اپنے بابا کی کپڑے کی دکان پر بیٹھ گئے۔ پھر زمانہ گزر گیا میں نے بی۔اے پاس کر لیا۔ اس کا رام کشن جی کو بھی پتہ چل گیا۔ وہ مجھے بڑا لائق آدمی سمجھنے لگے۔ اپنے کاروباری خطوط پڑھانے اور لکھانے کے علاوہ اپنے راج پھوڑے کے علاج سے لے کر اپنی لڑکی کی شادی تک ہر معاملہ میں مجھ سے مشورہ کرتے ہیں۔ ان کی گفتگو کا بار بار دہرایا جانے والا جملہ یہ ہے:

"بھئی تم علم وادب کے خوب چرچے کرتے ہو۔ کچھ بتاؤ تو سہی کہ کیا دیسی کپڑوں کے ساتھ ولایتی کپڑوں کی بھی تجارت کروں؟"

"کیا چھوٹے لڑکے کو گرجا کے اسکول میں بھیج دوں یا اپنے سرکاری مدرسے میں ہی شریک کراؤں؟"

"کیا راج پھوڑے کا آپریشن کراؤں یا دوائیاں ہی کھاتا رہوں؟"

"کیا دیوان خانے کی دیوار اینٹوں سے چنواؤں یا لکڑی کی جالی ٹھوکوا دوں؟"

"کیا حقہ چھوڑ کر سگریٹ شروع کر دوں یا صرف پان کھاؤں؟"

غرض کہ رام کشن جی ہر روز مجھ سے میری قابلیت کا امتحان لینے کے لیے کوئی نہ کوئی صلاح ومشورہ کرنے ضرور آتے ہیں اور محض اس لیے کہ میں بقول ان کے علم وادب

मैं सोचता हूँ कि क्या मैं सो जाऊँ? – मगर शायद मैं न सो सकता और न सोच सकता हूँ कि मेरे सर में जितना कुछ मग़ज था, आर्टिस्ट ने सारे का सारा चाट लिया है। अब मुझे क्या करना चाहिए?

अब मुझे क्या करना चाहिए कि जब भी मुझे दोबारा आर्टिस्ट साहब से मिलना पड़े तो पहले ही अपनी बीवी बच्चों को वसीअत कर आऊँ। ताकि फिर मैं भी आर्टिस्ट बन जाऊँ और मुझे गर्दिशे शामो–सहर की ख़बर ही न हो। ज़ाहिर सी बात है कि जब सारा दिमाग़ चाट लिया जाये तो फिर गर्दिशे–शामो–सहर की ख़बर ही न होगी।

ज़ियाउल हसन साहब के पाँचवे भाई चौधरी राम कृष्ण जी हैं। बहुत बचपन से मेरे साथ प्राइमरी जमाअत में पढ़ते थे। प्राइमरी पास करने के बाद वह अपने बाबा की कपड़े की दुकान पर बैठ गये। फिर ज़माना गुज़र गया मैंने बी. ए. पास कर लिया। इसका राम किशन जी को भी पता चल गया। वह मुझे बड़ा लायक़ आदमी समझने लगा। अपने कारोबारी ख़ुतूत पढ़ाने और लिखाने के अलावा अपने राज फोड़े के इलाज से लेकर अपनी लड़की की शादी तक हर मामले में मुझसे मशवरा करते हैं। उनकी गुफ़्तगू का बार–बार दोहराया जाने वाला जुम्ला यह है:

"भई तुम इल्मो–अदब के ख़ूब चर्चे करते हो। कुछ बताओ तो सही कि क्या देसी कपड़ों के साथ विलायती कपड़ों की भी तिजारत करूँ?"

"क्या छोटे लड़के को गिरजा के स्कूल में भेज दूँ या अपने सरकारी मदरसे से ही शरीक कराऊँ?"

"क्या राज फोड़े का ऑपरेशन कराऊँ या दवाइयाँ ही खाता रहूँ?"

"क्या दीवान ख़ाने की दीवार ईंटों से चुनवाऊँ या लकड़ी की जाली ठोकवा दूँ?"

"क्या हुक़्क़ा छोड़कर सिगरेट शुरु कर दूँ या सिर्फ़ पान खाऊँ?"

ग़रज़ कि राम किशन जी हर रोज़ मुझसे मेरी क़ाबिलयत का इम्तेहान लेने के लिए कोई न कोई सलाह व मशवरा करने ज़रुर आते और महज़ इसलिए कि मैं बक़ौल उनके इल्मो–अदब के ख़ूब चर्चे कर रहा हूँ

کے خوب چرچے کر رہا ہوں اور میری کھوپڑی میں بہت بڑا دماغ ہے۔ اب میں رام کشن جی کو کسی طرح سمجھاؤں کہ میری کھوپڑی میں جتنا کچھ مغز تھا وہ ضیاء الحسن نے، پیشکار تحصیل نے، پڑوسی بزرگ نے، آرٹسٹ نے اور خود آپ نے چاٹ ڈالا ہے اب میں آپ کو کیا مشورہ دے سکتا ہوں کہ اپنے راج پھوڑے کا آپریشن کرانے چاہیے یا نہیں۔

اس لیے اب مجھے معاف کیجیے اور اجازت دیجیے۔ خدا حافظ!

●--●--●--●

और मेरी ख़ोपड़ी में बहुत बड़ा दिमाग़ है। अब मैं राम किशन जी को किस तरह समझाऊँ कि मेरी ख़ोपड़ी में जितना कुछ मग़ज़ था – वह ज़ियाउल हसन ने, पेशकार तहसील ने, पड़ोसी बुज़ुर्ग ने, आर्टिस्ट ने और – खुद आपने चाट डाला है अब मैं आपको क्या मशवरा दे सकता हूँ कि अपने राज फोड़े का ऑपरेशन कराने चाहिए या नहीं।

इसलिए अब मुझे माफ़ कीजिये और इजाज़त दीजिए। ख़ुदा हाफ़िज़!

یوسف ناظم

شعروادب میں جانوروں کا حصّہ

ہمارے ادیبوں اور شاعروں نے عاشقوں اور بادشاہوں کو ادب میں خاصا اونچا مقام دے رکھا ہے بلکہ یوں کہنا چاہیے کہ ادب کا بیشتر حصہ انہی لوگوں پر صرف ہوا ہے۔ اس کا ہمیں کوئی خاص گلہ نہیں کیوں کہ جہاں عاشقانِ کرام یعنی فرہاد اور مجنوں کا تعلق ہے ان دونوں نے عشق و عاشقی کے میدان میں واقعی قابلِ قدر کارنامے انجام دیئے ہیں۔ دونوں کے دونوں نہایت دیانت دار، جفاکش، اور مخلص عاشق تھے۔ ان میں عقل کچھ کم تھی تو کیا ہوا دوسری خوبیاں تو بہرحال وافر مقدار میں تھیں اس لیے ان کی خدمات کو بھلایا جانا ممکن نہیں۔ کسی میونسپل کارپوریشن یا ضلع پریشد کو تو ان کے مجسمے بنوا کر سڑکوں پر یا پارکوں میں کھڑا کرنے کی توفیق نہیں ہوئی کیونکہ عام طور پر اس قسم کے کمرشیل ادارے عشق کی اہمیت سے ناواقف ہوتے ہیں۔ یا ممکن ہے فنڈ کی کمی کی وجہ سے ان سے یہ کام نہ ہو سکا ہو۔ اس میں شک نہیں کہ میونسپل ٹیکس مکانوں کی قیمت کے قریب قریب پہنچ گئے ہیں تاہم فرہاد اور مجنوں کے مجسموں کے خرچ کی گنجائش نکلنی اب بھی مشکل ہے۔ شہری زندگی میں تو

यूसुफ़ नाज़िम

शेरो–अदब में जानवरों का हिस्सा

हमारे अदीबों और शायरों ने आशिक़ों और बादशाहों को अदब में ख़ासा ऊँचा मक़ाम दे रखा है बल्कि यूँ कहना चाहिये कि अदब का बेश्तर हिस्सा इन्हीं लोगों पर सर्फ़ हुआ है। इसका हमें कोई ख़ास गिला नहीं क्योंकि जहाँ आशिक़ाने–कराम यानी फ़रहाद और मजनूँ का तअल्लुक़ है इन दोनों ने इश्क़ व आशिक़ी के मैदान में वाक़ई क़ाबिले–क़द्र कारनामे अन्जाम दिये हैं। दोनों के दोनों निहायत दयानतदार, जफ़ाकश,[1] और मुख़लिस आशिक़ थे। उनमें अक़्ल कुछ कम थी तो क्या हुआ दूसरी ख़ूबियाँ तो बहरहाल वाफ़िर मिक़दार[2] में थीं इसलिये उन की ख़िदमात को भुलाया जाना मुमकिन नहीं। किसी म्यूनिसपिल कार्पोरेशन या ज़िला परिषद को तो उनके मुजस्समे बनवाकर सड़कों पर या पार्कों में खड़ा करने की तौफ़ीक़ नहीं हुई क्योंकि आम तौर पर इस क़िस्म के कमरशियल इदारे[3] इश्क़ की अहमियत से नावाक़िफ़ होते हैं। या मुमकिन है फ़न्ड की कमी की वजह से उनसे यह काम न हो सका हो। इस में शक नहीं कि म्यूनिसपिल टैक्स मकानों की क़ीमत के क़रीब–क़रीब पहुँच गये हैं, ताहम फ़रहाद और मजनूँ के मुजस्मों के ख़र्च की गुंजाइश निकलनी अब भी मुश्किल है। शहरी ज़िंदगी में तो

1. मेहनती 2. काफ़ी मात्रा में 3. संस्थायें

انہیں داخلہ مل نہیں سکا اگر ادب میں بھی ان لوگوں کا ذکر نہ ہوتا تو معلوم نہیں انہیں یہ بات کتنی ناگوار گزرتی اور ان کی روحیں کتنا ایجی ٹیشن کرتیں۔ اسی طرح اگر چند بادشاہوں کو بھی ادب میں جگہ جگہ درج کر دیا گیا ہے تو کچھ بُرا نہیں ہوا کیوں کہ بعض بادشاہوں سے بھی، 'بھولے ہی سہی' کچھ نیک کام ضرور سرزد ہوئے ہیں۔ بعض بادشاہ تو عین رات کے وقت جو سب کے آرام کا وقت ہوتا ہے، بھیس بدل کر شہر کا دورہ کیا کرتے تھے کہ دیکھیں رعایا ٹھیک سے سوئی بھی ہے یا نہیں۔ (بادشاہوں کا چھپ کر، رعایا کی خانگی باتیں سُننا منع نہیں تھا۔ رعایا پر البتہ اس کی پابندی تھی) ان بادشاہوں کو اپنی گشت کے موقع پر عموماً رعایا آرام کی نیند سوتی ملی (رعایا کو آرام کی نیند سُلا دینے کا انتظام آج بھی ہے لیکن یہ انتظام اس زمانے کے انتظام سے قدرے مختلف بلکہ بہتر ہے' آج کے انتظام میں رعایا سو کر اُٹھتی نہیں ہے)۔ اِن بادشاہوں کو کچھ رعایا موسیقی میں مگن ملی لیکن وہ موسیقی صرف چین کی بنسری کی موسیقی تھی جو رعایا خود ہی بجاتی اور خود ہی سُنتی تھی۔ (اس میں میوزک ڈائرکٹر نہیں ہوا کرتا تھا)۔ بادشاہوں کا اس طرح بھیس بدل کر رعایا کی شکل کا ہو جانا اور وہ بھی اس مہارت سے کہ کوئی پہچان ہی نہ سکے معمولی بات نہ تھی (مانا کہ اس زمانے میں رعایا اتنی ذہین نہیں تھی لیکن پہچانتے پہچانتے تو آج بھی چھ سال لگ ہی جاتے ہیں۔ اس لیے اگر چند بادشاہوں کا ادب میں ذکر آ گیا ہے تو اس میں ناراض ہونے کی کوئی بات نہیں بلکہ ایک لحاظ سے یہ اچھا ہی ہوا ورنہ ان کے ذکر کے بجائے کسی شاعر کی سات نظمیں نو غزلیں یا کوئی تبصرہ چھپ جاتا۔ یوں بھی ہر زبان کے ادب میں سرکشی کی داستانیں کم اور زرکشی کی وارداتیں زیادہ ہیں۔

لیکن ہمارے شاعروں اور ادیبوں نے عاشقوں اور بادشاہوں کے علاوہ چند جانوروں اور پرندوں کو بھی ادب میں غیر معمولی منزلت سے نوازا ہے اور یہ لوگ بھی ادب میں یوں دندانہ چلے آئے ہیں گویا ادب نہ ہوا غالب کا غریب خانہ ہو گیا۔ اِن جانوروں میں سے دو تو ایسے ہیں جن کے ساتھ خصوصی رعایت برتی گئی ہے اور ان کے ساتھ اتنا امتیازی سلوک کیا گیا ہے کہ کیا کوئی ماں یا کوئی باپ اپنے بیٹے کے ساتھ کرے گا!

گھوڑا اور بلبل یہ دو افراد ایسے ہیں جنھوں نے ادب میں سب سے زیادہ جگہ

उन्हें दाख़िला नहीं मिल सका अगर अदब में भी उन लोगों का ज़िक्र न होता तो मालूम नहीं उन्हें यह बात कितनी नागवार गुज़रती और उन की रुहें कितना ऐजीटेशन करतीं। इस तरह अगर चंद बादशाहों को भी अदब में जगह-जगह दर्ज कर दिया गया है तो कुछ बुरा नहीं क्योंकि बाज़ बादशाहों से भी, 'भूले ही सही' कुछ नेक काम ज़रुर सरज़द हुऐ हैं। बाज़ बादशाह तो ऐन रात के वक़्त जो सबके आराम का वक़्त होता है, भेस ब' 'ल कर शहर का दौरा किया करते थे कि देखें रिआया ठीक से सोई है या नहीं। (बादशाहों का छुपकर, रिआया की ख़ानगी[1] बातें सुनना मना नहीं था। रिआया पर अलबत्ता इसकी पाबन्दी थी) इन बादशाहों को अपनी गश्त के मौक़े पर उमूमन रिआया आराम की नींद सोई मिली (रिआया को आराम की नींद सुला देने का इन्तज़ाम आज भी है लेकिन यह इन्तज़ाम उस ज़माने से क़दरे-मुख़्तलिफ़ बल्कि बेहतर है, आज के इन्तज़ाम में रिआया सो कर उठती नहीं)। इन बादशाहों को कुछ रिआया मौसीक़ी में मगन मिली लेकिन वह मौसीक़ी सिर्फ़ चैन की बंसरी की मौसीक़ी थी जो रिआया ख़ुद ही बजाती और ख़ुद ही सुनती थी। (इस में म्यूज़िक डाइरेक्टर नहीं हुआ करता था)। बादशाहों का इस तरह भेस बदल कर रिआया की शक्ल का हो जाना और वह भी इस महारत से कि कोई पहचान ही न सके मामूली बात न थी (माना कि इस ज़माने में रिआया इतनी ज़हीन नहीं थी लेकिन पहचानते पहचानते तो आज भी छः साल लग ही जाते हैं। इसलिये अगर चंद बादशाहों का अदब में ज़िक्र आ गया है तो इस मे नाराज़ होने की कोई बात नहीं बल्कि एक लिहाज़ से ये अच्छा ही हुआ वरना उनके ज़िक्र के बजाए किसी शायर की सात नज़्में, नौ गज़ले या कोई तब्सरा छप जाता। यूँ भी हर ज़बान के अदब में सरकशी की दास्तानें कम और ज़र-कशी[2] की वारदातें ज़्यादा हैं।

लेकिन हमारे शायरों और अदीबों ने आशिक़ों और बादशाहों के अलावा चंद जानवरों और परिंदों को भी अदब में ग़ैरमामूली मंज़िलत[3] से नवाज़ा है और ये लोग भी अदब में यूँ दर्राना[4] चले आये हैं गोया अदब न हुआ ग़ालिब का ग़रीबख़ाना हो गया। इन जानवरों में से दो तो ऐसे हैं जिनके साथ ख़ुसूसी रिआयत बरती गई है और उनके साथ इतना इम्तयाज़ी[5] सुलूक किया गया है कि क्या कोई माँ-बाप अपने बेटे के साथ करेगा। घोड़ा और बुलबुल ये दो अफ़राद ऐसे हैं जिन्हों ने अदब में सबसे ज़्यादा जगह घेर रखी है।

1. घरेलू 2. दोलत हासिल करना 3. आदर 4. बेधड़क
5. विशेष

گھیر رکھی ہے۔ ہماری ساری تشبیہات، استعارے، کنائے، روزمرہ، ضرب الامثال اور محاورے انہی دو شخصیتوں کے گرد گھومتے ہیں اور بعض وقت تو یہ خوف ہونے لگتا ہے کہ آئندہ چل کر اگر کسی سیاسی دباؤ کی وجہ سے اردو کے رسم الخط کی طرح یہ بھی نظر میں آ گئے اور ان دونوں کو ادب سے خارج کر دینا پڑا تو ادب میں سوائے مزاح کے اور بچے گا کیا؟

گھوڑا ہمارے ادب میں اور خاص طور پر شاعری میں اس طرح بس گیا ہے کہ ادب ہی کا باشندہ معلوم ہونے لگا ہے۔ یہ جانور یوں بھی اِنسانوں سے بہت قریب رہا ہے۔ اتنا قریب کہ اسے ڈپٹی اشرف المخلوقات تو کہا ہی جا سکتا ہے (لیکن زندگی کے اس شعبے میں ڈپٹی کا کوئی عہدہ ہے نہیں) گھوڑے کی ہم سے قربت کا یہ حال ہے کہ وہ ہماری سماجی، فوجی، سیاسی بلکہ ازدواجی زندگی تک میں دخیل ہے شادی کے موقعہ پر نوشہ گھوڑے ہی پر سوار ہو کر دلہن لانے جاتا ہے۔ گھوڑے پر بیٹھ کر نہ جانے والے دولھے کو دولھن تو خیر مل جاتی ہے لیکن جہیز نسبتاً کم مِلتا ہے۔ سوئمبر کے جشن میں بھی گھوڑے ہی نے مستحق اشخاص کی مدد کی ہے۔ اس کی فوجی اہمیت بھی مسلمہ ہے۔ کتنی ہی جنگیں انھوں نے ہرائی ہیں اور آج بھی گھوڑا جنگ کے میدان کا نہ سہی، ریس کے میدان کا تو ہیرو ہے ہی بلکہ ریس کے وجود میں آنے کی وجہ سے اس جانور کے شخصی وقار میں کافی اضافہ ہوا ہے۔ جنگ میں استعمال کیے جانے والے گھوڑوں کا شجرہ نہیں ہوا کرتا تھا لیکن ریس کے گھوڑوں کا شجرہ ہوا کرتا ہے اور جب تک ان کے حسب و نسب کے بارے میں خاطر خواہ اطمینان نہیں کر لیا جاتا انہیں ریس کے میدان کے قریب بھی نہیں آنے دیا جاتا ہے۔ ہاں ان کے مالکوں کی بات اور ہے۔ گھوڑے کی اس افادیت اور وجاہت سے متاثر ہو کر ادیبوں اور شاعروں نے بھی اپنی ہر چیز کو گھوڑے سے نسبت دے رکھی ہے۔ شاعر اور ادیب اپنی ہر چیز کا انتساب گھوڑے ہی کے نام کرتے ہیں۔ وہ اپنے قلم کو صرف قلم نہیں کہیں گے کیونکہ قلم تو بچوں کے بھی ہوا کرتے ہیں۔ شاعروں کا قلم یا تو اسپ خامہ ہوتا ہے یا اشہب قلم۔ لکھنے کی رفتار چاہے کتنی ہی سُست یا بے ڈھنگی کیوں نہ ہو وہ لکھیں گے اسپ خامہ ہی سے۔ شاعروں کا خیال بھی یا تو رہوارِ خیال ہوگا یا توسنِ خیال۔ خالی خیال انھیں زیب نہیں دیتا۔ ان کی رائے میں خالی خیال آدمیوں کا ہوا کرتا ہے۔ اکثر صورتوں میں شاعروں کے توسنِ خیال

हमारी सारी तश्बीहात[1], इस्तआरे,[2] कनाये[3], रोज़मर्रा[4], ज़रबुल–इमसाल[5] और महावरे इन्हीं दो शख़सियतों के गिर्द घूमते हैं और बाज़ वक़्त तो ये ख़ौफ़ होने लगता है कि आइन्दा चलकर अगर किसी सियासी दबाव की वजह से उर्दू के रस्मुल–ख़त की तरह ये भी नज़र में आ गये और इन दोनों को अदब से ख़ारिज कर देना पड़ा तो अदब में सिवाए मज़ाह के और बचेगा क्या?

घोड़ा हमारे अदब में और ख़ास तौर पर शायरी में इस तरह बस गया है कि अदब ही का बाशिन्दा मालूम होने लगा है। यह जानवर यूँ भी इन्सानों से बहुत क़रीब रहा है। इतना क़रीब कि उसे डिप्टी अश्रफुल–मख़लूक़ात[6] तो कहा ही जा सकता है (लेकिन जिन्दगी के इस शोबे में डिप्टी का कोई ओहदा है नहीं) घोड़े की हम से कुर्बत का यह हाल है कि वह हमारी समाजी, फ़ौजी, सियासी बल्कि अज़्दवाजी[7] ज़िंदगी तक मे दख़ील है। शादी के मौके पर नौशा घोड़े ही पर सवार होकर दुल्हन लाने जाता है। घोड़े पर बैठकर न जाने वाले दूल्हे को दुल्हन तो ख़ैर मिल जाती है लेकिन जहेज़ निस्बतन कम मिलता है। स्वयंबर के जश्न में भी घोड़े ही ने मुस्तहिक़ अश्ख़ास की मदद की है। इसकी फ़ौजी अहमीयत भी मुसलम्मा है। कितनी ही जंगे उन्हों ने हराई हैं और आज भी घोड़ा जंग के मैदान का न सही, रेस के मैदान का तो हीरो है ही बल्कि रेस के वजूद में आने की वजह से इस जानवर के शख़्सी–वक़ार में काफ़ी इज़ाफ़ा हुआ है। जंग में इस्तेमाल किये जाने वाले घोड़ों का शजरा[8] नहीं हुआ करता था लेकिन रेस के घोड़ों का शजरा हुआ करता है और जब तक उन के हसब व नसब के बारे में ख़ातिरख़्वाह इतमिनान नहीं कर लिया जाता उन्हें रेस के मैदान के क़रीब भी नहीं आने दिया जाता है। हाँ उनके मालिकों की बात और है। घोड़े की अफ़ादियत और वजाहत[9] से मुतास्सिर होकर अदीबों और शायरों ने भी अपनी हर चीज़ को घोड़े से निस्बत दे रखी है। शायर और अदीब अपनी हर चीज़ का इन्तसाब[10] घोड़े ही के नाम करते हैं। वह अपने क़लम को सिर्फ़ क़लम नहीं कहेंगें क्योंकि क़लम तो बच्चों के भी हुआ करते हैं। शायरों का क़लम या तो अस्पे–ख़ामा[11] होता है या अशहबे–क़लम[12]। लिखने की रफ़्तार चाहे कितनी सुस्त या बेढंगी क्यों न हो वह लिखेंगे अस्पे–ख़ामा ही से। शायरों का ख़याल भी या तो रहवारे–ख़याल[13] होगा या तौसने–ख़याल[14]। ख़ाली ख़याल उन्हें ज़ेब नहीं देता। उनकी राय में ख़ाली ख़याल आदमियों का हुआ करता है। अक्सर सूरतों में शायरों के तौसने–ख़याल

1. उपमा 2. प्रतीत 3. इशारा 4. बात चीत 5. कहावत 6. सर्वोत्तम सृष्टि (मनुष्य) 7. वैवाहिक 8. नस्ल 9. सुंदरता 10. सम्बन्ध 11. तेज़ी से चलने वाला क़लम (घोड़े की रफ़्तार वाला) 12. तेज़ रफ़्तार क़लम 13. कल्पना का घोड़ा 14. कल्पना का घोड़ा (कल्पना की उड़ान)

اور ان کے اسپ خامہ میں دوستانہ تعلقات قائم نہیں ہو پاتے۔ توسن اور اسپ ہوتے تو دونوں ایک ہی جماعت کے رکن ہیں لیکن راتب کی مقدار یا کسی اور بات پر ان دونوں میں اختلاف پیدا ہو جاتا ہے یا دونوں میں شاید جھگڑا اس بات پر ہوتا ہو کہ ہارس پاور توسن میں زیادہ ہے۔ یا اسپ میں۔ شاعر بے چارا بڑی مشکل سے اِن دونوں کو قابو میں لاتا ہے۔ شاعری تو وہ اس افراتفری کے عالم میں بھی کر لیتا ہے لیکن اس کی ایک ہی غزل مختلف بحروں میں ہوتی ہے (شاعر اپنی پریشانی میں اس پر غور نہیں کر پاتا) ' کبھی کبھی ایسا بھی ہوتا ہے کہ کسی ایک شاعر کا رہوارِ خیال، کسی دوسرے شاعر کے توسنِ خیال سے لڑ جاتا ہے۔ اس تصادم کی شاعری میں بڑی اہمیت ہے اور اِسے توارد کے نام سے یاد کیا جاتا ہے۔ ہمارا کافی سے زیادہ شعری سرمایہ اِسی توارد کی دین ہے۔ بعض لوگ اِسے سرقہ کا بھی نام دیتے ہیں لیکن یہ غلط ہے۔ کیونکہ ادب میں سرقے کی کیا گنجائش ہے۔ سرقہ ہمیشہ کارآمد چیزوں کا ہوا کرتا ہے۔

جب شاعر کا قلم اسپ اور اشہب ہوسکتا ہے اور اس کا خیال رہوار اور توسن ہو سکتا ہے تو عمر نے کیا قصور کیا ہے کہ اسے کسی عمدہ گھوڑے سے تشبیہ نہ دی جائے۔ شاعر اور ادیب اس لیے ہمیشہ عمر کو رخشِ عمر کہتے ہیں۔ اِسی رخشِ عمر پر سوار ہو کر وہ ابلقِ ایام کا مقابلہ کرتے ہیں۔ ابلقِ ایام اور ابلقِ لیل ونہار متذکرہ صدر گھوڑوں میں سب سے زیادہ تیز رفتار گھوڑے مانے گئے ہیں اور صرف رخشِ عمر ہی ان کا ہم رکاب ہوسکتا ہے۔ دوسرے گھوڑے اتنا تیز نہیں چل سکتے۔ ابلق ہوتا بھی سفید اور سیاہ ہے اور اسی لیے اسے دن اور رات سے تشبیہ دی جاتی ہے جو ان دنوں غلط ہے۔ اب تو دن بھی سیاہ ہونے لگے ہیں۔ ہمارے ایک شاعر دوست کو ابلقِ ایام کی ترکیب اس قدر پسند ہے کہ وہ کیلنڈر اور جنتری کو بھی ابلقِ ایام ہی کہا کرتے ہیں۔ وہ روزانہ ابلقِ ایام دیکھ کر اپنی گھڑی میں تاریخ اور دن بتلانے والے فرس کو صحیح مقام پر لے آتے ہیں۔ ان کا خیال ہے کہ اِن دنوں تنخواہ تو ہوا کے گھوڑے پر سوار رہتی ہے۔ لیکن ابلقِ لیل ونہار، اڑیل ٹٹو، کی طرح جگہ جگہ رُک جاتے ہیں اور مہینہ کسی طرح ختم ہی نہیں ہونے پاتا۔ ان کا تجربہ ہے کہ گھر میں صحیح مقدار میں پیسے نہ دیے جائیں تو بچے بات کریں یا شوہر، ہر بات بیگم کے سمندِ ناز پر تازیانے کا کام کرتی ہے

और उनके अस्पे–ख़ामा में दोस्ताना तअल्लुक़ात क़ायम नहीं हो पाते। तौसन और अस्प होते तो दोनों एक ही जमात के रुक्न हैं लेकिन रातिब की मेक़दार या किसी और बात पर इन दोनों में एख़तलाफ़ पैदा हो जाता है या दोनों में शायद झगड़ा इस बात पर होता है कि हार्सपावर तौसन में ज़्यादा है या अस्प में। शायर बेचारा बड़ी मुश्किल से इन दोनों को क़ाबू मे लाता है। शयरी तो वह इस अफ़रातफ़री के आलम में भी कर लेता है लेकिन उसकी एक ही ग़ज़ल मुख़्तलिफ़ बहरों में होती है (शायर अपनी परेशानी में इस पर ग़ौर नहीं कर पाता है) कभी कभी ऐसा भी होता है कि किसी शायर का रहवारे–ख़याल, किसी दूसरे शायर के तौसने–ख़याल से लड़ जाता है। इस तसादुम की शायरी में बड़ी अहमियत है और इसे तवारूद के नाम से याद किया जाता है। हमारा काफ़ी से ज़्यादा शेरी सरमाया इसी तवारूद की देन है। बाज़ लोग इसे सरक़े का भी नाम देते हैं लेकिन ग़लत है। क्योंकि अदब में सरक़े की क्या गुंजाइश है। सरक़ा हमेशा कारआमद चीजों का हुआ करता है।

जब शायर का क़लम अस्प और अशहब हो सकता है और उसका ख़याल रहवार और तौसन हो सकता है तो उम्र ने क्या क़ुसूर किया कि उसे किसी उम्दा घोड़े से तश्बीह[1] न दी जाये। शायर और अदीब इसीलिये उम्र को हमेशा रख़्शे–उम्र कहते हैं। इसी रख़्शे[2]–उम्र पर सवार होकर वह अबलक़े–अय्याम[3] का मुक़ाबला करते हैं। अबलक़े–अय्याम और अबलक़े–लैलो–नहार[4], मुतज़्ज़करा[5] सद्र घोड़ों में सब से ज़्यादा तेज़ रफ़्तार घोड़े माने गये हैं और सिर्फ़ रख़्शे–उम्र ही इनका हम–रकाब हो सकता है। दूसरे घोड़े इतना तेज़ नहीं चल सकते। अबलक़ होता भी सफ़ेद और सियाह है और इसी लिये उसे दिन और रात से तश्बीह दी जाती है जो इन दिनों गलत है। अब तो दिन भी सियाह होने लगे हैं। हमारे एक शायर दोस्त को अबलक़े–अय्याम की तरकीब इस क़दर पसंद है कि कैलेण्डर और जंतरी को भी अबलक़े–अय्याम ही कहा करते है। वह रोज़ाना अबलक़े–अय्याम देखकर अपनी घड़ी में तरीख़ और दिन बतलाने वाले फ़रस[6] को सही मक़ाम पर ले आते है। उनका ख़याल है कि इन दिनों तनख़्वाह तो हवा के घोड़े पर सवार रहती है। लेकिन अबलक़े–लैलो–नहार, अड़ियल टट्टू की तरह जगह–जगह रूक जाते हैं और महीना किसी तरह ख़त्म ही नहीं होने पाता। उनका तजर्बा है कि घर में सही मेक़दार में पैसे न दिये जायें तो बच्चे बात करें या शौहर, हर बात बेगम के समन्दे–नाज़[7] पर ताज़याने का काम करती है

1. उपमा 2. जीवन रुपी घोड़ा 3. रात दिन 4. रात दिन
5. वर्णित 6. घोड़ा 7. सुन्दर घोड़ा (चौंचले, घमन्ड)

اور ان کے مرکب زبان کو لگام دینا مشکل ہو جاتا ہے۔ ہمارے دوست ایسے موقعوں پر ہمیشہ گھوڑے بیچ کر سو جاتے ہیں۔

بعض شاعروں نے فرسِ ایام کی ترکیب بھی استعمال کی ہے لیکن ابلق کے مقابلے میں فرس کامیاب نہیں رہا۔ شعروادب میں جتنے بھی گھوڑوں کا ذکر کیا گیا ہے وہ ہیں تو گھوڑے ہی لیکن ان سب کا مقام متعین کر دیا گیا ہے۔ توسن کو عمر کے ساتھ منسلک نہیں کیا جاسکتا۔ رخش کو لے جا کر کہیں اور نہیں باندھا جاسکتا۔ یہ سب گھوڑے اپنی اپنی جگہ رہیں گے نہ تو ان کا تبادلہ کیا جاسکتا ہے اور نہ ہی انہیں اپنی مرضی سے دل بدلی کا اختیار ہے کیونکہ یہ معاملہ ادب کا ہے۔ شعروادب میں استعمال کیے جانے والے گھوڑے ہارس ٹریڈنگ کے لیے نہیں ہوا کرتے۔ یہ کام آدمیوں کے ذمّے ہے۔

پرندوں کو ادب میں اتنا اونچا مقام تو نہیں دیا گیا لیکن بلبل کو قریب قریب یہی رتبہ حاصل ہے۔ بات یہ ہے کہ بلبل جانور تو چھوٹا سا ہے لیکن کافی جاندار ہے اور دوسرے پرندوں کے مقابلے میں اس کی جمالیاتی حسِ بہتر ہے۔ آرٹ کے معاملے میں اس کی سوجھ بوجھ پر بھروسہ کیا جاسکتا ہے۔ اس کی نظر خوبصورتی کو پہچانتی ہے بلکہ یوں کہنا چاہئے کہ خوبصورتی پر اس کی اتنی ہی گہری نظر ہے جتنی ہمارے بعض دانشوروں کی کافکا اور سارتر پر ہے اس لیے عشق و عاشقی کے معاملے میں بلبل جسے عندلیب بھی کہا جاتا ہے، آدمی کے برابر تو نہیں دوسرے نمبر پر ضرور ہے اور چاندی کا تمغہ اس کا حق ہے۔ شاعر کو جب بھی آہ وزاری کے سلسلے میں کسی شریک کار اور رفیق کی ضرورت پڑی ہے۔ اس نے عندلیب ہی کو اس طرح آواز دی ہے۔

آ عندلیب مل کے کریں آہ وزاریاں
تو ہائے دل پکار میں چلاؤں ہائے دل

اور عندلیب چوں کہ شاعر کی طرزِ فغاں سے واقف اور بذاتِ خود دل کا اچھا شخص ہوتا ہے۔ اس نے ہمیشہ شاعر کی آواز میں اپنی آواز فکر ملا کر اس کی دل جوئی کی ہے۔ شاعر کی آواز میں آواز ملانے پر بلبل پر جو گزری ہوگی اس کا دل جانتا ہوگا۔ لیکن عشق کا کاروبار یوں ہی آگے بڑھا ہے۔ شاعر اور بلبل کی جگل بندی کی نقل اور لوگ بھی

और उनकी ज़बान को लगाम देना मुश्किल हो जाता है। हमारे दोस्त ऐसे मौके पर हमेशा घोड़े बेचकर सो जाते हैं।

बाज़ शायरों ने फ़रसे–अय्याम की तरकीब भी इस्तेमाल की है लेकिन अबलक़ के मुक़ाबले में फ़रस कामयाब नहीं रहा। शेरो–अदब में जितने भी घोड़ों का ज़िक्र किया गया है वह हैं तो घोड़े ही लेकिन उनका मक़ाम मुतइय्यन कर दिया गया है। तौसन को उम्र के साथ मुन्सलिक नहीं किया जा सकता। रख़्श को ले जाकर कहीं और नहीं बांधा जा सकता। ये सब घोड़े अपनी–अपनी जगह रहेंगे न तो उनका तबादला किया जा सकता है और न ही उन्हें अपनी मर्ज़ी से दलबदली का अख़्तियार है क्योंकि यह मामला अदब का है। शेरो–अदब में इस्तेमाल किये जाने वाले घोड़े, हॉर्स ट्रेडिंग के लिये नहीं हुआ करते। यह काम आदमियों के ज़िम्मे है।

परिंदों को अदब में इतना ऊँचा मक़ाम तो नहीं दिया गया लेकिन बुलबुल को क़रीब–क़रीब यही रुतबा हासिल है। बात यह है कि बुलबुल जानवर तो छोटा सा है लेकिन काफ़ी जानदार है और दूसरे परिंदों के मुक़ाबले में इसकी जमालियाती–हिस[1] बेहतर है। आर्ट के मामले में उसकी सूझबूझ पर भरोसा किया जा सकता है। उसकी नज़र ख़ूबसूरती को पहचानती है बल्कि यूँ कहना चाहिये कि ख़ूबसूरती पर उसकी इतनी गहरी नज़र है जितनी हमारे बाज़ दानिशवरों की काफ़्का और सार्त्र पर है इसलिये इश्क़ो–आशिक़ी के मामले में बुलबुल जिसे अंदलीब[2] भी कहा जाता है, आदमी के बराबर तो नहीं दूसरे नम्बर पर ज़रुर है और चांदी का तमग़ा उसका हक़ है। शायर को जब भी आहो–ज़ारी के सिलसिले में किसी शरीके–कार और रफ़ीक़[3] की ज़रुरत पड़ी है, उसने अंदलीब ही को इस तरह आवाज़ दी है –

आ अंदलीब मिल के करें आहो–ज़ारियाँ
तू हाय दिल पुकार मैं चिल्लाऊँ हाय दिल

और अंदलीब चूंकि शायरी की तर्ज़े–फ़ोग़ाँ से वाक़िफ़ और ब–ज़ाते ख़ुद दिल का अच्छा शख़्स होता है। इसने हमेशा शायर की आवाज़में अपनी आवाज़ मिलाकर उसकी दिलजोई की है। शायर की आवाज़ में आवाज़ मिलाने पर बुलबुल पर जो गुज़री होगी उसका दिल जानता होगा। लेकिन इश्क़ का कारोबार यूँ ही आगे बढ़ा है। शायर और बुलबुल की जुगल–बंदी की नक़ल और लोग भी

1. सौंदर्य बोध 2. बुलबुल 3. साथी

کرتے ہیں لیکن وہ بات نہیں ہوتی۔

ہمارے ادب میں مُرغ بھی موجود ہے (بلکہ یہ دُنیا ہی ''جہانِ مُرغ و ماہی'' ہے) لیکن یہ مُرغ انگریزی زبان کا وہ ٹیبل برڈ نہیں ہے جو لذّت کام و دہن کے کام آتا ہے۔ انگریزی ادب کا جو جستہ جستہ مطالعہ ہم نے کیا ہے اس سے اندازہ ہوتا ہے کہ ان کے ادب میں بھی جانور بکثرت موجود ہیں بلکہ ان کے ہاں بارش بھی ہوتی ہے تو کتّے اور بلّیاں برسا کرتی ہیں۔ ہر مالِ غنیمت میں ان کا حصّہ شیر کے حصّے کے برابر ہوتا ہے۔ وہ لوگ اتنے چوکنّے رہتے ہیں کہ بلّی کی نیند سوتے ہیں۔ اُن کے ہاں بیل کی آنکھ بھی ادب میں داخل ہے اور جب تک وہ کوئی بات خود گھوڑے کے منہ سے نہیں سنتے اس پر یقین نہیں کرتے۔

ہمارے ہاں بارش کو الگ طریقے سے ناپا جاتا ہے۔ بھیگی بلّی تو ہمارے پاس بھی ہے لیکن وہ زمین ہی کی پیداوار ہے آسمان سے نہیں برستی۔ یوں بھی سارے جانوروں کے لیے ہمارے ادب میں گنجائش نہیں ہے۔ وہ چار پرندے جنہیں ادب میں مشکل سے جگہ مل سکی ہے ان میں بطخ بھی ہے۔ نادِ نوش کے سامان میں ایک بط مینا پائی جاتی ہے جو پیمانے سے اس طرح جھک کر بات کرتی ہے جیسے کوئی ماتحت اپنے افسر بالا کے کان میں کچھ کہا کرتا ہے۔ لیکن سچ پوچھیے تو بطخ جیسے خوبصورت پرندے کے ساتھ انصاف نہیں ہوا ہے۔ یہ پرندہ غسل اور طہارت کا اتنا شوقین ہے کہ ہم میں سے چند لوگ تو اس سے سبق لے سکتے ہیں۔

دوسرے پرندوں میں ہم نے مرغ کو ادب میں ضرور جگہ دی ہے وہ بھی صرف اس لیے کہ مُرغ کا مزاج ہمارے دِل کی کیفیت کے عین مطابق ہے۔ ہم اپنے دل کو مرغِ دِل ہی کہا کرتے ہیں۔ دِل میں ہوتے ہی دو حرف ہیں اس لیے لوگ عموماً تنگ دِل ہوا کرتے ہیں۔ مرغِ دِل کہنے سے کچھ تو فراخ دِلی پیدا ہو جاتی ہے۔

بعض لوگوں کا مرغِ دل بہت نازک ہوتا ہے اور کبھی کبھی صرف اس بات پر رونے لگتا ہے کہ ہندوستانی فلمیں، بہت خراب بننے لگی ہیں اس کے برخلاف بعض لوگوں کا مرغِ دِل اتنا مضبوط ہوتا ہے کہ بات ویتنام کی ہو کہ بنگال کے سیلاب کی۔ ان کے مرغ

करते हैं लेकिन वह बात नहीं होती।

हमारे अदब में मुर्ग़ भी मौजूद है (बल्कि ये दुनिया ही "जहाने–मुर्ग़ो–माही" है) लेकिन यह मुर्ग़ अंग्रेज़ी ज़बान का वह टेबुल बर्ड नहीं है जो लज़्ज़ते–कामो–दहन के काम आता है। अंग्रेज़ी अदब का जो जस्ता–जस्ता[1] मोताला हमने किया है उससे अंदाज़ा होता है कि उनके अदब में भी जानवर बकसरत मौजद हैं बल्कि उनके यहाँ बारिश भी होती है तो कुत्ते और बिल्लियाँ बरसा करती है। हर माले–ग़नीमत में उनका हिस्सा शेर के हिस्से के बराबर होता है। वह लोग इतने चौकन्ने रहते हैं कि बिल्ली की नींद सोते हैं। उनके यहाँ बैल की आँख भी अदब में दाख़िल है और जब तक वह कोई बात ख़ुद घोड़े के मुंह से नहीं सुनते उस पर यक़ीन नहीं करते।

हमारे यहाँ बारिश को अलग–अलग तरीक़ों से नापा जाता है। भीगी बिल्ली तो हमारे पास भी है लेकिन वह ज़मीन ही की पैदावार है, आसमान से नहीं बरसती। यूँ भी सारे जानवरों के लिये हमारे अदब में गुंजाइश नहीं है। वह चार परिंदे जिन्हें अदब में मुश्किल से जगह मिल सकी है उनमें बत्तख़ भी है। नावो–नोश[2] के सामान में एक बते–मीना पाई जाती है जो पैमाने से इस तरह झुक कर बात करती है जैसे कोई मातहत अपने अफ़सरे–बाला के कान में कुछ कहा करता है। लेकिन सच पूछिये तो बत्तख़ जैसे ख़ूबसूरत परिंदे के साथ इन्साफ़ नही हुआ है। यह परिंदा ग़ुस्ल और तहारत का इतना शौक़ीन है कि हम में से चंद लोग तो इस से सबक़ ले सकते हैं।

दूसरे परिंदों में हमने मुर्ग़ को अदब में ज़रुर जगह दी है वह भी सिर्फ़ इसलिये कि मुर्ग़ का मिज़ाज हमारे दिल की कैफ़ियत के ऐन मुताबिक़ है। हम अपने दिल को मुर्ग़े–दिल ही कहा करते हैं। दिल में होते ही दो हर्फ़ हैं इसलिये लोग अमूमन तंगदिल हुआ करते हैं। मुर्ग़े–दिल कहने से कुछ फ़राख़दिली पैदा हो जाती है।

बाज़ लोगों का मुर्ग़े–दिल बहुत नाज़ुक होता है और कभी–कभी सिर्फ इस बात पर रोने लगता है कि हिन्दुस्तानी फ़िल्में, बहुत ख़राब बनने लगी हैं इसके बरख़िलाफ़ बाज़ लोगों का मुर्ग़े–दिल इतना मज़बूत होता है कि बात वियतनाम की हो कि बंगाल के सैलाब की, उनके मुर्ग़े–दिल

1. कहीं–कहीं से 2. रंगरेलियाँ

دل کا ذبح ہونا مشکل ہے — مرغِ دل کے علاوہ ایک مرغ اور ہے جو عمارتوں پر ہوا کا رُخ بتانے کے لیے لگایا جاتا ہے۔ سمجھدار لوگوں کی نظریں ہمیشہ اسی مُرغ بادنما پر لگی رہتی ہیں اور قدم بھی اسی سمت اُٹھتے ہیں جدھر اس مرغ کا منہ ہوتا ہے۔

مرغِ بادنما نہ بھی ہو تو آدمی کو ہوا کا رُخ سمجھنے کی کوشش کرنی چاہیے عقل اسی لیے دی گئی ہے۔

••••

का ज़बह होना मुश्किल है – मुर्ग़े–दिल के अलावा एक मुर्ग़ और है जो इमारतों पर हवा का रुख़ बताने के लिये लगाया जाता है। समझदार लोगों की नज़रें हमेशा इसी मुर्ग़े–बादनुमा[1] पर लगी रहती हैं और क़दम भी उसी सम्त उठते हैं जिधर इस मुर्ग़ का मुँह होता है।

मुर्ग़े–बादनुमा न भी हो तो आदमी को हवा का रुख़ समझने की कोशिश करनी चाहिये अक़्ल इसी लिये दी गई है।

● ● ● ●

---

1. हवा का रुख़ बताने वाला (लोहे का बना हुआ) मुर्ग़

احمد جمال پاشا

ادب میں مارشل لا

حالات اب صدر اردو کے قابو سے باہر ہو چکے تھے۔ علمی، ادبی سرگرمیوں اور تحریکوں نے ادبی مزاج کی صورت اختیار کر لی تھی، ملکِ ادب خوف ناک اور گندی سیاست میں مبتلا تھا۔ ادب، صحافت اور پمفلٹ میں تمیز کرنا بدتمیزی تصور کی جانے لگی تھی، اور ہنگاموں کا باعث ہوا کرتی تھی، دائمی قدروں کو وقتی قدروں میں تبدیل کرنے والے اب اسے لحاتی قدروں میں تبدیل کرنے پر تلے ہوئے تھے۔ مجبوراً صدر نے ملکِ ادب پر مارشل لا نافذ کر دیا۔ ادب کا نظم و نسق براہِ راست ادبی فوج کے ہاتھ میں آ گیا اور جب اہلِ ادب کی آنکھ کھلی تو وہ حیران رہ گئے کیوں کہ جمہوریت میں چڑیا اڑ چکی تھی اور کی طوطی بول رہی تھی۔

بریگیڈیر گلدآر نے منتظم اعلیٰ مارشل لا کی حیثیت سے انتظام اپنے ہاتھ میں لے لیا۔ انھوں نے ادبی قوم کے نام ایک مخصوص نشریے میں کہا:

”ہمارے پاس ادبی تنقید کا کوئی جمہوری طریقہ نہیں۔ فی زمانہ ادب میں خواجہ سرائیاں عام ہیں۔ سرقہ، توارد اور آورد سے

अदब में मार्शल लॉ

हालात अब सदरे–उर्दू से बाहर हो चुके थे। इल्मी, अदबी सरगर्मियों और तहरीकों ने अदबी मिज़ाज की सूरत अख़्तियार कर ली थी, मुल्के–अदब ख़ैफ़नाक और गंदी सियासत में मुब्तला था। अदब, सहाफ़त और पम्फलेट में तमीज़ करना बदतमीज़ी तसव्वुर की जाने लगी, और हंगामों का बाअस हुआ करती थी, दायमी क़द्रों को वक़्ती क़द्रों में तब्दील करने वाले अब लम्हाती क़द्रों में तब्दील करने पर तुले हुये थें। मजबूरन सदर ने मुल्के–अदब पर मार्शल लॉ नाफ़िज़ कर दिया। अदब का नज़्मो–नस्क़[1] बराहे–रास्त अदबी फ़ौज के हाथ में आ गया और जब अहले–अदब की आँख खुली तो वह हैरान रह गये क्योंकि जमहूरियत में चिड़िया उड़ चुकी थी और तूती बोल रही थी।

ब्रिगेडियर गुलदार ने मुन्तज़िमे–आला मार्शल लॉ की हैसियत से इन्तज़ाम अपने हाथ में ले लिया। उन्होंने अदबी क़ौम के नाम एक मख़्सूस नशरिये[2] में कहा:

> "हमारे पास अदबी तनक़ीद का कोई जम्हूरी तरीक़ा नहीं। फ़ी ज़माना अदब में ख़्वाजा सराइया[3] आम हैं। सरक़ा[4], तवारुद[5] और आवुर्द[6] से

---

1. प्रबन्ध 2. प्रसारण 3. नपुंसक सेवाएं 4. चोरी
5. विचारों का टकराना 6. असहज भाव

شعراء نے ادب کے ناک میں دم کر رکھا ہے، موجودہ ادیب ادب کے نام پر ٹریش لکھ رہے ہیں۔ ادب اس وقت پیسے کمانے نعرے بازی، گروپ بندی اور پگڑی اچھالنے کا اکھاڑہ بنا ہوا ہے، ادب کی محترم ہستیاں بے ادبی کرنے سے نہیں چوک رہی ہیں۔ ہم کو اقتدار اپنے ہاتھ میں لے کر ادب کی رفتار سنبھالنی ہے، ہم اس وقت تک چین سے نہیں بیٹھیں گے جب تک کہ موجودہ ادب کو دنیا کے صالح ترین ادب کے مقابلہ نہ کھڑا کر دیں۔"

اعلانات کے مطابق دھمکی دی گئی کہ اگر کسی ادیب یا پبلشر نے دوکان بند کی تو اس کے خلاف فوجی عدالت میں مقدمہ چلایا جائے گا اور کاروبار ادب کو حسب معمول چلانے پر زور دیا گیا۔

اس فوجی عدالت کی روح رواں بریگیڈیر گلدار نے لفٹیننٹ کرنل غیض، کرنل مشفق الرحمٰن، کیپٹن صفیر جعفری، ملکِ ادب کے ممتاز ترین جاسوس کرنل آفریدی کی خدمات حاصل کر لیں۔ سارا پلان نہایت احتیاط سے تیار کیا گیا۔ رات کے بارہ بجے انقلاب عمل میں آیا۔ ادبی مرکز اور صدر کی رہائش گاہ فوج کی حفاظت میں ہیں۔ بڑے بڑے شاعر، ادیب اور نقاد اپنے اپنے گھروں میں نظر بند کر دیے گئے ہیں۔

ابھی تک کسی شورش کی خبر نہیں آئی، پورے ملک میں امن وامان رہا۔ ادب میں انقلاب کے اسباب وہ حالات ہیں جو اور زیادہ خراب نہیں ہو سکتے تھے۔ بلکہ اس خرابی سے خون خرابے کے لیے کام لیے جا رہے تھے۔ گو کہ طوائفوں نے لکھنؤ اسکول کے (خاتمہ) کے بعد سے ایک حد تک اردو ادب کا ساتھ چھوڑ دیا تھا مگر پھر بھی موجودہ دور مکمل طور پر طوائف الملوکی میں مبتلا تھا۔ سارا ادب ایک گمنام دیوان کے نامکمل مقدمہ کے گرد بلا کسی "تھیوری" کے گھوم رہا ہے الٹی سیدھی تعبیریں پیش کرنے والے ناقدین کی بستیاں اپنی برادری تک محدود رہتیں اور برادری کے باہر جانے والے کا حقہ پانی بند کر دیتیں۔ شخصی تاثرات کے عمل اور ردِ عمل نے ادب کو گورکھ دھندا بنا دیا تھا۔ امراء، حکام، رشتہ دار،

शोअरा ने अदब के नाक में दम कर रखा है, मौजूदा अदीब अदब के नाम पर ट्रेश लिख रहे हैं। अदब इस वक़्त पैसे कमाने, नारे बाज़ी, ग्रुप बंदी और पगड़ी उछालने का आखाड़ा बना हुआ है, अदब की मोहतरम हस्तियाँ बेअदबी करने से नहीं चूक रही हैं। हम को एक़्तदार अपने हाथ में लेकर अदब की रफ़्तार संभालनी है, हम उस वक़्त तक चैन से नहीं बैठेंगे जब तक कि मौजूदा अदब को दुनिया के सालेह तरीन अदब के मुक़ाबले न खड़ा कर दें।"

एलानात के मुताबिक़ धमकी दी गई कि अगर किसी अदीब या पब्लिशर ने दूकान बंद की तो उसके ख़िलाफ़ फ़ौजी अदालत में मुक़दमा चलाया जायेगा और कारोबार को हस्बे मामूल चलाने पर ज़ोर दिया गया।

इस फ़ौजी अदालत के रुहे–रवाँ ब्रिगेडियर गुलदार ने लेफ़्टीनेंट कर्नल गैज़, कर्नल मुशफ़िक़ुर्रहमान, कैपटेन सग़ीर जाफ़री, मुल्के अदब के मुमताज–तरीन जासूस कर्नल आफ़रीदी की ख़िदमात हासिल कर लीं। सारा प्लान निहायत एहतयात से तैयार किया गया। रात के बारह बजे इन्क़लाब अमल में आया। अदबी मरकज़ और सदर की रहाइशगाह फ़ौज की हिफ़ाज़त में हैं। बड़े–बड़े शायर, अदीब और नक़्क़ाद[1] आपने–अपने घरों में नज़रबंद कर दिये गये हैं।

अभी तक किसी शोरिश की ख़बर नहीं आई, पूरे मुल्क में अमनो–अमान रहा। अदब में इन्क़लाब के असबाब वह हालात हैं जो ज़्यादा ख़राब नहीं हो सकते। बल्कि इस ख़राबी से ख़ून ख़राबे के लिए काम लिए जा रहे थे। गो कि तवायफ़ों ने लखनऊ के (ख़ात्मे) के बाद से एक हद तक उर्दू अदब का साथ छोड़ दिया था मगर फिर भी मौजूदा दौर मोकम्मल तौर पर तवायफ़ुलमुलूकी[2] में मुब्तला था। सारा अदब एक गुमनाम दीवान के नामुकम्मल मुक़द्दमे के गिर्द बिला किसी "थ्योरी" के घूम रहा है उल्टी सीधी ताबीरें पेश करने वाले नाक़दीन की बस्तियाँ अपनी बिरादरी तक महदूद रहतीं और बिरादरी के बाहर जाने वाले का हुक़्क़ा–पानी बंद कर देतीं। शख़्सी तास्सुरात के अमल और रद्दे–अमल ने अदब को गोरख–धंधा बना दिया था। उमरा, हुक्काम, रिश्तेदार,

1. आलोचक 2. बिखराव

احباب اور خدمت گزار ہی تعریف کے دائرے میں آتے تھے۔ ادب کے ذمہ دار وہ لوگ نہیں تھے جو تاج محل بنانا جانتے ہوں، بلکہ وہ جو تاج محل کھودنے کے فن سے واقف ہوں۔ عموماً جس کے بارے میں کسی نے کوئی فتوئی صادر کر دیا تھا، بقیہ سب اسی کو دہرا دیتے۔ ادبی سرقے، سرقہ بالجبر کی صورت اختیار کر چکے تھے۔ ادب، صحافت اور صحافت کے درمیان حدِ فاصل کھینچنا مشکل تھا۔ نئے نام لیتے ہوئے سب بے حد ڈرتے اور گھبراتے۔ اچھا ادب وہ سمجھا جانے لگا جو زیادہ بکے، زیادہ تر ادیب سرِشام ہی کڑوروں کی تعداد میں آبادی سے دور نکل جاتے جہاں سے وہ سنسنی خیز ڈاکو، جنگلی درندے، بدروحیں، بھوت پریت، ٹارزن، ڈریکولا اور کنگ کانگ جیسے عجوبے اٹھالاتے۔ بیشتر ادب اسی قسم کے داغ دھبوں سے چیچک زدہ ہو رہا تھا جس کی صفائی اب فوج کی نگرانی میں ہو رہی ہے۔

نقادوں کی مسلسل کوششوں کے نتیجہ میں لوگوں نے قدیم اور جدید ادب کے مطالعے کے بجائے تنقیدیں پڑھنا شروع کر دی تھیں۔ اصل کتاب پڑھنے کا فیشن اب تقریباً آوٹ آف ڈیٹ ہو چکا تھا۔ نقادوں کے مسلسل اصرار پر بہت سے اچھے افسانہ نگاروں اور ناول نگاروں نے افسانے اور ناول لکھنے سے توبہ کر لی تھی۔ لوگوں نے بھی بہترین ناول وافسانے پڑھنے کے بجائے بدترین تنقیدیں پڑھنا شروع کر دی تھیں۔ مگر خود تنقید میں پتہ لگانا مشکل تھا کہ کس کا کون رنگ ہے، یا موجودہ رنگ کہاں سے اڑایا گیا ہے۔ اگر مقالہ نگاروں کے نام اڑا دیے جائیں تو وہ سب کسی ایک ہی نومشق طالب علم کی تحریریں معلوم ہوتیں۔ ایک ہی بات کو بار بار کہنے کا مرض عام ہو گیا تھا۔ اس استادانہ پینترے بازی میں ایک ممتاز نقاد نے تو کمال ہی کر دیا۔ ان حضرت نے کسی زمانہ میں مومنؔ پر ایک مقالہ لکھا تھا جس کی بڑی واہ واہ ہوئی۔ کچھ عرصے بعد انھوں نے اسی مقالے کو پھر نئے عنوان سے شائع کرا دیا اور پھر واہ واہ مچ گئی۔ فوجی حکام نے جب ان کے گھر پر چھاپا مارا تو ان کی کل کائنات ادب یعنی مومنؔ پر مقالہ برآمد کر لیا گیا۔ فوجی حکومت نے ایک اعلانیہ کے مطابق پہلے اس مقالہ کا عنوان صرف ''حکیم مومن خاں مومنؔ'' تھا جس کو انھوں نے حسب ذیل عنوانات سے متعدد بار چھپوایا:

''حکیم مومن خاں مومنؔ''۔ ''مومن خاں مومنؔ''۔ ''مومن کی شاعری''۔ ''مومن

अहबाब और ख़िदमत गुज़ार ही तारीफ़ के दायरे में आते थे। अदब के ज़िम्मेदार वह लोग नहीं थे जो ताजमहल बनाना जानते हों, बल्कि वह जो ताजमहल खोदने के फ़न से वाक़िफ़ हों। उमूमन जिसके बारे में किसी ने कोई फ़तवा सादिर कर दिया था, बक़िया सब उसी को दोहरा देते। अदबी सरक़े, सरक़ा–बिलजब्र की सूरत अख़्तियार कर चुके थे। अदब, सहाफ़त और सहाफ़त के दरमियान हद्दे–फ़सिल खींचना मुश्किल था। नये नाम लेते हुए सब बेहद डरते और घबराते। अच्छा अदब वह समझा जाने लगा जो ज़्यादा बिके, ज़्यादा तर अदीब सरे–शाम ही करोड़ों की तादाद में आबादी से दूर निकल जाते जहाँ से वह सनसनी ख़ेज़ डाकू , जंगली दरिन्दे, बदरुहें, भूत प्रेत, टार्ज़न, ड्रेकूला और किंग–कांग जैसे अजूबे उठा लाते। बेशतर अदब इसी क़िस्म के दाग़ धब्बों से चेचकज़दा हो रहा था जिसकी सफ़ाई अब फ़ौज की निगरानी में हो रही है।

नक़्क़ादों की मुसलसल कोशिशों के नतीजे में लोगों ने क़दीम और जदीद अदब के मोताले के बजाय तनक़ीदें पढ़ना शुरु कर दी थीं। अस्ल किताब पढ़ने का फ़ैशन अब तक़रीबन आउट–ऑफ़–डेट हो चुका था। नक़्क़ादों के मुसलसल इसरार पर बहुत से अच्छे अफ़साना निगारों और नावेल निगारों ने अफ़साने और नावेल लिखने से तौबा कर ली थी। लोगों ने भी बेहतरीन नावेल व अफ़साने पढ़ने के बजाय बदतरीन तनक़ीदें पढ़ना शुरु कर दी थीं। मगर ख़ुद तनक़ीद में पता लगाना मुश्किल था कि किसका कौन रंग है, या मौजूदा रंग कहाँ से उड़ाया गया है। अगर मेक़ाला–निगारों के नाम उड़ा दिये जायें तो वह सब किसी एक ही नौमश्क़ तालिब इल्म की तहरीरें मालूम होतीं। एक ही बात को बार–बार कहने का मरज़ आम हो गया था। इस उस्तादाना पैंतरे बाज़ी में एक मुमताज़ नक़्क़ाद ने तो कमाल ही कर दिया। इन हज़रत ने किसी ज़माने में मोमिन पर एक मेक़ाला लिखा था जिसकी बड़ी वाह–वाह हुई। कुछ अर्से बाद उन्होंने उसी मेक़ाले को फिर नये उनवान से शाया करा दिया और फिर वाह–वाह मच गई। फ़ौजी हुक्काम ने जब उनके घर पर छापा मारा तो उनकी कुल कायनाते–अदब यानी मोमिन पर मक़ाला बरामद कर लिया गया। फ़ौजी हुकूमत के एक ऐलानिये के मुताबिक़ पहले इस मेक़ाले का उनवान सिर्फ़ "हकीम मोमिन ख़ाँ मोमिन" था जिसको उन्होंने हस्बे–ज़ैल उनवान से मुतअद्दिद[1] बार छपवाया:

"हकीम मोमिन ख़ाँ मोमिन", मोमिन ख़ाँ मोमिन", "मोमिन की शायरी", "मोमिन की ग़ज़ल गोई", "मोमिन शायरी के आईने में", "मोमिन

1. अनेक

کی غزل گوئی''۔ ''مومن شاعری کے آئینے میں''۔ مومن بحیثیت شاعر''۔ ''مومن اور ان کی شاعری''۔ ''مومن کی شاعری کا نفسیاتی تجزیہ''۔ ''مومن ایک مطالعہ''۔ ''مومن میری نظر میں''۔ ''مومن اردو شاعری کی نظر میں''۔ ''اردو شاعری کی نظر مومن پر''۔ ''مطالعۂ مومن''۔ مومن کی شخصیت اور شاعری''۔ ''مومن اور تصوّف''۔ ''مومن کا محبوب''۔ ''مومن کا لب و لہجہ''۔ ''مومن اور ہم''۔ ''مومن اور میں''۔ ''مومن-ایک سوال''۔ ''کیا مومن شاعر تھے؟''

قبلہ کا ارادہ اب اس پر مقدمہ لکھوا کر مجموعہ شائع کروانے کا تھا۔ مگر فوج نے اس پر قبضہ کر لیا۔ ان کو فریب دہی کے الزام میں جیل بھیج دیا گیا اور وارننگ دے دی گئی کہ آئندہ کبھی مومن پر کچھ نہ لکھیں۔ خیال ہے کہ جیل میں ان کو سزا کے طور پر مومن کا باقاعدہ مطالعہ کرنے کی قید بامشقت دی جائے گی۔ ایک دوسرے بزرگوار کا کورٹ مارشل کرنل آفریدی کی عدالت میں کیا گیا۔ کیپٹن وحید کی اطلاعات کے مطابق وہ بہت سے تنقیدی مقالات اور کتب سامنے رکھ کر غالب کے اوپر ایک مقالہ نقل کرتے ہوئے پکڑے گئے۔ ان پر غالب کی توہین کرنے کے سلسلے میں مقدمہ چلایا گیا۔ عدالت نے انھیں عبور دریائے ادب کی سزا دی۔ ایک ممتاز نقاد کے گھر سے بیشتر ایسی کتابیں نکلیں جن پر ان کی تنقیدیں اور تبصرے شائع ہو کر ملک میں خاصے مقبول ہو چکے تھے مگر ان تبصرہ شدہ کتابوں کے ورق تک نہ کٹے تھے۔ تازہ ترین اطلاعات کے مطابق ان کو ان کے آبائی کتب خانے میں قید کر دیا گیا ہے اور ان کو ان تمام کتابوں کے ورق کاٹنے کی سزا دی گئی ہے۔ اطلاع میں ہے کہ جب تک ساری کتابوں کے ورق نہ کٹ جائیں ان کو ان پر مزید تبصرہ کرنے کا لائسنس نہیں ملے گا۔

شام کی خبروں میں گرفتار ہونے والے کی جو فہرست سنائی گئی اس میں اچھی خاصی تعداد ان بزرگوں کی ہے جنھوں نے ادب کے منصب اپنے دوستوں، رشتہ داروں اور ہم وطنوں میں تقسیم کر کے حق داروں کو ان کے حق سے محروم کر دیا تھا۔ یہ سب اب فوجی حراست میں ہیں۔ ان کی ضمانتیں نامنظور کر دی گئی ہیں۔ بہت ممکن ہے کہ اپنی تحریروں کی تردید شائع کرنے پر ان کی سزاؤں میں تخفیف کر دی جائے۔ مگر ان لوگوں کی سزاؤں میں

बहैसियत शायर", मोमिन और उनकी शायरी", "मोमिन की शायरी का नफ़सियाती तजज़िया", मोमिन एक मुतालेआ", "मोमिन मेरी नज़र में", मोमिन उर्दू शायरी की नज़र में", "उर्दू शायरी की नज़र मोमिन पर", "मुतालए–मोमिन", "मोमिन की शख़्सियत और शायरी", "मोमिन और तसव्वुफ़", "मोमिन का लबो–लहजा", "मोमिन और हम", "मोमिन और मैं", "मोमिन–एक सवाल", "क्या मोमिन शायर थे?"

क़िब्ला का इरादा अब इस पर मुक़दमा लिखवा कर मजमुआ शाया करवाने का था। मगर फ़ौज ने इस पर क़ब्ज़ा कर लिया। उनको फ़रेब–देही के इल्ज़ाम में जेल भेज दिया गया और वार्निंग दे दी गई कि आइंदा कभी मोमिन पर कुछ न लिखें। ख़याल है कि जेल में उनको सज़ा के तौर पर मोमिन का बाक़ायदा मुतालेआ करने की कैदे–बामशक़्क़त दी जायेगी। एक दुसरे बुज़ुर्गवार का कोर्ट मार्शल कर्नल आफ़रीदी की अदालत में किया गया। कैप्टन वहीद की इत्लाआत के मुताबिक़ वह बहुत से तनक़ीदी मेक़ालात और कुतुब सामने रखकर ग़ालिब के उपर एक मेक़ाला मुन्तक़िल करते हुए पकड़े गये। उन पर ग़ालिब की तौहीन करने के सिलसिले में मुक़दमा चलाया गया। अदालत ने उन्हें उबूरे–दरियाये–अदब की सज़ा दी। एक मुमताज़ नक़्क़ाद के घर से बेशतर ऐसी किताबें निकलीं जिन पर उनकी तनक़ीदें और तब्सरे शाया होकर मुल्क में ख़ासे मक़बूल हो चुके थे मगर उन तब्सरा शुदा किताबों के वरक़ तक न कटे थे। ताज़ा तरीन इत्लाआत के मुताबिक़ उनको उनके आबाई कुतुब ख़ाने में क़ैद कर दिया गया है और उनको उनकी तमाम किताबों के वरक़ काटने की सज़ा दी गई है। इत्तला में है कि जब तक सारी किताबों के वरक़ न कट जायें उनको उन पर मज़ीद तब्सरा करने का लाइसेंस नहीं मिलेगा।

शाम की ख़बरों में गिरफ़्तार होने वालों की जो फ़ेहरिस्त सुनाई गई उसमें अच्छी ख़ासी तादात उन बुज़ुर्गों की है जिन्होंने अदब के मनसब अपने दोस्तों, रिश्तेदारों और हम वतनों में तक़्सीम करके हक़दारों को उनके हक़ से महरुम कर दिया था। यह सब अब फ़ौजी हिरासत में हैं। उनकी ज़मानतें नामंज़ूर कर दी गई हैं। बहुत मुमकिन है कि अपनी तहरीरों की तरदीद शाया करने पर उनकी सज़ाओं में तख़फ़ीफ़ कर दी जाय। मगर उन लोगों की सज़ाओं में कमी नहीं की जायेगी जिन्होंने ख़ुद लिख–लिखकर अपने ख़ानदान के लोगों को शायर व अदीब बनाने

کمی نہیں کی جائے گی جنھوں نے خود لکھ لکھ کر اپنے خاندان کے لوگوں کو شاعر و ادیب بنانے کی وقتی کوششیں کی تھیں۔ ان میں ایسے لوگ بھی تھے جو موقع ملنے پر حملہ کرنے سے بھی نہیں چوکتے تھے اور ہمیشہ گمنام ناموں سے دوسروں پر مضامین اور تخریبی خطوط لکھ لکھ کر رسائل کے ذریعے کیچڑ اچھالا کرتے تھے۔ ان لوگوں کے لیے فوج نے نہایت کلاسیکل قسم کی سزا مقرر کی ہے۔ ایسے تمام لوگوں کو گدھے پر سوار کر کے مع ان کے اصل نام کے سائن بورڈ کے روزانہ صبح وشام ہوا خوری کے لیے بھیجا جائے گا اور عبرت ہونے پر ان کو اصل نام لکھنے کی اجازت دی جائے گی۔ ان لوگوں کو جنھوں نے شہرت حاصل کرنے کے لیے فیشن کے مطابق لکھے لکھائے اور پامال مضامین کو پھر سے باندھ کر اور پامال کر دیا تھا، ان پر سب سے سنگین الزام یہ ہے کہ ان کی مستقل تصنیف ایک بھی نہیں۔ ان کی سزا اس وقت مکمل سمجھی جائے گی جب وہ جیل سے ایک مستقل تصنیف پیش کر دیں گے۔

ایک صاحب پر الزام ہے کہ وہ بالکل معمولی سی بات کو غیر معمولی طول دے کر لکھتے ہوئے پکڑے گئے۔ غیر معمولی طوالت نے مسئلہ کو جو خاصہ سلجھا سلجھایا تھا تفصیل میں ڈبو کر خاصلہ الجھا دیا۔ ان کو گرفتار کر لیا گیا ہے۔ ان پر پبلک کا وقت اور دماغ خراب کرنے کے الزام میں مقدمہ چلایا جائے گا۔ فی الحال ان کو حکم دیا گیا ہے کہ وہ اپنی جملہ تصانیف کو مختصر کرنے کا کام شروع کر دیں۔ جس کتاب کی تلخیص پیش کرنے میں وہ ناکام رہیں گے وہ ضبط کر لی جائے گی۔ ایک دوسری اطلاع کے بموجب جیل میں ان سے مختصر نویسی کی مشقت لی جا رہی ہے۔

ایک دوسرے مصنف چلتی ٹرین میں کچھ لکھتے ہوئے پکڑے گئے۔ ان کی تلاشی لینے پر کچھ بھی برآمد نہ ہو سکا۔ وہ جو لکھ رہے تھے اس میں محض پچھلی پڑھائی اور حاضر دماغی کا فتور پایا گیا۔ اعلانیہ میں کہا گیا ہے کہ وہ ریڈیو ٹاک تھی۔ اس قسم کے معرکے وہ بلا پڑھے لکھے مسلسل بیس سال سے انجام دے رہے تھے۔ ان کی مصروفیات کے سبب عملاً اب یہ ممکن نہیں کہ وہ لکھ پڑھ سکیں۔ اندازہ ہے کہ اب تک انھوں نے جتنی ٹاک دی ہیں ان کے سلسلہ میں ایک مزید ٹاک کے ذریعہ پبلک سے باقاعدہ معافی منگوائی جائے گی۔ فوج نے ان کے اوپر فریب دہی اور آنکھوں میں دھول جھونکنے کے سلسلے میں مقدمہ قائم کیا ہے۔

की वक़्ती कोशिशें की थीं। उनमें ऐसे लोग भी थे जो मौक़ा मिलने पर हमला करने से भी नहीं चूकते थे और हमेशा गुमनाम नामों से दूसरों पर मज़ामीन और तक़रीबी ख़तूत लिख–लिखकर रसायल के ज़रिये कीचड़ उछाला करते थे। उन लोगों के लिए फ़ौज ने निहायत क्लासीकल क़िस्म की सज़ा मुकर्रर की है। ऐसे तमाम लोगों को गधे पर सवार करके मय उनके अस्ल नाम के साईन बोर्ड के रोज़ाना सुबह शाम हवाख़ोरी के लिए भेजा जायेगा और इबरत होने पर उनको अस्ल नाम लिखने की इजाज़त दी जायेगी। उन लोगों को जिन्होंने शोहरत हासिल करने के लिए फ़ैशन के मुताबिक़ लिखे लिखाये और पामाल की वक़्ती कोशिशें की थीं। उनमें ऐसे लोग भी थे जो मौक़ा मिलने पर हमला करने से भी नहीं चूकते थे और हमेशा गुमनाम नामों से दूसरों पर मज़ामीन और तक़रीबी ख़तूत लिख–लिखकर रसायल के ज़रिये कीचड़ उछाला करते थे। उन लोगों के लिए फ़ौज ने निहायत क्लासीकल क़िस्म की सज़ा मुकर्रर की है। ऐसे तमाम लोगों को गधे पर सवार करके मय उनके अस्ल नाम के साईन बोर्ड के रोज़ाना सुबह शाम हवाख़ोरी के लिए भेजा जायेगा और इबरत होने पर उनको अस्ल नाम लिखने की इजाज़त दी जायेगी। उन लोगों को जिन्होंने शोहरत हासिल करने के लिए फ़ैशन के मुताबिक़ लिखे लिखाये और पामाल मज़ामीन को फिर से बांधकर और पामाल कर दिया था, उन पर सब से संगीन इल्ज़ाम यह है कि उनकी मुस्तक़िल तस्नीफ़ एक भी नहीं। उनकी सज़ा उस वक़्त मुकम्मल समझी जायेगी जब वह जेल से एक मुस्तक़िल तस्नीफ़ पेश कर देंगे।

एक साहब पर इल्ज़ाम है कि वह बिल्कुल मामूली सी बात को ग़ैर मामूली तूल देकर लिखते हुए पकड़े गये। ग़ैर मामूली तवालत ने मसले को जो ख़ासा सुलझा सुलझाया था तफ़सील में डुबो कर ख़ासा उलझा दिया। उनको गिरफ़्तार कर लिया गया। उन पर पब्लिक का वक़्त और दिमाग़ ख़राब करने के इल्ज़ाम में मुक़दमा चलाया जायेगा। फ़िलहाल उनको हुक्म दिया गया कि वह अपनी जुम्ला तसानीफ़ को मुख़्तसर करने का काम शुरु कर दें। जिस किताब की तल्ख़ीस पेश करने में वह नाकाम रहें वह ज़ब्त कर ली जायेगी। एक दूसरी इत्तेला के बमोजिब जेल में उन से मुख़्तसर नवेसी की मशक्कत ली जा रही है।

एक दूसरे मुसन्निफ़ चलती ट्रेन में कुछ लिखते हुए पकड़े गये। उनकी तलाशी लेने पर कुछ बरामद न हो सका। वह जो लिख रहे थे उसमे महज़ पिछली पढ़ाई और हाज़िर दिमाग़ी का फ़ुतूर पाया गया। एलानिये में कहा गया है कि वह रेडियो टॉक थी। इस क़िस्म के मारके वह बिला पढ़े लिखे मुसलसल बीस साल से अंजाम दे रहे हैं। उनकी मस्रुफ़ियात के सबब अमलन अब यह मुमकिन नहीं कि वह लिख–पढ़ सकें। अंदाज़ा है कि अब तक उन्होंने जितनी टॉक दी हैं उनके सिलसिले में एक मज़ीद टॉक के ज़रिये पब्लिक से बाक़ायदा माफ़ी मंगवाई जायेगी। फ़ौज ने उनके ऊपर फ़रेब देही और आँखों में धूल झोंकने के सिलसिले में मुक़दमा क़ायम किया है।

چھان بین ہو رہی ہے۔ توقع ہے کہ اس قسم کی گرفتاریاں اور بھی جلد ہی عمل میں آئیں گی جس سے پھر ایک ریڈیو سیریز۔ ''معافی ہی تو ہے'' کے سلسلے میں نشر ہوا کرے گی۔

ایک بزرگ جو روپوش ہو گئے ہیں ان پر مغربی تصانیف کے حوالے اور غیر ملکی زبانوں کے الفاظ کی بھرمار کے سلسلے میں باز پرس کی جائے گی۔ ان کو عدالت میں حاضر ہونے کے بعد بطور ضمانت ایک مقالہ خالص اردو میں لکھ کر دینا ہو گا۔

گرفتار ہونے والوں میں سب سے دل چسپ ایک بزرگ ہیں جو ''تحقیق لفظ ل'' کے اوپر ہزار صفحات کا ایک مختصر رسالہ تصنیف کرتے ہوئے پکڑے گئے۔ سارا طومار اس بات پر تھا کہ ''ل'' عربی ہے یا ترکی؟ ان پر الزام ہے کہ جب تک وہ اختلاف کا پہلو پیدا نہ کر لیں قلم نہیں اٹھاتے۔ ان پر نقض امن اور پیپر کنٹرول ایکٹ کی خلاف ورزی کر کے کاغذ خراب کرنے کے سنگین الزامات ہیں۔ فوجی وکیل کا کہنا ہے کہ جو بات یہ لکھ رہے تھے اور نہ جانے کب تک لکھتے رہتے وہ بات دو لفظوں میں بھی بیان کی جا سکتی تھی کہ ''آیا ہے......یا......نہیں ہے؟''

کچھ بزرگوں نے شہرت حاصل کرنے کے لیے گمنام شعرا اور ادیبوں کے خطوط شائع کرنے شروع کر دیے تھے۔ ان پر الزام یہ تھا کہ جب ان شعرا کا کلام خراب تھا تو پھر تفصیل سے ان کے حالات بیان کر کے ان کو بدنام کرنے کی کیا ضرورت تھی۔ ادیبوں کے خطوط شائع کرنے والوں پر فی الحال ''ڈیڈ لیٹر آفس'' میں داخلے پر پابندی عائد کر دی گئی ہے۔

بہت سے ایسے بزرگوں کا انکشاف ہوا ہے جو اس انتظار میں رہتے کہ کوئی ادیب یا شاعر مرے تو اس پر کچھ کہیں۔ کچھ اور نہ سہی تو تاریخ وفات ہی سہی۔ ان لوگوں سے یہ وعدہ لے کر چھوڑ دیا گیا کہ آئندہ صرف زندہ لوگوں پر لکھنے کے مجاز ہیں۔

وہ ادیب جو جدید اور قدیم کے سلسلے میں تنقیدیں پڑھ پڑھ کر الجھ گئے تھے ان کو فی الحال نئے قانون کے مطابق اس وقت تک اپنے حالات کے اظہار کی اجازت نہیں ملے گی جب تک کہ وہ جدید اور قدیم کے گہرے مطالعے کے بعد اپنی فکر اور اظہار میں ایک توازن نہ پیدا کر لیں۔ اس درمیانی وقفہ میں ہر قسم کے بحث و مباحثہ سے ان کو سخت پرہیز کرایا جائے گا۔

छान बीन हो रही है। तवक़्क़ो है कि इस क़िस्म की गिरफ़्तारियाँ और भी जल्द ही अमल में आयेंगी जिससे फिर एक रेडियो सीरीज़– "माफ़ी ही तो है" के सिलसिले में नश्र हुआ करेगी।

एक बुज़ुर्ग जो रुपोश हो गये हैं उन पर मग़रिबी तसानीफ़ के हवाले और ग़ैर मुल्की ज़बानों के अल्फ़ाज़ की भरमार के सिलसिले में बाज़ पुर्स की जायेगी। उनको अदालत में हाज़िर होने के बाद बतौर ज़मानत एक मेक़ाला ख़ालिस उर्दू में लिखकर देना होगा।

गिरफ़्तार होने वालों में सब से दिलचस्प एक बुज़ुर्ग हैं जो "तहक़ीक़ लफ़्ज़ लाम" के ऊपर हज़ार सफ़हात का एक मुख़्तसर रिसाला तस्नीफ़ करते हुए पकड़े गये। सारा तूमार इस बात पर था कि "लाम" अरबी है या तुर्की? उन पर इल्ज़ाम है कि जब तक वह एख़्तलाफ़ का पहलू पैदा न कर लें क़लम नहीं उठाते। उन पर नक़्जे– अमन और पेपर कंट्रोल एक्ट की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करके काग़ज़ ख़राब करने के संगीन इल्ज़ामात हैं। फ़ौजी वकील का कहना है कि जो बात यह लिख रहे थे और न जाने कब तक लिखते रहते वह बात दो लफ़्ज़ों में भी बयान की जा सकती है कि "आया......है....या........नहीं है?"

कुछ बुज़ुर्गों ने शोहरत हासिल करने के लिए गुमनाम शोअरा और अदीबों के ख़ुतूत शाया करने शुरु कर दिये थे। उन पर इल्ज़ाम ये था कि जब शोअरा का कलाम ख़राब था तो फिर तफ़्सील से उनके हालात बयान करके उनको बदनाम करने की क्या ज़रुरत थी। अदीबों के ख़ुतूत शाया करने वालों पर फ़िलहाल "डेडलेटर ऑफ़िस" में दाख़ले पर पाबंदी आयद कर दी गई है।

बहुत से ऐसे बुज़ुर्गों का इनकशाफ़ हुआ है जो इस इन्तज़ार में रहते कि कोई अदीब या शायर मरे तो उस पर कुछ कहें। कुछ और न सही तो तारीख़े–वफ़ात ही सही। उन लोगों से यह वादा लेकर छोड़ दिया गया कि आइन्दा सिर्फ़ ज़िंदा लोगों पर लिखने के मजाज़ हैं।

वह अदीब जो जदीद और क़दीम के सिलसिले में तनक़ीदें पढ़–पढ़कर उलझ गये थे उनको फ़िलहाल नये क़ानून के मुताबिक़ उस वक़्त तक अपने ख़यालात के इज़हार की इजाज़त नही मिलेगी जब तक कि वह जदीद और क़दीम के गहरे मुतालए के बाद फ़िक्र और इज़हार में तवाज़ुन न पैदा करलें। इस दरमियानी वक़्फ़े में हर क़िस्म के बहसो–मोबाहसे से उनको सख़्त परहेज़ कराया जायेगा।

ایک مشہور و معروف نقاد اور ان کے غیر معروف شاگرد نے جو تنقیدی قتلِ عام کے قائل ہیں، عدالت میں حلف اٹھایا کہ زندگی بھر وہ کسی کی ایک لفظ بھی تعریف نہ کر سکے۔ اگر ایک جملہ میں تعریف بھی کی تو اگلے پیراگراف میں تکذیب بھی کر دی۔ ان کو حکم دیا گیا ہے کہ وہ اب بقیہ تمام زندگی ان تمام ادیبوں، شاعروں اور نقادوں کو جن کو وہ اپنے قلم سے بے ہوش کیا کرتے تھے ہوش میں لانے کے لیے ان کی خوبیاں تلاش کریں، خصوصاً وہ جن سے وہ ذاتی طور پر خوش نہیں ہیں ان کی خوبیاں برسرِ عدالت تحریری صورت میں سب سے پہلے پیش کریں اور اپنا ایجاد کردہ دل آزار طریقہ فوراً بند کر دیں۔ ایک اطلاع یہ بھی ہے کہ شاید جلد ہی ان کو کسی مشرقی کتب خانہ میں قید کر دیا جائے جہاں ان کو مشرقی ادب پاروں کو خالص مشرقی انداز سے پرکھنے کی مفت تربیت دی جائے گی، جس کے انتظامات ہو رہے ہیں۔ پکڑے جانے والے افسانہ نگاروں میں زیادہ تعداد ان کی ہے جو قاری کو اجنبی سرزمینوں میں لے جا کر اجنبی کرداروں سے ملواتے تھے۔ اب غالباً ان کو دیسی کرداروں کے روزمرّہ کے مسائل کی عکاسی کروائی جائے گی۔ بہت سے افسانہ نگاروں پر یہ الزام تھا کہ جب تک اس دن کا اخبار نہ پڑھ لیا جائے جس دن افسانہ لکھا گیا تھا۔ موضوع کے ہنگامے کا قاری کے ذہن میں آنا ممکن نہیں۔ ایسے افسانہ نگاروں کو اس روش سے بچ کر چلنے کی ہدایت کے ساتھ حکم دیا گیا ہے کہ وہ اپنی جملہ تصانیف کے ساتھ ''ببلوگرافی'' کا بھی اضافہ کر دیا کریں تاکہ ہنگامے کا پتہ چلانے میں آسانی ہو۔ خاصی تعداد ان کی ہے جو کسی نہ کسی سے بری طرح متاثر تھے۔ ان کی انفرادیت واپس لانے کے لیے شاید اب ان کو سب سے الگ رکھا جائے گا۔

ایک مشہور افسانہ نگار جن پر الزام ہے کہ وہ راہ چلتے مونگ پھلی کھاتے، دہی بڑوں کے پتے چاٹتے، بیڑی پیتے، سڑکوں پر آوارہ گھومتے، فاقہ مستی کرتے اور معمولی ملازمت کرتے تھے، بڑے شان دار افسانے لکھا کرتے تھے۔ مگر جب ان کو عزت، شہرت اور دولت ملی اور وہ فلمی دنیا میں چلے گئے تو جاتے وقت وہ ساتھ میں اپنا قلم بھی لیتے گئے جس سے اب وہ خراب سے خراب افسانے لکھنے کی مشق کر رہے ہیں۔ چنانچہ اب ان کو مجبوراً پھر اسی معمولی ملازمت پر اس تنبیہ کے ساتھ واپس بھیج دیا گیا ہے کہ اگر اب بھی اچھے

एक मशहूरो–मारुफ़ नक़्क़ाद और उनके ग़ैर मारुफ़ शागिर्द ने जो तनक़ीदी क़त्ले–आम के क़ायल हैं, अदालत में हलफ़ उठाया कि ज़िन्दगी भर वह किसी की एक लफ़्ज़ भी तारीफ़ न कर सके। अगर एक जुमले में तारीफ़ भी की तो अगले पैराग्राफ़ में तकज़ीब भी कर दी। उनको हुक्म दिया गया है कि वह अब बक़ीया तमाम ज़िन्दगी उन तमाम अदीबों, शायरों और नक़्क़ादों को जिन को वह अपने क़लम से बेहोश किया करते थे होश में लाने के लिए उनकी ख़ूबियाँ तलाश करें, ख़ुसूसन वह जिन से वह ज़ाती तौर पर खुश नहीं हैं और उनकी ख़ूबियाँ बर सरे–अदालत तहरीरी सूरत में सब से पहले पेश करें और अपना ईजाद करदा दिल आज़ार तरीक़ा फ़ौरन बंद कर दें। एक इत्तला यह भी है कि शायद जल्द ही उनको किसी मशरिक़ी क़ुतुब ख़ाने में क़ैद कर दिया जायेगा जहाँ उनको मशरिक़ी अदब पारों को ख़ालिस मशरिक़ी अंदाज़ से परखने की मुफ़्त तरबीयत दी जायेगी, जिसके इन्तज़ामात हो रहे हैं। पकड़े जाने वाले अफ़साना निगारों में ज़्यादा तादाद उनकी है जो क़ारी को अजनबी सर–ज़मीनों में ले जाकर अजनबी किरदारों से मिलवाते थे। अब ग़ालेबन उनको देसी किरदारों के रोज़मर्रा के मसाएल की अक्कासी करवाई जायेगी। बहुत से अफ़साना निगारों पर यह इल्ज़ाम था कि जब तक उस दिन का अख़बार न पढ़ लिया जाये जिस दिन अफ़साना लिखा गया। मौज़ू के हंगामें का क़ारी के ज़ेहन में आना मुमकिन नहीं। ऐसे अफ़साना निगारों को इस रविश से बचकर चलने की हिदायत के साथ हुक्म दिया गया है कि वह अपनी जुम्ला तसानीफ़ के साथ "बिबलोग्राफ़ी" का भी इज़ाफ़ा कर दिया करें ताकि हंगामें का पता चलाने में आसानी हो। ख़ासी तादात उनकी है जो किसी न किसी से बुरी तरह मुतास्सिर थे। उनकी इन्फ़रादियत वापस लाने के लिए शायद अब उनको सब से अलग रखा जायेगा।

एक मशहूर अफ़साना निगार जिन पर इल्ज़ाम है कि वह राह चलते मूंग फली खाते, दही–बड़ों के पत्ते चाटते, बीड़ी पीते, सड़कों पर आवारा घूमते, फ़ाक़ा–मस्ती करते और मामूली मुलाज़मत करते थे, बड़े शानदार अफ़साने लिखा करते थे। मगर जब उनको इज़्ज़त, शोहरत और दौलत मिली और वह फ़िल्मी दुनिया में चले गये तो जाते वक़्त वह साथ में अपना क़लम भी लेते गये जिससे अब वह ख़राब–ख़राब अफ़साने लिखने की मश्क़ कर रहे हैं। चुनांचे अब उनको मजबूरन फिर उसी मुलाज़मत पर इस तंबीह के साथ वापस भेज दिया गया है कि अगर अब भी अच्छे

افسانے نہیں لکھے گئے تو آئندہ ان کو اس سے بھی معمولی نوکری پر تعینات کیا جائے گا۔ ایک ان سے بھی زیادہ ممتاز افسانہ نگار جو کسی زمانہ میں تار گھر میں کلرکی کرتے تھے اور شان دار افسانے لکھتے تھے۔ شہرت اور دولت راس آنے پر ان کو بھی "ملیریا" ہو گیا تھا۔ انھوں نے پڑھنے لکھنے سے توبہ کر لی اور بالکل اچھے ہو گئے۔ ان کو وارننگ دے دی گئی ہے کہ اگر انھوں نے جلد ہی اسی پیمانے پر افسانہ نگاری نہ شروع کر دی تو ان کے پرانے تار گھر ان کو بذریعہ تار واپس بلا لیا جائے گا۔ اس ضمن میں ایک معزز افسانہ نگار خاتون بھی آتی ہیں جو پہلے کسی اسکول میں استانی تھیں اور غضب کے افسانے لکھا کرتی تھیں، مگر جب سے انھوں نے کسی فلم ساز سے شادی کر لی اور فلمی دنیا سے لاکھوں روپے کمانے لگیں تب سے وہ اپنی افسانہ نگاری کی جانب سے غافل ہو گئی ہیں۔ ان استانی بی کو ان کے پرانے اسکول میں اسی ایک سو بیس روپے ماہوار والی جگہ پر واپس بھیجنے کے فوج انتظامات کر رہی ہے۔ ویسے ان سب پر "بہ حیثیت مجموعی" دولت اور شہرت کے راس نہ لانے کے الزام میں مقدمہ چلایا جائے گا۔

کرنل آفریدی اور کیپٹن وحید نے بالکل نئے قسم کے ادیب گرفتار کر لیے ہیں جن کے اوپر مستقل سنسنی خیزی کا الزام ہے۔ ان لوگوں نے بتایا کہ وہ جاسوسی اور سائنسی ادب پیدا کر لیتے ہیں۔ تحقیقات سے پتہ چلا ہے کہ سائنس ان کے خاندان میں کسی نے نہیں پڑھی، اس وجہ سے وہ بہ آسانی سائنسی ادب پیدا کر لیتے ہیں۔ ان میں سے ایک صاحب "لاشوں کا پہاڑ" بناتے ہوئے پکڑے گئے۔ دوسرے صاحب "بے گناہ قاتل" کو جنم دیتے ہوئے گرفتار کر لیے گئے۔ ان پر سنسنی خیزی، راتوں کی نیند حرام کرنے، بھوک پیاس اڑانے، مار دھاڑ، قتل، چوری، اغوا، ڈاکہ ڈلانے، اخلاق خراب کرنے اور گھر سے بھاگنے کی تربیت دینے کے الزام میں مقدمے چلائے جائیں گے۔ ان میں ایک صاحب اپنے ہیرو کو روحوں کی دنیا میں پہنچانے کے لیے خون کے دریا بہاتے ہوئے اور ہیروئن کی تلاش میں پولس کو پریشان کرتے ہوئے پکڑے جانے کے الزام میں ماخوذ ہیں۔ ان کے پاس سے بڑی تعداد میں افیون، اس کو کشید کرنے کے آلات اور قدیم مصری جادو سے متعلق کچھ نقلی کتابیں اور کچھ انگریزی کے جاسوسی ناول بھی برآمد کیے گئے جو ان کی شہرت کا اصل باعث

अफ़साने नहीं लिखे गये तो आइन्दा उनको इससे भी मामूली नौकरी पर तैनात किया जायेगा। एक उनसे भी ज़्यादा मुमताज़ अफ़साना निगार जो किसी ज़माने में तार घर में क्लर्की करते थे और शानदार अफ़साने लिखते थे। शोहरत और दौलत रास आने पर उनको "फ़िल्मेरिया" हो गया था। उन्होंने पढ़ने–लिखने से तौबा कर ली और बिल्कुल अच्छे हो गये। उनको वार्निंग देदी गई है कि अगर उन्होंने जल्द ही उसी पैमाने की अफ़साना निगारी न शुरु कर दी तो उनके पुराने तार घर उनको बज़रिये तार वापस बुला लिया जायेगा। इस ज़िम्न में एक मोअज़्ज़िज़ अफ़साना निगार ख़ातून भी आती हैं जो पहले किसी स्कूल में उस्तानी थीं और ग़ज़ब के अफ़साने लिखा करती थीं, मगर जब से उन्होंने किसी फ़िल्म–साज़ से शादी कर ली और फ़िल्मी दुनिया से लाखों रुपये कमाने लगीं तब वह अपनी अफ़साना निगारी की जानिब से ग़ाफ़िल हो गई हैं। इन उस्तानी बी को उनके पुराने स्कूल में उसी एक सौ बीस रुपये माहवार वाली जगह पर वापस भेजने के फ़ौज इन्तज़ामात कर रही है। वैसे इन सब पर 'बहैसियत मजमूई' दौलत और शोहरत के रास न लाने के इल्ज़ाम में मुक़दमा चलाया जायेगा।

कर्नल आफ़रीदी और कैपटन वहीद ने बिल्कुल नये क़िस्म के अदीब गिरफ़्तार कर लिए हैं जिन के ऊपर मुस्तक़िल सनसनी ख़ेज़ी का इल्ज़ाम है। उन लोगों ने बताया कि वह जासूसी और साइंसी अदब पैदा कर लेते हैं। तहक़ीक़ात से पता चला है कि साइंस उनके ख़ानदान में किसी ने नहीं पढ़ी, इस वजह से वह बआसानी साइंसी अदब पैदा कर लेते हैं। उनमें से एक साहब "लाशों का पहाड़" बनाते हुए पकड़े गये। दूसरे साहब "बेगुनाह क़ातिल" को जन्म देते हुए गिरफ़्तार कर लिये गये। उन पर सनसनी ख़ेज़ी, रातों की नींद हराम करने, भूक प्यास उड़ाने, मार धाड़, क़त्ल, चोरी, अग़वा, डाका डालने, अख़लाक़ ख़राब करने और घर से भागने की तरबियत देने के इल्ज़ाम में मुक़दमे चलाये जायेंगे। उनमें एक साहब अपने हीरो को रुहों की दुनिया में पहुँचाने के लिए ख़ून के दरिया बहाते हुए और हीरोइन की तलाश में पुलिस को परेशान करते हुए पकड़े जाने के इल्ज़ाम में माख़ूज़ हैं। उनके पास से बड़ी तादाद में अफ़ियून, उसको कशीद करने के आलात और क़दीम मिस्री जादू से मुतअल्लिक़ कुछ नक़ली किताबे और कुछ अंग्रेज़ी के जासूसी नावेल भी बरआमद किये गये जो उनकी शोहरत का अस्ल बाएस

تصور کیے جارہے ہیں۔ جیل میں ان سب سے انسانوں اور انسانی مسائل پر لکھانے کی جبری مشق کرائی جائے گی۔

شاعروں کے بارے میں جو سنسنی خیز انکشاف ہوئے ہیں ان سے ان کی چال اور نقل و حرکت پر بخوبی روشنی پڑتی ہے۔ زیادہ تر اس وقت حراست میں ہیں۔ بقیہ کی تلاش جاری ہے۔ شعرا دوسروں کی زمینوں میں شعر کہتے، چائے خانوں یا مے خانوں میں دین و دنیا، بیوی بچوں سے ایک دم غافل پائے گئے۔ ان میں شاعر کم اور شاعر کے بھیس میں زیادہ تھے۔ فوج کی جانب سے ایک اعلانیہ میں بتایا گیا ہے کہ جملہ 'بوہمین شعرا' فوراً اپنے آپ کو انسان ثابت کرنے کی کوشش کریں۔ فی الحال جو شاعر کماتا نہ ہو، بیوی بچوں کو ٹھیک سے نہ رکھتا ہو، اس کا کلام بحق فوج ضبط کرلیا جائے گا۔ اس کے علاوہ ان کو اپنے "دوادین" کی اصلاح، نظر ثانی اور مختصر کرنے کا حکم دیا گیا ہے۔ دوسروں کی زمینوں میں کہنے اور دوسروں کے رنگ کو اپنانے والوں کو دریا برد کیا جارہا ہے۔ جو شعرا غزل کی گردن مارنے پر تیار رہتے تھے ان کو اب صرف غزل ہی کہنے کا لائیسنس مل سکے گا، اور آزاد نظم کے پرستاروں کو حکم دیا گیا ہے کہ وہ غزل کی مخالفت بند کر کے نظم کی نزاکتوں کو سمجھنے کی کوشش شروع کردیں۔ شعرا کو خبردار کیا گیا ہے کہ وہ آبادیوں سے باہر ویرانوں میں جانا اور آبادیوں کو کوسنا فوراً بند کردیں۔ مسلسل اور طویل نظمیں، غزلیں خلاف قانون قرار دے دی گئی ہیں۔

ملک ادب کے شمالی گوشوں سے خبر آئی ہے کہ وہاں بکثرت واہ واہ کرنے والے گرفتار کرلیے گئے جو مشاعروں میں صرف آواز پر آواز دے رہے تھے۔ مشاعروں پر شعرا اور انتخاب کی پابندی لازمی قرار دے دی گئی۔ مزید شعرا کو گرفتار کرنے کے سلسلے میں فی الحال فوج نے معذوری کا اظہار کردیا ہے کیوں کہ اس طرح آبادی اور فوج کا بیشتر حصہ حراست میں آجائے گا۔ اس لیے ان پر قاعدے قانون کی سختی کردی گئی ہے۔ شعرا کو حکم دیا گیا ہے کہ وہ محض شاعر نہ بنیں بلکہ کام کے آدمی بھی بنیں۔ گلے بازی کو سخت جرم قرار دیا گیا ہے۔

ایک شاعر رسالہ کو غزل بھیجتا ہوا پکڑا گیا۔ اس پر یہ الزام ہے کہ اس نے خود

तसव्वुर किये जा रहे हैं। जेल में उन सब से इंसानों और इंसानी मसायल पर लिखाने की जबरी मश्क कराई जायेगी।

शायरों के बारे में जो सनसनी ख़ेज़ इन्कशाफ़ हुए हैं उनसे उनकी चाल और नक़्लो–हरकत पर बख़ूबी रोशनी पड़ती है। ज़्यादातर इस वक़्त हिरासत में हैं। बक़िया की तलाश जारी है। शोअरा दूसरों की ज़मीनों में शेर कहते, चायख़ानों या मयख़ानों में दीनो–दुनिया, बीवी बच्चों से एकदम ग़ाफ़िल पाये गये। उनमें शायर कम और शायर के भेस में ज़्यादा थे। फ़ौज की जानिब से एक एलानिया में बताया गया है कि जुम्ला " बोहमियन शोअरा' फ़ौरन अपने आपको इन्सान साबित करने की कोशिश करें। फ़िलहाल जो शायर कमाता न हो, बीवी बच्चों को ठीक से न रखता हो, उसका कलाम बहक़्क़े–फ़ौज ज़ब्त कर लिया जायेगा। इसके अलावा उनको अपने "दवावीन" की इस्लाह, नज़रे–सानी और मुख़्तसर करने का हुक्म दिया गया है। दूसरों की ज़मीनों में कहने और दूसरों के रंग को अपनाने वालों को दरया–बदर किया जा रहा है। जो शोअरा ग़ज़ल की गर्दन मारने पर तैयार रहते थे उनको सिर्फ़ ग़ज़ल ही कहने का लाइसेंस मिल सकेगा, और आज़ाद नज़्म के परस्तारों को हुक्म दिया गया है कि वह ग़ज़ल की मुख़ालफ़त बंद करके नज़्म की नज़ाकतों को समझने की कोशिश शुरु कर दें। शोअरा को ख़बरदार किया गया है कि वह आबादियों से बाहर वीरानियों में जाना और आबादियों को कोसना बंद कर दें। मुसलसल और तवील नज़्में, ग़ज़लें ख़िलाफ़े–क़ानून क़रार दे दी गई हैं।

मुल्के–अदब के शुमाली गोशों से ख़बर आई है कि वहाँ बकसरत वाह–वाह करने वाले गिरफ़्तार कर लिए गये हैं जो मुशायरों में सिर्फ़ आवाज़ पर आवाज़ दे रहे थे। मुशायरों पर शोअरा और इन्तख़ाब की पाबंदी लाज़मी क़रार दे दी गई। मज़ीद शोअरा को गिरफ़्तार करने के सिलसिले में फ़िलहाल फ़ौज ने माज़ूरी की इज़हार कर दिया है क्योंकि इस तरह आबादी और फ़ौज का बेश्तर हिस्सा हिरासत में आ जायेगा। इसलिए उन पर क़ायदे क़ानून की सख़्ती कर दी गई है। शोअरा को हुक्म दिया गया है कि वह महज़ शायर न बनें बल्कि काम के आदमी भी बनें। गले बाज़ी को जुर्म क़रार दिया गया है।

एक शायर रिसाले को ग़ज़ल भेजता हुआ पकड़ा गया। उस पर यह इल्ज़ाम है कि उसने खुदअपने आपको अपने हाथों से "अल्लामा" और

اپنے آپ کو اپنے ہاتھوں سے ''علامہ'' اور ''ایشیا کا عظیم ترین شاعر'' وغیرہ لکھا تھا۔ اس پر دوسروں سے بھی جبراً اپنے آپ کو عظیم شاعر کہلوانے اور خلاف مرضی تعریفی اداریے لکھوانے کے جرم میں مقدمہ قائم کر دیا گیا ہے۔ ایک اور شاعر جو کسی اعلیٰ عہدہ پر فائز تھے اپنے اسٹینو سے خود اپنی شان میں تنقیدی مقالہ لکھواتے ہوئے بروقت پکڑ لیے گئے۔ چوں کہ وہ شاعر خراب ہیں اور مقالہ اچھا تھا اس لیے اس کو ضائع کر دیا گیا۔ تلاشی لینے پر ان کے قبضہ سے کافی تعداد میں اس قسم کے جزیہ قصائد برآمد ہوئے۔ ایک نیوز بلیٹن میں تمام ماتحتوں کو حکام پر لکھنے سے باز رہنے کی تلقین کرتے ہوئے اس کو سخت جرم قرار دیا گیا ہے۔ خلاف ورزی کرنے والے ماتحتوں کو آگاہ کر دیا گیا ہے کہ آئندہ اگر اس پر عمل نہ کر سکے تو ان کو سزا کے طور پر افسر بنا دیا جائے گا۔ اس قسم کے تمام گراں قدر مضامین کی تلاش ان کو ضائع کرنے کے لیے برابر جاری ہے۔

ایک ممتاز شاعر پر الزام ہے کہ جب تک وہ جیل میں تھے بہت اچھی چیزیں کہتے تھے، مگر جب جیل سے رہا ہوئے تقریباً خاموش ہیں۔ چنانچہ اس تدبیر میں کہ وہ دوبارہ اسی زور و شور سے شاعری شروع کر دیں ان کو پھر جیل خانے روانہ کر دیا گیا ہے۔ ایک بزرگ شاعر جن پر الزام ہے کہ جب اقبالؔ و اصغر وغیرہ نے شاعری شروع کی تھی تب وہ ان کو باقاعدہ اپنا معاصر و حریف خیال کر کے ان کی خیالی مخالفتیں کرتے رہتے تھے اور ہر پہلو سے ان کو اپنے سے کمتر درجے کا شاعر ثابت کرنے پر اپنی ساری آورد صرف کر دیتے تھے اور اب وہ فیضؔ اور ان کے بعد کی نسل تک کے ہر ایک نئے شاعر کو اسی پیمانے پر اپنا حریف سمجھتے ہیں۔ ان کو خبردار کیا گیا ہے کہ وہ ادبی معرکوں اور دنگلوں میں جو وقت ضائع کر دیا کرتے ہیں اس کو اپنی شاعری پر صرف کر کے اسے بہتر بنانے کی کوشش کریں۔ اس سلسلہ میں ان کو اصلاح کا آخری موقع دیا گیا ہے مگر اس شرط پر کہ یا تو شرط منظور کریں ورنہ اپنے کو مردہ اعلان کر کے لکھنا چھوڑ دیں۔

کرنل مشفق الرحمٰن نے کئی ممتاز مزاح نگاروں کو حراست میں لے لیا۔ ان پر یہ الزام ہے کہ ان کے مزاحیہ مضامین پڑھ کر ہنسی بھی نہیں آتی، رونا تو دور کی بات ہے۔

اینٹی کرپشن ڈپارٹمنٹ نے کچھ ایسے ادیبوں اور شاعروں کو بھی گرفتار کیا ہے جو

"एशिया का अज़ीम तरीन शायर" वग़ैरह लिखा था। इस पर दूसरों से भी जबरन अपने आपको अज़ीम शायर कहलवाने और ख़िलाफ़े मर्ज़ी तारीफ़ी इदारिये लिखवाने के जुर्म में मुक़दमा क़ायम कर दिया गया है। एक और शायर जो किसी आला ओहदे पर फ़ायज़ थे अपने स्टैनो से ख़ुद अपनी शान में तनक़ीदी मेक़ाला लिखवाते हुए बरवक़्त पकड़ लिए गये। चूंकि वह शायर ख़राब हैं और मेक़ाला अच्छा था इसलिए उसको ज़ाया कर दिया गया। तलाशी लेने पर उनके क़ब्ज़े से काफ़ी तादाद में इस क़िस्म के जब्रिया क़सायद बरआमद हुए। एक न्यूज़ बुलेटिन में तमाम मातहतों को हुक्काम पर लिखने से बाज़ रहने की तल्क़ीन करते हुए उसको सख़्त जुर्म क़रार दिया गया है। ख़िलाफ़ वरज़ी करने वाले मातहतों को आगाह कर दिया गया है कि आइन्दा अगर उस पर अमल न कर सके तो उनको सज़ा के तौर पर अफ़सर बना दिया जायेगा। इस क़िस्म के गराँ–क़द्र मज़ामीन की तलाश उनको ज़ाया करने के लिए बराबर जारी है।

एक मुमताज़ शायर पर इल्ज़ाम है कि जब तक वह जेल में थे, बहुत अच्छी चीज़ें कहते थे, मगर जब जेल से रिहा हुए तक़रीबन ख़ामोश हैं। चुनांचे इस तदबीर में कि वह दोबारा उसी ज़ोरो–शोर से शायरी शुरु कर दें उनको फिर जेल–ख़ाने रवाना का दिया गया है। एक बुज़ुर्ग शायर जिन पर इल्ज़ाम है कि जब इक़बाल व असग़र ने शायरी शुरु की थी तब वह उनको बाक़ायदा अपना मआसिर[1] व हरीफ़ ख़याल करके उनकी ख़याली मुख़ालफ़तें करते रहते थे और हर पहलू से उनको अपने से कमतर दर्जे का शायर साबित करने पर अपनी सारी आवुर्द सर्फ़ कर देते थे और अब वह फ़ैज़ और उनके बाद की नस्ल तक के हर एक नये शायर को उसी पैमाने पर अपना हरीफ़ समझते हैं। उनको ख़बरदार किया गया है कि वह अदबी मारकों और दंगलों में जो वक़्त ज़ाया कर दिया करते हैं उसको अपनी शायरी पर सर्फ़ करके उसे बेहतर बनाने की कोशिश करें। इस सिलसिले में उनको इस्लाह का आख़री मौक़ा दिया गया है मगर इस शर्त पर कि या तो शर्त मंज़ूर करें वरना अपने को मुर्दा एलान करके लिखना छोड़ दें।

कर्नल मुशफ़िकुर्रहमान ने कई मज़ाह निगारों को हिरासत में ले लिया। उन पर यह इल्ज़ाम है कि उनके मज़ाहिया मज़ामीन पढ़कर हंसी भी नहीं आती रोना तो दूर की बात है। एण्टी करप्शन डिपार्टमेंट ने कुछ ऐसे अदीबों और शायरों को भी गिरफ़्तार किया है जो

1. समकालीन

پیسے کمانے کے لیے دوسروں کے ناموں سے الٹا سیدھا لکھتے تھے یا ان کو مرے ہوئے ادیبوں کے نام سے منسوب کر کے غلط فائدہ اٹھاتے تھے۔ ان کو چار سو بیس کرنے کے جرم میں سزائیں دی جائیں گی۔ محکمہ نے چند ایسے صحافیوں کو بھی حراست میں لے لیا ہے جو مخالفت کر کے، بحثیں چلا کے، خواہ مخواہ ایک دوسرے پر کیچڑ اچھلوا کے روپیہ کماتے اور محض روپیہ کی خاطر ہر اچھی چیز کی مخالفت کرتے تا کہ پڑھنے والے چونک اٹھیں اور اسی بہانے ان کا رسالہ چل نکلے۔ اکثر نے اپنے نام و شہرت سے ناجائز فائدہ اٹھا کر اپنی کتابیں ردی کاغذ پر چھاپ چھاپ کر کوڑیوں میں اشرفیاں کمائی تھیں۔ ان سب کی ضمانت کے لائیسنس ضبط کر کے ان کو حوالات میں بند کر دیا گیا ہے۔ محکمہ نے ان موسمی ادیبوں پر رسالہ نکالنے کی پابندی لگا دی ہے جو اس وقت تک ادیب رہتے ہیں جب تک ان کا رسالہ نکلتا رہتا ہے اور اس کے بعد وہ بھی رسالے کی پلٹن کے ساتھ میدان سے غائب ہو جاتے ہیں۔ سزا کے طور پر اب ان کو بلا رسالہ کے میدان میں لایا جائے گا۔ اینٹی کرپشن والوں نے ایسے بہترین ادب کے انتخاب کرنے والے برآمد کیے ہیں جو ہر سال اس وجہ سے انتخاب کرتے تھے تا کہ ان کی چیزیں بھی انتخاب میں آ جائیں۔ یہ انتخابات ضائع کر دیے گئے۔ اب اینٹی کرپشن والے خود اپنی نگرانی میں نئے سرے سے سارے انتخاب کروا رہے ہیں۔ سزا کے طور پر ان لوگوں کی کوئی چیز انتخاب میں شامل نہیں کی جائے گی۔ آج شام کو اینٹی کرپشن والوں نے ایسے ادیب بھی گرفتار کیے جو ہر سال دوڑ دھوپ کر کے اور تعلقات کے بل بوتے پر غلط کتابوں پر (سال بھر میں شائع ہونے والی بہترین کتابوں کا) انعام حاصل کر لیتے تھے۔ ان سب کی ضمانتیں اس وقت تک منظور نہیں ہوں گی جب تک کہ وہ انعام کے روپے واپس اور جرمانہ ادا نہ کر دیں۔ محکمہ نے ایک ادیب کے گھر دوڑ بھیجی۔ وہ نرا شاعر نکلا جو اس وقت اپنی بیوی پر رعب جمانے کے لیے سوائے اپنے سارے شاعروں اور ادیبوں کو جاہل ثابت کرنے کے علاوہ اپنا کلام بے لگام بھی متواتر سنا رہا تھا جسے سن سن کر اس کی بیوی بیچاری سخت بور ہو رہی تھی۔ ان کو گرفتار کر لیا گیا۔ ان کو لے جاتے وقت بیوی نے فوج کا شکریہ ادا کیا۔

اس کے بعد ہوٹلوں اور چائے خانوں پر چھاپے مار کر بہت سے شاعر اور ادیب

पैसे कमाने के लिए दूसरों के नामों से उल्टा सीधा लिखते थे या उनको मरे हुए अदीबों के नाम से मंसूब करके ग़लत फ़ायदा उठाते थे। उनको चार सौ बीस करने के जुर्म में सज़ायें दी जायेंगी। मोहकमे ने चंद ऐसे सहाफ़ियों को भी हिरासत में ले लिया है जो मुख़ालेफ़त कर के, बहसें चला के, ख़्वाहमख़्वाह एक दूसरे पर कीचड़ उछलवा के रुपया कमाते और महज़ रुपये की ख़ातिर हर अच्छी चीज़ की मुख़ालेफ़त करते ताकि पढ़ने वाले चौंक उठें और उसी बहाने उनका रिसाला चल निकले। अक्सर ने अपने नाम व शोहरत से नाजायज़ फ़ायदा उठाकर अपनी किताबें रद्दी काग़ज़ पर छाप–छापकर कौड़ियों में अशरफ़ियाँ कमाई थीं। उन सब की ज़मानत के लाइसेंस ज़ब्त करके उनको हवालात में बंद कर दिया गया है। मोहकमे ने उन मौसमी अदीबों पर रिसाला निकालने की पाबंदी लगा दी है जो उस वक़्त तक अदीब रहते थे जब तक कि उनका रिसाला निकलता रहता है और उसके बाद वह भी रिसाले की पलटन के साथ मैदान से ग़ायब हो जाते हैं। सज़ा के तौर पर उनको बिला रिसाले के मैदान में लाया जायेगा। एण्टी करप्शन वालों ने ऐसे बेहतरीन अदब के इन्तख़ाब करने वाले बरामद किये हैं जो हर साल इस वजह से इन्तख़ाब करते थे ताकि उनकी चीज़ें भी इन्तख़ाब में आजायें। यह इन्तख़ाबात ज़ाया कर दिये गये हैं। अब एण्टी करप्शन वाले ख़ुद अपनी निगरानी में नये सिरे से सारे इन्तख़ाब करवा रहे हैं। सज़ा के तौर पर उन लोगों की कोई चीज़ इन्तख़ाब में शामिल नहीं की जायेगी। आज शाम को एण्टी करप्शन वालों ने ऐसे अदीब भी गिरफ़्तार किये जो हर साल दौड़ धूप करके और तअल्लुक़ात के बल बूते पर ग़लत किताबों पर (साल भर में शाया होने वाली बेहतरीन किताबों का) इनाम हासिल कर लेते थे। उन सब की ज़मानतें उस वक़्त तक मंज़ूर नहीं होंगी जब तक कि वह इनाम के रुपये वापस और जुर्माना अदा न कर दें। मोहकमे ने एक अदीब के घर दौड़ भेजी। वह निरा शायर निकला जो उस वक़्त अपनी बीवी पर रोब जमाने के लिए सिवाय अपने, सारे शायरों और अदीबों को जाहिल साबित करने के अलावा अपना कलामे–बेलगाम भी मोतवातिर सुना रहा था जिसे सुन–सुनकर उसकी बीवी बेचारी सख़्त बोर हो रही थी। उनको गिरफ़्तार कर लिया गया है। उनको ले जाते वक़्त बीवी ने फ़ौज का शुक्रिया अदा किया।

उसके बाद होटलों और चाय–ख़ानों पा छापे मारकर बहुत से शायर और अदीब दूसरों की ग़ीबत करते हुए गिरफ़्तार कर लिए गये।

دوسروں کی غیبت کرتے ہوئے گرفتار کر لیے گئے۔ پکڑے جانے والوں میں بہت سے ''اینٹی لکچوئل'' جو کافی ہاؤس میں آفاقی ادب کے سلجھے ہوئے مسائل کی بحثوں میں الجھے ہوئے تھے، ان پر اینٹی کرپشن والوں نے دو الزامات عائد کیے۔ ایک تو زیر بحث موضوع سے متعلق جن کتابوں کے حوالے دیے جا رہے تھے یا تو وہ زیر طبع تھیں یا ابھی تک پڑھی نہیں گئی تھیں، دوسرے سب ایک دوسرے پر اپنی قابلیت اور علم کا غلط سکہ جمانے کی ناکام کوشش کر رہے تھے۔ ان کے خلاف پبلک سیفٹی ایکٹ کے تحت مقدمہ چلایا جائے گا۔ فی الحال کافی ہاؤس میں ان کے داخلہ پر پابندی عاید کر دی گئی ہے۔ ایک حالیہ اعلان میں محکمہ نے ان تمام نوجوانوں کو ان کے کام پر واپس جانے کا حکم دے دیا ہے جنھیں ''ادب'' ہو گیا تھا یعنی وہ کرتے کچھ اور تھے اور رہتے ادب کی جان پر سوار تھے اور اپنے کام کے ساتھ ادب کی بھی مٹی پلید کیے ہوئے تھے۔

موجودہ انقلاب میں اصلاحات کا ہر حلقۂ ادب میں بے پناہ استقبال کیا جا رہا ہے۔ ادب میں انتشار پیدا کرنے والے اب تقریباً منتشر ہو گئے ہیں۔ ادب میں ایک توازن، سنجیدگی اور پائداری کی ہر طرف امید کی جا رہی ہے۔ ''ادبی جمود'' کا نعرہ لگانے والے ''مارشل لا'' کے طفیل میں اب مقالے لکھ لکھ کر ثابت کر رہے ہیں کہ ادب میں نہ کبھی جمود تھا اور نہ ہے۔ آگے چل کر ''ادبی مارشل لا'' کا دور تاریخ ادب میں ادب کے سنہری دور کے نام سے یاد کیا جائے گا جس میں زیادہ تر تنظیم اور صالح ادب تخلیق ہوا اور تمام بنیادی کام انجام دیے گئے۔

पकड़े जाने वालों में बहुत से "एंटीलेक्चुअल" जो कॉफ़ी हाउस में आफ़ाक़ी अदब के सुलझे हुए मसाएल की बहसों में उलझे हुए थे, उन पर एण्टी करप्शन वालों ने दो इल्ज़ामात आयद किये। एक तो ज़ेरे–बहस मौज़ू से मुतअल्लिक जिन किताबों के हवाले दिये जा रहे थे या तो वह ज़ेरे–तबा थीं या अभी तक पढ़ी नहीं गई थीं, दूसरे सब एक दूसरे पर अपनी क़बिलियत और इल्म का ग़लत सिक्का जमाने की नाकाम कोशिश कर रहे थे। उनके ख़िलाफ़ पब्लिक सेफ़्टी एक्ट के तेहत मोक़दमा चलाया जायेगा। फ़िलहाल कॉफ़ी हाउस में उनके दाख़ले पर पाबंदी आयद कर दी गई है। एक हालिया एलान में मोहकमे ने उन तमाम नौजवानों को उनके काम पर वापस जाने का हुक्म दे दिया है जिन्हें "अदब" हो गया था यानी वह करते कुछ और थे, और रहते अदब की जान पर सवार थे और अपने काम के साथ अदब की भी मिट्टी पलीद किये हुए थे।

मौजूदा इन्क़लाब में इस्लाहात का हर हल्क़ए–अदब में बेपनाह इस्तेमाल किया जा रहा है। अदब में इन्तेशार पैदा करने वाले अब तक़रीबन मुन्तशिर हो गये हैं। अदब में एक तवाज़ुन, संजीदगी और पायदारी की हर तरफ़ उम्मीद की जा रही है। "अदबी जमूद" का नारा लगाने वाले "मार्शल लॉ" के तुफ़ैल में अब मेक़ाले लिख–लिखकर साबित कर रहे हैं कि अदब में कभी जमूद था और न है। आगे चलकर "अदबी मार्शल लॉ" का दौर तारीख़े–अदब में अदब के सुनहरी दौर के नाम से याद किया जायेगा जिस में ज़्यादातर अज़ीम और सालेह अदब तख़्लीक़ हुआ और तमाम बुनियादी काम अंजाम दिये गये।

نریندر لوتھر

کوڈاں

''کوڈاں'' انگریزی لفظ ''کوڈ'' کی دکنی اور پنجابی اسٹائل پر جمع ہے۔ جمع کی ضرورت اس لیے پڑی کہ اس وقت بے شمار کوڈ رائج ہیں۔ ویسے تو ہر زبان بجائے خود ایک کوڈ ہے۔ پھر ہر زبان کے اپنے کوڈ ہوتے ہیں جو صرف وہی لوگ سمجھ سکتے ہیں جو کوڈ کے گر جانتے ہوں ہشارٹ ہینڈ بھی کوڈ ہے جس کے ذریعہ سے لمبی چوڑی اور سیدھی سادھی تحریر چند لکیروں میں سما جاتی ہے۔

خفیہ پولیس والوں کا اپنا کوڈ ہوتا ہے۔ مثلاً اگر انہیں یہ پیغام بھیجنا ہو کہ فلاں شہر میں فساد ہونے کا خطرہ ہے تو وہ کوڈ میں تاریخ بھیج دیں گے کہ جیا بہادری کے لڑکی پیدا ہونے والی ہے، خبردار ہو جاؤ۔

ریڈیو اور فلم والے بھی کوڈ استعمال کرتے ہیں۔ مثلاً اگر کسی ریڈیو ڈرامے کے لیے ریلوے پلیٹ فارم کے شور وغل کا سین چاہیے تو ریڈیو والے ہر بار اسٹیشن پر جا کر ریکارڈنگ نہیں کر سکتے۔ ایسے سین جن کی ضرورت انہیں اکثر رہتی ہے وہ ریکارڈ کر کے لائبریری میں رکھ دیتے ہیں۔

नरेन्द्र लूथर

कोडाँ

"कोडाँ" अंग्रेजी लफ़्ज़ "कोड" की दकनी और पंजाबी स्टाईल पर जमा[1] है। जमा की ज़रुरत इसलिए पड़ी कि इस वक्त बेशुमार कोड रायज हैं। वैसे तो हर ज़बान बजाए ख़ुद एक कोड है। फिर हर ज़बान के अपने कोड होते हैं जो सिर्फ़ वही लोग समझ सकते हैं जो कोड के गुर जानते हों, शार्ट हैंड भी कोड है जिसके ज़रिए से लम्बी चौड़ी और सीधी साधी तहरीर चंद लकीरों में समा जाती है।

ख़ुफ़िया पुलिस वालों का अपना कोड होता है। मसलन अगर उन्हें यह पैग़ाम भेजना हो कि फ़लाँ शहर में फ़साद होने का ख़तरा है तो वह कोड में तारीख़ भेज देंगे कि जया बहादुरी के लड़की पैदा होने वाली है, ख़बरदार हो जाओ।

रेडियो और फ़िल्म वाले भी कोड इस्तेमाल करते हैं। मसलन अगर किसी रेडियो ड्रामे के लिए रेलवे प्लेटफ़ार्म के शोरो–गुल का सीन चाहिए तो रेडियो वाले बाहर स्टेशन पर जाकर रिकार्डिंग नहीं कर सकते। ऐसे सीन जिन की ज़रुरत उन्हें अक्सर रहती है वह रिकार्ड करके लाइब्रेरी में रख देते हैं।

---

1. बहुवचन

اور اگر کسی پروڈیوسر کو ان میں سے کوئی سین چاہیے تو وہ صرف اتنا کہتا ہے کہ فلاں نمبر کا سین دو سیکنڈ کے لیے اور فلاں نمبر کا سین آدھے منٹ کے لیے دے دیں۔ اس طرح فلم والے بھی ریل کے ایکسیڈنٹ، طوفان اور طغیانی جہاز کی اڑان اور جلسے جلوسوں کے سین فلما کر تیار رکھتے ہیں۔ پروڈیوسر اپنے اسسٹنٹ کو کہلا بھیجتا ہے، بھئی ذرا دیکھنا وہ تین نمبر کا سین دس سیکنڈ کے لیے اور پندرہ نمبر کا سین ایک منٹ کے لیے لے آؤ۔ اس کا مطلب یہ کہ اسے ایک اندھیری رات میں طوفان کا سین چاہیے جس میں ہیرو پہاڑ کی چوٹی سے سمندر میں چھلانگ مار تا ہے۔ اب وہ سین ہر ہیرو کو چاہیے، وہ راجیش کھنہ ہو یا این ٹی آر۔ ہر ایک فٹ ہو جائے گا کیوں کہ اصلی چھلانگ مارنے والا وہ بیچارہ تو اسٹنٹ مین ہے جس کو اس سین کے لیے مبلغ پچاس روپیہ نقد دیے گئے تھے۔

ہمارا خیال ہے کہ کوڈ سسٹم کو ابھی اور بھی بڑے پیانہ پر ہماری روزمرہ کی زندگی میں استعمال کیا جا سکتا ہے۔ اس سے زندگی آسان ہو سکتی ہے اور روزمرہ کے کئی فضول قسم کے جملے اور تکلفات ترک کیے جا سکتے ہیں۔

مثلاً جب بھی کسی دوست سے ملتے ہیں ہمیشہ یہی سوال پوچھتے ہیں "کہو بھئی کیا حال ہے۔"

اس کا جواب ہمیشہ یہ ہوتا ہے کہ ٹھیک ٹھاک ہے۔ پھر وہ آپ سے وہی سوال پوچھتا ہے اور پھر آپ بھی وہی جواب دیتے ہیں۔

پھر کیوں کہ اور کوئی بات کہنی نہیں ہوتی اس لیے تھوڑی دیر کے بعد آپ ذرا ادب سے پوچھتے ہیں۔

"اچھا اور کیا حال ہے۔"

اس کا جواب ہوتا ہے۔ "اچھا اور بھی ٹھیک ٹھاک ہے۔"

اس قسم کے سوال جواب کچھ اتنے بندھے ٹکے ہو گئے ہیں کہ اگر کوئی شخص سخت بیمار ہو اور آپ اس سے اس کا حال پوچھیں تو بھی وہ یہی جواب دے گا کہ وہ ٹھیک ہے۔ ہمیں آج تک صرف ایک ہی شخص ایسا ملا جس کا جواب ذرا مختلف تھا۔ وہ بیچارہ کینسر کا مریض تھا اور اس کی حالت دن بدن خراب ہوتی جا رہی تھی، بچنے کی کوئی امید نہ تھی۔ ایک

और अगर किसी प्रोडयूसर को उन में से कोई सीन चाहिए तो वह सिर्फ़ इतना कहता है कि फ़लाँ नम्बर का सीन दो सेकेण्ड के लिए और फ़लाँ नम्बर का सीन आधे मिनट के लिए देदें। इस तरह फ़िल्म वाले भी रेल के एक्सीडेंट, तूफ़ान और तुग़यानी जहाज़ की उड़ान और जलसे जुलूसों के सीन फ़िल्मा कर तैयार रखते हैं। प्रोडयूसर अपने आसिस्टेंट को कहला भेजता है, भई ज़रा देखना यह तीन नम्बर का सीन दस सेकण्ड के लिए और पंद्रह नम्बर का सीन एक मिनट के लिए ले आओ। इसका मतलब यह कि उसे एक अंधेरी रात में तूफ़ान का सीन चाहिए जिसमें हीरो पहाड़ का चोटी से समन्दर में छलाँग मारता है। अब वह सीन हर हीरो को चाहिए, वह राजेश खन्ना हो या एन. टी. आर.। हर एक फ़िट हो जायेगा क्योंकि असली छलाँग मारने वाला वह बेचारा स्टंटमैन है जिसको इस सीन के लिए मुबलिग़ पचास रुपये नक़द दिये गये थे।

हमारा ख़याल है कि कोड सिस्टम को अभी और भी बड़े पैमाने पर हमारी रोज़मर्रा की जिन्दगी में इस्तेमाल किया जा सकता है। इससे जिन्दगी आसान हो सकती है और रोज़मर्रा के कई फ़िज़ूल क़िस्म के जुम्ले और तकल्लुफ़ात तर्क किये जा सकते हैं।

मसलन जब भी हम किसी दोस्त से मिलते हैं हमेशा यही सवाल पूछते हैं "कहो भई क्या हाल है।"

इसका जवाब हमेशा यह होता है कि ठीक ठाक है। फिर वह आपसे वही सवाल पूछता है और फिर आप भी वही जवाब देते हैं।

फिर क्यों कि और कोई बात कहनी नहीं होती इसलिए थोड़ी देर के बाद आप ज़रा अदब से पूछते हैं।

"अच्छा और क्या हाल है।"

इसका जवाब होता है। "अच्छा और भी ठीक ठाक है।"

इस क़िस्म के सवाल–जवाब कुछ इतने बंधे–टके हो गये हैं कि कोई शख़्स बीमार हो और आप उससे उसका हाल पूछें तो भी वह यही जवाब देगा कि वह ठीक है। हमें आज तक सिर्फ़ एक ही शख़्स ऐसा मिला जिसका जवाब जरा मुख़्तलिफ़ था। वह बेचारा कैंसर का मरीज़ था और उसकी हालत दिन ब दिन ख़राब होती जा रही थी, बचने की कोई उमीद न थी। एक

دن ہم ان سے ملنے گئے اور رسماً پوچھا۔

"اب طبیعت کیسی ہے۔"

اس نے جواب دیا "بہتر ہے" اور پھر کچھ رک کر وضاحت کی "میرا مطلب ہے گذرے ہوئے کل سے تو بدتر ہے لیکن آنے والے کل سے تو بہتر ہے۔"

آپ گھبرایئے مت اور خواہ مخواہ احساس کمتری میں مبتلا نہ ہو جایئے یہ رسمی گفتگو صرف ہندوستان میں ہی نہیں دوسرے ملکوں میں بھی ہوتی ہے۔ ہم نے بیشتر ممالک میں دیکھا ہے کہ دستوری گفتگو ایسے ہی ہوتی ہے۔ کچھ عرصہ ہوا ہمیں چند عرب ملکوں میں جانے کا اتفاق ہوا۔ وہاں ہمیشہ ہر ملاقات پر گفتگو، مندرجہ ذیل جملوں سے شروع ہوتی ہے۔

زید...... "صبح خیر"

بکر...... "صبح خیر"

زید...... "کیا حال ہے؟"

بکر...... "ٹھیک ہے۔ شکر ہے خدا کا۔ تمھارا کیا حال ہے؟"

زید...... "ٹھیک ہے۔ شکر ہے خدا کا" ......

اس سے زیادہ عربی ہم سیکھ نہیں پائے شکر ہے خدا کا۔

انگریز اور امریکن لوگ تو اور بھی کمال کرتے ہیں۔ سوال کا جواب سوال سے دیتے ہیں۔ مثلاً جب وہ کسی سے پہلی بار ملتے ہیں تو گفتگو یوں شروع ہوتی ہے۔

ٹام...... "آپ کا کیا حال ہے؟" How do you do

جم...... "آپ کا کیا حال ہے؟" How do you do

شروع میں ہم سمجھتے تھے کہ جم اصرار کرتا ہے کہ پہلے تم اپنا طریقہ کار بتاؤ تو پھر میں بتاؤں گا۔ میں پہلے کیوں بتاؤں۔ اور ہمیں یہ ڈر رہتا کہ ابھی ان کی لڑائی ہوئی۔ یا لکھنؤ کے نوابوں کی طرح پہلے آپ پہلے آپ میں گاڑی چھوٹ جائے گی۔ لیکن صدیاں بیت گئی ہیں آج تک نہ ٹام نے نہ جم نے اپنا حال بتایا ہے اور نہ طریقہ کار۔ اور ان کی نسلیں ابھی تک ایک دوسرے کو کرید رہی ہیں۔ اب اگر ہم "آپ کا کیا حال ہے۔" کو کوڈ نمبر

दिन हम उनसे मिलने गये और रस्मन पूछा।

"अब तबीअत कैसी है।"

उसने जवाब दिया "बेहतर है" और फिर कुछ रुककर वज़ाहत की "मेरा मतलब है गुज़रे हुए कल से तो बदतर है लेकिन आने वाले कल से तो बेहतर है।"

आप घबराइये मत और ख़्वाहमख़्वाह एहसासे–कमतरी में मुब्तला न हो जाइये यह रस्मी गुफ़्तगू सिर्फ़ हिन्दुस्तान में ही नहीं दूसरे मुल्कों में भी होती है। हमने बेशतर मुमालिक में देखा है कि दस्तूरी गुफ़्तगू ऐसे ही होती है। कुछ अर्सा हुआ हमें चंद अरब मुल्कों में जाने का इत्तेफ़ाक़ हुआ। वहाँ हमेशा हर मुलाक़ात पर, गुफ़्तगू मुन्दर्जाज़ैल जुम्लों से शुरु होती है।

ज़ैद....... "सुबह ख़ैर"

बकर....... "सुबह ख़ैर"

ज़ैद....... "क्या हाल है?"

बकर........ "ठीक है। शुक्र ख़ुदा का। तुम्हारा क्या हाल है?"

ज़ैद....... "ठीक है। शुक्र ख़ुदा का"........

इससे ज़्यादा अरबी हम सीख नहीं पाये शुक्र ख़ुदा का।

अंग्रेज़ और अमरीकन लोग तो और भी कमाल करते हैं। सवाल का जवाब सवाल से देते हैं। मसलन जब वह किसी से पहली बार मिलते हैं तो गुफ़्तगू यूँ शुरु होती है।

टॉम....... "आपका क्या हाल है?" How do you do

जिम...... "आपका क्या हाल है?" How do you do

शुरु में हम समझते थे कि जिम इसरार करता है कि पहले तुम अपना तरीक़ए–कार बताओ तो फिर मैं बताऊँगा। मैं पहले क्यों बताऊँ। और हमें यह डर रहता कि अभी उनकी लड़ाई हुई। या लखनऊ के नवाबों की तरह पहले आप पहले आप में गाड़ी छूट जायेगी। लेकिन सदियाँ बीत गई हैं आज तक न टॉम ने न जिम ने अपना हाल बताया और न तरीक़ए–कार। और उनकी नस्लें अभी तक एक दूसरे को कुरेद रही हैं। "आपका क्या हाल है।" को कोड नम्बर एक और "मेरा हाल ठीक ठाक है शुक्रियां।" को कोड नम्बर

ایک اور "میرا حال ٹھیک ٹھاک ہے شکریہ" کو کوڈ نمبر دو دے دیں تو ملاقات کے وقت گفتگو کچھ ایسے ہوگی۔

زید...... "ایک"

بکر...... "دو۔ایک"

زید...... "دو"

آپ خود ہی سوچئے۔ اس طرح کتنا وقت بچے گا۔ ہم نے سنا ہے کہ امریکہ میں روزمرہ کے تکلفات کو کوڈ میں بدلنے کا تجربہ شروع ہو گیا ہے۔

وہاں کی ایک جیل میں جہاں عمر قیدی رہتے ہیں یہ تجربہ کیا گیا ہے۔ وہ قیدی ہر روز شام کو ملتے ہیں اور وہی پرانے لطیفے سناتے اور وہی پرانی ہنسی ہنستے۔ وہاں یہ فیصلہ کیا گیا کہ ہر لطیفے کو ایک کوڈ نمبر دے دیا جائے اور کسی کو بھی جب لطیفہ سنانا ہو تو وہ صرف لطیفہ کا کوڈ نمبر بتا دیتا ہے اور سننے والے اس کو سن کر اور اس کی دلچسپی کو مدنظر رکھ کر مناسب انداز میں ہنس دیتے ہیں۔ ایک دن وہاں ایک نیا قیدی آیا۔ شام کو جب معمول کے مطابق محفل جمی تو ہر قیدی نے اپنے پسند کا لطیفہ سنایا۔

"لطیفہ نمبر پانچ"

"ہاہا۔ہاہا"

"لطیفہ نمبر سترہ"

ہی ہی ۔ ہی ہی"

لطیفہ نمبر سات"

اس لطیفے کو سن کر کچھ قیدی تھوڑا ہنسے۔ لیکن ایک قیدی بہت ہنسا اور جب سب نے ہنسنا بند کر دیا تو بھی وہ ہنستا رہا۔ نئے قیدی نے جیلر سے اس کی وجہ پوچھی تو اس نے جواب دیا کہ باقی سب قیدیوں نے یہ لطیفہ بہت بار سن لیا تھا۔ اس قیدی نے پہلی بار سنا ہے اس لئے وہ زیادہ ہنس رہا ہے۔ اس کے بعد نئے قیدی نے بھی ایک لطیفہ سنانے کی خواہش کا اظہار کیا۔

اجازت ملنے پر اس نے کہا۔

दो दे दें तो मुलाक़ात के वक़्त गुफ़्तगू कुछ ऐसे होगी।

जै़द....... "एक"

बकर........ "दो। एक"

जै़द........ "दो"

आप खुद ही सोचिये। इस तरह कितना वक़्त बचेगा। हमने सुना है कि अमेरिका में रोज़मर्रा के तकल्लुफ़ात को कोड में बदलने का तजुर्बा शुरु हो गया है।

वहाँ की एक जेल में जहाँ उम्र कै़दी रहते हैं यहतजर्बा किया गया है। वह कै़दी हर रोज़ शाम को मिलते हैं और वही पुराने लतीफ़े सुनाते और वही पुरानी हंसी हंसते। वहाँ यह फै़सला किया गया कि हर लतीफ़े को एक कोड नम्बर दे दिया जाय और किसी को भी जब लतीफ़ा सुनाना हो तो वह सिर्फ़ लतीफ़े का कोड नम्बर बता देता है और सुनने वाले उसको सुनकर और उसकी दिलचस्पी को मद्दे नज़र रखकर मुनासिब अंदाज़ में हंस देते हैं। एक दिन वहाँ एक नया कै़दी आया। शाम को जब मामूल के मुताबिक़ महफ़िल जमी तो हर कै़दी ने अपनी पसंद का लतीफ़ा सुनाया।

"लतीफ़ा नम्बर पाँच"

"हाहा। हाहा"

"लतीफ़ा नम्बर सत्तरह"

"हीही। हीही

"लतीफ़ा नम्बर सात"

इस लतीफ़े को सुनकर कुछ कै़दी थोड़ा हंसे। लेकिन एक कै़दी बहुत हंसा और जब सब ने हंसना बंद कर दिया तो भी वह हंसता रहा। नये कै़दी ने जेलर से इसकी वजह पूछी तो उसने जवाब दिया कि बाक़ी सब कै़दियों ने यह लतीफ़ा बहुत बार सुन लिया था। इस कै़दी ने पहली बार सुना है इसलिए वह ज्यादा हंस रहा है। इसके बाद नये कै़दी ने भी एक लतीफ़ा सुनाने की ख़्वाहिश का इज़हार किया।

इजाज़त मिलने पर उसने कहा।

"لطیفہ نمبر سترہ"
اس کو سن کر کوئی بھی نہ ہنسا۔
نئے قیدی نے قدرے خفت سے جیلر سے پوچھا کہ میرے لطیفے پر لوگ کیوں نہیں ہنستے حالانکہ بڑا زوردار لطیفہ تھا۔
جیلر نے اسے سمجھایا کی لطیفہ تو اچھا تھا لیکن لطیفے کی کامیابی اس کے کہنے کے انداز میں ہوتی ہے۔ تمھارے سنانے کا ڈھنگ ذرا ڈھیلا ڈھالا تھا۔
ہمیں سینکڑوں جلسوں، محفلوں اور مشاعروں وغیرہ میں جانے کا اتفاق ہوا ہے۔ کئی حیثیتوں سے ایسی محفلوں میں جانے کا موقع ملا ہے اس لیے ہم نے ان کا بغور مطالعہ کیا ہے۔ ہر جلسے کے لیے کچھ کیریکٹر لازمی ہیں۔ سب سے پہلے کنوینر جو سارے فساد کی جڑ ہوتا ہے۔ اس کے کئی اور نام بھی ہوتے ہیں۔ جیسے آرگنائزر یا سکریٹری وغیرہ۔ نام کچھ بھی ہو اس جنس کی دو قسمیں ہوتی ہیں۔ دوسروں کا چنا ہوا یا خود ساختہ۔ قسم چاہے کوئی بھی ہو خصلت ایک ہی ہوتی ہے۔ ان صاحب میں خود نمائشی کا جذبہ بدرجۂ اتم موجود ہوتا ہے۔ اس کے علاوہ ان کو اپنی آواز کے ساتھ عشق ہوتا ہے اور مشہور لوگوں کی پرائیوٹ زندگی کے بارے میں معلومات حاصل کر کے لوگوں کو بتانے کا زبردست اشتیاق۔ انگریزی میں ایسے شخص کو سکانڈل مانگر (Scandil Monger) کہا جا سکتا ہے۔
جلسے کے لیے دوسرے کیریکٹر کی ضرورت ہوتی ہے اس کو پریذیڈنٹ یا چیئرمین یا صاحب صدر کہا جاتا ہے۔ اگلے زمانے میں صرف صاحب صدر کا ہونا کافی تھا لیکن اب آبادی بڑھ جانے کی وجہ سے بیروزگاری بڑھ گئی ہے۔ اس لیے جلسوں کے لیے ایک اور پوسٹ سینکشن کی گئی ہے۔ اس پوسٹ کو چیف گیسٹ یا مہمان خصوصی کا نام دیا گیا ہے۔ یہ اس لیے کیا گیا ہے کہ فی جلسہ کم از کم دو وی۔آئی پیوں کو نیتا بنایا جا سکے۔ ہمیں ابھی تک یہ معلوم نہیں ہو سکا کہ صاحب صدر اور مہمان خصوصی میں کون سا رتبہ زیادہ ہوتا ہے۔ یہی اس اختراع کی خوبی بھی ہے۔ خود دونوں صاحبان کو بھی مغالطہ رہتا ہے کہ ایک دوسرے سے زیادہ اہم ہے اور اس طرح ایک شکار سے دو شکار ہو جاتے ہیں۔(کچھ لوگ تو جلسے میں صرف اس لیے آتے ہیں کہ صاحب صدر یا مہمان خصوصی کی نظر ان پر پڑ جائے اور

"लतीफ़ा नम्बर सत्तरह"

इसको सुनकर कोई भी न हंसा।

नये कैदी ने क़दरे ख़िफ़्फ़त से जेलर से पूछा कि मेरे लतीफ़े पर लोग क्यों नहीं हंसते हालाँकि बड़ा ज़ोरदा लतीफ़ा था।

जेलर ने उसे समझाया कि लतीफ़ा तो अच्छा था लेकिन लतीफ़े की कामयाबी उसके कहने के अंदाज़ में होती है। तुम्हारे सुनाने का ढ़ंग ज़रा ढ़ीला ढ़ाला था।

हमें सैंकड़ों जलसों, महफ़िलों और मुशायरों वग़ैरह में जाने का इत्तफ़ाक हुआ है। कई हैसियतों से ऐसी महफ़िलों में जाने का मौक़ा मिला है इसलिए हमने उनका बग़ौर मोतालेआ किया है। हर जलसे के लिए कुछ कैरेक्टर लाज़मी हैं। सबसे पहले कन्वेनर जो सारे फ़साद की जड़ होता है। इसके कई और नाम भी होते हैं। जैसे ऑरगेनाइज़र या सिक्रेट्री वग़ैरह। नाम कुछ भी हो इस जिन्स की दो क़िस्में होती हैं। दूसरों का चुना हुआ या खुद साख़्ता। क़िस्म चाहे कोई भी हो ख़स्लत एक ही होती है। उन साहब में खुद नुमाइशी का जज़्बा बदर्जए–अतम मौजूद होता है। इसके अलावा उनको अपनी आवाज़ के साथ इश्क़ होता है और मशहूर लोगों की प्राइवेट ज़िन्दगी के बारे में मालूमात हासिल करके लोगों को बताने का ज़बरदस्त इश्तिशक। अंग्रेज़ी में ऐसे शख़्स को स्कॉण्डिल मोंगर (Scandil Monger) कहा जा सकता है।

जलसे के लिए दूसरे कैरेक्टर की ज़रुरत होती है उसको प्रेसीडेन्ट या चेयरमैन या साहबे सद्र कहा जाता है। अगले ज़माने में सिर्फ़ साहबे सद्र को होना काफ़ी था लेकिन आबादी बढ़ जाने की वजह से बेरोज़गारी बढ़ गई है। इसलिए जलसों के लिए एक और पोस्ट सैंक्शन की गई है। इस पोस्ट को चीफ़ गेस्ट या मेहमाने–खुसूसी का नाम दिया गया है। यह इसलिए किया गया है कि फ़ी जलसा कम अज़ कम दो वी. आई. प्यून को नेता बनाया जा सके। हमें अभी तक यह मालूम न हो सका कि साहबे सद्र और मेहमाने–ख़ुसूसी में कौन सा रुत्बा ज़्यादा होता है। यही इस एख़्तराअ की ख़ूबी भी है। खुद दोनों साहिबान को यही मोग़ाल्ता रहता है कि एक दूसरे से ज़्यादा अहम हैं और इस तरह एक शिकार से दो शिकार हो जाते हैं। (कुछ लोग तो जलसे में सिर्फ़ इसलिए आते हैं कि साहबे सद्र या मेहमाने–खुसूसी की नज़र उन पर पड़ जाय और

شاید انہیں آداب عرض کرنے کا موقع بھی مل جائے)

چلیے۔ نمونہ کے طور پر آپ کو ایک جلسے میں لے جائیں۔

محفل موسیقی کی ہے۔ جناب صدر اور مہمان خصوصی کے ناموں کا ڈھنڈورہ پٹ چکا ہے، اشتہاروں میں لوگوں سے وقت پر آنے کی درخواست کی گئی تھی، وقت ہو چکا ہے۔ آرٹسٹ لوگ تیار بیٹھے ہیں، ہال کھچا کھچ بھرا ہوا ہے۔ منتظمین بے تابی سے صاحب صدر کا انتظار کر رہے ہیں۔ خدا خدا کر کے وہ آتے ہیں ایک گھنٹہ لیٹ۔ لیکن آتو گئے یہاں آنے سے پہلے وہ کسی مذہبی تقریب میں مہمان خصوصی تھے وہاں دیر ہو گئی۔ مہمان خصوصی ان کے آنے کے بعد آئے ہیں کیوں کہ رواج جو شخص زیادہ اہم ہوتا ہے وہ زیادہ دیر سے آتا ہے۔

اب محفل کا آغاز ہوتا ہے۔ کنوینر صاحب صاحب صدر کو پھول پہناتے ہیں۔ حاضرین تالیاں بجاتے ہیں۔ کنوینر صاحب مہمان خصوصی کی گل پوشی کرتے ہیں۔ حاضرین پھر تالیاں بجاتے ہیں۔ پھر ایک اور صاحب کنوینر صاحب کی گل پوشی کرتے ہیں۔ اس بار حاضرین کم تالیاں بجاتے ہیں۔ لیکن صاحب صدر اور مہمان خصوصی خوب زور سے تالیاں بجاتے ہیں۔ پھر مہمان خصوصی آرٹسٹوں کی گل پوشی کرتے ہیں۔ اب سب لوگ مل کر تالیاں بجاتے ہیں۔

پھر کنوینر صاحب کھانس کر اپنا گلا صاف کرتے ہیں۔ اور صاحب صدر کی تفصیلی سوانح حیات پڑھنا شروع کرتے ہیں۔ وہ پیدا کب اور کہاں ہوئے۔ انہوں نے تعلیم کیوں نہیں پائی اور تربیت کہاں کھوئی۔ ان کی شادی اور اولاد کے بارے میں معلومات کے بعد ان کے سیر اور سیاحت کے شوق کا ذکر ہوتا ہے۔ جو انہیں دہلی سے شاہدرہ تک لے گیا۔ پھر ان کی قوم یا ریاست یا محلہ یا اپنی گلی کے تئیں بے لوث اور اپنے کنبہ کے تئیں بے لوث خدمات کا جائزہ لیا جاتا ہے۔ یہ تمام معلومات صاحب صدر نے خود نہایت مبالغہ آمیزی سے لکھ کر کنوینر صاحب کو پہلے سے ارسال کی ہوئیں تھیں۔ لیکن اس وقت ان تفصیلات کو سن کر وہ بظاہر کچھ ایسے جھینپتے ہیں گویا کوئی نجومی ان کے ماضی کے بارے میں کوئی راز کی باتیں بتا رہا ہو۔

शायद उन्हें आदाब करने का मौक़ा भी मिल जाये।)

चलिये। नमूने के तौर पर आपको एक जलसे में ले जायें।

महफ़िल मौसीक़ी की है। जनाबे सद्र और मेहमाने–ख़ुसूसी के नामों का ढ़िन्डोरा पिट चुका है, इश्तहारों में लोगों से वक़्त पर आने की दरख़्वास्त की गई थी, वक़्त हो चुका है। आर्टिस्ट लोग तैयार बैठे हैं, हॉल खचाखच भरा हुआ है। मुन्तज़मीन बेताबी से साहबे–सद्र का इन्तज़ार कर रहे हैं। ख़ुदा–ख़ुदा करके वह आते हैं एक घंटा लेट। लेकिन आ तो गये यहाँ आने से पहले वह किसी मज़हबी तक़रीब में मेहमाने–ख़ुसूसी थे वहाँ देर हो गई। मेहमाने–ख़ुसूसी उनके आने के बाद आये हैं क्योंकि रिवाजन जो शख़्स ज़्यादा अहम होता है वह ज़्यादा देर से आता है।

अब महफ़िल का आग़ाज़ होता है। कन्वेनर साहब साहबे–सद्र को फूल पहनाते हैं। हाज़ेरीन तालियाँ बजाते हैं। कन्वेनर साहब मेहमाने–ख़ुसूसी की गुलपोशी करते हैं। हाजे़रीन कम तालियाँ बजाते हैं। लेकिन साहबे–सद्र और मेहमाने–ख़ुसूसी ख़ूब ज़ोर से तालियाँ बजाते हैं। फिर मेहमाने–ख़ुसूसी आर्टिस्टों की गुलपोशी करते हैं। अब सब लोग मिलकर तालियाँ बजाते हैं।

फिर कन्वेनर साहब खाँस कर अपना गला साफ़ करते हैं। और साहबे–सद्र की तफ़्सीली सवानेह हयात[1] पढ़ना शुरु करते हैं। वह पैदा कब और कहाँ हुए। उन्होंने तालीम क्यों नहीं पाई और तरबियत[2] कहाँ खोई। उनकी शादी और औलाद के बारे में मालूमात के बाद उनके सैर और सय्याहत के शौक़ का ज़िक्र होता है। जो उन्हें देहली से शाहदरा तक ले गया। फिर उनकी क़ौम या रियासत या मोहल्ला या अपनी गली के तईं बेलौस और अपने कुन्बे के तईं बेलौस ख़िदमात का जायज़ा लिया जाता है। यह तमाम मालूमात सहबे–सद्र ने ख़ुद निहायत मोबालग़ा[3] आमेज़ी से लिखकर कन्वेनर साहब को पहले से इरसाल की हुई थीं। लेकिन इस वक़्त इन तफ़्सीलात को सुनकर वह बज़ाहिर कुछ ऐसे झेंपते हैं गोया कोई नजूमी उनके माज़ी के बारे में कोई राज़ की बातें बता रहा हो।

---

1. जीवनी 2. दीक्षा 3. अतिशयोक्ति

بالآخر کنوینر صاحب جلدی سے ایک بار پھر صاحب صدر کی تعریفوں کے پل باندھتے ہیں اوران کا شکریہ ادا کرتے ہیں کہ انہوں نے اپنی گوناگوں معروفیات کے باوجود اپنی سونے کی گھڑی سے قیمتی وقت نکال کر یہاں آنے کی تکلیف گوارا کی ہے۔

پھر انہیں الفاظ میں یہی رسم ایک اور چمچہ جسے مہمان خصوصی کی خوشنودی حاصل کرنی ہوتی ہے ان کے تعلق سے انجام دیتا ہے۔ صاحب صدر کی تعریف میں باندھے ہوئے پلوں پر سے وہ مہمان خصوصی کی شان میں سجی ہوئی رکشائیں چلاتا ہے۔ان رکشاؤں کا رش کئی بار اتنا ہوجاتا ہے کہ حاضرین سے کئی منچلے سیٹیاں بجا کر ٹرافک کانسٹبل کا رول ادا کرتے ہیں۔

اس کے بعد صدر صاحب سے انجمن اور آرسوں کے بارے میں ''چند الفاظ'' کہنے کی گذارش کی جاتی ہے۔ ''چند الفاظ'' کے معانی ہندوستان میں لمبی تقریر کے ہوتے ہیں۔ پہلے تو صدر صاحب کچھ الفاظ میں سب لوگوں کا شکریہ ادا کرنے میں استعمال کرتے ہیں۔ ان کے باقی کے ''چند الفاظ'' دوحصوں میں بانٹے جاسکتے ہیں۔ پہلے حصے میں وہ سچ بولتے ہیں وہ کہتے ہیں میں تو ایک حقیر اور ادنیٰ قسم کا شخص ہوں جو ہرگز اس عزت کا مستحق نہیں تھا جو آپ لوگوں نے مجھے بخشی ہے۔ وہ یہ بھی اعتراف کرلیتے ہیں کہ میرے متعلق جو کچھ بھی آپ کو بتایا گیا ہے وہ مبالغہ آمیزی ہے۔ چونکہ حاضرین کو سچ سننے کی عادت نہیں ہوتی اس لیے وہ اس سچ کو بھی جھوٹ مان کر اسے صدر صاحب کی کسر نفسی سمجھتے ہیں۔

اس مغالطے کا فائدہ اٹھا کر اس صدر صاحب اپنے ''چند الفاظ'' کا دوسرا حصہ شروع کرتے ہیں جس میں وہ سراسر جھوٹ بولتے ہیں۔ میں یہاں تقریر دینے تو نہیں آیا تھا۔ وہ تو مجھے ابھی ابھی پتہ چلا ہے کہ مجھے تقریر بھی کرنا ہے۔ میرا یہاں آنے کا مدعا تو یہ تھا کہ میں موسیقی اور سنگیت سے لطف اندوز ہوسکوں۔ سنگیت اور آرٹ سے مجھے بچپن ہی سے لگاؤ ہے۔ یہ شوق مجھ میں اس وقت پیدا ہوا جب میں دیواروں پر فلمی پوسٹر چسپاں کر کے اپنا پیٹ پالا کرتا تھا۔ جیسا کہ میں کہہ چکا ہوں میں یہاں تقریر دینے نہیں بلکہ محفل کا لطف اٹھانے آیا تھا۔ اب میں درخواست کروں گا کہ زیادہ وقت تکلفات پر ضائع کرنے

बिलआख़िर कन्वेनर साहब जल्दी से एक बार फिर साहबे–सद्र की तारीफ़ों के पुल बांधते हैं और उनका शुक्रिया अदा करते हैं कि उन्होंने अपनी गूनागूँ मस्रुफ़ियात के बावजूद अपने सोने की घड़ी से क़ीमती वक़्त निकाल कर यहाँ आने की तकलीफ़ गवारा की है।

फिर उन्हीं अल्फ़ाज़ में यही रस्म एक और चम्चा जिसे मेहमाने–खुसूसी की खुशनूदी हासिल करनी होती है उनके तअल्लुक़ से अंजाम देता है। साहबे–सद्र की तारीफ़ में बांधे हुए पुलों पर से वह मेहमाने–खुसूसी की शान में सजी हुई रिक्शायें चलाता है। उन रिक्शाओं का रश कई बार इतना हो जाता है कि हाज़रीन से कई मनचले सीटियाँ बजा कर ट्रैफ़िक कांस्टेबल का रोल अदा करते हैं।

इसके बाद साहबे-सद्र से अंजुमन और आरसों के बारे में "चंद अल्फ़ाज़" कहने की गुज़ारिश की जाती है। "चंद अल्फ़ाज़" के मानी हिन्दुस्तान में लम्बी तक़रीर के होते हैं। पहले तो सद्र साहब कुछ अल्फ़ाज़ में सब लोगों का शुक्रिया अदा करने में इस्तेमाल करते हैं। उनके बाक़ी के "चंद अल्फ़ाज़" दो हिस्सों में बाँटे जा सकते हैं। पहले हिस्से में वह सच बोलते हैं वह कहते हैं मैं तो एक हक़ीर और अदना क़िस्म का शख़्स हूँ जो हर्गिज़ इस इज़्ज़त का मुस्तहक़ नहीं था जो आप लोगों ने मुझे बख़्शी है। वह यह भी एतराफ़ कर लेते हैं कि मेरे मुतअल्लिक़ जो कुछ आपको बताया गया है वह मोबालग़ा आमेज़ी है। चूँकि हाज़रीन को सच सुनने की आदत नहीं होती इसलिए वह इस सच को भी झूट मान कर उसे सद्र साहब की कस्रे–नफ़्सी[1] समझते हैं।

इस मुग़ालते का फ़ायदा उठाकर सद्र साहब अपने "चंद अल्फ़ाज़" का दूसरा हिस्सा शुरु करते हैं जिसमें वह सरासर झूट बोलते हैं। मैं यहाँ तक़रीर देने तो नहीं आया था। वह तो मुझे अभी अभी पता चला है कि मुझे तक़रीर भी करना है। मेरा यहाँ आने का मुद्दआ तो यह था कि मैं मौसीक़ी और संगीत से लुत्फ़ अन्दोज़ हो सकूँगा। संगीत और आर्ट से मुझे बचपन ही से लगाव है। यह शौक़ मुझमें उस वक़्त पैदा हुआ जब मैं दीवारों पर फ़िल्मी पोस्टर चस्पाँ कर के अपना पेट पाला करता था। जैसा कि मैं कह चुका हूँ मैं यहाँ तक़रीर देने नहीं बल्कि महफ़िल का लुत्फ़ उठाने आया था। अब मैं दरख़्वास्त करूँगा कि ज़्यादा वक़्त तकल्लुफ़ात पर ज़ाया करने

1. नम्रता

کے بجائے پروگرام کا آغاز کیا جائے۔ اس سے پہلے میں منتظمین کا، کلاکاروں کا اور حاضرین کا ایک بار پھر تہہ دل سے شکریہ ادا کرتا ہوں۔

ان کا یہ دوبارہ شکریہ ادا کرنا ضروری ہوتا ہے کیوں کہ آپ نے نوٹ کیا ہوگا کہ جو شکریہ انہوں نے پہلی بار "چند الفاظ" کے شروع میں ادا کیا تھا وہ تہہ دل سے نہیں تھا۔ سطحی اور رسما تھا۔ تہہ دل تک پہنچنے میں دیر لگتی ہے۔ خاص کو صاحب صدر ذرا موٹے اور بھی قسم کے شخص ہوں (اور عام طور پر صدر صاحب فربہ اندام ہی ہوتے ہیں) اس لیے صدر صاحب کے تہہ دل تک پہنچنے کے لیے حاضرین کو ایک لمبی تقریر سننا پڑتی ہے۔

لیکن ابھی پروگرام کا آغاز کہاں پر۔ آپ مہمان خصوصی کو تو بھول ہی گئے۔ صاحب صدر سے نپٹ لینے کے بعد مہمان خصوصی کی باری آتی ہے اور پھر ان کے تعلق سے پوری کارروائی لفظ بہ لفظ نہیں تو محاورہ بہ محاورہ اور دور بہ دور دہرائی جاتی ہے۔

اس اثنا میں بے چارہ یا بے چاری آرٹسٹ پہلے تو اونگھنا شروع کرتا ہے یا کرتی ہے اور ہر اسٹیج پر ہی سو جاتا یا جاتی ہے۔ اگر آرٹسٹوں میں ایک مرد ہو اور ایک عورت تو پھر ظاہر ہے کہ وہ بھری محفل میں اکٹھے تو سو نہیں سکتے۔ اس لیے باری باری سوتے ہیں۔ جب رسمی کارروائی ختم ہو جاتی ہے تو حاضرین تالیاں بجا بجا کر سوتے ہوئے آرٹسٹوں کو جگاتے ہیں۔ اس کے بعد اصلی محفل کا آغاز ہوتا ہے۔ یعنی آرٹسٹوں کے جاگنے کا اور مہمان خصوصی کے سونے کا وقت شروع ہوتا ہے۔

اگر آپ کو چار پانچ جلسوں میں جانے کا اتفاق ہوا ہے تو آپ کو اب تک خیر مقدمی تقریر صدر اور مہمان خصوصی کے "چند الفاظ" اور اظہار تشکر کی تقریروں کے اسٹنڈرڈ اصطلاحیں اور محاورات زبانی یاد ہو گئے ہوں گے۔ ہمیں تو اس موضوع پر اب اتنی مہارت ہو گئی ہے کہ ہم کسی بھی جلسہ میں بیٹھے ہوئے بھڑکتے اشعار کے مصرعہ ثانی کی طرح صدر اور مہمان خصوصی کی تقریروں کے جملے پورے کر سکتے ہیں۔ لیکن افسوس کہ آداب محفل اس بات کی اجازت نہیں دیتے۔

ایک بار کسی وی۔ آئی۔ پی کو ایک مشہور اسکول کے سب سے بزرگ استاد کے ریٹائر ہونے پر منعقدہ جلسے میں بلایا گیا۔ جب طالب علموں اور استادوں کی طرف سے

के बजाय प्रोग्राम का आग़ाज़ किया जाय। इससे पहले मैं मुन्तज़मीन का, कलाकारों का और हाज़रीन का एक बार फिर तहे–दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ।

उनका यह दोबारा शुक्रिया अदा करना ज़रुरी होता है क्योंकि आप ने नोट किया होगा कि जो शुक्रिया उन्होंने पहली बार "चंद अल्फ़ाज़" के शुरु में अदा किया था वह तहे–दिल से नहीं था। सतही और रस्मन था। तहे–दिल तक पहुँचने में देर लगती है। ख़ास को साहबे–सदर ज़रा मोटे और पहपी किस्म के शख़्स हों (और आम तौर पर सद्र साहब फ़रबा अंदाम ही होते हैं) इसलिए सद्र साहब के दिल तक पहुँचने के लिए हाज़रीन को एक लम्बी तक़रीर सुनना पड़ती है।

लेकिन अभी प्रोग्राम का आग़ाज़ कहाँ पर। आप मेहमाने–खुसूसी को तो भूल ही गये। साहबे–सद्र से निपट लेने के बाद मेहमाने–खुसूसी का बारी आती है और फिर उनके तअल्लुक़ से पूरी कारवाई लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ नहीं तो मुहावरा ब मुहावरा और दौर ब दौर दोहराई जाती है।

इस अस्ना में बेचारा या बेचारी आर्टिस्ट पहले तो उंघना शुरु करता है या करती है और हर स्टेज पर ही सो जाता या जाती है। अगर आर्टिस्टों में एक मर्द हो और एक औरत तो फिर ज़ाहिर है कि भरी महफ़िल में इकट्ठे तो सो नहीं सकते। इसलिए बारी–बारी सोते हैं। जब रस्मी कारवाई ख़त्म हो जाती है तो हाज़रीन तालियाँ बजा बजाकर सोते हुए आर्टिस्टों को जगाते हैं। इसके बाद असली महफ़िल का आग़ाज़ होता है। यानी आर्टिस्टों के जागने का और मेहमाने–खुसूसी के सोने का वक़्त शुरु होता है।

अगर आपको चार पाँच जलसों में जाने का इत्तेफ़ाक़ हुआ है तो आप को अब तक ख़ैर मक़दमी तक़रीर[1], सद्र और मेहमाने–खुसूसी के "चंद अल्फ़ाज़" और इज़्हारे–तशक्कुर की तक़रीरों के स्टेंडर्ड इस्तलाहें[2] और मुहावरात ज़बानी याद हो गये होंगे। हमें तो इस मौज़ू पर अब इतनी महारत हो गई है कि हम किसी भी जलसे में बैठे हुए भड़कते अशआर के मिसरए–सानी की तरह सद्र और मेहमाने–खुसूसी की तक़रीरों के जुम्ले पूरे कर सकते हैं। लेकिन अफ़सोस कि आदाबे–महफ़िल इस बात की इजाज़त नहीं देते।

एक बार किसी वी. आई. पी. को एक मशहूर स्कूल के सब से बुज़ुर्ग उस्ताद के रिटायर होने पर मुन्अक़िदा जलसे में बुलाया गया। जब तालिब–इल्मों और उस्तादों की तरफ़ से

1. स्वागत भाषण 2. परिभाषाएं

انہیں خراج تحسین پیش کیا جا چکا تو وی۔آئی۔پی سے "چند الفاظ" کہنے کی درخواست کی گئی۔ وی۔آئی۔پی نے کہا کہ مسٹر حسین کی زندگی ایک مثالی استاد کی زندگی ہے۔ انہوں نے اپنی تمام زندگی آنے والی نسلوں کی خدمت میں گزار دی ہے۔ انہوں نے پڑھانے کو صرف ذریعہ معاش نہیں بلکہ اپنی زندگی کا واحد مشن سمجھا۔ یہی وجہ ہے کہ انہوں نے طالب علموں سے عقیدت لی۔ آج جب اسکول میں ٹریڈ یونین کا اثر بڑھ رہا ہے پڑھنا پڑھانا بھی گویا ایک انڈسٹری بن گیا ہے۔ ایسے ماحول میں حسین صاحب جیسے استادوں کی موجودگی گویا ٹھنڈی ہوا کا ایک جھونکا ہے۔ ہمارے ملک کی ترقی کے لیے ہمارے اسکولوں کے لیے سینکڑوں اور ہزاروں حسینوں کی ضرورت ہے۔ اس کے بغیر ہماری ترقی ناممکن ہے۔ اس طرح وہ تقریباً ایک گھنٹہ حسین صاحب کی حقیقی اور خیالی خوبیوں پر بولتے رہے بیچ میں ہیڈ ماسٹر نے کئی بار ان کی توجہ اپنی طرف مبذول کرنے کی کوشش کی۔ لیکن وی۔آئی۔پی کی تقریر تھی کہ ایک چشمہ جو بند ہونے کا نام نہیں بالآخر جب تقریر ختم ہونے کو آئی تو ہیڈ ماسٹر نے ہمت کر کے وی۔آئی۔پی کو سرگوشی کے انداز میں کچھ کہا۔

اس پر وی۔آئی۔پی صاحب چونک پڑے۔ ایک لمحے کے لیے وہ رکے پھر گویا ہوئے۔ ابھی ابھی مجھے بتایا گیا ہے کہ یہ جلسہ حسین صاحب کے لئے نہیں بلکہ پرشاد صاحب کے لئے منعقد کیا گیا ہے۔ میں نے جو کچھ حسین صاحب کے تعلق سے کہا ہے وہ مناسب ردوبدل کے ساتھ پرشاد صاحب پر بھی لاگو ہوتا ہے۔

ہمارے جلسوں کی رسمی کارروائیوں اور گھسی پٹی اصطلاحوں کی ایک خاص خوبی یہ ہے کہ وہ کسی بھی موقع پر بلا خوف و خطر استعمال کی جاسکتی ہیں۔ گویا ایک جامہ ہے جو ہر کسی کو زیب دیتا ہے۔ یہ رسمی اور کھوکھلے تکلفات ہماری روزمرہ زندگی کا اتنا اہم ترین جز بن گئے ہیں کہ بیشتر اہم رسموں کے جنگل میں اصلی درخت کو کھو دیتے ہیں۔ یہ سب تکلف اور رکھ رکھاؤ تضیع اوقات ہے۔ سب کو معلوم ہے کہ صاحب صدر مہمان خصوصی اور منتظمین جلسہ حاضرین کے ساتھ ایک قسم کا کھیل کھیل رہے ہیں۔ اس لیے ہم نے تقریباً پانچ سو جلسوں کا بغور مطالعہ کے کے پچھلے سال یہ تجویز پیش کی تھی کہ تمام خیر مقدمی تقاریر۔ اظہار تشکر اور دوسرے تکلفاتی جملوں اور اسٹینڈرڈ محاوروں کو کوڈ نمبر دے دیا جائے اور اپنی

उन्हें ख़ेराजे–तहसीन पेश किया जा चुका तो वी. आई. पी. से "चंद अल्फ़ाज़" कहने की दरख़्वास्त की गई। वी. आई. पी. ने कहा मिस्टर हुसेन की ज़िन्दगी एक मिसाली उस्ताद की ज़िन्दगी है। उन्होंने अपनी तमाम ज़िन्दगी आने वाली नस्लों की ख़िदमत में गुज़ार दी हैं। उन्होंने पढ़ाने को सिर्फ़ ज़रियए–मआश नहीं बल्कि अपनी ज़िन्दगी का वाहिद मिशन समझा। यही वजह है कि उन्होंने तालिब–इल्मों से अक़ीदत ली। आज जब स्कूल में ट्रेड यूनियन का असर बढ़ रहा है पढ़ना–पढ़ाना भी गोया एक इन्डस्ट्री बन गया है। ऐसे माहौल में हुसेन साहब जैसे उस्तादों की मौजूदगी गोया ठंडी हवा का झोंका है। हमारे मुल्क की तरक़्क़ी के लिए हमारे स्कूलों के लिए सैंकड़ों और हज़ारों हुसेनों की ज़रुरत है। इसके बग़ैर हमारी तरक़्क़ी नामुमकिन है। इस तरह वह तक़रीबन एक घंटा हुसेन साहब की हक़ीक़ी और ख़याली ख़ूबियों पर बोलते रहे बीच में हेड मास्टर ने कई बार उनकी तवज्जो अपनी तरफ़ मब्ज़ूल कराने की कोशिश की। लेकिन वी. आई. पी. की तक़रीर थी कि एक चश्मा जो बंद होने का नाम नहीं, बिलआख़िर जब तक़रीर ख़त्म होने को आई तो हेड मास्टर ने हिम्मत करके वी. आई. पी. को सरगोशी के अंदाज़ में कुछ कहा।

इस पर वी. आई. पी. साहब चौंक पड़े। एक लम्हे के लिए वह रुके फिर गोया हुए। अभी अभी मुझे बताया गया कि यह जलसा हुसेन साहब के लिए नहीं बल्कि प्रसाद साहब के लिए मुन्अक़िद किया गया है। मैंने जो कुछ हुसेन साहब के तअल्लुक़ से कहा है वह मुनासिब रद्दो–बदल के साथ प्रसाद साहब पर भी लागू होता है।

हमारे जलसों की रस्मी कारवाइयों और घिसी–पिटी इस्तलाहों की एक ख़ास ख़ूबी यह है कि वह किसी भी मौक़े पर बिलाख़ौफ़ो–ख़तर इस्तेमाल की जा सकती है। गोया एक जामा[1] है जो हर किसी को ज़ेब देता है। यह रस्मी और खोखले तकल्लुफ़ात हमारी रोज़मर्रा ज़िन्दगी का इतना अहम तरीन जुज़ बन गये हैं कि बेशतर अहम रस्मों के जंगल में असली दरख़्त खो देते हैं। यह सब तकल्लुफ़ और रख–रखाव तज़ीअ औक़ात है। सब को मालूम है कि साहबे–सद्र मेहमाने–ख़ुसूसी और मुन्तज़ेमीने–जलसा हाज़रीन के साथ एक क़िस्म का खेल खेल रहे हैं। इसलिए हम ने तक़रीबन पाँच सौ जलसों का बग़ौर मोतालेआ कर के पिछले साल यह तज्वीज़ पेश की थी कि तमाम ख़ैर मक़्दमी तक़ारीर, इज़्हारे–तशक्कुर और दूसरे तकल्लुफ़ाती जुम्लों और स्टैंडर्ड मुहावरों को कोड नम्बर दे दिया जाय और अपनी

1. लिबास, वस्त्र

تقریروں میں ان رسمی حصوں کو مقررین کوڈ میں پڑھیں صرف اصلی مواد کو پورے طور پر پڑھیں۔ اردو میں حروف ابجد کا کوڈ تو پہلے سے ہی موجود ہے اس کو اب توسیع دے کر الفاظ اور محاورات ابجد کا کوڈ بتا دیا جائے۔ ہر جلسہ میں اس کوڈ اور اس کی چابی کی کاپیاں تمام حاضرین میں پہلے ہی سے تقسیم کی جاسکتی ہے۔ مجوزہ کوڈ میں صاحب صدر کے لیے نمبر ایک مہمان خصوصی کے لیے نمبر دو اور حاضرین کے لئے صفر کا استعمال کیا جائے گا۔ حاضرین کے لیے صفر کا ہندسہ خاص اہمیت رکھتا ہے۔ کیوں کہ حاضرین بجائے خود صفر ہوتے ہیں ان کی اپنی کوئی ہستی نہیں ہوتی۔ لیکن وہ جس ہندسے کے ساتھ بھی لگ جائیں اس کی قیمت میں اضافہ کرتے ہیں۔

.... اس طرح صاحب صدر کی قیمت حاضرین کی موجودگی سے ہی بڑھتی ہے۔

اگر یہ کوڈ منظور کرلیا جائے تو نمونہ کے طور پر خیر مقدمی تقریر کچھ ایسے ہوگی۔

ایک .... دو ....صفر

سات سو دو۔ چار بٹا پانچ۔ دوضرب تین۔ چار۔ پچیس۔ سو۔ پچھتر۔ سترہ۔ نوے۔ بائیس۔ شکریہ

اس کا حل ہوگا۔

معزز صاحب صدر مہمان خصوصی اور حاضرین۔

آج بہت مبارک دن ہے کہ ہم سب لوگ یہاں جمع ہوئے ہیں۔ آپ لوگ جانتے ہیں کہ صاحب صدر یہاں کی کلچرل زندگی کے روح رواں ہیں اور اس جلسہ کی صدارت کے لیے ان سے بہتر شخص کا انتخاب مشکل تھا۔ ان کی خدمات سے بھی آپ بخوبی واقف ہیں۔ میں ان کا بہت شکر گزار ہوں کہ انہوں نے اپنی گوناگوں مصروفیات کے باوجود یہاں آنے کے لیے اپنا قیمتی وقت نکالا .... وغیرہ وغیرہ۔

مہمان خصوصی کے تعلق سے

تین سو چار۔ سات بٹا نو۔ چالیس

یعنی جو کچھ صاحب صدر کے بارے میں کہا گیا ہے وہ ہمارے مہمان خصوصی پر بھی لاگو ہوتا

तक़रीरों में इन रस्मी हिस्सों को मोकर्रेरीन कोड में पढ़ें, सिर्फ़ असली मवाद को पूरे तौर पर पढ़ें। उर्दू में हरुफ़ अबजद का कोड पहले ही मौजूद है उसको अब तौसीअ देकर अल्फ़ाज़ और मुहावराते–अबजद का कोड बता दिया जाय। हर जलसे में इस कोड और उसकी चाबी की कापियाँ तमाम हाज़रीन को पहले ही से तक़्सीम की जा सकती है। मुजव्वेज़ा कोड में साहबे–सदर के लिए नम्बर एक मेहमाने–ख़ुसूसी के लिए नम्बर दो और हाज़रीन के लिए सिफ़र का इस्तेमाल किया जायेगा। हाज़रीन के लिए सिफ़र का हिन्दसा ख़ास अहमियत रखता है। क्योंकि हाज़रीन बजाये ख़ुद सिफ़र होते हैं उनकी अपनी कोई हस्ती नहीं होती। लेकिन वह जिस्र हिन्दसे के साथ भी लग जायें उसकी क़ीमत में इज़ाफ़ा करते हैं

..............इस तरह साहबे–सद्र की क़ीमत हाज़रीन की मौजूदगी से ही बढ़ती है।

अगर यह कोड मंज़ूर कर लिया जाय तो नमूने के तौर पर ख़ैरमक़दमी तक़रीर कुछ ऐसे होगी।

एक........ दो........... सिफ़र

सात सौ दो। चार बटा पाँच। दो ज़र्ब तीन। चार। पच्चीस। सौ। पचहत्तर। सतरह। नौवे। बाईस। शुक्रिया।

इसका हल होगा–

मोअज़िज़ साहबे–सद्र, मेहमाने–ख़ुसूसी और हाज़रीन।

आज बहुत मुबारक दिन है कि हम सब लोग यहाँ जमा हुए हैं। आप लोग जानते हैं कि साहबे–सद्र यहाँ की कल्चरल ज़िन्दगी के रुहे–रवाँ हैं और इस जलसे की सदारत के लिए इनसे बेहतर शख़्स का इन्तख़ाब मुश्किल था। उनकी ख़िदमात से आप भी बख़ूबी वाक़िफ़ हैं। मैं उनका बहुत शुक्रगुज़ार हूँ कि उन्होंने अपनी गूनागूँ मसरुफ़ियात के बावजूद यहाँ आने के लिए अपना क़ीमती वक़्त निकाला........... वग़ैरह वग़ैरह।

मेहमाने–ख़ुसूसी के तअल्लुक़ से

तीन सौ चार। सात बटा नौ। चालीस।

यानी जो कुछ साहबे–सद्र के बारे में कहा गया है वह हमारे मेहमाने–ख़ुसूसी पर भी लागू होता है।

ہے۔

اسی طرح جناب صدر اور مہمان خصوصی بھی ایک آدھ منٹ میں کوڈ کے ذریعہ اپنے تکلفات کا اظہار کر سکتے ہیں۔ ہم نے بڑے فخر سے یہ تجویز چند اہم اداروں، لیڈروں اور اخبار نویسوں کے سامنے رکھی۔ عام طور پر اس تجویز کا خیر مقدم کیا گیا۔ بیشتر اداروں کی طرف سے ہمیں تعریفی خطوط بھی آئے۔ پھر یہ فیصلہ ہوا کہ اس تجویز پر ایک آل انڈیا کانفرنس میں غور کیا جائے۔ اس کانفرنس میں ہمیں مدعو کیا گیا اور وہاں ہم نے اپنی تجویز کی تفصیلی طور پر وضاحت کی۔ اس پر بہت بحث ہوئی۔ اس کی شدید ترین مخالفت لیڈروں اور جنتا کی طرف سے ہوئی۔ بالآخر تجویز کو بھاری اکثریت سے رد کر دیا گیا۔ اس کی دو اہم وجوہات دی گئی ہیں وہ ایک تو یہ کہ اگر تقریروں میں سے رسمی اور رواجی لوازمات اور تکلفات کو نکال دیا جائے تو پھر مقررین کو اپنی تقریروں میں ٹھوس مواد ڈالنا پڑے گا۔ اس کے لیے انہیں غور و فکر کرنا پڑے گا۔ جس سے ان کے دماغوں پر بوجھ پڑنے کا اندیشہ ہے، جو ایک خطرناک امر ہوگا۔ اسی طرح حاضرین کو بھی خواہ مخواہ سوچنا پڑے گا۔

ہندوستان میں آج ہر چیز پر ٹیکس لگ چکا ہے۔ صرف انسانی دماغ پر ہی ٹیکس نہیں لگا۔ یہ تجویز دماغ پر ٹیکس لگانے کے مترادف ہے۔ جنتا ہرگز اب اس تجویز کو قبول نہیں کرے گی جس سے اس کو اپنا دماغ کریدنا پڑے۔ جس کو اس نے صدیوں سے محفوظ کسی قسم کے کرید اور ٹیکس سے بچا کر رکھا ہے۔

دوسرا اعتراض یہ تھا کہ اس تجویز پر عمل کرنے سے لوگوں کا بہت سا وقت بچ جائے گا پھر یہ سوال پیدا ہوگا کہ ایسے بچائے ہوئے وقت میں لوگ کیا کریں گے۔ ہمیں یہ تنبیہ دی گئی کہ ہمارا ملک اس وقت ایک نہایت نازک مرحلے سے گزر رہا ہے۔ اس وقت ہمارے سامنے بے شمار مسئلے ہیں۔ ایسے بحرانی دور میں ہمارا یہ فرض ہے کہ ایک سچے ہندوستانی ہونے کے ناطے ہم موجودہ مسئلوں کو حل کریں نہ کہ نئے مسئلے پیدا کرنے کی کوشش کریں۔ کئی لوگوں نے تو یہاں تک کہا کہ یہ تجویز شرانگیز ہے اور ہم امن میں خلل ڈالنا چاہتے ہیں۔ اور اس لیے ہمیں میسا Misa کے تحت دھرا جانا چاہیے۔

इसी तरह जनाबे सद्र और मेहमाने–ख़ुसूसी भी एक आध मिनट में कोड के ज़रिए अपने तकल्लुफ़ात का इज़हार कर सकते हैं। हमने बड़े फ़ख़्र से यह तजवीज़ चंद अहम इदारों, लीडरों और अख़बार नवीसों के सामने रखी। आम तौर पर इस तजवीज़ का ख़ैर मक़्दम किया गया। बेश्तर इदारों की तरफ़ से हमें तारीफ़ी ख़ुतूत भी आये। फिर यह फ़ैसला हुआ कि इस तजवीज़ पर एक ऑल इण्डिया कान्फ्रेंस में ग़ौर किया जाय। इस कान्फ्रेंस में हमें मदऊ किया गया और वहाँ हमने अपनी तजवीज़ की तफ़्सीली तौर पर वज़ाहत की। इस पर बहुत बहस हुई। इसकी शदीद तरीन मुख़ालफ़त लीडरों और जनता की तरफ़ से हुई। बिलआख़िर तजवीज़ को भारी अक्सरीयत से रद्द कर दिया गया। इसकी दो अहम वजूहात दी गई हैं वह एक तो यह कि अगर तक़रीरों में से रस्मी और रिवाजी लवाज़मात और तकल्लुफ़ात को निकाल दिया जाय तो फिर मोकर्रेरीन को अपनी तक़रीरों में ठोस मवाद डालना पड़ेगा। इसके लिए उन्हें ग़ौरो–फ़िक्र करना पड़ेगा। जिस से उनके दिमाग़ों पर बोझ पड़ने का अंदेशा है, जो एक ख़तरनाक अम्र[1] होगा। उसी तरह हाज़रीन को भी ख़्वाहमख़्वाह सोचना पड़ेगा।

हिन्दुस्तान में आज हर चीज़ पर टैक्स लग चुका है। सिर्फ़ इन्सानी दिमाग़ पर ही टैक्स नहीं लगा। यह तजवीज़ दिमाग़ पर टैक्स लगा देने के मोतरादिफ़[2] है। जनता हर्गिज़ अब इस तजवीज़ को क़बूल नहीं करेगी जिस से उसको अपना दिमाग़ कुरेदना पड़े। जिसको इसने सदियों से महफ़ूज़ किसी क़िस्म के कुरेद और टैक्स से बचा कर रखा है।

दूसरा ऐतराज यह था कि इस तजवीज़ पर अमल करने से लोगों का बहुत सा वक़्त बच जायेगा फिर यह सवाल पैदा होगा कि ऐसे बचाये हुए वक़्त में लोग क्या करेंगे। हमें यह तम्बीह दी गई कि हमारा मुल्क इस वक़्त एक निहायत नाज़ुक मरहले से गुज़र रहा है। इस वक़्त हमारे सामने बेशुमार मसअले हैं। ऐसे बोहरानी दौर में हमारा फ़र्ज़ है कि एक सच्चे हिन्दुस्तानी होने के नाते हम मौजूदा मसअलों को हल करें न कि नये मसले पैदा करने की कोशिश करें। कई लोगों ने तो यहाँ तक कहा कि यह तजवीज़ शर अंगेज़ है और हम अम्न में ख़लल डालना चाहते हैं। और इसलिए हमें मीसा Misa के तेहत धरा जाना चाहिए।

1. काम 2. पर्याय

ہم نے اس اپیل پر غور کیا۔ یہ دلیلیں واقعی ٹھوس ہیں اتنی ٹھوس کہ ایسی بے وقت تجویز رکھنے پر ہم نے انتہائی ندامت کا اظہار کیا اور اسے واپس لے لیا۔

صاحبان اب آپ بھی اس تجویز کو بھول جائیں۔

• • • • • • • •

हमने इस अपील पर ग़ौर किया। यह दलीलें वाक़ई ठोस हैं इतनी ठोस कि ऐसी बे वक़्त तजवीज़ रखने पर हम ने इन्तहाई निदामत[1] का इज़हार किया और उसे वापस ले लिया।

साहेबान अब आप भी इस तजवीज़ को भूल जायें।

●●●●●●●●

---

1. शर्मिन्दगी

ناوک حمزہ پوری

دانشور

رمضان المبارک کا مہینہ شروع ہوتے ہی بیوی کا تقاضہ بھی شروع ہو گیا کہ
''جناب، روزے رکھیے یا مت رکھیے، نماز پڑھیے یا مت پڑھیے۔ تراویح میں شرکت کیجیے یا نہ کیجیے، فطرہ ادا کیجیے یا نہ کیجیے، جانیں آپ اور آپ کا خدا، مگر عید کے لیے گھر بھر کے نئے کپڑے تو سلنے ہی چاہئیں۔ آزمودہ را آزمودن خطاست کے مصداق مجھے معلوم تھا کہ خدا چاہے تمام کوتاہیاں بخش دے بیوی نہیں بخشنے والی ہے۔ قہر اً جبراً بازار کی راہ لی۔

کوڈرما بازار۔ ایک نمایاں سائن بورڈ نظر آیا۔ ''چیپ اینڈ بسٹ ٹیلرس'' (Cheap and Best Tailors) ہر چند بزرگوں نے بطور حفظ ماتقدم تنبیہ کر رکھی ہے کہ ارزاں بہ علت و گراں بہ حکمت لیکن روز افزوں گرانی نے متوسط طبقے کے لوگوں کی اس طرح کمر توڑ دی ہے کہ جس گوشے سے بھی لفظ ارزاں سنائی پڑتا ہے۔ معشوقۂ دل نواز کے پیغام وصل کی طرح کانوں میں شہد گھولتا ہے۔

اگلے ہی لمحے میں دوکان میں تھا۔ ابھی تمام کاریگر نہیں آئے تھے۔ استقبال کیا جناب مظہر اسلام نے رنگ سُرخ و سپید، عمر عنفوان شباب کی سرحدوں میں، چہرے پر سبزۂ نورستہ حافظ قرآن۔ الہ آباد سے اردو میں کامل کلکتے اور بمبئی سے ٹیلرنگ میں تربیت یافتہ۔

दानिशवर

रमज़ानुल–मुबारक का महीना शुरु होते ही बीवी का तक़ाज़ा भी शरु हो गया कि "जनाब" रोज़े रखिये या मत रखिये, नमाज़ पढ़िये या मत पढ़िये। तरावीह में शिरकत कीजिये या न कीजिये, फ़ितरा अदा कीजिये या न कीजिये, जानें आप और आपका खुदा, मगर ईद के लिए घर भर के नये कपड़े तो सिलने ही चाहियें। आज़मूदा रा आज़मूदन ख़तास्त[1] के मिस्दाक़ मुझे मालूम था कि खुदा चाहे तमाम कोताहियाँ बख़्श दे बीवी नहीं बख़्शने वाली। क़हरन, जबरन बाज़ार की राह ली।

कोडरमा बाज़ार। एक नुमायाँ सा साइन बोर्ड नज़र आया। "चीप एण्ड बेस्ट टेलर्स" (Cheap and Best Tailors) हर चंद बुज़ुर्गों ने बतौर हिफ़्ज़ेमातक़द्दुम[2] तंबीह कर रखी है कि अरज़ाँ ब इल्लत व गराँ ब हिकमत[3] लेकिन रोज़ अफ़ज़ूँ गरानी ने मोतवस्सित तबक़े के लोगों की इस तरह कमर तोड़ दी है कि जिस गोशे से भी लफ़्ज़े–अरज़ाँ सुनाई पड़ता है। माशूक़ए–दिल नवाज़ के पैग़ामे–वस्ल की तरह कानों में शहद घोलता है।

अगले ही लम्हे मैं दूकान में था। अभी तमाम कारीगर नहीं आये थे। इस्तक़बाल किया जनाब मज़हरुल इस्लाम ने रंग सुर्ख़ो–सपेद, उम्र उनफ़वाने–शबाब[4] की सरहदों में, चेहरे पर सब्ज़ए–नौरस्ता[5] हाफ़िज़े–कुरआन, इलाहाबाद से उर्दू में कामिल कलकत्ते और बम्बई से टेलरिंग में तरबीयत–याफ़्ता। अक़ीदत पैदा हुई, जी भी खुश हुआ। सुबह ही

1. आज़माए हुए को आज़माना ग़लत है 2. वह बचाव जो पहले से कर लिया जाय 3. कम मूल्य में कोई न कोई दोष और अधिक मूल्य में कोई गुण आवश्य होता है 4. जवानी का आरम्भ 5. नई–नई उगी घास (दाढ़ी–मूंछें)

عقیدت پیدا ہوئی، جی بھی خوش ہوا۔ صبح ہی صبح اچھے آدمی سے ملاقات ہوئی۔ معلوم ہوا سوٹ اسپشلسٹ ہیں۔ دکھ ہوا یہ معلوم کر کے کہ شیروانی سینا نہیں آتی۔ معلوم ہوا کہ اب فوقانیہ کا امتحان دینا چاہتے ہیں۔ مدرسہ شمس الہدیٰ سے۔ کیوں حضرت! ملازمت ولازمت کا چکر ہے کیا ؟

''جی ہاں ارادہ تو ہے''

''بھئی! ٹیلرنگ کا دھندا برا تو نہیں۔ پھر یہ کہ ماشاءاللہ آپ کی دوکان چلی ہوئی ہے''

''دراصل یہ دوکان بھیا کی ہے۔ ویسے سچ پوچھیے تو اس پیشے میں برکت نہیں۔''

''وجہ؟''

''وجہ بظاہر تو یہی معلوم ہوتی ہے کہ ہر درزی چھوٹا یا بڑا کپڑے ضرور چراتا ہے۔

''تو آپ مت چرایا کیجیے۔''

''چرانا ہی پڑتا ہے۔ یہ کاجل کی کوٹھری ہے۔ کتنی احتیاط برتیے گا؟''

مجھے کرتا پاجامہ سلوانا تھا۔ قد قامت کی پیمائش کے بعد ماسٹر نے پوچھا۔

''پاجامہ بٹن والا رہے گا یا رسّی والا؟''

''نہ بٹن والا نہ رسّی والا؟''

''تو؟''

''ازار بند والا''

''جناب ازار بند کوئی نہیں کہتا سب لوگ رسّی ہی کہتے ہیں۔''

''صحیح فرمایا آپ نے حافظ صاحب۔ لیکن سب لوگ رسّی کہیں گے اور ان کی پیروی میں آپ بھی رسّی ہی کہنے لگیں گے تو ایک دن ازار بند بالکل غائب ہو جائے گا۔ رہ جائے گی رسّی۔''

''آپ دانش ور معلوم ہوتے ہیں۔''

सुबह अच्छे आदमी से मुलाक़ात हुई। मालूम हुआ सूट स्पेशलिस्ट हैं। दुखः हुआ यह मालूम करके कि शेरवानी सीना नहीं आती। मालूम हुआ कि अब फ़ोक़ानिया का इम्तेहान देना चाहते हैं मदरसा शम्सुलहोदा से। क्यों हज़रत! मोलाज़मत वलाज़मत का चक्कर है क्या?

"जी हाँ इरादा तो है"

"भई टेलरिंग का धंधा बुरा तो नहीं है। फिर यह कि माशाअल्लाह आपकी दूकान चली हुई है"

"दरअसल यह दूकान भैया की है। वैसे सच पूछिये तो इस पेशे में बरकत नहीं।"

"वजह?"

"वजह बज़ाहिर तो यही मालूम होती है कि हर दर्ज़ी छोटा या बड़ा कपड़े ज़रुर चुराता है।"

"तो आप मत चुराया कीजिये।"

"चुराना ही पड़ता है। यह काजल की कोठरी है। कितनी एहतयात बरतिये गा?"

मुझे कुर्ता पाजामा सिलवाना था। क़दो–क़ामत की पैमाइश के बाद मास्टर ने पूछा। "पाजामा बटन वाला रहेगा या रस्सी वाला?"

"न बटन वाला न रस्सी वाला?"

"तो"

"इज़ारबंद वाला"

"जनाब इज़ारबंद कोई नहीं कहता सब लोग रस्सी ही कहते हैं" सही फ़रमाया आपने हाफ़िज़ साहब। लेकिन सब लोग रस्सी कहेंगे और उनकी पैरवी में आप भी रस्सी ही कहने लगे तो एक दिन इज़ारबंद बिल्कुल ग़ायब हो जायेगा। रह जायेगी रस्सी।"

"आप दानिशवर मालूम होते हैं।"

"ارے نہیں جناب۔ مولوی ہوں پرائمری اسکول کا"

گھر لوٹ کر آیا تو راحت کی سانس لی بدھو جو ٹھہرا مگر دل میں خلش یہ تھی کہ کیا دانشور ہونا اتنا ہی آسان ہے کہ ازار بند کو ازار بند کہنے پر زور دیجیے اور دانشور ہو گئے۔ ابھی پچھلے دنوں ہفتہ وار "پندار" میں کچھ خطوط شائع ہوئے تھے۔ "اردو اکادمی کے خلاف دانش وروں کے خطوط"۔ خطوط دیکھیے تو ان میں شیخ چمن سے لے کر مرزا بدھو تک کے خطوط تھے۔ تعجب ہوا، الٰہی! یہ سب دانشور ہیں۔ تھوڑی دیر میں اپنی ہی عقل پر ماتم کیا۔ ایسا کون ہے جس میں تھوڑی بہت دانش نہ ہو، بقدر ظرف ہی سہی، یوں دنیا کا ہر آدمی دانشور ہے۔

اگر آپ شاعر یا ادیب ہوں......مگر آپ ذرا ٹھہریے، میرا ایک شاگرد ہے، بڑا باصلاحیت ایم اے میں ٹاپ کیا ہے۔ حاسدین نے اڑا رکھی ہے کہ صدر شعبہ کی ناک کا بال تھا۔ اسی لیے ٹاپر ہو گیا خدا کی پناہ حاسدوں کے شر سے۔ لڑکا واقعی باصلاحیت ہے۔ اسے یہ اعتراض ہے کہ جب شاعری بھی ادب کے ذیل میں آتی ہے تو شاعر یا ادیب، یا شعراء ادبا لکھنے بولنے کی کیا تک ہے۔ کیا شاعر ادیب نہیں ہوتا؟ اور ایک دن تو میں اُس کی دانشوری کا قائل ہی ہو گیا۔ آیا تو نہ علیک نہ سلیک چھوٹتے ہی یہ سوال کر دیا۔ حضرت ! کیا بہت سی عورتیں ایک جگہ جمع ہو جائیں تو مذکر ہو جائیں گی۔ میں ذرا محتاط قسم کا استاد ہوں۔ جواب گول مٹول دیا بھئی ! اگر ہو ہی جائیں تو میرا آپ کا کیا جاتا ہے؟۔ مگر یہ تو بتایئے کہ اس سوال کی شان نزول کیا ہے۔؟

یہ عجیب تماشا ہے کہ " صنف " مؤنث ہے مگر اصناف مذکر۔ طرف مؤنث ہے مگر اطراف مذکر۔ میں نے پھر گول سا جواب دیا عزیزم ! آپ دانشور ہو گئے"

میں یہ کہہ رہا تھا کہ اگر آپ شاعر ادیب ہوں تو دانشور ہونا آپ کے لیے آسان ہے، بس کرنا یہ ہے کہ مسلمات و معتقدات پر حملے کیجیے " تو لاکھ جھکوا لے میرے سر کو مگر یہ دل اب نہیں جھکے گا۔ " یا یہ خطرے کی راہ پل صراط لگے تو یوں کیجیے کوئی اصلاحی قدم اٹھایئے، مثلاً درستگی اِملا۔ چند دانشوروں نے صحتِ اِملا کا بیڑہ اٹھایا۔ چھاؤں

"अरे नहीं जनाब। मोलवी हूँ प्राइमरी स्कूल का"

घर लौटकर आया तो राहत की सांस ली बुद्धू जो ठहरा मगर दिल में ख़लिश यह थी कि क्या दानिशवर होना इतना ही आसान है कि अज़ारबंद को इज़ारबंद कहने पर ज़ोर दीजिये और दानिशवर हो गये। अभी पिछले दिनों हफ़्तावार "पिंदार" में कुछ ख़ुतूत शाया हुए थे। "उर्दू अकादमी के ख़िलाफ दानिशवरों के ख़ुतूत।" ख़ुतूत देखिए तो उनमें शेख़ जुम्मन से लेकर मिर्ज़ा बुद्धू तक के ख़ुतूत थे। तअज्जुब हुआ, इलाही! यह सब दानिशवर हैं। थोड़ी देर में अपनी अक़्ल पर मातम किया। ऐसा कौन है जिसमें थोड़ी बहुत दानिश न हो, बक़द्रे ज़र्फ़ ही सही, यूँ दुनिया का हर आदमी दानिशवर है।

अगर आप शायर या अदीब हों...... मगर ज़रा ठहरिये, मेरा एक शागिर्द है, बड़ा बासलाहियत, एम. ए. में टॉप किया है। हासेदीन ने उड़ा रखी है कि सदरे–शोबा की नाक का बाल था। इसी लिए टॉपर हो गया, खुदा की पनाह हासिदों के शर से। लड़का वाक़ई बासलाहियत है। उसे ये एतराज़ है कि शायरी भी अदब के ज़ैल में आती है तो शायर या अदीब, या शोअरा[1] ओदबा लिखने, बोलने की क्या तुक है। क्या शायर अदीब नहीं होता? और एक दिन तो मैं उसकी दानिशवरी का क़ायल ही हो गया। आया तो न अलैक न सलैक छूटते ही यह सवाल कर दिया। हज़रत! क्या बहुत सी औरतें एक जगह जमा हो जायें तो मुज़क्कर[2] हो जायेंगी। मैं ज़रा मोहतात क़िस्म का उस्ताद हूँ जवाब गोल मटोल दिया भई! अगर हो ही जायें तो मेरा आपका क्या जाता है? मगर यह तो बताइये कि इस सवाल की शाने–नज़ूल क्या है?

यह अजीब तमाशा है कि "सिन्फ़" मोअन्नस[3] है मगर "असनाफ़" मुज़क्कर। तरफ़ मोअन्नस है मगर "अतराफ़" मुज़क्कर। मैंने फिर गोल सा जवाब दिया अज़ीज़म! आप दानिशवर हो गये"

मैं यह कह रहा था कि अगर आप शायर अदीब हों तो दानिशवर होना आपके लिए आसान है, बस करना यह है कि मोसल्लमातो–मोतक़दात[4] पर हमले कीजिये "तू लाख झुकवा ले मेरे सर को मगर यह दिल अब नहीं झुकेगा।" या यह ख़तरे की राह पुले–सेरात लगे तो यूँ कीजिये कोई इस्लाही क़दम उठाइये, मसलन दुरुस्तगिए–इमला। चंद दानिशवरों ने सेहते–इमला का बेड़ा उठाया। छाँव

1. शायर का बहुवचन 2. पुर्लिंग 3. स्त्रीलिंग 4. मानी हुई बातें और विश्वास

گاؤں کی صحیح املا چھانو ہے گانو ہے اب جب ایک زمانہ چھانو، گانو لکھتے ہی نہ لگا بلکہ لکھنے کا عادی ہو گیا تو ایک بڑے دانشور نے فیصلہ صادر کیا ہے کہ چھاؤں کو چھانو اور گاؤں کو گانو لکھنا بر بنائے جہالت ہے مجھ سا عامی پریشانی میں ہے کہ دانشوروں کی ان دو ٹولیوں میں سچا دانشور کون ہے۔؟

تذکیر و تانیث کا جھمیلہ بھی کھڑا کیا جا سکتا ہے بزرگوں نے کئی الفاظ کو مختلف فیہ قرار دیا تھا یعنی بعض مذکر کہتے ہیں تو بعض مونث۔ املا بھی اسی قبیل کا لفظ ہے۔ مذکر بولو تب ٹھیک مونث بولو تب بھی درست۔ لیکن دانشوروں کی ایک بڑی جماعت کئی مہینوں سے ہماری زبان کے اکھاڑے میں کشتی لڑ رہی ہے وجہ تنازعہ ہے ''کا اِملا'' یا ''کی اِملا''

مالا بھی اسی قبیل کا لفظ ہے۔ مگر ایک دانشور فرماتے ہیں مالا کو اردو شعراء نے ہمیشہ مونث باندھا ہے اگرچہ اس کے آخر میں الف ہے جو عام طور پر مذکر کی علامت ہے مگر اردو کے کسی قابل ذکر شاعر نے مالا کو مذکر نظم نہیں کیا۔ میر انیس لکھتے ہیں۔

یارب ترا نام پاک جپنے کے لیے
گویا اک ہڈیوں کی مالا ہوں میں

یہ خاکسار عرض کرتا ہے کہ ناسخ بھی کوئی قابل ذکر شاعر تھے۔؟ مالا کو مذکر لکھ گئے ہیں۔

ترا مالا موتیوں کا قتل کرتا ہے مجھے
اے پری مالا سروہی کا یہ مالا ہو گیا

اور بے چارہ رشک تو خیر سے ہے ہی نا قبل ذکر۔

اے شہادت میں نہیں طالب جڑاو ہار کا
چاہیے زیور میں مالا تیغ جو ہر دار کا

اور سحر و برق کو تو زندگی ہی میں کوئی نہیں پوچھتا تھا۔ مرنے کے بعد ان کا کیا ذکر ع

مالا گلے کا ٹوٹ کے موتی بکھر گئے (سحر)

اور ع

गाँव की सही इमला छानू है गानू है अब जब एक ज़माना छानू , गानू लिखने ही न लगा बल्कि लिखने का आदी हो गया तो एक बड़े दानिशवर ने फ़ैसला सादिर किया है कि छाँव को छानू और गाँव को गानू लिखना बर बनाए जहालत है मुझ सा आमी परेशानी में है कि दानिशवरों की इन दो टोलियों में सच्चा दानिशवर कौन है?

तज़्कीरो–तानीस[1] का झमेला भी खड़ा किया जा सकता है। बुज़ुर्गों ने कई अल्फ़ाज़ को मुख़्तलिफ़ फ़ीह क़रार दिया था यानी बाज़ मुज़क्कर कहते हैं तो बाज़ मोअन्नस। इमला भी इसी क़बील का लफ़्ज़ है। मोज़क्कर बोलो तब ठीक मोअन्नस बोलो तब भी दुरुस्त। लेकिन दानिशवरों की एक बड़ी जमाअत कई महीनों से हमारी ज़बान के अखाड़े में कुश्ती लड़ रही है वजहे तनाज़ा है "का इमला" या "की इमला"

माला भी इसी क़बील का लफ़्ज़ है। मगर एक दानिशवर फ़रमाते हैं माला को उर्दू शोअरा ने हमेशा मोअन्नस बांधा है अगरचे इसके आख़िर में अलिफ़ है जो आम तौर पर मुज़क्कर की अलामत है मगर उर्दू के किसी क़ाबिले–ज़िक्र शायर ने माला को मुज़क्कर नज़्म नहीं किया। मीर अनीस लिखते है–

या रब तेरा नामे–पाक जपने के लिए
गोया एक हड्डियों की माला हूँ मैं

यह ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि नासिख़ भी कोई क़ाबिले–ज़िक्र शायर थे? माला को मुज़क्कर लिख गये हैं–

तेरा माला मोतियों का क़त्ल करता है मुझे
ऐ परीमाला सरोही[2] का ये माला हो गया

और बेचारा रश्क तो ख़ैर से है ही ना क़ाबिले–ज़िक्र–

ऐ शहादत मैं नहीं तालिब जड़ाऊ हार का
चाहिए ज़ेवर में माला तेग़े–जौहर दार का

और सहर व बर्क़ को तो ज़िन्दगी में कोई नही पूछता था। मरने के बाद उनका क्या ज़िक्र –

माला गले का टूट के मोती बिखर गये (सहर)

और –

---

1. पुर्लिंग एवम् स्त्रीलिंग 2. खंजर, तलवार

بنے ہیں میرے لیے موتیوں کے مالے سانپ (برقؔ)

ادھر ایک معروف دانشور نے بڑے پتے کی بات کہی ہے دلائل و براہین کے ساتھ کہی ہے:-

''جو لفظ اردو میں جس طرح برتا جاتا ہے وہ اسی طرح صحیح ہے خواہ اس کی اصل کچھ ہو کچھ مدت گذر جانے کے بعد اگر آواز اور تلفظ عوام الناس میں بدلے تو پھر اسی بدلے ہوئے تلفظ یہاں تک کہ ہجے کو بھی قبول کر لینا چاہیے۔ اردو نے لفظ کے صحیح مخرج اور اصل آواز اصوات اعراب اور ہجے کی کبھی پروانہ کی ہے۔''

مثلاً واؤ معدولہ دانش ور مذکور کی نگاہ میں سب سے پہلے گردن زدنی ہے۔ یعنی تنخواہ کو تنخاہ لکھنا چاہیے۔ اس لیے کہ نہ صرف عوام الناس اسی طرح بولتے ہیں بلکہ اکبرالہ آبادی نے بھی اسی آواز کے ساتھ اسے نظم کیا ہے۔

مذہب نے پکارا اے اکبر اللہ نہیں تو کچھ بھی نہیں
یاروں نے کہا یہ بات غلط تنخاہ نہیں تو کچھ بھی نہیں

سوال یہ پیدا ہوتا ہے ''عوام الناس کون ہوں گے؟ اور چلن کا پارکھ کسے سمجھا جائے گا'' یہ سوال دانشور موصوف کے دل میں بھی اٹھا اور موصوف نے جواب بھی دیا ہے۔

''میرا جواب یہ ہے کہ چلن، اور عوامی لہجے اور (عوامی) تلفظ کو سند مانیے کہ زبان لغات کے لیے نہیں بلکہ عوام کے لیے بنتی ہے''۔

اس خاکسار کے دماغ میں 'چلن' عوام الناس، عوامی لہجہ، عوامی تلفظ، مہینوں گردش کرتے رہے۔ بات پتے کی کہی گئی ہے۔ جمہوریت کا دور ہے عوام کا زمانہ ہے۔ زبان عوام کے لیے ہوتی ہے۔ وہ جس طرح بولیں اسی طرح درست۔

مگر ایک بات فاضل دانشور نے صاف نہیں کی یعنی یہ کہ کس علاقے کے عوام الناس کی زبان کو سند مانا جائے؟۔ دہلی کو لکھنؤ کو، حیدر آباد کو عظیم آباد کو یا پھر دوسرے ذیلی مراکز کو ترجیح دی جائے؟ پھر سوچا کہ جب اہم عوام الناس ہیں تو علاقے والی بات بے معنی ہو گی۔ ہر پڑھا لکھا شخص جانتا ہے کہ ہر آٹھ دس کوس پر لہجے میں فرق نمایاں ہونے لگتا ہے۔

बने हैं मेरे लिए मोतियों के माले सांप (बर्क़)

उधर एक मारुफ़ दानिशवर ने बड़े पते की बात कही है दलायलो–बराहीन के साथ कही है:–

"जो लफ़्ज़ उर्दू में जिस तरह बरता जाता है वह उसी तरह सही है ख़्वाह उसकी अस्ल कुछ हो, कुछ मुद्दत गुज़र जाने के बाद अगर आवाज़ और तलफ़्फ़ुज़ अवामुन्नास में बदले तो फिर उसी बदले हुए तलफ़्फ़ुज यहाँ तक कि हिज्जे को भी कुबूल कर लेना चाहिए। उर्दू ने लफ़्ज़ के सही मख़रज[1] और अस्ल आवाज़, अस्वात, ऐराब[2] और हिज्जे की कभी परवा न की है"

मसलन वाव मादूला दानिशवर मुज़क्कर की निगाह में सब से पहले गर्दन ज़दनी है। यानी तनख़्वाह को तनख़ाह लिखना चाहिए। इसलिए कि न सिर्फ़ आवामुन्नास इसी तरह बोलते हैं बल्कि अकबर इलाहाबादी ने भी इसी आवाज़ के साथ उसे नज़्म किया है –

मज़हब ने पुकारा ऐ अकबर अल्लाह नहीं तो कुछ भी नहीं
यारों ने कहा यह बात ग़लत तनख़ाह नहीं तो कुछ भी नहीं

सवाल यह पैदा होता है "आवामुन्नास कौन होंगे? और चलन का पारख किसे समझा जायेगा" यह सवाल दानिशवर मौसूफ़ के दिल में भी उठा और मौसूफ़ ने जवाब भी दिया है।

"मेरा जवाब यह है कि चलन, और आवामी लहजे और (आवामी) तलफ़्फ़ुज को सनद मानिये कि ज़बान लोगात के लिए नहीं बल्कि आवाम के लिए बनती है।"

इस ख़ाकसार के दिमाग़ में "चलन" आवामुन्नास, आवामी लहजा, आवामी तलफ़्फ़ुज, महीनों गर्दिश करते रहे। बात पते की कही गई है। जम्हूरियत का दौर है आवाम का ज़माना है। ज़बान आवाम के लिए होती है। वह जिस तरह बोलें उसी तरह दुरुस्त।

मगर एक बात फ़ाज़िल दानिशवर ने साफ़ नहीं की यानी यह कि किस इलाक़े के आवामुन्नास की ज़बान को सनद माना जाय? देहली को, लखनऊ को, हैदराबाद को, अज़ीमाबाद को या फिर दूसरे जैली मराकिज़ को तरजीह दी जाय? फिर सोचा कि जब आवामुन्नास हैं तो इलाक़े वाली बात बे मानी होगी। हर पढ़ा–लिखा शख़्स जानता है कि हर आठ दस कोस पर लहजे में फ़र्क़ नुमायाँ होने लगता है।

1. निकलने की जगह 2. अ, इ, उ आदि के प्रतिक

حسن اتفاق سے میرا مالی بدری بھگت عظیم آباد سے تعلق رکھتا تھا۔ اس کا پورا خاندان اسکول کے احاطے میں آباد تھا۔ ان لوگوں کے عوام الناس ہونے میں شک نہ تھا۔ بارہاان سے گفتگو ہوئی تھی اور دوران گفتگو جب وہ لوگ ''آدمی'' کو ''آمدی'' اور امردو کو ''امدور'' کہتے تھے تو ہنسی آتی تھی۔ اب عبرت پکڑی۔ صحیح وہی لوگ بولتے ہیں ابھی عبرت کے خیال سے اپنے کانوں کو چھو ہی رہا تھا کہ بابو مہتم سنگھ آتے ہوئے نظر آئے۔ آرہ مکان ہے۔ باقر پیر بکھوی شاگرد غالب کا تعلق بھی آرہ سے تھا۔ گفتگو کے دوران معلوم ہوا کہ وہ اپنے بھائی کو ٹیشن چھپا کے آرہے ہیں۔ یعنی ''پہنچا'' کے ہجے اور تلفظ یوں بدلے کہ ''چھپا'' ہوگیا۔

ذہن کے دریچے کھلتے گئے۔ اگر اصل آواز و اصوات اعراب اور ہجے کی پروانہ کی جائے نیز عوام کے لہجے، آواز اور تلفظ کو سند مان لیا جائے تو اُردو آسان ترین زبان بھی ہو جائے گی حروف تہجی میں ث، خ، ذ، ژ، ص، ض، ط، ظ، ع وغیرہ کی تو بالکل ضرورت باقی نہیں رہے گی کہ ان کو ان کے صحیح مخرج کے ساتھ عوام الناس کو تو چھوڑیے خواص الناس بھی نہیں بولتے۔

زیادہ نہیں بس کچھ مدت اور انتظار کیجیے۔ جب اپنے لہجے میں شین قاف درست رکھنے والی جاتی ہوئی نسل ختم ہو جائے گی تو خ، ز، ش، غ، ق، وغیرہ بھی بے کار ہو جائیں گے اور بس بیس حروف سے تمام کام چل جائیں گے۔

اب پ ت ٹ ج چ د ڈ ر ڑ س ک گ ل م ن و ہ ی۔ یہ ہوگی عوام الناس کی آواز و اصوات لہجہ و تلفظ کی کرامت۔ انکلاب جندا باد۔ گالب اور اکبال پھر سے چھاپے جائیں گے۔

نکس پھریادی ہے کس کی سوکھی تہریر کا
کاگجی ہے پیرہن ہر پیکر تسویر کا

اور

کبھی اے ہکیکت منتجر نجر آلباس مجاج میں
کہ ہجاروں سجدے تڑپ رہے ہیں میری جبین نیاج میں

जिस इत्तेफ़ाक़ से मेरा माली बद्री भगत अज़ीमाबाद से तअल्लुक़ रखता था। उसका पूरा ख़ानदान स्कूल के अहाते में आबाद था। उन लोगों के आवामुन्नास होने में शक न था। बारहा उनसे गुफ़्तगू हुई थी और दौराने–गुफ़्तगू जब वह लोग "आदमी" को "आमदी" और "अमरुद" को "अमदूर" कहते थे तो हंसी आती थी। अब इबरत पकड़ी। सही यही लोग बोलते है। अभी इबरत के ख़याल से अपने कानों को छू ही रहा था कि बाबू मोहतम सिंह आते हुए नज़र आये। आरा मकान है। बाक़र पीर बघवी शागिर्दे–ग़ालिब का तअल्लुक़ भी आरा से था। गुफ़्तगू के दौरान मालूम हुआ कि वह अपने भाई को टेशन चहुँपा के आ रहे हैं। यानी "पहुँचा" के हिज्जे और तलफ़्फ़ुज़ यूँ बदले कि "चहुँपा" हो गया।

ज़ेहन के दरीचे खुलते गये। अगर अस्ल आवाज़ो–असवात, आराब और हिज्जे की परवा न की जाये नीज़ आवाम के लहजे, आवाज़ और तलफ़्फ़ुज़ को सनद मान लिया जाय तो उर्दू आसान तरीन ज़बान हो जायेगी। हरुफ़े तहज्जी में से, ख़े, ज़ाल, ज़े, स्वाद, ज़्वाद, तो, ज़ो, ऐन वग़ैरह की तो बिल्कुल ज़रुरत बाक़ी नहीं रहेगी कि इनको उनके सही मख़रज के साथ आवामुन्नास को तो छोड़िये ख़वासुन्नास भी नहीं बोलते।

ज़्यादा नहीं बस कुछ मुद्दत और इन्तज़ार कीजिये। जब अपने लहजे में शीन, क़ाफ़ दुरुस्त रखने वाली जाती हुई नस्ल ख़त्म हो जायेगी तो ख़े, ज़ै, शीन, ग़ैन, क़ाफ़ वग़ैरह भी बेकार हो जायेंगे और बस बीस हुरुफ़ से तमाम काम चल जायेंगे।

अलिफ़, बे, पे, ते, टे, जीम, चे, दाल, डाल, रे, ड़े, सीन, काफ़, गाफ़, लाम, मीम, नून, वाव, हे, ये। यह होगी आवामुन्नास की आवाज़ो–असवात लहजे व तलफ़्फ़ुज़ की करामत। इन्कलाब जिन्दा बाद। ग़ालिब और इक़बाल फिर से छापे जायेंगे –

नक़्स फ़रियादी है किस की सूख़िए तहरीर का
कागज़ी है पैरहन हर पैकरे तस्वीर का

और –

कभी ऐ हक़ीक़ते मुन्तजिर नजर आ लिबासे मजाज में
कि हजारों सजदे तड़प रहे हैं मेरी जबीने नयाज में

پس اے دانشورو! تمھارا منصب عوام کے غلط مذاق تلفظ اصوات و آواز کے سامنے سپر ڈال دینا نہیں ہے بلکہ عوامی لب و لہجے کو الفاظ کے صحیح تلفظ، صحیح ہجے صحیح آواز تک لانا تمھارا ہی کام ہے تم سے پہلے کے دانشوروں نے بھی اردو میں چلن کی اہمیت سمجھی تھی اور غلط العام فصیح کہا تھا یعنی چلن عوام اور خواص دونوں میں یکساں ہو غلط العوام قبیح کل بھی تھا آج بھی ہے۔ کجا یہ کہ غلط العوام لناس؟

لاحول ولاقوۃ الا باللہ۔

oooooooo

पस ऐ दानिशवरो! तुम्हारा मन्सब आवाम के ग़लत मज़ाक, तलफ़्फ़ुज़, असवातो–आवाज़ के सामने सिपर डाल देना नहीं है बल्कि आवामी लबो–लहजे को अल्फ़ाज़ के सही तलफ़्फ़ुज, सही हिज्जे, सही आवाज़ तक लाना तुम्हारा ही काम है। तुमसे पहले के दानिशवरों ने भी उर्दू में चलन की अहमियत समझी थी और ग़लतुलआम फ़सीह[1] कहा था यानी चलन आवाम और ख़वास दोनों में यकसाँ हो, ग़लतुलअवाम क़बीह[2] कल भी था आज भी है। कुजा यह कि ग़लतुलअवामुन्नास[3]?

लाहौलवला कुव्वत इल्ला बिल्लाह।

ooooooo

---

1. वह उच्चारण या इम्ला जो ग़लत होने के बावजूद अधिक प्रयोग होने के कारण सही समझा जाए 2. वह शब्द जिसे आम लोगों ने ग़लत उच्चारण या ग़लत अर्थों में प्रयोग किया हो ग़लत ही रहेगा 3. बाज़ारु लोगों के उच्चारण

مجتبیٰ حسین

مرزا غالبؔ کی پریس کانفرنس

عالم بالا میں جب نجم الدولہ دبیر الملک اسد اللہ خاں نظام جنگ بہادر المتخلص بہ غالبؔ کو فرصت کے رات دن میسر آ گئے تو وہ تصورِ جاناں کرنے بیٹھ گئے۔ اور اس قدر بیٹھ گئے کہ اگر بروقت نہ چونکتے تو بہشت کی زمیں میں مرزا غالبؔ کی جڑیں پھوٹ جاتیں اور وہ ایک ہرے بھرے درخت میں تبدیل ہو کر رہ جاتے اور بعد میں یہ درخت دیوانِ غالبؔ کے نسخوں سے لد جاتا۔ مگر خدا بھلا کرے میر مہدی مجروحؔ کا کہ اُن کی کھانسی نے مرزا غالبؔ کو چونکا دیا۔ اور انہوں نے چونکتے ہی میر مہدی مجروحؔ سے پوچھا ''بھئی کیا وقت ہے؟۔'' میر مہدی مجروحؔ نے پہلے تو اپنی گھڑی کو اچھی طرح ہلا کر یقین کر لیا کہ یہ چل رہی ہے یا نہیں، پھر گھڑی کی طرف غور سے دیکھ کر کہا اُستادِ محترم، آپ وقت کیا پوچھتے ہیں، کافی بڑا وقت آ گیا ہے۔ پوری ایک صدی بیت گئی ہے اور آپ صرف تصورِ جاناں میں کھوئے رہ گئے۔ اب ذرا جاگئے کہ زمانہ قیامت کی چال چل گیا ہے اور شاعر کہہ گیا ہے۔

نہ سمجھو گے تو مٹ جاؤ گے اے ہندوستاں والو
تمہاری داستاں تک بھی نہ ہوگی داستانوں میں

मुजतबा हुसैन

मिर्ज़ा ग़ालिब की प्रेस कान्फ्रेंस

आलमे–बाला[1] में जब नजमुद्दौला दबीरुलमुल्क असदउल्लाह ख़ाँ निज़ामे जंग बहादुर अल मुतख़ल्लिस ब ग़ालिब को फ़ुर्सत के रात दिन मुयस्सर आ गये तो वह तसव्वुरे–जानाँ करने बैठ गए, और इस क़दर बैठ गए कि अगर बर–वक़्त न चौंकते तो बहिश्त की ज़मीन में मिर्ज़ा ग़ालिब की जड़ें फूट जातीं और वह एक हरे भरे दरख़्त में तब्दील होकर रह जाते और बाद में यह दरख़्त दीवाने–ग़ालिब के नुस्ख़ों से लद जाता। मगर ख़ुदा भला करे मीर मेहदी मजरुह का कि उनकी ख़ाँसी ने मिर्ज़ा ग़ालिब को चौंका दिया। और उन्होंने चौंकते ही मीर मेहदी मजरुह से पूछा "भई क्या वक़्त है?" मीर मेहदी मजरुह ने पहले तो अपनी घड़ी को अच्छी तरह हिलाकर यक़ीन कर लिया कि यह चल रही है या नहीं, फिर घड़ी की तरफ़ ग़ौर से देखकर कहा उस्तादे–मोहतरम, आप वक़्त क्या पूछते हैं, काफ़ी बुरा वक़्त आ गया है। पूरी एक सदी बीत गई है और आप सिर्फ़ तस्सव्वुरे–जानाँ में खोए रह गये। अब ज़रा जागिये कि ज़माना क़यामत की चाल चल गया है और शायर कह गया है–

न समझो गे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दुस्ताँ वालो
तुम्हारी दास्ताँ तक भी न होगी दास्तानों में

1. आसमान, जन्नत

شعر کو سنتے ہی مرزا غالبؔ جو پہلے ہی سے چونک گئے تھے کافی سے زیادہ چونک گئے اور بولے، یہ کیا کہہ رہے ہو میاں مہدی! ذرا ہوش کے ناخن لو، کیا ہم پوری ایک صدی تک "تصورِ جاناں" کرتے رہے؟

میر مہدی بولے "اور نہیں تو کیا۔ آپ نے تو تصورِ جاناں کے سارے عالمی بلکہ کائناتی ریکارڈ توڑ کر رکھ دیے ہیں۔" یہ کہہ کر میر مہدی نے ٹوٹے ہوئے ریکارڈ کے چند ٹکڑے مرزا غالبؔ کی خدمت میں پیش کیے اور ایک سرد آہ کھینچ کر یوں گویا ہوئے "اے میرے استادِ محترم! مجھے آپ سے پوری ہمدردی ہے، جو ہونا تھا وہ ہو چکا، قسمت کے لکھے کو بھلا کون مٹا سکتا ہے۔ آپ ادھر تصورِ جاناں میں مگن رہے اور ادھر دنیا والوں نے آپ کی صد سالہ تقاریب منا ڈالیں بچے بچے کی زبان پر آپ کا نام تو تھا ہی اب بڑوں کی زبان پر بھی آپ کا نام ہے۔ دنیا میں اب یہ رواج عام ہو گیا ہے کہ اگر کسی کو دھمکی دینا ہو تو کہا جاتا ہے "میاں ذرا ہوشیار رہنا، نہیں تو تمہاری غالبؔ صدی تقاریب منا کر رکھ دوں گا۔" میں نے بارہا اس قسم کے جملے سنے ہیں۔

"اگر کل تک مکان کا کرایہ ادا نہ ہوا تو سرِ بازار تمہاری غالب صدی تقاریب منا دوں گا۔" "اگر ٹھیک سے کام نہ کرو گے تو تمہارا غالب سیمینار منعقد کروں گا۔" وغیرہ وغیرہ۔ نوبت یہاں تک پہنچ گئی کہ مائیں اپنے بچوں کو آپ کی تصویر بتا کر ڈراتی ہیں۔ "اگر شور کرو گے تو غالبؔ کو بلاؤں گی۔" قبلہ! اب آپ سے کیا عرض کروں کہ آپ غالبؔ سے "گالب" بن گئے ہیں۔ اور بعض بعض مقاماتِ آہ و فغاں پر تو آپ "گلیبؔ" بھی بن چکے ہیں۔ لٰہذا اب خوابِ غفلت سے جاگیے اور دشمنوں کا منہ توڑ جواب دیجیے ورنہ عین ممکن ہے کہ آپ کی شاعری صرف فیشن بن کر رہ جائے۔

مرزا غالبؔ میاں میر مہدی کی اس تقریر دل پذیر کو بڑے غور سے سنتے رہے پھر بولے: "تم نے ہمیں پہلے ہی کیوں نہ جگایا؟"

میر مہدی بولے "حضور! آپ کو تو یک گونہ بے خودی دن رات چاہیے بلکہ یہی تو آپ کا واحد پسندیدہ "اِن ڈور گیم" ہے۔ بس اسی خیال سے نہ جگایا

ع ورنہ کیا بات کر نہیں آتی

शेर को सुनते ही मिर्ज़ा ग़ालिब जो पहले ही से चौंक गये थे काफ़ी से ज़्यादा चौंक गये और बोले, यह क्या कह रहे हो मियाँ मेहदी! ज़रा होश के नाखुन लो, क्या हम पूरी एक सदी तक "तसव्वुरे–जानाँ" करते रहे?

मीर मेहदी बोले "और नहीं तो क्या। आपने तो तस्सव्वुरे–जानाँ के सारे आलमी रिकार्ड तोड़ कर रख दिये है"। यह कह कर मीर मेहदी ने टूटे हुए रिकार्ड के चन्द टुकड़े मिर्ज़ा ग़ालिब की ख़िदमत में पेश किये और एक सर्द आह खींच कर यूँ गोया हुए "ऐ मेरे उस्तादे–मोहतरम! मुझे आपसे पूरी हमदर्दी है, जो होना था वह हो चुका, किस्मत के लिखे को भला कौन मिटा सकता है। आप इधर तस्सव्वुरे–जानाँ में मगन रहे और उधर दुनिया वालों ने आपकी सद–साला तक़रीब मना डालीं, बच्चे बच्चे की ज़बान पर आपका नाम तो था ही अब बड़ों की ज़बान पर भी आपका नाम है। दुनिया में अब यह रिवाज आम हो गया है कि अगर किसी को धमकी देना हो तो कहा जाता है "मियाँ ज़रा होशियार रहना नहीं तो तुम्हारी ग़ालिब सदी तक़रीब मनाकर रख दूँगा" मैंने बारहा इस क़िस्म के जुम्ले सुने हैं।

"अगर कल तक मकान का किराया अदा न हुआ तो सरे–बाज़ार तुम्हारी ग़ालिब सदी तक़रीब मना दूंगा"। अगर ठीक से काम न करोगे तो तुम्हारा ग़ालिब सेमीनार मुनअक़िद करुंगा" वग़ैरह वग़ैरह। नौबत यहाँ तक पहुँच गई कि माएं अपने बच्चों को आपकी तस्वीर बता कर डराती हैं। "अगर शोर करोगे तो ग़ालिब को बुलाऊँगी"। क़िब्ला! अब आपसे क्या अर्ज़ करुँ कि आप ग़ालिब से "गालिब" बन गये है। और बाज़–बाज़ मक़ामात बल्कि मक़ामाते–आहो–फ़ोग़ाँ पर तो आप "ग़लीब" भी बन चुके हैं। लिहाज़ा अब ख़्वाबे–ग़फ़लत से जागिये और दुश्मनों का मुँह तोड़ जवाब दीजिये वरना ऐन मुमकिन है कि आपकी शायरी सिर्फ फ़ैशन बनकर रह जाये।

मिर्ज़ा ग़ालिब मियाँ मीर मेहदी की इस तक़रीरे–दिल–पज़ीर को बड़े ग़ौर से सुनते रहे फिर बोले: " तुमने हमें पहले क्यों न जगाया?"

मीर मेहदी बोले "हुज़ूर! आपको तो यकगूना बेख़ुदी दिन रात चाहिए बल्कि यही तो आप का वाहिद पसंदीदा "इनडोर गेम" है। बस इसी ख़याल से न जगाया –

वरना क्या बात कर नहीं आती

مرزا غالب بولے "وہ تو ایک صدی پہلے کی بات تھی۔ اب تو "حالات" اور ہماری "حالت" دونوں تبدیل ہو چکے ہیں۔ مگر بھی کوئی سبیل تو بتاؤ کہ اب ہم کیا کریں؟"

تھوڑی دیر خاموشی طاری رہی۔ پھر اچانک میر مہدی نے چٹکی بجا کر کہا "قبلہ! ایک ترکیب ذہن میں آئی ہے۔ اگر اس پر عمل کیا جائے تو شاید آپ اپنے موقف کی وضاحت کر سکیں۔"

مرزا غالب نے پوچھا "وہ کیا ترکیب ہے؟"

میر مہدی بولے "حضور ان دنوں ہندوستان میں پریس کا بول بالا ہے۔ پریس کی طاقت بہت بڑی طاقت ہے۔ ایسے آڑے وقت میں پریس ہی آپ کی مدد کر سکتا ہے۔ کیوں نہ ہم پریس والوں کو طلب کریں۔"

مرزا غالب نے کسی قدر حیرانی سے پوچھا "کیا منشی نول کشور کا پریس اب تک موجود ہے؟۔" میر مہدی نے مرزا غالب کی سادگی پر کفِ افسوس ملتے ہوئے کہا "حضور! منشی نول کشور کا پریس تو اسی وقت بند ہو گیا تھا جب اس نے آپ کا دیوان چھاپا تھا۔ پریس والوں سے میری مراد اخبار والوں سے ہے۔ ہم ایک پریس کانفرنس طلب کریں گے جس میں آپ اپنے موقف کی وضاحت کریں۔"

مرزا غالب نے تقریباً نڈھال ہو کر کہا "میاں میر مہدی! ہم تو کچھ بھی نہیں جانتے۔ ہم وہاں ہیں جہاں سے ہم کو بھی کچھ ہماری خبر نہیں آتی۔ ہمیں تم پر پورا پورا بھروسہ ہے۔ تم جو کچھ کرو گے وہ اچھا ہی کرو گے۔ مناسب سمجھو تو پریس کانفرنس بلا لینا مگر خیال رہے کہ یہ پریس کانفرنس دلّی میں منعقد ہو کیوں کہ ہم نے بہت دنوں سے دلّی نہیں دیکھی آنکھیں ترس گئی ہیں اسے دیکھنے کے لیے۔"

میر مہدی نے فوراً بات کو کاٹ کر کہا "حضور پریس کانفرنس دلّی میں نہیں ہو گی کیوں کہ دلّی "ڈرائی ایریا" ہے اور پریس میں کوئی بات —— ع

بنتی نہیں ہے بادہ و ساغر کہے بغیر

لہٰذا پریس کانفرنس حیدر آباد میں منعقد ہو گی کیوں کہ یہ ابھی تک خوش قسمتی سے

मिर्ज़ा ग़ालिब बोले "वह तो ठीक एक सदी पहले की बात थी। अब तो "हालात" और हमारी "हालत" दोनों तब्दील हो चुके हैं। मगर भई कोई सबील तो बताओ कि अब हम क्या करें?"

थोड़ी देर ख़ामोशी तारी रही। फिर अचानक मीर मेहदी ने चुटकी बजाकर कहा "क़िब्ला! एक तरकीब ज़ेहन में आयी है। अगर उस पर अमल किया जाये तो शायद आप अपने मौकफ़[1] की वज़ाहत कर सकें"।

मिर्ज़ा ग़ालिब ने पूछा "वह क्या तरकीब है?"

मीर मेहदी बोले "हुज़ूर इन दिनों हिन्दुस्तान में प्रेस का बोल बाला है। प्रेस की ताक़त बहुत बड़ी ताक़त है। ऐसे आड़े वक़्त में प्रेस ही आपकी मदद कर सकता है। क्यों न हम प्रेस वालों को तलब करें"।

मिर्ज़ा ग़ालिब ने किसी क़दर हैरानी से पूछा "क्या मुन्शी नवल किशोर का प्रेस अब तक मौजूद है? मीर मेहदी ने मिर्ज़ा ग़ालिब की सादगी पर कफ़े–अफ़सोस मलते हुए कहा "हुज़ूर! मुन्शी नवल किशोर का प्रेस तो उसी वक़्त बंद हो गया था जब उसने आपका दीवान छापा था। प्रेस वालों से मेरी मुराद अख़्बार वालों से है। हम एक प्रेस कान्फ्रेंस तलब करेंगे जिसमें आप अपने मौकफ़ की वज़ाहत करें"।

मिर्ज़ा ग़ालिब ने तक़रीबन निढ़ाल होकर कहा "मियाँ मीर मेहदी! हम तो कुछ भी नहीं जानते। हम वहाँ है जहाँ से हमको भी कुछ हमारी ख़बर नहीं आती। हमें तुम पर पूरा पूरा भरोसा है। तुम जो कुछ करोगे वह अच्छा ही करोगे। मुनासिब समझो तो प्रेस कान्फ्रेंस बुला लेना मगर ख़याल रहे कि यह प्रेस कान्फ्रेंस दिल्ली में ही मुनअक़िद हो क्योंकि हमने बहुत दिनों से दिल्ली नहीं देखी, आँखें तरस गई हैं उसे देखने के लिए"।

मीर मेहदी ने फ़ौरन बात काटकर कहा "हुज़ूर प्रेस कान्फ्रेंस दिल्ली में नहीं होगी क्योंकि दिल्ली "ड्राई ऐरिया" है और प्रेस में कोई बात–

बनती नहीं है बादओ–साग़र कहे बग़ैर

लिहाज़ा प्रेस कान्फ्रेंस हैदराबाद में मुनअक़िद होगी क्योंकि यह अभी तक ख़ुशक़िस्मती से से "वेट ऐरिया" है"।

1. अभिप्राय, उद्देश्य

''ویٹ ایریا'' ہے۔''

بالآخر پریس کانفرنس طلب کرنے کا فیصلہ کرلیا گیا۔ میر مہدی نے مرزا غالب کو پریس کانفرنس کے اسرار و رموز سے واقف کرایا۔ اُنہیں ان ساری زیادتیوں کا حال سنایا جو ایک صدی کے عرصہ میں اُن کی ذات کے ساتھ کی گئی تھیں۔ مرزا غالب ان زیادتیوں کو سنتے جاتے اور زار و قطار روتے جاتے اور اُن کی زبان پر یہ شعر تھا۔

غم سے مرتا ہوں کہ اتنا نہیں دنیا میں کوئی
کہ کرے تعزیتِ مہر و وفا میرے بعد

میر مہدی بار بار انہیں دلاسہ دیتے اور کہتے۔

غالب خستہ کے بغیر کون سے کام بند ہیں
رویئے زار زار کیا کیجیے ہائے ہائے کیوں

میر مہدی نے مرزا غالب کو سمجھایا اور کہا کہ ''حضور اب رونے کا وقت نہیں رہا۔ اب ذرا سنبھل جایئے اور ایک تفصیلی صحافتی بیان تیار کیجیے تا کہ اس کی سائیکلو اسٹائل کاپیاں پریس کانفرنس میں اخبار والوں کے حوالے کی جاسکیں۔''

پریس کانفرنس کی تیاریاں شروع ہوگئیں، مرزا غالب اور میاں مہدی دوسری دنیا سے اس دنیا میں عارضی طور پر آگئے۔ غالب دن بھر پریس کانفرنس کی تیاریوں میں مصروف رہتے اور راتوں کو اپنا صحافتی بیان لکھنے میں مگن ہوجاتے۔ مرزا غالب نے بڑے انہماک کے ساتھ ان غالب نمبروں کا مطالعہ شروع کردیا جو مختلف رسالوں نے اُن کی صدی تقاریب کے موقع پر شائع کیے تھے۔ مرزا غالب نے غالبیات کا مطالعہ یوں شروع کردیا جیسے وہ خود اپنے آپ پر ریسرچ کرنے چلے ہوں۔ کسی کو مرزا غالب کی آمد کی اطلاع نہیں دی گئی اور کسی کو یہ پتہ نہ چلا کہ مرزا غالب اُن کے درمیان یوں موجود ہیں جیسے چور کی داڑھی میں تنکا موجود ہوتا ہے۔

چاروں طرف غالب صدی تقاریب کا غلغلہ مچا ہوا تھا۔ ''یوم غالب'' ''جشنِ غالب'' ''یادِ غالب'' ''غالب ڈے'' ''غالب فیسٹیول'' ''غالب فنڈ'' ''غالب میموریل'' ''غالب بال روم ڈانس'' ''غالب کمیٹی'' ''غالب سبھا'' ''غالب

बिलआख़िर प्रेस कान्फ्रेंस तलब करने का फैसला कर लिया गया। मीर मेहदी ने मिर्ज़ा ग़ालिब को प्रेस कान्फ्रेंस के असरारो–रमूज़ से वाक़िफ़ कराया। उन्हें उन सारी ज़्यादतियों का हाल सुनाया जो एक सदी के अर्से में उन की ज़ात के साथ की गई थीं। मिर्ज़ा ग़ालिब उन ज़्यादतियों को सुनते जाते और ज़ारो–क़तार रोते जाते और उनकी ज़बान पर ये शेर था–

ग़म से मरता हूँ कि इतना नहीं दुनियाँ में कोई
कि करे ताज़ियते–मेहरो–वफ़ा मेरे बाद

मीर मेहदी बार–बार उन्हें दिलासा देते और कहते –

ग़ालिबे–ख़स्ता के बग़ैर कौन से काम बंद हैं
रोइये ज़ार–ज़ार क्या कीजिये हाय–हाय क्यों

मीर मेहदी ने मिर्ज़ा ग़ालिब को समझाया और कहा कि "हुज़ूर अब रोने का वक़्त नहीं रहा। अब ज़रा संभल जाइये और एक तफ़सीली सहाफ़ती बयान तैयार कीजिये ताकि उसकी साइक्लो स्टाइल कापियाँ प्रेस कान्फ्रेंस में अख़बार वालों के हवाले की जा सकें"।

प्रेस कान्फ्रेंस की तैयारीयाँ शुरु हो गईं, मिर्ज़ा ग़ालिब और मियाँ मेहदी दूसरी दुनिया से इस दुनिया में आरज़ी तौर पर आ गये। ग़ालिब दिन भर प्रेस कान्फ्रेंस की तैयारीयों में मसरुफ़ रहते और रातों को अपना सहाफ़ती बयान लिखने में मगन हो जाते। मिर्ज़ा ग़ालिब ने बड़े इनहमाक के साथ उन ग़ालिब नम्बरों का मुताला शुरु कर दिया जो मुख़्तलिफ़ रिसालों ने उनकी सदी तक़ारीब पर शाये[1] किए थे। मिर्ज़ा ग़ालिब ने ग़ालिबयात का मोताला यूँ शुरु कर दिया जैसे वह ख़ुद अपने आप पर रिसर्च करने चले हों। किसी को मिर्ज़ा ग़ालिब की आमद की इत्तेला नहीं दी गई और किसी को यह पता न चला कि मिर्ज़ा ग़ालिब उन के दरमियान यूँ मौजूद है जैसे चोर की दाढ़ी में तिनका मौजूद होता है।

चारों तरफ़ ग़ालिब सदी तक़रीब का ग़ुलग़ुला[2] मचा हुआ था। "यौमे–ग़ालिब" "जश्ने–ग़ालिब" "यादे–ग़ालिब" "ग़ालिब डे" ग़ालिब फ़ेस्टीवल" "ग़ालिब फ़ण्ड" ग़ालिब मेमोरियल" "ग़ालिब बॉल रुम डांस" "ग़ालिब समिति' ग़ालिब सभा' ग़ालिब

---

1. प्रकाशित 2. शोर, चर्चा

سنستھا'' غالب میلاد بھاگ'' ''غالب کار یہ کرم'' اور غالب پر درشنی'' کا اس قدر غلبہ تھا کہ غالب نے حیران ہو کر خود سے سوال کیا۔

جب کہ تجھ بن نہیں کوئی موجود

پھر یہ ہنگامہ اے خدا کیا ہے

حد ہوگئی کہ انہوں نے سڑکوں پر ایسے بورڈ بھی آویزاں دیکھے ''غالب پان شاپ'' ''غالب ہیر کٹنگ سیلون'' ''غالب اینڈ سنس'' ''غالب انجینیر نگ ورکس'' ''غالب اسٹون پالشنگ ورکس'' ''غالب کلاتھ مرچنٹ'' غالب کراکری'' وغیرہ وغیرہ۔ مرزا غالب ان ساری زیادتیوں بلکہ مظالم کا بغور جائزہ لیتے رہے اور دل میں کڑھتے رہے۔

جب مرزا کا صحافتی بیان تیار ہو گیا تو مرزا غالب نے میر مہدی کے مشورے سے پریس کانفرنس کی تاریخ مقرر کی اور ایک اخبار کے ایڈیٹر سے ملنے چلے گئے۔ اخبار کے ایڈیٹر نے پہلے تو بڑے تپاک سے ان کا استقبال کیا مگر جب مرزا غالب نے بتایا کہ وہ مرزا غالب ہیں تو اس نے فوراً اپنے نوکر کو آواز دی اور کہا ''ان صاحب کو باہر لے جاؤ۔ مجھے غالب پر ایک مقالہ لکھنا ہے، میرے پاس ایسے غیر ضروری لوگوں سے ملاقات کے لیے وقت نہیں ہے۔''

مرزا غالب نے جو ملازم کی گرفت میں آچکے تھے چیخ کر کہا۔

تمہی کہو کہ یہ انداز گفتگو کیا ہے

''صاحب یہ کہاں کا انصاف ہے کہ آپ مجھ پر تو مقالہ لکھ سکتے ہیں لیکن مجھ سے ملاقات کے لیے وقت نہیں نکال سکتے؟''

ایڈیٹر نے کہا ''صاف صاف بتائیے کہ آپ کون ہیں؟''

مرزا غالب نے میر مہدی کی طرف دیکھ کر کہا۔

پوچھتے ہیں وہ کہ غالب کون ہے

کوئی بتلاؤ کہ ہم بتلائیں کیا

ایڈیٹر بولا، ''دیکھیے حضرت، میرا وقت خراب نہ کیجیے، بتائیے کہ آپ کون ہیں؟''

संस्था'' ग़ालिब महिला विभाग'' ग़ालिब कार्यक्रम'' और ''ग़ालिब प्रदर्शनी'' का इस कदर ग़लबा था कि ग़ालिब ने हैरान होकर ख़ुद से सवाल किया–

जब कि तुझ बिन नहीं कोई मौजूद
फिर यह हंगामा ऐ ख़ुदा क्या है

हद हो गई कि उन्होंने सड़कों पर ऐसे बोर्ड भी आवेज़ाँ देखे ''ग़ालिब पान शॉप'' ग़ालिब हेयर कटिंग सैलून'' ''ग़ालिब एण्ड संस'' ग़ालिब इन्जीनियरिंग वर्क्स'' ग़ालिब स्टोन पॉलिशिंग वर्क्स'' ग़ालिब क्लाथ मार्चेंट'' ग़ालिब क्राकरी'' वग़ैरह वग़ैरह।

मिर्ज़ा ग़ालिब इन सारी ज़्यादतियों बल्कि मज़ालिम का बग़ौर जायज़ा लेते रहे और दिल में कुढ़ते रहे।

मिर्ज़ा ग़ालिब का सहाफ़ती बयान तैयार हो गया तो मिर्ज़ा ग़ालिब ने मीर मेहदी के मशवरे से प्रेस कान्फ्रेंस की तारीख़ मोकर्रर की और एक अख़बार के एडीटर से मिलने चले गये। अख़बार के एडीटर ने पहले तो बड़े तपाक से उनका इस्तकबाल किया मगर जब मिर्ज़ा ग़ालिब ने बताया कि वह मिर्ज़ा ग़ालिब हैं तो उसने फ़ौरन अपने नौकर को आवाज़ दी और कहा ''इन साहब को बाहर ले जाओ। मुझे ग़ालिब पर एक मक़ाला लिखना है, मेरे पास ऐसे ग़ैर ज़रुरी लोगों से मुलाक़ात के लिए वक़्त नहीं है''।

मिर्ज़ा ग़ालिब ने जो मुलाज़िम की गिरफ़्त में आ चुके थे चीख़ कर कहा –

तुम्ही कहो कि ये अन्दाज़े गुफ़्तगू क्या है

''साहब यह कहाँ का इन्साफ़ है कि आप मुझ पर तो मक़ाला लिख सकते हैं लेकिन मुझसे मुलाक़ात के लिए वक़्त नहीं निकाल सकते?''

एडीटर ने कहा ''साफ़–साफ़ बताइये कि आप कौन है?''

मिर्ज़ा ग़ालिब ने मीर मेहदी की तरफ़ देखकर कहा –

पूछते हैं वह कि ग़ालिब कौन है
कोई बतलाओ कि हम बतलायें क्या

एडीटर बोला, ''देखिये हज़रत, मेरा वक़्त ख़राब न कीजिये, बताइये कि आप कौन है?''

مرزا غالب بولے "میں مرزا غالب ہوں اور یہ میر مہدی مجروح ہیں۔"

ایڈیٹر نے طنز آمیز مسکراہٹ کے ساتھ کہا "آپ کا نمبر کون سا ہے؟"

غالب بولے "نمبر سے آپ کا کیا مطلب ہے؟"

ایڈیٹر نے کہا "نمبر سے مطلب یہ ہے کہ اس سے پہلے پانچ مرزا غالب میرے پاس آ چکے ہیں۔ آپ کا نمبر چھٹواں ہے۔"

مرزا غالب کا چہرہ تمتما گیا اور انہوں نے بڑی درشتگی کے ساتھ کہا: "مذاق بند کیجیے۔ میں مرزا غالب ہوں اور صد فی صد غالب ہوں، میں دوسری دنیا سے اس دنیا میں بطورِ خاص اس لیے آیا ہوں کہ اب تک میرے خلاف جو کچھ کہا گیا ہے اس کا جواب دوں اگر آپ کو یقین نہیں آتا تو آپ دیوانِ غالب کے اشعار پوچھ سکتے ہیں، مجھے اپنے سارے اشعار زبانی یاد ہیں۔ ایڈیٹر بولا "دیوانِ غالب کے سارے اشعار تو مجھے بھی یاد ہیں۔ کیا میں محض اس قصور کی پاداش میں غالب کہلاؤں گا؟"

مرزا غالب نے زور دے کر کہا "خدا کے لیے اس بات کا یقین کیجیے کہ میں مرزا غالب ہوں۔"

ایڈیٹر بولا "اگر آپ مرزا غالب ہیں بھی تو مجھ سے کیا واسطہ؟"

مرزا غالب بولے "آپ سے صرف اتنا واسطہ ہے کہ آپ غالب صدی تقاریب کے خلاف میرا بیانِ شائع کریں اور میری پریس کانفرنس میں شرکت کریں جو اگلے اتوار کو منعقد ہو رہی ہے۔"

ایڈیٹر نے کہا "معاف کیجیے، میں غالب صدی تقاریب کے خلاف آپ کا بیان اپنے اخبار میں نہیں چھاپ سکتا۔ کیوں کہ ہمارا اخبار اگر ایسا کوئی بیان شائع کرے تو غالب صدی تقاریب کمیٹی ہمیں اشتہار دینا بند کر دے گی اور ہم آپ کی خاطر کوئی خطرہ نہیں مول لینا چاہتے اور میرے لیے اگلے اتوار کی پریس کانفرنس میں شرکت کرنا اس لیے ناممکن ہے کہ اسی روز غالب اکیڈیمی کی جانب سے غالب تقاریب منائی جا رہی ہیں اور ان تقاریب کا آپ کی پریس کانفرنس سے کلیش (Clash) ہو گیا ہے۔ لہٰذا مجھے معاف کیجیے۔ میں آپ کے کلام سے قریب اور آپ سے دور رہنا چاہتا ہوں۔ یہ کہہ کر ایڈیٹر اٹھ

मिर्ज़ा ग़ालिब बोले "मैं मिर्ज़ा ग़ालिब हूँ और यह मीर मेहदी मजरुह हैं"।

एडीटर ने तन्ज़आमेज[1] मुस्कुराहट के साथ कहा "आपका नम्बर कौन सा है?"

ग़ालिब बोले "नम्बर से आपका क्या मतलब है?"

एडीटर ने कहा "नम्बर से मतलब यह है कि इस से पहले पाँच मिर्ज़ा ग़ालिब मेरे पास आ चुके हैं। आपका नम्बर छठवां है"।

मिर्ज़ा ग़ालिब का चेहरा तमतमा गया और उन्होंने बड़ी दुरुश्ती के साथ कहा, मज़ाक़ बन्द कीजिये। मैं मिर्ज़ा ग़ालिब हूँ और सद फ़ी सद ग़ालिब हूँ, मैं दूसरी दुनिया से इस दुनिया में बतौरे ख़ास इसलिये आया हूँ कि अब तक मेरे ख़िलाफ़ जो कुछ कहा गया है उसका जवाब दूँ। अगर आपको यक़ीन नहीं आता तो आप दीवाने–ग़ालिब के अशआर पूछ सकते हैं, मुझे अपने सारे अशआर ज़बानी याद हैं। एडीटर बोला "दीवाने–ग़ालिब के सारे अशआर तो मुझे भी याद हैं। क्या मैं महज़ इस क़ुसूर की पादाश में ग़ालिब कहलाउँगा?"।

मिर्ज़ा ग़ालिब ने ज़ोर देकर कहा "ख़ुदा के लिए इस बात का यक़ीन कीजिये कि मैं मिर्ज़ा ग़ालिब हूँ"।

एडीटर बोला "अगर आप मिर्ज़ा ग़ालिब हैं भी तो मुझसे क्या वास्ता?"

मिर्ज़ा ग़ालिब बोले "आप से सिर्फ़ इतना वास्ता है कि आप ग़ालिब सदी तक़रीब के ख़िलाफ़ मेरा बयान शाया करें और मेरी प्रेस कान्फ्रेंस में शिरकत करें जो अगले इतवार को मुनअक़िद हो रही है"।

एडीटर ने कहा "माफ़ कीजिये, मैं ग़ालिब सदी तक़ारीब के ख़िलाफ़ आपका बयान अपने अख़बार में नहीं छाप सकता। क्योंकि हमारा अख़बार अगर ऐसा कोई बयान शाया करे तो ग़ालिब सदी तक़ारीब कमेटी हमें इश्तेहार देना बंद कर देगी और हम आपकी ख़ातिर कोई ख़तरा नहीं मोल लेना चाहते और मेरे लिए अगले इतवार की प्रेस कान्फ्रेंस में शिरकत करना इसलिए नामुमकिन है कि उसी रोज़ ग़ालिब अकादमी की जानिब से ग़ालिब तक़ारीब मनाई जा रही हैं और उन तक़ारीब का आपकी प्रेस कान्फ्रेंस से क्लैश (Clash) हो गया है। लिहाज़ा मुझे माफ़ कीजिये। मैं आपके कलाम से क़रीब और आपसे दूर रहना चाहता हूँ। यह कहकर एडीटर उठ

1. व्यंगात्मक

کھڑا ہوا اور مرزا غالبؔ کو چھوڑ کر اپنے کمرے سے باہر چلا گیا۔

مرزا غالبؔ بہت بے آبرو ہو کر اس کوچہ سے نکلے اور اس کے بعد انہوں نے میاں میر مہدی سے کہہ دیا کہ وہ آئندہ کسی ایڈیٹر کے پاس نہیں جائیں گے۔ لہٰذا پریس کانفرنس کے سارے امور وہ خود انجام دے لیں۔

میر مہدی مجروحؔ نے کافی دوڑ دھوپ کی بلکہ دھوپ زیادہ کھائی اور دوڑ کم لگائی۔ بالآخر پریس کانفرنس کا وقت آ گیا، مرزا غالبؔ پریس کانفرنس کے دن اپنا مخصوص چغہ پہننا چاہتے تھے۔ لیکن معلوم ہوا کہ ان کا چغہ غالب صدی تقاریب کمیٹی کے قبضہ میں ہے لہٰذا انہیں اپنے یونیفارم کے بغیر ہی پریس کانفرنس میں آنا پڑا۔

پریس کانفرنس کے دن کافی چہل پہل تھی۔ انواع واقسام کے اخباروں کے پریس رپورٹرس جمع ہونے لگے۔ جب سارے رپورٹرس جمع ہو گئے تو میاں میر مہدی مجروحؔ ڈائس پر آئے اور بولے ''دوستو! آپ لوگ اپنی اپنی نشستوں پر بیٹھ جائیں، اُردو کے ممتاز شاعر مرزا غالبؔ ابھی آپ کے سامنے آئیں گے، آپ تھوڑی دیر صبر کریں۔''

اس پر اخبار ''نیوز ڈے ٹائمز'' کے نمائندے نے کہا ''آخر ہم کب تک صبر کریں۔ پریس کانفرنس کا وقت ہو چکا ہے لیکن ابھی تک آپ نے یہ نہیں بتایا کہ آج پریس کانفرنس کا مینو (Menu) کیا ہوگا۔ محض آپ کی پریس کانفرنس کے خیال سے ہم نے دوپہر کا کھانا نہیں کھایا ہے۔ لہٰذا ہمیں مرزا غالبؔ کو دکھانے سے پہلے یہ بتائیے کہ آپ نے کھانے پینے کی اشیاء کہاں سجا رکھی ہیں۔''

اس پر میاں میر مہدی مجروحؔ نے کہا ''حضرات، آپ اطمینان رکھیں کہ ہم نے ایٹ ہوم کا مناسب بندوبست کر رکھا ہے لیکن ایٹ ہوم پریس کانفرنس کے بعد ہی ہوگا ورنہ اندیشہ ہے کہ کہیں آپ لوگ ایٹ ہوم ہو کے بعد سیدھے اپنے گھروں کو روانہ ہو جائیں لہٰذا صبر کیجیے کہ صبر کا پھل میٹھا ہوتا ہے۔''

ابھی میر مہدی مجروحؔ کا بیان جاری ہی تھا کہ مرزا غالبؔ اچانک ڈائس پر نمودار ہو گئے۔ انہوں نے صحیفہ نگاروں کو بیٹھ جانے کے لیے کہا کہ اور اپنا صحافتی بیان پڑھنا شروع کر دیا۔

खड़ा हुआ और मिर्ज़ा ग़ालिब को छोड़ कर अपने कमरे से बाहर चला गया।

मिर्ज़ा ग़ालिब बहुत बेआबरु होकर इस कूचे से निकले और उसके बाद उन्होंने मियाँ मीर मेहदी से कह दिया कि वह आइंदा किसी एडीटर के पास नहीं जायेंगे। लिहाज़ा प्रेस कान्फ्रेंस के सारे उमूर[1] वह खुद अंजाम देलें।

मीर मेहदी मजरुह ने काफ़ी दौड़ धूप की बल्कि धूप ज्यादा खाई और दौड़ कम लगाई। बिलआख़िर प्रेस कान्फ्रेंस का वक़्त आ गया, मिर्ज़ा ग़ालिब प्रेस कान्फ्रेंस के दिन अपना मख़सूस चोग़ा पहनना चाहते थे। लेकिन मालूम हुआ कि उनका चोग़ा ग़ालिब सदी तक़ारीब कमेटी के क़ब्ज़े में है लिहाज़ा उन्हे अपने यूनीफ़ार्म के बग़ैर ही प्रेस कान्फ्रेंस में आना पड़ा।

प्रेस कान्फ्रेंस के दिन काफ़ी चहल पहल थी। अनवाओ–अक़्साम[2] के अख़बारों के प्रेस रिपोटर्स जमा होने लगे। जब सारे रिपोटर्स जमा हो गये तो मियाँ मीर मेहदी मजरुह डाइज़ पर आये और बोले "दोस्तो! आप लोग अपनी अपनी नशिस्तों पर बैठ जायें, उर्दू के मुमताज़ शायर मिर्ज़ा ग़ालिब अमी आपके सामने आयेंगे, आप थोड़ी देर सब्र करें"।

इस पर अख़बार "ट्यूज़ डे टाइम्स" के नुमाइन्दे ने कहा "आखिर हम कब तक सब्र करें। प्रेस कान्फ्रेंस का वक़्त हो चुका है लेकिन अभी तक आपने यह नहीं बताया कि आज प्रेस कान्फ्रेंस का मीनू (Menu) क्या होगा। महज़ आपकी प्रेस कान्फ्रेंस के ख़याल से हमने दोपहर का खाना नहीं खाया है। लिहाज़ा हमें मिर्ज़ा ग़ालिब को दिखाने से पहले यह बताइये कि आपने खाने–पीने की अशिया[3] कहाँ सजा रखी हैं"।

इस पर मियाँ मीर मेहदी मजरुह ने कहा " हज़रात, आप इत्मीनान रखें कि हम ने ऐट होम का मुनासिब बन्दोबस्त कर रखा है लेकिन ऐट होम प्रेस कान्फ्रेंस के बाद ही होगा वरना अन्देशा है कि कहीं आप लोग ऐट होम होने के बाद सीधे अपने घरों को रवाना हो जायें लिहाज़ा सब्र कीजिये कि सब्र का फल मीठा होता है"।

अमी मीर मेहदी मजरुह का बयान जारी ही था कि मिर्ज़ा ग़ालिब अचानक डाइज़ पर नमूदार हो गये। उन्हों ने सहीफ़ा निगारों को बैठ जाने के लिए कहा और अपना सहाफ़ती बयान पढ़ना शुरु कर दिया।

1. काम 2. तरह–तरह 3. चीज़ें

"ساتھیو! میں مرزا غالبؔ ہوں، اسد اللہ خاں غالبؔ، میں وہی غالبؔ ہوں، جس نے "دیوانِ غالبؔ" لکھا اور جو قرض کی مے پیتا تھا اور جس کے اشعار آپ یوں استعمال کرتے ہیں جیسے یہ آپ کے ذاتی اشعار ہوں۔ میرا انتقال ایک سو سال پہلے ہوا تھا۔ جب میرا انتقال ہوا تھا تو مجھے یہ اندیشہ نہیں تھا کہ میرے بعد آپ لوگ میری ایسی درگت بنائیں گے کہ میرا جغرافیہ ہی بگڑ جائے گا۔ میں نے احتیاطاً اپنی زندگی میں ہی عرض کر دیا تھا ع

بارے آرام سے ہیں اہلِ جفا میرے بعد

مگر بعد میں پتہ چلا کہ اہلِ جفا کی اصل سرگرمیاں تو میرے مرنے کے بعد ہی شروع ہوئی ہیں۔ میرے انتقال کے بعد لوگوں نے خواہ مخواہ میرے حالاتِ زندگی میں دلچسپی لینی شروع کی۔ یقین مانیے کہ اگر لوگ میرے جیتے جی میرے حالاتِ زندگی میں دلچسپی لیتے تو شاید میں آج تک بھی نہ مرتا اور اب تک میرے کئی دیوان شائع ہو چکے ہوتے۔ مگر جن دنوں میں قرض خواہوں سے منہ چھپاتا پھرتا تھا۔ اپنی پنشن کے اجراء کے لیے در بدر کی ٹھوکریں کھایا کرتا تھا، ان دنوں کسی نے پلٹ کر بھی یہ پوچھنے کی کوشش نہیں کی کہ میرے منہ میں کتنے دانت ہیں۔ جو لوگ میرے اشعار پر ناک بھوں چڑھایا کرتے تھے وہ آج میرے اشعار کی تعریف کرتے ہیں تو یوں معلوم ہوتا ہے جیسے وہ پاگل ہو گئے ہوں۔ میں نے بڑی کسمپرسی کی حالت میں اپنی عمر کا آخری حصہ گزارا۔ مگر آج جب جگہ جگہ "غالبؔ میموریل فنڈ" قائم کیے جا رہے ہیں تو مجھے یہ پوچھنے کا حق پہنچتا ہے کہ ع

حیراں ہوں پھر "مشاہرہ" ہے کس حساب میں

میں بہت ادب کے ساتھ یہ پوچھنا چاہتا ہوں کہ آپ لوگ میرے پیچھے ہاتھ دھو کے کیوں پڑے ہوئے ہیں۔ اگر آپ کو کسی کی "صدی تقاریب" ہی منانا مقصود تھا تو اس کے لیے مومنؔ کیا برے تھے، ذوقؔ میں کیا برائی تھی اور پھر اگلے زمانے میں ایک میرؔ بھی تو تھے۔ ان سارے شعرا کی موجودگی میں صدی تقاریب کے انعقاد کے لیے میرے انتخاب کی کیا وجہ ہے، مجھے آپ لوگوں کی نیت پر شبہ ہے۔ آپ نے میرے چھوٹے سے دیوان اور چند نجی خطوط کو اتنی اہمیت دے ڈالی ہے کہ میرے دیوان کا حلیہ بگڑ گیا ہے۔

साथियो! मैं मिर्ज़ा ग़ालिब हूँ, असदुल्लाह ख़ाँ ग़ालिब, मैं वही ग़ालिब हूँ जिसने "दीवाने ग़ालिब" लिखा और जो कर्ज़ की मय पीता था और जिस के अशआर आप यूँ इस्तेमाल करते है जैसे यह आपके ज़ाती अशआर हों। मेरा इन्तक़ाल एक सौ साल पहले हुआ था। जब मेरा इन्तकाल हुआ था तो मुझे अन्देशा नहीं था कि मेरे बाद आप लोग मेरी ऐसी दुर्गत बनायेंगे कि मेरा जुग़राफ़िया ही बिगड़ जायेगा। मैं ने एहतयातन अपनी ज़िन्दगी में ही अर्ज़ कर दिया था –

बारे आराम से हैं अहले जफ़ा मेरे बाद

मगर बाद में पता चला कि अहले जफ़ा की अस्ल सरगर्मियाँ तो मेरे मरने के बाद ही शुरु हुई है। मेरे इन्तक़ाल के बाद लोगों ने ख़्वाहमख़्वाह मेरे हालाते–ज़िन्दगी में दिलचस्पी लेनी शुरु की। यक़ीन मानिये कि अगर लोग मेरे जीते जी मेरे हालाते–ज़िन्दगी में दिलचस्पी लेते तो शायद मैं आज भी न मरता और अब तक मेरे कई दीवान शाया हो चुके होते। मगर जिन दिनों मैं क़र्ज़–ख़ाहों से मुँह छुपाता फिरता था, अपनी पेन्शन के इजरा के लिये दर बदर की ठोकरें खाया करता था, उन दिनों किसी ने पलट कर भी यह पूछने की कोशिश नहीं की कि मेरे मुँह में कितने दाँत हैं। जो लोग मेरे अशआर पर नाक भौं चढ़ाया करते थे वह आज मेरे अशआर की तारीफ़ करते हैं तो यूँ मालूम होता है जैसे वह पागल हो गये हों। मैंने बड़ी कसमापुर्सी की हालत में अपनी उम्र का आख़री हिस्सा गुज़ारा। मगर आज जब जगह जगह "ग़ालिब मेमोरियल फ़ण्ड" क़ायम किये जा रहे है तो मुझे यह पूछने का हक़ पहुँचता है कि –

हैराँ हूँ फिर "मुशाहेरा[1]" है किस हिसाब में

मैं बहुत अदब के साथ यह पूछना चाहता हूँ कि आप लोग मेरे पीछे हाथ धो के क्यों पड़े हुए है। अगर आपको किसी की "सदी तक़ारीब" ही मनाना मक़सूद था तो उसके लिए क्या मोमिन बुरे थे, ज़ौक़ में क्या बुराई थी और फ़िर अगले ज़माने में एक मीर भी तो थे। इन सारे शोअरा[2] की मौजूदगी में सदी तक़ारीब के इन्एक़ाद के लिए मेरे इन्तख़ाब की क्या वजह है, मुझे आप लोगों की नीयत पर शुबहा है। आपने मेरे छोटे से दीवान और चन्द निजी ख़तूत को इतनी अहमीयत दे डाली कि मेरे दीवान का हुलिया बिगड़ गया है।

1. तनख़ाह, वज़ीफ़ा 2. शायर का बहुबचन

آپ نے میری اجازت کے بغیر ''غالبیات'' کا ایک شعبہ قائم کر رکھا ہے۔ بحیثیت غالب میں نے غالبیات کا گہرا مطالعہ کیا ہے اور اس نتیجہ پر پہنچا ہوں کہ آپ لوگوں نے اب تک مجھ پر اتنی ریسرچ کی ہے کہ میں اکیلا شخص ریسرچ کے اس بھاری بوجھ کو برداشت نہیں کر سکتا۔ اتنی ریسرچ کے لیے تو پندرہ بیس غالبوں کی ضرورت تھی۔ میں نے غالبیات کے مطالعہ کے دوران ایسے مضامین بھی پڑھے ہیں جو ''عالم غیب'' سے میرے خیال میں بھی نہ آسکتے تھے۔ مثال کے طور پر چند مضامین کے عنوانات ملاحظہ فرمائیے: ''غالب اور ایٹمی دور'' ''غالب اور منصوبہ بندی'' ''غالب کی شاعری میں پنچایتی عنصر'' ''غالب کی شاعری پر غالب کا اثر'' ''اقبال غالب کے آئینے میں'' ''غالب کی شراب نوشی ایک سنگِ میل'' ''فلمی صنعت پر غالب کے احسانات'' ''غالب اور کفایت شعاری'' ''ہماری معیشت غالب کے کلام کے آئینے میں'' ''غالب اور فیملی پلاننگ''۔

حضرات، اگر مجھے معلوم ہوتا کہ میری شاعری کا تعلق فیملی پلاننگ سے پیدا کیا جائے گا تو سچ مچ شاعری کے معاملے میں بھی ''فیملی پلاننگ'' پر عمل کرتا اور دو یا تین شعر بس کے اصول پر کاربند رہتا۔ غالبیات کے مطالعہ کے دوران مجھے بار بار یہ احساس ہوا کہ آپ جس غالب کا ذکر کر رہے ہیں وہ شاید میں نہیں ہوں لیکن جب میں نے اپنا نام اپنی ولدیت کے ساتھ پڑھا تو یقین کرنا پڑا کہ وہ غالب میں ہی ہوں جس کی مٹی پلید کی جا رہی ہے۔ حد ہوگئی کہ ایک ماہر غالبیات نے میری شاعری کے دو دیوان شائع کیے ہیں اور ان کے نام علی الترتیب ''دیوانِ غالب'' اور ''دیوانِ اسد'' رکھے ہیں۔ ''دیوانِ غالب'' میں غالب والے تخلص کے اشعار موجود ہیں اور ''دیوانِ اسد'' میں وہ غزلیں ہیں جن میں میرا تخلص اسد ہے۔ آپ ہی بتائیے کہ اس تکلف کی کیا ضرورت تھی۔

ماہرینِ غالبیات کا تو ذکر ہی چھوڑیے۔ جب سے اسکولوں کے تعلیمی نصاب میں میرے کلام کو شامل کیا گیا ہے اس وقت سے مجھے یہ گمان ہونے لگا ہے ع

تمہارے شعر ہیں اب صرف دل لگی کے اسد

میں نے ایک طالب علم کی جوابی بیاض دیکھی تھی جس میں اس نے میرے ''حالاتِ زندگی'' کچھ اس طرح بیان کیے تھے:

आपने मेरी इजाज़त के बग़ैर "ग़ालिबयात" का एक शोबा क़ायम कर रखा है। बहैसीयत ग़ालिब मैंने ग़ालिबयात का गहरा मुतालेआ किया है और इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि आप लोगों ने अब तक मुझ पर इतनी रिसर्च की है कि मैं अकेला शख़्स रिसर्च के इस भारी बोझ को बर्दाश्त नहीं कर सकता। इतनी रिसर्च के लिए तो पंदरह बीस ग़ालिबों की ज़रुरत थी। मैंने ग़ालिबयात के मोतालए के दौरान ऐसे मज़ामीन भी पढ़े हैं जो "आलमे–ग़ैब" से मेरे ख़याल में भी न आ सकते थे। मिसाल के तौर पर चन्द मज़ामीन के उनवानात मुलाहिज़ा फ़रमाइये: ग़ालिब और एटमी दौर" "ग़ालिब और मंसूबा बंदी" ग़ालिब की शायरी में पंचायती उन्सुर" " ग़ालिब की शायरी पर ग़ालिब का असर" "इक़बाल ग़ालिब के आइने में" "ग़ालिब की शराब नोशी एक संगे–मील" "फ़िल्मी सनअत पर ग़ालिब के एहसानात" "ग़ालिब और किफ़ायत–शआरी" "हमारी मईशत[1] ग़ालिब के कलाम के आइने में" ग़ालिब और फ़ैमिली प्लानिंग"।

हज़रात, अगर मुझे मालूम होता कि मेरी शायरी का तअल्लुक़ फ़ैमिली प्लानिंग से पैदा किया जायेगा तो सचमुच शायरी के मामले में भी "फ़ैमिली प्लानिंग" पर अमल करता और दो या तीन शेर बस, के उसूल पर कार बन्द रहता। ग़ालिबयात के मोतालए के दौरान मुझे बार–बार यह एहसास हुआ कि आप जिस ग़ालिब का ज़िक्र कर रहे हैं वह शायद मैं नहीं हूँ लेकिन जब मैंने अपना नाम अपनी वलदियत के साथ पढ़ा तो यक़ीन करना पड़ा कि वह ग़ालिब मैं ही हूँ जिसकी मिट्टी पलीद की जा रही है। हद हो गई कि एक माहिरे–ग़ालिबयात ने मेरी शायरी के दो दीवान शाया किये हैं और उन के नाम अलतरतीब[2] "दीवाने–ग़ालिब" और "दीवाने–असद" रखे हैं। "दीवाने–ग़ालिब" में ग़ालिब वाले तख़ल्लुस के अशआर मौजूद हैं और "दीवाने–असद" में वह ग़ज़लें हैं जिन में मेरा तख़ल्लुस असद है। आप ही बताइये इस तकल्लुफ़ की क्या ज़रुरत थी।

माहेरीने–ग़ालिबयात का तो ज़िक्र ही छोड़िये। जब स्कूलों के तालीमी निसाब में मेरे कलाम को शामिल किया गया है उस वक़्त से मुझे यह गुमान होने लगा है –

तुम्हारे शेर हैं अब सिर्फ़ दिल लगी के 'असद'

मैंने एक तालिबे–इल्म की जवाबी बियाज़ देखी थी जिस में उसने मेरे "हालाते–ज़िन्दगी" कुछ इस तरह बयान किये थे:

---

1. आर्थिक स्थिति 2. क्रमशः

''غالبؔ آگرہ کے تاج محل میں پیدا ہوئے۔ بہت دنوں تک تاج محل کی سیر کرتے رہے۔ جب خوب سیر و تفریح کر چکے تو انہیں ایک شریف آدمی کی طرح فکر معاش لاحق ہوگئی۔ چوں کہ آگرہ میں رہ کر فکر معاش کرنا بے سود تھا۔ اسی لیے وہ آگرہ سے نکل گئے اور بلا ٹکٹ سفر کی صعوبتیں جھیلتے ہوئے حیدرآباد پہنچے۔ یہاں انہوں نے عثمانیہ یونیورسٹی سے ڈاکٹریٹ کی ڈگری حاصل کی اور یہیں انگریزی کے اُستاد مقرر ہوئے۔ چوں کہ غالبؔ کو اُردو شاعری سے بہت دلچسپی تھی اسی لیے وہ بات بات پر شعر کہتے تھے۔ وہ اُردو کے واحد شاعر ہیں جنھوں نے ازار بند کی مدد سے شعر کہے۔ ہر غزل کے لیے ایک نیا ازار بند استعمال کرتے تھے اور جیسے ہی کوئی شعر ہوتا تھا فوراً ازار بند میں گرہ لگا دیتے تھے۔ شعروں اور ازار بند میں گرہ لگانا اُن کا محبوب مشغلہ تھا۔ غالبؔ شراب بہت شوق سے پیتے تھے اور دوسروں کو پینے کا کوئی موقع ہی عطا نہیں کرتے تھے۔ اسی لیے ان کے بہت سے دشمن پیدا ہوگئے۔ انہوں نے غالبؔ کے خلاف سازش کی اور بالآخر غالبؔ کو دہلی واپس ہو جانا پڑا۔''

حضرات! ان حالاتِ زندگی کو پڑھ کر میری کیا حالت نہ ہوئی ہوگی آپ خود اندازہ لگا سکتے ہیں۔ اگر کوئی آپ کے حالاتِ زندگی اس طرح لکھتا تو آپ کے دل پر کیا نہ گزرتی۔

دوستو! میں نے ''غالبؔ صدی تقاریب'' کا حال تفصیل سے پڑھا ہے۔ ان تقاریب میں ملک کے ایسے سیاسی لیڈروں نے بھی حصہ لیا ہے جو میرے نام اور کام سے قطعاً واقف نہ تھے۔ کسی نے مجھے ''پرجا سوشلسٹ'' ثابت کرنے کی کوشش کی ہے تو کسی نے کہا کہ غالبؔ کانگریس کے حامی تھے۔ اس سے بڑھ کر اور کیا ذلت ہوسکتی ہے کہ ایک لیڈر نے میرا تعلق ''سوتنترا پارٹی'' سے پیدا کرنے کی کوشش کی تھی۔ میں اس سیاسی لیڈر کے بارے میں بھی سُن چکا ہوں جو میری صدی تقاریب کے افتتاح کے لیے آیا تھا اور بار بار لوگوں سے پوچھ رہا تھا کہ ''گالبؔ صاحب کہاں ہیں، اُن کے بغیر یہ اُدگھاٹن کیوں کر ہوسکے گا؟'' ان لیڈروں نے لوگوں کو مشورہ دیا کہ وہ میرے نقشِ قدم پر چلیں۔ انہیں یہ تک نہیں معلوم کہ میرے نقشِ قدم پر چل کر آدمی صرف مقروض ہی بن سکتا ہے۔

ग़ालिब आगरा के ताज महल में पैदा हुए। बहुत दिनों तक ताज महल की सैर करते रहे। जब ख़ूब सैरो–तफ़रीह कर चुके तो उन्हें एक शरीफ़ आदमी की तरह फ़िक्रे–मआश लाहक़ हो गई। चूँकि आगरा में रहकर फ़िक्रे–मआश करना बेसूद था। इसी लिए वह आगरा से निकल गये और बिला टिकट सफ़र की सऊबत[1] झेलते हुए हैदराबाद पहुँचे। यहाँ उन्होंने उस्मानिया यूनिवर्सटी से डाक्ट्रेट की डिग्री हासिल की और यहीं अंग्रेज़ी के उस्ताद मुक़र्रर हुए। चूँकि ग़ालिब को उर्दू शायरी से बहुत दिलचस्पी थी इसीलिए वह बात–बात पर शेर कहते थे। वह उर्दू के वाहिद शायर हैं जिन्होंने इज़ारबंद[2] की मदद से शेर कहे। हर ग़ज़ल के लिए एक नया इज़ारबंद इस्तेमाल करते थे और जैसे ही कोई शेर होता फ़ौरन इज़ारबंद में गिरह लगा देते थे। शेरों और इज़ारबंद में गिरह लगाना उनका महबूब मशग़ला था। ग़ालिब शराब बहुत शौक़ से पीते थे और दूसरों को पीने का कोई मौक़ा ही अता नहीं करते थे। इसीलिए उनके बहुत से दुश्मन पैदा हो गए। उन्होंने ग़ालिब के ख़िलाफ़ साज़िश की और बिलआख़िर ग़ालिब को दिल्ली वापिस हो जाना पड़ा"।

हज़रात! इन हालाते–ज़िन्दगी को पढ़कर मेरी क्या हालत न हुई होगी आप ख़ुद अन्दाज़ा लगा सकते है। अगर कोई आपके हालाते–ज़िन्दगी इस तरह लिखता तो आप के दिल पर क्या न गुज़रती।

दोस्तो! मैंने "ग़ालिब सदी तक़ारीब" का हाल तफ़सील से पढ़ा है। इन तक़ारीब में मुल्क के ऐसे सियासी लीडरों ने भी हिस्सा लिया जो मेरे नाम और काम से क़तअन वाक़िफ़ न थे। किसी ने मुझे "प्रजा सोशलिस्ट" साबित करने की कोशिश की है तो किसी ने कहा कि ग़ालिब कांग्रेस के हामी थे। इससे बढ़कर और क्या ज़िल्लत हो सकती है कि एक लीडर ने मेरा ताअल्लुक़ "स्वतंत्र पार्टी" से पैदा करने की कोशिश की थी। मैं उस सियासी लीडर के बारे में भी सुन चुका हूँ जो मेरी सदी तक़ारीब के इफ़्तताह[1] के लिए आया था और बारहा लोगों से पूछ रहा था कि "ग़ालिब साहब कहाँ हैं, उनके बग़ैर यह उद्घाटन क्यूँकर हो सकेगा?" इन लीडरों ने लोगों को मश्वरा दिया कि वह मेरे नक़्शे क़दम पर चलें। उन्हें यह तक नहीं मालूम कि मेरे नक़्शे क़दम पर चलकर आदमी सिर्फ़ मक़रुज़ ही बन सकता है।

1. परेशानियाँ 2. कमरबंद 1. उद्घाटन

میں نے یہاں تک سنا ہے کہ سیاسی انتخابات میں لیڈروں نے میرے نام پر ووٹ حاصل کیے اور یہ کیسی بدقسمتی کہ میں خود اپنے نام سے کوئی فائدہ نہ اُٹھا سکا۔ فلمی صنعت نے بھی مجھے نہ بخشا اور میری زندگی کو کچھ اس طرح فلمایا کہ یہ فلمیں ''باکس آفس ہٹ'' ہو گئیں۔ ایسے گھٹیا مکالمے جو میں زندگی بھر اپنی زبان سے ادا نہ کر سکا وہ میری زبان سے کہلوائے گئے۔ میری بیوی کو فلموں میں اس قدر حسین دکھایا گیا کہ اگر وہ سچ مچ اتنی ہی حسین ہوتی تو میرے حالاتِ زندگی مختلف ہوتے۔ قوالوں نے میری غزلوں کا قتلِ عام کیا۔ مجھے گلی گلی رُسوا کیا گیا اور میں ضبط کرتا رہا۔ مگر اب پانی سر سے اُونچا ہو گیا ہے، اب تک میری جو رُسوائی ہوئی ہے اس کی تلافی ہونی چاہیے ورنہ میں ازالۂ حیثیت عرفی کا مقدمہ دائر کر دوں گا۔''

مرزا غالبؔ نے اپنا صحافتی بیان ختم کیا اور نڈھال ہو کر کرسی پر گر گئے۔ میاں مہدی مجروحؔ نے فوراً انہیں پانی پلایا اور پنکھا جھلنے لگے۔ جب مرزا غالبؔ کو ہوش آیا تو میر مہدی نے اخباری نمائندوں سے کہا کہ وہ اگر کوئی سوال کرنا چاہتے ہوں تو کر سکتے ہیں۔ اخباری نمائندوں نے جو پہلے ہی سے اس موقع کی تاک میں بیٹھے ہوئے تھے مرزا غالب پر سوالات کی بوچھار کر دی۔

ایک صحافی نے پوچھا ''ابر کیا چیز ہے ہوا کیا ہے؟''
دوسرے صحافی نے پوچھا ''کعبہ کس منہ سے جاؤ گے غالبؔ؟''
تیسرے صحافی نے پوچھا ''نقش فریادی ہے کس کی شوخیٔ تحریر کا''
چوتھے صحافی نے پوچھا ''آہ کا کس نے اثر دیکھا ہے؟''
پانچویں صحافی نے پوچھا ''نیند کیوں رات بھر نہیں آتی؟''
چھٹے نے پوچھا ''موت سے پہلے آدمی غم سے نجات پائے کیوں؟''
مرزا غالب نے اچانک اتنے سارے سوالات کو سُن کر کہا:۔
آتا ہے ابھی دیکھیے کیا کیا میرے آگے

''دوستو! مجھ سے آسان سوالات پوچھیے، آپ مجھ سے ایسے سوالات کیوں پوچھتے ہیں جن کے جوابات میں خود اپنی زندگی میں دے نہ سکا۔ میرے ہی سوالوں کے ذریعہ مجھے

मैंने यहाँ तक सुना है कि सियासी इन्तख़ाबात में लीडरों ने मेरे नाम पर वोट हासिल किये और यह कैसी बदकिस्मती है कि मैं ख़ुद अपने नाम से कोई फ़ायदा न उठा सका। फ़िल्मी सनअत ने भी मुझे न बख़्शा और मेरी ज़िन्दगी को कुछ इस तरह फ़िल्माया कि ये फ़िल्में "बाक्स ऑफ़िस हिट" हो गईं। ऐसे घटिया मोकालमे जो मैं ज़िन्दगी भर अपनी ज़बान से अदा न कर सका वह मेरी ज़बान से कहलवाये गये। मेरी बीवी को फ़िल्मों में इस क़दर हसीन दिखाया गया है कि अगर वह सचमुच इतनी हसीन होती तो मेरे हालाते–ज़िन्दगी मुख़्तलिफ़ होते। क़व्वालों ने मेरी ग़ज़लों का क़त्ले आम किया। मुझे गली–गली रुसवा किया गया और मैं ज़ब्त करता रहा। मगर अब पानी सर से ऊँचा हो गया है, अब तक मेरी जो रुसवाई हुई है उसकी तलाफ़ी होनी चाहिये वरना मैं इज़ालए–हैसियते–उरफ़ी[1] का मुक़दमा दायर करूँगा।"

मिर्ज़ा ग़ालिब ने अपना सहाफ़ती बयान ख़त्म किया और निढाल होकर कुर्सी पर गिर गये। मियाँ मेहदी मजरुह ने फ़ौरन उन्हें पानी पिलाया और पंखा झलने लगे। जब मिर्ज़ा ग़ालिब को होश आया तो मीर मेहदी ने अख़बारी नुमाइन्दों से कहा कि वह अगर कोई सवाल करना चाहते हों तो कर सकते हैं। अख़बारी नुमाइन्दों ने जो पहले ही से इस मौक़े की ताक में बैठे हुए थे मिर्ज़ा ग़ालिब पर सवालात की बौछार कर दी।

एक सहाफ़ी ने पूछा "अब्र क्या चीज़ है हवा क्या है?"

दूसरे सहाफ़ी ने पूछा "काबे किस मुँह को जाओगे ग़ालिब?"

तीसरे सहाफ़ी ने पूछा "नक़्श फ़रयादी है किस की शोख़ीये तहरीर का?"

चौथे सहाफ़ी ने पूछा "आह का किसने असर देखा है?"

छठे ने पूछा "मौत से पहले आदमी ग़म से निजात पाये क्यों?"

मिर्ज़ा ग़ालिब ने अचानक इतने सारे सवालात को सुनकर कहा: –

आता है अभी देखिये क्या–क्या मेरे आगे

"दोस्तो! मुझसे आसान सवालात पूछिये, आप मुझसे ऐसे सवालात क्यों पूछते हैं जिनके जवाबात मैं ख़ुद अपनी ज़िन्दगी में दे न सका। मेरे ही सवालों के ज़रिये मुझे लाजवाब करने की साज़िश अच्छी नहीं।"

1. पारम्परिक हैसियत को ख़त्म करना

لاجواب کرنے کی سازش اچھی نہیں۔"

اس پریس کانفرنس میں تھوڑی دیر سکتہ طاری رہا، پھر ایک صحافی نے اُٹھ کر پوچھا:

"مسٹر غالب! جدید شاعری کے بارے میں آپ کا کیا خیال ہے؟"

غالب نے کہا "جناب والا، آپ جسے جدید شاعری کہتے ہیں وہ اصل میں کافی قدیم شاعری ہے۔ یہ اس وقت کی شاعری ہے جب انسان کو لکھنا پڑھنا نہیں آتا تھا اور وہ ابھی علمِ عروض کی باریکیوں سے واقف نہ ہوا تھا۔ لہٰذا جدید شاعری نہ کہیے بلکہ قدیم شاعری کہیے۔ جدید شاعری تو وہ ہے جو میں نے کی ہے۔"

اس کے بعد ایک اور صحافی نے پوچھا "محکمہ ڈاک نے آپ کے جو یادگاری ٹکٹ جاری کیے ہیں ان کے بارے میں آپ کا کیا خیال ہے؟"

مرزا غالب بولے "ٹکٹ تو بہت اچھے ہیں مگر مجھے یہ شکایت ہے کہ ڈاک والے ان ٹکٹوں پر بہت زور سے مہر لگاتے جاتے ہیں اور اس کے بعد ان ٹکٹوں میں "یادگار" نام کی کوئی چیز باقی نہیں رہتی۔"

تھوڑی دیر پھر خاموشی رہی۔ اتنے میں اچانک ایک نوجوان صحافی نے اُٹھ کر پوچھا "مسٹر غالب! سچ سچ بتائیے کہ اس پریس کانفرنس کے انعقاد کا مقصد کیا ہے؟"

غالب نے کچھ دیر سوچ کر کہا "بھئی! سچ بات تو یہ ہے کہ اس پریس کانفرنس کے ذریعہ اس رقم کا حساب کتاب پوچھنا چاہتا ہوں جو "غالب میموریل فنڈ" کے کھاتے میں جمع ہوئی ہے۔ بحیثیت غالب اس رقم پر میرا حق ہے، لہٰذا مجھے یہ رقم ملنی چاہیے اور میں اسے حاصل کر کے ہی رہوں گا۔"

اس پر ایک صحافی نے دیگر صحافیوں کو مخاطب کر کے کہا "بھائیو! مجھے تو یہ کوئی دھاندلی نظر آرہی ہے۔ اصل میں یہ شخص غالب کا روپ دھارن کر کے پیسے بٹورنا چاہتا ہے۔"

اچانک کسی نے آواز لگائی "پکڑو اسے۔ کوئی اُچکا نظر آتا ہے، جانے نہ پائے۔ اسے پولیس کے حوالے کردو۔"

इस प्रेस कान्फ्रेंस में थोड़ी देर सकता तारी रहा, फिर एक सहाफ़ी ने उठकर पूछाः
"मिस्टर ग़ालिब! जदीद शायरी के बारे में आपका क्या ख़याल है?"

ग़ालिब ने कहा "जनाबे-वाला, आप जिसे जदीद शायरी कहते हैं वह असल में काफ़ी क़दीम शायरी है। यह उस वक़्त की शायरी है जब ̣ सान को लिखना पढ़ना नहीं आता था और वह अभी इल्मे-अरुज़ की बारीक़ियों से वाक़िफ़ न हुआ था। लिहाज़ा जदीद शायरी न कहिये बल्कि क़दीम शायरी कहिये। जदीद शायरी तो वह है जो मैंने की है।"

उसके बाद एक सहाफ़ी ने पूछा "मोहकमए-डाक ने आप के जो यादगारी टिकट जारी किये हैं उनके बारे में आपका क्या ख़याल है?"

मिर्ज़ा ग़ालिब बोले "टिकट तो बहुत अच्छे हैं मगर मुझे यह शिकायत है कि डाक वाले उन टिकटों पर बहुत ज़ोर से मोहर लगाते जाते हैं और इसके बाद उन टिकटों में "यादगार" नाम की कोई चीज़ बाक़ी नहीं रहती।"

थोड़ी देर फिर ख़ामोशी रही। इतने में अचानक एक नौजवान सहाफ़ी ने उठ कर पूछा "मिस्टर ग़ालिब! सच-सच बताइये कि इस प्रेस कान्फ्रेंस के इनएक़ाद का मक़्सद क्या है?"

ग़ालिब ने कुछ देर सोच कर कहा "भई! सच बात तो यह है कि इस प्रेस कान्फ्रेंस के ज़रिये उस रक़म का हिसाब-किताब पूछना चाहता हूँ जो "ग़ालिब मेमोरियल फण्ड" के खाते में जमा हुई है। बहैसियत ग़ालिब इस रक़म पर मेरा हक़ है, लिहाज़ा मुझे यह रक़म मिलनी चाहिये और मैं उसे हासिल करके ही रहूँगा।"

इस पर एक सहाफ़ी ने दीगर सहाफ़ियों को मुख़तिब करके कहा "भाइयो! मुझे तो ये कोई धांधली नज़र आ रही है। असल में यह शख़्स ग़ालिब का रुप धारन करके पैसा बटोरना चाहता है।"

अचानक किसी ने आवाज़ लगाई "पकड़ो इसे। कोई उचक्का नज़र आता है, जाने न पाये। इसे पुलिस के हवाले कर दो।"

پریس کانفرنس میں اچانک بھگدڑ مچ گئی اور مرزا غالب میر مجروح کے ساتھ فرار ہوگئے۔ پریس کانفرنس خود بخود ختم ہوگئی۔ البتہ دُوسرے دن اخباروں میں اسی قسم کی سُرخیاں چھپیں:

''مرزا غالب کا روپ اختیار کر کے عوام کو دھوکہ دینے کی کوشش۔''

''نقلی مرزا غالب کے خطرناک عزائم کو ناکام بنادیا گیا۔''

''عوام دھوکہ بازوں سے خبردار رہیں۔ غالب صدی تقاریب کمیٹی کا انتباہ۔''

لوگوں نے بہت تلاش کیا مگر پھر کہیں ان غالب صاحب کا پتہ نہ چل سکا جو میاں میر مہدی مجروح کے ہمراہ اپنے دشمنوں کا منھ توڑ جواب دینے کے لیے دوسری دنیا سے اس دنیا میں آئے تھے۔ پتہ نہیں وہ اصلی تھے یا نقلی۔ واللہ اعلم بالصواب۔

• • • • •

प्रेस कान्फ्रेंस में अचानक भगदड़ मच गई और मिर्ज़ा ग़ालिब मीर मजरुह के साथ फ़रार हो गये। प्रेस कान्फ्रेंस खुद बखुद ख़त्म हो गई। अलबत्ता दूसरे दिन अख़बारों में इसी किस्म की सुर्ख़ियाँ छपीं –

"मिर्ज़ा ग़ालिब का रुप अख़्तियार करके अवाम को धोका देने की कोशिश।"

नक़ली मिर्ज़ा ग़ालिब के ख़तरनाक अज़ाएम को नाकाम बना दिया गया।"

"आवाम धोखे बाज़ों से ख़बरदार रहें। ग़ालिब सदी तक़रीब कमेटी का इन्तबाह।"

लोगों ने बहुत तलाश किया मगर फिर कहीं उन ग़ालिब साहब का पता न चल सका जो मियाँ मीर मेहदी मजरुह के हमराह अपने दुश्मनों का मुंहतोड़ जावाब देने के लिए दूसरी दुनिया से इस दुनिया में आये थे। पता नहीं वह असली थे या नक़ली। वल्लाहोआलम बिस्सवाब[1]।

• • • • •

1. ईश्वर ही बेहतर जानता है

دلیپ سنگھ

خالی جگہ کو پُر کرو

کچھ روز پہلے جب میں نے اخباروں میں چرنجی لال کی موت کی خبر پڑھی تو مجھے بے حد دُکھ ہوا۔ ویسے چرنجی لال کی موت کوئی ایسا حادثہ نہیں تھا جس سے کسی کو دُکھ ہو۔ مرتے وقت وہ پنچانوے سال کا تھا اور میرا خیال ہے پنچانوے سال خاصی عمر ہوتی ہے۔ بہرحال موت تو آنی ہی تھی۔ کوئی آبِ حیات تو پی نہیں رکھا تھا اس نے۔ پھر چرنجی لال نے اپنی زندگی میں بہتیرے تماشے دیکھے اور کیے تھے۔ جب گاندھی جی نے آندولن چلایا کہ ہندوستانی بدیشی کپڑا نہیں پہنیں گے تو چرنجی لال نے بھی اپنا پندرہ سال پرانا کوٹ (جو اُسے اپنے دادا سے ورثے میں ملا تھا) نذرِ آتش کر دیا تھا۔

اُسے ۱۹۴۲ء کے آندولن میں ایک لاٹھی بھی لگی تھی جس کی وجہ سے اس کی چھاتی پر زخم کا ایک نشان بن گیا تھا۔ آزادی کے بعد وہ پُرانا جلایا ہوا کوٹ اور چھاتی پر بنا ہوا لاٹھی کا نشان اس کی روزی روٹی کا سہارا بن گیا۔ وہ نشان دِکھا دِکھا کر اُس نے ایک دُکان، ایک کوٹھی اور کئی بار اسکوٹر اور کاریں الاٹ کروائیں۔ جس پولیس کے سپاہی نے اُسے لاٹھی ماری تھی، اُس بیچارے کو کیا معلوم تھا کہ وہ چرنجی لال کو لاٹھی نہیں مار رہا، اس کی

दिलीप सिंह

ख़ाली जगह को पुर[1] करो

कुछ रोज़ पहले जब मैंने अख़बारों में चिरंजी लाल की मौत की ख़बर पढ़ी तो मुझे बेहद दुखः हुआ। वैसे चिरंजी लाल की मौत कोई ऐसा हादसा नहीं था जिससे किसी को दुखः हो। मरते वक़्त वह पंचानवे साल का था और मेरा ख़याल है पंचानवे साल ख़ासी उम्र होती है। बहर हाल मौत तो आनी ही थी। कोई आबे–हयात तो पी नहीं रखा था उसने। फिर चिरंजी लाल ने अपनी ज़िंदगी में बहुतेरे तमाशे देखे और किये थे। जब गांधी जी ने आन्दोलन चलाया कि हिन्दुस्तानी विदेशी कपड़ा नहीं पहनेंगे तो चिरंजी लाल ने भी अपना पंद्रह साल पुराना कोट (जो उसे अपने दादा से विरसे में मिला था) नज़रे–आतिश[2] कर दिया था।

उसे 1942 ई. के आन्दोलन में एक लाठी भी लगी थी जिसकी वजह से उसकी छाती पर ज़ख्म का एक निशान बन गया था। आज़ादी के बाद वह पुराना जलाया हुआ कोट और छाती पर बना हुआ लाठी का निशान उसकी रोज़ी–रोटी का सहारा बन गया। वह निशान दिखा–दिखा कर उसने एक दुकान, एक कोठी और कई बार स्कूटर और कारें एलॉट करवाईं। जिस पुलिस के सिपाही ने उसे लाठी मारी थी, उस बेचारे को क्या मालूम था कि वह चिरंजी लाल को लाठी नहीं मार रहा, उसकी

1. भरना 2. आग के हवाले

چھاتی پر ایک ایسا تمغہ ٹانک رہا ہے جو چرنجی لال کو مالا مال کردے گا اگر اسے یہ پتہ ہوتا تو وہی لاٹھی وہ اپنے سر پر نہ مار لیتا۔

چرنجی لال کو بھگوان نے پانچ بیٹوں سے نوازا۔ ان بیٹوں نے اپنی زندگی میں خوب ترقی کی جس میں ان کی قابلیت سے زیادہ چرنجی لال کی چھاتی پر لگے ہوئے لاٹھی کے نشان کا دخل تھا۔ بچوں کو شاید اِس بات کا احساس تھا۔ اس لیے وہ اپنے والد کی بے حد عزت کرتے تھے۔ سب نے اپنی اپنی بیویوں کو یہ ہدایت کر رکھی تھی کہ صبح اٹھ کر سُسر جی کے پاؤں چھوا کریں۔ سال میں ایک آدھ بار وہ خود بھی یہ حرکت کر گذرتے تھے۔

چرنجی لال کو ریڈیو والے اکثر دعوت دیتے تھے کہ وہ بھارت کے بچوں اور نوجوانوں کو ۱۹۴۲ء کے آندولن کا حال بتائیں۔ انھیں بتائیں کہ گاندھی جی کے چرنوں میں بیٹھ کر اس نے کیا سیکھا۔ اور بتائیں کہ بھارت کی آزادی کے لیے اس نے کیا کیا قربانیاں دیں۔

چرنجی لال اگر آزادی کے پندرہ بیس سال بعد مر گیا ہوتا تو اس کی موت پر ہزاروں جلسے ہوتے۔ بڑے لیڈر اسے شردھانجلیاں دیتے۔ سرکار اس کے لڑکوں کو مزید کوٹھیاں الاٹ کرتی۔ کیوں کہ بقول شاعر ـ وطن پر مٹنے والوں کا یہی باقی نشاں ہوگا لیکن چرنجی لال سے ایک بھاری غلطی ہوگئی۔ اسے مناسب وقت پر موت نہیں آئی۔ وہ جیتا ہی چلا گیا۔

یہ درست ہے کہ موت پر کسی کا اختیار نہیں ہوتا۔ اپنی مرضی سے نہ کوئی جیتا ہے اور نہ کوئی مرتا ہے۔ لیکن فرق اس سے بہت پڑتا ہے۔ چرنجی لال اگر آزادی کے دس سال بعد مر جاتا تو اس کے لیے بہت اچھا ہوتا۔ لوگ احسان مند ہوتے کہ اس نے دیش واسیوں کو انگریزوں سے آزادی دلوائی۔ لیکن آزادی کے دس سال بعد لوگوں کو احساس ہونے لگا کہ آزادی کی کوئی خاص ضرورت تو نہیں تھی۔ خواہ مخواہ ہی لے لی۔ اگلے دس سالوں میں انھیں احساس ہوا کہ جو لوٹ انگریزوں نے مچا رکھی تھی، وہ تو اپنے حکمرانوں کے مقابلے میں بہت کم تھی۔ انھیں نکال کر تو ہم گھاٹے میں رہے۔

لوگوں کا بس چلتا تو وہ بہلا پھسلا کر انگریزوں کو واپس لے آتے۔ لیکن ایسا

छाती पर एक तमग़ा टाँक रहा है जो चिरंजी लाल को माला-माल कर देगा अगर उसे यह पता होता तो वही लाठी वह अपने सर पर न मार लेता।

चिरंजी लाल को भगवान ने पाँच बेटों से नवाज़ा। उन बेटों ने अपनी ज़िंदगी में ख़ूब तरक़्क़ी की जिसमे उनकी काबिलियत से ज्यादा चिरंजी लाल की छाती पर लगे हुए लाठी के निशान का दख़ल था। बच्चों को शायद इस बात का एहसास था। इसलिए वह अपने वालिद की बेहद इज़्ज़त करते थे। सब ने अपनी-अपनी बीवियों को यह हिदायत दे रखी थी कि सुबह उठकर ससुर जी के पाँव छुआ करें। साल में एक आध बार वह खुद भी यह हरकत कर गुज़रते थे।

चिरंजी लाल को रेडियो वाले अक्सर दावत देते थे कि वह भारत के बच्चों और नौजवानों को 1942 ई॰ के आन्दोलन का हाल बतायें। उन्हें बतायें कि गांधी जी के चरणों में बैठकर उसने क्या सीखा। और बतायें कि भारत की आज़ादी के लिए उसने क्या-क्या कुर्बानियाँ दीं।

चिरंजी लाल अगर आज़ादी के पन्द्रह-बीस साल बाद मर गया होता तो उसकी मौत पर हज़ारों जलसे होते। बड़े लीडर उसे श्राद्धांजलियाँ देते। सरकार उस के लड़कों को मज़ीद कोठियाँ एलॉट करती। क्योंकि बक़ौल-शायर – वतन पर मिटने वालों का यही बाकी निशाँ होगा लेकिन चिरंजी लाल से एक भारी ग़लती हो गई। उसे मुनासिब वक़्त पर मौत नहीं आई। वह जीता ही चला गया।

यह दुरुस्त है कि मौत पर किसी का अख़्तियार नहीं होता। अपनी मर्ज़ी से न कोई जीता है और न कोई मरता है। लेकिन फ़र्क़ इससे बहुत पड़ता है। चिरंजी लाल अगर आज़ादी के दस साल बाद मर जाता तो उसके लिए बहुत अच्छा होता। लोग एहसानमंद होते कि उसने देश वासियों को अंग्रेज़ों से आज़ादी दिलवाई। लेकिन आज़ादी के दस साल बाद लोगों को एहसास होने लगा कि आज़ादी की कोई ख़ास ज़रुरत तो नहीं थी। ख़्वाहमख़्वाह ही लेली। अगले दस सालों में उन्हें एहसास हुआ कि जो लूट अंग्रेज़ों ने मचा रखी थी, वह तो अपने हुक्मरानों के मुक़ाबले में बहुत कम थी। उन्हें निकाल कर तो हम घाटे में रहे।

लोगों का बस चलता तो वह बहला-फुसला कर अंग्रेज़ों को वापस ले आते। लेकिन ऐसा चूँकि मुमकिन नहीं था। इसलिए लाखों की तादाद में

چوں کہ ممکن نہیں تھا۔ اس لیے لاکھوں کی تعداد میں لوگ ہندوستان چھوڑ کر انگریزوں کے دیش میں جا بسے۔ یہ خواہش کچھ اتنی شدت پکڑ گئی کہ انگلینڈ کا ویزا بیس ہزار میں بکنے لگا۔ اپنے آزاد دیش سے بھاگنے کے جذبے میں کچھ ایسی کشش تھی کہ جو انگلینڈ نہ جا سکے وہ سری لنکا میں جا بسنے کو تیار ہو گئے۔

چرنجی لال اب بھی ریڈیو بلکہ ٹی۔وی سے جنگ آزادی کی کہانیاں سنا تا تھا لیکن سننے والے پتا نہیں کہاں گم ہو گئے۔ لوگ چرنجی لال کی تقریر کو بے وقت کی راگنی کہنے لگے۔ گاندھی جی کو تو لوگ بھلا نہ سکے کہ ان پر ایک سمجھدار انگریز پروڈیوسر نے ایک بہت اچھی فلم بنا دی تھی اور فلمیں تو آپ جانتے ہیں ہمارے نوجوان بہت دیکھتے ہیں اور ان سے اثر لیتے ہیں۔ لیکن اس چکر میں بیچارہ چرنجی لال مارا گیا۔

چرنجی لال جب کہتا کہ ''جنگ آزادی کا سپاہی'' تو لوگ پوچھتے۔'' کون سی جنگ آزادی؟'' جب وہ کہتا کہ وہ آزادی جو ہم لے کر آئے تھے تو لوگ پوچھتے کہ اگر لے کر آئے تھے تو پھر وہ کہاں چلی گئی؟

چرنجی لال کی اولاد نے جب دیکھا کہ یہ سکہ اب چل نہیں رہا تو وہ اپنی جیب میں اس کا بوجھ محسوس کرنے لگے۔ گھر کی بہوؤں کو ایک دن احساس ہوا کہ گو سسر جی کے پاؤں چھونے سے وہ سورگ میں تو جا سکیں گی لیکن یہ بھی تو خطرہ ہے کہ اتنے غلیظ پاؤں چھونے سے انھیں کوئی بیماری لگ جائے اور وہ قبل از وقت ہی سورگ لوک میں پہنچ جائیں۔ یہ تشویش جب انھوں نے اپنے خاوندوں پر ظاہر کی تو انھوں نے فکر مند ہو کر یہ راستہ نکالا کہ پتا جی کی عزت تو دل میں ہونی چاہیے پاؤں چھونا تو پرانے یگ کی ایک روایت ہے جس کا آج کے یگ میں کوئی مقام نہیں۔

کوٹھی جو چرنجی لال نے بنوائی تھی اس کے باہر تو اسی کا نام لکھا رہا لیکن کوٹھی کے اندر آہستہ آہستہ اس کا نام و نشان مٹتا چلا گیا۔ پہلے ڈرائنگ روم میں نہ صرف چرنجی لال خود بیٹھا دکھائی دیتا تھا بلکہ اس کی ایک بڑی سی تصویر بھی آویزاں رہتی تھی آہستہ آہستہ اُس کا اپنا اور اُس تصویر کا وجود کوٹھی کے بہتر کمروں سے ہٹتا چلا گیا۔ آخر میں تصویر کا تو پتہ نہیں کیا بنا، لیکن خود چرنجی لال کا بستر کوٹھی کے ایک مختصر سے اسٹور میں پہنچ گیا۔ اُس نے جب اپنے

लोग हिन्दुस्तान छोड़कर अंग्रेज़ों के देश में जा बसे। यह ख़्वाहिश कुछ इतनी शिद्दत पकड़ गई कि इंगलैण्ड का वीज़ा बीस हज़ार में बिकने लगा। अपने आज़ाद देश से भागने के जज़्बे में कुछ ऐसी कशिश थी कि जो इंगलैण्ड न जा सके वह श्रीलंका में जा बसने को तैयार हो गये।

चिरंजी लाल अब भी रेडियो बल्कि टी. वी. से जंगे-आज़ादी की कहानियाँ सुनाता था लेकिन सुनने वाले पता नहीं कहाँ गुम हो गये। लोग चिरंजी लाल की तक़रीर को बेवक़्त की रागनी कहने लगे। गांधी जी को तो लोग भुला न सके कि उन पर एक समझदार अंग्रेज़ प्रोडयूसर ने एक बहुत अच्छी फ़िल्म बना दी और फ़िल्में तो आप जानते हैं हमारे नौजवान बहुत देखते हैं और उन से असर लेते हैं। लेकिन इस चक्कर में बेचारा चिरंजी लाल मारा गया।

चिरंजी लाल जब कहता कि "जंगे-आज़ादी का सिपाही" तो लोग पूछते "कौन सी जंगे-आज़ादी?" जब वह कहता कि यह आज़ादी जो हम लेकर आये थे तो लोग पूछते है कि अगर लेकर आये थे तो फिर कहाँ चली गई?

चिरंजी लाल की औलाद ने जब देखा कि यह सिक्का अब नहीं चल रहा तो वह अपनी जेब में उसका बोझ महसूस करने लगे। घर की बहुओं को एक दिन एहसास हुआ कि गो ससुर जी के पाँव छूने से वह स्वर्ग में तो जा सकेंगी लेकिन यह भी तो ख़तरा है कि इतने ग़लीज़ पाँव छूने से उन्हें कोई बीमारी लग जायेगी और वह क़ब्ल अज़ वक़्त ही स्वर्ग लोक में पहुँच जायें। यह तश्वीश जब उन्होंने अपने ख़ाविन्दों पर ज़ाहिर की तो उन्होंने फ़िक्रमंद होकर यह रास्ता निकाला कि पिता जी की इज़्ज़त तो दिल में होनी चाहिये पाँव छूना तो पुराने युग की एक रिवायत है जिसका आज के युग में कोई मुक़ाम नहीं।

कोठी जो चिरंजी लाल ने बनवाई थी उसके बाहर तो उसी का नाम लिखा रहा लेकिन कोठी के अंदर आहिस्ता आहिस्ता उसका नामो-निशान मिटता चला गया। पहले ड्राइंग रुम में न सिर्फ़ चिरंजी लाल ख़ुद बैठा दिखाई देता था बल्कि उसकी एक बड़ी सी तस्वीर भी आवेज़ाँ रहती थी आहिस्ता-आहिस्ता उसका अपना और उस तस्वीर का वजूद कोठी के बेहतर कमरों से हटता चला गया। आख़िर में तस्वीर का तो पता नहीं क्या बना, लेकिन ख़ुद चिरंजी लाल का बिस्तर कोठरी के एक मुख़्तसर से स्टोर में पहुँच गया। उसने जब अपने

بیٹے سے شکایت کی کہ اُس کمرے میں تو وہ اپنے پاؤں بھی اچھی طرح نہیں پھیلا سکتا تو فرمانبردار بیٹے نے جواب دیا کہ "پتاجی! آپ نے خود ہی ہمیں سکھایا ہے کہ انسان کو ہمیشہ چادر دیکھ کر پاؤں پھیلانے چاہئیں۔"

چرنجی لال نے جب دیکھا کہ پاؤں پھیلانے کے لیے گھر میں جگہ کم ہوگئی ہے تو اُس کا زیادہ وقت گھر کے پاس ایک پارک کے بنچ پر گزرنے لگا۔ شروع میں کئی لوگ اس کے پاس آ بیٹھتے تھے۔ چرنجی لال کی مشکل یہ تھی کہ وہ چپ نہیں بیٹھ سکتا تھا جہاں چار آدمی دیکھتا، بھاشن شروع کر دیتا۔ ایک دن بھاشن کے جوش میں اقبال کے اس شعر کی تشریح کر رہا تھا۔

مذہب نہیں سکھاتا! آپس میں بیر رکھنا
ہندی ہیں ہم وطن ہے ہندوستاں ہمارا

تقریر کے جوش میں کہنے لگا ۱۹۴۲ء میں ہم ہندوستانی یعنی، مسلمان، سِکھ عیسائی ایک ہی گلاس سے پانی پیتے تھے اور ایک ہی تھالی سے کھاتے تھے۔ اس کے سننے والے چوں کہ اخبار پڑھتے تھے اس لیے انھیں لگا کہ چرنجی لال یا تو کسی اور ملک کی بات کر رہا ہے یا پھر اس کا دماغ سٹھیا گیا ہے۔ وہ آہستہ آہستہ اُس کے پاس سے کھسک گئے اور پھر کبھی نہ پھٹکے۔ اب چرنجی لال تھا اور پارک کی بنچ کا ایک کونہ۔ دور دور تک سامعین کا نام ونشان نہ تھا۔

انسان بھی ایک عجیب طرح کی مشین ہے۔ بات کرنا اس کے لیے اتنا ہی ضروری ہے جتنا روٹی کھانا۔ چرنجی لال کے پاس بات کرنے کو کچھ نہ رہا تو اپنی ضرورت پوری کرنے کے لیے وہ خود سے باتیں کرنے لگا۔ ویسے تو خود سے باتیں کرنے میں کوئی برائی نہیں۔ لیکن مشکل اس میں یہ ہے کہ بولنے والا تو تھکتا نہیں لیکن سننے والا بہت بور ہو جاتا ہے۔ چرنجی لال آہستہ آہستہ اپنے بھاشن سے بور ہونے لگا۔ سننے والے چرنجی لال نے ایک دن بولنے والے چرنجی لال کو ڈانٹ دیا کہ یار اب بند کر۔ میں تنگ آگیا ہوں تیری بکواس سنتے سنتے۔ بولنے پر پابندی لگ گئی تو چرنجی لال بیمار رہنے لگا۔

اچھے بھلے کو جب کوئی گھر میں رکھنے کو تیار نہیں تھا تو بیمار کو کون رکھتا۔ چرنجی

बेटे से शिकायत की कि उस कमरे में तो वह अपने पाँव भी अच्छी तरह नहीं फैला सकता तो फ़रमांबरदार बेटे ने जवाब दिया कि "पिता जी! आप ने खुद ही हमें सिखाया है कि इन्सान को हमेशा चादर देखकर पाँव फैलाने चाहियें।"

चिरंजी लाल ने जब देखा कि पाँव फैलाने के लिए घर मे जगह कम हो गई है तो उसका ज़्यादा वक़्त घर के पास एक पार्क के बेंच पर गुज़रने लगा। शुरु में कई लोग उसके पास आ बैठते थे। चिरंजी लाल की मुश्किल यह थी कि वह चुप नहीं बैठ सकता था जहाँ चार आदमी देखता, भाषण शुरु कर देता। एक दिन भाषण के जोश में इक़बाल के इस शेर की तशरीह[1] कर रहा था।

मज़हब नहीं सिखाता! आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दुस्ताँ हमारा

तक़रीर के जोश में कहने लगा 1942 ई॰ में हम हिन्दुस्तानी यानी मुसलमान, सिख, इसाई एक ही गिलास में पानी पीते थे और एक ही थाली से खाते थे। इसके सुनने वाले चूंकि अख़बार पढ़ते थे इसलिए उन्हें लगा कि चिरंजी लाल या तो किसी और मुल्क की बात कर रहा है या फिर उसका दिमाग़ सठिया गया है। वह आहिस्ता–आहिस्ता उसके पास से खिसक गये और फिर कभी न फटके। अब चिरंजी लाल था और पार्क की बेंच का एक कोना। दूर–दूर तक सामेईन[2] का नामो–निशान न था।

इन्सान भी एक अजीब तरह की मशीन है। बात करना उसके लिए उतना ही ज़रुरी है जितना रोटी खाना। चिरंजी लाल के पास बात करने को कुछ न रहा तो अपनी ज़रुरत पूरी करने के लिए वह खुद से बातें करने लगा। वैसे तो खुद से बातें करने में कोई बुराई नहीं है। लेकिन मुश्किल इसमें है कि बोलने वाला तो थकता नहीं लेकिन सुनने वाला बहुत बोर हो जाता है। चिरंजी लाल आहिस्ता–आहिस्ता अपने भाषण से बोर होने लगा। सुनने वाले चिरंजी लाल ने एक दिन बोलने वाले चिरंजी लाल को डाँट दिया कि यार अब बंद कर। मैं तंग आ गया हूँ तेरी बकवास सुनते–सुनते। बोलने पर पाबंदी लग गई तो चिरंजी लाल बीमार रहने लगा।

अच्छे भले को जब कोई घर में रखने को तैयार नहीं था तो बीमार को कौन रखता। चिरंजी लाल के बेटे उसे अस्पताल मे भरती करा आये।

1. व्याख्या 2. श्रोता

لال کے بیٹے اُسے اسپتال بھرتی کرا آئے۔ ڈاکٹر کے اس بیان سے انھیں بہت تسلی ہوئی کہ ایسے مریض کا کوئی علاج نہیں ہے۔ بس پڑا رہے گا، جب تک اس کا آخری وقت نہیں آتا۔ گویا چرنجی لال سے رشتہ چھوڑے بغیر ان کی جان چھوٹ گئی۔

چرنجی لال کئی مہینے ہسپتال کے جنرل وارڈ کے کونے میں پڑا رہا اُسے بستر پر اس لیے نہیں رکھا گیا کہ ایسے مریض کو عام طور پر بستر نہیں ملتا جس کی زندگی کے پروگرام کے بارے میں ہسپتال والے بے خبر ہوں۔ وہ تو ایسے مریض میں دلچسپی لیتے ہیں جو کچھ دنوں بعد یا تو اپنے گھر چلا جائے یا بھگوان کے گھر۔ ہسپتال تو ایک طرح کی سرائے ہے۔ مستقل سکونت کا اس میں کوئی انتظام نہیں۔

پتہ نہیں چرنجی لال نے اپنے مرنے کی دعا مانگی یا ویسے ہی بھگوان کو رحم آ گیا۔ وہ ایک دن اچانک اس جہانِ فانی سے کوچ کر گیا۔ اس کی موت نے ایک طرح سے اُسے زندہ کر دیا۔ ایک دم رشتہ داروں کو، یار دوستوں کو اور سب سے زیادہ دیش کے نیتاؤں کو خیال آیا کہ چرنجی لال بھی کوئی تھا۔ اس کی موت کی خبر اخبارات میں اُس کی تصویر کے ساتھ شائع ہوئی۔ اور یہی خبر تھی جسے پڑھ کر مجھے انتہائی دکھ ہوا۔

کئی لیڈروں کے بیان تھے۔ انھوں نے کہا تھا۔ ”چرنجی لال کی موت سے جو خلاء پیدا ہوا ہے وہ شاید کبھی بھرا نہ جا سکے۔“

مجھے دُکھ اس لیے ہوا کہ اس خلا کو بھرنا کیوں مشکل ہے۔ ایک کوٹھی کے ایک چھوٹے سے اسٹور کو، پارک کے ایک حصے کو، ہسپتال کے جنرل وارڈ کے ایک کونے کو بھرنا کیوں اتنا مشکل ہو گیا ہے۔ کیا ہمارے یہاں ایسے لوگ بالکل ہی معدوم ہو گئے ہیں جو اس خلاء کو بھر سکتے ہیں؟

● ● ● ●

डाक्टर के उस बयान से उन्हें बहुत तसल्ली हुई कि ऐसे मरीज़ का कोई इलाज नहीं। बस पड़ा रहेगा, जब तक उसका आख़री वक़्त नहीं आता। गोया चिरंजी लाल से रिश्ता छोड़े बग़ैर उनकी जान छूट गई।

चिरंजी लाल कई महीने हस्पताल के जनरल वार्ड के कोने में पड़ा रहा उसे बिस्तर पर इसलिए नहीं रखा गया कि ऐसे मरीज़ को आम तौर पर बिस्तर नहीं मिलता जिसकी ज़िंदगी के प्रोग्राम के बारे में हस्पताल वाले बेख़बर हों। वह तो ऐसे मरीज़ में दिलचस्पी लेते हैं जो कुछ दिनों बाद या तो अपने घर चला जाये या भगवान के घर। हस्पताल तो एक तरह की सराय है। मुस्तक़िल सुकूनत का उसमें कोई इन्तज़ाम नहीं।

पता नहीं चिरंजी लाल ने अपने मरने की दुआ माँगी या वैसे ही भगवान को रहम आ गया। वह एक दिन अचानक इस जहाने–फ़ानी से कूच कर गया। उसकी मौत ने एक तरह से उसे ज़िंदा कर दिया। एक दम रिश्तेदारों को, यार दोस्तों को और सब से ज़्यादा देश के नेताओं को ख़याल आया कि चिरंजी लाल भी कोई था। उसकी मौत की ख़बर अख़बारात में उसकी तस्वीर के साथ शाया हुई। और यही ख़बर थी जिसे पढ़कर मुझे इन्तहाई दुःख हुआ।

कई लीडरों के बयान थे। उन्होंने कहा था "चिरंजी लाल की मौत से जो ख़ला[1] पैदा हुआ है वह शायद कभी भी भरा न जा सके।"

मुझे दुःख इसलिए हुआ कि इस ख़ला को भरना क्यों मुश्किल है। एक कोठी के एक छोटे से स्टोर को, पार्क के एक हिस्से को, हस्पताल के जनरल वार्ड के एक कोने को भरना क्यों इतना मुश्किल हो गया है। क्या हमारे यहाँ ऐसे लोग बिल्कुल की मादूम हो गये हैं जो इस ख़ला को भर सकते हैं?

●●●●

1. शून्य

اظہر مسعود

یہ لکھنؤ ہے

ہوا یوں کہ مرزا رجب علی بیگ سرور کو عالم بالا میں بھی لکھنو کی یاد بے چین کرنے لگی۔ لاکھ سمجھایا گیا کہ اس شہر کا نقشہ اب وہ نہیں رہا جس کی تصویر انھوں نے 'فسانہ عجائب' میں آغاز داستان سے پہلے پیش کی تھی۔ اُنھیں کسی طرح باور نہ آیا۔ حتیٰ کہ قضا و قدر نے ان کو سرزمین لکھنؤ پر اُتار دیا تا کہ کیفیت اپنے 'شہر بے نظیر' کی بہ چشم خود دیکھ لیں۔ آیئے دیکھیں حضرت سرور کو آج یہ شہر کیسا لگا:

شہر نفیس، مجمع رئیس تھا، ہر فن کا کامل یہاں حاصل تھا۔ علم موسیقی میں یہ کمال پہنچایا، اس طرح کا دُھرپت، خیال، ٹپا گایا اور بتایا کہ کس نائک کے وہم وخیال میں نہ آیا۔ اب تو یہ حال ہے کہ چار دن ریاض کیا اور کمال کا دم بھرنے لگے۔ آن کی آن، میر علی مرثیہ خوان ہو گئے۔ صورت یہ کہ میگھ ملھار گائیں تو چلچلاتی دھوپ نکل آئے، ٹھمری کی گت دلوں کو جلائے، بسنت بہار سے بہار رخصت ہووے۔ درباری سے دلوں کو وحشت ہووے۔

علی الخصوص، مردِ تماش بین کے واسطے یہ شہر غرّاد ہے، ہر فن کا یہاں اُستاد

अज़हर मसऊद

यह लखनऊ है

हुआ यूँ कि मिर्ज़ा रजब अली बेग सुरुर को आलमे–बाला में भी लखनऊ की याद बेचैन करने लगी। लाख समझाया गया कि इस शहर का नक़्शा अब वह नहीं रहा जिसकी तस्वीर उन्होंने 'फ़सानए–अजाएब' में आग़ाज़े दास्तान से पहले पेश की थी। उन्हें किसी तरह बावर न आया। हत्ता कि क़ज़ाओ–क़द्र[1] ने उनको सरज़मीने–लखनऊ पर उतार दिया ताकि कैफ़ियत अपने 'शहरे बे नज़ीर' की बचश्मे–ख़ुद देख लें। आइये देखें हज़रत सुरुर को आज यह शहर कैसा लगा:

शहर नफ़ीस, मजमा रईस था, हर फ़न का कामिल यहाँ हासिल था। इल्मे मौसीक़ी में यह कमाल पहुँचाया, इस तरह का ध्रुपत, ख़याल, टप्पा गाया और बनाया कि किसी नायक के वहमो–ख़याल में न आया। अब तो यह हाल है कि चार दिन रियाज़ किया और कमाल का दम भरने लगे। आन की आन, मीर अली मरसिया–ख़्वान हो गये। सूरत यह कि मेघ मलहार गायें तो चिलचिलाती धूप निकल आये, ठुमरी की गत दिलों को जलाये, बसंत बहार से बहार रुख़्सत होवे। दरबारी से दिलों को वहशत होवे।

अललख़ुसूस[2], मर्दे–तमाशबीन के वास्ते यह शहरे ख़र्राद[3] है, हर फ़न का यहाँ उस्ताद है। सैंकड़ों धामड़, कन्दए–नातराश अनगढ़,

1. ईश्वरीय अज्ञा 2. ख़ास कर 3. खरादियों का शहर

ہے۔ سیکڑوں گھامڑ، کندۂ ناتراش، زعمِ باطل میں عیاش، اطراف و جوانب سے آ، ہفتے عشرے میں چھل چھلا، وضع دار ہو گئے۔ اشراف اُن کے ہاتھوں ذلیل و خوار ہو گئے۔ رئیسوں کے طور اپنائے، مگر اصل کی خو، بو، کہاں جائے بقول میر انیس اعلی اللہ مقامہٗ:

شست و شو، سے گو ہوا اُجلا رذیل

جامۂ اصلی پہ دھبا رہ گیا

گومتی میں غوطہ لگایا، آپ پاک ہوئے، پانی کو کثیف بنایا۔ سج سنور کر نکلتے ہیں، پیادے سے فرزیں بن آڑے آڑے چلتے ہیں، کسی نے ٹوکا ''میاں!'' بولے'' فلاں ابن فلاں۔''

طبیب ہر ایک، مسیحائی کرتا ہے، قُم باذنی کا دم بھرتا ہے۔ جسے دیکھو بُقراط، سُقراط، جالینوس زماں بنا پھرتا ہے۔ حذاقت کا یہ عالم کہ جو بھی ان کے ہتھے چڑھے، دیر نہ لگے، چاہ اجل میں گرے۔ نسخے پہ نسخے رقم کرتے ہیں، پے ہم آبادی کو کم کرتے ہیں۔ ان کی بدولت، کفن فروشوں کی ہر شب 'شب برات' دن عید ہے شہر بھر کا گورکن ان کا مُرید ہے۔ بوتل میں شربت جہل کا بھرتے اور معجونِ حماقت سے خلقت کا علاج کرتے ہیں۔ ان کے پاس جو آئے، کل کا مرتا ابھی مر جائے، بول بے عقلی کے بولتے، جگر کی جا پر تلّی کو ٹٹولتے ہیں۔

اور تو اور، شہدا پیر بُخارا کا، بتما سا۔ سید الشہدا کا شیدا۔ برس روز میں جو پیدا کیا، عشرۂ محرم میں محتاجوں کو، نذرِ حسین کھلا دیا۔ تمام سِن جُوا کھیلا، ڈوبے کے داؤں پر اَدّھی نہ لگائی، جانے اس کی جی میں کیا آئی کہ رہن کُل گھر بار کیا، آپ کو آفتِ لاٹری میں گرفتار کیا۔ سر جھاڑ، مُنھ پہاڑ پھرتا ہے، سوتے میں بھی دُگی تِگی کرتا ہے۔ زمانہ خراب دن بکٹ ہیں، کھانے کو روٹیوں کی جا لاٹری کے ٹکٹ ہیں۔ داؤں پر داؤں لگاتا ہے۔ دس کھوتا ہے تو ایک پاتا ہے۔

عمدؤ نے پتنگ ایسا لڑایا کہ گھر بار لٹایا۔ ستر، بہتر تار کی ڈور بنوائی، عمر بھر کی کمائی گنوائی۔ ساٹھ تار کا پتنگ مُڈھا پھینک کر بڑھایا، بال بچوں کا ذرا خیال نہ آیا۔ خون پسینے سے جو گھر آباد کیا، شغلِ ہوائی کے طفیل، آن کی آن برباد کیا۔ زندگی کی ڈور ایسی

ज़ोमे–बातिल[1] में अय्याश, अतराफ़ो–जवानिब से आ, हफ़्ते अशरे में छिल–छिला, वज़ादार[2] हो गये। अशराफ़ उनके हाथों ज़लीलो–ख़्वार हो गये। रईसों के तौर अपनाये, मगर असल की ख़ू, बू, कहाँ जाये। बक़ौल मीर अनीस आलअल्लाह मोक़ामह :

शुस्तो–शो[3], से गो हुआ उजला रज़ील
जामए–असली पे धब्बा रह गया

गोमती में गोता लगाया, आप पाक हुए, पानी को कसीफ़ बनाया। सज–संवर कर निकलते है, प्यादे से फ़रज़ीं बनकर आड़े आड़े चलते हैं, किसी ने टोका "मियाँ!" बोले "फ़लाँ इब्न फ़लाँ।"

तबीब हर एक, मसीहाई करता है, क़ुम बेइज़्नी[4] का दम भरता है। जिसे देखो बुक़रात, सुक़रात, जालीनूसे–ज़माँ बना फिरता है। हज़ाक़त का यह आलम है कि जो भी उनके हत्थे चढ़े, देर न लगे, चाहे–अजल[5] में गिरे। नुस्ख़े पे नुस्ख़े रक़म करते हैं, पैहम आबादी को कम करते हैं। इनकी बदौलत, कफ़न–फ़रोशों की हर शब 'शबे–बारात', दिन ईद है। शहर भर का गोरकन उनका मुरीद है। बोतल में शर्बत जेहल का भरते और माजूने–हिमाक़त से ख़िलक़त का इलाज करते है। उनके पास जो आये, कल का मरता अभी मर जाये, बोल बेअक़ली के बोलते, जिगर की जा पर तिल्ली को टटोलते हैं।

और तो और, शोहदा पीर बुख़ारा का, टिम्मा सा। सय्यदुस्शोहदा[6] का शैदा। बरस रोज़ में जो पैदा किया, अशरए–मोहर्रम में मोहताजों को, नज़रे हुसैन खिला दिया। तमाम सिन जुआ खेला, दुवे के दावँ पर अध्धी न लगाई, जाने उस की जी में क्या आई कि रहन कुल घर बार किया, आपको आफ़ते–लाटरी में गिरफ़्तार किया। सर झाड़, मुँह पहाड़ फिरता है, सोते में भी दुग्गी तिग्गी करता है। ज़माना ख़राब दिन बिकट हैं, खाने की रोटियों की जा लाटरी के टिकट हैं। दांव पर दावं लगाता है। दस खोता है तो एक पाता है।

उम्दू ने पतंग ऐसा लड़ाया कि घर बार लुटाया। सत्तर, पच्हत्तर तार की डोर बनावाई, उम्र भर की कमाई गंवाई। साठ तार का पतंग मुढा फेंक कर बढ़ाया, बाल बच्चों का ज़रा ख़्याल न आया। ख़ून पसीने से जो घर आबाद किया, शोग़ले–हवाई के तुफ़ैल, आन की आन बरबाद किया। जिंदगी की डोर ऐसी

1. झूठी शान 2. सजीला 3. नहाना धोना 4. मुर्दों को जिन्दा करना
5. मौत का कुआँ 6. शहीदों का सरदार (इमाम हुसैन)

اُلجھی کہ کسی طور نہ سُلجھی، قرض خواہوں کا ریلا ہوا، باؤلی میں کود کر جان دی۔ ختم زندگی کا جھمیلا ہوا۔

عیش باغ اور تماشے کا میلہ؟ آٹھ پہر ہُو کا عالم، مرگ کا اندیشہ کیسا پرستان تاحدِ نظر گورستان ـــــ رات کا کیا ذکر، روز روشن میں طبیعت وحشت کھاتی ہے، چپّے چپّے سے کافور کی بُو آتی، انجام کو یاد دلاتی ہے۔ یہاں نہ گلبدن نہ سیم تن آتے ہیں، آنچلوں کی جگہ مُردوں کے کفن لہراتے ہیں۔

موتی جھیل کا پانی؟ جو کبھی آب وتاب دکھاتا؟ پیاسوں کا دل لہراتا؟ بدبو مارتا، سڑتا ہے، آخر کُل شہر کا آخور اِس میں پڑتا ہے۔ بنانے والے کی کبھی جو نظر پڑے، شرم سے پانی پانی ہو، زمین میں گڑے۔

رومی دروازہ اس رفعت وشان کا ہے، گزر گاہ ایک جہاں کا ہے، اگر اُس پر چڑھ جائے، بام فلک پست معلوم ہو، فرشتوں کا مشورہ کان میں آئے اُس کے بھی رنگ اُڑتے ہیں، کنگورے جابجا سے جھڑتے ہیں۔ چوُنا اُکھڑتا ہے، روپ بگڑتا ہے، عظمت پارینہ کی نشانی، باب اِرم کا ثانی ـــــ زبان حال سے فریاد کرتا ہے، اپنے معماروں کو یاد کرتا ہے۔

سرچوک ہمیشہ شانے سے شانہ چھلا، نسیم وصبا کو سید ھا رستہ نہ ملا، یہاں آوازوں کا شور اس کا رن ہے، کبھی سائیکل کی گھنٹی، کہیں موٹر کا ہارن ہے، بھیڑ بھاڑ میں سانس اٹکتی ہے، دھیان بٹتے ہی جیب کٹتی ہے۔

اگر برسات کا موسم ہے تو شہر کا یہ عالم ہے، ادھر مینہ برسا، پانی ڈھال پر سے بہہ گیا، گلی کوچے میں رہ گیا، ساون بھادوں میں زردوزی جوتا پہن کر بھرے دو قدم چلنے نہ پائے، اوندھے منھ گرے، پانی کے جھالے ہیں، پرنالے پڑوسیوں نے گھروں میں نکالے ہیں۔ جوں جوں مینہ تیز ہوتا ہے، پیمانۂ حیات لبریز ہوتا ہے۔ باہر جانے کی صورت یہ نکلتی ہے، شاہراہوں پر ناؤ چلتی ہے۔ مچھروں کی بھرمار ہے، خلقت مبتلائے آزار ہے۔

رنگ ریز، سُبک دست طبیعت کے تیز، جو پھول دکھایا، انھوں نے کپڑے پر اس سے نیا گل کھلایا۔ رنگ چوکھا، دیکھنے میں پکا، مگر نظر کا دھوکا۔ پہنے اور پسینہ آئے، تو

उलझी कि किसी तौर न सुलझी, कर्ज़ ख्वाहों का रेला हुआ, बावली में कूद कर जान दी। ख़त्म ज़िन्दगी का झमेला हुआ।

ऐश बाग़ और तमाशों का मेला? आठ पहर हू का आलम, मर्ग का अंदेशा, कैसा परिस्तान ता हद्दे नज़र गोरिस्तान– रात का क्या ज़िक्र, रोज़े–रौशन में तबीयत वहशत खाती है, चप्पे चप्पे से काफूर की बू आती, अंजाम को याद दिलाती है। यहाँ न गुलबदन न सीम तन आते हैं, आँचलों की जगह मुर्दा के कफ़न लहराते हैं।

मोती झील का पानी? जो कभी आबो–ताब दिखाता? प्यासों का दिल लहराता? बदबू मारता, सड़ता है, आज कुल शहर का आख़ूर[1] इसमें पड़ता है। बनाने वाले की कमी जो नज़र पड़े, शर्म से पानी पानी हो, ज़मीन मे गड़े।

रुमी दरवाज़ा इस रफ़अतो–शान का है, गुज़रगाह एक जहान का है, अगर उस पर चढ़ जाये, बामे–फ़लक[2] पस्त मालूम हो, फ़रिश्तों का मश्वरा कान में आये। उस के भी रंग उड़ते हैं, कंगूरे जा बजा से झड़ते हैं। चूना उखड़ता है, रुप बिगड़ता है, अज़मते पारीना की निशानी, बाबे–इरम[3] का सानी– ज़बाने–हाल से फ़रियाद करता है, अपने मेमारों को याद करता है।

सरे चौक हमेशा शाने से शाना छिला, नसीमो–सबा को सीधा रस्ता न मिला, यहाँ आवाज़ों का शोर इस कारन है, कभी साइकिल की घंटी, कहीं मोटर का हॉर्न, भीड़ भाड़ में सांस अटकती है, ध्यान बटते ही जेब कटती है।

अगर बरसात का मौसम है तो शहर का यह आलम है, उधर मेंह बरसा, पानी ढ़ाल पर से बह गया, गली कूचे में रह गया, सावन भादों में ज़रदोज़ी जूता पहन कर फिरिये दो क़दम चलने न पाये, औंधे मुँह गिरे, पानी के झाले हैं, परनाले पड़ोसियों ने घरों में निकाले हैं। जूँ जूँ मेंह तेज़ होता है, पैमानए–हयात लबरेज़ होता है। बाहर जाने की सूरत यह निकलती है, शाहराहों पर नाव चलती है। मच्छरों की भरमार है, ख़िलक़त मुब्तलाये आज़ार है।

रंगरेज़, सुबुक दस्त[4] तबीयत के तेज़, जो फूल दिखाया, उन्होंने कपड़ों पर इस से नया गुल खिलाया। रंग चोखा, देखने में पक्का, मगर नज़र का धोका। पहने और पसीना आये, तो यह गुल खिलाये, सारे रंग बदन पर

1. कूड़ा–करकट 2. आसमान की छत (ऊँचाई) 3. जन्नत का दरवाज़ा 4. फुर्तीला

یہ گل کھلائے، سارے رنگ بدن پر اُتر آئیں، پل بھر میں گلبدن گل دار نظر آئیں۔ رنگ ایسے جو نیرنگ فلک نے دیکھے نہیں، دیکھے تو بس دیکھے یہیں۔

مداریے نُقّے وہ ایجاد ہوئے، کسگر ایسے اُستاد ہوئے کہ جب تڑا قا اِن کا سُنا پیچوان کا دم بند ہوا۔ سب کو پسند ہوا۔ جس نے گھونٹ کھینچا، اسی کا دم بھرنے لگا، کھانستے کھانستے بے موت مرنے لگا۔

چنے ایسے کڑا کے دار بھُنے کہ چشم و گوش فلک نے دیکھے نہ سنے۔ چھوٹے بڑے سختی میں سنگِ خارا سے کڑے۔ نام کو چنے، حقیقت میں پتھر۔ چار دانے مُنھ میں ڈال زور کرو تو بتیسی باہر۔

بالائی اس قماش کی جمائی کہ کھائے تو دانتوں پسینہ آئے۔ تیغ تیز سے بھی کاٹے نہ کٹے۔ رستم کھائے چار دن میں لٹے۔ دودھ میں سنگھاڑے کا آٹا ملاتے ہیں، بالائی کے بیچ، بلاٹنگ پیپر کی پرتیں لگاتے ہیں، کھانے والے کا مُنھ زرد ہو، حرارت غریزی پل بھر میں مبدّل بہ دم سرد ہو۔ قُلفی ٹھنڈی اس میں جملۂ معترضہ کی طرح لگی ایک ڈنڈی۔ سرے پر برف جمی، دل کی ٹھنڈک کلیجے کی نمی، شکر گھول پانی کا چُلّو جمایا ہے، کھانے والوں کو اُلّو بنایا ہے، صفائی کا دھیان نہیں، گندگی وہ جس کا بیان نہیں، دو تین کھائے، نزلہ ہو لقوہ مار جائے، نہیں تو ہیضہ ہو، بے موت سرحد حیات کے پار جائے۔

فرنی کے خوانچے، نقرہ کی جگہ پنّی کے ورق جمے، پستے کی ہوائی، کھوپرا کتر، سبز رنگ کر بنائی۔ گوری گوری قلفیوں میں نکال کر رکھ دیے ابدالآباد تک رکھی رہے۔ آدمی تو آدمی اس سے دور مکھی رہے۔

کباب اس آب و تاب کے کہ چار دن کھائے، پیٹ چلے، صحت رخصت ہو جائے مرچ مسالے کی آگ، جگر کو کباب کر ڈالے۔

حلوا سوہن پر عجیب جوبن — اس کی شیرینی سے بھوک بند، سینے میں جلن، پپڑی لذیذ، دبیز، بسی بسائی، بادام کے نام پر تخمِ خربوزہ کی ہوائی، ہونٹ سے چبائے نہ چبے تو دانت لگائے، تب بھی نہ ٹوٹے تو سل بٹے سے کوٹے۔ جوزی خوب، جشنی اہلِ ہند کو مرغوب، کھائے تو جینے سے دل سرد ہو پیٹ میں درد ہو، شیر خوارہ نوش کر جائے،

उतर आयें, पल भर में गुलबदन गुलदार[1] नज़र आयें। रंग ऐसे जो नैरंगे–फ़लक ने देखे नहीं, देखे तो बस देखे यहीं।

मदारिये हुक़्क़े वह इजाद हुए, कसगर[2] ऐसे उस्ताद हुए कि जब तड़ाक़ा इनका सुना पेचवान[3] का दम बंद हुआ। सब को पसंद हुआ। जिसने घूंट खींचा, उसी का दम भरने लगा, खाँसते–खाँसते बे मौत मरने लगा।

चने ऐसे कड़ाकेदार भुने कि चश्मो–गोशे फ़लक[4] ने देखे न सुने। छोटे बड़े सख़्ती में संगे ख़ारा[5] से कड़े। नाम को चने, हक़ीक़त में पत्थर। चार दाने मुँह में डाल ज़ोर करो तो बतीसी बाहर।

बालाई इस क़्माश की जमाई कि खाये तो दाँतों पसीना आये। तेग़े–तेज़ से भी काटे न कटे। रुस्तम खाये चार दिन में लटे। दूध में सिंघाड़े का आटा मिलाते हैं, बालाई के बीच, ब्लाटिंग पेपर की परतें लगाते हैं, खाने वाले का मुँह ज़र्द हो, हरारते–ग़ुरेज़ी[6] पर भर में मुब्दिल ब दमे सर्द हो। कुल्फ़ी ठंडी उसमें जुम्लए–मोतरज़ा[7] की तरह लगी एक डंडी। सिरे पर बर्फ़ जमी, दिल की ठंढक कलेजे की नमी, शकर घोल पानी का चुल्लू जमाया है, खाने वालों को उल्लू बनाया है, सफ़ाई का ध्यान नहीं, गंदगी वह जिस का बयान नहीं, दो तीन खाये, नज़ला हो लक़वा मार जाये, नहीं तो हैज़ा हो, बे मौत सरहदे हयात के पार जाये।

फ़िरनी के ख़ोन्चे, नोक़रा की जगह पिन्नी के वर्क़ जमे, पिस्ते की हवाई, खोपरा कुतर, सब्ज़ रंग कर बनाई। कोरी कोरी कुल्फ़ियों में निकालकर रख दिये अब्दुलआबाद[8] तक रखी रहे। आदमी तो आदमी उससे दूर मक्खी रहे।

कबाब इस आबो–ताब के कि चार दिन खाये, पेट चले, सेहत रुख़्सत हो जाये मिर्च मसाले की आग, जिगर को कबाब कर डाले।

हलवा सोहन पर अजीब जोबन – उसकी शीरीनी से भूक बंद, सीने में जलन, पपड़ी लज़ीज़, दबीज़, बसी बसाई, बादाम के नाम पर तुख़्मे ख़र्बूज़ा[9] की हवाई, होंट से चबाये न चबे तो दाँत लगाये, तब भी न टूटे तो सिल बट्टे से कूटे – जोज़ी ख़ूब, जशी अहले हिन्द को मरग़ूब, खाये तो जीने से दिल सर्द हो, पेट में दर्द हो, शीरख़्वार नोश कर जाये,

1. धब्बेदार 2. कुम्हार 3. हुक़्क़ा जिसकी नै लचकदार और लम्बी होती है 4. आसमान की आँख और कान 5. नीला पत्थर 6. जिस्म की गर्मी 7. वह वाक्य जिसके हटा देने से अर्थ पर कोई प्रभाव न पड़े
8. हमेशा–हमेशा 9. ख़रबूज़े का बीज

دست آئیں، فیل مچائے، سارے گھر کو سر پر اُٹھائے۔

ایک طرف تنبولی سُرخ روئی سے یہ رمز و کنایہ کرتے، بولی ٹھولی میں چباچبا کر ہر دم یہ دم بھرتے، عبیر ہے نہ گلال ہے، ادھی میں اپنا مُکھڑا۔ دوسروں کا کپڑا لال ہے، گلیوں میں گجر دم یہ آواز آتی ہے، شیر مال بنسپتی گھی، پاؤڈر کے دودھ کی ہے، ٹکّوں کی چاٹ ہے۔ کھانے والے کا دل جینے سے اُچاٹ ہے۔

غرض کیفیت اس شہر بے نظر کی، آگے جو تھی، سو تھی، اب یہ ہے اور یہ پنبہ دہاں، ہیچمداں، محرر داستاں، مقلد گزشتگاں سراپا قصور، مرزا رجب علی تخلّص سرور غلطیوں کا پوٹ، بلغزشوں کا طومار 'فسانۂ عجائب' میں اپنے لکھے پر شرمسار ہے۔

••••

दस्त आयें, फ़ील मचाये, सारे घर को सर पर उठाये।

एक तरफ़ तंबोली सुर्ख़ रुई से यह रम्ज़ो–कनाया करते हैं, बोली ठोली में चबा चबा कर हर दम यह दम भरते हैं, अबीर है न गुलाल है, अद्धी में अपना मुखड़ा। दूसरों का कपड़ा लाल है, गलियों में गजरदम यह आवाज़ आती है, शीर माल बनस्पती घी, पाउडर के दूध की है, टकों की चाट है। खाने वाले का दिल जीने से उचाट है।

गरज़ कैफ़ियत इस शहरे–बेनज़ीर की, आगे जो थी, सो थी, अब यह है और यह पंबादहाँ[1], हेचमदाँ[2], मोहर्रिरे–दास्ताँ, मुक़ल्लिदे–गुज़िश्तगाँ सरापा कुसूर, मिर्जा रजब अली तख़ल्लुस सुरुर, ग़लतियों का पोट, लगज़िशों का तूमार 'फ़सानए–अजायेब' में अपने लिखे पर शर्मसार है।

●●●●

1. ख़ामोश 2. कम अक़्ल

پرویز ید اللہ مہدی

مہمان بلائے جان

اِنسانی فطرت کا تقاضہ ہے کہ اپنی دال روٹی سے پرایا حلوہ مانڈا چوں کہ مفت کا ہوتا ہے اس لیے کچھ زیادہ ہی بھاتا ہے۔ اور خوش نصیب وہی کہلاتے ہیں جو آئے دن پرایا حلوہ انڈا اُڑاتے رہتے ہیں۔ اور بدنصیب ہیں وہ جو کسی کے مہمان بننے کی حسرت دل میں لیے ہرایرے غیرے نتھو خیرے کی میز بانی کے فرائض انجام دیتے ہوئے، انجام کار موت کے مہمان بن جاتے ہیں (گویا مہمان بننا ایک ایسا فعل ہے جس سے کسی کو مفر نہیں) اور لگتا ہے ہمارا شمار ہی بدنصیبوں میں ہونے والا ہے۔ ایک تو مقدر ہی بڑا۔ اس پر ملازمت کی مصروفیات جس طرح نیم حکیم خطرۂ جان ہوتا ہے اسی طرح نیم سرکاری ملازمت بھی خطرناک اور بے بھروسہ ہوتی ہے۔ جی ہاں، پروانۂ تقدیر حاصل کرنے کے لیے تو کسی راکٹ کی طرح متعلقہ دفتر کے سینکڑوں چکر لگانے پڑتے ہیں۔ جب کہ برطرفی کا آرڈر گھر بیٹھے ہی پہنچ جاتا ہے اور ہماری اس مجبوری سے جانے انجانے سبھی اچھی طرح واقف ہیں اس لیے پورا پورا فائدہ اٹھاتے ہیں۔ ویسے جہاں تک ہمارا خیال ہے ہم بھی اِنسان ہیں۔ (ہوسکتا ہے خیال غلط ہو) سینے میں دل رکھتے ہیں اور دل میں مہمان بننے کی

परवेज़ यदुल्लाह मेहदी

मेहमान बलाए-जान

इन्सानी फ़ितरत का तक़ाज़ा है कि अपनी दाल रोटी से पराया हलवा माण्डा चूंकि मुफ़्त का होता है इसलिए कुछ ज़्यादा ही भाता है। और ख़ुश नसीब वही कहलाते हैं जो आये दिन पराया हलवा अण्डा उड़ाते रहते हैं। और बदनसीब हैं वह जो किसी के मेहमान बनने की हसरत दिल में लिये हर ऐरे-ग़ैरे नत्थू ख़ैरे की मेज़बानी के फ़रायज़ अंजाम देते हुए, अंजामे-कार मौत के मेहमान बन जाते हैं (गोया मेहमान बनना एक ऐसा फ़ेल है जिससे किसी को मफ़र नहीं) और लगता है हमारा शुमार ही बदनसीबों में होने वाला है। एक तो मुक़द्दर ही बड़ा उस पर मुलाज़मत की मस्रूफ़ियात जिस तरह नीम हकीम ख़तरे जान होता है उसी तरह नीम सरकारी मुलाज़मत भी ख़ातरनाक और बे भरोसा होती है। जी हाँ, परवानए-तक़्दीर हासिल करने के लिए तो किसी रॉकेट की तरह मुताल्लेक़ा दफ़्तर के सैंकड़ों चकर लगाने पड़ते हैं। जबकि बरतरफ़ी का ऑर्डर घर बैठे ही पहुँच जाता है और हमारी इस मजबूरी से जाने अंजाने सभी अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं इसलिए पूरा-पूरा फ़ायदा उठाते हैं। वैसे जहाँ तक हमारा ख़याल है हम भी इन्सान हैं। (हो सकता है ख़याल ग़लत हो) सीने में दिल रखते हैं और दिल में मेहमान बनने की

تمتا محفوظ۔ اس لیے کئی بار کوشش کر چکے ہیں کہ کوئی ہمیں کم از کم دو چار روز کے لیے ہی بہ حیثیت مہمان کے جھیلے (اسے کہتے ہیں آسمان سے گرا کھجور میں اٹکا) لیکن جب تقدیر میں صرف اوروں کی میزبانیاں لکھی ہوں تو پھر ہر کوشش بے کار ہے۔

ابھی پچھلے دنوں کی بات ہے، آئے دن کی ان میزبانیوں سے تنگ آ کر ہم نے مصمم ارادہ کیا تھا کہ چاہے آسمان سر پر گر پڑے یا زمین پیروں تلے سے سرک جائے لیکن ہم تو کسی کے مہمان بن کر ہی دم لیں گے۔ چنانچہ اس دھن کے سر میں سماتے ہی نظریں دوڑانی شروع کر دیں۔ اسی جستجو میں کہ اپنی میزبانی کا شرف بخشیں تو کسے بخشیں۔

سب سے پہلے رشتہ داروں کو کھنگالا اور اس نتیجہ پر پہونچے کہ ان کے ہاں بہ حیثیت مہمان کے پہنچ کر بھی ہماری حیثیت کم و بیش میزبان کی سی رہے گی۔ چنانچہ اِدھر سے مایوس ہو کر قریبی دوست احباب کا جائزہ لیا تو پتہ چلا کہ آج نہ صرف ان کے ستارے ہی گردش میں ہیں بلکہ وہ خود بھی ستاروں سے دُوگنی رفتار میں گردش میں ہیں، یعنی آج یہاں مہمان تو کل وہاں۔ چنانچہ مجبور ہو کر ہمیں ان ستم ظریف احباب کی طرف متوجہ ہونا پڑا جن کے نام تک نہ لینے کی قسم کھائی تھی۔ جن کے ہاتھوں اتنے صدمے اٹھا چکے ہیں کہ ہماری جگہ اگر پہاڑ بھی ہوتا تو اپنی جگہ سے سرک جاتا لیکن مہمان بننے کی اس ضد کا بھلا ہو ہمیں یہ قسم توڑنا ہی پڑی۔ سب سے پہلے مرزا ظریف جو ہمارے حق میں ستم ظریف ہیں اِن کا خیال آنا ضروری تھا۔ آپ اپنی کوہ قافی بیگم کے ہمراہ سال میں کم از کم دو بار ہمارے سینہ پر مُونگ دلنے کی غرض سے بہ بانگ دہل اطاع دے کر پہنچ جاتے ہیں اور ہماری پریشانیاں تو موصوف کے مکتوبِ گرامی سے ہی شروع ہو جاتی ہیں۔ اندازِ تحریر ملاحظہ فرمائیے۔ لکھتے ہیں:

برخوردار! بھلا ہو ان سائنس دانوں کا، الّم غلّم تجربے کر کے فضاء کو خراب کرنے پر تلے ہوئے ہیں۔ مجھے دیکھو ان ہی کی مہربانیوں کا جیتا جاگتا شکار ہوں۔ (حالاں کہ جناب خود کسی میر شکاری سے کم نہیں) کوئی نہ کوئی بیماری لگی رہتی ہے، ڈاکٹر نے تبدیلی آب و ہوا کا مشورہ دیا ہے۔ اور دفتری مصروفیات ہیں کہ جی بھر کر اُونگھنے تک کی فرصت نہیں۔ پھر بھی کسی نہ کسی طرح چار روز کی رخصتِ اتفاقی لے کر پرسُوں شام کی گاڑی

तमन्ना महफूज़। इसलिए कई बार कोशिश कर चुके हैं कि कोई हमें कम अज़ कम दो चार रोज़ के लिए ही बहैसियत मेहमान के झेले (इसे कहते हैं आसमान से गिरा खजूर में अटका) लेकिन जब तक़दीर में सिर्फ़ औरों की मेज़बानियाँ लिखी हों तो फिर हर कोशिश बेकार है।

अभी पिछले दिनों की बात है, आये दिन की इन मेज़बानियों से तंग आकर हमने मोसम्मम[1] इरादा किया था कि चाहे आसमान सर पर गिरे या ज़मीन पैरों तले से सरक जाये लेकिन हम तो किसी के मेहमान बनकर ही दम लेंगे। चुनांचे इस धुन के सर में समाते ही नज़रें दौड़ानी शुरु कर दीं। इसी जुस्तजू में कि अपनी मेज़बानी का शरफ़ बख़्शें तो किसे बख़्शें।

सब से पहले रिश्तेदारों को खंघाला और इस नतीजे पर पहुँचे कि इन के यहाँ बहैसियत मेहमान के पहुँच कर भी हमारी हैसियत कमो–बेश मेज़बान की सी रहेगी। चुनांचे इधर से मायूस होकर क़रीबी दोस्त अहबाब का जायज़ा लिया तो पता चला कि आज न सिर्फ़ उनके सितारे ही गर्दिश में हैं बल्कि वह खुद सितारों से दुगनी रफ़्तार में गर्दिश में हैं, यानी आज यहाँ मेहमान तो कल वहाँ। चुनांचे मजबूर होकर हमें उन सितम–ज़रीफ़[2] अहबाब की तरफ़ मुतवज्जा होना पड़ा जिन के नाम तक न लेने की क़सम खाई थी। जिनके हाथों इतने सदमे उठा चुके हैं कि हमारी जगह अगर पहाड़ भी होता तो अपनी जगह से सरक जाता लेकिन मेहमान बनने की इस ज़िद का भला हो हमें यह क़सम तोड़ना ही पड़ी। सब से पहले मिर्ज़ा ज़रीफ़ जो हमारे हक़ में सितम ज़रीफ़ हैं इनका ख़याल आना ज़रुरी था। आप अपनी कोह क़ाफ़ी[3] बेगम के हमराह साल में कम अज़ कम दो बार हमारे सीने पर मूँग दलने की ग़रज़ से ब बाँग दोहल[4] इत्तला देकर पहुँच जाते हैं और हमारी परेशानियाँ तो मौसूफ़ के मकतूबे गरामी से ही शुरु हो जाती हैं। अंदाज़े तहरीर मोलाहिज़ा फ़रमाइये। लिखते हैं –

बरखुरदार! भला हो इन साइंसदानों का, अल्लम–ग़ल्लम तजर्बे करके फ़िज़ा को ख़राब करने पर तुले हुए हैं। मुझे देखो उन ही की मेहरबानियों का जीता जागता शिकार हूँ। (हालांकि जनाब खुद किसी मीर शिकारी से कम नहीं) कोइ न कोई बीमारी लगी रहती है, डाक्टर ने तब्दीलीए– आबो–हवा का मशवरा दिया है। और दफ़्तरी मसरुफ़ियात हैं कि जी भर ऊंघने तक की फ़ुर्सत नहीं। फिर भी किसी न किसी तरह चार रोज़ की रुख़्सते–इत्तफ़ाकी[5] लेकर परसों शाम की गाड़ी

1. पक्का 2. हंस–हंस कर सताने वाला 3. लम्बी–चौड़ी (पहाड़ की तरह) 4. डंके की आवाज़ पर 5. आकस्मिक अवकाश

سے نکل رہا ہوں۔ اور اگر خدانخواستہ اس میں آرام سے جگہ نہ مل سکی تو پھر بذریعہ بس پہنچنے کی کوشش کروں گا۔ میرے ساتھ حسب معمول تمہاری چاچی بھی ہوں گی۔ زیادہ کیا لکھوں تمہاری چاچی تمہیں دُعا کہتی ہیں، پچھلی بار بجلی کا پنکھا نہ ہونے کہ وجہ سے انھیں تمارے ہاں کسی قدر تکلیف ہوئی تھی اس بار ہمارے پہونچنے تک پنکھے کا بندوبست ہو جائے گا۔ خیال رہے پنکھا ایک دم بے آواز اور تیز ہوا پھینکنے والا ہو۔

زاید اشتیاق ملاقات

تمہارا چاچا

مرزا ظریف

مرزا صاحب سے صحیح معنوں میں ہماری کیا رشتہ داری ہے یہ خدا جانے یا خود مرزا صاحب۔ ویسے خود ان کا بیان ہے کہ ان کی ممیری نانی کی خالہ زاد نند اور ہمارے والد صاحب کی خالہ زاد نانی کی ممیری نند آپس میں مُنہ بولی بہنیں تھیں۔ اور اس حساب سے وہ ہمارے قریبی رشتہ دار ہوئے۔ لہٰذا ہمیں ان کا ہر ستم سہنا ہے۔ ان کے ہر حکم پر بلا چوں و چرا سر تسلیم خم کرنا ہے۔ چنانچہ ہم نے پہلے تو مر جھک کر ایک بے آواز تیز ہوا پھینکنے والے پنکھے کا بندوبست کیا۔ اور پھر علی الصبح جبکہ لوگ گرم گرم نہاری کے مزے لوٹتے ہیں ہم نے ریلوے اسٹیشن کی دھول پھانکی اور جب انتظار کی دھوپ میں تپ کر ہمارا سارا وجود پگھل گیا تب کہیں مرزا صاحب نہایت ہی ہشاش بشاش اپنی بیگم کی اُنگلی تھامے ہوئے نظر آئے۔ مرزا صاحب جسامت کے لحاظ سے ایک دم منحنی مختصر سے آدمی ہیں جبکہ ان کی کوہِ قافی بیگم بالکل ان کی اُلٹ ہیں یعنی ایک دم لحیم شحیم ہیں۔ اور ان دونوں کی اس بے جوڑ جوڑی کو دیکھ کر ہمارے ذہن میں ہمیشہ ''گلی ڈنڈے'' کا تصور جاگ اُٹھتا ہے۔ آپ نے ایسے مہمان شاذ و نادر ہی دیکھے ہوں گے (بلکہ کاہے کو دیکھے ہوں گے) جو میزبان کے بستر کپڑے، جوتے، صابن، برش، تیل غرض ہر چیز کا کچھ ایسے مالکانہ انداز سے استعمال کرتے ہیں کہ اگر کوئی نیا آدمی دیکھے تو انھیں گھر کا مالک سمجھے۔ اور اصل مالک کو مہمان۔ اس پر ستم بالائے ستم یہ کہ جاتے جاتے یہ مہمان بہت ساری چھوٹی موٹی چیزیں

से निकल रहा हूँ। और अगर खुदा नख़्वास्ता इसमें आराम से जगह न मिल सकी तो फिर बज़रिये बस पहुँचने की कोशिश करूँगा। मेरे साथ हस्बे–मामूल तुम्हारी चाची भी होंगी। ज़्यादा क्या लिखूँ तुम्हारी चाची दुआ कहती हैं, पिछली बार बिजली का पंखा न होने की वजह से उन्हें तुम्हारे यहाँ किसी क़द्र तकलीफ़ हुई थी इस बार हमारे पहुँचने तक पंखे का बंदोबस्त हो जायेगा। ख़याल रहे पंखा एक दम बे आवाज़ और तेज़ हवा फेंकने वाला हो।

ज़ायद इश्तियाके मुलाक़ात

तुम्हारा चाचा

मिर्ज़ा ज़रीफ़

मिर्ज़ा साहब से सही मानों में हमारी क्या रिश्तेदारी है यह खुदा जाने या खुद मिर्ज़ा साहब। वैसे खुद उनका बयान है कि उनकी ममेरी नानी की ख़लाज़ाद नन्द और हमारे वालिद साहब की ख़ालाज़ाद नानी की ममेरी नन्द आपस में मुँह बोली बहनें थीं। और इस हिसाब से वह हमारे क़रीबी रिश्तेदार हुए। लिहाज़ा हमें उनका हर सितम सहना है। उनके हर हुक्म पर बिला चूँ व चिरा सरे–तस्लीम ख़म करना है। चुनांचे पहले तो हमने मर झक कर एक बेआवाज़ तेज़ हवा फेंकने वाले पंखे का बन्दोबस्त किया। और फिर अलस्सुबह[1] जबकि लोग गर्म–गर्म नेहारी के मज़े लूटते हैं हमने रेलवे स्टेशन की धूल फाँकी और जब इन्तज़ार की धूप में तप कर हमारा सारा वजूद पिघल गया तब कहीं मिर्ज़ा साहब निहायत ही हश्शाश–बश्शाश अपनी बेगम की उंगली थामे हुए नज़र आये। मिर्ज़ा साहब जसामत के लिहाज़ से एकदम मुनहनी मुख़्तसर आदमी हैं जबकि उनकी कोहे–क़ाफ़ी बेगम बिल्कुल उनकी उलट हैं यानी एक दम लहीम शहीम हैं। और उन दोनों की इस बे जोड़ जोड़ी को देखकर हमारे ज़ेहन में हमेशा "गुल्ली डंडा" का तस्सवुर जाग उठता है। आप ने ऐसे मेहमान शाज़ो–नादिर ही देखे होंगे (बल्कि काहे को देखे होंगे) जो मेज़बान के बिस्तर, कपड़े, जूते, साबुन, ब्रश, तेल ग़रज़ हर चीज़ का कुछ ऐसे मालिकाना अंदाज़ से इस्तेमाल करते हैं कि अगर कोई नया आदमी देखे तो उन्हें घर का मालिक समझे। और असल मालिक को मेहमान। उस पर सितम बालाये सितम यह कि जाते जाते यह मेहमान बहुत सारी छोटी मोटी चीज़ें

1. प्रातः काल

اپنے ساتھ بٹور بھی لے جاتے ہیں۔ کیوں کی ان کی دانست میں اب یہ چیزیں بے چارے میزبان کے استعمال کے قابل نہیں رہتیں ۔ اسے ہماری بدنصیبی کہیے کہ مرزا صاحب کا شمار ایسے ہی عجوبہ روزگار مہمانوں میں ہوتا ہے۔ گھر میں داخل ہوتے ہی وہ ہمارے تمام مالکانہ حقوق زبردستی اپنے نام کروالیتے ہیں۔ ویسے وہ جب بھی ہمارے ہاں تشریف لاتے ہیں رخصتِ اتفاقی ہی لے کرآتے ہیں لیکن کچھ اتنے دِنوں تک ٹکِ جاتے ہیں کہ ان کی رخصتِ اتفاقی خود رخصتِ بیماری میں تبدیل ہو جاتی ہے۔ اِن کے مزے اُڑانے کے لیے اور ہمارے کڑھنے اور جلنے کے لئے۔

اگر مہمان بننے کی دُھن ہمارے سر میں نہ سماتی تو ہم تصور میں بھی مرزا صاحب کا نام نہ لیتے۔ لیکن اب مجبوری تھی۔ چنانچہ ان ہی کے نقشِ قدم پر چلتے ہوئے ہم نے ایک سیدھے سادے خط کے ذریعہ اُنھیں اپنی آمد کی اطلاع کردی۔ اور پھر خوشی خوشی نکلنے کی تیاری میں مصروف ہوگئے۔ لیکن چوتھے ہی روز موصوف کا ایکسپریس لفافہ ملا۔ لکھا تھا:

برخوردار ! تمہارا خط ملا اور تمہارے آنے کی اطلاع پاکر بڑی خوشی ہوئی گھر تمہارا ہے، ہم تمہارے ہیں اور یہ اسی اپنائیت کا تقاضہ ہے جو تمھیں صورتِ حال سے اچھی طرح آگاہ کرر ہا ہوں۔ اسے ہماری بدنصیبی ہی کہیے کہ ہماری ساس صاحبہ پرسوں ہی فالج کا شکار ہوگئیں، لقوے کی شکایت تو اُنھیں برسوں سے تھی ہی، بہتیرا علاج کروایا لیکن بقول شاعر ع

مرض بڑھتا گیا جوں جوں دوا کی

اور ابھی یہ پریشانی چل ہی رہی تھی کہ تمہاری چاچی کو بلڈ پریشر نے آدبوچا، اور وہ جو کہتے ہیں نا۔ ''مصیبت جب آتی ہے تو اکیلی نہیں آتی'' چنانچہ مجھے بھی گٹھیا نے کھٹیا سے لگادیا ہے۔ سچ مانو برخوردار گھر ہسپتال بن چکا ہے اور کوئی بھی صحیح الدماغ بغرض تفریح کبھی ہسپتال نہیں جاتا۔ پھر بھی گھر تمہارا ہے۔ شائد غلط لکھ گیا گھر نہیں ہسپتال کہو۔ بہرحال تمارا ہے۔ خیر یہ تو تھیں گھریلو پریشانیاں اب آؤ اس پریشانی کی طرف جس سے آج کل ساری بستی دوچار ہے۔ اور وہ ہے پانی کی قلت۔ میں تو سمجھتا ہوں دوایک روز

अपने साथ बटोर भी ले जाते हैं। क्योंकि उनकी दानिस्त में अब ये चीज़ें बेचारे मेज़बान के इस्तेमाल के काबिल नहीं रहतीं। उसे हमारी बदनसीबी कहिये कि मिर्ज़ा साहब का शुमार ऐसे ही अजूबए–रोज़गार मेहमानों में होता है। घर में दाख़िल होते ही वह हमारे तमाम मालिकाना हुकूक़ ज़बरदस्ती अपने नाम करवा लेते हैं। वैसे वह जब भी हमारे यहाँ तशरीफ़ लाते हैं रुख़सते–इत्तेफ़ाक़ी ही लेकर आते हैं लेकिन कुछ इतने दिनों तक टिक जाते हैं कि उनकी रुख़सते–इत्तेफ़ाक़ी खुद रुख़सते–बीमारी में तब्दील हो जाती है। इनके मज़े उड़ाने के लिए और हमारे कुढ़ने और जलने के लिए।

अगर मेहमान बनने की धुन हमारे सर में न समाती तो हम तसव्वुर में भी मिर्ज़ा साहब का नाम न लेते। लेकिन अब मजबूरी थी। चुनांचे उन ही के नक़्शे क़दम पर चलते हुए हमने एक सीधे सादे ख़त के ज़रिए उन्हें अपनी आमद की इत्तला कर दी। और फिर खुशी–खुशी निकलने की तैयारी में मसरुफ़ हो गये। लेकिन चौथे ही रोज़ मौसूफ़ का एक्सप्रेस लिफ़ाफ़ा मिला। लिखा था:

बरखुरदार! तुम्हारा ख़त मिला और तुम्हारे आने की इत्तला पाकर बड़ी खुशी हुई। घर तुम्हारा है, हम तुम्हारे हैं और यह इसी अपनाइयत का तक़ाज़ा है जो तुम्हें सूरते–हाल से अच्छी तरह आगाह कर रहा हूँ। इसे हमारी बद नसीबी ही कहिये कि हमारी सास साहिबा परसों ही फ़ालिज का शिकार हो गईं, लक़्वे की शिकायत तो उन्हें बरसों से थी ही, बहुतेरा इलाज करवाया लेकिन बक़ौले–शायर –

मरज़ बढ़ता गया ज्यों–ज्यों दवा की

और अभी यह परेशानी चल ही रही थी कि तुम्हारी चाची को ब्लड प्रेशर ने आ दबोचा, और वह जो कहते हैं ना "मुसीबत जब आती है तो अकेले नहीं आती" चुनांचे मुझे भी गाठिया ने खटिया से लगा दिया है। सच मानो बरखुरदार घर हस्पताल बन चुका है और कोई भी सहीउद्दिमाग़ बग़रज़े–तफ़रीह किसी हस्पताल नहीं जाता। फिर भी घर तुम्हारा है। शायद ग़लत लिख गया घर नहीं हस्पताल कहो। बहरहाल तुम्हारा है। ख़ैर यह तो थीं घरेलू परेशानियाँ अब आओ उस परेशानी की तरफ़ जिससे आज कल सारी बस्ती दोचार है। और वह है पानी की क़िल्लत। मैं तो समझता हूँ दो एक रोज़ में क़हत की सूरते–हाल का सरकारी तौर पर ऐलान कर दिया

میں قحط کی صورت حال کا سرکاری طور پر اعلان کر دیا جائے گا۔ چلو بھر پانی کے لیے لوگ ایک دوسرے کا خون بہانے کو تیار ہیں۔ حوائج ضروریہ کے سلسلہ میں ہر شخص انگریزوں کے نقشِ قدم پر چل رہا ہے۔ ردّی کے بیوپاریوں کی بن آئی ہے۔ پرانے اخبار تک اصلی قیمت سے دُگنی چوگنی قیمت پر بک رہے ہیں۔ اور برخوردار جب سے مجبوراً کاغذ کا استعمال شروع کیا ہے، تب سے اپنے اس خیال پر کوفت ہو رہی ہے کہ ہم اب تک انگریزوں کو خواہ مخواہ اس قدر نفاست پسند سمجھتے رہے ہیں۔ بہرحال خدا تمھیں ان پریشانیوں سے محفوظ رکھے۔

تمہارا خیر اندیش

مرزا ظریف

نوٹ:۔ بواپسی ٹپہ (ڈاک) اپنے ارادہ سے آگاہ کرو۔ اور اگر آنے پر کمر کس ہی لی ہے تو تمہاری چاچی کا اصرار ہے کہ آتے ہوئے تیس کلو باریک بریانی کے چاول لیتے آنا یہاں آج کل چاول بھی عنقا ہیں......!!

مرزا صاحب کے ہاں سے اِس قدر کورا جواب پا کر ہم نے لائق میاں کے ہاں تقدیر آزمانی چاہی۔ ویسے لائق میاں ہمارے کوئی خاص دوست نہیں ہیں۔ کسی زمانے میں وہ ہمارے بھائی صاحب کے ہم جماعت رہ چکے ہیں۔ آدمی چوں کہ بے حد چرب زبان اور موقع شناس ہیں اسی لیے اپنی غرض کے وقت پڑوسی کو چاچا ہی نہیں بلکہ بعض اوقات باپ بھی ماننے سے پیچھے نہیں ہٹتے۔ بمبئی میں مستقل قیام ہے اور کسی کمپنی میں سیلز مین ہیں ۔ اس لیے اِدھر اُدھر بھٹکتے رہتے ہیں۔ جب بھی ہمارے شہر میں وارد ہوتے ہیں بقول خود ان کے ہماری خیر خیریت دریافت کرنے کی غرض سے ہمارے ہاں کم از کم آٹھ دس دن قیام ضرور فرماتے ہیں اور پتہ نہیں کیوں انھیں ہمارے تولیے بہت پسند آتے ہیں جب تشریف لاتے ہیں یہی کہتے ہیں۔ میاں تمہارے شہر کے تولیے بڑے غضب کے ہوتے ہیں۔ نت نئے ڈزائن، خوب صورت رنگ اور پھر اس قدر روبیز، اس قدر ملائم۔ کچھ یوں تعریفوں کے پل باندھ کر وہی پرانا تولیہ جو پچھلی کسی چکر میں ہمارے ہاں سے اُٹھایا ہوا ہوتا

जायेगा। चुल्लू भर पानी के लिए लोग एक दूसरे का ख़ून बहाने को तैयार हैं। हवायजे–ज़रुरिया के सिलसिले में हर शख़्स अंग्रेज़ों के नक़्शे क़दम पर चल रहा है। रद्दी के व्योपारियों की बन आई है। पुराने अख़बार तक असली क़ीमत से दुगनी चौगुनी क़ीमत पर बिक रहे हैं। और बरख़ुरदार जब से मजबूरन कागज़ का इस्तेमाल शुरु किया है, तब से अपने इस ख़याल पर कोफ़्त हो रही है कि हम अब तक अंग्रेज़ों को ख़्वाह मख़्वाह इस क़द्र नफ़ासत पसंद समझते रहे। बहर हाल खुदा तुम्हें इन परेशानियों से महफ़ूज़ रखे।

तुम्हारा ख़ैर अन्देश

मिर्ज़ा ज़रीफ़

नोटः बवापसी टप्पा (डाक) अपने इरादे से आगाह करो। और अगर आने पर कमर कस ही ली है तो तुम्हारी चाची का इसरार[1] है कि आते हुए तीस किलो बारीक बिरियानी के चावल लेते आना यहाँ आज कल चावल भी उन्क़ा है.....!!

मिर्ज़ा साहब के यहाँ से इस क़द्र कोरा जवाब पाकर हम ने लायक़ मियाँ के यहाँ तक़दीर आज़मानी चाही। वैसे लायक़ मियाँ हमारे कोई ख़ास दोस्त नहीं हैं। किसी ज़माने में वह हमारे भाई साहब के हम जमाअत रह चुके हैं। आदमी चूँकि बेहद चर्ब ज़बान और मौक़ा शनास हैं इसी लिए अपनी ग़रज़ के वक़्त पड़ोसी को चाचा ही नहीं बल्कि वाज़ औक़ात बाप भी मानने से पीछे नहीं हटते। बम्बई में मुस्तक़िल क़याम है और किसी कम्पनी में सेल्समैन हैं। इसीलिए इधर–उधर भटकते रहते हैं। जब भी हमारे शहर में वारिद होते हैं बक़ौले–ख़ुद उनके हमारी ख़ैर–ख़ैरियत दरियाफ़्त करने की ग़रज़ से हमारे यहाँ कम अज़ कम आठ दस दिन क़याम ज़रुर फ़रमाते हैं और पता नहीं क्यों उन्हें हमारे तौलिए बहुत पसंद आते हैं जब तशरीफ़ लाते हैं यही कहते हैं। मियाँ तुम्हारे शहर के तौलिए बड़े ग़ज़ब के होते हैं। नित नये डिज़ाइन, ख़ूबसूरत रंग और फ़िर इस क़द्र दबीज़, इस क़द्र मुलायम। कुछ यूँ तारीफ़ों के पुल बांधकर वही पुराना तौलिया जो पिछले किसी चकर में हमारे यहाँ से उठाया हुआ होता

1. जिद

ہے چھوڑ کر نہایت ہی نالائقی کا مظاہرہ کرتے ہوئے نیا تولیہ اُٹھا لے جاتے ہیں۔ ان کی نالائقیوں کو یاد کر کے جی تو نہیں چاہتا تھا کہ لائق صاحب جیسے نالائق آدمی کے مہمان بنیں۔ لیکن مہمان بننے کی اس ضد کا بھلا ہو ان کی تمام پچھلی نالائقیوں کو بُھلانا ہی پڑا۔ ہم نے بذریعہ تار انھیں اپنے اِس ارادے سے آگاہ کر دیا لیکن دوسرے دِن دفتر پہنچے ہی تھے کہ لائق صاحب نے بذریعہ ٹرنک کال اپنی فطری نالائقی کا مظاہر شروع کر دیا۔ آپ کا تار ملا۔ بڑی خوشی ہوئی آپ کی میزبانی کا شرف حاصل کر کے۔ بخدا مجھے بڑی مسرت ہوتی لیکن کیا عرض کروں پچھلے سال آنکھوں کی جو عجیب و غریب متعدی وبا یہاں پھیلی تھی اس کے اثرات ابھی تک باقی ہیں۔ اس کے علاوہ ایک اور عرض بھی ہے۔ اب آپ سے کیا چھپانا میں خود اپنے سسُر صاحب کے سسرال میں ٹھیرا ہوا ہوں، یعنی بدقسمتی سے میں ایک گھر داماد کا داماد ہوں۔ غالبًا آپ میری مجبوری سمجھ گئے ہوں گے......"

ہم نے چاروں طرف سے مایوس ہو کر مجبوراً جلیسؔ صاحب کو تکلیف دینے کی ٹھانی۔ موصوف گرما کی چھٹیاں کم و بیش ہر سال ہمارے ہاں ہی بتاتے ہیں بمعہ اہل و عیال، پچھلے برس تو غضب ہی کر دیا تھا انھوں نے نہ صرف اہل و عیال بلکہ بمعہ سسُرال پہنچ گئے تھے۔ ہم دفتر جانے کی غرض سے باہر نکلے ہی تھے کہ جیسے زلزلہ آ گیا جلیسؔ صاحب جو بذاتِ خود کسی جلوس سے کم نہیں اپنی دو عدد ابابیلی مونچھوں سمیت ٹھوک کے حساب سے بیوی بچوں، ساس سالیوں، سالوں اور ملازموں کی فوج میں گھرے متعدد ٹرنکوں، بستروں، تھیلوں وغیرہ وغیرہ سے لدے پھندے سامنے کھڑے تھے ہم نے اس اچھی خاصی بٹالین کو دیکھ کر اپنے گھر کی طرف دیکھا۔ اور دِل ہی دِل میں سوچا عالم گیری فوج نے بھی شاید اس بے دردی سے گولکنڈہ قلعہ کا محاصرہ نہ کیا ہوگا۔ اور پھر ابوالحسن تانا شاہ کی طرح ہم نے بھی ہتھیار ڈال دیے۔ اور ایک مردہ سی مسکراہٹ کا مظاہرہ کرتے ہوئے عرض کیا۔ نہ کوئی اطلاع نہ کوئی خبر کم از کم تار دیدیتے تو روشن میاں کا ٹرک لے کر پہنچ جاتا۔ غالبًا آپ تبادلہ ہو کر یہاں آئے ہیں—" ہماری بات پر دونوں ابابیلیں پھڑ پھڑائیں۔ پھر ہم پر مسکراہٹ کی بجلی گراتے ہوئے بولے۔ میاں ! اگر اطلاع دے کر آتے تو یہ خوشی جو ہمیں اچانک دیکھ کر آپ محسوس کر رہے ہیں کہاں نصیب ہوتی؟

है छोड़कर निहायत ही नालायकी का मुज़ाहेरा करते हुए नया तौलिया उठा ले जाते हैं। उनकी नालायकियों को याद करके जी तो नहीं चाहता था कि लायक साहब जैसे नालायक आदमी के मेहमान बनें। लेकिन मेहमान बनने की इस ज़िद का भला हो इनकी तमाम नालायकियों को भुलाना ही पड़ा। हमने बज़रिए तार उन्हें अपने इस इरादे से आगाह कर दिया लेकिन दूसरे दिन दफ़्तर पहुँचे ही थे कि लायक साहब ने बज़रिए ट्रंक कॉल अपनी फ़ितरी नालायकी का मुज़ाहेरा शुरु कर दिया। आपका तार मिला। बड़ी ख़ुशी हुई आपकी मेज़बानी का शरफ़ हासिल करके। बख़ुदा मुझे बड़ी मुसर्रत होती लेकिन क्या अर्ज़ करुँ पिछले साल आँखों की जो अजीबो–ग़रीब मुतअद्दी वबा[1] यहाँ फ़ैली थी कि उसके असरात अभी तक बाक़ी हैं। इसके अलावा एक और अर्ज़ भी है। अब आपसे क्या छुपाना मैं खुद अपने ससुर साहब की ससुराल में ठहरा हुआ हूँ, यानी बदक़िस्मती से मैं एक घर दामाद का दामाद हूँ। ग़ालेबन आप मेरी मजबूरी समझ गये होंगे....."

हमने चारों तरफ़ से मायूस होकर जलीस साहब को तकलीफ़ देने की ठानी। मौसूफ़ गरमा की छुट्टियाँ कमो–बेश हर साल हमारे यहाँ ही बिताते हैं। बमय अहलो–अयाल, पिछले बरस तो ग़ज़ब ही कर दिया था उन्होंने न सिर्फ़ बअहलो–अयाल बल्कि बमय ससुराल पहुँच गये थे। हम दफ़्तर जाने की ग़रज़ से बाहर निकले ही थे कि जैसे ज़लज़ला आ गया जलीस साहब जो बज़ाते–खुद किसी जुलूस से कम नहीं अपनी दो अदद अबाबीली मूंछों समेत थोक के हिसाब से बीवी बच्चों, सास सालियों, सालों और मुलाज़िमों की फ़ौज में घिरे मुतअद्दिद ट्रंकों, बिस्तरों, थैलों वग़ैरह–वग़ैरह से लदे सामने खड़े थे। हमने इस अच्छी ख़ासी बटालियन को देखकर अपने घर की तरफ़ देखा। और दिल ही दिल में सोचा आलमगीरी फ़ौज ने भी शायद इस बेदर्दी से गोलकुंडा क़िले का मोहासरा[2] न किया होगा। और फिर अबुल हसन तानाशाह की तरह हम ने भी हथियार डाल दिये। और एक मुर्दा सी मुस्कुराहट का मोज़ाहेरा करते हुए अर्ज़ किया। न कोई इत्तला न कोई ख़बर कम अज़ कम तार तो दे देते तो रौशन मियाँ का ट्रक लेकर पहुँच जाता। ग़ालेबन आप तबादला होकर यहाँ आये हैं–" हमारी बात पर दोनो अबाबीलें फड़फड़ाईं। फिर हम पर मुस्कराहट की बिजली गिराते हुए बोले। मियाँ! अगर इत्तला देकर आते तो यह ख़ुशी जो हमें अचानक देखकर आप महसूस कर रहे हैं कहाँ नसीब होती?

---

1. एक से दूसरे को लगने वाली बीमारी 2. घेराव

عرض کیا۔ "بجا فرمایا آپ نے۔ کیا کہنے اِس خوشی کے۔ مجھے تو ڈر لگ رہا ہے کہیں مارے خوشی کے شادیٔ مرگ نہ ہو جائے۔

جواب میں موصوف نے ایک فاتحانہ قہقہہ لگایا۔ اور پھر ہمارے دیکھتے ہی دیکھتے موصوف کی سرکردگی اس فوج ظفر موج نے گھر کے چپہ چپہ پر قبضہ جمالیا اور ہماری حیثیت ایک تباہ حال لٹے لٹائے مسافر کی سی ہوگئی۔ اور اتنے پر بس نہیں ہوا۔ موصوف کی ساس صاحبہ نے تو انتہا کردی۔ بے کھٹکے ہم پر بھی حکم چلانے لگیں۔ کئی بار جی چاہا کہ دوٹوک کہہ دیں۔ محترمہ آپ کے داماد کے دوست ہیں داماد نہیں لیکن ہر بار یہی سوچ کر چپ ہو جاتے کہ ہندوستانی مرد ساس کے سلسلہ میں بے حد جذباتی ہوتا ہے۔ وہ بیوی کو چاہے رانی سمجھے یا باندی لیکن ساس کو ہر حال میں ملکۂ وکٹوریہ سمجھتا ہے۔ چنانچہ ہم نے بھی جلیس صاحب کی ساس کو ملکۂ وکٹوریہ تسلیم کرلیا اور ان کا ہر حکم بجالانے لگے۔

اِسے بھی ہماری بدقسمتی کہیے کہ اولاد کے سلسلہ میں بھی موصوف بے انتہا خوش قسمت واقع ہوئے ہیں۔ اگر انھیں شہر کے کسی فیملی پلاننگ سنٹر پر اپنے بال بچوں سمیت گلے میں یہ تحریر لٹکوا کر کہ دیکھو مجھے جو دیدۂ عبرت نگاہ ہو بٹھا دیا جائے تو فیملی پلاننگ کے پرچار میں بڑی مدد مل سکتی ہے۔ جو سائز اور رنگ کہیں اور نہ نظر آتا ہو وہ ان کے ہاں دیکھ لیجیے۔

ایک روز ہم دفتر سے تھکے ہارے گھر لوٹ کر دیکھتے کیا ہیں کہ موصوف کے برخوردار نمبر آٹھ بڑے ہی انہماک سے کسی چیز کے بخیے اُدھیڑنے میں مصروف ہیں ان کے چاروں طرف ساری مڑی تڑی کاڑیاں اور کالے کپڑے کی دھجیاں بکھری پڑی ہیں۔ پہلے تو ہماری سمجھ میں نہیں آیا کہ یہ اجزائے پریشاں آخر کس شئے کے ہیں لیکن جب ذہن میں انھیں ترتیب دیا تو جی چاہا کہ سر پیٹ لیں۔ وہ ہماری چھتری کے اجزائے پریشاں تھے۔ کانپتے ہاتھوں سے ہم نے اپنی شہید چھتری کے اجزائے پریشان اکٹھے کیے، اسی پل بیگم جلیس کمرے میں داخل ہوئیں اور لٹھ مار سلام جھاڑنے کے بعد اپنے ہونہار سے بولیں دیکھو چھوٹو چاچا آگئے۔ ان کی چھتری واپس کردو۔

بھابی چھتری مل گئی۔ ہم نے چھتری کے اجزائے پریشاں اُنھیں دکھاتے

अर्ज़ किया। "बजा फ़रमाया आपने। क्या कहने इस खुशी के। मुझे तो डर लग रहा है कहीं मारे खुशी के शादिए–मर्ग[1] न हो जाय।"

जवाब में मौसूफ़ ने एक फ़ातेहाना कहक़हा लगाया। और फिर हमारे देखते ही देखते मौसूफ़ की सर करदगी में उस फ़ौजे–ज़फ़र मौज ने घर के चप्पे–चप्पे पर क़ब्ज़ा जमा लिया और हमारी हैसियत एक तबाह हाल लुटे–लुटाये मुसाफ़िर की सी हो गई। और इतने पर बस नहीं हुआ। मौसूफ़ की सास साहिबा ने तो इन्तहा कर दी। बे खटके हम पर हुक्म चलाने लगीं। कई बार जी चाहा कि दो टूक कह दें। मोहतरमा आपके दामाद के दोस्त हैं दामाद नहीं लेकिन हर बार यही सोचकर चुप हो जाते कि हिन्दुस्तानी मर्द सास के सिलसिले में बेहद जज़्बाती होता है। वह बीवी को चाहे रानी समझे या बांदी लेकिन सास को हर हाल में मल्कए–विक्टोरिया समझता है। चुनांचे हम ने भी जलीस साहब की सास को मल्कए–विक्टोरिया तस्लीम कर लिया और उनका हर हुक्म बजा लाने लगे।

इसे भी हमारी बदक़िस्मती कहिये कि औलाद के सिलसिले में मौसूफ़ बे इन्तहा खुश क़िस्मत वाक़े हुए हैं। अगर उन्हें शहर के किसी फ़ैमली प्लानिंग सेंटर पर अपने बाल बच्चों समेत गले में यह तहरीर लटकवाकर कि देखो मुझे जो दीदए–इबरत निगाह हो, बैठा दिया जाए तो फ़ैमली प्लानिंग के प्रचार में बड़ी मदद मिल सकती है। जो साइज़ और रंग कहीं और न नज़र आता हो वह उनके यहाँ देख लीजिये।

एक रोज़ हम दफ़्तर से थके हारे घर लौटक़र देखते हैं कि मौसूफ़ के बरखुरदार नम्बर आठ बड़े ही इन्हमाक से किसी चीज़ के बख़िये उधेड़ने में मसरुफ़ हैं उनके चारों तरफ़ सारी मुड़ी–तुड़ी काड़ियाँ और काले कपड़े की धज्जियाँ बिखरी पड़ी हैं। पहले तो हमारी समझ में नहीं आया कि यह अजज़ाए–परेशाँ[2] आख़िर किस शय के हैं लेकिन जब ज़ेहन में उनन्हें तरतीब दिया तो जी चाहा सर पीट लें। वह हमारी छतरी के अजज़ाए–परेशाँ थे। काँपते हाथों से हमने अपने शहीद छतरी के अजज़ाए–परेशाँ इकट्ठा किए, उसी पल बेगम जलीस कमरे मे दाख़िल हुई और लठमार सलाम झाड़ने के बाद अपने होनहार से बोलीं देखो छोटू चाचा आ गये हैं। उनकी छतरी वापस कर दो।

भाभी छतरी मिल गई। हमने छतरी के अजज़ाए–परेशाँ उन्हें दिखाते हुए कहा।

---

1. मरने की खुशी 2. बिखरे हुए टुकड़े

ہوئے کہا۔

ارے چھوٹو! یہ کیا کر دیا تم نے۔ ! بیگم جلیس نے بڑے کمال ضبط سے ہنسی روکتے ہوئے مصنوعی غصہ کا اظہار کیا۔ پھر مزید بولیں ۔ کیا بتاؤں بھائی صاحب، چھوٹو کی اِن حرکتوں سے میں تو تنگ آچکی ہوں ۔ کوئی چیز صحیح سلامت نہیں رہنے دیتا اور اس کے ابا ہیں کہ اس کی اِن حرکتوں پر فخر سے کہتے ہیں کہ یہ بڑا ہو کر بہت بڑا انجینیر بنے گا۔" اسی پل جلیس صاحب داخل ہوئے اور بات اُچک کر بولے "دریں چہ شک" کیا میں غلط کہتا ہوں سلیم صاحب۔"

جی نہیں۔ "ہم نے بہ ہزار دقت مسکرا کر کہا۔ آپ بالکل درست کہتے ہیں آپ کے برخوردار تو پیدائشی انجینیر ہیں۔ ثبوت کے طور پر یہ چھتری ملاحظہ فرمایئے۔ چھتری کے اُدھیڑے ہوئے بخیے کو دیکھ کر موصوف پر ہنسی اور کھانسی کا ملا جُلا دورہ پڑ گیا۔ بدقت تمام اِس سے نجات پا کر جلتی پر تیل چھڑکنے والے انداز میں بولے۔ غالباً چھتری بہت پرانی تھی۔"

عرض کیا۔ جی ہاں کافی پرانی، ابھی چھ مہینے پہلے خریدی تھی......!!

دو چار روز بعد ایک اور ذہنی جھٹکے سے دوچار ہوئے۔ دفتر سے لوٹ کر کمر سیدھی کرنے کی غرض سے صوفے پر لیٹنے ہی والے تھے کہ بیگم جلیس فل ٹون (Full Tone) میں چلائیں۔ "بھائی صاحب صوفہ پر مت لیٹیے پھٹا ہوا ہے۔ "اس اطلاع پر ہم لرز اُٹھے ابھی مہینہ بھر پہلے ہی تو بڑے چاؤ سے خریدا تھا۔ آخر پھٹ کیسے گیا۔ ہم نے سوالیہ نظروں سے بیگم صاحبہ کی طرف دیکھا۔ اور وہ ہنس کر بولیں۔ "آپ آج شاید جلدی میں بلیڈ کھلی چھوڑ گئے تھے اور وہ موٹو کے ہاتھ لگ گئی۔

اور آگے جو کچھ ستم ہمارے واحد صوفے پر ہوا ہوگا اس کا تصور ہی کر کے ہمارے رونگٹے کھڑے ہوگئے۔ بیگم صاحبہ بدستور بڑے فخریہ انداز میں کہے جا رہی تھیں "چیر پھاڑ کا بہت شوق ہے موٹو کو۔ اس سے یہی اندازہ ہوتا ہے کہ بڑا ہو کر ضرور ڈاکٹر بنے گا۔"

کیوں نہیں۔ پوت کے پاؤں تو پالنے میں ہی نظر آجاتے ہیں۔ دیکھیے تو

अरे छोटू! यह क्या कर दिया तुमने! बेगम जलीस ने बड़े कमाले–ज़ब्त से हंसी रोकते हुए मस्नुई[1] गुस्से का इज़हार किया। फिर मज़ीद बोलीं। क्या बताऊँ भाई साहब, छोटू की इन हरकतों से तो मैं तंग आ चुकी हूँ। कोई चीज़ सही सलामत नहीं रहने देता और इसके अब्बा हैं कि इस की इन हरकतों पर फ़ख़्र से कहते हैं कि यह बड़ा होकर बहुत बड़ा इंजीनियर बनेगा।" उसी पल जलीस साहब दाख़िल हुए और बात उचक कर बोले "दरीं चे शक"[2] क्या मैं ग़लत कहता हूँ सलीम साहब।"

जी नहीं। हमने ब हज़ार दिक़्क़त मुस्कुरा कर कहा। आप बिल्कुल दुरुस्त कहते हैं आपके बरखुरदार तो पैदाइशी इंजीनियर हैं। सबूत के तौर पर यह छतरी मुलाहेज़ा फ़रमाइये। छतरी के उधड़े हुए बख़िये को देखकर मौसूफ़ पर हंसी और ख़ाँसी का मिला जुला दौरा पड़ गया। ब दिक़्क़त तमाम इससे निजात पाकर जलती पर तेल छिड़कने वाले अंदाज़ में बाले। ग़ालेबन छतरी बहुत पुरानी थी।

अर्ज़ किया। जी हाँ काफ़ी पुरानी, अभी छः महीने पहले ख़रीदी थी......!!

दो चार रोज़ बाद एक और ज़ेहनी झटके से दो चार हुए। दफ़्तर से लौटकर कमर सीधी करने की ग़रज़ से सोफ़े पर लेटने ही वाले थे कि बेगम जलीस फुल टोन ;थ्नसस ज्वदमद्ध में चिल्लायीं। "भाई साहब सोफ़े पर मत लेटिए फटा हुआ है।" इस इस्लाह पर हम लरज़ उठे अभी महीने भर पहले ही तो बड़े चाव से ख़रीदा था। आख़िर फट कैसे गया। हम ने सवालिया नज़रों से बेगम साहिबा की तरफ़ देखा। और वह हंस कर बोलीं। "आप आज शायद जल्दी में ब्लेड खुली छोड़ गये थे और वह मोटू के हाथ लग गई।"

और आगे जो कुछ सितम हमारे वाहिद सोफ़े पर हुआ होगा उसका तसव्वुर ही करके हमारे रोंगटे खड़े हो गये। बेगम साहिबा बदस्तूर फ़ख़्रिया अंदाज़ में कहे जा रही थीं "चीर–फाड़ का बहुत शौक़ है मोटू को। इससे यही अंदाज़ा होता है कि बड़ा होकर ज़रुर डाक्टर बनेगा।"

क्यों नहीं। पूत के पाँव तो पालने में ही नज़र आ जाते हैं। देखिये तो

1. बनावटी 2. इसमें क्या शक

کس چابک دستی سے بلیڈ چلائی ہے۔ اب کوئی ماہر کاریگر بھی اس صوفہ کی مرمت نہیں کر سکتا۔ ہمیں مجبوراً اُن کی ہاں میں ہاں ملانی پڑی۔

خدا خدا کر کے چھٹیاں ختم ہوئیں۔ اور وہ لوگ پورے ایک مہینہ تک ہم پر ہمارے گھر پر شان سے حکومت کرنے کے بعد گھر کی اینٹ سے اینٹ بجا کر ساری بنیادیں ہلا کر کسی فاتح کی طرح سدھارے اور ان کے جانے کے بعد ہم نے اپنے گھر کی خستہ حالی کو دیکھ کر سوچا۔ غالباً نادر شاہ نے بھی دلّی کو اس بے دردی سے نہیں اُجاڑا ہوگا۔ گھر کی ہر شئے سے یتیمی برس رہی تھی۔ ہر میز، ہر کرسی لنگڑی ہو چکی تھی۔ ریڈیو جو دُنیا بھر کے اسٹیشن پکڑتا تھا ٹیوننگ (Tuning) کی ڈوری ٹوٹ جانے کی وجہ سے اب ایک ایسے اسٹیشن پر اٹکا ہوا تھا جہاں کی زبان سے ہم قطعی ناواقف تھے۔ ڈرائنگ رُوم اصطبل میں تبدیل ہو چکا تھا۔ بیڈروم باورچی خانے میں۔ اور باورچی خانہ بیت الخلاء میں الغرض سارے گھر کا نقشہ بگڑ چکا تھا۔ اور گھر کو واپس گھر کی شکل میں لانے کے لئے ہمیں جو پاپڑ بیلنے پڑے وہ تو کچھ ہم ہی جانتے ہیں۔

خیر مرزا صاحب اور لائق میاں کی طرف سے ہم مایوس ہو چکے تھے اب آخری سہارا جلیسؔ صاحب کا تھا ابھی گرمی کی چھٹیاں شروع ہونے میں کافی دِن تھے اس لیے ہم نے سوچا اس سے پہلے کہ جلیسؔ صاحب آدھمکیں کیوں نہ ہم خود اچانک ان کے ہاں پہنچ جائیں چنانچہ فوراً ہی رختِ سفر باندھا اور ٹیکسی کی تلاش میں باہر نکلے ہی تھے کہ پھر زلزلہ آ گیا زمین گردش کرنے لگی، آسمان گرتا ہوا محسوس ہوا۔ جلیسؔ صاحب بمعہ جلوس کے پھر موجود تھے۔ ہم نے بدقت تمام ان سے پوچھا اس بار جلدی کیسے آنا ہوا۔ آپ تو ہمیشہ بچوں کے امتحانات کے بعد ہی تشریف لاتے ہیں۔

مسکرا کر بولے۔ ''میاں یہ سب تلنگانہ تحریک کی کارستانی ہے بچوں کے امتحانات ایک غیر معینہ مدّت تک کے لیے ملتوی کر دیئے گئے ہیں۔

پھر ہمارے ہاتھ میں سوٹ کیس دیکھ کر پوچھا، کیا آپ کہیں جا رہے ہیں؟

''جی ہاں۔ مہینہ بھر کے لیے ٹور پر جا رہا ہوں۔'' ہم نے فوراً بہانہ بنایا۔

گھر مقفل کر کے؟ میاں دیکھتے نہیں ہو، زمانہ کس قدر بُرا ہے۔ آج کل

किस चाबुक–दस्ती से ब्लेड चलाई है। अब कोई माहिर कारीगर भी इस सोफ़े की मरम्मत नहीं कर सकता। हमें मजबूरन उनकी हाँ में हाँ मिलानी पड़ी।

खुदा खुदा करके छुट्टियाँ ख़त्म हुईं। और वह लोग पूरे एक महीने तक हम पर हमारे घर पर शान से हुकूमत करने के बाद घर की ईंट से ईंट बजाकर सारी बुनयादे हिलाकर किसी फ़ातेह की तरह सिधारे और उनके जाने के बाद हमने अपने घर की ख़स्ता–हाली को देखकर सोचा। ग़ालेबन नादिर शाह ने भी दिल्ली को इस बेदर्दी से नहीं उजाड़ा होगा। घर की हर शय से यतीमी बरस रही थी। हर मेज़, हर कुर्सी लंगड़ी हो चुकी थी। रेडियो जो दुनिया भर के स्टेशन पकड़ता था टयूनिंग (Tuning) की डोरी टूट जाने की वजह से अब एक ऐसे स्टेशन पर अटका हुआ है जहाँ की ज़बान से हम क़तई नावाक़िफ़ थे। ड्राइंग रुम अस्तबल में तब्दील हो चुका था। बेडरुम बावरची ख़ाने में। और बावरची ख़ाना बैतुलख़ला में। अलग़रज़ सारे घर का नक़्शा बिगड़ चुका था। और घर को वापिस घर की शक्ल में लाने के लिए हमें जो पापड़ बेलने पड़े वह तो कुछ हम ही जानते हैं।

ख़ैर मिर्ज़ा साहब और लायक़ मियाँ की तरफ़ से हम मायूस हो चुके थे अब आख़िरी सहारा जलीस साहब का था। अभी गर्मी की छुट्टियाँ शुरु होने में काफ़ी दिन थे इसलिए हमने सोचा इससे पहले कि जलीस साहब आ धमकें क्यों न हम खुद अचानक उनके यहाँ पहुँच जायें चुनांचे फ़ौरन ही रख़्ते–सफ़र[1] बांधा और टैक्सी की तलाश में बाहर निकले ही थे कि फिर ज़लज़ला आ गया, ज़मीन गर्दिश करने लगी, आसमान गिरता हुआ महसूस हुआ। जलीस साहब ब मय जुलूस के फिर मौजूद थे। हमने ब दिक़्क़त तमाम उनसे पूछा इस बार जल्दी कैसे आना हुआ। आप तो हमेशा बच्चों के इम्तहानात के बाद ही तश्रीफ़ लाते हैं।

मुस्करा कर बोले। "मियाँ यह सब तिलंगाना तहरीक की कारिस्तानी है बच्चों के इम्तहानात एक ग़ैर मुअय्यना मुद्दत तक के लिए मुल्तवी कर दिये गये हैं।"

फिर हमारे हाथ में सूटकेस देखकर पूछा, क्या आप कहीं जा रहे हैं?

"जी हाँ। महीना भर के लिए टूर पर जा रहा हूँ" हमने फ़ौरन बहाना बनाया।

घर मुक़फ़्फ़ल[2] करके? मियाँ देखते नहीं हो, ज़माना किस क़द्र बुरा है। आज कल के चोर उचक्के मकीनों की मौजूदगी में घरों में झाड़ू

1. सफ़र का सामान 2. ताला लगाकर

کے چور اچکے مکینوں کی موجودگی میں گھروں پر جھاڑو پھیر دیتے ہیں۔ وہ تو اچھا ہوا کہ ہم بڑے موقع پر پہنچ گئے۔ لائیے چابی مجھے دیجیے۔

ان کا انداز کچھ ایسا تھا کہ ہمیں چابی دینا ہی پڑی۔ چابی لینے کے بعد بولے اب آپ اطمینان سے جائیے۔ ہمارے ہوتے ہوئے یہاں چور کیا چور کا چاچا بھی پر نہیں مار سکتا۔

درست فرمایا۔ جہاں آپ ہوں وہاں چوروں کی کیا ضرورت۔ ہم نے دل ہی دل میں کہا۔ اور پھر ایک سستے سے ہوٹل کا رخ کیا۔ اب ہمیں اپنے گھر کے ہوتے ہوئے اس وقت تک کسی ہوٹل میں ٹھہرنا تھا جب تک کہ جلیس صاحب واپس نہیں لوٹ جاتے......!!

• • • •

फेर देते हैं। वह तो अच्छा हुआ कि हम बड़े मौके पर पहुँच गये। लाइये चाबी मुझे दीजिये।

उनका अंदाज़ कुछ ऐसा था कि हमें चाबी देना ही पड़ी। चाबी लेने के बाद बोले अब आप इत्मीनान से जाइये। हमारे होते हुए यहाँ चोर क्या चोर का चाचा भी पर नहीं
मार सकता।

दुरुस्त फ़रमाया। जहाँ आप हों वहा चोरों की क्या ज़रुरत। हमने दिल ही दिल में कहा। और फिर एक सस्ते से होटल का रुख़ किया। अब हमें अपने घर के होते हुए उस वक़्त तक किसी होटल में ठहरना था जब तक जलीस साहब वापस नहीं लौट जाते.......!!

● ● ● ●

رؤف خوشتر

کُل ہند مچھر کانفرنس

معتمد مچھر: (مچھروں سے مخاطب ہو کر) مجھے خوشی ہے کہ آپ ہماری دعوت پر بھنبھناتے ہوئے ملک کے گوشہ گوشہ سے اُڑ کر یہاں آئے ہیں۔ ہم نے اپنی کانفرنس کے لیے اس تاریک ہال کو اس لیے منتخب کیا ہے کہ ابھی کچھ دیر بعد یہاں وزیر کا جلسہ ہونے والا ہے۔ ظاہر ہے شرکاء میں بڑی تعداد توند والے ہوں گے جن کے سینوں میں بجائے دردمندی کے خون سے بھرا ہو دل ہوگا۔ بس یوں سمجھیے کہ ہمارے لیے خون کی بڑی اور بھری بوتلیں آ رہی ہیں۔ منھ کھول کر چوس لیجیے۔ ع

دعوتِ عام ہے یارانِ مچھروں کے لیے

(شکریہ کی بھنبھناہٹ ہال میں گونجتی ہے)

معتمد مچھر: حاضرین کرام۔ میں آج اس تاریک ہال و تاریخ ساز کانفرنس کے لیے ہمارے معمر و معزز مچھر کو زحمت دوں گا۔ موصوف کے جدِ امجد وہ ممتاز مچھر تھے جنہوں نے مغرور نمرود کے سر میں گھس کر اُسے مارا۔ کہتے ہیں، جب

कुल हिन्द मच्छर कान्फ़्रेंस

मुअतमद[1] मच्छर :(मच्छरों से मुख़ातिब होकर) मुझे ख़ुशी है कि आप हमारी दावत पर भिनभिनाते हुए मुल्क के गोशे–गोशे से यहाँ उड़कर आये हैं। हम ने अपनी कान्फ़्रेंस के लिए इस तारीक हॉल को इसलिए मुन्तख़ब किया है कि अभी कुछ देर बाद यहाँ वज़ीर का जलसा होने वाला है। ज़ाहिर है शोरका में बड़ी तादाद तोंद वाले होंगे जिनके सीनों में बजाए दर्दमन्दी के ख़ून से भरा दिल होगा। बस यूँ समझिये कि हमारे लिए ख़ून की बड़ी–बड़ी बोतलें आ रही हैं। मुँह खोल कर चूस लीजिये –

दावते आम है याराने–मच्छरों के लिए

(शुक्रिया की भिनभिनाहट हॉल में गूंजती है)

मुअतमद मच्छर : हाज़रीने–कराम! मैं आज इस तारीक हॉल व तारीख़ साज़ कान्फ़्रेंस के लिए हमारे मुअम्मर[2] व मुअज़्ज़िज़ मच्छर को ज़हमत दूँगा। मौसूफ़ के जद्दे–अमजद[3] वह मुमताज़ मच्छर थे जिन्होंने मग़रुर नमरुद के सर में घुस कर उसे मारा। कहते हैं, जब जब नमरुद शिद्दते–ग़म से

1. सिक्रेट्री 2. बूढ़े 3. दादा

نمرود شدتِ درد سے تڑپتا تھا تو بیگم نمرود اپنی زلفوں کو کھولے فریاد کرتی تھی کہ۔ ع

کوئی مچھر سے نہ مارے میرے دیوانے کو

صدر جلسہ کے کارنامے بھی کچھ کم نہیں۔ آپ نے جرمنی کا سفر کر کے وہاں اس شخص کا خون چوس لیا جس نے ہزاروں انسانوں کا خون چوسا تھا۔ جسے یوں تو اس کے ماں باپ ہٹلر کہتے تھے۔ لیکن مورخ ہو لیے نہ کوئی نام بھی مچھر کہے بغیر۔

(معمر مچھر مسند صدارت پر جلوہ افروز ہوتا ہے)

ایک مچھر: مجھے ان کی صدارت پر اس لیے اعتراض ہے کہ یہ محترم طبقاتی سماج میں یقین رکھتے ہیں۔ نسلی تعصب ان کے پَر پَر میں بھرا ہوا ہے۔ یہ صرف اپنے قبیلے کو ہی خالص نسل بتلاتے ہیں۔ ان کا نعرہ ہے کہ کمزور مچھروں کو زندہ رہنے کا کوئی حق نہیں۔ ایسے گمراہ کن خیالات ان میں کہاں سے آئے؟

ایک آواز: ان کی رگوں میں ہٹلر کا خون جو دوڑ رہا ہے۔

صدر مچھر: (بہ آواز بلند) رگوں میں دوڑتے پھرنے کے ہم نہیں قائل۔

معتمد مچھر: خاموش رہیے۔ عزیزو! اس کانفرنس میں سماج، طبقہ، نسل اور قبیلہ جیسی اصطلاحیں گھسیٹ کر اس کانفرنس کو انسانی کانفرنس نہ بنائیے۔ آخر اشرف المخلوقات اور مچھر ان بلا ذات و پات میں کچھ تو فرق ہونا چاہیے۔

بھائیو! اس دور میں ہماری بقاء کو زبردست خطرہ لاحق ہو گیا ہے۔ انسان اب پہلے سے زیادہ ہوشیار اور مکار ہو گیا ہے۔ اس کی پالیسی یک طرفہ ہے۔ یعنی وہ چاہتا ہے کہ وہ کسی کا بھی خون چوس لے، لیکن یہ گوارا نہیں کہ کوئی اس کا خون چوس لے مجھے ڈر ہے کہ روئے زمین سے ہماری نسل ہی نہ ختم ہو جائے۔

آپ تمام مندوبین سے درخواست ہے کہ اپنے مشکلات اور مسائل پیش کریں تا کہ ان کا حل تلاش کیا جائے۔

तड़पता था तो बेगम नमरुद अपनी ज़ुल्फ़ों को खोले फ़रयाद करती थी कि –

कोई मच्छर से न मारे मेरे दीवाने को

सद्रे–जलसा के कारनामे भी कुछ कम नहीं। आपने जर्मनी का सफ़र करके वहाँ उस शख़्स का ख़ून चूस लिया जिसने हज़ारों इन्सानों का ख़ून चूसा था। जिसे यूँ तो उसके माँ बाप हिटलर कहते थे। लेकिन मुअर्रिख़[1] हो लिये न कोई नाम भी मच्छर कहे बग़ैर।

(मुअम्मर मच्छर मसनदे–सदारत पर जलवा अफ़रोज़ होता है)

एक मच्छर : मुझे इनकी सदारत पर इसलिये एतराज़ है कि ये मोहतरम तबक़ाती समाज में यक़ीन रखते हैं। नसली तआसुब उनके पर–पर में भरा हुआ है। यह सिर्फ़ अपने क़बीले को ही ख़ालिस नस्ल बतलाते हैं। इनका नारा है कि कमज़ोर मच्छरों को ज़िंदा रहने का कोई हक़ नहीं। ऐसे गमराहकुन ख़यालात इनमें कहाँ से आये?

एक आवाज़ : इनकी रगों में हिटलर का ख़ून जो दौड़ रहा है।

सद्र मच्छर : (बआवाज़े–बुलन्द) रगों में दौड़ते फिरने के हम नहीं क़ायल।

मुअतमद मच्छर : ख़ामोश रहिये! अज़ीज़ो! इस कान्फ़्रेंस में समाज, तबक़ा, नस्ल और क़बीला जैसी इस्तलाहें घसीट कर इस कान्फ़्रेंस को इन्सानी कान्फ़्रेंस न बनाइये। आख़िर अशरफ़ुलमख़लूक़ात[2] और मच्छराने–बिला ज़ातो–पात में कुछ तो फ़र्क़ होना चाहिये। भाइयों! इस दौर में हमारी बक़ा को ज़बरदस्त ख़तरा लाहक़ हो गया है। इंसान अब पहले से ज़्यादा होशियार और मक्कार हो गया है। उसकी पॉलिसी एक तरफ़ा है। यानी वह चाहता है कि वह किसी का भी ख़ून चूस ले, लेकिन यह गवारा नहीं कि कोई उसका ख़ून चूस ले मुझे डर है कि रुए–ज़मीन से हमारी नस्ल ही न ख़त्म हो जाये। आप तमाम मंदूबीन[3] से दरख़्वास्त है कि अपनी मुश्किलात और मसायल पेश करें ताकि उनका हल तलाश किया जाये।

---

1. इतिहासकार 2. आदमी 3. मेम्बर, कार्यकर्ता

دیہی مچھر: یہ امر باعثِ مسرّت ہے کہ اب دیہی باشندے بھی شہری باشندوں کی طرح سُست اور تن پرور ہوتے جا رہے ہیں اب وہ بھی روز نہاتے نہیں۔ اب دیہاتوں میں ہماری پناہ گاہیں یعنی سنیما ہال اور ہوٹل کھل رہے ہیں۔

(سفید مچھر داخل ہوتے ہیں)

معتمد مچھر: کیا آپ کسی سرد ملک سے تشریف لا رہے ہیں؟

سفید مچھر: غالباً ہمارے رنگ کی وجہ سے آپ یہ سوال پوچھ رہے ہیں۔ جیسا خون ویسی رنگت ہوگی۔ اب بڑے بڑے شہروں میں سفید خون ہی مل رہا ہے۔ سرد مہری اب ہماری قومی خصوصیت بن گئی ہے۔

بوڑھا مچھر: (ٹھنڈی سانس بھر کر) نوجوانو! تم خوش قسمت ہو کہ اب حسینوں اور مہ جبینوں کو من پسند طریقوں سے آزادانہ چوم سکتے ہو۔ ہماری جوانی میں عورتیں باحیا اور پردہ دار ہوتی تھیں اور ہمیں بہ مشکل ان کی ہتھیلیوں کو ہی چومنے کا موقع ملتا تھا۔ اب تو خیر آپ کو ہر طرف سے آزادی ہے۔

ہپّی مچھر: جناب ہماری حالتِ زار کا یہی راز ہے کہ ہمارا طریقہ وار فرسودہ اور احمقانہ ہے۔ اب ہمیں حضرتِ انسان پر خاموشی سے حملہ کرنا ہوگا۔ کلاسیکی انداز میں گنگنانے سے وہ ہمیں مارنے کے لیے ہاتھوں ہاتھ لیتا ہے۔

صدر مچھر: نہیں نہیں۔ ہم مکاری سے حملہ نہیں کریں گے۔ آخر ہمارے اور انسان کے طریقۂ وار میں کچھ تو فرق ہونا چاہیے۔ ہم اپنا قومی ترانہ گاتے ہوئے انسان پر حملہ کریں گے۔ چاہے اس میں ہم شہید ہی کیوں نہ ہو جائیں۔

(چند موٹے تازے مچھر داخل ہوتے ہیں)

معتمد مچھر: کیا آپ کسی صحت افزا مقام سے تشریف لا رہے ہیں؟

صحت مند مچھر: نہیں جناب ہم ملک کی راجدھانی سے آ رہے ہیں۔ خوش قسمتی سے ہمارا حلقہ پارلیمنٹ ہاؤس ہے۔ یہی مقام ہماری صحت کا ضامن ہے۔ یہاں ہمیں سارے ملک کا خون دستیاب ہے۔ گویا ہم گھاٹ گھاٹ کا پانی پینے والے کا خون چوستے ہیں۔ وہاں بڑی آسانی سے تازہ سرخ اور صحت

देही मच्छर : यह अमर बाअसे मुसर्रत है कि अब देही बाशिंदे भी शहरी बाशिंदों की तरह सुस्त और तनपरवर होते जा रहे हैं अब वह भी रोज़ नहाते नहीं। अब देहातों में हमारी पनाहगाहें यानी सिनेमा हॉल और होटल खुल रहे हैं।

(सफेद मच्छर दाख़िल होते है)

मुअतमद मच्छर : क्या आप किसी सर्द मुल्क से तशरीफ़ ला रहे हैं?

सफेद मच्छर : ग़ालेबन हमारे रंग की वजह से आप यह सवाल पूछ रहे हैं। जैसा ख़ून वैसी रंगत होगी। अब बड़े–बड़े शहरों में सफेद ख़ून ही मिल रहा है। सर्द मेहरी[1] अब हमारी क़ौमी खुसूसियत बन गई है।

बूढ़ा मच्छर : (ठंडी सांस भर कर) नौजवानों! तुम खुशक़िस्मत हो कि अब हसीनों और महजबीनों को मन पसंद तरीक़ों से आज़ादाना चूम सकते हो। हमारी जवानी में औरतें बा–हया और पर्दा दार होती थीं और हमें ब मुश्किल इन की हथेलियों को ही चूमने का मौक़ा मिलता था। अब तो ख़ैर आप को हर तरफ़ से आज़ादी है।

हिप्पी मच्छर : जनाब हमारी हालते–ज़ार का यही राज़ है कि हमारा तरीक़ए–वार फरसूदा और अहमक़ाना है। अब हमें हज़रते इन्सान पर ख़ामोशी से हमला करना होगा। क्लासिकी अन्दाज़ में गुनगुनाने से वह हमें मारने के लिए हाथों हाथ लेता है।

सद्र मच्छर : नहीं नहीं। हम मक्कारी से हमला नहीं करेंगे। आख़िर हमारे और इन्सान के तरीक़ए–वार में कुछ तो फ़र्क़ होना चाहिये। हम अपना क़ौमी तराना गाते हुए इन्सान पर हमला करेंगे। चाहे उसमें हम शहीद ही क्यों न हो जायें।

(चंद मोटे ताज़े मच्छर दाख़िल होते हैं।)

मुअतमद मच्छर : क्या आप किसी सेहत अफ़ज़ा मोक़ाम से तशरीफ़ ला रहे है?

सेहतमन्द मच्छर : नहीं जनाब हम मुल्क की राजधानी से आ रहे हैं। खुश क़िस्मती से हमारा हलक़ा पारलियामेंट हाउस है। यही मोक़ाम हमारी सेहत का ज़ामिन है। यहाँ हमें सारे मुल्क का ख़ून दस्तयाब है। गोया हम घाट–घाट का पानी पीने वाले का ख़ून चूसते हैं। वहाँ बड़ी आसानी से ताज़ा, सुर्ख़ और सेहतमन्द ख़ून मिलता है। वहाँ का आलम ही

1. बेमुरव्वती

مند خون ملتا ہے۔ وہاں کا عالم ہی نرالا ہے۔ اراکین پارلیمنٹ ہماری بھنبھناہٹ اور اسپیکر کی گھنٹی سے بھی بیدار نہیں ہوتے۔ ہمارا پل پل بدلتا ہوا رنگ سیاست دانوں کی سیمابی فطرت کا مرہونِ منت ہے۔

چھاپہ مار مچھر: صدر محترم! ہمیں دوسری خون چوس قوم کھٹملوں سے سخت شکایت ہے۔ واقعہ یوں ہے کہ ہماری دہشت گرد چھاپہ مار ٹولی ایک ہوٹل کے کمرہ سے سوتے ہوئے بچے کو اغوا کرنا چاہتی تھی۔ ہم بچے کو اپنے شانوں پر لے اڑنے والے تھے کہ عین وقت پر کھٹملوں نے پلنگ پر گھیراؤ کر کے بچے کو بُری طرح جکڑ لیا۔ ہماری اور کھٹملوں کی بچہ کشی میرا مطلب رسّہ کشی میں بچے کی آنکھ کھل گئی اور اغوا کا منصوبہ ناکام ہوا۔

صدر مچھر: میں آپ کی اس شکایت کو کھٹمل اسوسی ایشن بھیجتا ہوں آخر خون چوسنے والوں کو بھی چند اصولوں پر کاربند رہنا چاہیے۔ ہم نے عالمی خون چوس کانفرنس (جس کا صدر دفتر پہلے برلن اور اب تل ابیب ہے) میں اپنے غیر جانب دارانہ موقف کی توثیق کر دی تھی اور واضح طور پر یہ بتلایا گیا تھا کہ کسی ایک رکن کے شکار کے دوران دوسرے خون چوس رکن مداخلت نہیں کریں گے۔ کھٹملوں نے ہماری اس ''چوسو اور چوسنے دو'' کی پالیسی کی تائید کی تھی۔ ہر ہوٹل میں اگر ہم اور کھٹمل دونوں موجود ہوں تو دیکھنا ان بستیوں کو تم کہ ویراں ہو گئیں والا معاملہ ہوگا۔ آدم خور شیر بھی دوسروں کے شکار کو سونگھتا نہیں۔ یہاں انسان کی بات اور ہے اس لیے ہمارے نزدیک سب سے مکار جانور انسان ہے۔

معتمد مچھر: (کمزور وناتواں مچھروں سے مخاطب ہو کر) شاید آپ کچھ کہنا چاہتے ہیں؟

کمزور مچھر: زہے نصیب! جناب والا ہمیں خشک سالی و بدحالی کا علاقہ دیا گیا ہے۔ جہاں اردو ادیب و شاعر رہتے ہیں۔ ان کی حالت زار کو دیکھ کر دل یہی کہتا ہے کہ اپنے جسم کے دو بوند خون کا عطیہ انہیں دیا جائے۔ ان کی حیثیت سماج میں مچھروں سے زیادہ نہیں ہے۔ اس لیے وہ کہتے ہیں۔

निराला है। अराकीने पारलियामेंट हमारी भिनभिनाहट और स्पीकर की घंटी से भी बेदार नहीं होते। हमारा पल–पल बदलता हुआ रंग सियासतदानों की सीमाबी फ़ितरत का मरहूने–मिन्नत है।

छापामार मच्छर : सदरे–मोहतरम! हमें दूसरी ख़ून चूस क़ौम खटमलों से सख़्त शिकायत है। वाक़या यूँ है कि हमारी दहशतगर्द छापामार टोली एक होटल के कमरे में सोते हुये बच्चे को अग़वा करना चाहती थी। हम बच्चे को अपने शानों पर ले उड़ने वाले थे कि ऐन वक़्त पर खटमलों ने पलंग पर घेराव कर के बच्चे को बुरी तरह जकड़ लिया। हमारी और खटमलों की बच्चा कशी मेरा मतलब रस्सा कशी में बच्चे की आँख खुल गई और अग़वा का मंसूबा नाकाम हुआ।

सद्र मच्छर : मैं आपकी इस शिकायत को खटमल एसोसीएशन भेजता हूँ आख़िर ख़ून चूसने वालों को भी चंद उसूलों पर कारबन्द रहना चाहिये। हमने आलमी ख़ून चूस कान्फ्रेंस (जिसका सदर दफ़्तर पहले बर्लिन और अब तेलअबीब है) में अपने ग़ैर–जानिबदाराना मोवक़्क़िफ़ की तौसीक़ कर दी थी और वाज़ेह तौर पर यह बतलाया गया था कि किसी एक रुक्न के शिकार के दौरान दूसरा ख़ून चूस रुक्न मोदाख़ेलत नहीं करेगा। खटमलों ने हमारी इस "चूसो और चूसने दो" की पॉलिसी की ताईद की थी। हर होटल में अगर हम और खटमल दोनों मौजूद हों तो देखना इन बस्तियों को तुम कि वीराँ हो गई वाला मामला होगा। आदमख़ोर शेर भी दूसरों के शिकार को सूंघता नहीं। यहाँ इन्सान की बात और है इसलिए हमारे नज़दीक सब से मक्कार जानवर इन्सान है।

मुअतमद मच्छर : (कमज़ोर व नातवाँ मच्छरों से मुख़ातिब होकर) शायद आप कुछ कहना चाहते है?

कमज़ोर मच्छर : ज़हे–नसीब! जनाबे–वाला हमें ख़ुश्क साली व बदहाली का इलाक़ा दिया गया है। जहाँ उर्दू के अदीबो–शायर रहते हैं। इनकी हालते–ज़ार को देखकर दिल यही कहता है कि अपने जिस्म के दो बूंद ख़ून का अतिया उन्हें दिया जाये। उनकी हैसियत समाज में मच्छरों से ज़्यादा नहीं है। इसलिए वह कहते हैं –

یارب زمانہ مجھ کو مٹاتا ہے کس لیے
دوشِ جہاں پہ بیٹھا ہوا مچھر نہیں ہوں میں

صدر مچھر: گویا ادیبوں اور شاعروں کے حلقہ میں رہ کر آپ بھی شعر فہم ہو گئے ہیں۔ وہاں خون کی قلت ہے تو آپ بلڈ بینک پر ہلّہ کیوں نہیں بولتے۔

کمزور مچھر: جناب اردو شاعروں اور ادیبوں سے قریب رہنے کے طفیل ہمیں انسان دوستی کا مفہوم سمجھ میں آ گیا ہے۔ آپ خفا نہ ہوں تو عرض کروں کہ بلڈ بینک میں صرف تانگہ والوں، رکشہ والوں، مزدور اور مجبوروں کا خون بوتلوں میں بھرا رہتا ہے۔ امیر اور سیاست داں خون (زندہ رہنے کے لیے) کے لیے ضمیر کو بیچتے ہیں۔ غریب روپیوں کے لیے خون بیچتے ہیں۔ ابھی ہم مچھروں کا خون اتنا سفید نہیں ہوا کہ صاف اور میلے خون میں تمیز نہ کر سکیں۔ نہیں جناب ہم بلڈ بینک کا ہرگز رخ نہیں کریں گے۔

صدر مچھر: (خون کا گھونٹ پیتے ہوئے) یوں تو انسان دوستی ہماری فطرت کے عین خلاف ہے۔ لیکن میں آپ کے جذبات کی قدر کرتا ہوں۔ مجھے فخر ہے کہ اپنے اہم حریف (انسان) سے زیادہ شریف ہیں۔ میں اس کانفرنس میں اعلان کرتا ہوں کہ آج سے غریبوں، مزدوروں اور رکشہ راں کا خون ہم پر حرام ہے۔ اس فہرست میں آپ اردو شعراء اور ادباء کو بھی شامل کر سکتے ہیں۔
کاش خدا ہمیں خون چوسنے کے ساتھ خون داخل کرنے کی صلاحیت بھی عطا فرماتا تو یقیناً ہم انسانوں میں جسمانی طور پر سہی مساوات لاتے، طاقت ور، امیر اور مغرور انسانوں کا خون غریبوں، مزدوروں اور کمزوروں کے جسم میں داخل کر کے ایک صحت مند سماج تشکیل کرتے۔ کاش!
بہر کیف معتمد مچھر کا یہ خدشہ بے بنیاد ہے کہ ہماری نسل کی بقاء کو خطرہ لاحق ہے۔ جب تک انسان میں لوٹ، کھسوٹ، مار پیٹ، تن پروری، ذخیرہ اندوزی اور رشوت ستانی رہے گی۔ دنیا میں اندھیرا رہے گا اور اندھیرا ہمارے لیے بہترین ماحول ہے۔ اب انسان کو روشنی سے نفرت ہو چلی

या रब ज़माना मुझको मिटाता है किस लिये
दोशे जहाँ पे बैठा हुआ मच्छर नहीं हूँ मैं

सद्र मच्छर : गोया अदीबों और शायरों के हलके में रहकर आप भी शेर–फ़हम हो गये हैं। वहाँ ख़ून की किल्लत है तो आप ब्लड बैंक पर हल्ला क्यों नहीं बोलते।

कमज़ोर मच्छर : जनाब उर्दू शायरों और अदीबों से क़रीब रहने के तुफ़ैल हमें इन्सान दोस्ती का मफ़हूम समझ में आ गया है। आप ख़फ़ा न हों तो अर्ज़ करूँ कि ब्लड बैंक में सिर्फ़ तांगा वालों, रिक्शा वालों, मज़दूर और मजबूरों का ख़ून बोतलों में भरा रहता है। अमीर और सियासतदाँ (जिन्दा रहने के लिए) के लिए ज़मीर को बेचते है। ग़रीब रुपयों के लिए ख़ून बेचते हैं। अभी हम मच्छरों का ख़ून इतना सफ़ेद नहीं हुआ है कि साफ़ और मैले ख़ून में तमीज़ न कर सकें। नहीं जनाब हम ब्लड बैंक का हरगिज़ रुख़ नहीं करेंगे।

सद्र मच्छर : (ख़ून का घूंट पीते हुये) यूँ तो इन्सान दोस्ती हमारी फ़ितरत के ऐन ख़िलाफ़ है। लेकिन मैं आपके जज़्बात की क़द्र करता हूँ। मुझे फख़्र है कि अपने अहम हरीफ़ (इन्सान) से ज़्यादा शरीफ़ हैं। मैं इस कान्फ्रेंस में एलान करता हूँ कि आज से ग़रीबों, मज़दूरों और रिक्शा वालों का ख़ून हम पर हराम है। इस फ़ेहरिस्त में आप उर्दू शोअरा और ओदबा को भी शामिल कर सकते हैं। काश खुदा हमें ख़ून चूसने के साथ साथ ख़ून दाख़िल करने की सलाहियत भी अता फ़रमाता तो यक़ीनन हम इन्सानों में जिस्मानी तौर पर ही सही मसावात[1] लाते, ताक़तवर, अमीर और मग़रुर इन्सानों का ख़ून ग़रीबों, मज़दूरों और कमज़ोरों के जिस्म में दाख़िल करके एक सेहतमंद समाज तश्कील करते। काश!

बहरकैफ़ मुअतमद मच्छर का यह ख़दशा बे बुनियाद है कि हमारी नस्ल की बक़ा को ख़तरा लाहक़ है। जब तक इन्सान में लूट, खसूट, मारपीट, तनपरवरी, ज़ख़ीरा अन्दोज़ी और रिश्वत सतानी रहेगी। दुनिया में अंधेरा रहेगा और अंधेरा हमारे लिये बेहतरीन माहौल है। अब इन्सान को रोश्नी से नफ़रत हो चली है। वह ख़ुद पर

1. बराबरी

ہے۔ وہ خود پر مایوسی، تشکیک اور بے یقینی کا اندھیرا مسلط کر رہا ہے۔ ہمیں خوش ہونا چاہیے کہ اس کا یہ تاریک اور منفی رجحان ہمارے حق میں افزائشِ نسل کی ضمانت ہے۔

وہ سنیے! کھوکھلے اور جھوٹے نعروں سے وزیر کا استقبال ہو رہا ہے۔ اب ان کا جلسہ شروع ہونے والا ہے۔ آپ تمام ایک ایک کرسی پر بیٹھ کر خون چوسیے اور وزیر کی لچھے دار تقریر سنیے۔ بحیثیت صدر میں وزیر کی کرسی پر بیٹھتا ہوں۔

ہاں ہماری اگلی کانفرنس کے لیے یہی کہوں گا کہ

ع پھر ملیں گے اگر وزیر آیا۔

• • • •

मायूसी, तश्कीक और बेयकीनी का अंधेरा मोसल्लत कर रहा है। हमें खुश होना चाहिये कि इसका यह तारीक और मन्फ़ी रुजहान हमारे हक् में अफ़ज़ाइशे–नस्ल की ज़मानत है। वह सुनिये! खोखले और झूटे नारों से वज़ीर का इस्तक्बाल हो रहा है। अब इनका जलसा शुरु होने वाला है। आप तमाम एक–एक कुर्सी पर बैठकर ख़ून चूसिये और वज़ीर की लच्छेदार तक़रीर सुनिये। बहैसियत सद्र मैं वज़ीर की कुर्सी पर बैठता हूँ। हाँ हमारी अगली कान्फ़्रेंस के लिए यही कहूँगा कि –

फिर मिलेंगे अगर वज़ीर आया।

● ● ● ●

معین اعجاز

انجمن برائے رسمِ اجرا

سماج کی فرسودہ رسموں کے خلاف آواز اُٹھانے والا شاعر بھی بالآخر ایک رسم کا شکار ہو گیا۔ وہ رسم اس کے مجموعۂ کلام کے اجراء کی ہے۔ رسمِ اجراء کی محفلیں ہر شہر میں منعقد ہوتی ہیں اور ہر محفل میں کسی وزیر کی موجودگی لازمی بلکہ برحق ہوتی ہے۔ اگر اس رسم کی مقبولیت اور معقولیت کا یہی عالم رہا تو حکومت اس مقصد کے لیے ایک علیحدہ وزارت قائم کرنے کے لیے مجبور ہو جائے گی تاکہ اس شعبے کے وزیر کے ذمہ ایسی تقریبوں میں تقریریں کرنے کا کام سونپ کر دوسرے وزیروں کو نجات دلائی جا سکے۔

آج کل بعض وزراء رسمِ اجرا کی محفلوں اور مشاعروں میں اس قدر مصروف رہتے ہیں کہ انہیں اپنے متعلقہ شعبے کے فائل دیکھنے کا بھی موقع نہیں ملتا۔ اور کتابیں اس قدر چھپنے لگی ہیں کہ بے چارے نقّاد اور صائب الرائے حضرات اپنی گرانقدر رائے دیتے دیتے تھک گئے ہیں۔ یہی وجہ ہے کہ اب مدعو سامعین کے سامنے وزیروں سے تقریریں کرائی جاتی ہیں تاکہ سند رہے اور بوقت ضرورت کام آئے۔ جس طرح باجے گاجے اور تام جھام کے بغیر ہونے والی شادی پھیکی اور بے رنگ ہوتی ہے اسی طرح رسمِ اجراء کی

मुईन एजाज़

अन्जुमन बराए–रस्मे–इजरा[1]

समाज की फ़रसूदा रस्मों के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने वाला शायर भी बिलआख़िर एक रस्म का शिकार हो गया। वह रस्म उसके मजमुअए–कलाम के इजरा की है। रस्मे–इजरा की महफ़िलें हर शहर में मुनअक़िद होती हैं और हर महफ़िल में किसी वज़ीर की मौजूदगी लाज़मी बल्कि बरहक़ होती है। अगर इस रस्म की मक़बूलियत और माक़ूलियत का यही आलम रहा तो हुकूमत इस मक़सद के लिये एक अलाहेदा वज़रात क़ायम करने के लिये मजबूर हो जायेगी ताकि इस शोबे के वज़ीर के ज़िम्मे ऐसी तक़रीबों में तक़रीरें करने का काम सौंप कर दूसरे वज़ीरों को निजात दिलाई जा सके।

आज कल बाज़ वज़रा रस्मे–इजरा की महफ़िलों और मुशायरों में इस क़दर मसरुफ़ रहते हैं कि उन्हें अपने मुतअल्लिक़ा शोबे की फ़ाईल देखने का मौक़ा नहीं मिलता। और किताबें इस क़दर छपने लगी हैं कि बेचारे नक़्क़ाद और साएबुराय[2] हज़रात अपनी गराँक़द्र राय देते–देते थक गये हैं यही वजह है कि अब मदऊ सामईन के सामने वज़ीरों से तक़रीरें कराई जाती हैं ताकि सनद रहे और बवक़्ते ज़रुरत काम आये। जिस तरह बाजे–गाजे और ताम–झाम के बग़ैर होने वाली शादी फीकी और बे रंग होती है उसी तरह रस्मे–इजरा की

1. विमोचन समारोह समिति 2. सही राय देने वाले

ادائیگی کے بغیر بازار میں آنے والی کتاب بھی بے وقعت ہو کر رہ جاتی ہے۔ لہٰذا بعض ادب پرست اور علم دوست حضرات نے رسمِ اجراء کی بنیاد ڈالی تاکہ صاحب کتاب کی دنیا اور عاقبت سنور سکے۔

بعض کتابوں کی رسمِ اجراء کی تقریب تو اسی وقت منعقد ہو جاتی ہے جب وہ ابھی کتابت یا جلد سازی کے مراحل طے کر رہی ہوتی ہیں۔ ہمارے ایک دوست نے اپنی ایک کتاب کے ایک ہی ایڈیشن کے جشنِ اجراء کا اہتمام تین بار کیا۔ بعض لوگ اپنی کتابوں کی سالگرہ کا جشن بھی ہر سال بڑی دھوم دھام سے منانے لگے ہیں۔ غرض کہ اس قسم کے جشن اب شاعروں اور ادیبوں کے فرقے میں کافی مقبول ہوتے جارہے ہیں۔ عام طور سے اس موقع پر شاعروں اور ادیبوں کو بڑی دوڑ دھوپ کرنا پڑتی ہے۔ اور جب تک اس کی کتاب کا جشن بحسن وخوبی گذر نہیں جاتا اس وقت تک اس کے چہرے پر وہی مایوسی اور اُداسی رہتی ہے جو لڑکی کی رخصتی سے قبل تک مفلس ماں باپ کے چہرے پر ہوا کرتی ہے۔ چنانچہ شعراء کرام کی ان پریشانیوں کو دیکھتے ہوئے ہم نے ایک جامع اور ہمہ گیر قسم کا منصوبہ بنا ڈالا۔ پلان یہ تھا کہ ہم ''انجمن برائے رسمِ اجراء'' کی بنیاد ڈالیں جو وقتِ ضرورت شاعروں اور ادیبوں سے مناسب معاوضہ لے کر ان کی کتاب کے جشنِ اجرا کا اہتمام کیا کرے۔ اس انجمن کے ذمہ گاؤ تکیہ، مائک اور ہال سے لے کر سامعین، صاحب صدر اور وزیر تک کے بندوبست کرنے کا کام ہوگا۔ اس طرح شاعر پریشانیوں سے بچ جائے گا اور مجوزہ انجمن مقررہ وقت پر سارے سامان مہیا کر دے گی۔ ہمارا یہ خیال بھی تھا کہ بعض نادار شعراء کے لیے انجمن فی سبیل اللہ بھی کام کرے گی کیوں کہ ان کے پاس وسائل کی کمی ہوتی ہے ایسے شعراء کو رضا کارانہ طور پر اپنی خدمات پیش کرتے وقت انجمن پوری احتیاط اور رازداری سے کام لے گی تاکہ شاعر احساس کمتری کا شکار نہ ہو۔

پہلے ہم آپ کو ایک راز کی بات بتا دیں کہ یہ پلان تو ہمارا ہی تھا لیکن اس کی تحریک ہمیں ایک وزیرِ مملکت سے ملی تھی۔ ہوا یوں کہ ہم نے اپنے ایک دوست کو ایک دن ہمدرد دواخانے میں فون کیا۔ جب ادھر سے جواب آیا ''ہیلو'' تو ہم نے پوچھا ''کیا ہمدرد دواخانہ ہے؟'' جواب ملا ''جی نہیں! میں وزیرِ مملکت برائے ریڈی کا غذات کا

अदाएगी के बग़ैर बाज़ार में आने वाली किताब भी बेवक्त होकर रह जाती है। लिहाज़ा बाज़ अदब–परस्त और इल्म–दोस्त हज़रात ने रस्मे–इजरा की बुनियाद डाली ताकि साहबे–किताब की दुनिया और आकेबत संवर सके।

बाज़ किताबों की रस्मे–इजरा की तक़रीब तो उसी वक़्त मुनअकिद हो जाती है जब वह अभी किताबत या जिल्दसाज़ी के मराहिल तय कर रही होती हैं। हमारे एक दोस्त ने अपनी एक किताब के एक ही ऐडिशन के जश्ने–इजरा का एहतमाम किया। बाज़ लोग अपनी किताबों की सालगिरह का जश्न भी बड़ी धूम–धाम से मनाने लगे हैं। गरज़ कि इस क़िस्म के जश्न अब शायरों और अदीबों के फ़िरक़े में काफ़ी मक़बूल होते जा रहे हैं। आम तौर से इस मौक़े पर शायरों और अदीबों को बड़ी दौड़–धूप करना पड़ती है। और जब तक उसकी इस किताब का जश्न बहुस्नो–ख़ूबी गुज़र जाता है उस वक़्त तक उसके चेहरे पर वही मायूसी और उदासी रहती है जो लड़की की रुख़सती से क़ब्ल तक मुफ़लिस माँ–बाप के चेहरे पर हुआ करती है। चुनानचे शोअराए–कराम की इन परेशानियों को देखते हुए हमने एक जामे और हमागीर क़िस्म का मनसूबा बना डाला। प्लान ये था कि हम "अन्जुमन बराए–रस्मे–इजरा" की बुनियाद डालें जो वक़्त ज़रुरत शायरों और अदीबों से मुनासिब मोआवज़ा लेकर उनकी किताब के जश्ने–इजरा का एहतमाम किया करे। इस अन्जुमन के ज़िम्मे गाव तकिया, माइक और हॉल से लेकर सामईन, साहबे सद्र और वज़ीर तक के बन्दोबस्त करने का काम होगा। इस तरह शायर परेशानियों से बच जायेगा और मुजव्वेज़ा अन्जुमन मोक़र्ररा वक़्त पर सारे सामान मुहय्या कर देगी। हमारा यह भी ख़याल था कि बाज़ नादिर शोअरा के लिए अन्जुमन फीसबीलिल्लाह भी काम करेगी क्योंकि उनके पास वासइल की कमी होती है ऐसे शोअरा को रज़ाकाराना तौर पर अपनी ख़िदमात पेश करते वक्त अन्जुमन पूरी एहतयात और राज़दारी से काम लेगी ताकि शायर ऐहसासे–कमतरी का शिकार न हो।

पहले हम आपको एक राज़ की बात बता दें कि यह प्लान तो हमारा ही था लेकिन इसकी तहरीक हमें एक वज़ीरे–मुमलिकत से मिली थी। हुआ यूँ कि हमने अपने एक दोस्त को एक दिन हमदर्द दवाख़ाने में फ़ोन किया। जब उधर से जवाब आया "हेलो" तो हमने पूछा "क्या हमदर्द दवाख़ाना है?" जवाब मिला "जी नहीं! मैं वज़ीरे–मुमलिकत बराये रद्दी कागज़ात का

پی۔اے ہوں" اس سے پہلے کہ ہم "ساری، رانگ نمبر" کہہ کر سلسلہ منقطع کرتے کہ اچانک خیال آیا کہ یہ دلچسپ وزرات جس کے حصے میں آئی ہے وہ اتفاق سے ہمارے پُرانے شناسا ہیں۔ لہٰذا ہم نے فوراً پی۔اے سے کہا "جناب! وزیرِ مملکت سے ہماری بات کرادیجیے۔" چند ہی لمحے بعد وزیرِ موصوف ہم سے مخاطب تھے۔ جب ہم نے اپنا نام بتایا تو انھوں نے فوراً کہا "بھئی کہاں ہو؟ تم نے ملنا جلنا کیوں ترک کر دیا؟ ایک بہت ضروری کام ہے۔ رات کا کھانا میرے ساتھ کھاؤ۔" اُنھوں نے ایک ہی سانس میں کہہ ڈالا۔ اور ہم اپنی قسمت پر رشک کرنے لگے کہ وزیر بننے کے بعد یہ محترم ہمیں بھولے نہیں ہیں ان سے ہمارے تعلقات بڑے دیرینہ اور گہرے قسم کے ہیں۔ یوں تو وہ میدانِ سیاست کے پُرانے کھلاڑی تھے لیکن قسمت میں ہمیشہ ناکامی رہی۔ کئی بار انھوں نے پارٹی بھی بدلی لیکن اتفاق سے جس پارٹی میں وہ جاتے وہ پارٹی ان کے حلقۂ انتخاب میں ہار جاتی۔ ہاں اس بار قسمت نے یاوری کی اور وہ الیکشن جیت گئے۔ ٹو ٹیر والی منسٹری میں انھیں نچلا ٹیئر بھی مل گیا یعنی وزیرِ مملکت بن گئے۔

رات کو جب ہم ان کے گھر پہنچے تو حضرت بڑی خندہ پیشانی سے ملے۔ ہمیں اس الطاف وعنایت پر بڑی حیرت تھی۔ اگر اس وقت بیوی ساتھ ہوتی تو وزیرِ محترم کے گھر پر یہ آؤ بھگت دیکھ کر ہماری شخصیت کی معترف ہو جاتی۔ میز پر رکھے ہوئے انواع و اقسام کے کھانوں کے ساتھ جب ہم پورا پورا انصاف کر چکے تو وزیرِ موصوف نے بڑے رازدارانہ انداز میں کہا "یار تم تو میرے گہرے دوست ہو، ہر موقع پر تم نے میرا ساتھ دیا تھا—" "حضور! ہم آج بھی آپ کا ساتھ دینے کے لیے تیار ہیں۔ خدا نہ کرے کہ آپ کا کہیں خون بہے لیکن بفرضِ محال بہا بھی تو ہم وہاں کڑاکے کی سردی میں بھی اپنا پسینہ ضرور بہائیں گے" ہم نے ان کی بات درمیان میں کاٹتے ہوئے کہا۔ ان کے چہرے پر ایک تابناک مسکراہٹ رقص کرنے لگی۔ اور انھوں نے میری پیٹھ پر ہاتھ رکھتے ہوئے کہا "ویری نائس آف یو، تم سے یہی اُمید تھی۔ مجھے تمھاری دوستی پر ناز ہے۔" ہم نے بھی ایک دوسرا تیر پھینکتے ہوئے کہا "آپ حکم دیجیے۔ انشااللہ یہ خاکسار آپ کے لیے سب کچھ کر گذرے گا" وزیرِ مملکت برائے رڈی کاغذات نے متفکر ہوتے ہوئے کہا "دوست!

पी. ए. हूँ" इससे पहले कि हम "सॉरी, रौंग नम्बर" कहकर सिलसिला मुनक़ता करते कि अचानक ख़याल आया कि यह दिलचस्प वज़ारत जिसके हिस्से में आई है वह इत्तेफ़ाक़ से हमारे पुराने शनासा हैं। लिहाज़ा हम ने फ़ौरन पी. ए. से कहा "जनाब! वज़ीरे–मुमलिकत से हमारी बात करा दीजिये" चन्द ही लम्हे बाद वज़ीर मौसूफ़ से हम मुख़ातिब थे। जब हमने अपना नाम बताया तो उन्होंने फ़ौरन कहा "भई कहाँ हो? तुमने मिलना जुलना क्यों तर्क कर दिया? एक बहुत ज़रुरी काम है। रात का खाना मेरे साथ खाओ" उन्होंने एक ही साँस में कह डाला और हम अपनी क़िसमत पर रश्क करने लगे कि वज़ीर बनने के बाद ये मोहतरम हमें भूले नही हैं उनसे हमारे तअल्लुक़ात बड़े देरीना और गहरे क़िस्म के हैं। यूँ तो वह मैदाने–सियासत के पुराने खिलाड़ी थे लेकिन क़िस्मत में हमेशा नाकामी रही। कई बार उन्होंने पार्टी भी बदली लेकिन इत्तेफ़ाक़ से जिस पार्टी में वह जाते वह पार्टी उनके हल्क़ए–इन्तख़ाब में हार जाती। हाँ, इस बार क़िस्मत ने यावरी की और वह एलेक्शन जीत गये। टू टियर वाली मिनिस्टरी में उन्हें निचला टियर भी मिल गया यानी वज़ीरे–मुमलिकत बन गये।

रात को जब हम उनके घर पहुँचे तो हज़रत बड़ी ख़न्दा–पेशानी से मिले। हमें इस अल्ताफ़ो–इनायत पर बड़ी हैरत थी। अगर उस वक़्त बीवी साथ होती तो वज़ीर मोहतरम के घर पर यह आवभगत देखकर हमारी शख़्सियत की मोतरिफ़ हो जाती। मेज़ पर रखे हुए अनवाओ–अक़साम के खानों के साथ जब हम पूरा पूरा इन्साफ़ कर चुके तो वज़ीरे–मौसूफ़ ने बड़े राज़दाराना अन्दाज़ में कहा "यार तुम तो मेरे गहरे दोस्त हो, हर मौक़े पर तुम ने मेरा साथ दिया था–" "हुज़ूर! हम आज भी आपका साथ देने के लिए तैयार हैं। ख़ुदा न करे कि आपका कहीं ख़ून बहे लेकिन बफ़र्ज़े–मोहाल बहा भी हम वहाँ कड़ाके की सर्दी में अपना पसीना ज़रुर बहायें गे" हमने उनकी बात दरमियान में काटते हुए कहा। उनके चेहरे पर एक ताबनाक मुस्कुराहट रक़्स करने लगी। और उन्होंने मेरी पीठ पर हाथ रखते हुए कहा "वैरी नाइस ऑफ़ यू", तुम से यही उम्मीद थी। मुझे तुम्हारी दोस्ती पर नाज़ है" हमने भी एक दूसरा तीर फेंकते हुए कहा "आप हुक्म दीजिये, इन्शा अल्लाह यह ख़ाकसार आपके लिए सब कुछ कर गुज़रे गा" वज़ीरे–मुमलिकत बराए रद्दी काग़ज़ात ने मुतफ़क्किर होते हुए कहा " दोस्त!

ایسا ہے کہ میرے حصے میں جو یہ عجیب وغریب وزارت آئی ہے اس کی وجہ سے مجھے کسی جلسے یا جشن میں نہیں بلوایا جاتا۔ تم جانتے ہو کہ تقریر کرنا میری بہت بڑی کمزوری ہے۔ اگر یہی عالم رہا تو میں عوام سے بالکل کٹ کر رہ جاؤں گا۔ آئے دن جشن اور جلسے ہوتے ہیں لیکن صدارت یا افتتاح کے لیے مجھے کبھی کسی نے نہیں بلوایا حالاں کہ بعض مجھ سے جونیئر وزراء بلوائے جاتے ہیں۔ تم ایسا کرو کہ جلدی سے جلدی کوئی بزم یا انجمن بنا ڈالو ـــــ اور مجھے وہاں بطورِ صدر یا مہمانِ خصوصی بلاؤ۔ میں ایسی تقریر کروں گا کہ لوگ بار بار مجھے مدعو کرنے پر مجبور ہو جائیں گے۔" وزیرِ مملکت کی رام کہانی سُن کر ہمیں افسوس ہوا۔ ہم نے کچھ توقف کے بعد کہا "کیسا ادارہ بنایا جائے؟ مُلک میں بے شمار سماجی اور فلاحی ادارے موجود ہیں جو اپنے اپنے طور پر قوم اور اپنے عہدیداروں کی خدمت کر رہے ہیں۔ کوئی میدان خالی نظر نہیں آتا ـــ" انھوں نے ہماری بات درمیان میں کاٹتے ہوئے کہا "تم ذہین آدمی ہو۔ کچھ سوچو کوئی نہ کوئی صورت نکل ہی آئے گی۔" اب ہماری ذہانت کا معاملہ تھا لہٰذا ہم بھی سیریس ہو گئے۔ کچھ نہ کچھ محترم وزیر کے لیے کرنا ہی تھا۔ اچانک ایک آئڈیا ذہن میں آیا۔ ہم نے کہا "قبلہ آج کل کتابیں خوب چھپنے لگی ہیں۔ اور ہر کتاب کی رسمِ اجراء ضرور منائی جاتی ہے کیوں نہ ہم ایک ایسی انجمن قائم کریں جو وقتِ ضرورت مُناسب معاوضہ پر اس قسم کے جلسوں کا اہتمام کیا کرے۔ اس طرح ان انجمن کا سہارا لے کر ہم اکثر آپ کو ایسی محفلوں میں بلوانے کا بندوبست کر سکیں گے۔" وہ کیسے؟ "ردّی کا غذات کے وزیرِ مملکت نے فوراً پوچھا۔" وہ اس طرح کہ جس شاعر یا ادیب کی کتاب ریلیز ہوگی اسے ہم یہ کہہ کر ہموار کرلیں گے کہ ایک مقبول اور پڑھے لکھے وزیر کے دستِ مبارک سے اس رسم کی ادائیگی عمل میں آئے گی۔ جو لوگ تیار ہو جائیں گے ان کا آرڈر ہم رعایتی شرح پر بھی قبول کر سکتے ہیں۔ کچھ نہ کچھ ایسے شاعر یا ادیب ضرور مل جائیں گے۔"

ہماری یہ بات سُن کر وزیرِ محترم کی باچھیں کھل گئیں۔ اور انھوں نے ہمیں گلے لگاتے ہوئے کہا "دوست! میں جانتا تھا کہ یہ کام تمھارے سوا کوئی اور نہیں کر سکتا۔ بس جاؤ اور جلد از جلد اس کام کو عملی جامہ پہنانے کی کوشش کرو۔ ابتدائی اخراجات کے لیے

ऐसा है कि मेरे हिस्से में जो ये अजीबो–ग़रीब वज़रात आई है उसकी वजह से मुझे किसी जलसे या जश्न में नहीं बुलवाया जाता। तुम जानते हो कि तक़रीर करना मेरी बहुत बड़ी कमज़ोरी है। अगर यही आलम रहा तो मैं आवाम से बिल्कुल कटकर रह जाउँगा। आये दिन जश्न और जलसे होते हैं लेकिन सदारत या इफ़्तेताह के लिए मुझे कभी किसी ने नहीं बुलवाया हालाँकि बाज़ मुझसे जूनियर वज़रा बुलवाये जाते हैं। तुम ऐसा करो कि जल्दी से जल्दी कोई बज़्म या अन्जुमन बना डालो– और मुझे वहाँ बतौरे–सद्र या मेहमाने–ख़ुसूसी बुलाओ। मैं ऐसी तक़रीर करूँगा कि लोग बार–बार मुझे मदऊ करने पर मजबूर हो जायेंगे।" वज़ीरे–मुमलिकत की राम कहानी सुनकर हमें अफ़सोस हुआ। हमने कुछ तवक़्क़ुफ़ के बाद कहा "कैसा इदारा बनाया जाये? मुल्क में बेशुमार समाजी और फ़लाही इदारे मौजूद हैं जो अपने अपने तौर पर क़ौम और अपने ओहदेदारों की ख़िदमत कर रहे हैं। कोई मैदान ख़ाली नज़र नहीं आता–" उन्होंने हमारी बात दरमयान में काटते हुए कहा "तुम ज़हीन आदमी हो। कुछ सोचो कोई न कोई सूरत निकल ही आयेगी"। अब हमारी ज़हानत का मामला था लिहाज़ा हम सीरियस हो गये। कुछ न कुछ वज़ीरे–मोहतरम के लिए करना ही था। अचानक एक आइडिया ज़ेहन में आया। हमने कहा "क़िब्ला आज कल किताबें ख़ूब छपने लगी हैं, और हर किताब की रस्मे–इजरा ज़रुर मनाई जाती है क्यों न हम एक ऐसी अन्जुमन क़ायम करें जो वक़्त ज़रुरत मुनासिब मोआवज़े पर इस क़िस्म के जलसों का एहतमाम किया करे। इस तरह इन अन्जुमन का सहारा लेकर हम अक्सर आपको ऐसी महफ़िलों में बुलवाने का बन्दोबस्त कर सकेंगें।" वह कैसे? "रद्दी काग़जात के वज़ीरे–मुमलिकत ने फ़ौरन पूछा।" वह इस तरह कि जिस शायर या अदीब की किताब रिलीज़ होगी उसे हम यह कह कर हमवार कर लेंगे कि मक़बूल और पढ़े लिखे वज़ीर के दस्ते–मुबारक से इस रस्म की अदायगी अमल में आयेगी। जो लोग तैयार हो जायेंगे उनका ऑर्डर हम रिआयती शरह पर भी क़बूल कर सकते हैं। कुछ न कुछ ऐसे शायर या अदीब ज़रुर मिल जायेंगे।"

हमारी ये बात सुनकर वज़ीरे–मोहतरम की बांछें खिल गईं। और उन्होंने हमें गले लगाते हुए कहा "दोस्त! मैं जानता था कि यह काम तुम्हारे सिवा कोई और नहीं कर सकता। बस जाओ और जल्द अज़ जल्द इस काम को अमली जामा पहनाने की कोशिश करो। इब्तदाई एख़राजात के लिए

کچھ پیسوں کی ضرورت پڑے گی۔ دو ہزار روپے ابھی لیتے جاؤ اس کے بعد جب بھی جتنی رقم کی ضرورت پڑے بے تکلف مانگ لینا۔" ہمیں اس بات کی بڑی خوشی تھی کی ہمارے یہ دوست وزیر اب خاصے خوش حال ہو چکے ہیں۔ اس سے پہلے ان کی معاشی حالت کبھی اتنی اچھی نہیں تھی۔ کچھ دیر بعد ان کا ڈرائیور کار پر بٹھا کر ہمیں گھر تک چھوڑ گیا۔ چند ہی روز بعد ہم نے "انجمن برائے رسمِ اجرا" کی بنیاد ڈال دی۔ جن شاعروں کی کتاب عنقریب چھپنے والی تھی یا جو جشنِ اجرا کی تیاری کر رہے تھے ان سے ہم نے فوراً رابطہ قائم کیا۔ لیکن وزیر مملکت برائے ردّی کاغذات کا نام سن کر کوئی ہماری خدمات حاصل کرنے کے لیے تیار نہ ہوا۔ ہم نے بعض غیر معروف شعراء سے رجوع کیا اور ان سے یہاں تک کہا کہ ہم آپ کا مجموعہ تک اپنے پیسوں سے چھپوائیں گے لیکن ہمیں ہر طرف اور ہر طرح سے مایوسی ہوئی۔ آخر میں ہم نے ایک ایسے شاعر سے رابطہ قائم کیا جن کا چوبیسواں مجموعہ شائع ہونے والا تھا۔ ہم نے ان سے کہا "قبلہ ہم آپ کی کتاب کا جشنِ اجرا معمولی معاوضہ لے کر بڑے پیمانے پر منانے کا انتظام کریں گے۔ انشا اللہ جشن آپ کے شایانِ شان ہوگا۔ وزیر مملکت برائے ردّی کاغذات آپ کی شخصیت اور شاعری پر ایسی بصیرت افروز تقریر فرمائیں گے کہ ادیبوں میں ہر طرف اس کی دُھوم ہوگی۔" لیکن یہاں بھی ہمارا تیر نشانے پر نہ لگا۔ انھوں نے معذرت طلب کرتے ہوئے کہا "ہم آپ کی پیش کش اور خلوص کی قدر کرتے ہیں لیکن ہمارے تازہ مجموعے "صدائے مفلس" کے فنکشن کے لیے شہر کے سب سے بڑے فائیو اسٹار ہوٹل میں پہلے ہی سے ہال بُک کرا لیا گیا ہے جس میں کئی وزراء اور غیر مُلکی سفیر شرکت کریں گے۔ آپ کو مدعو کیا جاتا ہے۔ شراب اور کھانے کی دعوت ہوگی۔

ہم نے ان کی پیشگی شکریہ ادا کرتے ہوئے کہا "مُبارک ہو۔" "صدائے مفلس" کی گونج فائیو اسٹار ہوٹل میں سنائی دے گی بھلا اس سے بڑی بات کیا ہو سکتی ہے؟ خدا آپ کو توفیق دے۔ آمین!" ہم نے محسوس کیا کہ ہماری "انجمن برائے رسمِ اجرا" اپنے وجود کا مقصد کھو چکی ہے۔ اب عالم یہ ہے کہ ہم اپنے دوست وزیر مملکت برائے ردّی کاغذات سے منہ چھپائے پھرتے ہیں!۔

● ● ● ●

कुछ पैसों की ज़रुरत पड़ेगी। दो हज़ार रुपये अभी लेते जाओ इसके बाद जब भी जितनी रकम की ज़रुरत पड़े बे तकल्लुफ़ माँग लेना।" हमें इस बात की बड़ी ख़ुशी थी कि हमारे ये दोस्त वज़ीर अब ख़ासे ख़ुशहाल हो चुके हैं। इससे पहले उनकी मआशी हालत कभी इतनी अच्छी नहीं थी। कुछ देर बाद उनका ड्राइवर कार पर बैठाकर हमें घर तक छोड़ गया। चंद ही रोज़ बाद हमने "अन्जुमन बराए–रस्मे–इजरा" की बुनियाद डाल दी जिन शायरों की किताब अनक़रीब छपने वाली थी या जो जश्ने–इजरा की तैयारी कर रहे थे उनसे हमने फ़ौरन राबता क़ायम किया। लेकिन वज़ीरे–मुमलिकत बराए रद्दी कागज़ात का नाम सुनकर कोई हमारी ख़िदमात हासिल करने के लिए तैयार न हुआ। हमने बाज़ गैर मारुफ़ शोअरा से रुजूअ किया और उनसे यहाँ तक कहा कि हम आपका मजमूआ तक अपने पैसों से छपवायेंगे लेकिन हमें हर तरफ़ और हर तरह से मायूसी हुई। आख़िर में हमने एक ऐसे शायर से राबता क़ायम किया जिनका चौबीसवाँ मजमूआ शाया होने वाला था। हमने उनसे कहा "क़िबला हम आपकी किताब का जश्ने–इजरा मामूली मोआवज़ा लेकर बड़े पैमाने पर मनाने का इन्तज़ाम करेंगे। इन्शा अल्लाह जश्न आपके शायाने–शान होगा। वज़ीरे–मुमलिकत बराए रद्दी कागज़ात आपकी शख़्सियत और शायरी पर ऐसी बसीरत अफ़रोज़ तक़रीर फ़रमेयें गे कि अदीबों में हर तरफ़ आपकी धूम होगी।" लेकिन यहाँ भी हमारा तीर निशाने पर न लगा। उन्होंने माज़रत तलब करते हुए कहा "हम आपकी पेशकश और ख़ुलूस की क़द्र करते हैं लेकिन हमारे ताज़ा मजमूए "सदाए मुफ़लिस" के फ़ंक्शन के लिए शहर के सबसे बड़े फ़ाइव स्टार होटल में पहले ही से हॉल बुक करा लिया गया है जिसमें कई वज़रा और गैर मुल्की सफ़ीर शिरकत करेंगे। आपको मदऊ किया जाता है। शराब और खाने की दावत होगी।

हमने उनका पेशगी शुक्रिया अदा करते हुए कहा "मुबारक हो" "सदाए मुफ़लिस" की गूंज फ़ाइव स्टार होटल में सुनाई देगी भला इससे बड़ी बात क्या हो सकती है? ख़ुदा आपको तौफ़ीक़ दे, आमीन।" हमने महसूस किया कि हमारी "अन्जुमन बराए–रस्मे–इजरा" अपने वजूद का मक़सद खो चुकी है। अब आलम यह है कि हम अपने दोस्त वज़ीरे–मुमलिकत बराए रद्दी कागज़ात से मुँह छुपाये फिरते हैं!

● ● ● ●

ارشد علی خاں

آر۔ ایم۔ پی

یہ آج سے تقریباً پانچ سال پہلے کا واقعہ ہے بلکہ واقعہ کم آپ بیتی زیادہ ہے۔ دراصل ہمیں بھی کچھ نہ کچھ کرتے رہنے کی عادت ہے لہٰذا اسی عادت کے اُکسانے پر اس ارادہ پر کمربستہ ہوگئے کہ کیوں نہ آر ایم پی کا امتحان دے دیں۔ خرچہ بھی کم تھا اور محنت بھی کم لگتی تھی۔ اس ارادہ کو تقویت دینے کے لیے ہم اس امتحان کے فارغ کئی نیم حکیموں سے ملے۔ ان سے ملنے پر معلوم ہوا کہ وہ حضرات پہلے ہی سے کسی نہ کسی اور دھندے میں لگے ہوئے ہیں۔ مثلاً کسی کی لانڈری، کسی کی سائیکلوں کی دوکان، کسی کی کرانہ دوکان تو کوئی آٹے کی گرنی چلا رہا ہے اور شام کے وقت وہ لوگ اپنا مطب بھی چلاتے ہیں مفید دھندہ تھا یعنی پارٹ ٹائم بزنس۔ بھلا کون احمق اتنے سنہرے موقع کو چھوڑ سکتا تھا۔ چنانچہ سب سے پہلے ہم نے فارم داخل کر دیا۔ پھر سیدھے آصفیہ لائبریری پہنچے اور انڈکس کے تمام ڈبوں کو کسی مشاق دھوبی کی طرح کھنگال کر رکھ دیا۔ تمام حکماء زندہ یا مردہ کی کتابوں کے حوالے نوٹ کر لیے پھر ہمیں اتنا اطمینان ہوگیا جیسے ان حکماء کے نام ہی اگر سلیقہ سے یاد ہو جائیں تو چٹکیاں بجاتے پاس ہو جائیں گے۔

لیکن جوں جوں ہم ان کتابوں کی دیمک بنتے گئے ہمیں احساس ہونے لگا کہ اس سمندر کو ہمارے ناتواں دماغ کے کوزے میں سمونا جوئے شیر لانے سے کسی طرح کم

अरशद अली खाँ

आर॰ एम॰ पी॰

यह आज से तक़रीबन पाँच साल पहले का वाक़या है बल्कि वाक़या कम आपबीती ज़्यादा है। दरअसल हमें भी कुछ न कुछ करते रहने की आदत है लिहाज़ा उसी आदत के उकसाने पर इस इरादे पर कमर बस्ता हो गये कि क्यों न आर॰ एम॰ पी॰ का इम्तेहान दे दें। ख़र्चा भी कम था और मेहनत भी कम लगती थी। इस इरादे को तक़वियत देने के लिए हम इस इम्तेहान के फ़ारिग़ कई नीम हकीमों से मिले। उनसे मिलने पर मालूम हुआ कि वह हज़रत पहले ही से किसी न किसी और धंधे में लगे हुए हैं। मसलन किसी की लॉण्ड्री, किसी की साइकिलों की दुकान, किसी की किराना की दुकान तो कोई आटे के गिर्नी चला रहा है और शाम के वक़्त वह लोग अपना मतब भी चलाते हैं मुफ़ीद धंधा था यानी पार्ट टाइम बिज़नेस। भला कौन अहमक़ इतने सुनहरे मौक़े को छोड़ सकता था। चुनांचे सब से पहले हम ने फ़ारम दाख़िल कर दिया। फिर सीधे आसफ़िया लाइब्रेरी पहुँचे और इन्डेक्स के तमाम डिब्बों को किसी मश्शाक़ धोबी की तरह खंगाल कर रख दिया। तमाम होकमाए[1] ज़िन्दा या मुर्दा की किताबों के हवाले नोट कर लिये फिर हमें इतना इत्मीनान हो गया जैसे इन होकमा के नाम ही अगर सलीक़े से याद हो जायें तो चुटकियाँ बजाते पास हो जायेंगे।

लेकिन जूँ जूँ हम इन किताबों की दीमक बनते गये हमें एहसास होने लगा कि इस समन्दर को हे नातवाँ दिमाग़ के कूज़े में समोना जूए शीर[2] लाने से किसी तरह कम नहीं मार भला चन्द दिनों में कोई हकीम

1. हकीम का बहुवचन 2. दूध की नहर

نہیں۔ بھلا چند دنوں میں کوئی حکیم جالینوس، لقمان، بقراط کو کہاں ہضم کر سکتا تھا اس لیے وحشت شروع ہوگئی۔ امکان اس بات کا ہو گیا تھا کہ اس آر ایم پی کے چکر میں جڑی بوٹیوں کی تلاش کے بہانے کہیں جنگل کی طرف نہ نکل جائیں۔

وہ تو خدا کا شکر ہے کہ اس نے چھپّر نہیں پھاڑا صرف ایک پُرانا اخبار پھاڑ کر ہماری دستگیری کر ڈالی۔ ہوا یہ کہ ایک دن ہمیں بخار چڑھ گیا اور اُسے اُتارنے کے لیے ہم ہوٹل پر چڑھ دوڑے اور ڈبل روٹی خرید لائے۔ جب ڈبل روٹی کھولنے لگے تو ہمارے دماغ کی پوری گرہیں خود بہ خود کھل گئیں۔ اور تقریباً ۱۶ سے ۳۲ طبق روشن ہوا ٹھے۔ جس اخبار میں وہ باسی روٹی پیک تھی، اس پر تازہ خبر یہ تھی۔

وہ حضرات جو آر ایم پی امتحان دینا چاہتے ہوں! ان کے لیے اطلاع! اطلاع یہ تھی کہ کوئی حکیم بندوقی (یا صندوقی برابر یاد نہیں رہا) نے ایک مختصر اور جامع کتاب طب پر طبع فرمائی ہے جس کے پڑھنے پر "ضمانت" کے ساتھ یہ "گیارنٹی" دی جا سکتی ہے کہ امتحان میں کامیاب ہو جائیں گے۔ ہدیہ صرف ایک روپیہ، پتہ تھا معظم جاہی مارکٹ، تیار کنندگان ادارہ "گم سُم" اس "گم سم" پر ہم سچ مچ گم سم ہو گئے!

ہم ڈبل روٹی کم کھا رہے تھے اور حکیم بندوقی کی طرف زیادہ دماغ لڑا رہے تھے ایک دفعہ تو واقعی ہم دروازہ کی طرف جھپٹے کہ جا کر حکیم صاحب سے لپٹ پڑیں اور عرض کریں کہ جناب چلایئے آپ کی بندوق کی گولیاں، آر ایم پی کا مجاہد آپ کے سامنے سینہ سپر ہوتا ہے، لیکن گھر والے یہ سمجھے کہ ہمارا بخار تیز ہو گیا ہے اس لیے وہ ہم پر جھپٹے اور پکڑ کر بستر پر لٹا دیا۔

صبح جب ہم بیدار ہوئے اور بخار کچھ اترا تو بہ شکل مریض حکیم جالینوس کی طرف پیش قدمی کر بیٹھے لیکن ظالم حکیم بندوقی نے کچھ اس نالائقی کا پتہ بتایا کہ اس کو ڈھونڈتے ڈھونڈتے موت کی وادیوں میں کھو جانا پڑ رہا تھا۔ آخر تھک ہار کر ایک ہوٹل میں گھسے اور ایک عدد چاٹ زہر مار کی۔ جب ذرا چستی نظر آئی تو ایک مولانا کی طرف چوروں کی طرح بڑھے۔ وہ اخبار کی سرخیوں پر نظریں گاڑھے خود گڑھ جانے کی پوزیشن میں تھے۔ ہم نے مریل آواز سے انھیں اس گڑھے سے نکالنا چاہا لیکن انھوں نے سرخیوں ہی

जालीनूस, लुक़्मान, बोक़रात को कहाँ हज़म कर सकता था इसलिए वहशत शुरु हो गई। इमकान इस बात का हो गया कि इस आर. एम. पी. के चक्कर में जड़ी बूटियों की तलाश के बहाने कहीं जंगल की तरफ़ न निकल जायें।

वह तो ख़ुदा का शुक्र है कि उसने छप्पर नहीं फाड़ा सिर्फ़ एक पुराना अख़बार फाड़कर हमारी दस्तगीरी कर डाली। हुआ यह कि एक दिन हमें बुख़ार चढ़ गया और उसे उतारने के लिए हम होटल पर चढ़ दौड़े और डबल रोटी ख़रीद लाये। जब डबल रोटी खोलने लगे तो हमारे दिमाग़ की पूरी गिरहें ख़ुद बख़ुद खुल गईं। और तक़रीबन 16 से 32 तबक़ रौशन हो उठे। जिस अख़्बार में वह बासी रोटी पैक थी, उस पर ताज़ा ख़बर यह थी।

वह हज़रात जो आर. एम. पी. इम्तेहान देना चाहते हों! उनके लिए इत्तला! इत्तला यह थी कि कोई हकीम बन्दूक़ी (या संदूक़ी बराबर याद नहीं रहा) ने एक मुख़्तसर और जामेअ किताब तिब पर तबअ फ़रमाई है जिसके पढ़ने पर "ज़मानत" के साथ यह "गारंटी" दी जा सकती है कि इम्तेहान में कामयाब हो जायेंगे। हदिया सिर्फ़ एक रुपया, पता था मोअज़्ज़म जाही मार्केट, तैयार कुनिन्दगान इदारा "गुमसुम" इस "गुमसुम" पर हम सचमुच गुमसुम हो गये!

हम डबल रोटी कम खा रहे थे और हकीम बन्दूक़ी की तरफ़ ज़्यादा दिमाग़ लड़ा रहे थे एक दफ़ा तो वाक़ई हम दरवाज़े की तरफ़ झपटे कि जाकर हकीम साहब से लिपट पड़ें और अर्ज़ करें कि जनाब चलाइये आपकी बंदूक़ की गोलियाँ, आर. एम. पी. का मुजाहिद आपके सामने सीना सिपर होता है, लेकिन घर वाले यह समझे कि हमारा बुख़ार तेज़ हो गया है इसलिए वह हम पर झपटे और पकड़ कर बिस्तर पर लिटा दिया।

सुबह जब हम बेदार हुए और बुख़ार कुछ उतरा तो ब-शक्ले-मरीज़ हकीम जालीनूस की तरफ़ पेश क़दमी कर बैठे लेकिन ज़ालिम हकीम बंदूक़ी ने कुछ इस नालायक़ी का पता बताया था कि उसको ढूँढ़ते-ढूँढ़ते मौत की वादियों में खो जाना पड़ रहा था। आख़िर थक हार कर एक होटल में घुसे और एक अदद चाट ज़हरमार की। जब ज़रा चुस्ती नज़र आई तो एक मौलाना की तरफ़ चोरों की तरह बढ़े। वह अख़्बार की सुर्ख़ियों पर नज़र गाड़े ख़ुद गड़ जाने की पोज़ीशन में थे। हम ने मरियल आवाज़ में उन्हें इस गड़े से निकालना चाहा लेकिन उन्होंने सुर्ख़ियों ही

پر نظر دوڑاتے ہوئے ایک ہاتھ یوں چلایا جیسے مکھیاں اڑا رہے ہوں یا ہمیں باہر جانے کی ہدایت دے رہے ہوں۔ ہم نے پھر مسکینی آواز نکالی، "جناب ایک گزارش ہے"۔

اس پر وہ جھلائے اور ہمارے بخار زدہ حلیہ پر قہر آلود نگاہ ڈالتے ہوئے بولے دفع ہو جاؤ...... اچھے خاصے ہٹے کٹے ہو، بھیک مانگتے شرم نہیں آتی"۔

ہم بُری طرح سٹ پٹائے اور اوٹ پٹانگ لہجہ میں فوری بولے:

"اجی جناب! ہم حکیم بندوقی صاحب کا پتہ دریافت کر رہے ہیں"۔

"وہ کیوں ؟" وہ دیدے نچا کر بولے۔

"دراصل ہمیں ان سے طب پر لکھی گئی ایک کتاب لینی ہے"۔

"وہ کیوں؟" اس وقت کا "کیوں" ذرا ڈھیلا پڑ گیا تھا پھر مسکرا کر اخلاق پر اُتر آئے۔

"تشریف رکھیے! مجھے ہی حکیم بندوقی کہتے ہیں!"

کیا آپ کی ذاتِ شریف ہی......" ہم بوکھلا کر بولے۔

ذاتِ شریف!! وہ پھر ہتھے سے اُکھڑ گئے۔

" مم ...... مطلب یہ ہے کہ آپ کی ہی ذاتِ اقدس ...... وہ یعنی ذات باری...... لاحول ولاقوۃ" دراصل ہمیں کل سے بخار ہے۔

"یعنی حکیم خود مریض ہے...... خیر خیر نکالیے ایک روپیہ...... اور یہ لیجیے!"

اتنا کہہ کر وہ اپنی جیب سے دو صفحہ کا پرچہ نکال کر ہمیں دیتے ہوئے بولے

"خوشی منایئے! سمندر کو کوزے میں بند کر دیا ہے...... کیا یاد کریں گے؟"

ہم نے اثبات میں گردن ہلانی شروع کر دی اور روپیہ ان کے حوالے کر دیا۔ پھر اس طب کی کتاب بلکہ "کتابچہ پر نظر دوڑانے لگے...... بڑا واہیات کتابچہ تھا...... اس میں سرے سے طب پر کوئی بحث ہی نہ تھی طبیعت تو چاہی کہ واپس کر دیں، بالکل لاسا چائے کا پمفلٹ لگ رہا تھا۔ جس کی قیمت پہلے تو لینی نہ چاہیے تھی اگر لیتے تو دس پیسے کافی تھی۔ غالباً بندوقی صاحب ہمارے ارادوں کو تاڑ گئے اس لیے فوری بولے:

جناب گھر جا کر مطالعہ فرمایئے! یہاں ہوٹلوں میں طب پر تیاری کرو گے تو

पर नज़र दौड़ाते हुए एक हाथ यूँ चलाया जैसे मख्खियाँ उड़ा रहे हों या हमें बाहर जाने की हिदायत दे रहे हों। हम ने फिर मिस्कीनी आवाज़ निकाली "जनाब एक गुज़ारिश है।"

इस पर वह झल्लाये और हमारे बुख़ारज़दा हुलिये पर क़हरआलूद निगाह डालते हुए बोले दफ़ा हो जाओ...... अच्छे ख़ासे हट्टे कट्टे हो, "भीक माँगते शर्म नहीं आती।"

हम बुरी तरह सटपटाये और ऊटपटाँग लहजे में फ़ौरी बोले:

"अजी जनाब! हम हकीम बंदूक़ी साहब का पता दरयाफ़्त कर रहे हैं।"

"वह क्यों?" वह दीदे नचाकर बोले।

"दरअसल हमें उनसे तिब पर लिखी गई किताब लेनी है।"

"वह क्यों?" उस वक़्त का "क्यों" ज़रा ढ़ीला पड़ गया था फिर मुस्कुरा कर एख़लाक़ पर उतर आये।

"तशरीफ़ रखिये! मुझे ही हकीम बंदूक़ी कहते हैं!"

"क्या आपकी ज़ाते–शरीफ़ ही......" हम बौखला कर बोले।

ज़ाते–शरीफ़!! वह फिर हत्थे से उखड़ गये।

"मम.....मतलब यह है कि आप की ही ज़ाते–अक़्दस.....वह यानी ज़ात बारी..... लाहौलवेला कुव्वत" दरअसल हमें कल से बुख़ार है।

"यानी हकीम खुद मरीज़ है...... ख़ैर ख़ैर निकालिए एक रुपया...... और यह लीजिये!"

इतना कह कर वह अपनी जेब से दो सफ़े का पर्चा निकाल कर हमें देते हुए बोले

"ख़ुशी मनाइये! समन्दर को कूज़े में बन्द कर दिया है...... क्या याद करेंगे?"

हम ने अस्बात में गर्दन हिलानी शुरु कर दी और रुपया उनके हवाले कर दिया। फिर उस किताब बल्कि "किताबचे" पर नज़र दौड़ाने लगे...... बड़ा वाहियात किताबचा था...... उसमें सिरे से तिब पर कोई बहस ही न थी तबीअत तो चाही कि वापिस कर दें, बिल्कुल लासा चाय का पम्फ़लेट लग रहा था। जिसकी क़ीमत पहले तो लेनी न चाहिए थी अगर लेते तो दस पैसे काफ़ी थी। ग़ालेबन बंदूक़ी साहब हमारे इरादों को ताड़ गये इसलिए फ़ौरी बोले:

जनाब घर जाकर मोतालेआ फ़रमाईये! यहाँ होटलों में तिब पर तैयारी करोगे तो मरीज़ का क्या क़ब्रों में इलाज करोगे?

مریض کا کیا قبروں میں علاج کرو گے؟

ہم جھنجلا کر بولے۔ ''اس کتابچہ بلکہ کیٹے کے بچے سے تو یہی ظاہر ہوتا ہے کہ قبروں میں بھی ان کا علاج مشکل ہے۔

ان کی گھگھی بندھ گئی اور غصے میں پتہ نہیں وہ کیا کہنا چاہتے تھے، ہم نے سُنا نہیں، فوری باہر نکل آئے اور رکشہ میں بیٹھ کر رفو چکر ہو گئے۔

آخر کار امتحان کی تاریخ آ ہی گئی۔ انٹرویو میں ہر قسم کے لوگ تھے، ان میں ہمیں جانی قصاب سے لے کر تھپڑ و قوال تک نظر آئے...... ہم نے بڑی ہمت سے جانی قصاب سے دریافت کیا:

''تم کس سلسلہ میں یہ امتحان پاس کرنے کی فکر میں ہو؟''

وہ کچھ دیر تو تذبذب میں رہا' پھر بولا۔

'' آپ سے کیا چھپانا ہے میاں' دراصل مطب چلے نہ چلے مریض علاج کرانے آئیں یا نہ آئیں لیکن لوگ ضرور آئیں گے۔

'' تمہارا مطلب مطب سے ہے یا گوشت کی دوکان سے؟ ہم نے جرح کی۔

'' آخر اس کی وجہ ؟ ہماری سمجھ میں کچھ نہ آیا وہ اتنے وثوق سے کس طرح یہ بات کہہ رہا ہے۔

''اوہ...... دیکھیے آج کل لوگ دفتروں اور کالجوں سے غائب ہو جاتے ہیں اور جب رجوع ہوتے ہیں تو انھیں ڈاکٹری صداقت ناموں کی ضرورت پڑتی ہے۔''

''اوہ...... ہو......'' ہم پر حیرانی کا پہاڑ ٹوٹ پڑا۔ تو گویا تم صداقت ناموں کا دفتر کھول لو گے۔''

جی ہاں اگر دس گاہک آ جائیں تو کم از کم بیس روپے یومیہ کی آمدنی کھٹ۔''

''بالکل...... بالکل۔'' ہم اس کی سمجھداری پر عش عش کر اٹھے۔

اب ہم چلتے ہوئے اس انٹرویو والے کمرے کے قریب جا کھڑے ہوئے

हम झुंझला कर बोले। "इस किताबचे बल्कि कुत्ते के बच्चे से तो यही ज़ाहिर होता है कि कब्रों में भी उनका इलाज मुश्किल है।

उनकी घिग्घी बंध गई और गुस्से में पता नहीं वह क्या कहना चाहते थे, हम ने सुना नहीं, फ़ौरी बाहर आये और रिक्शे में बैठ कर रफ़ू चक्कर हो गये।

आख़िरकार इम्तेहान की तारीख़ आ ही गई। इन्टरव्यू में हर किस्म के लोग थे, उनमें हमें जानी क़स्साब से लेकर थपडू क़व्वाल तक नज़र आये...... हमने बड़ी हिम्मत से जानी क़स्साब से दरयाफ़्त किया

"तुम किस सिलसिले में यह इम्तेहान पास करने की फ़िक्र में हो?"

वह कुछ देर तो तज़बज़ुब में रहा, फिर बोला।

"आपसे क्या छुपाना मियाँ, दरअसल मतब चले न चले मरीज़ इलाज कराने आयें या न आयें लेकिन लोग ज़रुर आयेंगे।

"तुम्हारा मतलब मतब से है या गोश्त की दुकान से? हम ने जिरह की।

आख़िर इसकी वजह? हमारी समझ में कुछ न आया वह इतने वसूक़ से किस तरह यह बात कह रहा है।

"ओह...... देखिए आज कल लोग दफ़्तरों और कॉलेजों से गायब हो जाते हैं और जब रजूअ[1] होते हैं तो उन्हें डाक्टरी सदाक़त–नामों[2] की ज़रुरत पड़ती है।"

"ओह.... हो......" हम पर हैरानी का पहाड़ टूट पड़ा। तो गोया तुम सदाक़त–नामों का दफ़्तर खोल लोगे।"

"जी हाँ अगर दस गाहक आ जायें तो कम अज़ कम बीस रुपये की आमदनी खट।"

"बिल्कुल....... बिल्कुल।" हम उसकी समझदारी पर अश–अश कर उठे।

अब हम चलते हुए उस इन्टरव्यू वाले कमरे के क़रीब जा खड़े हुए

1. वापस आना, लौटना 2. प्रमाण पत्र

جہاں ان نیم حکیموں کی درگت بنائی جا رہی تھی۔ جب کبھی اس مسلخ سے نیم حکیم باہر نکلتا تھا تو دیکھنے سے تعلق رکھتا تھا...... پسینے میں بھیگا ہوا بال منتشر چہرہ اترا ہوا پھر حواس اتنے باختہ کہ کسی فاختہ کی طرح بے ساختہ منٹوں میں شفاخانہ چھوڑ بھاگتا......

ہم نے سوچا کہ یہ بے وقوف خواہ مخواہ پریشان ہو رہے ہیں۔ ہونہہ!...... ہماری ہمت دیکھیے کہ کتنی جوانمردی سے ڈٹے ہوئے ہیں۔ امتحان کی تیاری تو کجا اس کی تاریخ تک یاد نہ رکھی تھی، وہ تو گھر میں یاد دلانے پر ہم چلے آئے تھے۔ چلو ایک تفریح تو ہو جائے گی اور ہم اس انٹرویو کے داؤ پیچوں...... سے تو واقف ہو جائیں گے۔ انشاء اللہ اگلے سال پھر آئیں گے اور کیا......ہم اسی سوچ میں مبتلا تھے کہ چپراسی نے ایک سو تیرہ نمبر پکارا اور ہم چونک کر حاضر جناب بول پڑے۔ چپراسی نے ہمیں نیچے سے اوپر پھر اوپر سے نیچے دیکھا اور جھنجھلا کر بولا۔ ''جناب یہ عدالت نہیں ہے۔

''نہیں ہے''۔ ہم معصومیت سے بولے اور مسکرا کر اس کی طرف دیکھتے ہوئے کہا دراصل ہمیں عدالت بھی جانا ہے''۔

''نہیں، پہلے ذرا اس مرحلے سے تو نبٹ لیں''۔

'' آیئے'' وہ کرخت آواز میں بولا اور ہم اس کے ساتھ سامنے والے کمرے میں گھس گئے۔

جالینوس نما شخص نے کہا ''تشریف رکھیے جناب۔ اس جملہ کے ادا ہوتے ہی ہم بجلی کی تیزی سے کرسی پر فروکش ہو گئے۔

''جناب کا نام'' جالینوس صاحب رجسٹر کی ورق گردانی کرتے ہوئے بولے۔

''نمبر ایک سو تیرہ''

''نمبر ایک سو تیرہ'' سقراط قہقہہ لگا کر بولے'' جناب آپ کا نام پوچھا جا رہا ہے''۔

''لو......جج......جی......وہی......یعنی ارشد''۔

آپ کے مطب کا نام؟''

''علاج الناس!'' بقراط نے طنزیہ ہنسی ہنستے ہوئے کہا ''تو کیا طب یونانی میں

जहाँ उन नीम हकीमों की दुर्गत बनाई जा रही थी। जब कभी उस मस्लख़[1] से नीम हकीम बाहर निकलता था तो देखने से तअल्लुक़ रखता था...... पसीने में भीगा हुआ, बाल मुन्तशिर, चेहरा उतरा हुआ, फिर हवास इतने बाख़्ता कि किसी फ़ाख़्ता की तरह बे साख़्ता मिन्टों में शिफ़ा ख़ाना छोड़ भागता.......

हम ने सोचा कि यह बेवकूफ़ ख़्वाहमख़्वाह परेशान हो रहे हैं। हुं!...... हमारी हिम्मत देखिये कि कितनी जवाँ मर्दी से डटे हुए हैं। इम्तेहान की तैयारी तो कुजा इसकी तारीख़ तक याद न रखी थी, तो वह घर में याद दिलाने पर हम चले आये थे। चलो एक तफ़रीह तो हो जायेगी और हम इस इन्टरव्यू के दाव–पेंचों..... से वाक़िफ़ हो जायेंगे। इन्शा अल्लाह अगले साल फिर आयेंगे और क्या...... हम इसी सोच में मुब्तला थे कि चपरासी ने एक सौ तेरह नम्बर पुकारा और हम चौंक कर हाज़िर जनाब बोल पड़े। चपरासी ने हमें नीचे से ऊपर फिर उपर से नीचे देखा और झुंझला कर बोला "जनाब यह अदालत नहीं है।"

"नहीं है।" हम मासूमियत से बोले और मुस्कुरा कर उसकी तरफ़ देखते हुए कहा दरअसल हमें अदालत भी जाना है।"

"नहीं, पहले ज़रा इस मरहले से तो निबट लें।"

"आइये" वह करख़्त आवाज़ में बोला और हम उसके साथ सामने वाले कमरे में घुस गये।

जालीनूस नुमा शख़्स ने कहा "तश्रीफ़ रखिये जनाब"। इस जुम्ले के अदा होते ही हम बिजली की तेज़ी से कुर्सी पर फ़रोकश हो गये।

"जनाब का नाम" जालीनूस साहब रजिस्टर की वरक़ गरदानी करते हुए बोले।

"नम्बर एक सौ तेरह"

"नम्बर एक सौ तेरह" सुकरात कहकहा लगाकर बोले "जनाब आपका नाम पूछा जा रहा है।"

"ओ......जज...... जी...... वही...... यानी अरशद।"

"आपके मतब का नाम?"

"इलाजुन्नास!" बोक़रात ने तन्ज़िया हंसी हंसते हुए कहा "तो क्या तिब्बे–यूनानी में इलाजे–हैवानात भी होता है!"

---

1. खाल उतारने की जगह

علاج حیوانات بھی ہوتا ہے!''

ہم نے سوچا' یہاں مرعوبیت کام نہ دے گی۔ بس ہو جائے کچھ نہ کچھ تفریح' اس لیے برجستہ بول پڑے:

''کیوں نہیں جناب ...... بے شک حیوانات کا علاج بھی اس یونانی سمندر میں ٹھاٹھیں مار رہا ہے۔ اگر نہیں ہے تو یہ یونانی علاج کی توہین ہے اور یہ کہ وہ نامکمل ہے۔ اب حکیم نابینا صاحب کا واقعہ ہی لے لیجیے۔ وہ کس قدر غضب کے نباض واقع ہوئے ہیں۔ نبض دیکھ کر مریض کی پوری تشخیص فرما دیتے تھے۔ عورتوں کو چوں کہ ہاتھ نہیں لگاتے تھے اس لیے دھاگہ باندھ کر نبض دیکھتے تھے۔ ایک دفعہ کا مشہور واقعہ ہے کہ ایک شخص نے بھینس کو دھاگہ باندھ کر دوسرا سرا نابینا صاحب کے ہاتھ میں دے کر کہا ''یہ میری بیوی ہے جو بہت کمزور ہو گئی ہے''۔ پتہ ہے انھوں نے کیا کہا۔ انھوں نے نبض دیکھ کر کہا تھا ''اسے بنولہ زیادہ دیا کرو کمزوری جاتی رہے گی۔''

بہت خوب ...... بہت خوب۔'' سقراط صاحب بولے۔'' مگر آپ یہاں حکایتیں سنانے نہیں آئے ہیں' سمجھے جناب''۔

''وہ ہم پہلے ہی سمجھ چکے ہیں...... فرمائیے۔''

جالینوس نے ہمیں کھا جانے والی نظروں سے گھورا اور غرا کر پوچھا ''جناب کی عمر''۔

''رہی ہو گی پینتیس چھتیس'' ہم ان کی آنکھوں کی بجائے چھت کو گھورتے ہو بولے۔

''جناب ڈھنگ سے جواب دیجیے'' وہ خفگی کے انداز سے بولے۔ اب یہ بتائیے کی جب آپ کی عمر ۳۵ سال ہے تو کیا دس سال پہلے یعنی ۲۵ سال کی عمر ہی سے آپ مطب چلا رہے ہیں۔''

''جی ہاں!'' ہم ڈھٹائی سے سلسلہ دراز کرتے بولے:'' دراصل اس کی بھی ایک تاریخ ہے جناب! اصل میں ہم ایک خاندانی حکیم ہیں ہمارے دادا مست قلندر عرف مسیحائے وقت بہ شکل جھاڑ پھونک وضرب کلیم بغیر عصائے دفعیات بلیّات ...... جادوئی و

हमने सोचा, यहाँ मरयूबियत काम न देगी। बस हो जाए कुछ न कुछ तफरीह, इसलिए बरजस्ता बोल पड़े:

"क्यों नहीं जनाब....... बेशक हैवानात का इलाज भी इस यूनानी समन्दर में ठाठें मार रहा है। अगर नहीं है तो यह यूनानी इलाज की तौहीन है और यह कि वह नामुकम्मल है। अब हकीम नाबीना साहब का वाक़या ही लीजिये। वह किस क़द्र ग़ज़ब के नब्बाज़ वाक़ेह हुए हैं। नब्ज़ देखकर मरीज़ की पूरी तश्ख़ीस फ़रमा देते थे। औरतों को चूँकि हाथ नहीं लगाते थे इसलिए धागा बांधकर नब्ज़ देखते थे। एक दफ़ा का मशहूर वाक़या है कि एक शख़्स ने भैंस को धागा बांधकर दूसारा सिरा नाबीना साहब के हाथ में देकर कहा "यह मेरी बीवी है जो बहुत कमज़ोर हो गई है।" पता है उन्होंने क्या कहा। उन्होंने नब्ज़ देखकर कहा था "उसे बिनौले ज़्यादा दिया करो कमज़ोरी जाती रहेगी।"

"बहुत ख़ूब....... बहुत ख़ूब" सोक़रात साहब बोले। "मगर आप यहाँ हिकायतें सुनाने नहीं आये है, समझे जनाब।"

"वह हम पहले ही समझ चुके हैं....... फ़रमाइये।"

जालीनूस ने हमें खा जाने वाली नज़रों से घूरा और ग़ुर्रा कर पूछा "जनाब की उम्र।"

"रही होगी पैंतीस छत्तीस" हम उनकी आँखों की बजाए छत को घूरते हुए बोले।

"जनाब ढ़ंग से जवाब दीजिये" वह ख़फ़गी के अंदाज़ से बोले। अब यह बताइये की जब आपकी उम्र 35 है तो क्या दस साल पहले 25 साल की उम्र ही से आप मतब चला रहे हैं।"

"जी हाँ! हम ढिटाई से सिलसिला दराज़ करते बोले: "दरअसल एक तारीख़ है जनाब! असल में हम एक ख़ान्दानी हकीम हैं हमारे दादा मस्त क़लन्दर उर्फ़ मसीहाये–वक़्त ब शक़्ले झाड़ फूंक व ज़र्बे–कलीम बग़ैर असाये दफ़याते–बलय्यात....... जादूई व सल्मानी क़ाबुए जिन्नाती..... करामती सल्मानी क़ाबुए जिन्नाती..... करामती व फ़ैज़ानी व......."

سلمانی قابوے جناتی...... کراماتی و فیضانی و......"

بس ......بس رہنے دیجیے، جالینوس غصے میں پھنکارتے ہوئے بیچ ہی میں بول پڑا: آپ شاید مالیخولیا کے مریض ہیں۔"

"نہیں ......جی نہیں جناب البتہ ہمارے پڑوس میں اس نام کا آدمی رہتا تھا۔ پرسوں ہی انتقال کر گیا بے چارہ۔"

"خیر آپ فرمائیے کہ آپ کس مرض کے ماہر ہیں۔ سقراط بیچ میں کود پڑے۔

"ماہر تو نہیں کہہ سکتے' ویسے خدا کی دین ہے' جس کو چاہے عطا فرمائے۔ آپ کو تو اس آیت شریف کا ترجمہ معلوم ہوگا یعنی اللہ جس کو چاہتا ہے عزت دیتا ہے جس کو چاہتا......

"آپ مرض کا نام لیجیے"۔ وہ بیچ میں بول پڑے

"جی ہم بواسیر کا علاج کرتے ہیں۔"

مطلب اس کا یہ ہوا کہ آپ بواسیر کے ماہر ہیں۔"

"جج......جی ہاں"

"کتنے مریض آتے ہیں جناب؟"

"روز فرما رہے ہیں آپ؟" ہم نے کہا

"پھر کیا آپ کا مطلب ماہواری سے ہے۔

"جی نہیں ......لیکن یہ کمبخت مرض ماہوار کے بجائے عمر میں ایک آدھ بار ایک آدھ کو لگتا ہے......خیر ہمارے حساب سے دس تو مستقل گاہک ہیں......او وہ یعنی مریض ہیں۔"

"مستقل؟ جالینوس نے جبیں پر شکنوں کا انبار لاد کر کہا

"جی ہاں دراصل انھیں بڑی غضب کی بواسیر سے پالا پڑا ہے۔ وہ تو خیر ہمارے دم سے ان کا دم ہے' ورنہ بے دم ہو چکے ہوتے۔"

......خیر اب آپ بتائیے کہ بواسیر کتنے اقسام کی ہوتی ہے؟"

"ائیں......اس سوال پر ہم بری طرح اچھل پڑے۔ جہاں تک ہمارا تعلق تھا

बस...... बस रहने दीजिये, जालीनूस गुस्से में फुनकारते हुए बीच ही में बोल पड़ा: आप शायद मालीख़ूलिया के मरीज़ हैं।"

"नहीं...... जी नहीं जनाब अल्बत्ता हमारे पड़ोस में इस नाम का आदमी रहता था। परसों ही इन्तक़ाल कर गया बेचारा।" "ख़ैर आप फ़रमाइये कि आप किस मर्ज़ के माहिर हैं। सोक़रात बीच में कूद पड़े। "माहिर तो नहीं कह सकते, वैसे ख़ुदा की देन है, जिसको चाहे अता फ़रमाये। आपको तो आयत शरीफ़ का तर्जुमा मालूम होगा। अल्लह जिसको चाहता है इज़्ज़त देता है जिसको चाहता है.......

"आप मर्ज का नाम लीजिये" वह बीच में बोल पड़े।

"जी हम बवासीर का इलाज करते हैं।"

"मतलब इसका यह हुआ कि आप बवासीर के माहिर हैं।"

"जज...... जी हाँ"

"कितने मरीज़ आते हैं जनाब?"

"रोज़ फ़रमा रहे हैं आप?" हम ने कहा

"फिर क्या आपका मतलब माहवारी से है"

"जी नहीं...... लेकिन यह कमबख़्त माहवार के बजाए उम्र में एक आध बार एक आध को लगता है...... ख़ैर हमारे हिसाब से दस तो मुस्तक़िल गाहक हैं.......ओह यानी मरीज़ हैं।"

"मुस्तक़िल? जालीनूस ने जबीं पर शिकनों का अंबार लादकर कहा।

"जी हाँ दरअसल उन्हें बड़ी ग़ज़ब की बवासीर से पाला पड़ा है। वह तो ख़ैर हमारे दम से उनका दम है, वरना बेदम हो चुके होते।"

.......ख़ैर अब आप बताइये कि बवासीर कितने अक़्साम की होती है?"

"अई...... इस सवाल पर हम बुरी तरह उछल पड़े। जहाँ तक हमारा तअल्लुक़ था हम बवासीर को एक और सिर्फ़ एक ही ख़याल करते

ہم بواسیر کو ایک اور صرف ایک ہی خیال کرتے تھے۔ پھر بھی حافظہ پر زور ڈال کر کہا: تین'
"بتلایئے کہ بواسیر کیوں ہوتی ہے؟"
"کیوں ہوتی ہے؟ ہم دماغ پر زور ڈالتے ہوئے بولے:"یہی اناپ شناپ کھانے سے اور کیا
"آخر؟"
"ہاں...... جی ہاں! دراصل خون میں حدّت ہو جاتی ہے اور وہ شدت سے خارج ہونے کے لیے ایڑی چوٹی کا زور لگاتا ہے۔ اس طرح بواسیر انگڑائی لیتی ہے"۔
"بواسیر انگڑائی لیتی ہے! جالینوس نے جھنجھلا کر کہا"۔آپ کسی ڈرامہ کے ایکٹر تو نہیں؟"
"جی نہیں مطلق نہیں ...... کاش کے ہم ہوتے ...... ایکٹر...... ہونہہ اگر ٹریکٹر کے ڈرائیور ہی ہوتے تو بس تھا۔"
"لاحول ولاقوۃ" جالینوس نے بقراط کی طرف کچھ اشارہ کیا' اس لیے فوری بقراط بول پڑے:
"اچھا جناب! فرمایئے ان تینوں اقسام کی بواسیر کا آپ علاج کس طرح کرتے ہیں"۔
"بہت سادہ علاج ہے جناب پہلے تو ہم انھیں سخت پرہیز کراتے ہیں۔ اتنا سخت کہ پتھر بھی پگھل جائے پھر کیا مجال کہ بواسیر کے قدم اکھڑ نہ جائیں۔
"آپ علاج بیان فرمائیں؟"
"یہی کنگھی کے پتوں کا استعمال"۔
"ان تمام اقسام کے لیے؟"
"جی نہیں صرف خونی کے لیے۔ اب رہا بادی کا مسئلہ! اس کے لیے ہم 'فنا فٹ' چاندی کے ورق میں لپیٹ کر دیتے ہیں۔"
فنافٹ ! یہ کیا ہوتی ہے۔"
یہ گیاسس دور کرنے کی تیر بہدف دوا ہے جناب......

थे। फिर भी हाफ़ज़े पर ज़ोर डाल कर कहा: तीन"

"बतलाइये कि बवासीर क्यों होती है?"

"क्यों होती है? हम दिमाग़ पर ज़ोर डालते हुए बोले: "यही अनाप शनाप खाने से और क्या।

"आख़िर?"

"हाँ...... जी हाँ! दरअसल ख़ून में हिद्दत हो जाती है और वह शिद्दत से ख़ारिज होने के लिए ऐड़ी चोटी का ज़ोर लगाता है। इस तरह बवासीर अंगड़ाई लेती है।"

"बवासीर अंगड़ाई लेती है! जालीनूस ने झुंझलाकर कहा।" आप किसी ड्रामे के ऐक्टर तो नहीं?"

"जी नहीं मुतलक़ नहीं...... काश कि हम होते...... ऐक्टर...... हुंह अगर ट्रैक्टर के ड्राइवर ही होते तो बस था।"

"लाहौलवला कूव्वत" जालीनूस ने बोक़रात की तरफ़ कुछ इशारा किया, इसलिए फ़ौरी बोक़रात बोल पड़े:

"अच्छा जनाब! फरमाइये इन तीनों अक़्साम की बवासीर का आप इलाज किस तरह करते हैं।"

"बहुत सादा इलाज है जनाब पहले तो उन्हें सख़्त परहेज़ कराते है। इतना सख़्त कि पत्थर भी पिघल जाये फिर क्या मजाल कि बवासीर के क़दम उखड़ न जायें"

"आप इलाज बयान फ़रमायें?"

"यह यही कंघी के पत्तों का इस्तेमाल।"

"इन तमाम अक़साम के लिए?"

"जी नहीं सिर्फ़ ख़ूनी के लिए। अब रहा बादी का मसला! उस के लिए हम 'फ़टाफ़ट' चाँदी के वर्क़ में लपेट कर देते हैं।"

"फ़टाफ़ट! यह क्या होती है।"

"यह ग्यासिस दूर करने के लिए तीर बहदफ़ दवा है जनाब......"

''ٹھیک ہے کوئی بواسیر کے لیے کیا علاج تجویز فرماتے ہیں؟''

''اوہ...... دیکھیے اس کے لیے ہم بیرونی استعمال تجویز کرتے ہیں'' ہم نے کچھ شرما کر کہا

''مثلاً''

''اس کے لیے ہم گھوڑ سواری کی بلاناغہ چند گھنٹے کی ہدایت دیتے ہیں''۔

''یہ کیا بک رہے ہیں آپ!''

''جی وہی یعنی گھوڑے کی ننگی کمر پر......

''واہیات'' جالینوس غصہ سے طیش میں آ گیا۔

''بالکل واہیات ہیں جناب مگر یہ دیکھیے، موثر علاج جو سینہ بہ سینہ ہمارے آباء واجداد سے ہوتے ہوئے ہم تک پہنچا ہے''۔ یہ کہہ کر ہم نے شیروانی کی جیب سے چند دھاتوں کے ٹکڑے نکالے اور ٹیبل پر ڈال دیئے۔ تینوں اسے دیکھنے جھک گئے۔ ادھر لقمان صاحب نے بھی اونٹ کی طرح گردن نکالی اور اس کا معائنہ کرنے کے بعد تانبیل کی طرح پھر گردن اندر سمیٹ لی۔

''یہ کیا ہے؟ سقراط بولے۔

اس میں دنیا بھر کی تمام دھاتیں ہیں مثلاً لوہا، پیتل، کتھا، تانبا، سونا، چاندی، جست اور......''

بس بس رہنے دیجیے...... یہ بتائیے کہ اس کا حاصل کیا ہے؟''

''اس کی انگوٹھی بنا کر پہنا دیتے ہیں' اس کا نام ہے بواسیری چھلہ اس کے پہنتے ہی بواسیر اس طرح بوکھلاہٹ کا شکار ہو جاتی ہے کہ بستی چھوڑ کر بھاگ کھڑی ہوتی ہے''۔

''لاحول ولاقوۃ! آپ فوری جیب میں ڈال لیجیے۔ یہاں صرف جڑی بوٹیوں پر بحث ہوتی ہے۔ ان دھاتوں کا کیا کام؟

واہ......وہ کیوں نہیں ہے جب کہ کئی دھاتیں دواؤں میں ملانی پڑتی ہیں۔''

ہم نے ان دھاتوں کے ٹکڑوں کو اٹھا کر جیب میں رکھتے ہوئے کہا۔

"ठीक है कोमई बवासीर के लिए क्या इलाज तजवीज़ फ़रमाते हैं?"

"ओह....... देखिये इसके लिए बेरुनी इस्तेमाल तजवीज़ करते हैं" हमने कुछ शर्मा कर कहा।

"मसलन"

"उसके लिए हम घोड़सवारी की बिला नागा चं: घंटे की हिदायत देते हैं।"

"यह क्या बक रहे हैं आप!"

"जी वही यानी घोड़े की नंगी कमर पर........"

"वाहियात" जालीनूस गुस्से से तैश में आ गया।

"बिल्कुल वाहियात हैं जनाब मगर यह देखिये, मोअस्सिर इलाज जो सीना ब सीना हमारे आब्बा व अजदाद से होते हुए हम तक पहुँचा है।" यह कहकर हमने शेरवानी की जेब से चंद धातों के टुकड़े निकाले और टेबिल पर डाल दिये। तीनों उसे देखने झुक गये। उधर लुक़मान साहब ने भी ऊँट की तरह गर्दन निकाली और उसका मोआयना करने के बाद तांबेल की तरह फिर गर्दन अन्दर समेट ली।

"यह क्या है?" सोक़रात बोले।

"इसमे दुनिया भर की तमाम धातें हैं मसलन लोहा, पीतल, कत्था, तांबा, सोना, चाँदी, जस्ता और......"

"बस बस रहने दीजिये...... यह बताइये कि इसका हासिल क्या है?"

"इसकी अंगूठी बनाकर पहना देते हैं, उसका नाम है बवासीरी छल्ला उसके पहनते ही बवासीर इस तरह बौखलाहट का शिकार हो जाती है कि बस्ती छोड़कर भाग खड़ी होती है।"

"लाहौलवला कूव्वत!" आप फ़ौरी जेब में डाल लीजिये। यहाँ सिर्फ़ जड़ी बूटियों पर बहस होती है। इन धातों का क्या काम?

"वाह....... वह क्यों नहीं है जबकि कई धातें दवाओं में मिलानी पड़ती हैं।"

हमने उन धातों के टुकड़ों को उठाकर जेब में रखते हुए कहा।

کئی کشتوں میں تو صرف دھات ہی دھات شامل کرنی پڑتی ہے اور مزید برآں جڑی بوٹیوں کے اجزاء پر ریسرچ کی گئی تو انھیں دھاتوں کے مرکبات ملیں گے"۔

"خیر آپ یہ طولانی بحث ختم فرمایئے اور تشریف لے جایئے!

جالینوس غرّا کر بولے

"ہمارا انٹرویو ختم ہو گیا جناب والا؟ ہم نے اُٹھتے ہوئے پوچھا

"جی ہاں! تینوں بیک زبان ہو کر بولے

اور ہم فاتحانہ انداز سے باہر آ گئے!

لیکن دو ماہ بعد ہم نے نتیجہ دیکھا تو ہمارا نام ندارد تھا۔

• • •

"कई कुश्तों में तो सिर्फ़ धात ही धात शामिल करनी पड़ती है और मज़ीद बरआँ जड़ी बूटियों के अजज़ा पर रिसर्च की गई तो उन्हीं धातों के मोरक्कबात1 मिलेंगे।"

"ख़ैर आप यह तूलानी बहस ख़त्म फ़रमाइये और तशरीफ़ ले जाईये!

जालीनूस गुर्रा कर बोले

"हमारा इन्टरव्यू ख़त्म हो गया जनाबे-वाला? हम ने उठते हुए पूछा।

"जी हाँ! तीनों बयक-ज़बान होकर बोले।

और हम फ़ातेहाना अन्दाज़ से बाहर आ गये।

लेकिन दो माह बाद हम ने नतीजा देखा तो हमारा नाम नदारद था।

• • •

---

1. मिश्रण

شفیقہ فرحت

ہدایت نامہ برائے ریسرچ اسکالر

ذکر ہے بہت ہی نامور یونی ورسٹی کا جس کا نام سنتے ہی ایسے ویسوں کے تو بھاری بھرکم جسم میں خود بخود لرزہ طاری ہو جائے اور نہ صرف دانت سے دانت بلکہ ہڈی سے ہڈی بجنے لگے۔ جس کی عمارت کے شکوہ پہ بینک کا گمان گزرے اور تقدس اور وقار پہ عبادت خانے کا!

اور ذکر ہے اس نامور یونی ورسٹی کے اس سے بھی زیادہ نامور پروفیسر کا جن کی شہرت گلی گلی کوچے کوچے سے اچھلتی کودتی، کوہ و دریا پھلانگتی جٹ اور راکٹوں پہ اڑتی شہر شہر اور ملکوں ملکوں پھیلی ہوئی تھی۔ اور منظر ہے ناموری کے ان سول ایجنٹ اور اسٹاکسٹ کی خدمت میں آنا ایک ریسرچ اسکالر کا۔!!

دس پندرہ منٹ (یا شاید اس سے بھی زیادہ کیوں کہ ایسے موقعوں پر ریسرچ اسکالر گھڑی نہیں دیکھا کرتے......!!) دروازے کے باہر انتظار کرنے کے بعد وہ ایک ناتواں سی دستک دیتا ہے۔

پروفیسرانہ توقف کے بعد اندر سے آواز آتی ہے۔

''کون''

''سر۔ میں'' شاید منکر نکیر کے آگے گنہگار اتنا نہ گڑگڑاتا ہوگا!

''کم۔ ان''

शफ़ीक़ा फ़रहत

हिदायतनामा बराए रिसर्च स्कालर्स

ज़िक्र है बहुत ही नामवर यूनीवर्सिटी का जिसका नाम सुनते ही ऐसे–वैसों के तो भारी भरकम जिस्म में खुद–बखुद लर्ज़ा तारी हो जाये और न सिर्फ़ दाँत से दाँत बल्कि हड्डी से हड्डी बजने लगे। जिसकी इमारत के शिकोह पर बैंक का गुमान गुज़रे और तक़द्दुस और वेक़ार पर इबादत–ख़ाने का!

और ज़िक्र है इस नामवर यूनीवर्सिटी के उस से भी ज़्यादा नामवर प्रोफ़ेसर का, जिन की शोहरत गली–गली कूचे–कूचे से उछलती कूदती, कोहो–दरया फलांगती जेट और रॉकेटों पर उड़ती शहर–शहर और मुल्कों–मुल्कों फैली हुई थी। और मन्ज़र है नामवरी के इन सिविल ऐजेंट और स्टॉकिस्ट की ख़िदमत में आना एक रिसर्च स्कॉलर का!!

दस पन्द्रह (या शायद उस से भी ज़्यादा क्योंकि ऐसे मौक़े पर रिसर्च स्कॉलर घड़ी नहीं देखा करते....!!) दरवाज़े के बाहर इन्तज़ार करने के बाद वह एक नातवाँ सी दस्तक देता है।

प्रोफ़ेसराना तवक़्क़ुफ़[1] के बाद अन्दर से आवाज़ आती है।

"कौन"

"सर – मैं" शायद मुनकिर नकीर[2] के आगे गुनहगार इतना न गिड़गिड़ाता होगा।

"कम–इन"

---

1. अन्तराल
2. फ़रिश्ते जो क़ब्र में मुर्दे से सवाल करते है।

وہ سر جھکائے داخل ہوا اور رکوع CUM سجدے کی کیفیت میں مبتلا ہو گیا۔
پروفیسر موصوف اس کی ذات سے محبوبانہ رنگ اور سیاسیانہ ڈھنگ سے بے نیاز ہو کر اس خاکسار سے کہ جس کی ذات بے برکات میں وہ اس سے پہلے قطعی دلچسپی نہیں لے رہے تھے، پوری توجہ سے محوِ گفتگو ہو گئے ریسرچ اسکالر زندہ باد۔!

اتنی دیر کی خاموشی کے بعد کہ جتنی دیر میں کئی ایک تعزیتی جلسے نپٹائے جا سکتے تھے، اس نے بغل میں دبی کیم شحیم فائل یوں احتیاط اور احترام سے میز پر رکھی جیسے پیر خدا بخش کے مزار پر چادر چڑھا رہا ہو۔

''سر۔ یہ آپ کے پیپرس کی چاروں کاپیاں......''

اس کی طرف غلط یا صحیح کسی بھی انداز کی نگاہ ڈالے بغیر ایک ہیبت ناک ''ہوں'' کی۔ پھر تین تال میں بڑی سریلی سیٹی بجا کر ساڑھے تین تال میں پریم راگ الاپا۔ ''سویٹی'' اک قد آور درندہ ہائی جمپ لانگ جمپ کے سارے ریکارڈ چکنا چور کر کے پروفیسر اور اسکالر کی مشترکہ مقابل کرسی پر حملہ آور ہوا۔ اس درندے پہ نسوانیت اور سویٹ نس دونوں میں سے کوئی الزام عائد نہ ہوتا تھا۔ وہ تو اس کی ہلتی ہوئی دم نے ڈھارس بندھائی ورنہ ہمارا بیہوش ہو جانا یقینی تھا۔ مگر اسکالر صاحب کے کھوئے ہوئے حواس اسے دیکھتے ہی واپس آ گئے اس محبت اور مسرت سے آپ نے اپنے رخسار سویٹی کے ''رخ نازیبا'' کے اتنے قریب کیے کہ ہندی فلم میں تو اس پر سنسر لگ جاتا۔

پھر جیب سے بسکٹ کا سالم پکیٹ نکالا اور احترام کی تمام دیرینہ روایتوں کو فل ملٹری آنر کے ساتھ برقرار رکھتے ہوئے ایک بسکٹ ان کے دہن مبارک میں رکھا۔ سویٹی صاحبہ بسکٹ نوش فرماتی جاتی تھیں اور فرطِ مسرت سے کبھی اپنی تندرست بانہیں ان کے گلے میں ڈالتیں، کبھی اپنا منہ ان کے شانے سے رگڑتی تھیں۔

سویٹی کی خدمت کے بعد اسکالر صاحب کو مہمانوں کی خدمت کا موقع دیا گیا۔ پھر اہلِ خانہ کی خدمت گزاری کا ثواب کمانے کی خاطر انھیں درونِ خانہ بھیج دیا گیا۔

شام کو دیکھا تو کیمپس کی پُر فضا کشادہ سڑک پر ایک نہیں ایسے کئی جغادری پروفیسر آن چہل قدمی کر رہے ہیں اور ان کے پیچھے پیچھے دو دو چار چار مظلوم صورتیں، ان کی

वह सर झुकाये दाखिल हुआ और रुकूअ[1] CUM सजदे की कैफ़ियत में मुब्तला हो गया। प्रोफ़ेसर मौसूफ़ इस ज़ात से महबूबाना रंग और सियासियाना ढंग से बे नयाज़ होकर इस ख़ाकसार से कि जिसकी ज़ाते–बे–बरकात में वह इस से पहले क़तई दिलचस्पी नहीं ले रहे थे, पूरी तवज्जो से महवे–गुफ़तगू हो गये, रिसर्च स्कॉलर ज़िंदाबाद।

इतनी देर की ख़ामोशी के बाद जितनी देर में कई ताज़ियती–जलसे[2] निपटाये जा सकते थे, उसने बग़ल में दबी लहीम–शहीम फ़ाइल यूँ एहतयात और एहतराम से मेज़ पर रखी जैसे पीर ख़ुदा बख़्श के मज़ार पर चादर चढ़ा रहा हो।

"सर। ये आपके पेपर्स की चारों कॉपियाँ....."

उसकी तरफ़ ग़लत या सही किसी भी अंदाज़ की निगाह डाले बग़ैर एक हैबतनाक "हूँ" की। फिर तीन ताल में बड़ी सुरीली सीटी बजाकर साढ़े तीन ताल में प्रेम राग अलापा। "स्वीटी" एक क़द्दावर दरिन्दा हाई जम्प, लांग जाम्प के सारे रिकार्ड चकनाचूर करके प्रोफ़ेसर और स्कॉलर की मुश्तरका मुक़ाबिल कुर्सी पर हमलावर हुआ। उस दरिन्दे पर निसवानियत[3] और स्वीटनेस दोनों में से कोई इल्ज़ाम आयद न होता था। वह तो उसकी हिलती हुई दुम ने ढ़ारस बन्धाई वरना हमारा बेहोश हो जाना यक़ीनी था। मगर स्कॉलर साहब के खोये हुये हवास उसे देखते ही वापस आ गये इस मुहब्बत और मसर्रत से आप ने अपने रुख़सार स्वीटी के "रुख़े–नाज़ेबा" के इतने क़रीब किये कि हिन्दी फिल्म में तो इस पर सेंसर लग जाता।

फिर जेब से बिस्कुट का सालिम पैकिट निकाला और एहतराम की तमाम देरीना रिवायतों को फुल मिलिट्री ऑनर के साथ बरक़रार रखते हुये एक बिस्कुट उनके दहने–मुबारक में रखा। स्वीटी साहिबा बिस्कुट नोश फरमाती जाती थीं और फ़र्ते–मसर्रत से कभी अपनी तन्दरुस्त बांहें उनके गले में डालतीं, कभी अपना मुंह उनके शाने से रगड़ती थीं।

स्वीटी की ख़िदमत के बाद स्कॉलर साहिब को मेहमानों की ख़िदमत का मौक़ा दिया गया। फिर अहले–ख़ाना की ख़िदमत–गुज़ारी का सवाब कमाने की ख़ातिर उन्हें दुरुने–ख़ाना[4] भेज दिया गया।

शाम को देखा तो कैम्पस की पुर–फ़िज़ा कुशादा सड़क पर एक नहीं ऐसे कई जुगादरी प्रोफ़ेसरान चहल क़दमी कर रहे हैं और उनके पीछे पीछे दो–दो चार–चार मज़लूम सूरतें, उनकी

1. झुकना 2. शोक सभा 3. औरतपन 4. घर के अन्दर

سویٹی اور بیوٹی کی زنجیریں باری باری تھامے چل رہی ہیں۔

حیف اس بے چارے اسٹوڈنٹ کی قسمت یارب
جس کی قسمت میں ہو ریسرچ اسکالر ہونا

خیر۔ خیر یہ ریسرچ اسکالر صاحبان (کہ جن کا وجود اب گھستے گھستے کالر سے زیادہ نہیں رہا۔!) مایوس نہ ہوں کہ ہر مرض کی دوا ہر دکھ کا علاج، کامیابی کا کامیاب راستہ فتح کی دیکھی بھالی منزل اور خوشیوں کے خزانے کی ماسٹر کی (Master Key) یعنی یہ ہدایت نامہ حاضر ہے۔ اس ہدیت نامہ کو یوڈیکولون اور سینٹ کی خوشبو میں بسا کے سگریٹ اور تمباکو کی دھونی دے کے چاہے سائکل اسکوٹر یا اور کسی چلنے والی چیز سے باندھیں (خواتین گلے میں نرخرے کے قریب گلوبند کی طرح پہن سکتی ہیں کہ زبان کے چلتے رہنے سے اس میں بھی مسلسل حرکت ہوتی رہتی ہے۔) چاہے چائے کافی یا کسی SOFT DRINK میں گھول کر پی لیں نتیجہ ایک ہی ہوگا۔

پہلے وضو کر کے رحل پہ رکھ کے قرآت سے پڑھیے اس ہدایت نامہ کو جو حسب ذیل ہے۔

بڑی یونی ورسٹی کے ریسرچ اسکالر کے لیے مقالے لکھنا ضروری نہیں اور عام حالات میں سمجھدار اسکالر اور گائڈ اس قسم کی کوشش کرتے بھی نہیں۔ ان کے لیے ریسرچ اسکالر کا خطاب ہی کافی ہے۔ اسی تنکے کے سہارے وہ کچھ نہ ہوتے ہوئے بھی یونی ورسٹی کی بساط پر بہت کچھ ہو جاتا ہے۔ کچھ نہ کرتے ہوئے بھی وہ آپ کو انتہا سے زیادہ مصروف نظر آئے گا۔ ڈپارٹمنٹ کا ٹائم ٹیبل وہی بنائے گا۔ جب جب ہیڈ صاحب کو کلاس لینے کی فرصت نہ ہوگی یا کلاس لینے کا موڈ نہ ہوگا تب تب وہ ان کے بدلے کلاس لے گا اور ہر سیمینار میں، ہر میٹنگ میں ان کا بیگ اٹھائے کتابیں سنبھالے ان کے ہمرکاب ہوگا۔ نتیجے میں سیر سپاٹے کے موقع اکثر فراہم ہوتے رہیں گے۔ کچھ اطراف وجوار میں شہرت بھی ہو جائے گی۔ کچھ خاطر مدارت بھی لہذا پانچوں کی پانچ دسوں کی دسوں انگلیاں گھی میں کلائی اور کہنی تک ڈوبی رہیں گی۔

پھر بھلا ایسے اعلا عہدے کے لیے بھیڑ بھاڑ کیوں نہ ہو۔ ؟ ایک خلقت ٹوٹی

स्वीटी और ब्यूटी की ज़ंजीरें बारी–बारी थामे चल रही हैं।

हैफ़ इस बेचारे स्टूडेंट की किस्मत या रब

जिसकी किस्मत में हो रिसर्च स्कॉलर होना

खै़र–खै़र ये रिसर्च स्कॉलर साहिबान (कि जिनका वजूद अब घिसते–घिसते कॉलर से ज्यादा नहीं रहा!) मायूस न हों कि हर मर्ज़ की दवा हर दुखः का इलाज, कामयाबी का कामयाब रास्ता फ़तह की देखी भाली मंज़िल और खुशियों के ख़जाने की मास्टर–की (Master Key) यानी ये हिदायत–नामा हाज़िर है। इस हिदायत–नामे को युडीकोलोन और सेंट की खुशबू में बसा कर सिगरेट और तम्बाकू की धूनी दे कर चाहे साइकिल स्कूटर या किसी चलने वाली चीज़ से बांधें (ख़ातून गले में नरख़रे के क़रीब गुलूबंद की तरह पहन सकती हैं कि ज़बान के चलते रहने से उसमें मुसलसल हरकत होती रहती है।) चाहे चाय कॉफी या किसी SOFT DRINK में घोल कर पी लें नतीजा एक ही होगा।

पहले वज़ू करके रहल[1] पर रखके किरअत से पढ़िये इस हिदायत–नामे को जो हस्ब–ज़ैल[2] है।

बड़ी यूनिवर्सिटी के रिसर्च स्कॉलर के लिये मक़ाले[3] लिखना ज़रुरी नहीं और आम हालात में समझदार स्कॉलर और गाइड इस क़िस्म की कोशिश करते भी नहीं। उनके लिये रिसर्च स्कॉलर का ख़िताब ही काफ़ी है। इसी तिनके के सहारे वह कुछ न होते हुए भी यूनीवर्सटी की बिसात पर बहुत कुछ हो जाता है। कुछ न करते हुये भी वह आपको इन्तेहा से ज़्यादा मसरुफ़ नज़र आयेगा। डिपार्टमेंट का टाइम–टेबल वही बनायेगा। जब–जब हेड साहब को क्लास लेने की फ़ुर्सत न होगी या क्लास लेने का मूड न होगा तब–तब वह उनके बदले क्लास लेगा और हर सेमीनार में, हर मीटिंग में उनका बैग उठाये किताबें संभाले उनके हमरकाब[4] होगा। नतीजे में सैर सपाटे के मौके फ़राहम होते रहेंगे। कुछ अतराफ़ो–जवार में शोहरत भी हो जायेगी। कुछ ख़ातिर–मदारात, भी लिहाज़ा पाँचों की पाँच, दसों की दसों उंगलियाँ घी में कलाई और कोहनी तक डूबी रहेंगी।

फिर भला ऐसे आला ओहदे के लिये भीड़ भाड़ क्यों न हो? एक ख़िलक़त टूटी

---

1. लकड़ी का चीड़ा जिस पर कुरान रखकर पढ़ते है। 2. निम्नलिखित 3. लेख 4. साथ

پڑتی ہے اور ویٹنگ لسٹ کا تو یہ عالم ہے کہ برسوں لوگ چکی میں پڑے رہتے ہیں اور پکے ہونے یعنی رجسٹریشن کی مبارک گھڑی ہی نہیں آتی ان اسکالرز کی خدمت میں اقبال کے شعر کا چوتھائی حصہ پیش ہے جی ہاں مہنگائی کی اس قیامت کی گھڑی میں ہر ممکن کفایت شعاری سے کام لینا چاہیے۔!! حضرات شعر ہے۔

یقین محکم عمل پیہم

اے وہ WOULD BE ریسرچ اسکالرز جنھوں نے اس زلف کے سر ہونے کی آس میں ایک عمر اسی دراور اسی گھر کے پھیرے کرنے میں گنوادی وہ ہیڈ کی اور خدا کی کرامات سے مایوس نہ ہوں کسی زمانے میں بارہ برس کے بعد گھورے کے دن پھر جایا کرتے تھے۔ پھر تم تو تم ہو۔ ایک نہ ایک دن تم بھی ریسرچ اسکالر کے تخت بے تاج پر فائز ہوگے۔ اسی تندہی، اسی عشق، اسی جوش وجنوں سے استادو استادنی و استادزادگان کی ہر خدمت کیے جاؤ۔ کبھی حرف شکایت زبان پر نہ لاؤ کہ انھوں نے اب تک تمہارا ایک بھی موضوع پسند نہیں کیا۔ دنیا بیکراں ہے اور موضوعات بھی لاتعداد۔ کوئی نہ کوئی موضوع کبھی نہ کبھی ان کے اعلا معیار تک پہنچے گا۔

جو اس دشوار گزار کھائی کو پھلانگ کے پار کر چکے ہیں ان سے عرض ہے کہ وہ نیک اور نام نہاد اسکالر کی طرح صبر سے خدمت میں جٹے رہیں۔ اور اتنے معروف اور معروف استاد کو ہر چوتھے پانچویں مہینے اپنے لکھے ہوئے مضامین سے پریشان نہ کریں عجلت اور جلد بازی شریماں شیطان کی ہابیز HOBBIES ہیں انسان کو زیب نہیں دیتیں۔ آپ لکھیے، پڑھیے اور پھاڑیے۔ پھر لکھیے پھر پھاڑیے۔ اسی آگ میں تپ تپ کر آپ کندن بن کے نکلیں گے! ادیب بھی اور فنکار بھی۔!!

کیا آپ واقعی تھیسس لکھنا چاہتے ہیں۔ یعنی حضرت آدم کی طرح ریسرچ اسکالر کی بسی بسائی ماڈرن اور فیشن ایبل جنت کو چھوڑ کر تھیسس کی سنگلاخ گپھاؤں میں ٹھوکریں کھانا چاہتے ہیں۔؟

تو پھر کسی غیر معروف یونی ورسٹی کے گمنام گائڈ کی انگلی پہنچا پکڑیے گا ہے گا ہے اونچے سروں میں ان کی صلاحیتوں اور دوسروں کی نالائقیوں کا راگ چھیڑیے اور مستقلاً

पड़ती है और वेटिंग लिस्ट का तो यें आलम है कि बरसों लोग कच्ची में पड़े रहते हैं और पक्के होने यानी रजिस्ट्रेशन की मुबारक घड़ी ही नहीं आती इन स्कॉलर्स की ख़िदमत में इक़बाल के शेर का चौथाई हिस्सा पेश है जी हाँ महंगाई की इस क़यामत की घड़ी में हर मुमकिन किफ़ायत शआरी से काम लेना चाहिये!! हज़रात शेर है!

यक़ीं मोहकम अमल पैहम

ऐ वह WOULD BE रिसर्च स्कॉलर्स जिन्होंने इस ज़ुल्फ़ के सर होने की आस में एक उम्र इसी दर और इसी घर के फेरे करने में गंवा दी वह हेड की और ख़ुदा की करामात से मायूस न हों किसी ज़माने में बारह बरस के बाद घूरे के दिन फिर जाया करते थे। फिर तुम तो तुम हो। एक न एक दिन तुम भी रिसर्च स्कॉलर के तख़्ते–बेताज पर फायज़ होगे। इसी तुन्दही, इसी इश्क़, इसी जोश व जुनून से उस्ताद व उस्तादनी व उस्तादज़ादगान ही हर ख़िदमत किये जाओ। कमी हर्फ़े–शिकायत ज़बान पर न लाओ कि उन्होंने अब तक तुम्हारा एक भी मौज़ू पसंद नहीं किया। दुनिया बेकराँ है और मौज़ूआत भी लातादाद। कोई न कोई मौज़ू कभी न कभी उनके आला मेयार तक पहुँचेगा।

जो इस दुश्वार गुज़ार खाई को फलांग कर पार कर चुके हैं उनसे अर्ज है कि वह नेक और नाम–नेहाद स्कॉलर की तरह सब्र से ख़िदमत में जुटे रहें। और इतने मसरुफ़ और मारुफ़ उस्ताद को हर चौथे–पाँचवे महीने अपने लिखे हुए मज़ामीन से परेशान न करें, उजलत और जल्दबाज़ी श्रीमान शैतान की हाबीज़ Hobbies हैं इन्सान को ज़ेब नहीं देतीं। आप लिखिये, पढ़िये और फाड़िये। फिर लिखिये और फिर फाड़िये। इसी आग में तप–तप कर आप कुन्दन बनके निकलेंगे! अदीब भी और फ़नकार भी!!

क्या आप वाक़ई थेसिस लिखना चाहते हैं। यानी हज़रत आदम की तरह रिसर्च स्कॉलर की बसी बसाई मॉडर्न और फ़ैशनेबिल जन्नत को छोड़कर थेसिस की संगलाख़ गुफाओं में ठोकरें खाना चाहते हैं?

तो फिर किसी ग़ैर–मारुफ़ यूनीवर्सिटी के गुमनाम गाइड की उंगली–पहुंचा पकड़िये, गाहे–गाहे ऊँचे सुरों में उनकी सलाहियतों और दूसरों की नालायक़ियों का राग छेड़िये और मुस्तक़िलन

الا پتے رہیے۔ اللہ نے چاہا تو آپ کو دستخط کی بھی زحمت نہیں اٹھانی پڑے گی۔

بعض استاد اتنے دور اندیش نہیں ہوتے اور ان کے دل میں ہمدردی کا جذبہ بھی کم ہوتا ہے۔ جب بھی فکر کی بات نہیں۔ تو نہیں اور سہی۔ ابزنس تو اس مہذب دنیا میں ہر چیز کا ہوتا ہے۔ تلاش کیجیے ہر شہر میں ایک نہ ایک پروفیشنل تھیسس رائٹر مل جائے گا۔ اور جو بات جو صفائی ریڈی میڈ مال میں ہوتی ہے وہ ''ہوم میڈ'' میں کہاں۔؟

اور پیسہ تو ہاتھ کا میل ہے۔!!

اب صرف ان ریسرچ اسکالرز کا معاملہ رہ جاتا ہے جو اس درجہ بیکس وہ بے بس و بے سہارا و بے یار و مددگار ہیں کہ انھیں اپنی تھیسس خود لکھنی پڑ رہی ہے۔

قیامت کے ٹریلرس ہیں یہ اور کیا۔!

ایسی صورت میں موضوع کے انتخاب میں رسوائی کا خدشہ ہوتا ہے لہٰذا موضوع ایسا گول مال یعنی فلاسفک لیجئے کہ اس کے لیے کسی خاص مواد کی تلاش کی ضرورت ہی باقی نہ رہے بلکہ وقتاً فوقتاً جو مواد اِدھر اُدھر ہاتھ پیر مارنے سے آپ کے ہاتھ خود بخود لگ جائے سب کے سب کو آپ بخوبی استعمال کر سکیں۔

اس میں کامیابی نہ ہو تو یوں کیجیے کی دس بارہ پہنچے ہوئے مصنفین کی ایک ہی موضوع پر کتابیں سامنے رکھ لیجے جن کا آپ کے موضوع سے بھی کچھ تھوڑا بہت تعلق ہونا ضروری ہے بس بارہ مسالے کی چاٹ تیار ہے۔ ایک پیراگراف اس کا لیجیے ایک اس کا تو ایک سطر تیسرے کی دوسری سطر چوتھے کی۔ کہیں کہیں تو آدھے آدھے پاو پاو جملے جوڑ جوڑ کر وہ ORIGINAL جملہ تیار کیجیے کہ ہائی پاور کمیشن بھی گرفت میں نہ لا سکے بلکہ شاید الٹا آپ کی قابلیت پر اش اش کر اُٹھے۔!

ویسے سب سے آسان اور ہلدی پھٹکری کے بغیر رنگ چوکھا لانے والا نسخہ یہ کہ آپ کسی دور کا کوئی ایسا شاعر یا ادیب لے لیں جس کے ہم عصر و ہم رنگ پر کام ہو چکا ہے۔ ظاہر ہے عصر وہی۔ واقعات وہی، اندازِ سخن وہی۔! آپ کو صرف اتنی زحمت اٹھانی پڑے گی کہ اس شاعر کا نام ہٹا کر اپنے شاعر اعظم کا نام فٹ کر دیجیے۔ پھر تو تھیسس ایسی ہوگی جیسے انگوٹھی کا نگینہ۔!

अलापते रहिये। अल्लाह ने चाहा तो आप को दस्तख़त की भी ज़ेहमत नहीं उठानी पड़ेगी।

बाज़ उस्ताद इतने दूर–अंदेश नहीं होते और उनके दिल में हमदर्दी का जज़्बा भी कम होता है। जब भी फ़िक्र की बात नहीं। तू नहीं और सही! बिज़नेस तो इस मोहज़्ज़ब दुनिया में हर चीज़ का होता है। तलाश कीजिये हर शहर में एक न एक प्रोफेशनल थेसिस राइटर मिल जायेगा। और जो बात, जो सफ़ाई रेडीमेड माल में होती है वह "होम मेड" में कहाँ?

और पैसा तो हाथ का मैल है!!

अब सिर्फ़ इन रिसर्च स्कॉलर्स का मामला रह जाता है जो इस दर्जा बेकस व बेबस व बेसहारा व बेयारो–मददगार हैं कि उन्हें अपनी थेसिस खुद लिखनी पड़ रही है।

क़यामत के ट्रेलर्स हैं ये और क्या!

ऐसी सूरत में मौज़ू के इन्तिख़ाब में रुसवाई का ख़दशा रहता है लिहाज़ा मौज़ू ऐसा गोल माल यानी फ़िलासफ़िक लिजिये कि इस के लिये किसी ख़ास मवाद की तलाश की ज़रुरत ही बाक़ी न रहे बल्कि वक़्तन–फ़वक़्तन जो मवाद इधर–उधर हाथ पैर मारने से आप के हाथ खुद–ब–खुद लग जाये, सब के सब को आप बख़ूबी इस्तेमाल कर सकें।

इसमें कामयाबी न हो तो यूँ किजिये कि दस बारह पहुंचे हुए मुसन्नफ़ीन[1] की एक ही मौज़ू पर किताबें सामने रख लीजिये जिनका आपके मौज़ू से भी कुछ थोड़ा बहुत तअल्लुक़ होना ज़रुरी है, बस बारह मसाले की चाट तैयार है। एक पैराग्राफ़ इसका लीजिये एक उसका, तो एक सतर तीसरे की, दूसरी सतर चौथे की। कहीं–कहीं तो आधे–आधे पाव–पाव जुमले जोड़–जोड़ कर वह Original जुमला तैयार कीजिये कि हाई पावर कमीशन भी गिरफ़्त में न ला सके बल्कि उल्टा आपकी क़ाबिलियत पर अश–अश कर उठे!

वैसे सब से आसान और हल्दी–फिटकरी के बग़ैर रंग चोखा करने वाला नुस्ख़ा यह है कि आप किसी दूर का कोई ऐसा शायर या अदीब ले लें जिसके हम–अस्र व हम–रंग पर काम हो चुका है। ज़ाहिर है अस्र वही। वाक़ेआत वही, अन्दाज़े–सुख़न वही! आपको सिर्फ़ इतनी ज़हमत उठानी पड़ेगी कि उस शायर का नाम हटाकर अपने शायरे–आज़म का नाम फ़िट कर दीजिये। फिर तो थेसिस ऐसी होगी जैसे अंगूठी का नगीना!

1. लेखकों

کچھ ORIGINAL یعنی طبع زاد کام کا خیال خام دلِ ناداں میں سمائے تو یہ حسرت بھی پوری کر لیجیے وہ بھی چین کی بانسری بجاتے ہوئے۔ ایک سطر اپنی لکھیے اس کے بعد۔

''اس سلسلے میں فلاں صاحب فرماتے ہیں......''

اور ایک پیراگراف ان کے فرمائے ہوئے کا۔ کہ جو یقیناً مستند ہوگا۔!!

پھر ایک یا آدھی سطر خود کی اور پھر وہی راگنی۔ کہ

''فلاں صاحب کا بھی یہی خیال ہے۔''

اور یہ خیال کم از کم ڈیڑھ دو صفحے کا تو ہوگا ہی۔!

دو صفحوں کے بعد ذرا سی تکلیف پھر اٹھا لیجیے اور یہ اطلاع دیجیے کہ......'' آپ آگے چل کر لکھتے ہیں......''

اور ظاہر ہے کہ جب آگے چلے ہیں تو پیچھے بھی چلے ہوں گے۔ لہٰذا فرمایے کہ............ پیچھے لکھتے ہیں............

غرض اسی طرح لفٹ رائٹ اور آگے پیچھے کرتے کرتے آپ کا تھیسس ''ختم شدہ'' تک فراٹے بھرتے ہوئے پہنچ جائے گا۔

میٹر خواہ کم ہی کیوں نہ ہو۔ کتابیات کی فہرست طویل ہونا چاہیے کہ اس کی طوالت آپ کی قابلیت کی دلیل ہے۔

اور کتابیات میں شمولیت کے لیے کتاب کا پڑھنا تو کیا دیکھنا تک ضروری نہیں۔!! آرائش جمال پر لکھنے سے زیادہ توجہ دیجیے۔ کہ...... ''ہیں کچھ......نظر آتے ہیں کچھ......!

اور پھر نظر بندی تو سب سے بڑا آرٹ ہے۔!!

اگر ان زرّین مشوروں اور تراکیب کے باوجود آپ سچ مچ خود پڑھ پڑھ کے خود تھیسس لکھنا چاہتے ہیں تو آپ کی مرضی۔ ذمہ داری راقم الفضول پر ہرگز نہ ہوگی۔!!

• • • •

कुछ Original यानी तबाज़ाद काम का ख़याले–ख़ाम दिले–नादान में समाए तो ये हसरत भी पूरी कर लीजिये, वह भी चैन की बांसुरी बजाते हुये। एक सतर अपनी लीखिये इसके बाद–

"इस सिलसिले में फ़लाँ साहिब फ़रमाते हैं ....."

और एक पैराग्राफ़ उनके फ़रमाये हुए का, कि जो यक़ीनन ग़सतनद होगा!!

फिर एक या आधी सतर खुद की फिर वही रागिनी कि

"फ़लाँ साहिब का भी यही ख़याल है"

और यह ख़याल कम–अज़–कम डेढ़ सफ़े का तो होगा ही!

दो सफ़ों के बाद ज़रा सी तकलीफ़ फिर उठा लीजिये और यह इत्तेला दीजिये कि ..... "आप आगे चलकर लिखते है...."

और ज़ाहिर है जब आगे चले है तो पिछे भी चले होंगे। लिहाज़ा फ़रमाइये कि .... पीछे लिखते हैं ......

ग़रज़ इसी तरह लेफ़्ट राईट और आगे पीछे करते–करते आपका थेसिस "ख़त्म–शुद" तक फ़र्राटे मरते हुए पहुँच जायेगा।

मैटर ख़्वाह कम ही क्यों न हो। किताबियात की फ़ेहरिस्त तवील होना चाहिये कि उसकी तवालत आपकी क़ाबिलियत की दलील है।

और किताबियात में शमूलियत के लिये किताब का पढ़ना तो क्या देखना तक ज़रुरी नहीं!! आराइशे–जमाल पर लिखने से ज्यादा तवज्जो दीजिये कि....."हैं कुछ..... नज़र आते हैं कुछ...........!

और फिर नज़र बन्दी तो सब से बड़ा आर्ट है!!

अगर इन ज़रीं मश्वरों और तराकीब के बावजूद आप सचमुच खुद पढ़–पढ़ के खुद थेसिस लिखना चाहते हैं तो आपकी मर्ज़ी। ज़िम्मेदारी राक़िम–उल–फ़ुज़ूल पर हरगिज़ न होगी!!

● ● ● ●

اعجاز علی ارشد

آتی ہے اردو زباں......

میری تقدیر تو مجھ سے بہت پہلے ہی روٹھ چکی تھی مگر اس کا احساس مجھے اسی دن ہوا، جب میری بار بار کی درخواست کے باوجود امتحانات کے کنٹرولر نے مجھے انٹرمیڈیٹ کا اکزامینر بنانے سے صاف انکار کر دیا۔ ٹیچروں کی مالی حالت ویسے تو سال بھر خراب رہتی ہے لیکن میں ان دنوں کچھ زیادہ پریشان تھا۔ شادی کے بعد ایک تو لڑکیوں کے ٹیوشن ملنے ہی بند ہو گئے۔ دوسرے جو بچے کچھے تھے وہ بیوی نے زبردستی چھڑا دیے تھے۔ رہے لڑکے تو انھیں پڑھنے کی مہلت ہی نہیں ملتی ٹیوشن پڑھنے کی فرصت کہاں سے ملے۔ بہر حال مجھے اس وقت آمدنی کے کسی نہ کسی ذریعہ کی تلاش تھی اور مختلف دروازوں پر قسمت آزمائی کے بعد میں نے یونیورسٹی کے دروازے پر صدا لگائی، لیکن منت سماجت کے باوجود میں کنٹرولر کے انکار کو اقرار میں نہ تبدیل کرا سکا۔ آخر ناامیدی کے سمندر میں ڈوبنے سے قبل میں نے امید کے ایک تنکے یعنی متعلقہ کلرک کا سہارا لیا۔ اس نے میری بات سنتے ہی کہا۔

''کنٹرولر کے ناراض ہونے کی وجہ تو میں بتا سکتا ہوں لیکن آپ تو جانتے ہی ہیں کہ مہنگائی بڑھ گئی ہے اور ہر چیز کا ریٹ دوگنا ہو گیا ہے۔ اس لیے میں بھی......'' میں نے اس کی بات ختم ہونے سے پہلے ہی اس کا مدعا نہ صرف سمجھ لیا بلکہ پورا بھی کر دیا، اور

एजाज़ अली अरशद

आती है उर्दू ज़बां.........

मेरी तक़दीर तो मुझसे बहुत पहले ही रुठ चुकी थी मगर इसका एहसास मुझे उस दिन हुआ, जब मेरी बार–बार की दरख़्वास्त के बावजूद इम्तेहानात के कन्ट्रोलर ने मुझे इन्टरमीडिएट का एक्ज़ामिनर बनाने से साफ़ इन्कार कर दिया। टीचरों की माली हालत वैसे तो साल भर ख़राब रहती है लेकिन मैं उन दिनों कुछ ज़्यादा परेशान था। शादी के बाद एक तो लड़कियों के ट्यूशन मिलने ही बंद हो गये। दूसरे जो बचे–खुचे थे वह बीवी ने ज़बरदस्ती छुड़ा दिये थे। रहे लड़के तो उन्हें पढ़ने की मोहलत ही नहीं मिलती, टियूशन पढ़ने की फ़ुर्सत कहाँ से मिले। बहरहाल मुझे उस वक़्त आमदनी के किसी न किसी ज़रिये की तलाश थी और मुख़्तलिफ़ दरवाज़ों पर क़िस्मत आज़माई के बाद मैं ने यूनिवर्सिटी के दरवाज़े पर सदा लगाई, लेकिन मिन्नत–समाजत के बावजूद मैं कन्ट्रौलर के इन्कार को इक़रार में न तब्दील करा सका। आख़िर ना–उमीदी के समंदर में डूबने से क़ब्ल मैं ने उमीद के एक तिनके यानी मुतअल्लेक़ा[1] क्लर्क का सहारा लिया। उसने मेरी बात सुनते ही कहा–

"कन्ट्रोलर के नाराज़ होने की वजह तो मैं बता सकता हूँ लेकिन आप तो जानते ही हैं कि महंगाई बढ़ गई है और हर चीज़ का रेट दोगुना हो गया है। इसलिये मैं भी....." मैं ने उसकी बात ख़त्म होने से पहले ही उसका मुद्दआ न सिर्फ़ समझ लिया बल्कि पूरा भी कर दिया, और

1. संबन्धित

اس نے انتہائی رازداری کے ساتھ مجھے بتایا۔

"پچھلی بار آپ نے کنٹرولر صاحب کے لڑکے کو صرف ۴۰ نمبر دیے تھے جس کے سبب اس کا سکنڈ کلاس آ گیا اور اس کو ملنے والے جہیز کی رقم میں بھاری کمی ہو گئی۔ اس لیے......" "لیکن اس نے صرف ۵۰ نمبر کے سوالات ہی حل کیے تھے۔"

میں نے کلرک کی بات کاٹتے ہوئے کہا۔

کلرک کچھ جھنجھلا گیا کہنے لگا۔

"آپ پڑھے لکھے ہو کر بھی ایسی بات کرتے ہیں، ارے نمبر آدمی دیکھ کر دیا جاتا ہے کہ کوپی دیکھ کر!"

وقت پڑنے پر تو نہ جانے کس کو کیا کیا کہنا پڑتا ہے وہ تو پھر بھی کلرک تھا۔ اس لیے میں نے اس کی ڈانٹ سنتے ہی سراپا نیاز مندی کے ساتھ پوچھا۔ "لیکن اب کرنا کیا ہوگا، آپ ہی کوئی صورت نکالیے۔"

کلرک نے پہلے تو اپنے دانت نکالے پھر کہنے لگا۔

"لیکن آپ تو جانتے ہی ہیں کہ مہنگائی بڑھ گئی ہے۔ صورت تو میں نکال سکتا ہوں لیکن...... میں نے اسے آگے بولنے کا موقع دیے بغیر اپنی جیب میں ہاتھ ڈالا اور وہ دل ہی دل میں میری معاملہ شناسی کا اعتراف کرتے ہوئے کہنے لگا۔

"بات ایسی ہے کہ اس بار کنٹرولر صاحب کی بیٹی امتحان دے رہی ہے۔ اگر آپ اسے فرسٹ ڈیویژن میں پاس کرانے کا ذمہ لیں تو آپ کا کام آسانی سے ہو سکتا ہے۔" میں کلرک کی ذہانت کا قائل ہو گیا۔ ویسے قائل ہونے کے سوا کوئی دوسرا راستہ بھی نہ تھا، کیوں کہ آخر مجھے اپائنٹمنٹ لیٹر بھی تو اسی سے لینا تھا۔ بہر حال میں نے کلرک کے بتائے ہوئے طریقہ پر عمل کرتے ہوئے دوسرے ہی دن کنٹرولر سے گھر پر ملاقات کی اور اپنے بال بچوں کی قسمیں دے کر انہیں یہ یقین دلایا کہ اس بار میرے کو پیاں دیکھنے کا مقصد اس کے سوا اور کچھ نہ ہوگا کہ میں اپنی پچھلی غلطیوں کا کفارہ ادا کر سکوں۔ باتیں تو بہت ساری ہوئیں مگر قصہ مختصر یہ ہے کہ اگلے ہی دن مجھے تقرری کا پروانہ مل گیا۔ متعلقہ کلرک نے اہم رول نمبروں کی ایک فہرست بھی میرے حوالے کی اور پھر مسکراتے ہوئے مجھے "گڈ بائی"

उसने इन्तहाई राज़दारी के साथ मुझे बताया।

"पिछली बार आपने कन्ट्रोलर साहब के लड़के को सिर्फ़ 40 नम्बर दिये थे जिसके सबब उसका सेकेन्ड क्लास आ गया और उसको मिलने वाली जहेज़ की रक़म में भारी कमी हो गई। इसलिये..... लेकिन उसने सिर्फ 50 नम्बर के सवालात ही हल किये थे।"

मैंने क्लर्क की बात काटते हुये कहा।

क्लर्क कुछ झुंझला गया, कहने लगा।

"आप पढ़े लिखे होकर भी ऐसी बात करते हैं, अरे नम्बर आदमी देखकर दिया जाता है कि कॉपी देखकर!"

वक़्त पड़ने पर तो न जाने किस को क्या–क्या कहना पड़ता है वह तो फिर भी क्लर्क था। इसलिये मैं ने उसकी डॉंट सुनते ही सरापा नियाज़मंदी के साथ पूछा। "लेकिन अब करना क्या होगा, आप ही कोई सूरत निकालिये।"

क्लर्क ने पहले तो अपने दाँत निकाले फिर कहने लगा।

"लेकिन आप तो जानते ही हैं कि महंगाई बढ़ गई है। सूरत तो मैं निकाल सकता हूँ लेकिन..... मैं ने उसे आगे बोलने का मौक़ा दिये बग़ैर अपनी जेब में हाथ डाला और वह दिल ही दिल में मेरी मामला–शनासी का एतराफ़ करते हुये कहने लगा।

"बात ऐसी है कि इस बार कन्ट्रौलर साहब की बेटी इम्तेहान दे रही है। अगर आप उसे फर्स्ट डिवीज़न में पास कराने का ज़िम्मा लें तो आपका काम आसान हो सकता है।" मैं क्लर्क की ज़हानत का क़ायल हो गया। वैसे क़ायल होने के सिवा कोई दूसरा रास्ता भी न था, क्योंकि आख़िर में एप्वाइंटमेंट लेटर भी तो उसी से लेना था। बहरहाल मैंने क्लर्क के बताये हुए तरीक़े पर अमल करते हुए दूसरे ही दिन कन्ट्रोलर से घर पर मुलाक़ात की और अपने बाल–बच्चों की क़समें देकर उन्हें यक़ीन दिलाया कि इस बार मेरे कॉपियाँ देखने का मक़सद इसके सिवा और कुछ न होगा कि मैं अपनी पिछली ग़लतियों का कफ़्फ़ारा[1] कर सकूं। बातें तो बहुत सारी हुईं मगर क़िस्सा मुख़्तसर यह है कि अगले ही दिन मुझे तक़र्रुरी का परवाना मिल गया। मुतअल्लिक़ा क्लर्क ने अहम रोल नम्बरों की फेहरिस्त मेरे हवाले की और मुस्कराते हुए मुझे "गुडबॉय"

1. प्रायाश्चित

کہا۔ رزلٹ جلد شائع کرنے کے خیال سے اس بار اجتماعی طور پر کاپیاں دیکھی جا رہی تھیں۔ ایک بڑے سے ہال میں مختلف سائز کی میزیں لگی ہوئی تھیں اور ہر مضمون کے لیے ایک ٹیبل مخصوص تھا۔ مگر اکثر اسیز حضرات اپنی کاپیاں دیکھنے میں کم اور دوسروں کے ٹیبل پر جانے میں زیادہ دلچسپی لے رہے تھے۔ خیر یہ بات تو جملہ معترضہ کے طور پر سامنے آ گئی۔ میں نے اپنی ٹیبل پر پہنچتے ہی سب سے پہلے تو ڈائری میں سے وہ سفارشی خطوط نکالے جو مختلف دوستوں نے مجھے لکھے تھے۔ اس سے یہ نہ سمجھئے کہ صرف میرے دوست ہی سفارشی خطوط لکھتے ہیں حقیقت یہ ہے کہ میں بھی ہوں پانچویں سواروں میں اور یہاں کوئی کسی سے کم نہیں ہے۔ ہاں تو ان خطوط میں لکھے ہوئے رول نمبروں کی ایک فہرست تیار کرنے کے بعد (واضح ہوا کہ یہ فہرست فل اسکیپ سائز کے تقریباً دو صفحات پر مشتمل تھی) میں نے ایک کاپی کے اوراق الٹے۔ سوال تھا، میر انیس کی نظم 'اولاد' کا خلاصہ اپنی زبان میں لکھیے۔ جواب سنیے۔

اولاد ہی انسان کے آنکھ کا روشنی ہے۔ ضعیفی کے روز ماں کو اپنے فرزند پر قوت ملتی ہے۔ وہ جانتی ہے کہ اس کا اولاد بڑا سے بڑا بنے گا اور میرا نام روشن کرے گا۔ اولاد دنیا اور آخرت دونوں میں کام آنے والا چیز ہے۔ تب ہی ایک شاعر نے کیا خوب کہا ہے۔

تجھے سورج کہوں کہ چندا یا دیپ کہوں یا تارا
میرا نام کرے گا روشن جگ میں میرا راج دلارا

میں نے جلدی سے ورق پلٹا۔ سوال تھا، خواجہ حسن نظامی کی ادبی خدمات پر روشنی ڈالیے۔ جواب کچھ اس طرح تھا۔ "حضرت خواجہ کا دربار بہت بڑا ہے۔ یہاں ہر ضرورت کے لیے ضرورت مندوں کو جانا پڑتا ہے، اور اپنی ضرورت کے لیے بہت ضروری ہے کہ ضرورت کے وقت بھی ضرورت کے لیے خواجہ کی ضرورت پڑتی ہے، اور اپنے لیے بھی ضرورت ہے اور دوسروں کی بھی ضرورت ہے اور خواجہ کی بھی ضرورت اور ہر ضرورت کے وقت میں ضرورت پڑتی ہے اور ضرورت ایسی چیز ہے کہ ضرورت ہوتی ہے اور ضرورت......" میری طبیعت جھنجھلا گئی۔ جی میں تو آیا کہ کاپی پر لکھ دوں آخر آپ کو اردو

कहा। रिज़ल्ट जल्द शाया[1] करने के ख़याल से इस बार इजतिमाई[2] तौर पर कॉपियाँ देखी जा रही थीं। एक बड़े से हॉल में मुख्तलिफ़ साइज़ की मेज़ें लगी हुई थीं और हर मज़मून के लिये एक टेबल मखसूस था। मगर एक्ज़ामिनर हज़रात अपनी कॉपियाँ देखने में कम और दूसरों की टेबिल पर जाने में ज़्यादा दिलचस्पी ले रहे थे। खैर यह बात तो जुम्लाए—मोतरज़ा के तौर पर सामने आ गई। मैंने अपनी टेबिल पर पहुंचते ही सब से पहले डायरी में से वह सिफ़ारिशी खुतूत निकाले जो मेरे दोस्तों ने मुझे लिखे थे। इससे यह न समझिये कि सिर्फ मेरे दोस्त ही सिफ़ारिशी खुतूत लिखते हैं हक़ीक़त यह है कि मैं भी हूँ पाँचवें सवारों में और यहाँ कोई किसी से कम नहीं है। हाँ तो उन खुतूत में लिखे हुए रोल नम्बरों की एक फ़ेहरिस्त तैयार करने के बाद (वाज़ेह हो कि यह फ़ेहरिस्त फुल इस्केप साइज़ के तक़रीबन दो सफ़हात पर मुश्तमिल थी) मैंने एक कॉपी के औराक़ उल्टे। सवाल था मीर अनीस की नज़्म 'औलाद' का खुलासा अपनी ज़बान में लिखिये। जवाब सुनिये।

औलाद ही इन्सान के आँख की रोशनी है ज़ईफ़ी के रोज़ माँ को अपने फ़रज़न्द पर कूव्वत मिलती है। वह जानती है कि उसकी औलाद बड़ा से बड़ा बनेगा और मेरा नाम रौशन करेगा। औलाद दुनिया और आख़ेरत दोनों में काम आने वाली चीज़ है। तब ही एक शायर ने क्या ख़ूब कहा है—

तुझे सूरज कहूँ कि चंदा या दीप कहूँ या तारा
मेरा नाम करेगा रौशन जग में मेरा राज दुलारा

मैंने जल्दी से वरक़ पल्टा। सवाल था, ख़्वाजा हसन निज़ामी की अदबी ख़िदमात पर रोशनी डालिये। जवाब कुछ इस तरह था। "हज़रत ख़्वाजा का दरबार बहुत बड़ा है। यहाँ हर ज़रुरत के लिये ज़रुरत मंदों को जाना पड़ता है, और अपनी ज़रुरत के लिये बहुत ज़रुरी है कि ज़रुरत के वक़्त भी ज़रुरत के लिये ख़्वाजा की ज़रुरत पड़ती है, और अपने लिये भी ज़रुरत है और दूसरों की भी ज़रुरत है और ख़्वाजा की भी ज़रुरत और हर ज़रुरत के वक़्त में ज़रुरत पड़ती है और ज़रुरत ऐसी चीज़ है कि ज़रुरत होती है और ज़रुरत......" मेरी तबीअत झुंझला गई। जी में तो आया कि कॉपी पर लिख दूं आख़िर आपको उर्दू

1. प्रकाशित 2. सामूहिक

پڑھنے ہی کی کیا ضرورت ہے؟ لیکن پھر سوچا کہ اردو اب سرکاری زبان ہے اور سرکاری زبان گویا سرکار کی زبان ہوتی ہے اس لیے دل کڑا کر کے پچاس فیصد نمبر دے دیے اور دوسری کاپی اٹھائی پہلے ہی صفحہ پر درج تھا۔

''جناب اگزامینر صاحب اگر آپ نے اس بار بھی مجھے فیل کر دیا تو میری شادی نہ ہو سکے گی اور میں جان دے دوں گا اور......'' میں نے گھبرا کر دوسرا صفحہ پلٹا۔ میر انیس کی نظم 'اولاد' کا خلاصہ اس طرح شروع ہوا تھا۔

''اولاد کی بڑی اہمیت ہے۔ شادی انسان اس لیے کرتا ہے کہ وہ اولاد کو پا سکے مگر جب وہ نہیں پا سکتے تو ان کی زندگی میں ایک طرح کا درار سا پڑ جاتا ہے۔ حالاں کہ لوگ بیوی کو خوش رکھنے کی کوشش کرتے ہیں مگر ان سے یہ کام نہیں ہوتا ہے اور آخر میں طلاق تک کا معاملہ آ جاتا ہے۔'' آگے پڑھنا بیکار تھا۔ میں نے اس کاپی میں بھی پچاس فیصد نمبر دے دیے اور تیسری کاپی اٹھائی۔ ''میرا پسندیدہ شاعر'' کے تحت غالب کی شاعری پر مضمون لکھا گیا تھا۔ شروعات اس طرح ہوئی تھی۔

''میرے پسندیدہ شاعر غالبؔ ہیں جو اس وقت دنیا میں نہیں ہیں۔ غالبؔ کی شاعری مجھے اس لیے پسند ہے کہ غالبؔ آم بہت کھاتے تھے اور مجھے بھی آم بہت پسند ہے۔ غالبؔ کی شادی صرف سترہ سال میں ہوگئی تھی مگر انہیں بچپن سے ہی کپڑے چبانے کی عادت تھی۔ لوگ جب روٹیاں کھایا کرتے تھے تو غالبؔ کپڑے چبایا کرتے تھے۔ میرے پروفیسر صاحب نے بتایا ہے کہ اسی لیے غالبؔ کا گریبان ہمیشہ تار تار رہتا تھا۔ میں نے کچھ آگے نظر دوڑائی۔ لکھا تھا۔ ''غالب کے ہر شعر میں دو معنی نکلتے ہیں اس لیے اس کے پڑھنے سے ہماری اردو بہت اچھی ہوگئی ہے۔ غالب کے شعر کی نقل ساری دنیا میں لوگ کرتے ہیں۔'' میں نے جلدی جلدی کئی صفحات الٹ دیے۔ ایک صفحے پر کچھ اشعار کی تشریح کی گئی تھی۔ پہلا شعر تھا۔

دلِ ناداں تجھے ہوا کیا ہے　　　آخر اس درد کی دوا کیا ہے

صاحبزادے نے اس کی تشریح کرتے ہوئے لکھا تھا:

یہ نظم علامہ اقبال کی ہے۔ وہ وکالت کر کے خوب روپیہ کماتے تھے اور سائیڈ

पढ़ने ही की क्या ज़रुरत है? लेकिन फिर सोचा कि उर्दू अब सरकारी ज़बान है और सरकारी ज़बान गोया सरकार की ज़बान होती है इसलिये दिल कड़ा करके पचास फ़ीसद नम्बर दे दिये और दूसरी कॉपी उठाई पहले ही सफ़े पर दर्ज था।

"जनाब एक्ज़ामिनर साहब अगर इस बार भी मुझे फ़ेल कर दिया तो मेरी शादी न हो सकेगी और मैं जान दे दूँगा और...." मैं ने घबराकर दूसरा सफ़ा पल्टा। मीर अनीस की नज़्म 'औलाद' का ख़ुलासा इस तरह शुरु हुआ था।

"औलाद की बड़ी अहमियत है। शादी इन्सान इसलिये करता है कि वह औलाद को पा सके मगर जब वह नहीं पा सकते तो उनकी जिन्दगी में एक तरह का दरार सा पड़ जाता है। हालाँकि लोग बीवी को खुश रखने की कोशिश करते है मगर उनसे यह काम नहीं होता है और आख़िर में तलाक़ तक का मामला आ जाता है।" आगे पढ़ना बेकार था। मैंने इस कॉपी में भी पचास फ़ीसद नम्बर दे दिये और तीसरी कॉपी उठाई। "मेरा पसंदीदा शायर" के तहत ग़ालिब की शायरी पर मज़मून लिखा गया था। शुरुआत इस तरह हुई थी–

"मेरे पसंदीदा शायर ग़ालिब हैं जो इस वक़्त दुनिया में नहीं हैं। ग़ालिब की शायरी मुझे इसलिये पसंद है कि ग़ालिब आम बहुत खाते थे और मुझे भी आम बहुत पसंद हैं। ग़ालिब की शादी सिर्फ सत्तरह साल मे हो गई थी मगर उन्हें बचपन से ही कपड़े चबाने की आदत थी। लोग जब रोटियाँ खाया करते थे तो ग़ालिब कपड़े चबाया करते थे। मेरे प्रोफ़ेसर साहब ने बताया है कि इसीलिये ग़ालिब का गरीबान हमेशा तार–तार रहता था। मैंने कुछ आगे नज़र दौड़ाई। लिखा था "ग़ालिब के हर शेर में दो माने निकलते है इसलिये इसके पढ़ने से हमारी उर्दू बहुत अच्छी हो गई है। ग़ालिब के शेर की नक़ल सारी दुनिया में लोग करते है।" मैंने जल्दी जल्दी कई सफ़्हात उलट दिये। एक सफ़े पर कुछ अशआर की तशरीह[1] की गई थी। पहला शेर था –

दिले–नादाँ तुझे हुआ क्या है
आख़िर इस दर्द की दवा क्या है

साहबज़ादे ने इसकी तशरीह करते हुये लिखा था:
यह नज़्म अल्लामा इक़बाल की है। वह वकालत करके ख़ूब रुपया क़माते

1. व्याख्या

میں شعروشاعری بھی کرتے تھے۔ کہتے ہیں کہ اے دل تجھے کیا ہو گیا ہے جو تو بے کار نظر آرہا ہے، آخر تیری دوا کیا ہے۔ یہ ایک سوال ہے جس کا جواب اقبال کو ان کی زندگی میں نہیں ملا ورنہ وہ ہارٹ اٹیک سے نہ مرتے۔ اگر دل میں درد ہو تو ڈاکٹر رحمان کو دکھانا چاہیے۔ جو ہارٹ اسپیشلسٹ ہیں۔" میں نے نیچے نظر دوڑائی۔ انیس کا ایک شعر درج تھا۔

گھر کا ہی ایک چراغ بجھا کر امام دیں
اسلام کی نمود سحر دیکھتے رہے

اس شعر کی تشریح اس طرح کی گئی تھی۔ "یہ نظم امام دین کی ہے۔ شاعر نے گھر کے چراغ کو بجھانے کے لیے اپنے آپ کو چراغ بتایا ہے۔ انہوں نے اسلام کی بربادی پر لکھا ہے کہ مسلمان اپنے فعل ہی سے برباد ہوتا رہا ہے، نہیں تو اسلام کا یہ بربادی نہیں ہوتا۔" اب میری ہمت جواب دینے لگی تھی مگر ابھی ویمنس کالج کا پورا بنڈل باقی تھا۔ میں نے اس طرف توجہ کی اور ایک کاپی اٹھائی۔ محترمہ نے "ہمارے دو قومی تہوار" پر مضمون لکھا تھا۔ ابتدا کچھ اس طرح تھی۔

"ہمارے دو قومی تہوار ہیں۔ یہ تہوار عید اور رمضان ہیں۔ یہ تہوار بہت پاک اور صاف ہیں۔ دل تو بہت چاہتا ہے لیکن روزہ رکھنے کے بعد ہم لوگ جھوٹ نہیں بولتے ہیں۔ عید میں سنیما دیکھنے کو ملتا ہے۔ عید کے چاند کے انتظار میں لوگ کوٹھے پر کھڑے رہتے ہیں۔ ایک دن میں بھی کوٹھے پر کھڑی تھی کہ نیچے سے کسی نے کہا، لو چاند دکھائی دے گیا، وہ کوٹھے پر موجود ہے۔ میں نے بھی نظر بچا کر اس لفنگے کو دیکھنا چاہا مگر وہ نظر نہ آیا۔"

آگے چل کر ذہنی ترنگوں نے اس مضمون میں انشائیہ کا رنگ پیدا کر دیا تھا۔ لکھا تھا:

"عید میں لوگ ایک دوسرے کے بچوں کو پروی یعنی روپیے دیتے ہیں۔ روپیے کا خرچ ہر تہوار میں ہے۔ جیسا کہ ہمارا ایک تہوار بقرعید بھی ہے جس میں قربانی نام کی ایک فلم بھی آئی تھی۔ اس میں امجد خاں نے کام کیا تھا۔ امجد خاں ویسے تو کام اچھا کرتا

थे और साइड में शेरो–शायरी भी करते थे। कहते हैं कि ऐ दिले–नादाँ तुझे क्या हो गया है जो तू बेकार नज़र आ रहा है, आख़िर तेरी दवा क्या है। यह एक सवाल है जिसका जवाब इक़बाल को उनकी ज़िन्दगी में नहीं मिला वरना वह हार्ट अटैक से न मरते। अगर दिल में दर्द हो तो डा. रहमान को दिखाना चाहिये जो हार्ट स्पेशिलस्ट हैं।" मैंने नीचे नज़र दौड़ाई। अनीस का एक शेर दर्ज था।

घर का ही एक चिराग़ बुझाकर इमामे–दीं
इस्लाम की नमूदे–सहर देखते रहे

इस शेर की तश्रीह इस तरह की गई थी। "यह शेर इमाम दीन की है। शायर ने घर के चिराग़ को बुझाने के लिये अपने आप को चिराग़ बना... है। उन्होंने इस्लाम की बर्बादी पर लिखा है कि मुसलमान अपने फ़ेल[1] ही से बर्बाद होता रहा है, नहीं तो इस्लाम का ये बर्बादी नहीं होता।" अब मेरी हिम्मत जवाब देने लगी थी मगर अभी वीमेंस कॉलेज का पूरा बंडल बाक़ी था। मैंने उस तरफ़ तवज्जो की और एक कॉपी उठाई। मोहतरमा ने "हमारे दो क़ौमी त्योहार" पर मज़मून लिखा था। इब्तदा कुछ इस तरह थी–

"हमारे दो क़ौमी त्योहार हैं। ये त्योहार ईद और रमज़ान हैं। ये त्योहार बहुत पाक और साफ़ हैं। दिल तो बहुत चाहता है लेकिन रोज़ा रखने के बाद हम लोग झूट नहीं बोलते हैं। ईद में सिनेमा देखने को मिलता है। ईद के चाँद के इन्तज़ार में लोग कोठे पर खड़े रहते है। एक दिन मैं भी कोठे पर खड़ी थी कि नीचे से किसी ने कहा, लो चाँद दिखाई दे गया, वह कोठे पर मौजूद है। मैंने भी नज़र बचाकर उस लफ़ंगे को देखना चाहा मगर वह नज़र न आया।"

आगे चलकर ज़हनी तरंगों ने इस मज़मून में इन्शाइये[2] का रंग पैदा कर दिया था। लिखा था·

"ईद में लोग एक दूसरे के बच्चों को पर्वी यानी रुपये देते है। रुपये का ख़र्च हर त्योहार में है। जैसा कि हमारा एक त्योहार बक़रीद भी है जिस में क़ुर्बानी नाम की एक फ़िल्म भी आई थी। इसमें अमजद ख़ाँ ने काम किया था। अमजद ख़ाँ वैसे तो काम अच्छा करता

1. क्रिया 2. निबन्ध

ہے مگر اس کی مونچھیں مجھے زہر لگتی ہیں۔"

میں نے دل ہی دل میں اپنی کسی ہوئی مونچھیں گنوا دینے کا فیصلہ کر لیا اور پھر دوسرا صفحہ پڑھنے لگا۔ غالب کے شعر کی تشریح کچھ اس طرح تھی۔ "اس شعر میں شاعر نے دل اور نادان سے مخاطب ہو کر کہا ہے کہ آخر ان لوگوں کو ہوا کیا ہے جو اب تک مرض کو نہیں سمجھ سکے ہیں ......" میں نے اگلے صفحہ پر نظر دوڑائی۔ خواجہ حسن نظامی سے اپنی واقفیت کا اظہار صرف تین سطروں میں اس طرح کیا گیا تھا۔ "خواجہ صاحب دہلی میں پیدا ہوئے تھے اور بچپن سے شاعرانہ مجاز لے کر آئے تھے، انداز بیان میں بہت نرمیات اور شوخیانہ انداز تھا، ان کی شاعری بہت بڑی تھی۔" میں نے دوسری کاپی اٹھائی۔ "میرے پسندیدہ شاعر" پر مضمون لکھتے ہوئے محترمہ نے لکھا تھا:

"پہلے زمانے میں لوگ خط بہت لکھا کرتے تھے۔ اس لیے لکھتے تھے کہ ان کی قابلیتیں معلوم ہو سکے۔ مگر غالب زیادہ سے زیادہ بات کم لفظوں میں لکھا کرتے تھے۔ مجھے بھی ایسا ہی خط پسند ہے۔ مگر غالب شراب بہت پیتے تھے اور ہر وقت عشق میں مبتلا رہتے تھے۔" میری طبیعت الجھنے لگی اور میں نے پھر لڑکوں کی کاپیاں دیکھنی شروع کر دیں۔ ایک صاحب نے مختلف الفاظ کی جنس بتاتے ہوئے انہیں مذکر اور مونث کے بدلے "اسٹرالنگ" اور "پولنگ" لکھا تھا۔ دوسرے نے عمراؤں برائے امیروں، کالاس برائے کلاس اور اساپاتال برائے اسپتال لکھا تھا۔ تیسرے نے سرسید احمد خاں کو اپنا پسندیدہ شاعر قرار دیتے ہوئے ان کی شاعرانہ عظمت کو غالب اور اقبال سے زیادہ بلند تسلیم کیا تھا۔ چوتھے نے یہ انکشاف کیا تھا کہ مہاراجہ رنجیت سنگھ ٹیپو سلطان کے سپہ سالار تھے اور انہوں نے انگریزوں سے لڑنے کے لیے آزاد ہند فوج بنائی تھی۔ وہ کھیلوں کے بڑے پریمی تھے اور ان ہی کے نام پر ہر سال رانجی ٹرافی کا کرکٹ میچ ہوا کرتا ہے۔ ایک اور صاحب نے کاپی کے آخر میں لکھا تھا کہ "مسلمانا صحبت میں نہ رہنے کی وجہ سے ہم اردو سے محروم رہے اور اردو ہمیں آتی بھی نہیں ہے اس لیے گزارش ہے کہ آپ اس پر غور کریں گے۔"

اور بھی بہت ساری باتیں تھیں جن میں اکثر مجھے یاد بھی ہیں، مگر ممکن ہے

है मगर उसकी मूंछें मुझे ज़हर लगती हैं।"

मैंने दिल ही दिल में अपनी कसी हुई मूंछें गंवा देने का फ़ैसला कर लिया और फ़िर दूसरा सफ़ा पढ़ने लगा। ग़ालिब के शेर की तशरीह कुछ इस तरह थी। "इस शेर में शायर ने दिल और नादाँ से मुख़ातिब होकर कहा है कि आख़िर इन लोगों को हुआ क्या है जो अब तक मर्ज़ को नहीं समझ सके हैं....." मैंने अगले सफ़े पर नज़र दौड़ाई। ख़्वाजा हसन निज़ामी से अपनी वाक़िफ़ीयत का इज़हार सिर्फ़ तीन सतरों में इस तरह किया गया था। "ख़्वाजा साहिब दिल्ली में पैदा हुये थे और बचपन से शायराना मिज़ाज लेकर आये थे, अन्दाज़े–बयाँ में बहुत नरमियत और शोख़ियाना अन्दाज़ था, उनकी शायरी बहुत बड़ी थी।" मैंने दूसरी कॉपी उठाई। "मेरे पसंदीदा शायर" पर मज़मून लिखते हुये मोहतरमा ने लिखा था:

"पहले ज़माने में लोग ख़त बहुत लिखा करते थे। इसलिये लिखते थे कि उनकी क़ाबिलियतें मालूम हो सकें। मगर ग़ालिब ज़्यादा से ज़्यादा बात कम लफ़्ज़ों में लिखा करते थे। मुझे भी ऐसा ही ख़त पसंद है। मगर ग़ालिब शराब बहुत पीते थे और हर वक़्त इश्क़ में मुब्तला रहते थे।" मेरी तबीअत उलझने लगी और मैंने फिर लड़कों की कॉपियाँ देखनी शुरु कर दीं। एक साहब ने मुख़्तलिफ़ अलफ़ाज़ की जिंस बताते हुये उन्हें मोजक्कर1 और मोअन्नस2 के बदले "स्त्रीलिंग" और "पुलिंग" लिखा था। दूसरे ने उमराओं बराये अमीरों, कालास बराये क्लास और असापाताल बराये अस्पताल लिखा था। तीसरे ने सर सय्यद अहमद ख़ाँ को अपना पसंदीदा शायर क़रार देते हुये उनकी शायराना अज़मत को ग़ालिब और इक़बाल से ज़्यादा बुलन्द तस्लीम किया था। चौथे ने ये इन्कशाफ़ किया था कि महाराजा रंजीत सिंह टीपू सुल्तान के सिपहसालार थे और उन्होंने अंग्रेज़ों से लड़ने के लिये आज़ाद हिन्द फ़ौज बनाई थी। वह खेलों के बड़े प्रेमी थे और उन्हीं के नाम पर हर साल रंजीत ट्राफी का क्रिकेट मैच हुआ करता है। एक और साहब ने कॉपी के आख़िर में लिखा था कि "मुसलमाना सोहबत में न रहने की वजह से हम उर्दू से महरुम रहे और उर्दू हमें आती भी नहीं है इसलिये गज़रेश है कि आप इस पर ग़ौर करेंगे।"

और भी बहुत सारी बातें थीं जिनमें अक्सर मुझे याद भी हैं, मगर

1. पुर्ल्लिंग 2. स्त्रीलिंग

ان کاپیوں کے لکھنے والوں میں سے بعض کل کے حکمراں ہوں یا انقلاب بپا کردیں۔ آپ جانتے ہیں ہوشیار آدمی ہوں اور ہوشیار آدمی مستقبل سے بہت ڈرتے ہیں۔ اس لیے میں بہت سے اصحاب کا ذکر چھوڑ دیتا ہوں۔ ہاں ایک بات اور — یہ بھی ممکن ہے کہ آپ اردو ٹیچروں اور طالب علموں کی حالت زار پر ماتم کرنے کے لیے ہاتھ اٹھا رہے ہوں۔ لیکن ذرا ٹھہریے! آخر یہ اردو زبان ہے کوئی گلی ڈنڈا تھوڑے ہی ہے جسے بچے بھی کھیل لیتے ہیں۔ ابھی تو ان بے چاروں نے انٹر کالج میں قدم ہی رکھا ہے۔ ابھی تو انہیں لیڈری سیکھنی ہے۔ پھر چچہ گیری سیکھنی ہے۔ آخر میں نقل نویسی اور پیروی کاری سیکھنی ہے۔ اس کے بعد موقع ملا تو اردو زبان بھی سیکھ لیں گے۔ آخر داغ نے یوں ہی تھوڑے ہی کہا تھا۔

نہیں کھیل اے داغ یاروں سے کہ دو
کہ آتی ہے اردو زباں آتے آتے

••••

मुमकिन है इन कॉपियों को लिखने वालों में बाज़ कल के हुकमराँ हों या इन्कलाब बपा कर दें। आप जानते हैं होशियार आदमी हूँ और होशियार आदमी मुस्तक़बिल से बहुत डरते हैं। इसलिये मैं बहुत से असहाब का ज़िक्र छोड़ देता हूँ। हाँ एक बात और – ये भी मुमकिन है कि आप उर्दू टीचरों और तालिब–इल्मों की हालते–ज़ार पर मातम करने के लिये हाथ उठा रहे हों। लेकिन ज़रा ठहरिये! आख़िर यह उर्दू ज़बान है कोई गुल्ली–डंडा थोड़े ही है जिसे बच्चे भी खेल लेते है। अभी तो इन बेचारों ने इंटर कॉलेज में क़दम ही रखा है। अभी तो उन्हें लीडरी सीखनी है। फिर चम्चागीरी सीखनी है। आख़िर में नक़ल नवीसी और पैरो–कारी सीखनी है। इसके बाद मौक़ा मिला तो उर्दू ज़बान भी सीख लेंगे। आख़िर दाग़[1] ने यूँ ही थोड़े ही कहा था –

नहीं खेल ऐ दाग़ यारों से कह दो
कि आती है उर्दू ज़बाँ आते आते

●●●●

---

1. प्रसिद्ध शायर दाग़ देहलवी

عابد معز

لائبریری کی سیر

لائبریری کی تعریف پوچھی جائے تو ہم کہیں گے کہ کتابوں کے گودام یا اسٹور روم کو لائبریری کہتے ہیں۔ لائبریری کو کتابوں کا یتیم خانہ بھی کہا جائے تو زیادتی نہ ہوگی۔ لائبریری میں قارئین کتابوں سے یتیموں جیسا سلوک کرتے ہیں۔ بہت سی کتابیں جن کو خریدار نہیں ملتے وہ لائبریری کی زینت بنتی ہیں۔ جو بھی کتاب چھپتی ہے اس کا یہ پہلا حق ہے کہ اسے لائبریری میں جگہ ملے، چاہے اس کی صرف دس جلدیں فروخت ہوئی ہوں اور وہ بھی مصنف کے تنگ کرنے پر اس کے دوستوں نے خریدی ہوں۔ بعض مصنف ایسے بھی ہیں جو صرف لائبریری کے لیے کتابیں لکھتے ہیں۔ ہاتھوں ہاتھ پڑھی جانے والی کتابیں لائبریری میں عنقا ہوتی ہیں۔

لائبریری میں آنے والوں کے اغراض و مقاصد مختلف ہوتے ہیں، بعض ستانے اور آرام کرنے آتے ہیں تو بعض حضرات دوست احباب سے ملنے کے لیے لائبریری کا رُخ کرتے ہیں۔ لائبریری جانا آج کے ترقی یافتہ انسان کا معمول بھی ہے۔ اکثر لوگ کتابیں لینے اور انھیں بغیر پڑھے واپس کرنے لائبریری آتے ہیں تا کہ لوگ انھیں پڑھا لکھا سمجھیں۔ بہت کم لوگ ایسے ملیں گے جو علم کی دولت حاصل کرنے کے لیے لائبریری جاتے ہیں۔ پڑھے لکھے لوگوں میں اپنا شمار کروانے کے لیے ہم گاہے ماہے

आबिद मुइज़्ज़

लाइब्रेरी की सैर

लाइब्रेरी की तारीफ़ पूछी जाये तो हम कहेंगे कि किताबों के गोदाम या स्टोर रुम को लाइब्रेरी कहते हैं। लाइब्रेरी को किताबों का यतीम–ख़ाना भी कहा जाये तो ज़्यादती न होगी। लाइब्रेरी में क़ारेईन[1] किताबों से यतीमों जैसा सुलूक करते हैं। बहुत सी किताबों को ख़रीदार नहीं मिलते वह लाइब्रेरी की ज़ीनत बनती है। जो भी किताब छपती है उसका यह पहला हक़ है कि उसे लाइब्रेरी में जगह मिले, चाहे उसकी सिर्फ़ दस जिल्दें ही फ़रोख़्त हुई हों और वह भी मुसन्निफ़ के तंग करने पर उसके दोस्तों ने ख़रीदी हों। बाज़ मुसन्निफ़ ऐसे भी हैं जो सिर्फ़ लाइब्रेरी के लिये किताबें लिखते हैं। हाथों–हाथ पढ़ी जाने वाली किताबें लाइब्रेरी की अन्क़ा होती हैं।

लाइब्रेरी में आने वालों के अग़राज़ो–मक़ासिद मुख़्तलिफ़ होते हैं, बाज़ सुस्ताने और आराम करने आते हैं तो बाज़ हज़रात दोस्त अहबाब से मिलने के लिये लाइब्रेरी का रुख़ करते हैं। लाइब्रेरी जाना आज के तरक़्क़ी याफ़्ता इन्सान का मामूल भी है। अक्सर लोग किताबें लेने और उन्हें बग़ैर पढ़े वापिस करने लाइब्रेरी आते हैं ताकि लोग उन्हें पढ़ा लिखा समझें। बहुत कम लोग ऐसे मिलेंगे जो इल्म की दौलत हासिल करने के लिये लाइब्रेरी जाते हैं। पढ़े लिखे लोगों में अपना शुमार करवाने के लिये हम गाहे–माहे

---

1. पाठक

لائبریری میں جھانک لیتے ہیں۔

اپنے ساتھ موجود اشیاء کو باہر چھوڑ کر صرف اپنی ذات کے ساتھ لائبریری میں داخل ہونا پڑتا ہے۔ سامان کی حفاظت کے لیے دروازے کے پاس ایک آدمی بیٹھا رہتا ہے جو سوتا ہے یا کتب بینی میں مصروف رہتا ہے۔ اگر وہ سو رہا ہو اور آپ نے اسے جگا یا تو وہ خفا ہوگا، کہے گا کچھ نہیں، آپ کی چیزوں کو پٹک کر اپنے غصہ کا اظہار کرے گا۔ کتب بینی کر رہا ہو تو اس کے رویہ کا انحصار کتاب پر ہوگا، کتاب دلچسپ رہی تو اشاروں میں بات کرے گا ورنہ آپ کے وقت کو چند فضول سوالوں میں ضائع کرے گا۔

لائبریری کے اندر ایک رجسٹر رکھا ہوتا ہے جس پر آنے والوں کو اپنا نام اور پتا لکھنا اور دستخط کرنے پڑتے ہیں۔ نام اور پتا کوئی نہیں لکھتا، آپ بھی مت لکھیے، ہم نے بھی نہیں لکھا، احتیاط کا تقاضہ یہی ہے۔ اکثر لوگ دستخط کرنا پسند کرتے ہیں، بعض دستخط کرنا بھی گوارا نہیں کرتے۔ دستخط نہ کرنے والوں میں سے اکثر اصحاب کتابوں اور میز پر دستخط کرتے ہیں، باقی حضرات دستخط کرنے کو تضیع اوقات سمجھتے ہیں۔ بعض لوگ اس اہتمام سے دستخط کرتے ہیں جیسے آٹوگراف دے رہے ہوں۔ اگر آپ دستخط کے نمونے دیکھنا چاہیں تو لائبریری کے رجسٹر کا مطالعہ ضرور کریں۔ اکثر دستخطیں چند آڑی ترچھی لکیروں پر مشتمل ہوتی ہیں۔ ہم بھی رجسٹر پر دو سیدھی لکیریں اور ایک کھڑی لکیر کھینچتے ہیں۔

ایک بار ہم لائبریری پہنچے، ہماری نظر سامنے لگی ایک تختی پر پڑی، جلی حروف میں لکھا تھا ''خاموشی سے مطالعہ کیجئے''، اس تختی کے سائے میں لائبریری کے کرتا دھرتا گپ شپ کرتے نظر آئے۔ بات بات پر قہقہے دبانے کی کوشش میں عجیب وغریب آوازیں نکل رہی تھیں۔ ان آوازوں پر خاموش احتجاج کرنے والے قارئین لائبریری کے لیے نئے ہوتے ہیں۔ جو لوگ ان آوازوں سے بے نیاز ہوتے ہیں وہ روز آنے والے قارئین ہوتے ہیں یا پھر وہ جو سوتے رہتے ہیں۔ لائبریری میں وہ لوگ بھی آتے ہیں جن کے گھروں میں ڈرائنگ روم نہیں ہوتا۔ اس قسم کے لوگ کونوں میں سر جوڑے محو گفتگو ملیں گے، جہاں سے کھسر پھسر کی آوازیں اٹھتی رہتی ہیں۔ لائبریری میں ایسے حضرات کی کمی نہیں ہوتی جو گھر کے ماحول سے گھبرا کر لائبریری کا سکون برباد کرنے چلے

लाइब्रेरी में झाँक लेते हैं।

अपने साथ मौजूद अशया को बाहर छोड़ कर सिर्फ अपनी ज़ात के साथ लाइब्रेरी में दाख़िल होना पड़ता है। सामान की हिफ़ाज़त के लिये दरवाज़े के पास एक आदमी बैठा रहता है जो सोता है या कुतुब–बीनी में मसरुफ़ रहता है। अगर वह सो रहा हो और आपने उसे जगा दिया तो वह ख़फ़ा होगा, कहेगा कुछ नहीं, आपकी चीज़ों को पटक कर अपने गुस्से का इज़हार करेगा। कुतुब–बीनी कर रहा हो तो उसके रवय्ये का इन्हसार किताब पर होगा, किताब दिलचस्प रही तो इशारों में बात करेगा वरना आपके वक़्त को चंद फ़िज़ूल सवालों में ज़ाया करेगा।

लाइब्रेरी के अन्दर एक रजिस्टर रखा होता है जिस पर आने वाले को अपना नाम और पता लिखना और दस्तख़त करने पड़ते हैं। नाम और पता कोई नहीं लिखता, आप भी मत लिखिये, हमने भी नहीं लिखा, एहतियात का तक़ाज़ा यही है। अक्सर लोग दस्तख़त करना पसंद करते हैं, बाज़ दस्तख़त करना भी गवारा नहीं करते। दस्तख़त न करने वालों में अक्सर असहाब किताबों और मेज़ पर दस्तख़त करते हैं।, बाक़ी हज़रात दस्तख़त करने को तज़ीअ–औक़ात[1] समझते हैं। बाज़ लोग इस एहतमाम से दस्तख़त करते हैं जैसे ऑटोग्राफ़ दे रहे हों। अगर आप दस्तख़त के नमूने देखना चाहें तो लाइब्रेरी के रजिस्टर का मोतालेआ ज़रुर करें। अक्सर दस्तख़तें चन्द आड़ी तिरछी लकीरों पर मुश्तमिल होती हैं। हम भी रजिस्टर पर दो सीधी लकीरें और एक खड़ी लकीर खींचते हैं।

एक बार हम लाइब्रेरी पहुँचे, हमारी नज़र सामने लगी एक तख़्ती पर पड़ी, जली हरुफ़ में लिखा था "ख़ामोशी से मोतालेआ कीजिये", इस तख़्ती के साये में लाइब्रेरी के कर्ता–धर्ता गपशप करते नज़र आये। बात–बात पर क़हक़हे दबाने की कोशिश में अजीबो–ग़रीब आवाज़ें निकल रही थीं। इन आवाज़ों पर ख़ामोश एहतजाज करने वाले क़ारेईन लाइब्रेरी के लिए नये होते हैं। जो लोग इन आवाज़ों से बे नयाज़ होते हैं वह रोज़ आने वाले क़ारेईन होते हैं या फिर वह जो सोते रहते हैं। लाइब्रेरी में वह लोग भी आते हैं जिन के घरों में ड्राइंग रुम नहीं होता। इस क़िस्म के लोग कोनों में सर जोड़े महवे–गुफ़्तगू मिलेंगे, जहाँ से खुसर–फुसर की आवाज़ें उठती रहती हैं। लाइब्रेरी में ऐसे हज़रात की कमी नहीं जो घर के माहौल से घबरा कर लाइब्रेरी का सुकून बर्बाद करने चले आते हैं। बेमक़सद इधर

1. समय को नष्ट करना

آتے ہیں۔ بے مقصد ادھر ادھر کتابیں الٹ پلٹ کرتے پھرتے ہیں۔

کتابوں کو کیٹیلاگ کی مدد سے ڈھونڈنا پڑتا ہے۔ کیٹیلاگ میں ڈھیر ساری کتابوں کے حوالے درج ہوتے ہیں لیکن تلاش کرنے پر ایک کتاب بھی نہ ملے گی۔ ہمارے ایک دوست کا طریقہ کار ہے کہ وہ ہمیشہ دس کتابوں کے حوالے لکھ لیتے ہیں تاکہ مطلوبہ کتاب نہ ملنے پر مایوسی سے بچ رہیں۔ حوالے لکھتے وقت بہتر ہوگا کہ فل اسکیپ کاغذ ساتھ رکھیں۔ محبوبہ کی زلف کی طرح کتابوں کے حوالے طویل ہوتے ہیں۔ بعض کتابوں کے حوالوں میں سارے حروف تہجی کے ساتھ نمبر لاکھوں میں ہوتا ہے۔ حوالے نوٹ کرنے کے بعد کتابیں حاصل کرنا جوئے شیر لانے سے کم نہیں ہوتا۔ لائبریری میں ویسے ہی روشنی کم ہوتی ہے اور جب بجلی بند ہوجائے تو پھر صبر کے سوا کچھ نہیں کیا جاسکتا۔

کتابیں الماریوں میں چھپی رہتی ہیں۔ الماری پر پہلی اور آخری کتابوں کے حوالے درج ہوتے ہیں، اس تحریر کو پڑھنے کے لیے محدب عدسوں کی ضرورت پیش آتی ہے۔ ایک ہمدرد کے پاس سے چشمہ مانگ کر ہم نے مطلوبہ الماری تلاش کی اور اسے کھولا۔ چند کتابیں ہمارے اوپر گریں اور پھر ہم نے اپنے آپ کو سنبھالتے ہوئے الماری میں سے پھڑ پھڑاتی ہوئی ان کتابوں کو بھی سنبھالا جو باہر آنے کی پرزور کوشش کر رہی تھیں۔ کتابیں گرنے کے ساتھ ہی لائبریری کا کارندہ پاس آیا۔ کتابیں اٹھاتے ہوئے ''سوری'' کہہ کر ہم نے اسے اپنا طرفدار بنا لیا۔ کتابیں الماری میں ٹھونسنے کے بعد کتابیں ڈھونڈنے کا جوش اور ولولہ سرد پڑ گیا۔ جو کتاب ہاتھ لگی اسے لے کر بڑھ گئے۔ کیا بھروسہ، الماری جو چار کے بجائے تین پاؤں پر کھڑی تھی ہم پر گر نہ پڑے۔ تیزی میں ہم نے میز اور کرسی سے ٹھوکر کھائی۔ خدا کا شکر ادا کیا کہ کسی سر پھرے سے ٹکر نہ ہوئی ورنہ ہمیں اندھے کا خطاب ملتا۔

ہم اتنے بدحواس ہو چکے تھے کہ جہاں بھی جگہ ملی بیٹھ گئے۔ پیشانی پر آئے پسینے کو رومال میں جذب کیا، ذرا سا سکون پایا تو محسوس ہوا کہ جس کرسی پر ہم براجمان ہیں وہ بیٹھنے کے قابل نہیں ہے، بیچ میں سوراخ ہے۔ منوں گرد جمی ہوئی ہے اور ایک ہاتھ سے معذور بھی ہے۔ چہار طرف سے کھٹملوں نے حملہ کر دیا۔ بہت دن بعد انھیں غذا ملی تھی۔

किताबें उलट पलट करते फिरते हैं।

किताबों को कैटेलॉग की मदद से ढूंढना पड़ता है। कैटेलॉग में ढ़ेर सारी किताबों के हवाले दर्ज होते हैं लेकिन तलाश करने पर एक किताब भी न मिलेगी। हमारे एक दोस्त का तरीक़ए–कार है कि वह हमेशा दस किताबों के हवाले लिख लेते हैं ताकि मतलूबा किताब न मिलने पर मायूसी से बचे रहें। हवाले लिखते वक़्त बेहतर होगा कि फुलस्केप काग़ज़ साथ रखें। महबूबा की ज़ुल्फ़ की तरह किताबों के हवाले तवील होते हैं। बाज़ किताबों के हवालों में सारे हुरुफ़ तहज्जी[1] के साथ नम्बर लाखों में होता है। हवाले नोट करने के बाद किताबें हासिल करना जूऐ–शीर[2] लाने से कम नहीं होता। लाइब्रेरी में वैसे ही रोशनी कम होती है और जब बिजली बन्द हो जाए तो फिर सब्र के सिवा कुछ नहीं किया जा सकता।

किताबें अल्मारियों में छुपी रहती हैं। अल्मारी पर पहली और आख़री किताबों के हवाले दर्ज होते हैं, इस तहरीर को पढ़ने के लिये मोहद्दब अदसों[3] की ज़रुरत पेश आती है। एक हमदर्द के पास से चश्मा माँगकर हमने मतलूबा अल्मारी तलाश की और उसे खोला। चन्द किताबें हमारे उपर गिरीं और फिर हमने अपने आप को संभालते हुए अल्मारी में से फड़फड़ाती हुई उन किताबों को भी संभाला जो बाहर आने की पुरज़ोर कोशिश कर रही थीं। किताबें गिरने के साथ ही लाइब्रेरी का कारिन्दा पास आया। किताबें उठाते हुए "सॉरी" कह कर हमने उसे अपना तरफ़दार बना लिया। किताबें अल्मारी में ठूंसने के बाद किताबें ढूंढ़ने का जोश और वलवला सर्द पड़ गया। जो किताब हाथ लगी उसे लेकर बढ़ गये। क्या भरोसा, अल्मारी जो चार के बजाए तीन पाँव पर खड़ी थी हम पर गिर न पड़े। तेज़ी में हमने मेज़ और कुर्सी से ठोकर खाई। ख़ुदा का शुक्र अदा किया कि किसी सरफिरे से टक्कर न हुई वरना हमें अन्धे का ख़िताब मिलता।

हम इतने बदहवास हो चुके थे कि जहाँ भी जगह मिली बैठ गये। पेशानी पर आये पसीने को रुमाल में जज़्ब किया, ज़रा सा सुकून पाया तो महसूस हुआ कि जिस कुर्सी पर हम विराजमान हैं वह बैठने के क़ाबिल नहीं है, बीच में सूराख़ है, मनों गर्द जमी हुई है और एक हाथ से माज़ूर भी है। चहार तरफ़ से खटमलों ने हमला कर दिया। बहुत दिन बाद उन्हें ग़िज़ा मिली थी। चूहे और दीमक सूराख़ों से झाँकने लगे। उठना चाहते थे

1. वर्णमाला 2. दूध की नहर 3. वह शीशा जिससे चीज़ें बड़ी दिखाई देती हैं

چوہے اور دیمک سوراخوں سے جھانکنے لگے۔ اٹھنا چاہتے تھے لیکن ڈر لگا کہ ہماری یہ حرکت آس پاس کے لوگوں کو گراں نہ گذرے۔ یوں بھی ہم سب کا مرکز نظر بن چکے تھے۔ ٹھیک سے بیٹھنا چاہا تو کرسی رقت انگیز لہجہ میں ہمارے ظلم کے خلاف آواز بلند کرنے لگی۔

ان حالات سے گزرنے کے بعد ایک قاری کو کتب بینی سے دلچسپی باقی نہیں رہتی اور اسے کئی غیر ضروری کام یاد آنے لگتے ہیں۔ ہم نے اپنا دھیان کتاب میں لگانا چاہا۔ جب مصیبتیں آتی ہیں تو آتی ہی چلی جاتی ہیں۔ کتاب تو ہم اٹھا لائے لیکن اس زبان سے ہم واقف ہی نہیں تھے۔ الٹا سیدھا بھی سمجھ میں آتا نہ تھا۔ تصویریں دیکھنے لگے۔ چند تصویریں ایسی نظر آئیں جن پر آنکھوں کا پردہ واجب ہو جاتا ہے۔ تصویریں گھورنا ختم ہوا تو سوچا کہ آس پاس، لوگوں کا جائزہ لیا جائے۔ اس میں کتب بینی سے زیادہ لطف آیا۔ ایک صاحب کے ہونٹ تیزی سے ہل رہے تھے۔ محسوس ہو رہا تھا وہ دماغ کے بجائے ہونٹوں سے پڑھ رہے ہیں۔ ''سی......سی......سی'' کی آوازیں آ رہی تھیں۔ ایک صاحب پڑھتے وقت طرح طرح سے منہ بنا رہے تھے، کبھی زبان دکھا کر ڈاکٹر کی یاد دلاتے تو کبھی بتیسی نکال کر ٹوتھ پیسٹ کا اشتہار بنتے، کبھی آنکھیں باہر نکال دیتے تو کبھی ہونٹوں کو سکوڑ لیتے، کبھی مسکرا پڑتے تو کبھی آنکھوں میں پانی بھر لاتے۔ ہمیں لگا جیسے کوئی خاموش فلم چل رہی ہے۔ ایک اور صاحب ورق الٹتے وقت انگوٹھے کو تھوک لگا کر اس زور سے ورق پکڑتے کہ زوردار ''تا'' اور ''پھڑ'' کی آواز پیدا ہوتی تھی۔ ایک نحیف و ناتواں صاحب اپنے سے زائد وزن کی کتاب گود میں کھولے سو رہے تھے۔ جب کبھی نیند سے بیدار ہوتے، ایک صفحہ پلٹاتے تھے۔ پتہ نہیں یہ سونے کا انداز تھا یا پھر وہ اس ہنر سے واقف تھے کہ آنکھیں بند کر کے کتاب کیسے پڑھی جاتی ہے۔

ایک صاحب کتب بینی کے ساتھ تاثرات کا اظہار بھی فرما رہے تھے۔ ہم نے انہیں کہتے سنا ''یہ کیوں کر ہو سکتا ہے؟'' کچھ دیر خاموشی کے بعد انہوں نے خود اپنے سوال کا جواب تلاش کر لیا ''ایسے ہی ہو سکتا تھا میں بے وقوف ہوں جو غلط سمجھا۔'' ہمارے دل نے ان سے کہنا چاہا ''دیر سے سہی آپ نے خود کو پہچانا خوب۔''

ایک صاحب پڑھتے وقت ٹانگیں ہلا رہے تھے جیسے پڑھنے کی مشین چلا رہے

लेकिन डर लगा कि हमारी यह हरकत आस पास के लोगों को गराँ न गुज़रे। यूँ भी हम सब का मरकज़े–नज़र बन चुके थे। ठीक से बैठना चाहा तो तकत–अंगेज़ लहजे में हमारे ज़ुल्म के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलन्द करने लगी।

इन हालात से गुज़रने के बाद एक क़ारी को क़ुतुब–बीनी से दिलचस्पी बाक़ी नहीं रहती और उसे कई ग़ैर ज़रुरी काम याद आने लगते हैं। हमने अपना ध्यान किताब में लगाना चाहा। जब मुसीबतें आती हैं तो आती ही चली जाती हैं। किताब तो हम उठा लाये लेकिन उस ज़बान से हम वाक़िफ़ ही न थे। उल्टा सीधा भी समझ में आता न था। तस्वीरें देखने लगे। चंद तस्वीरें ऐसी नज़र आईं जिन पर आँखों का पर्दा वाजिब हो जाता है। तस्वीरें घूरना ख़त्म हुआ तो सोचा कि आस पास लोगों का जायज़ा लिया जाय। उसमें कुतुब बीनी से ज़्यादा लुत्फ़ आया। एक साहब के होंट तेज़ी से हिल रहे थे। महसूस हो रहा था वह दिमाग के बजाय होंटो से पढ़ रहे हैं। "सी......सी......सी......" की आवाज़ें आ रही थीं। एक साहब पढ़ते वक़्त तरह–तरह से मुँह बना रहे थे, कभी ज़बान दिखाकर डाक्टर की याद दिलाते तो कभी बत्तीसी निकाल कर टूथपेस्ट का इश्तेहार बनते, कभी आँखें बाहर निकाल देते तो कभी होंटो को सिकोड़ लेते, कभी मुस्कुरा पड़ते तो कभी आँखों में पानी भर लाते। हमें लगा जैसे कोई ख़ामोश फ़िल्म चल रही है। एक और साहब वरक़ उलटते वक़्त अंगूठे को थूक लगाकर इस ज़ोर से वरक़ पकड़ते कि ज़ोरदार "ता" और "फड़" की आवाज़ पैदा होती। एक नहीफ़ो–नातवाँ साहब अपने से ज़ायद वज़न की किताब गोद में खोले सो रहे थे। जब कभी नींद से बेदार होते, एक सफ़ह पलटते थे। पता नहीं यह सोने का अंदाज़ था या फिर वह उस हुनर से वाक़िफ़ थे कि आँखें बंद करके किताब कैसे पढ़ी जाती है।

एक साहब कुतुब बीनी के साथ तास्सुरात का इज़हार भी फ़रमा रहे थे। हमने उन्हें कहते सुना "ये क्यूँ कर हो सकता है?" कुछ देर ख़ामोशी के बाद उन्होंने ख़ुद अपने सवाल का जवाब तलाश कर लिया "ऐसे ही हो सकता था मैं बेवक़ूफ़ हूँ जो ग़लत समझा।" हमारे दिल ने उनसे कहना चाहा "देर से ही सही आपने ख़ुद को पहचाना ख़ूब।"

एक साहब पढ़ते वक़्त टाँगें हिला रहे थे जैसे पढ़ने की मशीन चला रहे हों। एक साहब तबला बजाते हुये कुतुब बीनी में मसरुफ़ थे, कभी

ہوں۔ ایک اور صاحب طبلہ بجاتے ہوئے کتب بینی میں مصروف تھے، کبھی آہستہ تو کبھی زور سے، جب وہ زور سے میز پر ہاتھ مارتے تو آس پاس کی کتابیں پھڑ پھڑا کر رہ جاتیں اور میز میں ارتعاش پیدا ہوتا۔ دوسرے لوگ انہیں گھور کر دیکھتے اور موصوف سب سے بے نیاز پڑھنے اور طبلہ بجانے میں مصروف تھے۔ ایک صاحب بازو میں بیٹھے شخص سے بار بار الفاظ کے معنی پوچھ رہے تھے۔ تنگ آکر اس بھلے شخص نے انھیں لغت لاکر دی اور اپنا پیچھا چھڑایا۔

لوگوں کے پڑھنے کا انداز دیکھ کر ہم لطف اندوز ہو رہے تھے کہ ذہن نے بیٹھنے کے مختلف طریقوں کے مشاہدے کا مشورہ دیا۔ چند اصحاب الماریوں کے پاس کھڑے ہو کر مطالعہ کی ضرورت پوری کر رہے تھے۔ لائبریری میں کرسیوں پر براجمان لوگوں کی اکثریت تھی۔ ایک صاحب کرسی پر پیر رکھے اور پیروں کے بیچ ہاتھوں کو ٹھونسے ایسے بیٹھے تھے کہ ہمیں اسکول میں ملنے والی سزا یاد آ گئی۔ جب ہم شرارت کرتے تو مرغا بنادیے جاتے تھے۔ ایک صاحب کرسی پر اس طرح لیٹے تھے کہ ان کی گردن اور ہاتھ کرسی پر تھے اور بقیہ جسم ہوا میں لیٹا ہوا تھا (مضمون شروع کرنے سے پہلے کرسی پر لیٹنے کی کوشش میں ہم چار مرتبہ گر چکے ہیں)۔ ایک صاحب کرسی کے دو پائے زمین سے اٹھائے ایک ہی جانب بیٹھے تھے۔ اس کے باوجود کرسی کا توازن برقرار تھا۔ ایک صاحب کے دونوں پیر میز پر اس طرح سے اٹھے ہوئے تھے کہ محسوس ہوتا وہ یوگا کی مشق کر رہے ہیں۔ ایک صاحب کرسی پر بیٹھے جھول رہے تھے۔ ہمیں ڈر ہوا کہیں وہ گر نہ جائیں مگر وائے حیرت کرسی الٹ کر رہ گئی اور وہ اچھل کر بازو کھڑے ہو گئے۔

کرتب بازی پر آتی ہوئی ہنسی کو ضبط کرنے کے لیے ہم میز پر بکھری کتابوں کو اٹھا کر دیکھنے لگے۔ ایک کتاب دلچسپ معلوم ہوئی، پڑھنے لگے۔ تجسس بڑھتا گیا اور ایک مقام پر ہمارا تجسس بے بسی میں بدل گیا۔ کتاب کے چند صفحے غائب تھے۔ ہم نے دوسری کتاب اٹھائی۔ کتاب اٹھائی کہنا شاید غلط ہے، بکھرے ہوئے اوراق کو سمیٹا۔ پہلے صفحہ پر لکھا تھا ''میں کتاب پڑھ کر الو بنا ہوں۔'' اس جملے کے نیچے ''نئے الو'' کے دستخط ثبت تھے۔ ہم نے الو بننا گوارا نہ کیا اور تیسری کتاب کھولی۔ کتاب میں جنسی

आहिस्ता तो कभी ज़ोर से, जब वह ज़ोर से मेज़ पर हाथ मारते तो आस पास की किताबें फड़फड़ा कर रह जातीं और मेज़ में इरतेआश[1] पैदा होता। दूसरे लोग उन्हें घूर कर देखते और मौसूफ़ सब से बे-नियाज़ पढ़ने और तबला बजाने में मसरुफ़ थे। एक साहब बाज़ू में बैठे शख़्स से बार-बार अल्फ़ाज के मानी पूछ रहे थे। तंग आकर उस भले शख़्स ने उन्हें लोगत[2] लाकर दी और अपना पीछा छुड़ाया।

लोगों के पढ़ने का अन्दाज़ देखकर हम लुत्फ़ अन्दोज़ हो रहे थे कि ज़ेहन ने बैठने के मुख़्तलिफ़ तरीक़ों के मुशाहदे का मश्वरा दिया। चंद असहाब अलमारियों के पास खड़े होकर मोताले की ज़रुरत पूरी कर रहे थे। लाइब्रेरी में कुर्सीयों पर बिराजमान लोगों की अक्सरियत थी। एक साहब कुर्सी पर पैर रखे और पैरों के बीच हाथों को ठूंसे ऐसे बैठे थे कि हमें स्कूल में मिलने वाली सज़ा याद आ गई। जब हम शरारत करते तो मुर्ग़ा बना दिये जाते थे। एक साहब कुर्सी पर इस तरह लेटे थे कि उनकी गर्दन और हाथ कुर्सी पर थे और बकिया जिस्म हवा में लेटा हुआ था (मज़मून शुरु करने से पहले कुर्सी पर लेटने की कोशिश में हम चार मरतबा गिर चुके हैं)। एक साहब कुर्सी के दो पाये ज़मीन से उठाये एक ही जानिब बैठे थे। उसके बावजूद कुर्सी का तवाज़ुन बरक़रार था। एक साहब के दोनों पैर मेज़ पर इस तरह से उठे हुए थे कि महसूस होता वह योगा की मश्क़ कर रहे हैं। एक साहब कुर्सी पर बैठे झूल रहे थे। हमें डर हुआ कहीं वह गिर न जायें मगर वाए हैरत कुर्सी उलट कर रह गई और वह उछल कर बाज़ू खड़े हो गये।

करतब बाज़ी पर आई हंसी को ज़ब्त करने के लिए हम मेज़ पर बिखरी किताबों को उठा कर देखने लगे। एक किताब दिलचस्प मालूम हुई, पढ़ने लगे। तजस्सुस बढ़ता गया और एक मोक़ाम पर हमारा तजस्सुस बेबसी में बदल गया। किताब के चंद सफ़े गयब थे। हम ने दूसरी किताब उठाई। किताब उठाई कहना शायद ग़लत होगा, बिखरे औराक़ को समेटा। पहले सफ़े पर लिखा था "मैं किताब पढ़ कर उल्लू बना हूँ।" इस जुम्ले के नीचे "नये उल्लू" के दस्तख़त सब्त थे। हमने उल्लू बनना गवारा न किया और तीसरी किताब खोली। किताब में जिंसी अमराज़, उनकी पेचीदगियों

1. कंपन 2. शब्दकोष

امراض، ان کی پیچیدگیوں اور علاج کے بارے میں اشتہار کا کاغذ رکھا ہوا ملا، ہمیں اشتہار سے کچھ مطلب نہ تھا، لہذا چوتھی کتاب اٹھائی۔ ایک صفحہ کے حاشیے پر نوٹ لکھا تھا ''آپ تھک چکے ہیں کینٹین میں گرم چائے اور سگریٹ پی کر آیئے۔'' یہ حقیقت تھی کہ ہم تھک چکے تھے لیکن کینٹین جانے کے بجائے ہم نے پانچویں کتاب اٹھائی۔ ایک جگہ فون نمبر کے ساتھ یہ جملہ لکھا تھا ''آپ مجھ سے مل کر یقیناً خوش ہوں گے۔'' کتابوں کے ساتھ اس قسم کا حسن سلوک ہماری برداشت سے باہر تھا۔ ہم کڑھتے ہوئے بیٹھے تھے کہ ہماری نگاہ میز پر پڑی جس پر کئی نام معہ تاریخ کندہ تھے۔ قاری کے لیے مشورے بھی درج تھے ''زیادہ مت پڑھیے، بینائی خراب ہوتی ہے'' ''اردو پڑھنے سے کچھ حاصل نہیں ہوتا'' لائبریری میں سونا منع ہے۔'' میز کو ہم نے کتابوں سے ڈھانکا اور چھٹی کتاب اٹھائی۔ اس کتاب میں محبوب اور محبوبہ کی تحریری گفتگو درج تھی۔ ''آئی لو یو'' ......''میں بھی تم سے محبت کرتی ہوں'' منگل کو چھٹی ہے۔ مارننگ شو میں جنگل میں منگل دیکھنے چلیں گے...... ''چھٹی کے دن گھر سے باہر نہیں آسکتی، بدھ کو چلیں گے'' ......''دس بجے لائبریری کے پچھلے دروازے سے......''

برداشت کرنے کی حد گزر چکی تھی۔ ہم شکایت کرنے کے ارادے سے اٹھے اور متعلقہ افسر سے ملاقات کی، انھوں نے ہمیں گھورا۔ آنکھیں باہر نکالیں اور تھوک اڑاتے ہوئے کہنے لگے ''کتابیں گراتے ہو، ٹھوکریں مار کر فرنیچر کو نقصان پہنچاتے ہو، کتابوں پر لکھتے ہو اور اس پر شکایت بھی کرنا چاہتے ہو۔ چوری اور سینہ زوری! کیا زمانہ آگیا ہے۔''

نہ جانے وہ اور کیا کہتے، ہمیں ڈر ہونے لگا کہیں شکایت کرنے کی پاداش میں پگڑی نہ اتر جائے۔

اپنی پگڑی سنبھالے ہم لائبریری سے بھاگ کھڑے ہوئے۔

• • • •

और इलाज के बारे में इश्तेहार का काग़ज़ रखा हुआ मिला, हमें इश्तेहार से कुछ मतलब न था, लेहाज़ा चौथी किताब उठाई। एक सफ़े के हाशिये पर नोट लिखा था "आप थक चुके हैं कैन्टीन में गरम चाय और सिगरेट पीकर आइये।" यह हक़ीक़त थी कि हम थक चुके थे लेकिन कैन्टीन जाने के बजाए हम ने पाँचवी किताब उठाई। एक जगह फ़ोन नम्बर के साथ यह जुम्ला लिखा था "आप मुझसे मिल कर यक़ीनन ख़ुश होंगे।" किताबों के साथ इस क़िस्म का हुस्ने–सुलूक हमारी बरदाश्त से बाहर था। हम कुढ़ते हुए बैठे थे कि हमारी निगाह मेज़ पर पड़ी जिस पर कई नाम मय तारीख़ के कन्दा थे। क़ारी के लिए मश्वरे भी दर्ज थे "ज़्यादा मत पढ़िये, बीनाई ख़राब होती है" "उर्दू पढ़ने से कुछ हासिल नहीं होता" "लाइब्रेरी में सोना मना है।" मेज़ को हमने किताबों से ढाँका और छठी किताब उठाई। उस किताब में महबूब और महबूबा की तहरीरी[1] गुफ़्तगू दर्ज थी। "आइ लव यू....." "मैं भी तुम से मोहब्बत करती हूँ" ...... "मंगल को छुट्टी है। मार्निंग शो में जंगल में मंगल देखने चलेंगे। "छुट्टी के दिन घर से बाहर नहीं आ सकती, बुध को चलेंगे"...... "दस बजे लाइब्रेरी के पिछले दरवाज़े से......"

बर्दाश्त करने की हद गुज़र चुकी थी। हम शिकायत करने की ग़रज से उठे और मुताअल्लेक़ा अफ़सर से मुलाक़ात की, उन्हों ने हमें घूरा। आँखें बाहर निकालीं और थूक उड़ाते हुये कहने लगे "किताबें गिराते हो, ठोकरें मार कर फ़र्नीचर को नुक़सान पहुँचाते हो, किताबों पर लिखते हो और उस पर शिकायत भी करना चाहते हो। चोरी और सीनाज़ोरी! क्या ज़माना आ गया है।"

न जाने वह और क्या कहते, हमें डर होने लगा कहीं शिकायत करने की पादाश में पगड़ी न उतर जाए।

अपनी पगड़ी संभाले हम लाइब्रेरी से भाग खड़े हुए।

● ● ● ●

1. लिखित